तुग़लुक़ कालीन भारत

[भाग १]

सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ तथा मुहम्मद बिन तुग़लुक़
(१३२०–१३५१ ई०)

(HISTORY OF THE TUGHLUQS, Part I)

समकालीन तथा निकट समकालीन इतिहासकारों द्वारा

[ज़ियाउद्दीन बरनी, एसामी, बद्रे चाच, अमीर ख़ुर्द, इब्ने बतूता, शिहाबुद्दीन अल उमरी, यहया, मुहम्मद बिहामद ख़ानी, निज़ामुद्दीन अहमद, अब्दुल क़ादिर बदायूनी, अली बिन अज़ीज़ुल्लाह तबातबा, मीर मुहम्मद मासूम, फ़िरिश्ता]

अनुवादक
सैयिद अतहर अब्बास रिज़वी
एम० ए०, पी-एच० डी०
यू० पी० एजूकेशनल सर्विस

प्रकाशक
हिस्ट्री डिपार्टमेंट, अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी
अलीगढ़
१९५६

Publication of the Department of History, Aligarh Muslim University, No 11

Source Book of Medieval Indian History in Hindi

Vol IV

History Of The Tughluqs, Part I

(1320-1351)

by Saiyid Athar Abbas Rizvi M A Ph D

FIRST EDITION
1956

PRINTED BY BADRI PRASAD SHARMA AT THE ADARSH PRESS ALIGARH
FOR THE DEPTT OF HISTORY ALIGARH MUSLIM UNIVERSITY

डाक्टर ज़ाकिर हुसैन खाँ

भूतपूर्व उपकुलपति

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय

के

चरणो मे

सादर समर्पित

भूमिका

तुगलुक वश के इस इतिहास में १३२० ई० से १३५१ ई० तक के इतिहास से सम्बन्धित समस्त प्रमुख फारसी तथा अरबी के ऐतिहासिक ग्रन्थों, काव्या, एव यात्रियो के पर्यटन विवरणो का हिन्दी अनुवाद तीन भागो में प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रथम भाग में समकालीन इतिहासकारो तथा कवियो की कृतियो का अनुवाद किया गया है। इसमें जियाउद्दीन बरनी की तारीखे फीरोज शाही, एसामी की फुतूहुस्सलातीन, बद्रे चाच के कसीदो तथा अमीर खुर्द की सियरुल औलिया के अनुवाद दिये गये हैं। दूसरे भाग में समकालीन यात्रियों के पर्यटन वृत्तान्तों का अनुवाद है जिनमें इब्ने बत्तूता के यात्रा विवरण तथा शिहाबुद्दीन अल उमरी लिखित मसालिकुल अबसार फी ममालिकुल अमसार सम्मिलित हैं। तीसरे भाग में यहया बिन अहमद सहरिन्दी की तारीखे मुबारक शाही, मुहम्मद बिहामद खानी की तारीखें मुहम्मदी, ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद की तबकाते अक्बरी, अब्दुल कादिर बदायूनी की मुन्तखबुत्तवारीख, अली बिन अजीजुल्लाह तबातबा की बुरहाने मआसिर, मीर मुहम्मद मासूम की तारीखे सिन्ध तथा फिरिश्ता की तारीखे फिरिश्ता के अनुवाद किये गये हैं। इतिहासकारा तथा उनकी कृतियो का परिचय अनुवाद के आरम्भ में दिया गया है। अनुवाद करते समय फ़ारसी से अंग्रेजी अनुवाद के सभी प्रचलित नियमो को, जिनका पालन इतिहासकार करते रहे हैं ध्यान में रखा गया है। भावार्थ के साथ-साथ शब्दार्थ को विशेष महत्त्व दिया गया है। फारसी भाषा का हिन्दी भाषा में वास्तविक अनुवाद देने के प्रयास के कारण कहीं-कहीं पर शब्दा की पुनरावृत्ति अनुपेक्षणीय बन गई है, क्योंकि इन शब्दों में स किसी एक को भी छोड देने स मूल जैसा वातावरण न रह पाता। जिन ग्रन्थों के सक्षिप्त अनुवाद किये गये है उनमे मध्यकालीन भारतीय सस्कृति से सम्बन्ध रखने वाले आवश्यक उद्धरणो का विशेष ध्यान रखा गया है। फुतूहुस्सलातीन तथा कसायदे बद्रे चाच की पृष्ठ-सख्या वाक्य के अन्त में कोष्ठबद्ध है। अन्य ग्रन्थो की पृष्ठ सख्या अनुच्छेद के आरम्भ में ही कोष्ठ में लिख दी गई है।

अंग्रेजी अनुवाद के ग्रन्थो में पारिभाषिक शब्दो के अंग्रेजी अनुवादो में दोष रह गये हैं। इस कारण मध्यकालीन भारतीय इतिहास में अनेक भ्रम-पूर्ण रूढियों को आश्रय मिल गया है। इस प्रकार की त्रुटियो म बचने के उद्देश्य से पारिभाषिक और मध्यकालीन वातावरण के परिचायक शब्दो का मूल रूप में ही ग्रहण किया गया है। एसे शब्दो की व्याख्या पाद-टिप्पणियों में कर दी गई है। मिथ्या प्रवादो का विवेचन भी, समकालीन तथा उत्तरवर्ती इतिहासो के आधार पर, पाद-टिप्पणिया में ही किया गया है। नगरो के नाम प्राय मध्यकालीन फारसी रूप में ही रहने दिये गये हैं। मुझे खेद है कि कुछ अत्यावश्यक व्याख्यायें इस लिये न की जा सकी कि मैं विश्व विद्यालय स दूर रहा और मुझे अभीष्ट ग्रन्थ न मिल सके। यदि सम्भव हुआ तो बाद के सस्करण में इस न्यूनता को दूर करने का प्रयत्न किया जायेगा।

'खलजी कालीन भारत' तथा 'आदि तुर्क कालीन भारत' के पश्चात् मध्यकालीन भारतीय इतिहास के आधारभूत, फारसी तथा अरबी के इतिहासो के हिन्दी अनुवाद के ग्रन्थ-माला की यह तीसरी पुस्तक प्रकाशित हो रही है। इस पुस्तक तथा तुग़लुक कालीन भारत (भाग २) के प्रकाशित करने के विषय में निर्णय मई १९५६ में इतिहास विभाग अलीगढ विश्व विद्यालय ने, डाक्टर जाकिर हुसेन, भूतपूर्व उपकुलपति, अलीगढ मुस्लिम विश्व विद्यालय,

के सतत प्रयत्नो के फलस्वरूप किया। पिछली दो पुस्तकों (खलजी कालीन भारत तथा आदि तुर्क कालीन भारत) का प्रकाशन भी डाक्टर साहब की महती कृपा से ही सम्भव हुआ। उनका इस सुलभ कृपा के लिये मैं जितनी कृतज्ञता प्रकट करूँ थोड़ी है। डाक्टर साहब को राष्ट्र तथा राष्ट्र भाषा से विशेष प्रेम है। उनकी यह हार्दिक इच्छा रही है कि इस ग्रन्थ माला की समस्त पुस्तकें अलीगढ विश्व विद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा ही प्रकाशित हो और वे इसके लिये बराबर प्रयत्नशील रहे।

इस ग्रन्थ-माला की तैयारी में अलीगढ विश्व विद्यालय के इतिहास विभाग के प्रोफेसर *डा० नूरुल हसन एम० ए०, डी० फिल० (आक्सन) द्वारा मुझे विशेष प्रेरणा तथा सहायता* मिली है। उन्होंने मेरी कठिनाइयों को दूर किया और अपने सत्परामर्श एवं अपनी मृदु आलोचनाओ द्वारा मेरे कार्य को सुचारु बनाने की कृपा की। बहुमूल्य सुझावो तथा सामयिक प्रोत्साहन के लिये मैं उनका विशेष आभारी हू। पुस्तको के मिलने की समस्त कठिनाइयाँ विश्व विद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री सैयिद बशीरुद्दीन की उदार कृपा से दूर होती रही, या यह कहिये कि उनकी कृपा से मुझे पुस्तकों के मिलने मे कठिनाई का अनुभव ही नही हुआ। उनको धन्यवाद देना मेरा परम कर्त्तव्य है। राजनीति विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर मुहम्मद हबीब द्वारा मुझे बराबर प्रोत्साहन मिलता रहा है। इसके लिये मै उनका आभारी हूँ। विश्व विद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर, शेख अब्दुर् रशीद की मेरे ऊपर सदा ही कृपा रही है। मैं उनके तथा रिसर्च और पब्लिकेशन कमेटी के प्रति भी आभार प्रदर्शित करता हू।

आदर्श प्रेस के स्वामी श्री बद्रीप्रसाद शर्मा ने अपने प्रेस कर्मचारियो के सहयोग से इस पुस्तक की छपाई में जिस परिश्रम और उत्साह को प्रदर्शित किया है उसके लिये मैं उनका आभारी हूँ। प्रूफ और छपाई को सारी देखभाल मेरे मित्र श्री श्रवणकुमार श्रीवास्तव एम० ए०, एल० टी० द्वारा बडी सलग्नता से होती रही। इसके लिये मैं उन्हे विशेष धन्यवाद देता हू।

इस अवसर पर मैं भारत सरकार तथा उत्तर प्रदेश सरकार को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने मेरे प्रोत्साहन हेतु खलजी कालीन भारत को पुरस्कृत किया। मै इस माला की पिछली दोनों पुस्तकों के समीक्षको के प्रति भी उनके बहुमूल्य सुझावो के लिये कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

अपने इस कार्य में मुझे अपने सभी मित्रो से हर प्रकार की सहायता मिलती रही है। जिस किसी कालिज में मैं रहा हू वहाँ के हिन्दी तथा सस्कृत के कुछ आचार्यों ने इन पुस्तको की तैयारी में मेरा हाथ बटाया है। स्थानाभाव के कारण मैं उनके नाम नही लिख सका हू किन्तु मुझे विश्वास है कि वे अपने प्रति मेरे भावो से परिचित हैं।

प्रधानाचार्य
राजकीय इण्टर कालिज,
बुलन्दशहर,
अक्तूबर १९५६ ई०

सैयिद अतहर अब्बास रिज़वी,
एम० ए०, पी-एच० डी०
यू० पी० एजूकेशनल सर्विस।

अनूदित ग्रन्थों की समीक्षा

ज़ियाउद्दीन बरनी

तुग़लुक़ कालीन भारत का मुख्य इतिहासकार ज़ियाउद्दीन बरनी[1] है। उसे सुल्तान मुहम्मद के दरबार में बड़ा सम्मान प्राप्त था। वह लिखता है कि इस तारीख़े फ़ीरोज़ शाही का सकलनकर्ता १७ वर्ष तथा ३ मास तक सुल्तान मुहम्मद के दरबार का सेवक रह चुका है। उसे सुल्तान द्वारा अत्यधिक इनाम तथा धन-सम्पत्ति प्राप्त हुआ करती थी[2]। एक अन्य स्थान पर वह लिखता है

"सुल्तान मुहम्मद ने/मुझे आश्रय प्रदान किया था और वह मेरा पोषक था। उसके द्वारा जो इनाम इकराम प्राप्त हो चुका है न इससे पूर्व ही मैंने देखा है और न इसके उपरान्त मैं स्वप्न में देखूँगा[3]।"

उसने किसी स्थान पर इस बात की चर्चा नहीं की कि उसे कौनसा पद प्राप्त था।

---

१ उसके विषय में विस्तार से "आदि तुर्क कालीन भारत" में लिखा जा चुका है (आदि तुर्क कालीन भारत, अलीगढ़ १९५६ ई० पृ० १०१-१२१)। ख़लजी कालीन भारत में ख़लजी वंश से सम्बन्धित उसके इतिहास पर समीक्षा की गई है (ख़लजी कालीन भारत अलीगढ़ १९५५ ई० पृ० ज—म)। इन पृष्ठों में उसके प्रथम दो तुग़लुक़ सुल्तानों के इतिहास की समीक्षा की जाती है।
उसका जन्म सुल्तान बलबन के राज्य काल में ६८४ हि० (१२८५ ८६ ई०) में हुआ। उसने तारीख़े फ़ीरोज़ शाही की रचना ७५८ हि० (१३५७ ई०) में ७४ वर्ष की अवस्था में समाप्त की। इस इतिहास में उसने बलबन के राज्यकाल के आरम्भ से लेकर सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के छठे वर्ष (७५८ हि०, १३५७ ई०) तक का इतिहास लिखा है। उसका नाना सिपेहसालार हुसामुद्दीन बलबन का बहुत बड़ा विश्वासपात्र था। उसके पिता मुईदुलमुल्क तथा उसके चाचा अलाउलमुल्क को सुल्तान जलालुद्दीन ख़लजी तथा सुल्तान अलाउद्दीन के राज्य काल में बड़ा सम्मान प्राप्त था। ज़ियाउद्दीन बरनी ने अपनी बाल्यावस्था में अपने समकालीन बड़े बड़े विद्वानों से शिक्षा प्राप्त की। वह शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया का भक्त था। अमीर ख़ुसरो का बड़ा घनिष्ठ मित्र था। अन्य समकालीन विद्वानों एवम् कलाकारों से भी वह भली भाँति परिचित था। सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तुग़लुक़ के राज्य काल में उसे अपने शत्रुओं के कारण बड़े कष्ट उठाने पड़े। वह अत्यन्त दीन अवस्था को प्राप्त हो गया। कुछ समय तक बन्दी गृह के कष्ट भी भोगे। उसने अपने ग्रन्थों की रचना सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के राज्य काल में ही की, किन्तु उसे कोई भी प्रोत्साहन न मिला और बड़ी ही शोचनीय अवस्था में उसकी मृत्यु हुई। बरनी ने अपने, अपने पूर्वजों तथा अपने इतिहास के विषय में तारीख़े फ़ीरोज़ शाही में भिन्न भिन्न स्थानों पर उल्लेख किया है। (तारीख़े फ़ीरोज़ शाही, कलकत्ता १८६० ६२ ई०) पृ० ६७, ६८, ६६, ८७, ११४, १२३, १२५, १२७, १६८, १८३, २०४, २०५ २०६, २२२, २४०, २४८, २४६, २५०, २५५, २६४, ३४६, ३५०, ३५१, ३५४, ४५६, ४६६, ४६७, ४९७, ५०४, ५०५, ५०८, ५०६, ५१६, ५२१, ५२६, ५४८, ५५४, ५५७, ५६६, ५६७, ५७३, ५८२, ६०२; आदि तुर्क कालीन भारत (अलीगढ़ १९५६ ई०) पृ० १७१, १७२, १७३, १८५, २०३, २०६, २१०, २११, २१३, २२०, (ख़लजी कालीन भारत, अलीगढ़ १९५६ ई०) पृ० ७, ११, १२, २२, ३०, ३६, ४०, ४२, ४६, ४७, ४६, ५०, ५४, ५५, २०५, १०६, १०८,
(तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १) पृ० ३०, ३१, ३३, ३७, ६१, ६२, ६७, ६८, ७१, ७३, ७८, ७६)

२ बरनी पृ० ५०४, तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १, पृ० ६८।

३ बरनी पृ० ४६७, तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १ पृ० ३६।

सम्भवतया वह सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक का नदीम था[१]। आलिमों तथा सूफ़ियों से सम्पर्क स्थापित करने मे उसकी सेवाओं से बड़ा लाभ उठाया जाता होगा[२]। बड़े बड़े अमीर एवम् पदाधिकारी उसके द्वारा अपने प्रार्थना-पत्र सुल्तान की सेवा में प्रस्तुत करते थे[३]। देवगिरि की विजय की बधाई फ़ीरोज़ शाह, मलिक कबीर तथा अहमद अयाज़ ने उसी के द्वारा सुल्तान की सेवा में प्रेषित की[४]।

सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक कठिनाई के समय उससे परामर्श किया करता था। सुल्तान जब अमीराने सदा से युद्ध करने के लिये प्रस्थान करते समय सुल्तानपुर क़स्बे में ठहरा था तो उसने ज़ियाउद्दीन बरनी को बुलवा कर पूछा "तूने बहुत से इतिहासों का अध्ययन किया है। क्या तूने कहीं पढ़ा है कि बादशाह किन किन अपराधों में लोगों को कठोर दन्ड (प्राण दण्ड) दिया करते थे[५] ?" सुल्तान मुहम्मद ज़ियाउद्दीन बरनी के उत्तर से सन्तुष्ट न हुआ।[६] जिस समय सुल्तान देवगिरि के विद्रोह के निराकरण के उपरान्त तग़ी से युद्ध करने के लिये प्रस्थान कर रहा था तो उसने मार्ग में विद्रोहियों के विषय मे वार्त्तालाप प्रारम्भ कर दी। बरनी लिखता है "मैं सुल्तान की सेवा में यह निवेदन न कर सकता था कि प्रत्येक दिशा में विद्रोह तथा अशान्ति का फैलना सुल्तान के हत्याकाण्ड का फल है। यदि वह कुछ समय के लिये हत्या का दण्ड रोक दे तो सम्भव है कि लोग शान्त हो जायँ और साधारणतया विशेष व्यक्ति उससे घृणा करनी कम कर दें।

"मै सुल्तान के क्रोध से भय करता था और उपर्युक्त बात उससे न कह सकता था किन्तु मैं अपने हृदय में सोचता था कि यह एक विचित्र बात है कि जिस बात से उसके राज्य मे उथल पुथल तथा विनाश हो रहा है, वही राज्य तथा शासन को सुव्यवस्थित एवम् उसके उपकार के लिये सुल्तान मुहम्मद के हृदय में नही आती।[७]" देवगिरि के हाथ से निकल जाने के उपरान्त ज़ियाउद्दीन बरनी ने अपनी तथा सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक की वार्त्तालाप का बड़ा मार्मिक उल्लेख किया है। उसने बड़े स्पष्ट शब्दों में सुल्तान को चेतावनी दे दी कि "राज्य के रोगों में सबसे बड़ा तथा घातक रोग यह है कि राज्य के साधारण तथा विशेष व्यक्ति बादशाह से घृणा करने लगें तथा प्रजा का विश्वास बादशाह पर न रहे।" उसने ऐतिहासिक तथ्य के प्रकरण में सुल्तान को राज्य त्याग देने का परामर्श दिया और सुल्तान ने उसे थोड़ा बहुत स्वीकार भी कर लिया।[८]

उसने इतिहास का महत्व तथा उससे लाभ,[९] इतिहास की विशेषता तथा इतिहासकार के कर्त्तव्य[१०] और इतिहास की रचना की शर्तों[११] का उल्लेख तारीख़े फ़ीरोज़ शाही की

---

१ सियुरुल औलिया (मुहिब्बाई प्रेस देहली १८८५ ई०) पृ० ३१२, तारीख़े फ़ीरोज़ शाही (रामपुर पोथी) पृ० २६६ तुग़लुक कालीन भारत भाग १ पृ० ५४।

२ सियुरुल औलिया पृ० २५४, तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १, पृ० १४७।

३ क़ुतलुग़ ख़ाँ ने जो सुल्तान का गुरु था और जिसका सुल्तान बड़ा सम्मान करता था, उसी के द्वारा दभोई तथा बड़ौदा के विद्रोहियों के विरुद्ध युद्धहेतु प्रस्थान करने की अनुमति माँगी थी। बरनी पृ० ५०७ ८, तुग़लुक़ कालीन भारत, भाग १, पृ० ७०।

४ बरनी पृ० ५१६, तुग़लुक़ कालीन भारत, भाग १, पृ० ७५।

५ बरनी पृ० ५१०, तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १, पृ० ७१।

६ बरनी पृ० ५११, तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १, पृ० ७२।

७ बरनी पृ० ५१७; तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १, पृ० ७६।

८ बरनी पृ० ५२२, तग़लुक़ कालीन भारत भाग १, पृ० ७६।

९ बरनी पृ० ६१२; आदितुर्क कालीन भारत भाग १, पृ० १२६—३१।

१० बरनी पृ० १३; आदितुर्क कालीन भारत भाग १, पृ० १३१—३२।

११ बरनी पृ०१५-१६; आदितुर्क कालीन भारत भाग १, पृ० १३४--३५।

भूमिका में किया है। वह लिखता है "इतिहास की रचना करते समय सबसे बड़ी बात, जोकि इतिहासकार के लिये उसकी धर्मनिष्ठता को देखते हुए आवश्यक है, यह है कि बादशाही की प्रतिष्ठा गुणों, उत्तम बातों, न्याय और नेकियों का उल्लेख करे। उसे यह भी चाहिये कि उसकी बुरी बातों, और अनाचार को न छिपाये, इतिहास लिखते समय पक्षपात न करे। यदि उचित देखे तो स्पष्ट अन्यथा संकेत या इशारे से बुद्धिमानों और ज्ञान-सम्पन्न व्यक्तियों को सचेत कर दे। यदि भय अथवा डर के कारण अपने समकालीन बादशाह के विरुद्ध कुछ लिखना सम्भव न हो तो इसके लिये वह अपने आप को विवश समझ सकता है, किन्तु पिछले लोगों के विषय में उसे सच-सच लिखना चाहिये। यदि किसी इतिहासकार को किसी बादशाह या मन्त्री अथवा किसी अन्य व्यक्ति द्वारा कोई कष्ट या दुःख पहुँचा हो तो उसे उस पर ध्यान न देना चाहिये तथा वह किसी की अच्छाई या बुराई सत्य के विरुद्ध न लिखे और न ऐसी घटनाओं का उल्लेख करे जो कभी न घटी हों[१]।" उसने यथा सम्भव तारीखे फीरोज शाही में इस नियम के पालन करने का प्रयत्न किया है। उसने युद्ध तथा विजयों की चर्चा की अपेक्षा बादशाहों तथा अमीरों के पूर्ण व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है किन्तु लोगों के गुणों की प्रशंसा एवम् दोषों का उल्लेख करते समय वह इतना उत्साहित हो जाता है कि वह अपने ही निर्धारित किये हुये नियमों की उपेक्षा करने लगता है।

सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक के इतिहास में उसने उसकी धर्मनिष्ठता, न्याय-प्रियता,[२] सेना के सुप्रबन्ध,[३] प्रजा के हित,[४] कर की वसूली,[५] एवम् दान-पुण्य में संयम,[६] खुसरो खाँ द्वारा लुटाये हुए धन की वापसी[७] और उसके राज्य की विशेषता[८] का बड़ा विशद विवरण दिया है। सुल्तान की कटु आलोचना तथा निन्दा करने वालों का उसने घोर विरोध किया है।[९] उलुग खाँ (सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक) की दक्षिण विजय का हाल संक्षिप्त है[१०] और जाजनगर की विजय का हाल तो केवल दो पंक्तियों में ही समाप्त कर दिया है।[११] इसी प्रकार बरनी ने मुगलों के आक्रमण का अत्यन्त संक्षिप्त उल्लेख किया है। गुजरात पर शादी के आक्रमण का हाल जिसमें पराओ जाति द्वारा उसकी हत्या हुई, बरनी ने नहीं लिखा, और इस घटना को जान बूझ कर छिपाया है। सम्भवतया वह पराओ जाति की विजय, जिन्हें वह नीच समझता था, इतिहास में लिखने के योग्य न समझता था।[१२] उसने अफगान पुर के महल के धराशायी होने का हाल इतना संक्षिप्त लिखा है कि उस पर यह दोष लगाया जाने लगा कि उसने सुल्तान फीरोज शाह के पक्ष के कारण इस दुर्घटना का सविस्तार उल्लेख नहीं किया।[१३]

१ बरनी पृ० २५-२६; आदि तुर्क कालीन भारत पृ० १३४।
२ बरनी पृ० ४२७; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ५-६।
३ बरनी पृ० ४३८-३९; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १४ १५।
४ बरनी पृ० ४३५-३६, ४३६ ४०; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १३-१५।
५ बरनी पृ० ४२६-३२, ४३६; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ७ १०, १५।
६ बरनी पृ० ४३२ ३५; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ११-१२।
७ बरनी पृ० ४३२-३३; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १० ११।
८ बरनी पृ० ४४०-४६; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १६-२०।
९ बरनी पृ० ४३६-३७, ४४०; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १३-१४ १६।
१० बरनी पृ० ४४६-५०; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० २०-२३,।
११ बरनी पृ० ४५०; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० २३।
१२ बरनी पृ० ६; आदि तुर्क कालीन भारत पृ० १०६।
१३ तबक़ाते अकबरी पृ० १६८; मुन्तख़बुत्तवारीख भाग १, पृ० २३५।

सम्भवतया वह सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक का नदीम था[1]। आलिमो तथा सूफियो से सम्पर्क स्थापित करने में उसकी सेवाओ से बडा लाभ उठाया जाता होगा[2]। बडे बडे अमीर एवम् पदाधिकारी उसके द्वारा अपने प्रार्थना-पत्र सुल्तान की सेवा में प्रस्तुत करते थे[3]। देवगिरि की विजय की बधाई फीरोज शाह, मलिक कबीर तथा अहमद अयाज ने उसी के द्वारा सुल्तान की सेवा में प्रेषित की[4]।

सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक कठिनाई के समय उससे परामर्श किया करता था। सुल्तान जब अमीराने सदा से युद्ध करने के लिये प्रस्थान करते समय सुल्तानपुर कस्बे में ठहरा था तो उसने जियाउद्दीन बरनी को बुलवा कर पूछा "तूने बहुत स इतिहासो का अध्ययन किया है। क्या तूने कही पढा है कि बादशाह किन किन अपराधो में लोगो को कठोर दन्ड (प्राण दण्ड) दिया करते थे[5]?" सुल्तान मुहम्मद जियाउद्दीन बरनी के उत्तर से सन्तुष्ट न हुआ।[6] जिस समय सुल्तान देवगिरि के विद्रोह के निराकरण के उपरान्त तगी से युद्ध करने के लिये प्रस्थान कर रहा था तो उसने मार्ग में विद्रोहियो के विषय में वार्त्तालाप प्रारम्भ कर दी। बरनी लिखता है 'मैं सुल्तान की सेवा में यह निवेदन न कर सकता था कि प्रत्येक दिशा मे विद्रोह तथा अशान्ति का फैलना सुल्तान के हत्याकाण्ड का फल है। यदि वह कुछ समय के लिये हत्या का दण्ड रोक दे तो सम्भव है कि लोग शान्त हो जायँ और साधारणतया विशेष व्यक्ति उससे घृणा करनी कम कर दें।

"मैं सुल्तान के क्रोध से भय करता था और उपर्युक्त बात उससे न कह सकता था किन्तु मैं अपने हृदय में सोचता था कि यह एक विचित्र बात है कि जिस बात से उसके राज्य में उथल पुथल तथा विनाश हो रहा है, वही राज्य तथा शासन को सुव्यवस्थित एवम् उसके उपकार के लिये सुल्तान मुहम्मद के हृदय में नही आती।[7]" देवगिरि के हाथ से निकल जाने के उपरान्त जियाउद्दीन बरनी ने अपनी तथा सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक की वार्त्तालाप का बडा मार्मिक उल्लेख किया है। उसन बडे स्पष्ट शब्दो में सुल्तान को चेतावनी दे दी कि "राज्य के रोगों में सबसे बडा तथा घातक रोग यह है कि राज्य के साधारण तथा विशेष व्यक्ति बादशाह से घृणा करन लग तथा प्रजा का विश्वास बादशाह पर न रहे।" उसन ऐतिहासिक तथ्य के प्रकरण में सुल्तान को राज्य त्याग देने का परामश दिया और सुल्तान ने उस थोडा बहुत स्वीकार भी कर लिया।[8]

उसने इतिहास का महत्व तथा उससे लाभ,[9] इतिहास की विशेषता तथा इतिहासकार के कर्त्तव्य[10] और इतिहास की रचना की शर्तों[11] का उल्लेख तारीखे फीरोज शाही की

---

१ सियुरुल औलिया (मुहिब्बे हिन्द प्रेस देहली १८८५ ई०) पृ० ३१२, तारीखे फीरोज शाही (रामपुर पोथी) पृ० २६६ तुगलुक कालीन भारत भाग १ पृ० ५४।

२ सियुरुल औलिया पृ० २५४, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १४७।

३ कतलुग खाँ ने जो सुल्तान का गुरु था और जिसका सुल्तान बड़ा सम्मान करता था, उसी के द्वारा दभोई तथा बडौदा के विद्रोहियों के विरुद्ध युद्ध हेतु प्रस्थान करने की अनुमति माँगी थी। बरनी पृ० ५०७-८, तुगलुक कालीन भारत, भाग १, पृ० ७०।

४ बरनी पृ० ५१६, तुगलुक कालीन भारत, भाग १, पृ० ७५।

५ बरनी पृ० ५१०, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ७१।

६ बरनी पृ० ५११, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ७२।

७ बरनी पृ० ५२७, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ७६।

८ बरनी पृ० ५२२, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ७६।

९ बरनी पृ० ९१२, आदितुर्क कालीन भारत भाग १, पृ० १२६—३१।

१० बरनी पृ० १३; आदितुर्क कालीन भारत भाग १, पृ० १३१—३२।

११ बरनी पृ० १५-१६; आदितुर्क कालीन भारत भाग १, पृ० १३४—३५।

भूमिका में किया है। वह लिखता है "इतिहास की रचना करते समय सबसे बडी बात, जोकि इतिहासकार के लिये उसकी धर्मनिष्ठता को देखते हुए आवश्यक है, यह है कि बादशाही की प्रतिष्ठा, गुणों, उत्तम बातो, न्याय और नेकियो का उल्लेख करे। उसे यह भी चाहिये कि उसकी बुरी बातो, और अनाचार को न छिपाये, इतिहास लिखते समय पक्षपात न करे। यदि उचित देखे तो स्पष्ट अन्यथा सकेत या इशारे से बुद्धिमानो और ज्ञान-सम्पन्न व्यक्तियो को सचेत कर दे। यदि भय अथवा डर के कारण अपने समकालीन बादशाह के विरुद्ध कुछ लिखना सम्भव न हो तो इसके लिये वह अपने आप को विवश समझ सकता है, किन्तु पिछले लोगों के विषय में उसे सच-सच लिखना चाहिये। यदि किसी इतिहासकार को किसी बादशाह या मत्री अथवा किसी अन्य व्यक्ति द्वारा कोई कष्ट या दुख पहुचा हो तो उसे उस पर ध्यान न देना चाहिये तथा वह किसी की अच्छाई या बुराई सत्य के विरुद्ध न लिखे और न ऐसी घटनाओ का उल्लेख करे जो कभी न घटी हो[१]।" उसने यथा सम्भव तारीखे फीरोज शाही में इस नियम के पालन करने का प्रयत्न किया है। उसने युद्ध तथा विजयो की चर्चा की अपेक्षा बादशाहों तथा अमीरो के पूर्ण व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है किन्तु लोगो के गुणो की प्रशसा एवम् दोषो का उल्लेख करते समय वह इतना उत्साहित हो जाता है कि वह अपने ही निर्धारित किये हुये नियमो की उपेक्षा करने लगता है।

सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक के इतिहास में उसने उसकी धर्मनिष्ठता, न्याय-प्रियता,[२] सेना के सुप्रबन्ध,[३] प्रजा के हित,[४] कर की वसूली,[५] एवम् दान-पुण्य में सयम,[६] खुसरो खाँ द्वारा लुटाये हुए धन की वापसी[७] और उसके राज्य की विशेषता[८] का बडा विशद विवरण दिया है। सुल्तान की कटु आलोचना तथा निन्दा करने वालो का उसने घोर विरोध किया है।[९] उलुग खाँ (सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक) की दक्षिण विजय का हाल सक्षिप्त है[१०] और जाजनगर की विजय का हाल तो केवल दो पक्तियो में ही समाप्त कर दिया है।[११] इसी प्रकार बरनी ने मुगलों के आक्रमण का अत्यन्त सक्षिप्त उल्लेख किया है। गुजरात पर शादी के आक्रमण का हाल जिसमें पराओ जाति द्वारा उसकी हत्या हुई, बरनी ने नही लिखा, और इस घटना को जान बूझ कर छिपाया है। सम्भवतया वह पराओ जाति की विजय, जिन्हें वह नीच समझता था, इतिहास में लिखने के योग्य न समझता था।[१२] उसने अफगान पुर के महल के धराशायी होने का हाल इतना सक्षिप्त लिखा है कि उस पर यह दोष लगाया जाने लगा कि उसने सुल्तान फीरोज शाह के पक्ष के कारण इस दुर्घटना का सविस्तार उल्लेख नही किया।[१३]

१ बरनी पृ० १५-१६, आदि तुर्क कालीन भारत पृ० १३४।
२ बरनी पृ० ४२७; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ५-६।
३ बरनी पृ० ४३८-३६; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १४-१५।
४ बरनी पृ० ४३५-३६, ४३६ ४०; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १३-१४।
५ बरनी पृ० ४२६-३२, ४३६; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ७ १०, १५।
६ बरनी पृ० ४३३ ३५; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ११ १२।
७ बरनी पृ० ४३२-३३; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १० ११।
८ बरनी पृ० ४४०-४६; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १६-२०।
९ बरनी पृ० ४३६-३७, ४४०; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १३-१४, १६।
१० बरनी पृ० ४४६-५०; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० २०-२३,।
११ बरनी पृ० ४५०; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० २३।
१२ बरनी पृ० ६; आदि तुर्क कालीन भारत पृ० १२६।
१३ तबक़ाते अकबरी पृ० १६८; मुन्तखबुत्तवारीख भाग १, पृ० २२५।

सम्भवतया वह सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक का नदीम था[1]। आलिमो तथा सूफियो से सम्पर्क स्थापित करने मे उसकी सेवाओ से बडा लाभ उठाया जाता होगा[2]। बडे बडे अमीर एवम् पदाधिकारी उसके द्वारा अपने प्रार्थना-पत्र सुल्तान की सेवा में प्रस्तुत करते थे[3]। देवगिरि की विजय की बधाई फीरोज शाह, मलिक कबीर तथा अहमद अयाज ने उसी के द्वारा सुल्तान की सेवा में प्रेषित की[4]।

सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक कठिनाई के समय उससे परामर्श किया करता था। सुल्तान जब अमीराने सदा से युद्ध करने के लिये प्रस्थान करते समय सुल्तानपुर कस्बे में ठहरा था तो उसने जियाउद्दीन बरनी को बुलवा कर पूछा "तूने बहुत से इतिहासो का अध्ययन किया है। क्या तूने कही पढा है कि बादशाह किन किन अपराधो में लोगो को कठोर दन्ड (प्राण दण्ड) दिया करते थे[5]?" सुल्तान मुहम्मद जियाउद्दीन बरनी के उत्तर से सन्तुष्ट न हुआ।[6] जिस समय सुल्तान देवगिरि के विद्रोह के निराकरण के उपरान्त तगी से युद्ध करने के लिये प्रस्थान कर रहा था तो उसने मार्ग में विद्रोहियो के विषय में वार्त्तालाप प्रारम्भ कर दी। बरनी लिखता है "मैं सुल्तान की सेवा में यह निवेदन न कर सकता था कि प्रत्येक दिशा में विद्रोह तथा अशान्ति का फैलना सुल्तान के हत्याकाण्ड का फल है। यदि वह कुछ समय के लिये हत्या का दण्ड रोक दे तो सम्भव है कि लोग शान्त हो जायें और साधारणतया विशेष व्यक्ति उसमे घृणा करनी कम कर दें।

"मै सुल्तान के क्रोध से भय करता था और उपर्युक्त बात उससे न कह सकता था किन्तु मै अपने हृदय में सोचता था कि यह एक विचित्र बात है कि जिस बात से उसके राज्य में उथल पुथल तथा विनाश हो रहा है, वही राज्य तथा शासन को सुव्यवस्थित एवम् उसके उपकार के लिये सुल्तान मुहम्मद के हृदय मे नही आती।[7]" देवगिरि के हाथ से निकल जाने के उपरान्त जियाउद्दीन बरनी ने अपनी तथा सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक की वार्त्तालाप का बडा मार्मिक उल्लेख किया है। उसने बडे स्पष्ट शब्दो में सुल्तान को चेतावनी दे दी कि "राज्य के रोगो में सबसे बडा तथा घातक रोग यह है कि राज्य के साधारण तथा विशेष व्यक्ति बादशाह से घृणा करन लगे तथा प्रजा का विश्वास बादशाह पर न रहे।" उसन ऐतिहासिक तथ्य के प्रकरण में सुल्तान को राज्य त्याग देने का परामर्श दिया और सुल्तान ने उस थोडा बहुत स्वीकार भी कर लिया।[8]

उसने इतिहास का महत्व तथा उससे लाभ,[9] इतिहास की विशेषता तथा इतिहासकार के कर्त्तव्य[10] और इतिहास की रचना की शर्तो[11] का उल्लेख तारीखे फीरोज शाही की

१ सियुरुल औलिया (मुजतबाई प्रेस देहली १८८५ ई०) पृ० ३१२, तारीखे फ़ीरोज शाही (रामपुर पोथी) पृ० २६६ तुगलुक कालीन भारत भाग १ पृ० ५४।

२ सियुरुल औलिया पृ० २५४, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १४७।

३ कतलुग् खाँ ने जो सुल्तान का गुरु था और जिसका सुल्तान बड़ा सम्मान करता था, उसी के द्वारा दभोई तथा बड़ौदा के विद्रोहियों के विरुद्ध युद्ध हेतु प्रस्थान करने की अनुमति माँगी थी। बरनी पृ० ५०७ ८, तुगलुक कालीन भारत, भाग १, पृ० ७०।

४ बरनी पृ० ५१६, तुगलुक कालीन भारत, भाग १, पृ० ७५।

५ बरनी पृ० ५१०, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ७१।

६ बरनी पृ० ५११, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ७२।

७ बरनी पृ० ५१७, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ७६।

८ बरनी पृ० ५२२; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ७६।

९ बरनी पृ० ९१२; आदितुर्क कालीन भारत भाग १, पृ० १२६—३१।

१० बरनी पृ० १३; आदितुर्क कालीन भारत भाग १, पृ० १३१—३२।

११ बरनी पृ०१५-१६; आदितुर्क कालीन भारत भाग १, पृ० १३४--३५।

भूमिका में किया है। वह लिखता है "इतिहास की रचना करते समय सबसे बडी शर्त, जोकि इतिहासकार के लिये उसकी धर्मनिष्ठता को देखते हुए आवश्यक है, यह है कि बादशाही की प्रतिष्ठा, गुणों, उत्तम बातो, न्याय और नेकियो का उल्लेख करे। उसे यह भी चाहिये कि उसकी बुरी बातो, और अनाचार को न छिपाये; इतिहास लिखते समय पक्षपात न करे। यदि उचित देखे तो स्पष्ट अन्यथा सकेत या इशारे से बुद्धिमानो और ज्ञान-सम्पन्न व्यक्तियो को सचेत कर दे। यदि भय अथवा डर के कारण अपने समकालीन बादशाह के विरुद्ध कुछ लिखना सम्भव न हो तो इसके लिये वह अपने आप को विवश समझ सकता है, किन्तु पिछले लोगों के विषय में उसे सच-सच लिखना चाहिये। यदि किसी इतिहासकार को किसी बादशाह या मत्री अथवा किसी अन्य व्यक्ति द्वारा कोई कष्ट या दुख पहुचा हो तो उसे उस पर ध्यान न देना चाहिये तथा वह किसी की अच्छाई या बुराई सत्य के विरुद्ध न लिखे और न ऐसी घटनाओ का उल्लेख करे जो कभी न घटी हो[१]।" उसने यथा सम्भव तारीखे फीरोज शाही में इस नियम के पालन करने का प्रयत्न किया है। उसने युद्ध तथा विजयो की चर्चा की अपेक्षा बादशाहो तथा अमीरो के पूर्ण व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है किन्तु लोगो के गुणो की प्रशसा एवम् दोषो का उल्लेख करते समय वह इतना उत्साहित हो जाता है कि वह अपने ही निर्धारित किये हुये नियमो की उपेक्षा करने लगता है।

सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक के इतिहास में उसने उसकी धर्मनिष्ठता, न्याय-प्रियता,[२] सेना के सुप्रबन्ध,[३] प्रजा के हित,[४] कर की वसूली,[५] एवम् दान-पुण्य में सयम,[६] खुसरो खाँ द्वारा लुटाये हुए धन की वापसी[७] और उसके राज्य की विशेषता[८] का बडा विशद विवरण दिया है। सुल्तान की कटु आलोचना तथा निन्दा करने वालो का उसने घोर विरोध किया है।[९] उलुग खाँ (सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक) की दक्षिण विजय का हाल सक्षिप्त है[१०] और जाजनगर की विजय का हाल तो केवल दो पक्तियो में ही समाप्त कर दिया है।[११] इसी प्रकार बरनी ने मुगलो के आक्रमण का अत्यन्त सक्षिप्त उल्लेख किया है। गुजरात पर शादी के आक्रमण का हाल जिसमें पराओ जाति द्वारा उसकी हत्या हुई, बरनी ने नही लिखा, और इस घटना को जान बूझ कर छिपाया है। सम्भवतया वह पराओ जाति की विजय, जिन्हे वह नीच समझता था, इतिहास में लिखने के योग्य न समझता था।[१२] उसने अफगान पुर के महल के धराशायी होने का हाल इतना सक्षिप्त लिखा है कि उस पर यह दोष लगाया जाने लगा कि उसने सुल्तान फीरोज शाह के पक्ष के कारण इस दुर्घटना का सविस्तार उल्लेख नही किया।[१३]

१ बरनी पृ० १५-१६; आदि तुर्क कालीन भारत पृ० १३४।
२ बरनी पृ० ४२७; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ५-६।
३ बरनी पृ० ४३८-३९; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १४-१५।
४ बरनी पृ० ४३५-३६, ४३६ ४०; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १३-१५।
५ बरनी पृ० ४२६-३२, ४३६; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ७-१०, १५।
६ बरनी पृ० ४३३-३५; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ११-१२।
७ बरनी पृ० ४३२-३३; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १०-११।
८ बरनी पृ० ४४०-४६; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १६-२०।
९ बरनी पृ० ४३६-३७, ४४०; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १३-१४, १६।
१० बरनी पृ० ४४६-५०; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० २०-२३।
११ बरनी पृ० ४५०; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० २३।
१२ बरनी पृ० ६; आदि तुर्क कालीन भारत पृ० १०६।
१३ तबक़ाते अकबरी पृ० १६८; मुन्तखबुत्तवारीख भाग १, पृ० २२५।

सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के इतिहास का उल्लेख बरनी ने एक विशेष योजना के अनुसार किया है। वह लिखता है "यदि मैं उसके राज्य काल के प्रत्येक वर्ष का हाल लिखूँ, और जो कुछ उस वर्ष में हुआ उसका सविस्तार उल्लेख करूँ तो कई ग्रन्थ हो जायेंगे। मैंने इस इतिहास में सुल्तान मुहम्मद की राज्य व्यवस्था तथा शासन सम्बन्धी समस्त कार्यों का संक्षिप्त उल्लेख किया है। प्रत्येक विजय के आगे पीछे घटने तथा प्रत्येक हाल और घटना के प्रथम या अन्त में घटने पर कोई ध्यान नही दिया है क्योंकि बुद्धिमानों को शासन नीति एवं राज्य व्यवस्था सम्बन्धी कार्यों के अध्ययन से शिक्षा प्राप्त होती है[१]।"

जियाउद्दीन बरनी अपने इतिहास द्वारा अपने समकालीन उच्च वर्ग का पथ प्रदर्शन तथा अपने समकालीन सुल्तान फीरोज शाह के समक्ष एक आदर्श रखना चाहता था। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु उसने फतावाये जहाँदारी[२] नामक पुस्तक की भी रचना की। सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक का इतिहास बरनी ने सुल्तान फीरोज शाह के राज्य काल में लिखा जो सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक का आश्रित था। उस समय बरनी बडे संकट में था। सुल्तान फीरोज शाह से उसे बडी आशायें थी फिर भी उसने सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के व्यक्तित्व का बडा विशद चित्रण किया है। उसके गुणों तथा दोषों का बडे स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है। वह उसकी विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता, योग्यता तथा धर्मनिष्ठता[३] से बडा प्रभावित था किन्तु दूसरी ओर उसके द्वारा निर्दोषों की हत्या[४] से वह बडा दुखी था। वह देखता था कि सुल्तान एक ओर कुलीनता को विशेष महत्त्व देता था और दूसरी ओर कमीनों को उच्च पद प्रदान कर दिया करता था[५]। संक्षेप में वह सुल्तान के विरोधाभासी गुणों[६] को देख कर अपने आपको चकित एवं विस्मित पाता था और उसे संसार के प्राणियों में एक अद्भुत प्राणी कहने पर विवश था।

बरनी ने सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के राज्य काल का उल्लेख जैसा कि उसने स्वयं लिखा है, किसी क्रम से नही किया। उसके वृत्तान्त को पाँच भागों में विभाजित किया जा सकता है—

(१) सुल्तान के चरित्र की समीक्षा।
(२) प्रारम्भिक शासन प्रबन्ध।
(३) सुल्तान की योजनायें।
(४) राज्य में विद्रोह तथा अशान्ति।
(५) अब्बासी खलीफा से सम्बन्ध।

बरनी ने सुल्तान मुहम्मद के चरित्र की समीक्षा अपने इतिहास की भूमिका[७] एवं अन्य स्थानों पर भी की है। उसने उसके गुणों का बडा विशद विवेचन किया है। इसी प्रकार उसने सुल्तान के अत्याचार के कारण भी बताये हैं। उसे खेद था कि युवावस्था में

१ बरनी पृ० ४६७ ६८; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ३७, देखो बरनी पृ० ४७०; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ३८-३६।

२ आदि तुर्क कालीन भारत पृ० १०६ ११७।

३ बरनी पृष्ठ ४५७, ४६३, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृष्ठ २६-३०, ३४।

४ बरनी पृष्ठ ४६५, ४६७; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृष्ठ ३५, ६७।

५ बरनी पृष्ठ ५०३, ५०४; तुगलुक कालीन भरत भाग १, पृष्ठ ३७, ३८।

६ बरनी पृष्ठ ४५६, ४६२ ५०५ ६; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृष्ठ ३१, ३३, ३८, ३६।

७ बरनी पृष्ठ ४५६-६४, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृष्ठ २६-३५।

अधर्मी साद मन्तकी, उबैद कवि, नजम इनतेशार फलसफी के कुप्रभाव ने उसको निर्दयी बना दिया था[१]। इसके साथ साथ उसने अपने समूह के उन आलिमों को भी पूर्ण रूप से दोषी ठहराया है जो उसके समक्ष प्राण के भय अथवा धन के लोभ में सत्य बात न कहते थे[२]। वह लिखता है "हम जैसे कुछ कृतघ्न भी जो थोड़ा बहुत पढ़े लिखे थे और उन विद्याओं को समझते थे जिनसे मनुष्य को यश प्राप्त होता है, ससार के लोभ तथा लालच में पाखडपन करते थे और सुल्तान के विश्वासपात्र होकर शरा के विरुद्ध हत्या काण्ड के सम्बन्ध में सत्य बात सुल्तान के समक्ष न कहते थे। प्राणों के भय से, जोकि नश्वर है तथा धन-सम्पत्ति के लिये जो पतनशील है, आतकित रहते थे और तन्के, जीतल तथा उसका विश्वासपात्र बनने के लोभ मे धर्म के आदेशों के विरुद्ध उसके आदेशों की सहायता करते थे, अप्रमाणित रवायतें पढ़ा करते थे। उनमे से दूसरों का तो मुझे कोई ज्ञान नही, किन्तु मैं देख रहा हू कि मेरे ऊपर क्या बीत रही है। मैं जो कुछ कह चुका था कर चुका हूँ उसका बदला मुझे इस वृद्धावस्था में इस प्रकार मिल रहा है कि मैं ससार में लज्जित, अपमानित तथा पतित हो चुका हूँ। न मेरा कोई मूल्य ही है और न मुझ पर कोई विश्वास ही करता है। मैं दर-दर की ठोकरें खाता हू और अपमानित होता रहता हूँ। मैं नही समझता कि कयामत में मेरी क्या दुर्दशा होगी और मुझे कौन-कौन से कष्ट भोगने पड़ेंगे[३]।"

बरनी ने सुल्तान के प्रारम्भिक शासन प्रबन्ध के सम्बन्ध में केवल खराज की वसूली एवम् अधिकता का उल्लेख किया है[४]। यह विवरण बड़ा ही अपूर्ण है और केवल उसकी महत्वाकाक्षाओ एव योजनाओं की भूमिका के रूप में लिखा गया है। उसने सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक की छ: योजनाओ की चर्चा की है :

(१) दोआब के कर में वृद्धि[५]।
(२) राजधानी का परिवर्तन[६]।
(३) ताँबे की मुद्रा[७]।
(४) खुरासान विजय[८]।
(५) सेना की भर्ती[९]।
(६) कराजिल पर आक्रमण[१०]।

इसमें चौथी और पाँचवी योजनायें एक ही हैं। अन्य योजनाओं का उल्लेख किसी क्रम से नही किया गया है अपितु उसने इन योजनाओ के सामूहिक कुप्रभाव को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। इसी प्रकार राज्य के विभिन्न विद्रोहो का हाल भी बिना किसी क्रम के किया है। उसने केवल चार घटनाओं की तारीखें लिखी हैं.

(१) सुल्तान मुहम्मद का सिहासनारोहण ७२५ हि०[११]।
(२) अब्बासी खलीफा का मनशूर प्राप्त होना ७४४ हि०[१२]।

---

१ बरनी पृ० ४६५; तुग़लुक कालीन भारत भाग १, पृ० ३५।
२ बरनी पृष्ठ ४२६; तुग़लुक कालीन भारत भाग १, पृष्ठ ३६।
३ बरनी पृष्ठ ४६६ ६७, तुग़लुक कालीन भारत भाग १, पृष्ठ ३६।
४ बरनी पृ० ४६८-६६; तुग़लुक कालीन भारत भाग १, पृ० ३७ ३८।
५ बरनी पृष्ठ ४७३, तुग़लुक कालीन भारत भाग १, पृष्ठ ४०-४२।
६ बरनी पृष्ठ ४७३ ७५; तुग़लुक कालीन भारत भाग १, पृष्ठ ४२ ४३।
७ बरनी पृष्ठ ४७५-७६; तुग़लुक कालीन भारत भाग १, पृष्ठ ४३-४४।
८ बरनी पृष्ठ ४७६-७७, तुग़लुक कालीन भारत भाग १, पृ० ४५।
६ बरनी पृष्ठ ४७७; तुग़लुक कालीन भारत भाग १, पृ० ४५-४६।
१० बरनी पृष्ठ ४७७ ७८; तुग़लुक कालीन भारत भाग १, पृ० ४६।
११ बरनी पृष्ठ ४५६; तुग़लुक कालीन भारत भाग १, पृ० २६।
१२ बरनी पृष्ठ ४६१; तुग़लुक कालीन भारत भाग १, पृ० ५८।

(३) सुल्तान का गुजरात की ओर युद्ध हेतु प्रस्थान ७४५ हि०[१]।
(४) सुल्तान की मृत्यु ७५२ हि०[२]।

वह लिखता है "यद्यपि सुल्तान मुहम्मद के समय के षड्यन्त्रो, विद्रोहों, तथा अत्याचारों का उल्लेख क्रमानुसार एव तिथि के अनुसार नही हुआ है और न उनका सविस्तार वर्णन किया गया है, किन्तु मैंने वे सब बातें लिख दी हैं, जिनस पाठको के उद्देश्य की पूर्ति हो सके।[3] उसके इतिहास के अध्ययन से पता चलता है कि विद्रोहो का मुख्य कारण सुल्तान का अत्याचार निष्ठुरता, एव हत्याकाण्ड था। उसके इतिहास से यह भलीभाति स्पष्ट हो जाता है कि प्रजा का विश्वास खो देने पर उस युग में भी राज्य करना कठिन था। प्रजा में आतक फैला कर राज्य अधिक समय तक अपने अधिकार में रखना सम्भव न था।

बरनी ने कुछ विद्रोहो का कोई उल्लेख नही किया। उसने बहाउद्दीन गर्शास्प के विद्रोह की चर्चा नही की जो यहया बिन अहमद तथा अब्दुल कादिर बदायूनी के अनुसार प्रथम विद्रोह था। इसी प्रकार उसने गधियाना की विजय का हाल भी नही लिखा। सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के एक सौतेले भाई मसऊद खाँ के विद्रोह का भी हाल बरनी ने नही लिखा। दोआब के विद्रोह एवम् उसके राज्य काल के अन्त की अशान्ति का हाल उसन बडे विस्तार से लिखा है। अकाल के कष्टा एवम् सुल्तान द्वारा प्रजा के परोपकार का बरनी ने बडा विशद विवरण दिया है। उसने सुल्तान की कृषि की उन्नति से सम्बन्धित योजनाओ की हँसी उडाई है, किन्तु उनके अध्ययन से पता चलता है कि वे इतनी असम्भव न थी, जितनी लोगो ने समझ ली थी।

अब्बासी खलीफाओ से बैअत का हाल भी बरनी ने बडे उत्साह से लिखा है। अब्बासी खलीफाओ के प्रति उसकी श्रद्धा तथा विनम्रता, बरनी और उसके समकालीन सभी लोगो को आश्चर्यजनक ज्ञात होती थी। परदेसियो के प्रति सुल्तान की उदारता भी उस समय के सभी लोगो को एक विचित्र सी बात ज्ञात होती थी।

बरनी द्वारा रचित सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक एवम् मुहम्मद बिन तुगलुक के इतिहास की तुलना करने से पता चलता है कि वह उसके पिता की धर्मनिष्ठता की भूरि भूरि प्रशसा करते समय सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के स्वतन्त्र विचारों को नही भूला है। सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक के दान की प्रशसा करते समय बरनी सयम तथा सन्तुलन को बडा महत्त्व देता है और सुल्तान मुहम्मद के दान को अपव्यय बताता है।

सुल्तान से निकटतम सम्पर्क होने तथा अपनी विचित्र शैली के कारण जियाउद्दीन बरनी बहुत बडी सीमा तक अपने भाव के प्रवाह में बहता हुआ दिखाई पडता है। वह स्वयम् उस नाटक का पात्र था। उसने केवल घटनाओ का उल्लेख ही नही किया अपितु उसने अपनी समकालीन उन समस्याओ का विश्लेषण भी किया है जिनसे उसे रुचि थी अथवा जिनसे वह किसी प्रकार सम्बन्धित था। अत उसकी समीक्षा को बिना निष्पक्ष रूप से जाँचे हुए स्वीकार नही किया जा सकता। वह आलिमो तथा सूफिया के वर्ग का एक सदस्य था। राजनीति में उसका एव विशेष धार्मिक दृष्टिकोण भी था और इतिहास लिखते समय वह विचित्र आर्थिक सकट और मानसिक उलझन में ग्रस्त था, जिसकी छाप साधारणतया उसके पूरे इतिहास में और विशेष रूप से तुगलुक कालीन इतिहास में पाई जाती है।

१ बरनी पृ० ५०७, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ७०।
२ बरनी पृ० ५२५, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ८१।
३ बरनी पृ० ४७८; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ४७।

एसामी

एसामी भी सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक शाह् का समकालीन था। उसके पूरे नाम का कोई ज्ञान नही। उसके पूर्वजों में से सर्व प्रथम फ़ख़रुलमुल्क एसामी देहली पहुँचा। वह बगदाद के ख़लीफाओं का वज़ीर रह चुका था। अन्त में एक ख़लीफा से रुष्ट होकर उसने अपने सहायकों तथा परिवार सहित हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान किया और मुल्तान पहुँचा। उसके कुछ सहायक मुल्तान में रह गये और कुछ लोग देहली चल दिये। सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश ने उसे अपना वज़ीर नियुक्त कर दिया[1]। फ़ख़रुलमुल्क एसामी का एक पुत्र सद्रुलकिराम एसामी सुल्तान नासिरुद्दीन के राज्य काल में वकीलदर नियुक्त हो गया था और उसकी उपाधि ज़हीरुल ममालिक हो गई थी[2]। सद्रुलकिराम एसामी का पुत्र सिपह सालार इज़्ज़ुद्दीन एसामी, सुल्तान बल्बन के राज्य काल में ख़ास हाजिब नियुक्त हो गया था[3]। वह बल्बन के राज्य काल में अथवा ख़लजी शासन काल में सिपह सालार नियुक्त हुआ होगा।

उसका जन्म ७११ हि० (१३११-१२ ई०) के लगभग हुआ था। उसका पालन पोषण उसके दादा इज़्ज़ुद्दीन एसामी ने किया था। सम्भवतया उसके पिता का देहान्त उसकी बाल्यावस्था में ही हो गया होगा अन्यथा वह उसका उल्लेख अवश्य करता। सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह् के राज्य काल में उसके इनाम के दो गाँव छीन लिये गये[4]। सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक शाह् के राज्य काल में उसे युवावस्था ही में अपने दादा के साथ देहली से देवगिरि की ओर प्रस्थान करना पड़ा। पहले ही पड़ाव पर उसके दादा की मृत्यु हो गई[5]। अन्य लोगों के साथ वह भी कष्ट भोगता हुआ देवगिरि पहुचा।

एसामी के कोई सन्तान न थी। पुस्तक की रचना के पूर्व जब उसने हिन्दुस्तान छोड़ कर हज के लिये प्रस्थान करने का दृढ संकल्प कर लिया तो उसने इस काव्य की रचना करना भी निश्चय कर लिया जिससे वह अपनी जन्म भूमि में अपना कोई स्मृति-चिह्न छोड़ जाय[6]। इस समय वह अपनी अवस्था के चालीसवें वर्ष में प्रविष्ट हुआ था। उसने फ़ुतूहुस्सलातीन की रचना २७ रमज़ान ७५० हि० (९ दिसम्बर १३४९ ई०) को प्रारम्भ की और ६ रबी-उल-अव्वल ७५१ हि० (१४ मई १३४९ ई०) को[7] ५ मास तथा ९ दिन में इसे समाप्त कर दिया[8]। उसने इस काव्य में फिरदौसी तूसी[9] तथा निज़ामी गंजवी[10] का अनुकरण

१ एसामी—फ़ुतूहुस्सलातीन पृष्ठ १२७-२८।

२ एसामी पृष्ठ १४७-४८, ४४८।

३ बरनी पृ० ३६; आदि तुर्क कालीन भारत पृष्ठ १५०।

४ एसामी पृष्ठ ४६१; तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १, पृ० ८३-८४।

५ एसामी पृष्ठ ४४७-४८; तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १, पृष्ठ ९९-१००।

६ एसामी पृ० २०-२२।

७ एसामी पृष्ठ ६१८; तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १, पृष्ठ १४१।

८ एसामी पृ० ६१३ तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १, पृ० १४०।

९ अबुल कासिम हसन बिन शरफ़ शाह फ़िरदौसी तूसी शाहनामे का प्रसिद्ध लेखक। उसकी मृत्यु १०२० ई० में हुई।

किया है और सुल्तान महमूद गजनवी के समय से लेकर अपने समकालीन सुल्तान अलाउद्दीन बहमन शाह तक के राज्य काल का हाल लिखा है। वह लिखता है, 'मैंने जो कुछ लोगो से सुना एव पुस्तको में पाया उसे इस पुस्तक में लिखा। प्राचीन कहानियो की सत्यता के अन्वेषण में मैं ने बडा परिश्रम किया। हिन्दुस्तान के बादशाहो का हाल बुद्धिमान मित्रो द्वारा ज्ञात कराया। सभी के विषय में इतिहासो को पढा[1]।" इस प्रकार एसामी ने जो कुछ लिखा है वह बडी छान बीन के उपरान्त लिखा है। इसके इतिहास द्वारा पता चलता है कि बहुत से ग्रन्थ, जो एसामी को उपलब्ध थे, अब अप्राप्य हैं अत उसकी कृति को बडा महत्त्व प्राप्त है।

बरनी की अपेक्षा, एसामी ने सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक के राज्य काल की घटनाओ का हाल अधिक विस्तार से लिखा है। उलुग खाँ (सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक) के तिलग पर आक्रमण के सम्बन्ध में कई ऐसी घटनाओ का उल्लेख किया है[2] जो सम्भव है, ठीक ही हो और जिनके विषय में एसामी को दक्षिण में ज्ञान प्राप्त हुआ होगा। एसामी ने उलुग खाँ के जाजनगर पर आक्रमण का हाल तथा मुगलो के आक्रमण की चर्चा विस्तार से की है[3]। गुजरात पर शादी दादर के आक्रमण, पराओ की वीरता तथा शादी की हत्या का एसामी ने बडा विशद चित्रण किया है।[4] बरनी ने इस घटना को सम्भवतया जान बूझ कर छिपाया है।

सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक ने एसामी के पूर्वजो के दो ग्राम जब्त कर लिये थे[5]। एसामी का कथन है कि उसके पूवजो को वे ग्राम बहुत समय से प्राप्त थे और सम्भवतया इन ग्रामो को उस सूची में सम्मिलित नही किया जा सकता था जो खुसरो खाँ द्वारा बिना किसी अधिकार के प्रदान हुये थे और जिनकी आलोचना उसने भी की है। बरनी ने सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह के दान के सयम एव सतुलन की बडी प्रशसा की है[6]। अत एसामी के पूर्वजो के ग्रामो का छीना जाना पूर्णतया अन्याय बताना कठिन है[7]।

सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक द्वारा तो एक प्रकार से उसका सब कुछ नष्ट हो गया। इस कारण उसका सुल्तान के प्रति क्रोध बडा स्वाभाविक है। अफगानपुर के महल की दुर्घटना के एसामी ने दो कारण बताये हैं (१) हाथियो का दौडाया जाना। (२) अत्याचारी तथा धूर्त्त शाहज़ादे से मिलकर यह षड्यन्त्र कि महल के निर्माण में ऐसा तिलिस्म (कारीगरी) रक्खा जाय कि सुल्तान जैसे ही उसके नीचे बैठे वह छत बिना किसी प्रयत्न के गिर पडे।[8] तिलिस्म शब्द के अशुद्ध अनुवाद के कारण कुछ बाद के तथा आधुनिक इतिहासकार इस महल को जादू से बना हुआ लिखने लगे।

एसामी ने सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के राज्य काल के प्रारम्भ की कुछ ऐसी घटनाओ का भी उल्लेख किया है 'जिनकी चर्चा बरनी के इतिहास में नही पायी जाती। कलानूर तथा फरनूर (पेशावर) की विजय का हाल अन्य समकालीन इतिहासो में

१ एसामी पृ० ३१४ १५, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १४०।
२ एसामी पृ० ३९१–४००, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ८४–८६।
३ एसामी पृ० ४०१–४०८, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ८७ ८८।
४ एसामी पृ० ४०८–४११ तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ८८–८९।
५ एसामी पृ० ३८६ ३९१, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ८३ ८४।
७ बरनी पृ० ४३२–३५, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १० १२।
६ एसामी पृ० ३८६ ९१, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ८३ ८४।
८ एसामी पृ० ४२०, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ९१।

नहीं मिलता। गर्शास्प के विद्रोह का हाल ऐसामी ने बड़े विस्तार से लिखा है[1]। इब्ने बत्तूता ने इस घटना के विषय में जो कुछ लिखा है[2] वह एसामी के विवरण से बहुत कुछ मिलता जुलता है। समकालीन इतिहासकारों में केवल एसामी ही ने गधियाना की विजय का उल्लेख किया है[3]। बहराम ऐबा के विद्रोह के सम्बन्ध में भी एसामी ने बहुत सी ऐसी बातें लिखी हैं जो केवल उसी के इतिहास में पाई जाती है[4]।

एसामी ने देहली से देवगिरि पहुच जाने के उपरान्त सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक शाह के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं किया। जहाँ कहीं भी सुल्तान का नाम आ जाता है उसका क्रोध उबल पड़ता है। वह प्रत्येक विद्रोह का समर्थन करता है तथा प्रत्येक विद्रोही की भूरि-भूरि प्रशंसा करता है। जो लोग सुल्तान की सहायता करते थे, उन्हें वह अत्याचारी का सहायक बता कर कलंकित करता है। सुल्तान के आदेशों का पालन करने वालो तथा उसके विरुद्ध विद्रोह न कर देने वालो की वह घोर निन्दा करता है। वह लिखता है, "यदि देहली वाले उसके आदेशों का पालन न करते तो वे इतने कष्ट में न पड़ते। ऐसे लोगों को इसी प्रकार का फल भोगना पड़ता है। जो कोई अत्याचारी पर दया करता है तो वही उसका सिर मिट्टी में मिला देता है। लोगो ने एक उपद्रवी को अपना बादशाह बना लिया और उसी समय से युद्ध न किया। यदि कोई सरदार उस उपद्रवी के विरुद्ध किसी प्रदेश में अपनी पताका उठाता है तो बहुत से अयोग्य उस उपद्रवी (सुल्तान) की सहायता करने लगते हैं और उस व्यक्ति का साथ नहीं देते। यह दुष्ट अत्याचारी (सुल्तान) संसार भर में अकाल तथा अत्याचार उत्पन्न कर रहा है। यदि इस देश के सब लोग संगठित हो जायें और उस पर आक्रमण करदें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं यदि उसका सिर मिट्टी में मिल जाय[5]।" इस प्रकार से सर्व साधारण को उत्साहित करने तथा राज्य के विरुद्ध विद्रोह करने की शिक्षा मध्यकालीन साहित्य में बहुत कम दिखाई पड़ती है।

एसामी ने सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के विरुद्ध अन्धाधुन्ध दोषारोपण किये हैं। ताँबे के सिक्कों का उल्लेख करते हुये उसने कल्पित लोहे तथा चमड़े के सिक्कों और उनके कुप्रभाव की भी चर्चा की है।[6] अब्बासी खलीफा द्वारा अधिकार-पत्र प्राप्त होने के पूर्व शुक्रवार तथा ईदो की नमाजें बन्द कराने से सम्बन्धित जो आदेश सुल्तान ने दिये थे उसका उल्लेख एसामी ने इस प्रकार किया है: "उसने इस्लाम के नियम त्याग दिये थे और कुफ्र प्रारम्भ कर दिया था। उसने अजान बन्द करा दी थी। मुसलमान रात दिन उससे घुला करते थे। उसने जुमे की जमाअत (का नमाज) भी रुकवा दी थी[7]। उसने हिन्दुस्तान की प्रशंसा करते हुये सुल्तान अलीउद्दीन खलजी तथा सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक की तुलना की है, और सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक शाह की घोर निन्दा तथा सुल्तान अलाउद्दीन खलजी का गुण-गान किया है[8]। इस प्रकार एसामी ने सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक शाह के चरित्र की जो समीक्षा की है उसे अधिक महत्व नहीं दिया जा सकता, इस लिये कि वह सुल्तान से अत्यन्त रुष्ट था।

१ एसामी पृ० ४२४-३१; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ६२ ६५।
२ इब्ने बत्तूता पृ० ३१८-२२; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० २१५ १७।
३ एसामी पृ० ४३२-३३; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ६५।
४ किशलू खाँ तथा सुल्तान का पत्र व्यवहार, लाला बहादुर तथा लाला करंग का युद्ध, सुल्तान मुहम्मद का युद्ध, (एसामी पृ० ४३६-४२ तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ३६-३८)
५ एसामी पृ० ४५१-५२; ५१५, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १०१, ११७-१८।
६ एसामी पृ० ४५६-६०; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १०२ ३।
७ एसामी पृ० ५१५; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ११८।
८ एसामी पृ० ६०४-६; तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० १३८ ३६।

इस काल से सम्बन्धित एसामी की कृति का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण भाग दक्षिण का इतिहास है। सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक शाह ने देवगिरि के शासन सम्बन्धी सभी अधिकार अपने गुरु कुतलुग खाँ को प्रदान कर दिये थे। कुतलुग की वीरता तथा योग्यता की बरनी ने भी बडी प्रशसा की है[1]। एसामी भी उसके गुणो से बडा प्रभावित था[2]। कुतलुग खाँ द्वारा अनेक विद्रोहो के शान्त किये जाने का उल्लेख एसामी ने बडे निष्पक्ष भाव से किया है। हसन काँगू द्वारा बहमनी राज्य की स्थापना तथा बहमनी राज्य का प्रारम्भिक हाल एसामी ने बडे विस्तार से लिखा है। बहमनी राज्य के अमीरों की उसने बडी प्रशसा की है। उनके कारनामों का उसने बडा विशद चित्रण किया है। उसने अपनी रचना सुल्तान अलाउद्दीन बहमन शाह को समर्पित की। वह उसे देवगिरि का मुक्तिदाता समझता था।

बद्रे चाच

सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के दरबार के कवियों में बद्रे चाच को बडी प्रसिद्धि प्राप्त थी। वह आधुनिक ताशकन्द का निवासी था और उसने सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक की प्रशसा में बहुत से कसीदो की रचना की। इनके अतिरिक्त उसने सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के विषय में शाहनामे नामक कविता की भी रचना की[3]। इस पुस्तक के एक छन्द द्वारा पता चलता है कि उसने इसे ७४५ हि० (१३४४-४५ ई०) में पूर्ण किया। उसकी मृत्यु ७४६ हि० (१३४५-४६ ई०) के बाद हुई होगी।

उसके कसीदों तथा अन्य कविताओं के अध्ययन से पता चलता है कि दरबारी कवि होने के साथ-साथ उसे कभी-कभी अन्य शाही सेवाओ के लिये भी नियुक्त कर दिया जाता था। ८ दिसम्बर १३४४ ई० को वह कुतलुग खाँ को बुलाने के लिये दौलताबाद भेजा गया। दरबारी कवि होने के कारण उसने सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक की भूरि भूरि प्रशसा की है किन्तु उनमें साधारणतया ऐसे शब्दो का प्रयोग किया है जो सभी फारसी कवि कसीदो में प्रयोग किया करते थे। अतः उसके कसीदों के आधार पर सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के चरित्र के विषय में निर्णय नही दिया जा सकता। उसकी कवितायें भी अधिक उच्च कोटि की नही और उसकी शैली बडी ही जटिल तथा भ्रमात्मक है किन्तु उसने भिन्न-भिन्न अवसरो पर जो कवितायें तथा कसीदे लिखे उनके द्वारा विभिन्न घटनाओ का समय निर्धारित करने में बडी सुगमता होती है और इसी बात ने उसकी कविताओं को अत्यधिक मूल्यवान तथा महत्त्वपूर्ण बना दिया है।

अमीर खुर्द—

सैयिद मुहम्मद मुबारक अलवी किरमानी, जो अमीर खुर्द के नाम से प्रसिद्ध है, सुल्तानुल मशायख शेख निजामुद्दीन औलिया का चेला था। उसका पालन पोषण तथा शिक्षा दीक्षा शेख निजामुद्दीन औलिया की छत्र-छाया में हुई[4]। उसके दादा, पिता तथा चाचा आदि के शेख फरीदुद्दीन गज शकर तथा शेख निजामुद्दीन औलिया से बडे घनिष्ठ सम्बन्ध थे[5]। उसका दादा सैयिद मुहम्मद महमूद किरमानी व्यापारी था और किरमान[6] से लाहौर आया

१ बरनी पृ० ५१२, तुगलुक कालीन भारत भाग १ पृ० ६६।

२ एसामी पृ० ५१३, तुगलुक कालीन भारत भाग १, पृ० ११४।

३ रियू, ब्रिटिश म्यूजियम की फारसी हस्तलिखित पुस्तकों की सूची पृष्ठ १०३२।

४ सियरुल औलिया (देहली १३०२ हि० ८८४-८५ ई०) पृष्ठ २५६।

५ सियरुल औलिया पृष्ठ २१६।

६ किरमान—[illegible]

करता था। लौटते समय वह शेख फरीदुद्दीन गंज शकर से भेंट करने जाया करता था[१]। अन्त में वह शेख से अत्यधिक प्रभावित होने के कारण अजोधन ही में निवास करने लगा[२]। शेख फरीद के निधन के उपरान्त वह तथा उसके पुत्र, शेख निज़ामुद्दीन औलिया के साथ रहने लगे।

सैयिद मुहम्मद किरमानी की ७११ हि० (१३११-१२ ई०) में मृत्यु हो गई। उसका ज्येष्ठ पुत्र सैयिद नूरुद्दीन मुबारक, अमीर खुर्द का पिता था। सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक शाह के देहली निवासियों के निर्वास के समय अमीर खुर्द तथा उसके पिता और चाचा को भी दौलताबाद जाना पड़ा। ७३२ हि० (१३३१-३२ ई०) मे जब ख्वाजये जहाँ अहमद अयाज़ हिन्दुस्तान का वज़ीर नियुक्त हुआ तो उसने देवगिरि की ओर प्रस्थान करने के समय अमीर खुर्द के मझले चाचा सैयिद कुतुबुद्दीन हुसेन को अपने साथ देवगिरि चलने पर विवश किया। सैयिद ने दो शर्तों पर चलना स्वीकार किया (१) उसे सैयिदा तथा सूफिया के वस्त्र धारण करने की अनुमति रहे (२) उसे राज्य की किसी सेवा को स्वीकार करने पर विवश न किया जाय। यद्यपि ख्वाजयें जहाँ ने दोनो शर्तें स्वीकार करलीं किन्तु सैयिद के जीवन का वह आनन्द समाप्त हो गया[३]। अमीर खुर्द के सबसे छोटे चाचा शम्सुद्दीन सैयिद ख़ामोश की ७३२ हि० (१३३१-३२ ई०) में युवावस्था में देवगिरि ही में मृत्यु हुई[४]।

उसके सबसे बड़े चाचा सैयिद कमालुद्दीन अमीर अहमद को सेना में एक उच्च पद तथा अक्ता प्राप्त थी। एक बार सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक शाह ने उसे देवगिरि के निकट भाक्सी के बन्दीगृह[५] मे डलवा दिया। जब उसे मुक्ति प्राप्त हुई और वह सूफियों के वस्त्र में सुल्तान के पास पहुँचा तो सुल्तान ने इसका कारण पूछा। उसने उत्तर दिया कि 'हम मुहम्मद साहब की सन्तान का यही दिखावे का अनुकरण करते थे। उसे भी त्याग कर दड भोग चुके।" सुल्तान ने उत्तर दिया "तू हमसे इस बहाने से भागना चाहता है और हम तुम लोगों के परामर्श से राज्य व्यवस्था का सचालन करना चाहते हैं।" सुल्तान ने उसे उसी वस्त्र मे छोड दिया (पहिनने की अनुमति देदी) और उसे बडा प्रतिष्ठित मलिक बना दिया। सुल्तान उससे परामर्श किया करता था[६]।

अमीर खुर्द का इस प्रकार अपने समकालीन सूफियो ही से सम्पर्क न था, अपितु उसे अमीरो तथा राज्य के अधिकारियो के विषय मे भी ज्ञान प्राप्त होता रहता होगा। उसने सियरुल औलिया में शेख निज़ामुद्दीन औलिया के गुरुओं, उनके समकालीन सूफियो शेख निज़ामुद्दीन औलिया का तथा उनके चेलो एव उनसे सम्बन्धित अन्य समकालीन व्यक्तियो

१ सियरुल औलिया पृष्ठ २१८।
२ सियरुल औलिया पृष्ठ २१६।
३ सियरुल औलिया पृष्ठ २१८।
४ सियरुल औलिया पृष्ठ २२१।
५ इस बन्दीगृह का अमीर खुर्द ने उल्लेख इस प्रकार किया है, 'जो कोई इस बन्दीगृह में बन्दी बनाया जाता वह सर्पो तथा बिल्ली के समान चूहों के कारण जीवित न रहता। जब तक सैयिद उस बन्दी गृह में रहे तब तक वे उसे किसी प्रकार की हानि न पहुंचा सके। रात्रि में परमेश्वर की कृपा से उनकी शृंखलायें खुल जातीं। वे बन्दी गृह के अधिकारियों को बुला कर दिखा देता कि मैंने किसी प्रकार इन्हें पृथक् नहीं किया। ईश्वर की कृपा से ये पृथक् हो जाती हैं। उन लोगों ने कुछ दिन तक यह हाल देखकर सुल्तान को यह सूचना दी। सुल्तान ने आदेश दिया कि 'उसे मुक्त करके मेरे पास भेज दिया जाय।' (सियरुल औलिया पृष्ठ २१५) इब्ने बत्तूता ने भी देवगिरि के किले के बन्दीगृह के चूहों के विषय में यही लिखा है।
६ सियरुल औलिया पृष्ठ २१५।

अव्वल ७४६ हि० (२१ सितम्बर १३४५ ई०) को वह बटाला पहुचा। सोमवार २८ जमादी-उल-अव्वल, ७४६ हि० (२६ सितम्बर १३४५ ई०) को वह सलवात पहुँचा। वृहस्पतिवार १ जमादी-उस्-सानी ७४६ हि० (२९ सितम्बर १३४५ ई०) को वह कुनाकर पहुचा। रविवार ११ जमादी-उस्-सानी ७४६ हि ०(९ अक्तूबर १३४५ ई०) को वह कालो पहुचा। वृहस्पतिवार १५ जमादी-उस्-सानी ७४६ हि० (१३ अक्तूबर १३४५ ई०) को वह कोलम्बो पहुँचा। सोमवार १९ जमादी-उस्-सानी ७४६ हि० (१७ अक्तूबर १३४५ ई०) को वह बटाला पहुंचा। मगलवार २७ जमादी-उस्-सानी ७४६ हि० (२५ अक्तूबर १३४५ ई०) को वह हरकातू पहुचा। रविवार १० रजब ७४६ हि० (६ नवम्बर १३४५ ई०) को वह पट्टन पहुँचा। रविवार १५ शाबान ७४६ हि० (११ दिसम्बर १३४५ ई०) को वह मदूरा पहुँचा। बुद्धवार १७ रमजान, ७४६ हि० (११ जनवरी, १३४६ ई०) को वह पट्टन पहुचा। शुक्रवार २६ रमजान ७४६ हि० (२० जनवरी १३४६ ई०) को वह कुईलून पहुँचा। यहाँ पर वह ३ मास तक ठहरने का उल्लेख करता है। वृहस्पतिवार ४ मुहर्रम ७४७ हि० (२७ अप्रैल १३४६ ई० को वह पोजिलोन द्वीप पहुचा जहाँ उसे लूट लिया गया। मगलवार ९ मुहर्रम ७४७ हि० (२ मई १३४६ ई०) को वह कालीकट पहुचा (छठी बार आगमन)। वृहस्पतिवार २५ मुहर्रम, ७४७ हि० (१८ मई १३४६ ई०) को वह कन्नालूस पहुचा (द्वितीय बार आगमन)। शुक्रवार ३ सफर ७४७ हि० (२६ मई १३४६ ई०) को वह महल पहुचा (द्वितीय बार आगमन)। रविवार १८ रबी-उल-अव्वल ७४७ हि० (९ जुलाई १३४६ ई०) को वह चिट्टागांग पहुचा। रविवार ९ रबी-उस्-सानी ७४७ हि० (३० जुलाई १३४६ ई०) को वह कमरू पहुँचा। वृहस्पतिवार २० रबी-उस्-सानी ७४७ हि० (१० अगस्त १३४६ ई०) को वह हबक पहुचा। सोमवार २४ रबी-उस्-सानी ७४७ हि० (१४ अगस्त १३४६ ई०) को वह सुनार गाँव पहुँचा। वहाँ से निरन्तर चीन, मक्का, मिस्र, ट्यूनिस आदि देशों में होता हुआ २३ शाबान ७५० हि० (६ नवम्बर १३४९ ई०) को वह फेज पहुचा और वहाँ से तनजीर गया।[1]

वहाँ से उसने फिर स्पेन की यात्रा की। मराको के सुल्तान अबू इनआन मरीनी ने उसे विशेष प्रोत्साहन प्रदान किया और जिन जिन देशो को उसने देखा था, उनका हाल लिखवाने का उसे आदेश दिया। तदनुसार उसने अपनी विचित्र तथा आश्चर्यजनक यात्रा का हाल लिखवाया। इसके उपरान्त सुल्तान ने मुहम्मद इब्ने (पुत्र) मुहम्मद इब्ने (पुत्र जुजये[2] अल कलबी को मूल पुस्तक को पूर्णतया ध्यान मे रखते हुये सुन्दर रूप में सकलित करने का आदेश दिया। उसने सुल्तान के आदेशानुसार शेख अबू अब्दुल्लाह के विचारो को साफ तथा प्रभावशाली भाषा में लिखा। कही-कही उसने शेख के शब्दो तथा वाक्यो को बिना किसी परिवर्तन के उसी प्रकार रहने दिया। इसका सकलन ७५६ हि० (१३५५-५६ ई०) में समाप्त हुआ। एक हस्तलिखित पोथी के अनुसार इस यात्रा का नाम 'तुहफ्तुन्नुज्जार फी ग़राइबिल अमसार व अजाइबुल असफार" रखा गया।

भौगोलिक विवरण—

इब्ने बतूता ने भारतवर्ष की भौगोलिक स्थिति, यहाँ की जलवायु, फल-फूल, वनस्पति, पशुओ तथा वेश भूषा और रहन सहन कृषि एव व्यापार के विषय में विस्तार से लिखा है। यह जिस नगर में भी पहुँचा उसका उसने बडी गहन दृष्टि से अध्ययन किया। उसकी यात्रा

१ यह विवरण रेहला मे लिया गया है (पृ० LXIV-LXXI)

२ उसका जन्म शव्वाल ७२१ हि० (अक्तूबर, १३२१ ई०) में ग़रनाते में हुआ था। उसकी मृत्यु शव्वाल ७५७ हि० (अक्तूबर, १३५६ ई०) में फेज में हुई। वह बहुत बड़ा विद्वान, कवि, इतिहासकार, फ़कीह, मुहद्दिस तथा शब्द-शास्त्रज्ञ था। मराको के सुल्तान अबू इनआन मरीनी का वह बहुत बड़ा कृपापात्र था।

१३४२ ई०) को बुरफत्तन पहुचा। मगलवार २ शाबान ७४३ हि० (३१ दिसम्बर १३४२ ई०) को दहफत्तन पहुचा। मगलवार २ शाबान, ७४३ हि० (३१ दिसम्बर १३४२ ई०) को बुदफत्तन पहुँचा। बुद्धवार ३ शाबान ७४३ हि० (१ जनवरी १३४३ ई०) को पन्देरानी (फन्दरियाना) पहुचा। बृहस्पतिवार ४ शाबान ७४३ हि० (२ जनवरी १३४३ ई०) का कालीकट (प्रथम आगमन) पहुँचा। यहाँ वह ८८ दिन ठहरा अर्थात् ४ शाबान ७४३ हि० (२ जनवरी १३४३ ई०) से ३ जीकाद ७४३ हि० (२९ मार्च १३४३ ई०) तक। बृहस्पतिवार ७ जीकाद ७४३ हि० (३ अप्रैल १३४३ ई०) को वह कुन्जकरी पहुँचा। सोमवार ११ जीकाद ७४३ हि० (७ अप्रैल १३४३ ई०) को कुईलून पहुचा। मगलवार १२ जीकाद ७४३ हि० (८ अप्रैल, १३४३ ई०) को वह कालीकट पहुँचा (द्वितीय आगमन)। मगलवार २६ जीकाद ७४३ हि० (२२ अप्रैल १३४३ ई०) को वह हिनौर पहुँचा (द्वितीय बार आगमन)। यहाँ वह तीन मास तक ठहरा। बृहस्पतिवार १ रबी-उल-अव्वल ७४४ हि० (२४ जुलाई १३४३ ई०) को वह सन्दापुर पहुँचा (द्वितीय बार आगमन)। यहाँ वह अपने आतिथ्य सत्कार करने वाले हिनौर के राजा की ओर से एक समुद्रीय युद्ध में सम्मिलित हुआ और सन्दापुर में १३ जमादी-उल-अव्वल से १५ शाबान (७४४ हि०) तक ठहरा। शनिवार १६ शाबान ७४४ हि० (३ जनवरी १३४४ ई०) को वह हिनौर पहुँचा (तीसरी बार आगमन)। रविवार १७ शाबान ७४४ हि० (४ जनवरी १३४४ ई०) को वह फाकनूर पहुचा। रविवार १७ शाबान ७४४ हि० (४ जनवरी १३४४ ई०) को वह मन्जरूर पहुँचा। सोमवार १८ शाबान ७४४ हि० (५ जनवरी १३४४ ई०) को वह हीली से होकर गुजरा। सोमवार १८ शाबान ७४४ हि० (५ जनवरी १३४४ ई०) को वह जुरफत्तन से होकर गुजरा। मगलवार १६ शाबान ७४४ हि० (६ जनवरी १३४४ ई०) को वह दहफत्तन से होकर गुजरा। मगलवार १६ शाबान ७४४ हि० (६ जनवरी १३४४ ई०) को वह बुदफत्तन से होकर गुजरा। मगलवार १६ शाबान ७४४ हि० (६ जनवरी १३४४ ई०) को वह पन्देरानी (फन्दरियाना) से होकर गुजरा। बुद्धवार २० शाबान ७४४ हि० (७ जनवरी १३४४ ई०) को कालीकट से होकर गुजरा (तृतीय बार आगमन)। बुद्धवार २० शाबान ७४४ हि० (७ जनवरी १३४४ ई०) को वह शालियात पहुचा। यहाँ पर वह अपने दीर्घकाल तक ठहरने के विषय में उल्लेख करता है। बृहस्पतिवार ३ जीकाद ७४४ हि० (१८ मार्च १३४४ ई०) को वह कालीकट पहुचा (चतुर्थ बार आगमन)। शनिवार १९ जीकाद, ७४४ हि० (३ अप्रैल १३४४ ई०) को वह हिनौर पहुँचा (चतुर्थ बार आगमन)। बुद्धवार २६ मुहर्रम ७४५ हि० (९ जून १३४४ ई०) को वह सन्दापुर पहुचा (तृतीय बार आगमन)। वह यहाँ मुहर्रम मास के अन्त में आया और रबी-उस्-सानी मास की दूसरी तारीख तक ठहरा। मगलवार १३ रबी-उस्-सानी ७४५ हि० (२४ अगस्त १३४४ ई०) को वह कालीकट आया (पाँचवी बार आगमन)। रविवार २५ रबी-उस्-सानी ७४५ हि० (५ सितम्बर १३४४ ई०) को वह कन्नालूस (प्रथम बार आगमन) आया। शनिवार ९ जमादी-उल-अव्वल ७४५ हि० (१८ सितम्बर १३४४ ई०) को वह महल आया (प्रथम बार आगमन)। सोमवार ३ रबी-उल-अव्वल ७४६ हि० (४ जुलाई १३४५ ई०) को वह मुलूक आया (प्रथम बार आगमन)। मुलूक में वह ७० दिन तक ठहरने का उल्लेख करता है और वह कहता है कि मालद्वीप में वह १½ वर्ष तक ठहरा। यह बात ध्यान देने योग्य है कि वह मुलूक से महल आया परन्तु बिना रुके ही मुलूक को वापस चलागया। वह १५ रबी-उस्-सानी ७४५ हि० (२६ अगस्त १३४४ ई०) [डा० महदी हुसैन की गणना के अनुसार इसे सोमवार १४ जमादी-उल-अव्वल ७४६ हि० (१२ सितम्बर १३४५ ई०) होना चाहिये] को मुलूक से (लका) को प्रस्थान का उल्लेख करता है। बुद्धवार २३ जमादी-उल-

अव्वल ७४६ हि० (२१ सितम्बर १३४५ ई०) को वह बटाला पहुचा। सोमवार २८ जमादी-उल-अव्वल, ७४६ हि० (२६ सितम्बर १३४५ ई०) को वह सलवात पहुँचा। बृहस्पतिवार १ जमादी-उस्-सानी ७४६ हि० (२६ सितम्बर १३४५ ई०) को वह कुनाकर पहुचा। रविवार ११ जमादी-उस्-सानी ७४६ हि०(९ अक्तूबर १३४५ ई०) को वह काली पहुचा। बृहस्पतिवार १५ जमादी-उस्-सानी ७४६ हि० (१३ अक्तूबर १३४५ ई०) को वह कोलम्बो पहुँचा। सोमवार १९ जमादी-उस्-सानी ७४६ हि० (१७ अक्तूबर १३४५ ई०) को वह बटाला पहुचा। मगलवार २७ जमादी-उस्-सानी ७४६ हि० (२५ अक्तूबर १३४५ ई०) को वह हरकातू पहुंचा। रविवार १० रजब ७४६ हि० (६ नवम्बर १३४५ ई०) को वह पट्टन पहुँचा। रविवार १५ शाबान ७४६ हि० (११ दिसम्बर १३४५ ई०) को वह मदूरा पहुँचा। बुद्धवार १७ रमजान, ७४६ हि० (११ जनवरी, १३४६ ई०) को वह पट्टन पहुचा। शुक्रवार २६ रमजान ७४६ हि० (२० जनवरी १३४६ ई०) को वह कुईलून पहुँचा। यहाँ पर वह ३ मास तक ठहरने का उल्लेख करता है। बृहस्पतिवार ४ मुहर्रम ७४७ हि० (२७ अप्रैल १३४६ ई० को वह पीजिलोन द्वीप पहुचा जहाँ उसे लूट लिया गया। मगलवार ९ मुहर्रम ७४७ हि० (२ मई १३४६ ई०) को वह कालीकट पहुचा (छठी बार आगमन)। बृहस्पतिवार २५ मुहर्रम, ७४७ हि० (१८ मई १३४६ ई०) को वह कन्नालूस पहुचा (द्वितीय बार आगमन)। शुक्रवार ३ सफर ७४७ हि० (२६ मई १३४६ ई०) को वह महल पहुचा (द्वितीय बार आगमन)। रविवार १८ रबी-उल-अव्वल ७४७ हि० (९ जुलाई १३४६ ई०) को वह चिट्टागांग पहुचा। रविवार ९ रबी-उस्-सानी ७४७ हि० (३० जुलाई १३४६ ई०) को वह कमरू पहुँचा। बृहस्पतिवार २० रबी-उस्-सानी ७४७ हि० (१० अगस्त १३४६ ई०) को वह हबक पहुचा। सोमवार २४ रबी-उस्-सानी ७४७ हि० (१४ अगस्त १३४६ ई०) को वह सुनार गाँव पहुँचा। वहाँ से निरन्तर चीन, मक्का, मिस्र, ट्यूनिस आदि देशों में होता हुआ २३ शाबान ७५० हि० (६ नवम्बर १३४९ ई०) को वह फेज पहुचा और वहाँ से तनजीर गया।[1]

वहाँ से उसने फिर स्पेन की यात्रा की। मराको के सुल्तान अबू इनआन मरीनी ने उसे विशेष प्रोत्साहन प्रदान किया और जिन जिन देशों को उसने देखा था, उनका हाल लिखवाने का उसे आदेश दिया। तदनुसार उसने अपनी विचित्र तथा आश्चर्यजनक यात्रा का हाल लिखवाया। इसके उपरान्त सुल्तान ने मुहम्मद इब्ने (पुत्र) मुहम्मद इब्ने (पुत्र जुजये[2] अल कलबी को मूल पुस्तक को पूर्णतया ध्यान में रखते हुये सुन्दर रूप में सकलित करने का आदेश दिया। उसने सुल्तान के आदेशानुसार शेख अबू अब्दुल्लाह के विचारो को साफ़ तथा प्रभावशाली भाषा में लिखा। कहीं-कहीं उसने शेख के शब्दो तथा वाक्यों को बिना किसी परिवर्तन के उसी प्रकार रहने दिया। इसका सकलन ७५६ हि० (१३५५-५६ ई०) में समाप्त हुआ। एक हस्तलिखित पोथी के अनुसार इस यात्रा का नाम "तुहफ्तुन्नुज्जार फी ग़राइबिल अमसार व अजाइबुल असफार" रखा गया।

भौगोलिक विवरण—

इब्ने बतूता ने भारतवर्ष की भौगोलिक स्थिति, यहाँ की जलवायु, फल-फूल, वनस्पति, पशुओ तथा वेश भूषा और रहन सहन कृषि एव व्यापार के विषय में विस्तार से लिखा है। वह जिस नगर में भी पहुँचा उसका उसने बडी गहन दृष्टि से अध्ययन किया। उसकी यात्रा

१ यह विवरण रेहला से लिया गया है (पृ० LXIV-LXXI)

२ उसका जन्म शव्वाल ७२१ हि० (अक्तूबर, १३२१ ई०) में गरनाते में हुआ था। उसकी मृत्यु शव्वाल ७५७ हि० (अक्तूबर, १३५६ ई०) में फ़ेज में हुई। वह बहुत बड़ा विद्वान, कवि, इतिहासकार, अदीब, मुहद्दिस तथा शब्द-शास्त्रज्ञ था। मराको के सुल्तान अबू इनआन मरीनो का वह बहुत बड़ा कृपापात्र था।

के विवरण द्वारा भारतवर्ष के अनेक समकालीन नगरो के विषय में पर्याप्त जानकारी प्राप्त हो जाती है। इब्ने बत्तूता ने देहली का हाल बड़े विस्तार से लिखा है। नगर की चहार दीवारी, विभिन्न द्वार, देहली की जामा मस्जिद, देहली की क़ब्रो, तथा देहली के बाहर दो बड़े हौज़ो का बडा ही विशद उल्लेख किया है। उसके भौगोलिक ज्ञान का मूल आधार उसका व्यक्तिगत निरीक्षण है और वह किसी ग्रन्थ से इस सम्बन्ध में प्रभावित नही हुआ है। आरम्भ ही से उसने विभिन्न नगरो की दूरी तथा उनके बीच के अन्तर का उल्लेख किया।

शासन प्रबन्ध—

इब्ने बत्तूता का सम्बन्ध ग्रामो के शासन प्रबन्ध तथा न्याय व्यवस्था और वक्फ (धर्म संस्थाओ) के इन्तजाम मे विशेष रूप से रहा। उसकी यात्रा के विवरण से समकालीन ग्रामो के शासन प्रबन्ध पर भी प्रकाश पडता है जिसकी चर्चा अन्य समकालीन ऐतिहासिक ग्रन्थो में भी कम ही मिलती है। सुल्तान तथा उच्च पदाधिकारियो की गति विधि से वह पूर्ण रूप से परिचित था अत उसने उनके कर्त्तव्यो एव उनसे सम्बन्धित राजकीय सेवाओ का उल्लेख विस्तार से किया है। उसके पर्यटन लेख द्वारा अनेको पारिभाषिक शब्दो के विषय में भी ज्ञान प्राप्त हो जाता है[1] इसलिये कि अन्य समकालीन इतिहासकारा ने, जो इसी शासन प्रबन्ध में रहते सहते चले आये थे, उन शब्दो की व्याख्या की आवश्यकता न समझते थे किन्तु इब्ने बत्तूता ने मध्य कालीन भारतीय इतिहास का ज्ञान प्राप्त करने वालो की कठिनाई का बहुत कुछ निवारण कर दिया है। केन्द्र के शासन प्रबन्ध की दृढता के ज्ञान के साथ साथ उसकी यात्रा के विवरण लेख से यह भी पता चलता है कि देहली से थोडी ही दूर पर जलाली में किस प्रकार अव्यवस्था थी और इब्ने बत्तूता को अपनी जलाली की यात्रा में कितने कष्ट भोगने पडे। यद्यपि डाक का प्रबन्ध बडा ही उचित था और बडे ही द्रुतगामी समाचार वाहक राज्य के भिन्न भिन्न भागो में फैले हुये थे किन्तु फिर भी ग्रामो में अधिक शान्ति न थी। इब्ने बत्तूता ने बडे बडे अधिकारियो के घूस लेने की भी चर्चा की है क्योकि घूस के कारण उसे स्वय कुछ समय तक बडे कष्ट भोगने पडे और उसका ऋण जिसकी अदायगी का सुल्तान द्वारा आदेश हो चुका था, अदा न हो सका।

दरबार—

इब्ने बत्तूता सुल्तान के दरबार से विशेष रूप से सम्बन्धित था। उसने दरबार की प्रत्येक वस्तु को बडी गहन दृष्टि से देखने तथा दरबार की प्रथाओ को समझने का विशेष रूप से प्रयत्न किया है। वह सुल्तान के जुलूस मे भी सम्मिलित होता रहता था, अत उसने जो कुछ भी साधारण तथा विशेष अवसर पर होने वाले दरबारो और सुल्तान के जुलूस के विषय में लिखा है उसे मध्यकालीन भारतीय इतिहास का 'अमर अध्याय' समझना चाहिये।

डाक का प्रबन्ध—

इब्ने बत्तूता जब हिन्दुस्तान पहुँचा तो यह देख कर, कि किस प्रकार साधारण से साधारण बात सुल्तान तक तेजी से पहुँचाई जाती थी, बडा प्रभावित हुआ। उसने सुल्तान के डाक की व्यवस्था का उल्लेख बडे विस्तार से किया है। उसने राज्य के गुप्त चरो का भी हाल लिखा है और ऐनुलमुल्क के विद्रोह के सम्बन्ध में बताया है कि किस प्रकार लोगो के व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित बातें भी सुल्तान की सेवा में पहुँच जाती थी और लोगो के अपराध किसी प्रकार छिपे नही रह सकते थे।

समकालीन राजनैतिक घटनायें—

इब्ने बत्तूता ने अपनी यात्रा के विवरण में देहली के पूर्ववर्ती सुल्तानों का इतिहास

१ इन शब्दों की सूची अन्त मे दी गई है।

इस देश के विश्वसनीय लोगो से सुनकर लिखा है। उसके आने के पूर्व सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के राज्य काल में जो घटनायें घटी थी उनकी भी उसने बडी विशद चर्चा की है। देहली के विनाश का उसने बडा ही मार्मिक उल्लेख किया है। बहाउद्दीन के विद्रोह तथा कम्पिला के राय का उसकी सहायता हेतु अपना सर्वस्व बलिदान कर देने का हाल तथा किशलू खाँ के विद्रोह एव उसकी हत्या की चर्चा इब्ने बत्तूता ने बडे विस्तृत रूप से की है। कराचिल की दुर्घटना माबर तथा दक्षिण के अन्य विद्रोहो का हाल भी इब्न बत्तूता ने लिखा है। ऐनुलमुल्क के विद्रोह के समय वह स्वय उपस्थित था और उसके विवरण द्वारा पता चलता है कि किस प्रकार सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक युद्ध के समय अपने राज्य के हितैषियो मे परामर्श किया करता था। विद्रोहो के अतिरिक्त उस समय के अकाल का हाल इब्न बत्तूता ने बडे विस्तृत रूप से दिया है।

सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक का चरित्र—

इब्ने बत्तूता ने सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के चरित्र का गहन अध्ययन किया था। सुल्तान द्वारा उसे विशेष प्रोत्साहन प्राप्त होता रहता था। सुल्तान उस पर बडी कृपा दृष्टि रखता था। इब्ने बत्तूता की यात्रा द्वारा पता चलता है कि किस प्रकार सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक परदेशियो का सम्मान किया करता था और उन्हे अत्यधिक इनाम प्रदान करता रहता था। सुल्तान जिस प्रकार योगियो से मिलता जुलता और योग सिद्धियो मे रुचि लेता, उसका भी उल्लेख इब्ने बत्तूता ने किया है। सम्भवतया इसी आधार पर एसामी ने उसकी कटु आलोचना की है[1]। इब्ने बत्तूता मुहम्मद बिन तुगलुक की न्याय-प्रियता से बडा प्रभावित था। उसकी यात्रा के विवरण द्वारा पता चलता है कि न्याय के सम्बन्ध में सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक को अपने निकटतम सम्बन्धियो तथा उच्च पदाधिकारियो को भी कठोर दण्ड देने में कोई सकोच न होता था। सुल्तान की न्याय प्रियता के साथ साथ जब इब्ने बत्तूता उसके अत्यधिक अत्याचारो एव हत्या काण्ड को देखता था तो उसे बडा ही आश्चर्य होता था और जियाउद्दीन बरनी की तारीखे फीरोज शाही के समान इब्ने बत्तूता की यात्रा के विवरण मे भी सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक का चरित्र एक जटिल समस्या बन गया है। दोनो ही उसके विरोधाभासी गुणो को देख कर स्तब्ध दिखाई पडते हैं। इब्ने बत्तूता की यात्रा के विवरण द्वारा भी सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक की महत्वाकांक्षाओ पर विशेष प्रकाश पडता है।

आलिम तथा सूफी—

इब्न बत्तूता स्वय एक धार्मिक व्यक्ति था। उसे अपने धर्म से बडा प्रेम था। उसने अपनी यात्रा के विवरण में जिन सूफी सन्तो से भेंट की उनके विषय में भी उसने अपने पर्यटन लेख में चर्चा की है। वह देहली के समकालीन आलिमो के सम्पर्क में भी आया और उसने उनके विषय मे भी अपनी यात्रा के विवरण में विभिन्न स्थानो पर लिखा है।

लोगो का रहन-सहन—

इब्ने बत्तूता ने भारतवर्ष के रीति रिवाज, लोगों के रहन सहन तथा वेष भूषा का भी उल्लेख किया है। मुसलमानो के विवाह की भारतीय प्रथाओ का इब्ने बत्तूता ने बडा विशद विवरण दिया है। उसने सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक की बहिन से अमीर सैफुद्दीन के विवाह का हाल बडे विस्तार से लिखा है। वह अमीर सैफुद्दीन का घनिष्ठ मित्र था अत. उसे

१ एसामी, पृष्ठ ५१५, तुगलुक कालीन भारत भाग, १ पृष्ठ ११८। योग सिद्धियों में भारतीय मुसलमान बहुत पहले से रुचि लेने लगे थे और योगी मुसलमान सन्तों की गोष्ठियों में आया करते थे।

इस विवाह के सम्बन्ध में साधारण से साधारण बात का ज्ञान था। मुसलमानों में समकालीन मृतक क्रियायें क्या क्या थी और उनका पालन किस प्रकार होता था, यह सब इब्ने बत्तूता को अपनी पुत्री के मृतक संस्कार के अवसर पर स्वयं देखने का मौका मिल गया था। वह सती के दृश्य को भी देख कर बड़ा प्रभावित हुआ और उसने इस दृश्य का बड़े विस्तार से उल्लेख किया है।

मनोरंजन तथा आमोद प्रमोद—

इब्ने बत्तूता भारतवर्ष के विभिन्न भागो में नाना प्रकार की दावतो तथा भोजो में सम्मिलित हुआ था। शाही भोजन का प्रबन्ध तथा साधारण भोजनो के नियम भी उसने विस्तार से लिखे हैं। भोजन तथा मिठाइयो के विस्तृत उल्लेख भी इब्ने बत्तूता की यात्रा के विवरण द्वारा प्राप्त हो जाते हैं। पान खाने का महत्त्व तथा उसकी विशेषता का उल्लेख भी इब्ने बत्तूता ने किया है। भारतवर्ष के कुछ नगरो के बाजारो तथा उनकी चहल पहल, सजावट और तत्सम्बन्धी अन्य बातो का उल्लेख इब्ने बत्तूता के विवरण में पाया जाता है। सुल्तान के अभियानो के उपरान्त राजधानी में लौटने के समय और विशेष अवसरो पर किस प्रकार मनोरंजन तथा नगर किस प्रकार सजाया जाता था, इसका भी इब्ने बत्तूता की यात्रा के विवरण में बड़ा विशद चित्रण हुआ है। सूफियो के गायन तथा नृत्य, सैनिक बाजो तथा अन्य संगीतो एवं नृत्यो का भी हाल इब्ने बत्तूता की यात्रा के विवरण द्वारा ज्ञात हो जाता है। दौलताबाद के गायको तथा गायिकाओ के बड़े बाजार का भी इब्ने बत्तूता ने विवरण दिया है।

व्यापार—

जब इब्ने बत्तूता राजदूत बना कर चीन की ओर भेजा गया तो उसने विभिन्न स्थानो के व्यापारो का भी अध्ययन किया। भारतवर्ष के समुद्रीय तट के बन्दरगाहो के व्यापार, नौकाओ, जहाजो तथा अन्य देशो के व्यापारियो से सम्पर्क का हाल भी इब्ने बत्तूता ने बड़े विस्तार से दिया है। नारियल, काली मिर्च तथा बन्दरगाहो में उत्पन्न होने वाली अन्य वस्तुओं का भी उल्लेख इब्ने बत्तूता ने किया है।

इब्ने बत्तूता का चरित्र—

इब्ने बत्तूता को यात्रा से बड़ी रुचि थी। उसने संसार के बहुत बड़े भाग की यात्रा की थी और वह नाना प्रकार के लोगो के सम्पर्क में आ चुका था। उसे प्रत्येक नई बात को गहन दृष्टि से देखने तथा गंभीरतापूर्वक उस पर विचार करने की आदत सी पड़ गई थी। वह बड़ा ही जिज्ञासु प्रवृत्ति का था और यदि उसमें यह गुण न होता तो सम्भवतया छोटी छोटी और साधारण बातो का ज्ञान जो हमें उसकी यात्रा के विवरण द्वारा प्राप्त होता है न प्राप्त हो सकता। वह बड़ा स्पष्टवक्ता था और अपने हृदय की किसी बात को छिपाना न जानता था। उसे अपनी त्रुटियो को भी स्पष्ट रूप से उल्लेख कर देने में किसी प्रकार की लज्जा का अनुभव न होता था। वह बड़ा अपव्ययी था। सुल्तान द्वारा जो कुछ भी उसे प्राप्त होता वह उसे शीघ्रातिशीघ्र उड़ा देता। ऋण लेना तो उसके स्वभाव का एक अंग बन गया था और सुल्तान को इसके कारण उसे एक बार चेतावनी भी देनी पड़ी। उसने अपनी यात्रा का विवरण बड़ी ईमानदारी से दिया है। यह सम्भव है कि पिछली घटनाओ के सम्बन्ध में जो कुछ उसे अपने सूत्रो से ज्ञात हुआ उसका कुछ भाग निराधार हो जिसे उसने बिना किसी अधिक परीक्षण के स्वीकार कर लिया हो किन्तु उस पर घटनाओं का तोड़ मरोड़ कर उल्लेख करने का दोष नही लगाया जा सकता। जितनी बातें उसके अपने ज्ञान तथा

वनिरीक्षण पर आधारित हैं उनके विषय में यह तो कहा जा सकता है कि सम्भव है उसे समझने में भूल हुई हो किन्तु उसे झूठा सिद्ध करना कठिन है।

शिहाबुद्दीन अल उमरी

शिहाबुद्दीन अबुल अब्बास अहमद बिन (पुत्र) यहया बिन (पुत्र) फजलुल्लाह अल उमरी का जन्म ३ शव्वाल ७०० हि० (१२ जून १३०१ ई०) में हुआ था। उसने दमिश्क तथा काहिरा में विद्याध्ययन किया। वह अपने समय का बहुत बड़ा विद्वान समझा जाता था। उसने बहुत से ग्रन्थों की रचना की थी। उसका सबसे अधिक प्रसिद्ध तथा महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ मसालिकुल अबसार फी ममालिकुल अमसार है जो उसने २२ अथवा २७ भागों में लिखा था। बाद के समस्त विद्वानों ने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है और उसके ग्रन्थों के आधार पर पुस्तकें लिखी हैं। उसे मिस्र तथा शाम में विभिन्न अवसरों पर बड़े-बड़े पद प्राप्त होते रहे किन्तु वह अपने अन्तिम जीवन काल में मिस्र छोड़ कर दमिश्क चला गया और ७४८ हि० (१३४८ ई०) में उसका देहान्त हो गया।

मसालिकुल अबसार फी ममालिकुल अमसार, इतिहास भूगोल तथा जीवनियों का एक बृहत् ग्रन्थ है। वह स्वयं कभी भारतवर्ष नहीं आया किन्तु उसने हिन्दुस्तान का हाल अनेक विश्वस्त सूत्रों द्वारा दिये गये विवरणों के आधार पर लिखा है। उस समय हिन्दुस्तान के बाहर के समस्त मुसलमानों की दृष्टि हिन्दुस्तान की ओर लगी रहती थी। वे हिन्दुस्तान के विषय में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया करते थे। मसालिकुल अबसार के लेखक को हिन्दुस्तान के विषय में जिन यात्रियों द्वारा ज्ञान प्राप्त हुआ, उनके नाम ये हैं :

(१) शेख मुबारक इब्न महमूद अल कम्बानी।

(२) शेख बुरहानुद्दीन अबूबक्र बिन अल-खल्लाल अल-बज्जी।

(३) फकीह सिराजुद्दीन अबुस्सफा उमर बिन इसहाक बिन अहमद अश्-शिबली अल-अवधी।

(४) क़ाज़ी निजामुद्दीन अबुल फुज़ैल यहया अल हाकिम अल-तय्यारी।

(५) अली बिन मनसूर अल-उकैली।

(६) ख्वाजा अहमद बिन ख्वाजा उमर बिन मुसाफिर।

(७) शेख मुहम्मद अल ख्वोजन्दी

(८) सैयिदुश्शरीफ ताजुद्दीन अबुल मुजाहिद अल-हसन असमरकन्दी जो शरीफ समरकन्दी कहलाते थे।

(९) शेख अबू बक्र बिन अबुल हसन अल-मुलतानी जो इब्नुत्ताज अल-हाफिज के नाम से प्रसिद्ध है।

(१०) शरीफ नासिरुद्दीन मुहम्मद जो अमुरंदी कहलाता था।

(११) मुहम्मद बिन मन्सूर रहीम कुर्लनशी।

(१२) काज़ी-उल-कुज़्ज़ात अबू मुहम्मद अल-हसन बिन मुहम्मद गोरी।

इन यात्रियों के अतिरिक्त बहुत से अन्य यात्रियों द्वारा भी शिहाबुद्दीन उमरी ने हिन्दुस्तान के विषय में पूछताछ की और प्रत्येक विवरण को पूर्ण परीक्षण के उपरान्त ही स्वीकार किया है। उसने यात्रियों के मौखिक विवरणों के अतिरिक्त पुस्तकों द्वारा भी हिन्दुस्तान के विषय में ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न किया। उसने अपने लेख में मुहफ़तुल अल्बाब,

अल इक्द तथा तकवीमुल बुल्दान की चर्चा की है। इस प्रकार अपने अध्ययन तथा यात्रियो द्वारा ज्ञात किये हुये विवरणो को अपनी अद्भुत विवेचन शक्ति की सहायता से जाँच कर उसने मसालिकुल अबसार में बडे ही उत्तम ढग से प्रस्तुत किया है। यद्यपि उसका यह लेख सक्षिप्त है किन्तु किसी प्रकार इब्ने बत्तूता के विस्तृत विवरण से कम महत्त्वपूर्ण नहीं।

मसालिकुल अबसार में भारतवर्ष की विशेषताओ तथा यहाँ की धन-सम्पत्ति, जलवायु, उपज, फल, फूल, वनस्पति तथा यहाँ पाये जाने वाली और तैयार होने वाली वस्तुओं एव कला-कौशल और यहाँ के निवासियो की वेश-भूषा का बडा विशद उल्लेख किया गया है। इसमें सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक शाह की विजयो तथा उसके प्रान्तो की सूची भी दी गई है। कुछ प्रान्तों के ग्रामो की सख्या भी गिनाई गई है। देहली नगर के गौरव तथा दौलताबाद के योजना के साथ बसाये जाने की भी चर्चा की गई है। देहली के निवासियो के विषय में लिखा है कि "वे फारसी तथा हिन्दी में दक्ष हैं और उनमें से बहुत से लोग दोनो भाषाओ में कविता करते हैं।"

शिहाबुद्दीन अल उमरी ने सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के शासन प्रबन्ध का बडा ही महत्त्वपूर्ण विवरण दिया है। अमीरो की विभिन्न श्रेणियो, उनकी अक्ताओ, इनामो तथा अन्य पदाधिकारियो के विषय में जो बातें लिखी हैं वे अन्य समकालीन इतिहासो में इतनी स्पष्ट नहीं। सेना की व्यवस्था तथा रणक्षेत्र मे सेना के प्रबन्ध का हाल, यद्यपि सक्षिप्त है किन्तु इसके द्वारा बहुत सी ऐसी बातें ज्ञात हो जाती हैं जिनके उल्लेख की सम्भवतया समकालीन इतिहासकार आवश्यकता न समझते थे और जिनका आज हमारे लिये बडा महत्त्व है। शिहाबुद्दीन ने सुल्तान के दासो, दासियो तथा उनके मूल्य का हाल भी लिखा है। हिन्दुस्तानी कनीजो के अत्यधिक मूल्य तथा उनकी विशेषताओ ने लेखक को आश्चर्य में डाल दिया था। शिहाबुद्दीन उमरी ने सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के आम दरबारो तथा विशेष गोष्ठियो का उल्लेख भी किया है। उसने जो कुछ लिखा है उसकी तुलना यदि इब्ने बत्तूता के विवरण से की जाय तो यह भलीभाँति ज्ञात हो जायगा कि यद्यपि शिहाबुद्दीन ने सुल्तान क दरबार को स्वय कभी नही देखा था, फिर भी दरबार की प्रथाओ तथा दरबार स सम्बन्धित अन्य बातो का उसने कितना ठीक-ठीक उल्लेख किया है। शिहाबुद्दीन उमरी ने भी हिन्दुस्तान में डाक के प्रबन्ध तथा गुप्तचरो का हाल लिखा है, और यह बताया है कि उनका प्रबन्ध कितना सुन्दर था। उसके ग्रन्थ द्वारा देहली तथा देवगिरि के द्वारों के खुलने तथा बन्द होने की सूचना का सुल्तान तक पहुचने का भी हाल ज्ञात होता है।

मसालिकुल अबसार में सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक के चरित्र का चित्रण, उसके समकालीन इतिहासकारो तथा इब्ने बत्तूता के विवरण से थोडा सा भिन्न है। शिहाबुद्दीन ने सुल्तान के अत्याचार तथा हत्याकाड के विषय में कुछ नही लिखा है। उसे अपने सूत्रों द्वारा इन बातों का ज्ञान अवश्य हुआ होगा जो उस समय सुल्तान के विषय में उसके राज्य में प्रसिद्ध थी किन्तु सम्भवतया वह सुल्तान के गुणो तथा दोषो का समाधान न कर सका हो और उन्हें किंवदन्ती समझ कर छोड दिया हो। उसने देहली के विनाश तथा ताम्र मुद्राओ के विषय में भी कुछ नहीं लिखा। बरनी तथा इब्ने बत्तूता के समान शिहाबुद्दीन ने भी सुल्तान के दान-पुण्य, विद्वानो, कवियों, गायकों तथा अन्य कलाकारो को आश्रय प्रदान करने के विषय में बडा विशद विवरण दिया है। सुल्तान की उदारता तथा उसके अत्यधिक दान के अनेक उदाहरण दिये हैं। मसालिकुल अबसार से पता चलता है कि सुल्तान को अपनी प्रजा का कितना ध्यान रहता था और दरबार के आडम्बर तथा वैभव के बावजूद लोगो की शिकायत किस प्रकार उस तक पहुच जाया करती थी।

शिहाबुद्दीन ने मसालिकुल अबसार में हिन्दुस्तान के विषय में यात्रियों के विवरण के आधार पर लिखा है। इनमें अनेक व्यापारी भी थे। इस प्रकार मसालिकुल अबसार में उस समय के भारतवर्ष के व्यापार का हाल व्यापारियों द्वारा ज्ञात हो जाता है। मसालिकुल अबसार से पता चलता है कि भारतवर्ष में अन्य देशों से सोना आया करता था किन्तु भारतवर्ष का सोना बाहर नहीं जाता था, यद्यपि घोड़ों तथा कुछ विशेष प्रकार के बहुमूल्य वस्त्रों का आयात अन्य देशों से भी किया जाता था। शिहाबुद्दीन ने भारतवर्ष में चीजों के सस्ते होने तथा विभिन्न वस्तुओं के मूल्य सिक्कों, तथा तौल का भी उल्लेख किया है जिससे उस समय की आर्थिक दशा का अच्छा ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

इस काल के अन्य इतिहासों के साथ साथ मसालिकुल अबसार के अध्ययन से पता चलता है कि इस ग्रन्थ के बिना हमारे भारतवर्ष के ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक ज्ञान में कितनी बड़ी कमी हो जाती। दुर्भाग्यवश अभी तक इस पुस्तक के सभी भाग प्रकाशित नहीं हो सके हैं। हिन्दुस्तान से संबंधित भाग का अँग्रेजी अनुवाद एक हस्तलिखित पोथी के रोटोग्राफ (फोटो) से डा० आटो इसपीज ने मुस्लिम यूनीवर्सिटी जरनल अलीगढ़ में छपवाया था। हिन्दी अनुवाद, इस अँग्रेजी अनुवाद तथा सुबहुल आशा के आधार पर किया गया है क्योंकि सुबहुल आशा[1] के लेखक ने मसालिकुल अबसार को विभिन्न स्थानों पर पूर्ण रूप से नकल कर दिया है।

यहया बिन अहमद सहरिन्दी

तुगलुक कालीन इतिहास के सम्बन्ध में यहया बिन अहमद सहरिन्दी की तारीखे मुबारकशाही को विशेष महत्त्व प्राप्त है। यहया बिन अहमद बिन अब्दुल्लाह सहरिन्दी ने अपना इतिहास सैयिद वंश के सुल्तान, मुइज्जुद्दीन अबुल फ़तह मुबारकशाह को, जिसने ८२४ हि० (१४२१ ई०) से ८३७हि०(१४३३ ई०) तक राज्य किया समर्पित किया। इस इतिहास में आरम्भ में सुल्तान मुइज्जुद्दीन बिन साम से लेकर शाबान ८३१ हि० (१४२८ ई०) तक के देहली के सुल्तानों का हाल लिखा गया किन्तु बाद में लेखक ने इसमें ८३८ हि० (१४३४ ई०) तक का हाल और बढ़ा दिया। जिस समय यह इतिहास लिखा गया, कुछ अन्य ग्रन्थ जो अब अप्राप्य हैं, उस समय अवश्य उपलब्ध रहे होंगे। सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह द्वारा शेख निज़ामुद्दीन औलिया के विरोध का हाल सम्भवतया सर्व प्रथम इसी ग्रन्थ में लिखा गया और बाद के अन्य इतिहासकारों ने उसी का अनुकरण किया है। सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक शाह के राज्य काल की विभिन्न घटनाओं की तारीखें भी लिखी गई हैं और घटनाओं का उल्लेख भी क्रमानुसार किया गया है।

मुहम्मद बिहामद खानी

मुहम्मद बिहामद खानी मलिकुश्शर्क़ मलिक बिहामद खाँ, का जिसे ऐरिच (बुन्देलखण्ड में) की अक्ता प्राप्त थी, पुत्र था। मुहम्मद भी अपने पिता के समान एक सफल सैनिक

[1] अहमद बिन अली बिन अहमद अब्दुल्लाह अबुलअब्बास अल क़लक़शन्दी का जन्म क़ाहिरा के निकट ७५६ हि० (१३५५ ई०) अथवा ७५८ हि० (१३५७ ई०) में हुआ था। उसका सर्व प्रथम ग्रन्थ सुबहुल आशा फ़ी सिनाअतिल इनशा है जिसकी रचना उसने ८१४ हि० (१४११-१२ ई०) में समाप्त की। उसकी मृत्यु १० जमादी उल आख़िर ८२१ हि० (१५ जुलाई १४१८ ई०) में हुई। लेखक ने इसे १४ जिल्दों में विभाजित किया था। यह पुस्तक क़ाहिरा में १४ जिल्दों में प्रकाशित हो चुकी है। इस पुस्तक में मिस्र तथा शाम और संसार के अन्य भागों के ऐतिहासिक, भौगोलिक सांस्कृतिक दशा एवं शासन प्रबन्ध का उल्लेख है (नोबम, कन मअवु माअ्ति मरबिया बम मुसरबिया, मिस्र भाग ८, १९२६ ई०।

था और उसने अपने समय के कई युद्धो में भाग लिया; किन्तु बाद में वह ऐरिच के एक सूफी यूसुफ बुध का शिष्य हो गया और धार्मिक कार्यों में तल्लीन रहने लगा।

तारीखे मुहम्मदी[1] में उसने मुहम्मद साहब के काल से लेकर ८४२ हि० (१४३८-३९ ई०) तक का हाल लिखा है। अपने समय के इतिहास में उसने कालपी के सुल्तानो का हाल तथा सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक शाह के बाद के सुल्तानो का हाल बहुत कुछ अपनी जानकारी के आधार पर लिखा है। तारीखे मुबारकशाही के समान विभिन्न घटनाओं के क्रम का पता लगाने के लिये यह ग्रन्थ बडा ही महत्त्वपूर्ण है।

ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद हरवी

ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद बिन मुहम्मद मुकीम अल-हरवी अकबर के समय में बख्शी था। सर्व प्रथम वह अकबर के राज्यकाल के २९ वी वर्ष में गुजरात का बख्शी नियुक्त हुआ। तत्पश्चात् ३७ वें वर्ष में राज्य का बख्शी नियुक्त हुआ। १००३ हि० (१५९४ ई०) में उसकी मृत्यु हो गई।

उसने तबकाते अकबरी की रचना १००१ हि० (१५९२-९३ ई०) मे की किन्तु बाद में १००२ हि० (१५९३-९४ ई०) का भी हाल लिख दिया। इसमें गजनवियो के समय से लेकर १००२ हि० (१५९३-९४ ई०) तक का हिन्दुस्तान का हाल लिखा गया है। देहली के सुल्तानो का हाल उसने बडे निष्पक्ष भाव से लिखा है। सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह की मृत्यु का उल्लेख करते हुये उसने लिखा है कि बरनी ने मृत्यु के वास्तविक कारण को जान बूझ कर छिपाया है।

अब्दुल क़ादिर बदायूनी

अब्दुल कादिर "कादिरी" बिन मूलूकशाह बिन हामिद बदायूनी का जन्म १७ रबी-उस्-सानी ९४७ हि० (२१ अगस्त १५४० ई०) को हुआ था। ९८१ हि० (१५७४ ई०) में वह अकबर के दरबार में पेश हुआ और उसने अकबर के दरबार में पुस्तको के अनुवाद के सम्बन्ध में विशेष सेवायें की। मुन्तखबुत्तवारीख में उसने ३६७ हि० (९६७-९८) से लेकर १००४ हि० (१५९५-९६ ई०) तक का विवरण दिया है। बदायूनी के इतिहास को उसके विशेष धार्मिक दृष्टिकोण के कारण बडा महत्त्व प्राप्त है। उसने मुहम्मद बिन तुगलुक के राज्यकाल की बहुत सी घटनाओं का समय निर्धारित किया है। यद्यपि उनमें से बहुत सी तारीखों को स्वीकार करना कठिन है फिर भी उसके विवरण का महत्त्व घटाया नही जा सकता।

सैयिद अली बिन अज़ीज़ुल्लाह तबातबा

सैयिद अली बिन अज़ीज़ुल्लाह तबातबा हसनी सर्व प्रथम मुहम्मद कुली कुतुब शाह और फिर बुरहान निज़ाम शाह की सेवा में, जिसने ९९९ हि० (१५९१ ई०) से १००३ हि० (१५९५ ई०) तक राज्य किया, प्रविष्ट हुआ और १००० हि० (१५९२ ई०) में उसने बुरहाने मआसिर की रचना की। इसमें गुलबर्गे के बहमनियो, बिदर के बहमनियो तथा अहमद नगर के निज़ाम शाही सुल्तानो के राज्य का हाल दिया गया है। अन्त में उसने १००४ हि० (१५९६ ई०) तक का हाल अपने इतिहास में बढा दिया। सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के राज्यकाल के

१ यह पुस्तक अभी तक प्रकाशित नहीं हुई है। इसकी हस्तलिखित प्रति ब्रिटिश म्युजियम में मौजूद है और वह १७ वीं शताब्दी ईसवी में नक़्ल हुई थी। अनुवाद उसी पोथी के रोटो ग्राफ से किया गया है।

अन्त में बहमनी राज्य की स्थापना का हाल उसने एसामी की फुतुहुस्सलातीन के आधार पर दिया है। उसने इस सम्बन्ध में कुछ अन्य इतिहासो का भी अवश्य प्रयोग किया होगा।

मीर मुहम्मद मासूम नामी

मीर मुहम्मद मासूम "नामी" बिन सैयिद सफाई अल-हुसैनी अल-तिरमिज़ी अल भक्करी १००३-४ हि० (१५९५-९६ ई०) में अकबर की सेवा में प्रविष्ट हुआ और उसने २५० का मनसब प्राप्त किया। उसकी मृत्यु १०१५ हि० (१६०६-७ ई०) के उपरान्त हुई।

उसने तारीखे सिन्ध अथवा तारीखे मासूमी में अरबो द्वारा सिन्ध की विजय से लेकर १००८ हि० (१५९९-१६०० ई०) तक का सिन्ध का इतिहास लिखा है। सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक शाह के सिन्ध से सम्बन्ध तथा सूमरा लोगो के ज्ञान के लिये तारीखे सिन्ध से बडी सहायता मिलती है।

मुहम्मद क़ासिम हिन्दू शाह फ़िरिश्ता

मुहम्मद कासिम हिन्दू शाह अस्तराबादी, जो फिरिश्ता के नाम से प्रसिद्ध है, सर्व प्रथम अहमद नगर के सुल्तान मुरतुज़ा निज़ाम शाह की सेवा में, जिसने ९७२ हि० (१५६५ ई०) से ९९६ हि० (१५८८ ई०) तक राज्य किया, प्रविष्ट हुआ। १९ सफर ९९८ हि० (२८ दिसम्बर १५८९ ई०) को वह बीजापुर दरबार में पेश किया गया और वहीं नौकर हो गया। इबराहीम आदिल शाह द्वितीय ने उसे बडा प्रोत्साहन प्रदान किया।

तारीखे फिरिश्ता, जिसका वास्तविक नाम गुलशने इबराहीमी है, उसने इबराहीम आदिल शाह को समर्पित की और १०१५ हि० (१६०६-७ ई०) में समाप्त की। इसके उपरान्त उसने इसमें साधारण सा परिवर्तन करके इसका नाम 'तारीखे नौरस नामा' रक्खा। तारीखे फिरिश्ता में भारत के प्राचीन हिन्दू राजाओ के समय से लेकर १०१५ हि० तक का हाल है। उसने अपने इतिहास का सकलन समस्त उपलब्ध समकालीन ग्रन्थो के आधार पर, जो अब अप्राप्य हैं, किया। यद्यपि उसने घटनाओ के जांचने तथा अपने सूत्रो की पूर्ण समीक्षा करने का अधिक प्रयत्न नही किया किन्तु उसका इतिहास मालूमात का भडार है और इसे सर्वदा बडा महत्व प्राप्त रहेगा।

विषय सूची

भाग अ

भाग ब

भाग स

भाग अ

मुख्य समकालीन इतिहासकार एवं कवि

जियाउद्दीन बरनी
(क) तारीखे फीरोजशाही

एसामी
(ख) फतूहुस्सलातीन

बद्रे चाच
(ग) कसायदे बद्रे चाच

अमीर खुर्द
(घ) सियरुल औलिया

असुल्तानुल गाज़ी गयासुद्दुनिया वद्दीन तुगलुक़ शाह असुल्तान

(४२३) सद्रे जहां[1]—काजी[2] कमालुद्दीन
उलुग खाँ अर्थात् सुल्तान मुहम्मद शाह
बहराम खा शाहजादा
महमूद खाँ शाहज़ादा
मुबारक खा शाहज़ादा
मसऊद खाँ शाहजादा
नुसरत खाँ शाहज़ादा
तातार मलिक,[3] जिसे सुल्तान अपना पुत्र कहता था
मलिक सद्रुद्दीन अरसलान—नायब बारबक[4]
फीरोज़ मलिक[5] सुल्तान का भतीजा
मलिक शादी दावर—नायब वज़ीर[6]
मलिक बुरहानुद्दीन आलिम मलिक—कोतवाल[7]
मलिक बहा उद्दीन—अर्ज़े ममालिक[8]

---

१ सद्र—देहली के सुल्तानों के राज्य में धर्म (इस्लामी) सम्बन्धी सभी प्रबन्ध सद्रुस्सुदूर के अधीन होते थे। धर्म आधारित न्याय तथा शिक्षा सम्बन्धी कार्य की देख रेख करने के लिये उसके अधीन सद्र होते थे। प्रान्तों के काज़ी सद्र का कार्य भी करते थे।

२ काज़ी—सद्रुस्सुदूर, क़ाज़िये ममालिक अथवा मुख्य न्यायाधीश भी होता था। उसका विभाग दीवाने क़ज़ा कहलाता था। उसकी सहायता के लिये काज़ी (न्यायाधीश) नियुक्त होते थे।

३ पुस्तक में तनार मलिक है।

४ नायब बारबक—दरबार के समस्त कार्यों का प्रबन्ध करने वाले अधिकारियों का अफसर बारबक कहलाता था। अमीरों तथा अधिकारियों के खड़े होने और दरबार की शोभा स्थापित रखने का कार्य उसी का कर्त्तव्य होता था। उसके सहायक नायब बारबक कहलाते थे।

५ सवारों के एक दस्ते का अफसर सरखेल कहलाता था। सरखेलों का अफसर सिपहसालार कहलाता था। सिपहसालारों का अफसर अमीर कहलाता था। अमीरों का अफसर मलिक कहलाता था। मलिकों का अफसर खान कहलाता था। (बरनी, तारीखे फ़ीरोज़शाही—पृ० १४५, आदि तुर्क कालीन भारत—पृ० २२५)।

६ वज़ीर—प्रधान मन्त्री को वज़ीर कहते थे। राज्य का शासन प्रबन्ध तथा वित्त विभाग उसी के सिपुर्द होता था। उसके सहायक नायब वज़ीर कहलाते थे।

७ कोतवाल—नगर की देख भाल करने वाला अधिकारी। उसके सैनिक रात्रि में नगर में पहरा देते थे। कोतवाल नगर की रक्षा का पूर्ण उत्तरदायी होता था। उसे पुलिस विभाग का मुख्य अधिकारी समझना चाहिये। ज़िलों के अधिकारी भी कोतवाल कहलाते थे।

८ अर्ज़े ममालिक अथवा आरिज़े ममालिक—दीवाने अर्ज़ (सैन्य विभाग) का सब से बड़ा अधिकारी। सेना की भरती, निरीक्षण तथा सेना का समस्त प्रबन्ध उसके अधीन कर्मचारियों द्वारा होता था। युद्ध में सेना की अध्यक्षता उसके लिये आवश्यक न होती थी किन्तु वह अथवा उसके नायब युद्ध में सेना के साथ जाते थे। रसद (खाद्य सामग्री) का प्रबन्ध तथा लूट की सम्पत्ति की देख भाल भी उसी को करनी होती थी। उसके सहायक नायब अर्ज़े ममालिक अथवा नायब आरिज़ कहलाते थे।

मलिक अली हैदर—नायब वकील दर[१]
(४२४) मलिक नसीरुद्दीन महमूद शाह—खास हाजिब[२]
मलिक बहता-खाजिन[३]
मलिक अली अगदी अरक मलिक
शिहाबुद्दीन चाऊश[४] गोरी
मलिक ताजुद्दीन जाफर
मलिक किवामुद्दीन—वजीर दौलताबाद "कुतलुग खाँ"
मलिक यूसुफ—नायब[५] दीबालपुर
मलिक शाहीन—आखुरबक[६]
अहमद अयाज—शहनये एमारत[७]
नसीरुलमुल्क—ख्वाजा हाजी
मलिक एहसान दबीर[८]
मलिक शिहाबुद्दीन मुल्तानी ताजुलमुल्क
मलिक फखरुद्दीन
दवल शाह बूमहारी
मलिक कीरबक
मलिक कुशमीर—शहनये बारगाह[९]
मलिक मुहम्मद जाग
मलिक सादुद्दीन मनतकी
मलिक हुसामुद्दीन हुसन मुस्तौफी[१०]
मलिक ऐनुलमुल्क
मलिक काफूर लग
मलिक सिराजुद्दीन कुमूरी
मलिक खास—शहनये पील[११]

---

१ वकील दर—शाही महल तथा सुल्तान के विशेष कर्मचारियों का प्रबन्ध करने वाला सब से बड़ा अधिकारी। उनके सहायक नायब वकील दर कहलाते थे।

२ हाजिब—बारबक के अधीन हाजिब होते थे। वे दरबार में सुल्तान तथा दरबारियों के मध्य में खड़े होते थे और उनकी अनुमति बिना सुल्तान तक कोई भी न पहुँच सकता था। उनका सरदार अमीर हाजिब कहलाता था। सम्भव है उसे खास हाजिब भी कहते हों। समस्त प्रार्थना पत्र भी अमीर हाजिब तथा हाजिबों द्वारा ही सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत हो सकते थे। वे सुल्तान का सदेश भी ले जाते थे। वे बड़े कुशल सैनिक भी होते थे और युद्ध सचालन भी कभी कभी उनके द्वारा होता था।

३ खाजिन—कोषाध्यक्ष।

४ चाऊश—सेना तथा दरबार की पंक्तियाँ ठीक करते थे।

५ नायब—सुल्तान की ओर से किसी प्रान्त का अधिकारी।

६ आखुरबक—शाही घोड़ों की देख रेख करने वाला अधिकारी।

७ शहनये एमारत—एमारतों का मुख्य प्रबन्धक जिसकी देख रेख में भवनों का निर्माण अथवा उनकी मरम्मत होती थी।

८ दबीर—दीवाने इन्शा (शाही पत्र व्यवहार) के विभाग का एक अधिकारी। इनका अध्यक्ष दबीरे खास कहलाता था।

९ शहनये बारगाह—बारगाह का अधिकारी।

१० मुस्तौफी—राज्य के व्यय की देख भाल करता था।

११ शहनये पील—शाही हाथियों के प्रबन्ध करने वालों का मुख्य अधिकारी।

मलिक हुसामुद्दीन वेदार
मलिक निजामुद्दीन, आलिम मलिक का पुत्र
मलिक अली, मलिक हाजी का भाई
मलिक बद्रुद्दीन
मलिक ताजुद्दीन तुर्क—नायब गुजरात
मलिक सैफुद्दीन
मलिक हाजी

गयासुद्दीन तुगलुक़ शाह

(४२५) समस्त प्रशसा अल्लाह के लिये है जोकि लोक तथा परलोक दोनो ही का पोषक है। बहुत बहुत दुरूद तथा सलाम[1] उसके रसूल मुहम्मद एव उसकी समस्त सन्तान पर।

सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक का सिंहासनारोहण

ईश्वर की दया की आशा रखने वाला जिया बरनी इस प्रकार कहता है कि जब ७२०[2] हि० (१३२० ई० मे) *मे सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह सीरी के राज-भवन में राज*-सिंहासन पर आरूढ हुआ और बादशाही को उसके शुभ व्यक्तित्व से शोभा प्राप्त हुई तो इस कारण कि उसने सर्वदा अपना समय आदर-पूर्वक, बडे सम्मान, ऐश्वर्य, वैभव तथा कुशलता से व्यतीत किया था, समस्त शासन-नीति एव राज्य व्यवस्था एक ही सप्ताह में भली-भाँति सम्पादित हो गई। उस समस्त व्याकुलता तथा उथल-पुथल का, जो खुसरो खाँ तथा खुसरो खानियो[3] द्वारा उत्पन्न हो गई थी और राज्य व्यवस्था उन हरामखोरो के अधिकार-सम्पन्न हो जाने के कारण जिस प्रकार छिन्न भिन्न हो गई थी, निराकरण हो गया तथा राज्य सुव्यवस्थित हो गया। लोग यही समझने लगे कि मानो सुल्तान अलाउद्दीन पुन जीवित हो गया है। सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह के राज सिंहासन पर आरूढ होने के ४० दिन के भीतर ही राज्य के सर्व साधारण तथा विशेष व्यक्तियो के हृदय उसकी बादशाही द्वारा सन्तुष्ट हो गये। जो विद्रोह तथा अशान्ति प्रत्येक दिशा से उठ खडी हुई थी, उसका स्थान आज्ञाकारिता एव आज्ञा पालन ने ले लिया।

(४२६) तुगलुक शाह के स्वभाव की दृढता के कारण जन साधारण के हृदय सन्तुष्ट हो गये। लोगों के हृदय म अनुचित विचार एव षडयन्त्र की भावनायें नष्ट हो गई। लोग निश्चिन्त होकर प्रभुत्वशील एव सुव्यवस्थापक बादशाह के कारण अपने अपने कार्यो में तल्लीन हो गये। लोगो न अनुचित बातें करनी तथा अत्याचार के विचार त्याग दिये। सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह के कारण राज्य में रौनक पैदा हो गई। उन शासन-सम्बन्धी कार्यों को, जिनके सुचारु रूप से सचालन करन में लोग वर्षो तक असफल रहते हैं, सुल्तान तुगलुक शाह ने थोडे ही दिनो में सुव्यवस्थित कर लिया और वे सुचारु रूप से सम्पादित होने लगे। उसके द्वारा इस्लाम तथा मुसलमानो की सहायता होने तथा खुसरो खाँ के उपद्रव एव उसके विनाश का हाल लिखा जा चुका है[4]। इस प्रकार सुल्तान तुगलुक न अपने आश्रय-दाताओ का बदला जिस शीघ्रता से ले लिया उतनी कुशलता तथा उतनी सफलता से किसी भी बादशाह को यह बात प्राप्त नही हो सकी थी।

सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक न सिंहासनारूढ होते ही अलाई तथा कुतबी[5] वश के उन व्यक्तियो को जो हरामखोरो द्वारा हत्या स बच गये थे, सतुष्ट कर दिया। सुल्तान तुगलुकशाह ने अपने आश्रय-दाताओ के अन्त पुर की स्त्रियो के सम्मान की रक्षा का पूर्ण रूप से ध्यान

---

१ प्रशसा एव प्रार्थना के वाक्य।

२ १ शाबान ७२० हि० (६ सितम्बर, १३२० ई०) तुगलुक नामा, अमीर खुसरो-पृ० १३५-३६, खलजी कालीन भारत-पृ० १६२।

३ खुसरो खाँ के सहायक।

४ खलजी कालीन भारत-पृ० १४३ ४८।

५ सुल्तान अलाउद्दीन तथा सुल्तान कुतुबुद्दीन मुबारक शाह के।

रक्खा, सुल्तान अलाउद्दीन की पुत्रियो के उचित स्थानो पर सम्बन्ध कराये। जिन लोगो ने सुल्तान कुतुबुद्दीन की मृत्यु के तीसरे दिन उसकी पत्नी के निकाह का खुत्बा शरा के विरुद्ध[1] दुष्ट खुसरो खाँ के साथ पढ दिया था, उन्हे उसने कठोर दण्ड दिये। शेष अलाई मलिको अमीरो तथा पदाधिकारियो को अक्ता[2], पद, वेतन एव इनाम प्रदान किये। उन्हे वह अपना ख्वाजा ताश[3] समझता था। वह अलाई राज्य काल के सम्मानित व्यक्तियो का अपमान साधारण अपराध एव शका पर न होने देता था। यह प्रथा सी हो गई थी कि पिछले सुल्तानो के सहायको तथा सम्बन्धियो की दूसरो की चेतावनी हेतु हत्या करा दी जाती थी, किन्तु यह विचार उसके हृदय में कभी न आया।

(४२७) सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह ने अपने सिंहासनारोहण के आरम्भ ही से अपनी राज्य व्यवस्था को शासन-प्रबन्ध की दृढता, लोगो को सतुप्ट एव सम्पन्न रखने, कृषि को प्रोत्साहन देने, न्याय तथा इन्साफ, एव आलिमो तथा प्राचीन लोगो को सम्मान देने और लोगो के अधिकार का ध्यान रखने पर आधारित रक्खा। उसने ख्वाजा खतीर,[4] मलिकुल वुजरा जुनैदी[5] तथा ख्वाजा मुहज्जब बुजुर्ग[6] को, जोकि प्राचीन वजीर थे और जिनका बादशाहो के दरबार में कोई आदर सत्कार न होता था, सम्मानित किया और उन्हे वस्त्र, वृत्ति तथा इनाम प्रदान किये। उन्हे अपने समक्ष बैठने की अनुमति दी। वह उन से राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी नियमो के विषय में, जिनके द्वारा विशेष तथा सब साधारण को उन्नति प्राप्त होती रहती है, परामर्श किया करता था। इसके उपरान्त वह अपने देश तथा राज्य, लोगो के सतोष एव कृषि तथा सर्व साधारण की उन्नति के लिये जो उचित समझता उस पर आचरण करता। वह अपनी ओर से कोई ऐसी नई बात न करता जिसके कारण लोग उससे हृदय में घृणा करने लगते। जो प्राचीन वश नष्ट हो चुके थे और जिनका समूलोच्छेदन हो चुका था, उन्हे उसने पुन सम्मान प्रदान किया। चूकि सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह में स्वाभाविक रूप से अत्यधिक निष्ठा तथा दूसरो (की सेवाओ) के अधिकार के विषय मे ध्यान रखना विद्यमान था, अत उसने प्रत्येक उस व्यक्ति को, जिससे उसका मलिकी[7] के समय में परिचय एव जानकारी थी अथवा उन्हे, जो पिछले समय में कभी भी उससे निष्ठा का व्यवहार कर चुके थे, बादशाह हो जाने पर सम्मानित किया। उन पर उनकी योग्यतानुसार कृपा-दृष्टि रक्खी और किसी की सेवा को नष्ट न होने दिया और उसे बेकार न जाने दिया।

वह राज्य व्यवस्था सम्बन्धी सभी कार्यों में सयम तथा मध्य का मार्ग ग्रहण करता था, क्योकि इनके द्वारा शासन-प्रबन्ध सम्बन्धी समस्त कार्य सुचारु रूप से सम्पादित होते

१ शरा के अनुसार मुसलमान विधवा का विवाह पति की मृत्यु के ४ मास १० दिन के पूर्व नहीं किया जा सकता। यह शर्त उसके गर्भाधान के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिये रक्खी गई है और इसे "इद्दत" कहते है।

२ इसका अनुवाद प्राय जागीर किया जाता है किन्तु अक्ता वह भूमि थी जो सेना के सरदारों को सेना रखने और उसका उचित प्रबन्ध करने के लिये दी जाती थी। सेना म कार्य करने के योग्य न होने पर भूमि ले भी ली जाती थी।

३ सह-दास क्योंकि वे एक ही स्वामी के अधीन थे, अत साथी।

४ मुइज्जुद्दीन कैकुबाद का वजीरुलमुल्क जिसको मलिक निजामुद्दीन ने अपमानित किया था। (बरनी—पृ० १३३) सुल्तान जलालुद्दीन फीरोज शाह खलजी ने उसे अपना वजीर नियुक्त कर दिया था। (बरनी—पृ० १७७) उसकी उपाधि ख्वाजये जहाँ थी (बरनी—पृ० १७४) सुल्तान अलाउद्दीन के राज्य काल के आरम्भ में भी वह वजीर के पद पर आरूढ रहा (बरनी—पृ० २४७)।

५ इल्तुतमिश का वजीर जिसकी पदवी निजामुलमुल्क थी।

६ जुनैदी का नायब वजीर, ख्वाजा मुहज्जबुद्दीन।

७ जब वह मलिक था।

रहते हैं। किसी कार्य में वह यथेच्छाचार को पसन्द न करता था। वह लोगो को दान करने, इनाम देने तथा समस्त कार्यो में, सतुलन एव सयम का ध्यान रक्खे बिना अग्रसर न होता था। सुल्तान यह कदापि न होने देता था कि किसी को सहस्रो दान कर दे और दूसरे को जो उसी के बराबर अथवा उसी के समान हो एक दिरहम भी न दे। जहा तक हो सकता था वह किसी की सेवा को न भूलता था और अयोग्य लोगो को कभी सम्मानित न करता था। वह बेजोड कार्य कदापि न करता था और ऐसे कार्यों से बचता रहता था जिनके द्वारा लोगों के हृदय में उसके प्रति घृणा उत्पन्न होने की सम्भावना होती और सिद्धान्त के प्रतिकूल कार्य करने से व्यासिद्ध रहता था।

नये पद—

(४२८) उसने मुल्तान मुहम्मद को जिसके ललाट मे राज्य-व्यवस्था एव शासन प्रबन्ध की योग्यता के चिह्न चमकते रहते थे, उलुग खाँ की उपाधि प्रदान की। उसे चत्र[1] देकर अपने राज्य का वली अहद (उत्तराधिकारी) बना दिया। अन्य शाहजादो में से एक को बहराम खाँ की, दूसरे को जफर खाँ की, तीसरे को महमूद खाँ की और चौथे को नुसरत खाँ की पदवी प्रदान की। बहराम ऐबा को, जिसे उसने अपना भाई बनाने का सम्मान प्रदान किया था, किशलू खाँ की पदवी प्रदान की। मुल्तान तथा सिन्ध प्रदेश उसे दे दिये। अपने भतीजे मलिक असदुद्दीन को नायब बारबक, अपने भागिनेय बहाउद्दीन को अर्जे ममालिक का पद तथा सामाने की अक्ता एव अपने जामाता मलिक शादी को दीवान विजारत[2] का सचालन प्रदान किया। ततार खाँ (तातार खाँ) को, जिसे वह अपना पुत्र कहता था, ततार मलिक (तातार मलिक) की पदवी प्रदान की और जफराबाद उसकी अक्ता में दे दिया। कुतलुग खाँ के पिता मलिक बुरहानुद्दीन को आलिम मलिक की पदवी प्रदान की और उसे देहली का कोतवाल नियुक्त कर दिया। मलिक अली हैदर को नायब वकीलदर, कुतलुग खा को देवगीर (देवगिरि) का नायब वजीर काजी कमालुद्दीन को सद्रे जहाँ काजी समाउद्दीन को देहली का काजी, नायबे अर्ज तथा गुजरात का (वाली)[3] मलिक ताजुद्दीन जाफर को नियुक्त किया। उसने ऐसे लोगो को अपने राज्य का सहायक तथा विश्वास-पात्र बनाया एव पद तथा अक्ता प्रदान की जिनके द्वारा राज्य-व्यवस्था तथा शासन-प्रबन्ध को शोभा प्राप्त हो सकती थी और जिनको सम्मान तथा नेतृत्व प्रदान हो जाने से सर्व साधारण के हृदय में किसी प्रकार की घृणा उत्पन्न न हो सकती थी। लोगो के हृदय में उनका गौरव इस प्रकार आरूढ हो गया मानो वे लोग सर्वदा राज्य व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध करते चले आये हो। सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह ने अपनी अत्यधिक योग्यता एव अनुभव के कारण अपने राज्य के चार वर्षो तथा कुछ महीनो के भीतर किसी को अकस्मात एक ही बार इतनी उन्नति, सम्मान तथा गौरव कदापि प्रदान न किया कि वह अन्धा बहरा होकर अपने हाथ पैर की सुध-बुध त्याग देता और अनुचित कार्य करने लगता।

(४२९) उसने न तो किसी के व्यक्तिगत-अधिकार और प्राचीन सेवाओं को इस प्रकार भुलाया कि उनके द्वारा दूसरे निराश हो जाते और रुष्ट होकर उससे घृणा करने लगते और

१ छत्र, राज्य का एक विशेष चिह्न। जिन लोगों को चत्र प्रदान कर दिया जाता था, उनके लिये यह एक विशेष सम्मान का सूचक होता था।

२ प्रधान मन्त्री का विभाग।

३ विलायत अथवा प्रान्त का हाकिम। उसे हर प्रकार के अधिकार प्राप्त थे। वह प्रान्तों में सुल्तान का प्रतिनिधि होता था।

न उसने प्राचीन दासो तथा निष्ठावान सहायकों के विषय में ऐसी बातें कही जिससे दूसरों का विश्वास कम हो जाता। ऐसा ज्ञात होता है कि अमीर खुसरो ने निम्नांकित छन्द सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह की ही राज्य व्यवस्था के सम्बन्ध में उसके संतुलित तथा संयम से कार्य करने को ध्यान में रखकर कहे थे।

छन्द

उसने कोई कार्य पूर्ण ज्ञान तथा बुद्धि के अतिरिक्त न किया।
मानो उसकी टोपी के नीचे सैकड़ो अम्मामे[1] हों।

प्राचीन शासको एवं मन्त्रियो के अपने भाइयो, सहायकों तथा विश्वास पात्रों को उन्नति प्रदान करने के विषय में प्राचीन बादशाहों के इतिहास में जो कुछ परामर्श दिये गये हैं, सुल्तान तुगलुक शाह उन समस्त बातो को अपने सहायकों तथा विश्वासपात्रों को उन्नति प्रदान करते समय ध्यान में रखता था। ईश्वर ने सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह में शासन प्रबन्ध राज्य व्यवस्था, सर्व साधारण का ध्यान रखने एवं सतुष्ट करने, भवन निर्माण कराने तथा कृषि को उन्नति देने से सम्बन्धित गुण स्वाभाविक रूप से उत्पन्न किये थे।

खराज.—

उसने अपने स्वभाव तथा अपनी प्रकृति के कारण अपने राज्य के प्रदेशों का खराज[2] न्याय के मार्ग के अनुसार पैदावार के आधार पर निश्चित किया[3]। नये नये बढ़े हुये करों[4] और (पैदावार) के होने अथवा न होने (दोनो ही दशा में) विभाजन[5] के (कुप्रभाव) से उसने अपने प्रान्तो तथा राज्य की प्रजा को बचा लिया। वह अक्ताओं तथा राज्य की विलायतो (प्रान्तो) के विषय में साइयों[6] की बातो, मुवफ्फिरों[7] के वाक्यों तथा मुक़ातेआ[8] गरो के आश्वासन पर ध्यान न देता था। उसने आदेश दे दिया था कि साइयो,

---

१ पगड़ियाँ—इसका अर्थ यह हुआ कि सैकड़ों विद्वानों की बुद्धि उसमें थी।

२ भूमि कर, किन्तु कहीं कहीं सभी प्रकार के करों के लिये खराज शब्द का प्रयोग हुआ है।

३ सुल्तान अलाउद्दीन ने नाप के आधार पर कर निश्चित किया था। (बरनी पृ० २८७, खलजी कालीन भारत पृ० ६८)।

४ पुस्तक में "मुहदेसान" है। मोरलैंड ने इस शब्द का अनुवाद Innovations स्वीकार किया है। कुछ लोग इसे हादसे से सम्बन्धित बताते हैं किन्तु दस्तूरुल अलबाब की इल्मिल हिसाब में इस शब्द की परिभाषा इस प्रकार है। "विलायतों के खेतों तथा अचल सम्पत्ति पर जो कर अनुचित रूप से बढ़ा दिया जाता था अथवा दंड देकर या समझौते से वसूल होता था।" (दस्तूरुल अलबाब रामपुर। ६ ब)

५ पैदावार के होने अथवा न होने दानों ही दशा में राज्य का भाग (कर) लिये जाने के विपरीत पैदावार के अनुसार राज्य के भाग (कर) को लिये जाने का आदेश दिया।

६ मोरलैंड ने इस शब्द का अनुवाद Spies (जासूस) किया है। Dr. Tripathi ने इसका अनुवाद "Collectors" किया है। शब्द कोषों में इसका अर्थ "चुगलखोर" तथा "कर वसूल करने वाला" दोनों ही हैं। सम्भव है कि सुल्तान का अभिप्राय उन कर वसूल करने वालों से हो जो दीवाने विज़ारत के समक्ष ठीक स्थिति न बताते हों।

७ मुवफ्फिर का अर्थ "जो एकत्र न किया जा सके" है। दीवान के कर को अत्यधिक बढ़ा देना तौफ़ीर कहलाता है। (दस्तूरुल अल्बाब, रामपुर १६ अ) अत्यधिक कर बढ़ा देने वाला मुवफ्फिर हुआ।

८ मुक़ातेआ—किसी को ग्राम के कर का टुकड़ा करके देदेना ताकि वह निश्चित धन दे सके। (दस्तूरुल अल्बाब, रामपुर पृ० १५ ब) किसी भूमि के लिये ठेके पर कर अदा करने वाले मुक़ातेआ गर हुये।

रहते हैं। किसी कार्य में वह यथेच्छाचार को पसन्द न करता था। वह लोगो को दान करने, इनाम देने तथा समस्त कार्यों में, सतुलन एव सयम का ध्यान रक्खे बिना अग्रसर न होता था। सुल्तान यह कदापि न होने देता था कि किसी को सहस्रो दान कर दे और दूसरे को जो उसी के बराबर अथवा उसी के समान हो एक दिरहम भी न दे। जहा तक हो सकता था वह किसी की सेवा को न भूलता था और अयोग्य लोगो को कभी सम्मानित न करता था। वह बेजोड कार्य कदापि न करता था और ऐसे कार्यो से बचता रहता था जिनके द्वारा लोगों के हृदय में उसके प्रति घृणा उत्पन्न होने की सम्भावना होती और सिद्धान्त के प्रतिकूल कार्य करने से ब्यासिद्ध रहता था।

नये पद—

(४२८) उसने सुल्तान मुहम्मद को जिसके ललाट मे राज्य-व्यवस्था एव शासन प्रबन्ध की योग्यता के चिह्न चमकते रहते थे, उलुग खाँ की उपाधि प्रदान की। उसे चत्र[1] देकर अपने राज्य का वली अहद (उत्तराधिकारी) बना दिया। अन्य शाहजादो में से एक को बहराम खाँ की, दूसरे को जफर खाँ की, तीसरे को महमूद खाँ की और चौथे को नुसरत खाँ की पदवी प्रदान की। बहराम ऐबा को, जिसे उसने अपना भाई बनाने का सम्मान प्रदान किया था, किशलू खाँ की पदवी प्रदान की। मुल्तान तथा सिन्ध प्रदेश उसे दे दिये। अपने भतीजे मलिक असदुद्दीन को नायब बारबक, अपने भागिनेय बहाउद्दीन को अर्ज़े ममालिक का पद तथा मामाने की अक्ता एव अपने जामाता मलिक शादी को दीवाने विजारत[2] का सचालन प्रदान किया। ततार खाँ (तातार खाँ) को, जिसे वह अपना पुत्र कहता था, ततार मलिक (तातार मलिक) की पदवी प्रदान की और जफराबाद उसकी अक्ता में दे दिया। कुतलुग खाँ के पिता मलिक बुरहानुद्दीन को आलिम मलिक की पदवी प्रदान की और उसे देहली का कोतवाल नियुक्त कर दिया। मलिक अली हैदर को नायब वकीलदर, कुतलुग खा को देवगीर (देवगिरि) का नायब वजीर काज़ी कमालुद्दीन को सद्रे जहाँ क़ाजी समाउद्दीन को देहली का काज़ी, नायबे अर्ज़ तथा गुजरात का (वाली)[3] मलिक ताजुद्दीन जाफर को नियुक्त किया। उसने ऐसे लोगों को अपने राज्य का सहायक तथा विश्वास-पात्र बनाया एव पद तथा अक्ता प्रदान की जिनके द्वारा राज्य-व्यवस्था तथा शासन-प्रबन्ध को शोभा प्राप्त हो सकती थी और जिनको सम्मान तथा नेतृत्व प्रदान हो जाने स सर्व साधारण क हृदय में किसी प्रकार की घृणा उत्पन्न न हो सकती थी। लोगों के हृदय में उनका गौरव इस प्रकार आरूढ हो गया मानो वे लोग सर्वदा राज्य व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध करते चले आये हो। सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह न अपनी अत्यधिक योग्यता एव अनुभव के कारण अपने राज्य के चार वर्षों तथा कुछ महीनो के भीतर किसी को अकस्मात एक ही बार इतनी उन्नति, सम्मान तथा गौरव कदापि प्रदान न किया कि वह अन्धा बहरा होकर अपने हाथ पैर की सुध-बुध त्याग देता और अनुचित कार्य करन लगता।

(४२९) उसन न तो किसी के व्यक्तिगत-अधिकार और प्राचीन सेवाओं को इस प्रकार भुलाया कि उनके द्वारा दूसरे निराश हो जाते और रुष्ट होकर उससे घृणा करने लगते और

१ छत्र, राज्य का एक विशेष चिह्न। जिन लोगों को चत्र प्रदान कर दिया जाता था, उनके लिये यह एक विशेष सम्मान का सूचक होता था।

२ प्रधान मन्त्री का विभाग।

३ विलायत अथवा प्रान्त का हाकिम। उसे हर प्रकार के अधिकार प्राप्त थे। वह प्रान्तों में सुल्तान का

ने उसने प्राचीन दासों तथा निष्ठावान सहायकों के विषय में ऐसी बातें कहीं जिससे दूसरों का विश्वास कम हो जाता। ऐसा ज्ञात होता है कि अमीर खुसरो ने निम्नांकित छन्द सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह की ही राज्य व्यवस्था के सम्बन्ध में उसके संतुलित तथा संयम से काय करने को ध्यान में रखकर कहे थे।

छन्द

उसने कोई कार्य पूर्ण ज्ञान तथा बुद्धि के अतिरिक्त न किया।
मानो उसकी टोपी के नीचे सैकड़ों अम्मामे[१] हों।

प्राचीन शासकों एवं मन्त्रियों के अपने भाइयों, सहायकों तथा विश्वास पात्रों को उन्नति प्रदान करने के विषय में प्राचीन बादशाहों के इतिहास में जो कुछ परामर्श दिये गये हैं, सुल्तान तुगलुक शाह उन समस्त बातों को अपने सहायकों तथा विश्वासपात्रों को उन्नति प्रदान करते समय ध्यान में रखता था। ईश्वर ने सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह में शासन प्रबन्ध राज्य व्यवस्था, सर्व साधारण का ध्यान रखने एवं संतुष्ट करने, भवन निर्माण कराने तथा कृषि को उन्नति देने से सम्बन्धित गुण स्वाभाविक रूप से उत्पन्न किये थे।

खराज —

उसने अपने स्वभाव तथा अपनी प्रकृति के कारण अपने राज्य के प्रदेशों का खराज[२] न्याय के मार्ग के अनुसार पैदावार के आधार पर निश्चित किया[३]। नये नये बढ़े हुये करों[४] और (पैदावार) के होने अथवा न होने (दोनों ही दशा में) विभाजन[५] के (दुष्प्रभाव) से उसने अपने प्रान्तों तथा राज्य की प्रजा को बचा लिया। वह अक्ताओं तथा राज्य की विलायतों (प्रान्तों) के विषय में साइयों[६] की बातों, मुवफ्फिरों[७] के वाक्यों तथा मुकातेआ[८] गरों के आश्वासन पर ध्यान न देता था। उसने आदेश दे दिया था कि साइयों,

---

१ पगड़ियाँ—इसका अर्थ यह हुआ कि सैकड़ों विद्वानों की बुद्धि उसमें थी।

२ भूमि कर किन्तु कहीं कहीं सभी प्रकार के करों के लिये खराज शब्द का प्रयोग हुआ है।

३ सुल्तान अलाउद्दीन ने नाप के आधार पर कर निश्चित किया था। (बरनी पृ० २८७, खलजी कालीन भारत पृ० ६८)।

४ पुस्तक में 'मुहदेसान" है। मोरलैंड ने इस शब्द का अनुवाद Innovations स्वीकार किया है। कुछ लोग इसे हादसे से सम्बन्धित बताते हैं किन्तु दस्तूरुल अलबाब की इस्लिमल हिसाब में इस शब्द की परिभाषा इस प्रकार है। "विलायतों के खेतों तथा अचल सम्पत्ति पर जो कर अनुचित रूप से बढ़ा दिया जाता था अथवा दंड देकर या समझौते में वसूल होता था।" (दस्तूरुल अलबाब रामपुर। ६ ब)

५ पैदावार के होने अथवा न होने दोनों ही दशा में राज्य का भाग (कर) लिये जाने के विपरीत पैदावार के अनुसार राज्य के भाग (कर) को लिये जाने का आदेश दिया।

६ मोरलैंड ने इस शब्द का अनुवाद Spies (जासूस) किया है। Dr. Tripathi ने इसका अनुवाद 'Collectors" किया है। शब्द कोषों में इसका अर्थ "चुगलखोर" तथा "कर वसूल करने वाला" दोनों ही हैं। सम्भव है कि सुल्तान का अभिप्राय उन कर वसूल करने वालों से हो जो दीवाने विजारत के समक्ष ठीक स्थिति न बताते हों।

७ मुवफ्फिर का अर्थ "जो एकत्र न किया जा सके" है। दीवान के कर को अत्यधिक बढ़ा देना तौफ़ीर कहलाता है। (दस्तूरुल अलबाब, रामपुर १६ अ) अत्यधिक कर बढ़ा देने वाला मुवफ्फिर हुआ।

८ मुकातेआ —किसी को ग्राम के कर का ठेका करके दे देना ताकि वह निश्चित धन दे सके। (दस्तूरुल अलबाब, रामपुर पृ० १५ ब) किसी भूमि के लिये ठेके पर कर अदा करने वाले मुकातेआ गर हुये।

मुवफ्फिरो, मुकातेग्रगरों तथा मुहस्सिबो[१] को दीवाने विजारत के निकट फटकने न दिया जाय[२]। उसने दीवान विजारत को ग्रादेश दे दिया था कि ग्रक्ताग्रो तथा विलायतों पर दस में एक ग्रथवा ग्यारह में एक से ग्रधिक[३] ग्रनुमान, तखमीने ग्रथवा साइयो की सूचना एव मुवफ्फिरो के बताने पर न बढाया जाय।[४] इस बात का प्रयत्न करते रहें कि प्रति वर्ष कृषि की उन्नति (४३०) होती रहे। खराज में थोडी थोडी वृद्धि की जाय ग्रौर ऐसा न हो कि एक दम ही ग्रत्यधिक वसूल कर लेने से एक बार में ही विलायत नष्ट हो जाय[५] ग्रौर उन्नति का मार्ग बन्द हो जाय। सुल्तान तुगलुकशाह ने ग्रनेक बार यह ग्रादेश दे दिया था कि विलायतो मे खराज इस प्रकार वसूल किया जाय कि प्रजा को कृषि की उन्नति में प्रोत्साहन मिलता रहे, पिछली कृषि स्थायी हो जाय ग्रौर प्रत्येक वर्ष थोडी थोडी वृद्धि होती रहे, एक ही बार इतना न वसूल कर लेना चाहिये जिससे न तो पिछली दशा ही वर्त्तमान रह सके ग्रौर न भविष्य में ही कोई उन्नति हो सके। बादशाहो द्वारा ग्रत्यधिक खराज वसूल कर लेने एव खराज में वृद्धि कर देने से विलायतें नष्ट हो जाती हैं ग्रौर सर्वदा खराब रहती हैं। ग्रत्याचारी मुक्तों तथा ग्रामिलो[६] के ग्रत्याचार द्वारा विनाश हो जाता है।

खराज की वसूली—

सुल्तान तुगलुक शाह ने मुक्तो[७] तथा राज्य के भिन्न भिन्न भाग के वालियो को खराज वसूल करने के सम्बन्ध में यह ग्रादेश दे दिया था कि वे हिन्दुग्रो[८] से इस प्रकार व्यवहार करें कि वे लोग धन की ग्रधिकता से ग्रन्धे न हो जायें ग्रौर विद्रोही तथा षड्यन्त्रकारी न बन जाय ग्रौर न उनसे ऐसा व्यवहार किया जाय कि वे दरिद्रता के कारण कृषि को त्याग दें। खराज वसूल करने के विषय में उपर्युक्त सन्तुलन तथा मध्य का मार्ग ग्रहण करना बुजुर्ग

१ भूमि के बदले में सेना भर्ती करने वाले। ऐसे लोगों को कृषि की उन्नति की कोई चिन्ता न होती थी।

२ बरनी ने इस स्थान पर जितने लोगों का उल्लेख किया है वे सब के सब ऐसे थे, जिन्हें भूमि तथा कृषि की उन्नति की चिन्ता न होती थी। वे ग्रधिक कर पर राज्य से भूमि लेकर ग्रथवा कर में वृद्धि करवा कर ग्रपने स्वार्थ की पूर्ति किया करते थे। सुल्तान ने उन्हें कोई प्रोत्साहन न दिया।

३ जियादत ग्रज यकदह याजदेह।

४ कर में वृद्धि की यह विभिन्न विधियाँ थीं किन्तु सुल्तान गयासुद्दीन ने केवल पैदावार को ग्राधार माना था। इस स्थान पर खालसे का उल्लेख नहीं केवल बेलाद विलायत तथा ममालिक की चर्चा की गई है। इससे ऐसा ग्रनुमान होता है कि खालसे पर ग्रधिकतम कर तो सुल्तान ग्रलाउद्दीन ही के राज्य काल में लग गया था ग्रौर ग्रब खालसे में वृद्धि सम्भव न थी।

५ तारीखे फीरोजशाही की रामपुर की हस्तलिखित पोथी में सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह के राज्य-काल की कर व्यवस्था का उल्लेख इस प्रकार है। इस पोथी के वाक्य ग्रधिक स्पष्ट हैं।

"उसने ग्रावश्यकतानुसार तथा ग्रपने स्वभाव के कारण विलायतों का खराज न्याय के मार्ग पर निश्चित किया ग्रौर वृद्धि के मुहदसात प्रजा के मध्य से हटा दिये।" (पृ० २६६)

"यदि उसके राजसिंहासन के समक्ष दीवाने विजारत में मुवफ्फिरान तथा साइयान विलायत के खराज में तौफीर करते ग्रथवा पहले की ग्रपेक्षा ग्रधिक स्वीकार कर लते तो वह बडा क्रोधित होता ग्रौर मुवफ्फिरों की बात का विश्वास न करता ग्रौर कहता कि 'तौफीर कराने वाला मेरी विलायतों को नष्ट कराना चाहता है ग्रौर प्रजा के पास जो कुछ है ले लेना चाहता है।' विलायतों तथा ग्रक्ताग्रों में से दस ग्रथवा ग्यारह में ग्राधे से ग्रधिक वृद्धि की ग्रनुमति न देता था। शहर (देहली) के ग्रामिलों के इदरार तथा वजीफे ग्रपने समक्ष नष्ट कर देता था।" (पृ० २६७०)

६ भूमि कर वसूल करने वाले। ग्रामों में उनका तथा मुतसर्रिफ का एक ही कार्य होता था।

मिहरों[1] एव सुदक्ष लोगों द्वारा ही सम्भव है। उपर्युक्त आदेशानुसार हिन्दुओं से व्यवहार करना उच्च कोटि की राज्य व्यवस्था कही जा सकती है।

सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह ने, जोकि बडा ही अनुभवी, दूरदर्शी तथा कूटनीतिज्ञ बादशाह था, खराज वसूल करने के विषय में यह आदेश भी दिया था कि मुक्ते तथा वाली खराज वसूल करने के समय इस बात की पूछताछ करते रहे कि खूत[2] तथा मुकद्दम[3] शाही-खराज के अतिरिक्त प्रजा से कुछ और वसूल न करने पायें। यदि वे अपनी कृषि का कर तथा चराई (का कर) न अदा करें तथा प्रजा से अधिक वसूल न करें तो उनको अपना कर अदा करने के लिये विवश न किया जाय क्योंकि वे इस प्रकार खूती तथा मुकद्दमी का पारश्रमिक प्राप्त कर लेते हैं, जो उन्हें अपने कार्य के लिये अलग से नही दिया जाता। खूतों तथा मुकद्दमों की गर्दनों पर बडा उत्तरदायित्व होता है। यदि वे भी समस्त प्रजा की भाँति कर अदा करेंगे तो उन्हें खूती तथा मुकद्दमी से कोई लाभ नही होगा।

(४३१) सुल्तान गयासुद्दीन ने जिन अमीरों तथा मलिकों को उन्नति प्रदान की थी एव अक्ता तथा विलायतें जिनके अधीन कर दी थी उन्हें वह अन्य आमिलो के समान दीवान[4] में उपस्थित होने पर विवश न करता था और न अन्य आमिलो के समान उनसे कठोरता से तथा उन्हें अपमानित करके कर वसूल करने की अनुमति देता था। वह उन लोगों को यह परामर्श दिया करता था कि "यदि तुम चाहते हो कि तुम्हें दीवाने विजारत में न बुलवाया जाय और कर वसूल करने में तुम से कठोरता एव तुम्हारा अपमान न किया जाय और तुम्हारी मलिकी तथा अमीरी का मान नष्ट-भ्रष्ट न हो तो अपनी अक्ताओं की आय से कम से कम लालच करो, जो कम से कम प्राप्त करो उसमें से अपने कारकुनों[5] के पास कुछ न कुछ रहने दो, सेना के वेतन में से एक दाँग अथवा दिरहम का लोभ मत करो। यह तुम्हारे हाथ में है कि अपने पास से सेना को कुछ दो अथवा न दो किन्तु सेना के लिये जो कुछ निश्चित हो चुका है, यदि उसमें से तुम कुछ आशा रखते हो तो फिर तुम्हें अमीरी तथा मलिकी का नाम न लेना चाहिये। यदि कोई अमीर अपने सेवक के वेतन में से कुछ खा जाता है तो इससे कहीं अच्छा है कि वह धूल खाये। अमीरों तथा मलिकों को अक्तादारी तथा विलायतदारी[6] के लिये खराज में से १० या ११ में से आधा अथवा १० या १५ में से एक की आशा करने अथवा ले लेने से मना नही किया जा सकता[7]। उसे पुन माँगना तथा अमीरों को इसके लिये कष्ट देना उचित नही।"

"इसी प्रकार विलायत तथा अक्ताओं के कारकुन एव मुतसर्रिफ[8] अपने वेतन के अतिरिक्त हजार में से ५ अथवा १० ले लें तो इसके लिये उन्हें अपमानित न करना चाहिये और यह

१ ईरान के बादशाह नौशीरवाँ का वजीर जो अपनी योग्यता के लिए मध्य कालीन राजनीति में उदाहरण के रूप में उल्लिखित किया जाता था।

२ ग्राम का बड़ा अधिकारी जो भूमि कर वसूल करता था।

३ गाँव का मुखिया।

४ कर विभाग।

५ भूमि कर का हिसाब किताब रखने वाले कर्मचारी।

६ अक्ता तथा विलायत का प्रबन्ध करने का पारश्रमिक।

७ यह अधिक रकम राज्य के हिस्से से ली जाती होगी। अलाउद्दीन ने अपने चाचा से कुछ समय के लिये 'फवाजिल' न भेजने की आज्ञा प्राप्त करली थी। (बरनी पृ० २२० २१, खलजी कालीन भारत पृ० २८-२६)

८ ग्रामों से किसानों से भूमिकर वसूल करने वाला अधिकारी।

रकम उनसे मारपीट कर अथवा शिकंजे[1] में कस कर या बन्दीगृह में डाल कर न वसूल करनी चाहिये। जो अपहरणकर्त्ता तथा चोर अपनी अक्ताओं तथा विलायत के खराज से अत्यधिक अपने पास रख लेते हैं अथवा हिसाब में पूरी रकम नहीं दिखाते, अथवा अपने हिस्से में भारी-भारी रकमें ले लेते हैं, उन्हें दण्ड देकर तथा शिकंजे में कसवा कर एवं बन्दीगृह में डलवा कर अपमानित करना चाहिये। जो कुछ उन्होंने अपहरण कर लिया हो उसे उनके परिवार तक से वसूल कर लेना चाहिये।"

(४३२) यदि बुद्धिमान लोग इस बात पर न्यायपूर्वक ध्यान देंगे तो उन्हें ज्ञात हो जायगा कि उस अनुभवी तथा न्यायकारी बादशाह ने अपनी दूरदर्शिता के फलस्वरूप जो कुछ आदेश दिये थे वे उचित थे। सुल्तान तुग़लुक़ शाह ने खराज वसूल करने के विषय में जो नियम बनाये थे तथा मुक़द्दमी, खूती, विलायतदारी, अमलदारी एवं कारकुनों के पारिश्रमिक के सम्बन्ध में जो नियम निश्चित किये थे उनके द्वारा उसके राज्य-काल में विलायतों की कृषि की उन्नति भी प्राप्त होती रही, और मुक्तों तथा वालियों को, जोकि उसके सहायक तथा विश्वासपात्र थे, वेतन के अतिरिक्त धन सम्पत्ति भी प्राप्त हो जाया करती थी और प्रत्येक वर्ष उनकी शक्ति तथा वैभव में उन्नति होती रहती थी। कारकुनों को भी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु धन-सम्पत्ति प्राप्त होती रहती थी। किसी मलिक, अमीर अथवा उच्च पदाधिकारी को कर न अदा करने के कारण दीवान में उपस्थित न होना पड़ता था और इस प्रकार कोई अपमानित न होता था। इसके फलस्वरूप उसके राज्य के सहायकों तथा विश्वासपात्रों की निष्ठा में दिन प्रति दिन वृद्धि होती जाती थी।

खुसरो खाँ द्वारा लुटाये हुये धन की वापसी—

सुल्तान गयासुद्दीन तुग़लुक़ शाह ने दीवाने विज़ारत के पद यशस्वी पदाधिकारियों तथा कारकुनों को प्रदान किये थे। दीवान के शाही कार्यों के संचालन में, जहाँ तक विलायतों, अक्ताओं, कारकुनों एवं मुतसर्रिफ़ों का सम्बन्ध है, कोई कठोरता तथा निष्ठुरता न होती थी। न किसी को पदच्युत किया जाता, न कोई अपमानित किया जाता और न कोई बन्दी बनाया जाता था। सुल्तान तुग़लुक़ शाह के दीवाने विज़ारत में एक दो वर्ष तक बैतुलमाल की उस धन-सम्पत्ति को प्राप्त करने के विषय में कठोरता तथा निष्ठुरता होती रही जोकि दुष्ट खुसरो खाँ ने, जब कि उसका राज्य तथा उसके प्राण भय में थे, लुटा दी थी और जिसे लोगों ने युद्ध के समय लूट लिया था। इस प्रकार दीवान द्वारा केवल उस धन-सम्पत्ति को पुनः प्राप्त करने में कठोरता की गई जो लोगों ने लूट ली थी और जिसके फलस्वरूप अलाई राज कोष रिक्त हो गया था तथा मुसलमानों के बैतुलमाल में कुछ शेष न रह गया था और एक प्रकार से लुटेरों तथा अपहरणकर्त्ताओं एवं उनके सहायकों द्वारा झाड़ू फिर गई थी। तुग़लुक़ शाह के दीवान द्वारा इन लोगों से धन सम्पत्ति वसूल करने में बड़ी कठोरता की गई।

(४३३) इस प्रकार लूटा हुआ धन जिन लोगों से वसूल किया गया वे तीन श्रेणियों में विभाजित हो गये थे। (१) वे लोग जिनके हृदय में ईश्वर का भय था और जिनकी संख्या बहुत थोड़ी थी, और जिन्होंने खुसरो खाँ द्वारा प्रदान किया हुआ धन राज-कोष में वापस कर दिया था। (२) वे लोग जोकि लोभी थे तथा धन-सम्पत्ति लौटाने में टालमटोल करते रहे और विनय तथा घूस द्वारा धन-सम्पत्ति अदा करने से बच जाना चाहते थे। सुल्तान तुग़लुक़ शाह ने उनका कोई बहाना स्वीकार न किया और उनसे कठोरता से धन-सम्पत्ति प्राप्त की और क्षमा न किया। (३) तीसरे प्रकार के धन प्राप्त करने वाले वे लोग थे जोकि बड़े दुष्ट लोभी, लालची, लुटेरे, बेईमान तथा चोर थे। उनके

[1] दण्ड देने की एक मध्य कालीन विधि।

हृदय में दुराचार आरूढ हो चुका था। वे लोग बहुत बडी संख्या में थे। वे लोग धन-सम्पत्ति रखते हुये भी अपमानित होते तथा कठोरता एवं अपमान को सहन कर लेते थे। जब उनसे धन-सम्पत्ति माँगी जाती तब वे शिकायतें करते और जियारतो[1] को चले जाते थे। प्रत्येक मित्र तथा शत्रु से विनति करते और उस जैसे बादशाह की जोकि इस्लाम तथा मुसलमानों का आश्रय-दाता था, निन्दा करते थे और उसको बुरा भला कहते थे तथा उसका अहित चाहते थे। सुल्तान ने इस तीसरी श्रेणी के व्यक्तियो के लिये, जोकि धन-सम्पत्ति रखते हुये भी अपमानित होना स्वीकार कर लेते थे, आदेश दे दिया था कि इनसे कठोरता, निष्ठुरता, मारपीट से एव बन्दीगृह में डालकर धन-सम्पत्ति प्राप्त की जाय, उनका कोई भी झूठा बहाना स्वीकार न किया जाय। लुटी हुई धन-सम्पत्ति को पुन प्राप्त करने के विषय में एक वर्ष के अत्यधिक परिश्रम से अलाई राज-कोष पहले के समान फिर मालामाल हो गया।

सुल्तान तुग़लुक के दान की विशेषता—

ईश्वर ने सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह को बैतुलमाल में धन-सम्पत्ति एकत्र करने तथा दान-पुण्य करने की विशेष योग्यता प्रदान की थी। बुद्धि एव शरा के अनुसार जिस किसी से धन-सम्पत्ति प्राप्त करनी चाहिये उससे वह धन-सम्पत्ति प्राप्त करता और शरा, बुद्धि, साहस तथा दान के अनुसार जिस भी धन-सम्पत्ति प्रदान होनी चाहिये उसे वह प्रदान करता। जिस किसी से (इस्लाम) धर्म तथा राज्य के हित को देखते हुए धन-सम्पत्ति प्राप्त करना उचित न होता उससे वह कुछ न लेता और जिसको कुछ प्रदान करना अपव्यय तथा (४३४) अनुचित होता उसे वह कुछ न देता। ऐसा बादशाह, जिसमें यह योग्यता हो कि वह वसूल करने के समय पर वसूल करे, दान के समय दान करे, किसी से बिना कारण कुछ न ले तथा व्यर्थ में दान न करे, करनो[2] तथा युगो के उपरान्त किसी इकलीम[3] तथा राज्य का स्वामी हुआ होगा अथवा न भी हुआ हो। कोई ऐसा सप्ताह न व्यतीत होता जब कि सुल्तान तुगलुक शाह अपने दरबार के बडे द्वार को न बन्द करवा देता हो और सर्वसाधारण तथा विशेष व्यक्तियो को उनकी श्रेणी के अनुसार इनाम न देता हो। वह इनाम प्रदान करने म मध्य का मार्ग ग्रहण करता था। वह लोगो को इतनी अधिक धन सम्पत्ति न प्रदान कर देता था कि लोग अपव्यय करने लगते, और न इतना कम देता कि लोग उसे सूम तथा कृपण प्रसिद्ध कर देते। वह लाखो तथा सहस्रो प्रदान करते समय निरकुश तथा फ़िरऔन[4] के समान बादशाहो का अनुसरण न करता था जो केवल कुछ ही लोगो को दान करते थे और इस बात पर ध्यान न देते थे कि वह उचित है अथवा अनुचित। सुल्तान इस प्रकार किसी को कुछ न प्रदान करता था जिससे दूसरो के हृदय में ईर्षा उत्पन्न हो जाय। उसके दान पुण्य द्वारा लोगो को बडा लाभ होता और वे उसके हितैषी तथा निष्कपट सहायक हो जाते थे। किसी को किसी स ईर्षा तथा उसके दान के कारण किसी को उससे घृणा न होती थी। दान-पुण्य तथा लोगो को धन प्रदान करते समय वह दूरदर्शी बादशाह अपने दरबार के प्राचीन तथा नवीन कर्मचारियो, सर्वसाधारण तथा विशेष व्यक्तियो में कोई भेद-भाव न रखता था। वह इस बात पर ध्यान न देता था

---

१ किसी सूफी मत की कब्र के दर्शन को चले जाते थे।

२ करन —दस वर्ष की अवधि और कुछ लोगो के अनुसार २०, ३० यहाँ तक कि १२० वर्ष तक की कोई अवधि।

३ जलवायु के प्रदेश। मध्यकालीन मुसलमान भूगोल-वेत्ताओं के अनुसार समस्त ससार सात इकलीमों में विभाजित था। साधारण साहित्य म बड़े बड़े प्रान्त तथा स्वतन्त्र राज्य भी इक़लीम कहे जाते थे।

४ फ़िरऔन — मिस्र का एक निरकुश बादशाह, मिस्र के बादशाहों की पदवी।

कि लोग अपनी श्रेणी के अनुसार उसकी निष्कपट सेवा करते हैं अथवा नहीं। (वह जानता था कि बादशाह द्वारा) कुछ लोग इनाम पा जाते हैं और कुछ नहीं पाते अत जो लोग नहीं पाते वे निराश हो जाते हैं और दुखी रहते हैं, बादशाह के विषय में उनकी निष्ठा में कमी हो जाती है। ऐसा भी सम्भव है कि न पाने वाले पाने वालो के विरुद्ध ईर्षा तथा द्वेष रखने लगें और गुप्त रूप से विरोध एव शत्रुता करने लगें, अत बादशाह के दान-पुण्य में यह गुण होना चाहिए कि वह जब कुछ प्रदान करे तो इस बात का ध्यान रखे कि सभी को मिल जाय जिससे पाने वालो के हृदय में उसके प्रति निष्ठा में वृद्धि हो और लोग एक दूसरे से ईर्षा तथा द्वेष न रखने लगें। उपर्युक्त विचार से, जोकि बडे दूरदर्शी तथा योग्य लोगो से सम्बन्धित है, सुल्तान तुगलुक शाह इस बात का प्रयास किया करता था कि प्रत्येक बार अपने दरबार के सभी सवसाधारण तथा विशेष व्यक्तियों को कुछ न (४३५) कुछ प्रदान करदे। उसके दरबार के हितैषियों में कोई भी उसके इनाम से वंचित तथा निराश न रह पाता था।

सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह ने अपने दानपुण्य के विषय में ऐसे उचित नियम बना लिये थे जिनके समान नियम देहली के किसी बादशाह को बनाते हुये न देखा गया था। प्रत्येक फतहनामे[1] के पहुँचने, प्रत्येक पुत्र के जन्म विवाह तथा प्रत्येक शाहजादे की ततहीर[2] के समय वह समस्त सद्रो[3], गण्य-मान्य व्यक्तियो, आलिमों, मुफ्तियों[4], विद्वानों, अध्यापकों, मुज़क्किरो[5] तथा नगर के विद्यार्थियो को अपने महल में बुलवाता था और प्रत्येक को उसकी श्रेणी के अनुसार इनाम देता था। जिस प्रकार वह उपस्थित लोगो को इनाम देता था उसी प्रकार वह प्रत्येक खानकाह[6] के शेखो[7], एकान्त-वासियो को उनकी आवश्यकतानुसार फ़ुतूह[8] भेजता था। वह इस बात का प्रयास किया करता था कि उसके राज्य के समस्त धार्मिक बुजुर्गों को इनाम इकराम प्राप्त हो जाय और कोई भी उसके दानपुण्य से वंचित न रहे। वह चाहता था कि उसके दरबार के निष्कपट सहायको तथा उसके हितैषियो एव उसके प्रति निष्ठा रखने वालों को शीघ्र इनाम प्राप्त होते रहे, जो कोई भी अपने आपको उसका हितैषी कहता हो वह दरिद्र तथा निर्धन न रहने पाये और उसे किसी से ऋण लेने की आवश्यकता न पडे, जब कभी बादशाह को कोई प्रसन्नता हो तो उन्हे भी प्रसन्नता प्राप्त होती रहे। यद्यपि वह थोडा देता था किन्तु वह एक बहुत बडी संख्या को देता था और बार बार देता था। यदि सुल्तान तुगलुक शाह के उस इनाम का, जोकि वह किसी व्यक्ति को प्रदान करता था, लेखा तैयार किया जाता, तो वह उस व्यक्ति की एक वर्ष की समस्त आय अर्थात् वेतन, इदरार[9], वज़ीफ़े[10] एव इनाम[11] से बढ जाता।

---

१ विजय की सूचना के पत्र। इनकी रचना उच्च कोटि के विद्वान किया करते थे।

२ पाक होने, खतने के समय।

३ सद्र स्सुदूर के अधीन धार्मिक, न्याय तथा शिक्षा सम्बन्धी कार्यों की देख रेख करने वाला अधिकारी।

४ वह अधिकारी जो इस्लामी धर्म शास्त्र के अनुसार विभिन्न समस्याओं में अपना मत देता था।

५ तज़कीर, धार्मिक प्रवचन करने वाले।

६ सूफी सतों के निवास करने का स्थान।

७ सूफियों।

८ सूफी सतों तथा धार्मिक व्यक्तियों को बिना उनके माँगे भेजा जाने वाला उपहार। चूँकि वे लोग शाही उपहार अथवा इनाम के आकांक्षी न होते थे, अत सुल्तान उनके निवास स्थान पर उपहार भिजवाता था।

९ विद्वानों, धार्मिक तथा अन्य लोगों को प्रदान की जाने वाली सहायता।

१० वृत्ति।

११ किसी की सेवा से प्रसन्न होकर पुरस्कार में दी जाने वाली भूमि।

प्रजा के सुख तथा उसकी उन्नति का ध्यान—

सुल्तान तुगलुक शाह स्वाभाविक रूप से सर्वसाधारण के हितो की उन्नति का प्रयास किया करता था। वह चाहता था कि उसकी प्रजा धन-धान्य-सम्पन्न तथा सुखी रहे। वह किसी को दरिद्र तथा निर्धन न देखना चाहता था। वह इस बात का प्रयत्न किया करता था (४३६) कि उसकी समस्त प्रजा, सेना तथा अन्य लोग सर्वदा सुख-शान्ति से जीवन व्यतीत करें। सुल्तान तुगलुक शाह का यह एक प्राचीन गुण तथा उसकी एक उत्कृष्ट आदत थी कि वह चाहता था कि देश तथा उसकी विलायतों (प्रातो) की प्रजा, हिन्दू तथा मुसलमान, कृषि, उद्योग-धन्धे तथा अन्य कोई न कोई कार्य करते रहे जिसके कारण वे धन-धान्य सम्पन्न हो जायें और दरिद्रता तथा निर्धनता के कारण दुखी तथा परेशान न रहे। सुल्तान अपनी प्रजा का इतना बडा हितैषी था कि वह चाहता था कि भिखारी लोग भी भिक्षा मागना त्याग कर कोई न कोई उद्योग-धन्धा करने लगें और भिक्षा मांगने के अपमान, दरिद्रता के अनादर तथा निर्धनता से मुक्त हो जायें। उसके राज्य के सभी लोग किसी न किसी उद्योग-धंधे के फलस्वरूप सुखी तथा सम्पन्न रहें और ऐसी किसी बात, पाप तथा दुराचार में न पड़ें जिससे उन्हें हानि हो और वे परेशान, आवारा तथा बेकार हो जायें।

वह प्रत्येक दिन, प्रत्येक सप्ताह तथा प्रत्येक मास में अपने परिवार वालो तथा हितैषियो एव सहायकों को बुलवाया करता था और उसकी यह इच्छा होती थी कि वे लोग सुखी, सम्पन्न तथा अपने अपने कार्य में लगे रहें। उसकी न तो कभी यह इच्छा होती थी और न वह इस बात पर कभी विचार करता था कि वह उन लोगो को जिन्हें उसने उन्नति प्रदान की है, किसी कारण से कोई हानि पहुँचाये। वह किसी भी दशा में किसी का विनाश न करना चाहता था और न यह बात उसके स्वभाव में ही थी।

लोभी किस प्रकार का बादशाह चाहते हैं—

जो लोग अनुचित रूप से धन-सम्पत्ति प्राप्त कर लेना चाहते थे तथा लोभी और लालची थे एव जिनकी इच्छा हजारो तथा लाखों प्राप्त करके भी पूरी न होती थी वे सुल्तान तुगलुक शाह जैसे बादशाह को, जोकि प्रत्येक व्यक्ति की सेवा का ध्यान रखता था, उचित तथा अनुचित का भेद समझता था और प्रत्येक वस्तु को अपने स्थान पर देखना चाहता था, पसन्द न करते थे। वे ऐसे न्यायकारी सन्तुलित स्वभाव वाले तथा प्रजा के हितैषी बादशाह को न देख सकते थे। वे उसकी निन्दा किया करते थे। जिस प्रकार लोग सुल्तान जलालुद्दीन खलजी की, जोकि बडा ही मुसलमान तथा लोगों की सेवाओ का ध्यान रखने (४३७) वाला बादशाह था, निन्दा करते थे, उसी प्रकार वे सुल्तान तुगलुक शाह की भी निन्दा करते थे, क्योंकि लालचियो, लोभियो, सोने चाँदी के प्रेमियो तथा तन्के और जीतल पर जान देने वालो की यही आदत होती है। जो बादशाह सत्य को उत्कृष्ट स्थान प्रदान करता है और यह बात देखता रहता है कि क्या चीज उचित है और क्या चीज अनुचित, कौन सी वस्तु अपने स्थान पर है तथा कौनसी नही, प्रत्येक वस्तु को एक उचित अवसर प्रदान करना चाहता है, लोभियो तथा ससार के प्रेमियों को सेना तथा खजाना नही लुटाता, ऐसे बादशाह को वे लोग अपना सुल्तान नहीं देख सकते। उपर्युक्त समूह अपने ऊपर ऐसे बादशाह का राज्य चाहता है जोकि अत्याचारी हो, रक्तपात करता हो तथा खजाना लुटाता हो, सहस्रो से बिना किसी अधिकार के ले लेता हो तथा हजारो को बिना किसी सेवा के प्रदान कर देता हो; स्थायी परिवारों का विनाश कर देता हो और नीच लोगों को बिना किसी सेवा के सम्मान प्रदान कर देता हो, कमीनों, अयोग्य, अनुचित, पाषाण हृदय वालो, खुदा का भय

कि लोग अपनी श्रेणी के अनुसार उसकी निष्कपट सेवा करते हैं अथवा नही। (वह जानता था कि बादशाह द्वारा) कुछ लोग इनाम पा जाते हैं और कुछ नही पाते अत जो लोग नही पाते वे निराश हो जाते हैं और दु खी रहते हैं, बादशाह के विषय में उनकी निष्ठा में कमी हो जाती है। ऐसा भी सम्भव है कि न पाने वाले पाने वालो के विरुद्ध ईर्षा तथा द्वेष रखने लगें और गुप्त रूप से विरोध एव शत्रुता करने लगें, अत बादशाह के दान-पुण्य में यह गुण होना चाहिए कि वह जब कुछ प्रदान करे तो इस बात का ध्यान रक्खे कि सभी को मिल जाय जिससे पाने वालो के हृदय में उसके प्रति निष्ठा में वृद्धि हो और लोग एक दूसरे से ईर्षा तथा द्वेष न रखने लग। उपर्युक्त विचार से, जोकि बडे दूरदर्शी तथा योग्य लोगो से सम्बन्धित है, सुल्तान तुगलुक शाह इस बात का प्रयास किया करता था कि प्रत्येक बार अपने दरबार के सभी सवसाधारण तथा विशेष व्यक्तियो को कुछ न (४३५) कुछ प्रदान करदे। उसके दरबार के हितैषियों में कोई भी उसके इनाम से वचित तथा निराश न रह पाता था।

सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह ने अपने दानपुण्य के विषय में ऐस उचित नियम बना लिये थे जिनके समान नियम देहली के किसी बादशाह को बनाते हुये न देखा गया था। प्रत्येक फतहनामे[१] के पहुँचने, प्रत्येक पुत्र के जन्म विवाह तथा प्रत्येक शाहजादे की ततहीर[२] के समय वह समस्त सद्रो[३], गण्य-मान्य व्यक्तियो, आलिमो, मुफ्तियो[४], विद्वानो, अध्यापको, मुज्किरो[५] तथा नगर के विद्यार्थियो को अपने महल में बुलवाता था और प्रत्येक को उसकी श्रेणी के अनुसार इनाम देता था। जिस प्रकार वह उपस्थित लोगो को इनाम देता था उसी प्रकार वह प्रत्येक खानकाह[६] के शेखो[७], एकान्त-वासियो को उनकी आवश्यकतानुसार फुतूह[८] भेजता था। वह इस बात का प्रयास किया करता था कि उसके राज्य के समस्त धार्मिक बुजुर्गों को इनाम इकराम प्राप्त हो जाय और कोई भी उसके दानपुण्य से वचित न रहे। वह चाहता था कि उसके दरबार के निष्कपट सहायको तथा उसक हितैषियो एव उसके प्रति निष्ठा रखने वालों को शीघ्र इनाम प्राप्त होते रहे, जो कोई भी अपने आपको उसका हितैषी कहता हो वह दरिद्र तथा निर्धन न रहने पाये और उसे किसी से ऋण लेने की आवश्यकता न पडे, जब कभी बादशाह को कोई प्रसन्नता हो तो उन्हे भी प्रसन्नता प्राप्त होती रहे। यद्यपि वह थोडा देता था किन्तु वह एक बहुत बडी सख्या को देता था और बार बार देता था। यदि सुल्तान तुगलुक शाह के उस इनाम का, जोकि वह किसी व्यक्ति को प्रदान करता था, लेखा तैयार किया जाता, तो वह उस व्यक्ति की एक वर्ष की समस्त आय अर्थात् वेतन, इदरार[९], वजीफे[१०] एव इनाम[११] से बढ जाता।

१ विजय की सूचना के पत्र। इनकी रचना उच्च कोटि के विद्वान किया करत थे।
२ पाक होने, खतने के समय।
३ सद्र स्सुदूर के अधीन धार्मिक, न्याय तथा शिक्षा सम्बन्धी कार्यों की देख रेख करने वाला अधिकारी।
४ वह अधिकारी जो इस्लामी धर्म शास्त्र के अनुसार विभिन्न समस्याओं में अपना मत देता था।
५ तज्कीर, धार्मिक प्रवचन करने वाले।
६ सूफी सतों के निवास करने का स्थान।
७ सूफियों।
८ सूफी सतों तथा धार्मिक व्यक्तियों को बिना उनके माँगे भेजा जाने वाला उपहार। चूँकि वे लोग शाही उपहार अथवा इनाम के आकाक्षी न होते थे, अत सुल्तान उनके निवास स्थान पर उपहार भिज वाता था।
९ विद्वानों, धार्मिक तथा अन्य लोगों को प्रदान की जाने वाली सहायता।
१० वृत्ति।
११ किसी की सेवा से प्रसन्न होकर पुरस्कार में दी जाने वाली भूमि।

प्रजा के सुख तथा उसकी उन्नति का ध्यान—

सुल्तान तुग़लुक शाह स्वाभाविक रूप से सर्वसाधारण के हितों की उन्नति का प्रयास किया करता था। वह चाहता था कि उसकी प्रजा धन धान्य-सम्पन्न तथा सुखी रहे। वह किसी को दरिद्र तथा निर्धन न देखना चाहता था। वह इस बात का प्रयत्न किया करता था (४३६) कि उसकी समस्त प्रजा, सेना तथा अन्य लोग सर्वदा सुख-शान्ति से जीवन व्यतीत करें। सुल्तान तुग़लुक शाह का यह एक प्राचीन गुण तथा उसकी एक उत्कृष्ट आदत थी कि वह चाहता था कि देश तथा उसकी विलायतों (प्रांतों) की प्रजा, हिन्दू तथा मुसलमान, कृषि, उद्योग-धन्धे तथा अन्य कोई न कोई कार्य करते रहें जिसके कारण से धन-धान्य सम्पन्न हो जायें और दरिद्रता तथा निर्धनता के कारण दुःखी तथा परेशान न रहें। सुल्तान अपनी प्रजा का इतना बड़ा हितैषी था कि वह चाहता था कि भिखारी लोग भी भिक्षा मांगना त्याग कर कोई न कोई उद्योग धन्धा करने लगें और भिक्षा मांगने के अपमान, दरिद्रता के अनादर तथा निर्धनता से मुक्त हो जायें। उसके राज्य के सभी लोग किसी न किसी उद्योग-धंधे के फलस्वरूप सुखी तथा सम्पन्न रहें और ऐसी किसी बात, पाप तथा दुराचार में न पड़ें जिससे उन्हें हानि हो और वे परेशान, आवारा तथा बेकार हो जायें।

वह प्रत्येक दिन, प्रत्येक सप्ताह तथा प्रत्येक मास में अपने परिवार वालों तथा हितैषियों एवं सहायकों को बुलवाया करता था और उसकी यह इच्छा होती थी कि वे लोग सुखी, सम्पन्न तथा अपने अपने कार्य में लगे रहें। उसकी न तो कभी यह इच्छा होती थी और न वह इस बात पर कभी विचार करता था कि वह उन लोगों को जिन्हें उसने उन्नति प्रदान की है, किसी कारण से कोई हानि पहुँचाये। वह किसी भी दशा में किसी का विनाश न करना चाहता था और न यह बात उसके स्वभाव में ही थी।[1]

लोभी किस प्रकार का बादशाह चाहते हैं—

जो लोग अनुचित रूप से धन सम्पत्ति प्राप्त कर लेना चाहते थे तथा लोभी और लालची थे एवं जिनकी इच्छा हज़ारों तथा लाखों प्राप्त करके भी पूरी न होती थी वे सुल्तान तुग़लुक शाह जैसे बादशाह को, जोकि प्रत्येक व्यक्ति की सेवा का ध्यान रखता था, उचित तथा अनुचित का भेद समझता था और प्रत्येक वस्तु को अपने स्थान पर देखना चाहता था, पसन्द न करते थे। वे ऐसे न्यायकारी सन्तुलित स्वभाव वाले तथा प्रजा के हितैषी बादशाह को न देख सकते थे। वे उसकी निन्दा किया करते थे। जिस प्रकार लोग सुल्तान जलालुद्दीन खलजी की, जोकि बड़ा ही मुसलमान तथा लोगों की सेवाओं का ध्यान रखने (४३७) वाला बादशाह था, निन्दा करते थे, उसी प्रकार वे सुल्तान तुग़लुक शाह की भी निन्दा करते थे, क्योंकि लालचियों, लोभियों, सोने चाँदी के प्रेमियों तथा तन्के और जीतल पर जान देने वालों की यही आदत होती है। जो बादशाह सत्य को उत्कृष्ट स्थान प्रदान करता है और यह बात देखता रहता है कि क्या चीज उचित है और क्या चीज अनुचित, कौन सी वस्तु अपने स्थान पर है तथा कौनसी नहीं, प्रत्येक वस्तु को एक उचित अवसर प्रदान करना चाहता है, लोभियों तथा संसार के प्रेमियों को सेना तथा खज़ाना नहीं लुटाता, ऐसे बादशाह को वे लोग अपना सुल्तान नहीं देख सकते। उपर्युक्त समूह अपने ऊपर ऐसे बादशाह का राज्य चाहता है जोकि अत्याचारी हो, रक्तपात करता हो तथा खज़ाना लुटाता हो, सहस्रों में बिना किसी अधिकार के ले लेता हो तथा हज़ारों को बिना किसी सेवा के प्रदान कर देता हो, स्थायी परिवारों का विनाश कर देता हो और नीच लोगों को बिना किसी सेवा के सम्मान प्रदान कर देता हो, कमीनों, अयोग्य, अनुचित, पाषाण हृदय वालों, खुदा का भय

न करने वालो तथा उन लोगो को जिन्होंने कोई सेवा न की हो सम्मान प्रदान करता हो और नेतृत्व तथा श्रेष्ठता प्रदान करता हो, यशस्वी, गौरव के पाने के योग्य लोगों, धन पाने के अधिकारियों, सदाचारियो तथा पवित्र चरित्र वालो को अपमानित करता हो और उनका विनाश कर देता हो, एक को अत्यधिक धन-सम्पत्ति प्रदान करता हो तथा दूसरे को यह सब लीला देखने के लिये छोड देता हो, ससार के प्रेमी, दुनिया के दास, कमीन, बद-अस्ल तथा अभागे ऐसे बादशाह[1] को अपना मित्र नही रखते और न समझते हैं, उनकी प्रशसा तथा उनका गुण-गान नही करते। वह ऐसे बादशाह की इच्छा रखते हैं जो नीच लोगो, कमीनों तथा कमअस्लों को उन्नति प्रदान करता हो, चरित्रहीन बातों में जिसे कोई आपत्ति दृष्टिगोचर न होती हो और जो इन बातों को ठीक समझता हो, कुफ, इलहाद, जिन्दिका[2], व्यभिचार, दुराचार, तथा खुल्लम खुल्ला पाप करने वालो मे सन्तुष्ट रहता हो, किसी की योग्यता तथा सेवा पर ध्यान न देता हो, सर्वदा इन्द्रिय लोलुपता तथा काम वासना की पूर्ति में तल्लीन रहता हो और स्वाभाविक रूप से योग्यता, गुण-श्रेष्ठता का शत्रु हो।

सेना का प्रबन्ध—

(४३८) सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह को सैनिकों के विषय में, जिन पर राज्य-व्यवस्था का आधार है, माता पिता से अधिक अनुकम्पा थी। वह उनके वासिलात[3] का निरीक्षण करता था और इस बात की आज्ञा न देता था कि कोई अमीर एक दाँग अथवा दिरहम उसमें से कम कर ले या दीवाने अर्ज़े ममालिक[4] में कोई उनसे किसी वस्तु की आशा रक्खे। उसे इस बात की पूर्ण जानकारी थी कि सैनिकों को कितना कष्ट एव परिश्रम करना होता है और उनकी स्त्रियो तथा पुत्रों को कितने व्यय की आवश्यकता होती है।

उसने राजसिंहासन पर आरूढ हो जाने के उपरान्त सिराजुलमुल्क ख्वाजा हाजी को नायब अर्ज़े ममालिक नियुक्त किया और दीवाने अर्ज़े ममालिक का प्रबन्ध व्यवस्था एव उत्तरदायित्व उस पर रक्खा। जिस प्रकार अलाई राज्यकाल[5] में हुलिये[6] के विषय म, जिस पर सेना की दृढता आधारित है, धनुप विद्या की परीक्षा, घोडों के दाग तथा मूल्य के सम्बन्ध में आदेश दिये गये थे, उसी प्रकार उसने भी आदेश दिये। उसने इस बात का आदेश दे दिया था कि जो कायर टालमटोल करे और सेना के साथ न जाय उसे कठोर दण्ड दिये जायें।

सेना ने जो कुछ खुसरो खाँ से प्राप्त किया था, उसमें से एक साल के वेतन के बराबर उसने उनके वेतन मे कटवा लिया। इससे अधिक जो लोगों को प्राप्त हो गया था उसके विषय में उसने आदेश दिया कि वह उनसे तुरत वसूल न किया जाय किन्तु वह पजिकाओं में पेशगी के रूप म लिख दिया जाय, और भविष्य म धीरे-धीरे उनके वेतनो से वसूल किया जाय जिससे सेना को हानि न पहुँचे। वह धन-सम्पत्ति जो लूट म प्राप्त हुई थी तथा वह धन-सम्पत्ति जो अर्ज के नायबो[7] के पास रह गई थी और वितरित न हुई थी उसे वापस ले लेने का उसन आदेश दे दिया।

---

१ सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक तथा सुल्तान अलाउद्दीन खलजी के समान।
२ अधर्मी मुसलमानों के कार्य।
३ प्रत्येक मद में जो जमा हुआ हो उसका लेखा (वेतन प्राप्ति का लेखा)
४ सेना विभाग।
५ बरनी पृ० ३१६, खलजी कालीन भारत पृ० ८७।
६ सैनिकों का पूर्ण विवरण।
७ सेना विभाग के अधिकारियों।

सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह ने अपनी बादशाही के चार पाँच वर्षों में सेना को अपने सम्मुख[1] नकद धन[2] प्रदान किया और सेना के वासिलात के विषय में बडी पूछ-ताछ करता रहता था। वह उनके निश्चित वेतन में से कोई कमी न होने देता था। सेना को इस प्रकार ठीक कर लेने के उपरान्त वह उसे सर्वदा तैयार तथा सुव्यवस्थित रखता था। उसने अमीरो के वेतन तथा इनाम निश्चित करने में बड़े सन्तुलित रूप से कार्य किया और उसके राज्य में प्राचीन अमीर और भी सन्तुष्ट हो गये। नये अमीरो को शक्ति प्राप्त हो गई और वे वैभवशाली तथा धन-धान्य सम्पन्न हो गये। जो इनाम, इदरार, वजीफे, गाँव तथा भूमि अलाई राज्यकाल में लोगो को प्रदान किये गये थे, उन्हे सुल्तान तुगलुक शाह ने (४३६) बिना किसी पूछताछ एव सकोच के स्थायी कर दिया। कृतघ्न खुसरो खाँ ने चार मास में जो कुछ निश्चित कर दिया था तथा दीवानी[3] से जो फरमाने तुगरा[4] एव आदेश जारी हो गये थे उन्हें उसने रद्द कर दिया। उस हरामखोर मफऊल (गुदा भोग्य) ने जो कुछ प्रदान कर दिया था वह वापस ले लिया। अलाई तथा कुतुबी राज्य-काल में जो वेतन, इनाम, इदरार तथा भूमि असावधानी एव बदमस्ती में विश्वास-पात्रों, सहायको तथा निकटवर्तियो को बढा कर दे दी गई थी अथवा नये सिरे से दी गई थी, उनके विषय में उसने अपने समक्ष पूछ ताछ कराई। जिनके विषय में उसे यह ज्ञात हुआ कि वे बिना किसी अधिकार के प्रदान कर दी गई थी और जिनके विषय में यह पता चला कि वे पक्षपात तथा अनुचित दान के आधार पर प्रदान हुई थी उन्हे उसने वापस ले लिया। जिनके विषय में उसे यह ज्ञात हुआ कि वे योग्यता तथा सेवा के आधार पर प्रदान की गई थी उन्हें उसने स्थायी कर दिया।

शाही धन (कर) की वसूली—

दीवानी के मुतालबों[5] के विषय में सुल्तान तुगलुक शाह से अधिक सुगमता प्रदान करने वाला कोई भी बादशाह देहली में नही हुआ है। लाखों के स्थान पर हजारो तथा हजारो के स्थान पर सैकडो तक स्वीकार कर लेता था। यदि दीवानी[6] के अधिकारी राज सिंहासन के समक्ष यह निवेदन करते कि अमुक व्यक्ति दीवानी के कर न अदा करने के कारण बन्दी-गृह में है और दो लाख में से, जोकि उसमे वसूल होना शेष है, दस हज़ार अथवा पाँच हज़ार तन्के की जमानत देने को तैयार है तो बादशाह वही स्वीकार कर लेता और उसे मुक्त कर देता। उसे कोई न कोई कार्य तथा पद प्रदान कर देता। वह यह न चाहता था कि कोई भी सरकारी मुतालबे के लिये बन्दी-गृह में अधिक समय तक रहे।

सुल्तान का प्रजा की भलाई को ध्यान में रखना—

वह अपनी राज्य-व्यवस्था में किसी रूप से अत्यधिक वसूल करना न चाहता था। उसकी इच्छा थी कि राज्य के समस्त कार्य उचित नियम से सम्पादित होते रहे और कोई ऐसी नवीन बात न हो जिससे लोग उससे, उसके राज्य के विश्वासपात्रो तथा सहायको से घृणा करने लगें। वह चाहता था कि समस्त सर्वसाधारण तथा विशेष व्यक्तियों के हृदय आतक, (४४०) भय तथा चिन्ता से मुक्त रहे। वह अपनी प्रजा को किसी प्रकार निराश न होने

१ देख रेख में।

२ वेतन तथा इनाम आदि।

३ वित्त विभाग का सचिवालय।

४ वह फरमान जिसमें सुल्तान की खास मुहर लगी हो। भूमि सम्बन्धी फरमान, अधिकतर फरमाने तुगरा कहलाते थे।

५ वह धन जो किसी को राजकोष में दाखिल करना होता था। (माँग)

६ वित्त विभाग के अधिकारी।

देना चाहता था। सुल्तान तुगलुक़ शाह नियम के विरुद्ध, अनुचित, निराधार तथा कोई भी ऐसी सत्य बात न करना चाहता था जिससे उसकी प्रजा को दुख तथा कष्ट पहुँचता किन्तु मनुष्य आरम्भ ही से कृतघ्न हो चुका है। खुदा ने कुरान में कहा है "यह अवश्य ही सत्य है कि मनुष्य बडा ही अन्यायी तथा कृतघ्न है।"

सुल्तान की कटु आलोचनायें–

लोभी, अधर्मी तथा बेईमान लोग उस जैसे न्यायकारी तथा दूसरों के हित-चिन्तक बादशाह की निन्दा किया करते थे। जिन लोभियों तथा षड्यन्त्रकारियो ने सुल्तान कुतुबुद्दीन से उसकी कामुकता तथा इन्द्रिय लोलुपता की अवस्था में एव कृतघ्न माबून (गुदा भोग्य) खुसरो खाँ से *उसकी निराशा की अवस्था तथा कुफ्र की उन्नति के समय में धन-सम्पत्ति बिना किसी* अधिकार के लूट ली थी, वे सुल्तान तुगलुक शाह की निन्दा किया करते थे और उस जैसे न्यायकारी बादशाह में दोष निकाला करते थे। उसके राज्य के पतन की प्रतीक्षा किया करते थे। वे चक्षु-सकोचन किया करते थे और अनुचित एव कृतघ्नता-सूचक वाक्य कहा करते थे। उस जैसे दयालु तथा दानी बादशाह को कृपण बताया करते थे।

सुल्तान के राज्य की विशेषता—

इस तारीखे फीरोजशाही के सकलनकर्त्ता जिया बरनी ने अनेक अनुभवी लोगो से, जिनके नेत्रों में न्याय का अजन लगा हुआ था, सुना था, कि वे लोग शान्ति-प्रियता एव लोक तथा परलोक में मुसलमानो के यश के आकाक्षी होने के कारण कहा करते थे कि आज तक देहली में सुल्तान तुगलुक शाह के समान कोई बादशाह राजसिंहासन पर आरूढ नही हुआ है और सम्भव है कि उसके उपरान्त भी कोई ऐसा बादशाह देहली के राजसिंहासन पर आरूढ न होगा जो उसके समान बुद्धिमान, विद्वान् तथा योग्य हो। बादशाही की जो शर्तें बनाईं तथा लिखी गई हैं वे सब की सब भगवान् ने सुल्तान तुगलुक शाह को प्रदान की थीं। उसमें पूर्ण रूप से वीरता, साहस, सूझ-बूझ, न्याय, दीनपरवरी, दीनपनाही,[१] आज्ञाकारियों को आश्रय प्रदान करने, विरोधियो के विनाश तथा लोगों की सेवायें पहिचानने एव दूसरो के अधिकार का (४४१) ध्यान रखने के गुण पाये जाते थे। उसे राज्य व्यवस्था सम्बन्धी नाना प्रकार के अनुभव प्राप्त थे। यदि उलिल अम्र[२] की सब से बडी विशेषता यह समझी जाय कि सभी लोग उसके आदेशो का पालन करें तो सुल्तान तुगलुक शाह के राजसिंहासन पर आरूढ होने के प्रथम वर्ष से ही उसके राज्य के सभी लोग उसके इतने अधिक आज्ञाकारी बन गये थे, जितना अन्य बादशाह व्यर्थ के रक्त-पात तथा एक करन तक अत्यधिक कठोर दण्ड देने पर भी न बना सके थे। यदि बादशाह का गुण यह समझा जाय कि वह दीन (इस्लाम) की सहायता करता हो तो सुल्तान तुगलुक शाह उस समय भी जब कि वह मलिक था, इस्लाम का बहुत बडा सहायक था। उसने मुगलो के आक्रमण[३] के द्वार बन्द कर दिये थे। उसकी बादशाही के समय में उसकी विजयी तलवार के आतक से कोई मुगल उसके राज्य की सीमा तथा नदी[४] को पार न कर सकता था और किसी मुसलमान अथवा किसी मनुष्य को कोई हानि न पहुँचा सकता था। ससार को नष्ट-भ्रष्ट कर देने वाली तुगलुक शाह की तलवार की धाक काफिरों तथा कृतघ्नो पर इस सीमा तक बैठ चुकी थी कि किसी मुगल के हृदय में कभी भी उसके

---

१ इस्लाम की रक्षा तथा उसका ध्यान।

२ जो आदेश देने का अधिकारी हो, सुल्तान।

३ बरनी पृ० ४१५, तुगलुक नामा पृ० १३८, खलजी कालीन भारत पृ० १४४, १६२।

४ सिन्धु नदी।

राज्य की सीमा को पार करने का विचार न हुआ और न कभी हिन्दुस्तान के विद्रोहियों के हृदय में विद्रोह एवं षड्यन्त्र का विचार उत्पन्न हुआ। यदि बादशाह के लिये न्याय करना तथा न्याय का प्रचार करना आवश्यक समझा जाय और यह आशा की जाय कि वह शरा के आदेशों का प्रचार करे तथा उन बातों को फैलाये जिनका ईश्वर की ओर से आदेश प्राप्त हो चुका है और उन बातों को रोके जिनकी ईश्वर की ओर से मनाही हुई है, तो तुगलुक शाह के न्याय की अधिकता से भेड़िये को भी इस बात का साहस न होता था कि वह किसी भेड़ की ओर कड़ी दृष्टि से देख सके। उसके राज्यकाल में सिंह तथा मृग एक ही जलाशय से जल पीते थे। शरा के आदेशों के पालन के लिये उसके राज्य-काल के काजियों[1], मुफ्तियों, दादबकों[2] तथा मुहतसिबों[3] को आदर सम्मान प्राप्त था। यदि बादशाह के लिये सेना का प्रबन्ध, जिससे दीन (इस्लाम) की रक्षा, इस्लाम की हिफाजत तथा इस्लामी नियमों का प्रचार होता रहे, आवश्यक समझा जाय तो तुगलुक शाह की राज्य-व्यवस्था के प्रारम्भ ही से सहस्रों अश्वारोहियों की सुसगठित स्थायी सेना तैयार हो गई थी। वह अनुभवी सरदारों तथा अनुभव-सिद्ध (४४२) सेनापतियों द्वारा सुसज्जित हो गई थी। उसकी बादशाही के समय में सेना को पूरा वेतन नकद प्राप्त होता था। किसी के वेतन से एक दाँग अथवा दिरहम कम न होता था। यदि बादशाह के लिये प्रजा का पालन-पोषण आवश्यक समझा जाय तो सुल्तान तुगलुक शाह अपनी मलिकी[4] के समय में प्रजा को आश्रय प्रदान करने में हिन्दुस्तान तथा खुरासान में आदर्श माना जाता था। सुल्तान तुगलुक शाह के पास बड़ी-बड़ी नहरें खुदवाने, सुन्दर उद्यान लगवाने, किले निर्माण करवाने, कृषि को सर्वसाधारण के लिये सुगम बनाने, नष्ट-भ्रष्ट स्थानों को आबाद करने, खराब, बेकार तथा बिना किसी लाभ की भूमि[5] को उर्वरा बनाने के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य न था। सुल्तान तुगलुक शाह समस्त प्राचीन एवं नवीन प्रजापतियों से बढ़ गया था। यद्यपि वह थोड़े ही वर्षों तक राजसिंहासन पर आरूढ रहा और यदि मौत उस जैसे प्रजापति बादशाह को न ले जाती तो ईश्वर ही जानता है कि वह अपने राज्यकाल में कितने हजार नष्ट घरों को आबाद तथा ठीक कर देता और कितने जंगलों बियाबानों में मेवेदार उद्यान तथा फूलों से भरे हुये उपवन लगवा देता, गङ्गा तथा यमुना के समान न जाने कितनी नहरें कोसों तथा फरसगों लम्बी खुदवा देता, कितनी बहती हुई नदियाँ[6] पैदा करा देता, किस प्रकार समस्त कृषकों तथा किसानों की सुगमता के साधन पैदा करा देता। अनाज तथा अन्य सामग्री न जाने कितनी सस्ती हो जाती। तुगलुकाबाद का किला कयामत (प्रलय) तक इस बात का प्रमाण रहेगा कि उस बादशाह के हृदय में किले बनवाने की इच्छा कितनी प्रबल थी[7]।

१ न्यायाधीश, जो शरा के अनुसार अभियोगों का निर्णय करते थे। प्रत्येक कस्बे में एक काजी हुआ करता था। वह धार्मिक कार्यों के लिये दी गई भूमि तथा वृत्ति का भी प्रबन्ध करता था।

२ काजी के फैसलों का पालन कराना उसी का कर्त्तव्य होता था।

३ समस्त इस्लाम के विरुद्ध बातों को रोकने वाला अधिकारी। शरा के नियमों के पालन के विषय में देख रेख इसी के द्वारा होती थी। वह स्वयं दंड देकर शरा के विरुद्ध बातें रोक सकता था।

४ जब वह मलिक था।

५ ऊसर, बंजर भूमि को उर्वरा बनाना (अहया करदने जमीनहाये अमवात व मुन्दर्स शुदा व ला यन्तफा गश्ता)

६ नहरें खुदवा देता।

७ उसे भवन निर्माण कराने से बड़ी रुचि थी। उसने तुगलुकाबाद का किला तथा अन्य भवन निर्माण कराये (तारीखे फिरिश्ता भाग १ पृ० १३०)

देना चाहता था। सुल्तान तुगलुक शाह नियम के विरुद्ध, अनुचित, निराधार तथा कोई भी ऐसी सत्य बात न करना चाहता था जिससे उसकी प्रजा को दुख तथा कष्ट पहुँचता किन्तु मनुष्य आरम्भ ही से कृतघ्न हो चुका है। खुदा ने कुरान में कहा है "यह अवश्य ही सत्य है कि मनुष्य बडा ही अन्यायी तथा कृतघ्न है।"

सुल्तान की कटु आलोचनायें—

लोभी, अधर्मी तथा बेईमान लोग उस जैसे न्यायकारी तथा दूसरो के हित-चिन्तक बादशाह की निन्दा किया करते थे। जिन लोभियो तथा षड्यन्त्रकारियों ने सुल्तान कुतुबुद्दीन के *उसकी कामुकता तथा इन्द्रिय लोलुपता की अवस्था में एव कृतघ्न माबून (गुदा भोग्य) खुसरो* खाँ से उसकी निराशा की अवस्था तथा कुफ्र की उन्नति के समय में धन-सम्पत्ति बिना किसी अधिकार के लूट ली थी, वे सुल्तान तुगलुक शाह की निन्दा किया करते थे और उस जैसे न्यायकारी बादशाह में दोष निकाला करते थे। उसके राज्य के पतन की प्रतीक्षा किया करते थे। वे चक्षु-सकोचन किया करते थे और अनुचित एव कृतघ्नता-सूचक वाक्य कहा करते थे। उस जैसे दयालु तथा दानी बादशाह को कृपण बताया करते थे।

सुल्तान के राज्य की विशेषता—

इस तारीखे फीरोजशाही के सकलनकर्त्ता जिया बरनी ने अनेक अनुभवी लोगो से, जिनके नेत्रो में न्याय का अजन लगा हुआ था, सुना था, कि वे लोग शान्ति प्रियता एव लोक तथा परलोक में मुसलमानो के यश के आकाक्षी होने के कारण कहा करते थे कि आज तक देहली में सुल्तान तुगलुक शाह के समान कोई बादशाह राजसिंहासन पर आरूढ नही हुआ है और सम्भव है कि उसके उपरान्त भी कोई ऐसा बादशाह देहली के राजसिंहासन पर आरूढ न होगा जो उसके समान बुद्धिमान, विद्वान् तथा योग्य हो। बादशाही की जो शर्तें बनाई तथा लिखी गई हैं वे सब की सब भगवान् ने सुल्तान तुगलुक शाह को प्रदान की थी। उसमें पूर्ण रूप से वीरता, साहस, सूझ-बूझ, न्याय, दीनपरवरी, दीनपनाही,[1] आज्ञाकारियों को आश्रय प्रदान करने, विरोधियो के विनाश तथा लोगो की सेवायें पहिचानने एव दूसरो के अधिकार का (४४१) ध्यान रखने के गुण पाये जाते थे। उसे राज्य व्यवस्था सम्बन्धी नाना प्रकार के अनुभव प्राप्त थे। यदि उलिल अम्र[2] की सब से बडी विशेषता यह समझी जाय कि सभी लोग उसके आदेशो का पालन करें तो सुल्तान तुगलुक शाह के राजसिंहासन पर आरूढ होन के प्रथम वर्ष से ही उसके राज्य के सभी लोग उसके इतने अधिक आज्ञाकारी बन गये थे, जितना अन्य बादशाह व्यर्थ के रक्त-पात तथा एक करन तक अत्यधिक कठोर दण्ड देने पर भी न बना *सके थे। यदि बादशाह का गुण यह समझा जाय कि यह दीन (इस्लाम) की सहायता करता* हो तो सुल्तान तुगलुक शाह उस समय भी जब कि वह मलिक था, इस्लाम का बहुत बडा सहायक था। उसने मुगलों के आक्रमण[3] के द्वार बन्द कर दिये थे। उसकी बादशाही के समय में उसकी विजयी तलवार के आतक से कोई मुगल उसके राज्य की सीमा तथा नदी[4] को पार न कर सकता था और किसी मुसलमान अथवा किसी मनुष्य को कोई हानि न पहुँचा सकता था। ससार को नष्ट-भ्रष्ट कर देने वाली तुगलुक शाह की तलवार की धाक काफिरों तथा कृतघ्नो पर इस सीमा तक बैठ चुकी थी कि किसी मुगल के हृदय में कभी भी उसके

---

१ इस्लाम की रक्षा तथा उसका ध्यान।

२ जो आदेश देने का अधिकारी हो, सुल्तान।

३ बरनी पृ० ४१५, तुग़लुक नामा पृ० १३८, खलजी कालीन भारत पृ० १४४, १६२।

४ सिन्धु नदी।

राज्य की सीमा को पार करने का विचार न हुआ और न कभी हिन्दुस्तान के विद्रोहियों के हृदय में विद्रोह एवं षड्यन्त्र का विचार उत्पन्न हुआ। यदि बादशाह के लिये न्याय करना तथा न्याय का प्रचार करना आवश्यक समझा जाय और यह आशा की जाय कि वह शरा के आदेशों का प्रचार करे तथा उन बातों को फैलाये जिनका ईश्वर की ओर से आदेश प्राप्त हो चुका है और उन बातो को रोके जिनकी ईश्वर की ओर से मनाही हुई है, तो तुगलुक शाह के न्याय की अधिकता से भेडिये को भी इस बात का साहस न होता था कि वह किसी भेड की ओर कड़ी दृष्टि से देख सके। उसके राज्यकाल में सिंह तथा मृग एक ही जलाशय से जल पीते थे। शरा के आदेशों के पालन के लिये उसके राज्य-काल के क़ाज़ियों[1], मुफ़्तियों, दादबकों[2] तथा मुहतसिबों[3] को आदर सम्मान प्राप्त था। यदि बादशाह के लिये सेना का प्रबन्ध, जिससे दीन (इस्लाम) की रक्षा, इस्लाम की हिफ़ाज़त तथा इस्लामी नियमों का प्रचार होता रहे, आवश्यक समझा जाय तो तुगलुक शाह की राज्य-व्यवस्था के प्रारम्भ ही से सहस्रों अरोहियों की सुसगठित स्थायी सेना तैयार हो गई थी। वह अनुभवी सरदारों तथा अनुभव-सिद्ध (४४२) सेनापतियो द्वारा सुसज्जित हो गई थी। उसकी बादशाही के समय में सेना को पूरा वेतन नकद प्राप्त होता था। किसी के वेतन से एक दाँग अथवा दिरहम कम न होता था। यदि बादशाह के लिये प्रजा का पालन-पोषण आवश्यक समझा जाय तो सुल्तान तुगलुक शाह अपनी मलिकी[4] के समय में प्रजा को आश्रय प्रदान करने में हिन्दुस्तान तथा खुरासान में आदर्श माना जाता था। सुल्तान तुगलुक शाह के पास बड़ी-बड़ी नहरें खुदवाने, सुन्दर उद्यान लगवाने, किले निर्माण करवाने, कृषि को सर्वसाधारण के लिये सुगम बनाने, नष्ट-भ्रष्ट स्थानों को आबाद करने, ख़राब, बेकार तथा बिना किसी लाभ की भूमि[5] को उर्वरा बनाने के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य न था। सुल्तान तुगलुक शाह समस्त प्राचीन एवं नवीन प्रजापतियो से बढ गया था। यद्यपि वह थोड़े ही वर्षों तक राजसिंहासन पर आरूढ रहा और यदि मौत उस जैसे प्रजापति बादशाह को न ले जाती तो ईश्वर ही जानता है कि वह अपने राज्यकाल में कितने हज़ार नष्ट घरो को आबाद तथा ठीक कर देता और कितने जगलों बियाबानों में मेवेदार उद्यान तथा फूलों से भरे हुये उपवन लगवा देता, गङ्गा तथा यमुना के समान न जाने कितनी नहरें कोसों तथा फरसगो लम्बी खुदवा देता, कितनी बहती हुई नदियाँ[6] पैदा करा देता, किस प्रकार समस्त कृषकों तथा किसानो की सुगमता के साधन पैदा करा देता। अनाज तथा अन्य सामग्री न जाने कितनी सस्ती हो जाती। तुगलुकाबाद का किला क़यामत (प्रलय) तक इस बात का प्रमाण रहेगा कि उस बादशाह के हृदय में किले बनवाने की इच्छा कितनी प्रबल थी[7]।

---

१ न्यायाधीश, जो शरा के अनुसार अभियोगों का निर्णय करते थे। प्रत्येक क़स्बे में एक क़ाज़ी हुआ करता था। वह धार्मिक कार्यों के लिये दी गई भूमि तथा वृत्ति का भी प्रबन्ध करता था।

२ क़ाज़ी के फ़ैसलों का पालन कराना उसी का कर्त्तव्य होता था।

३ समस्त इस्लाम के विरुद्ध बातों को रोकने वाला अधिकारी। शरा के नियमों के पालन के विषय में देख रेख इसी के द्वारा होती थी। वह स्वयं दंड देकर शरा के विरुद्ध बातें रोक सकता था।

४ जब वह मलिक था।

५ ऊसर, बजर भूमि को उर्वरा बनाना (अहया करदने ज़मीनहाये अमवात व मुन्दर्स शुदा व ला यनफ़ा गश्ता)

६ नहरें खुदवा देता।

७ उसे भवन निर्माण कराने से बड़ी रुचि थी। उसने तुगलुकाबाद का किला तथा अन्य भवन निर्माण कराये (तारीखे फ़िरिश्ता भाग १ पृ० १३०)

यदि बादशाह के लिये यह आवश्यक समझा जाय कि वह मार्गों में शान्ति तथा डाकुओं एवं लुटेरों के विनाश का प्रयास करे तो ईश्वर ने तुगलुक शाह की तलवार की धाक समस्त लुटेरों तथा डाकुओं के हृदय में इस प्रकार आरूढ़ कर दी थी कि उसके राज्यकाल में लुटेरे मार्ग के रक्षक बन गये थे। लुटेरों ने, जिनके पास लूट-मार के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य (४४३) नहीं होता था, अपनी तलवारें तोड़ डाली थीं और हल के फाले बनवा लिये, धनुष बेच डाले और बैलों की जोड़ी की व्यवस्था करली, वे सब कृषि-कार्य में लग गये थे और किसी की जिह्वा पर डाकुओं का नाम तक न आता था। किसी के हृदय में लुटेरों का भय उत्पन्न न होता था। उसके राज्यकाल में किसी को इस बात का साहस न होता था कि कोई किसी के खलियान से एक बाली भी चुरा ले। तुगलुक शाह की तलवार के आतंक से उसके राज्य की सीमा की तो चर्चा ही नहीं, लुटेरे, गजनी की सीमा पर भी डाका न मार सकते थे और व्यापारियों तथा कारवान वालों के निकट न फटक सकते थे।

यदि बादशाही की यह शर्त समझी जाय कि इस्लाम में उसका विश्वास दृढ़ हो और वह फर्ज (अनिवार्य) तथा अन्य नमाजें पढ़ता हो, जेहाद[1] में तल्लीन रहता हो उसकी आत्मा शुद्ध हो और वह इस्लामी नियमों का पालन करता हो तो सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह अन्य विलासी सुल्तानों की अपेक्षा बड़ी शुद्ध आत्मा, शुद्ध दृष्टि, उत्कृष्ट गुण एवं पवित्र विश्वास रखता था। पाँचों समय की फर्ज नमाजें जमाअत[2] के साथ पढ़ता था। जब तक सोने के समय की नमाज भी जमाअत के साथ न पढ़ लेता था, तब तक अन्तःपुर में न जाता था। जुमे और ईद की नमाजों में अनुपस्थित न रहता था। रमजान के महीने की समस्त तीस रातों में तरावीह[3] की नमाज पढ़ता था। उसने कभी जान बूझ कर रमजान के महीने का कोई रोजा न त्यागा। सुल्तान की दृष्टि एवं आत्मा इतनी शुद्ध थी कि वह किसी रूपवान तरुण दास, गुलाम बच्चे तथा ख्वाजा सरा[4] को अपने पास न फटकने देता था। जिस किसी के विषय में यह सुन लेता कि उसने कोई व्यभिचार अथवा कोई बाल मैथुन किया है तो वह उसका भी शत्रु हो जाता था। सुल्तान तुगलुक शाह ने अपनी फुफदी व्यभिचार के लिये कभी न खोली थी[5]। उसने अपनी बादशाही के समय में मदिरा की कोई सभा न की। अपने राज्य के साधारण तथा विशेष व्यक्तियों को मदिरा-पान करने से मना कर दिया था। (४४४) अपनी मलिकी तथा बादशाही के समय में उसने कभी जुआ न खेला था। भोग-विलास बादशाह के लिये अत्यन्त आवश्यक समझा जाता है किन्तु किसी ने सुल्तान तुगलुक शाह को न तो मदिरा-पान करते हुये देखा और न व्यभिचार। सुल्तान तुगलुक शाह का इस्लाम में इतना दृढ़ विश्वास था कि वह अधर्मियों, तार्किकों तथा इस्लाम में विश्वास न रखने वालों से बातें न करता था। स्वर्गवासी सुल्तान अधिकतर वजू[6] किये रहता था। झूठी डींग तथा

---

१ इस्लाम के प्रसार के लिए युद्ध। साधारणतया सुल्तानों के सभी युद्धों को जेहाद कहा जाता था। मुसलमान विद्रोहियों के विरुद्ध युद्ध को भी जेहाद लिखा गया है। इसलिये इसे साधारण युद्ध ही समझना चाहिये।

२ पाँचों समय की फर्ज (अनिवार्य) नमाजों के सामूहिक रूप से पढ़ने का इस्लाम में बड़ा महत्व बताया गया है।

३ इस नमाज में थोड़ा थोड़ा करके पूरे कुरान का पाठ होता है और रमजान मास में पढ़ी जाती है।

४ नपुंसक।

५ उसने कभी व्यभिचार न किया था।

६ नमाज के लिये क्रमशः हाथ मुँह धोना। कुछ दशाओं में वजू टूट जाता है। उन दशाओं को रोकना अथवा वजू टूट जाने के उपरान्त पुनः वजू कर लेने का बड़ा महत्व बताया गया है। वजू की दशा में किसी दुराचार की आशा नहीं की जा सकती।

व्यर्थ में अपने आपको बढा कर दिखाना उसको न आता था। बाल्यावस्था से युवावस्था तथा युवावस्था से वृद्धावस्था तक छल, षड्यत्र, विद्रोह, विरोध तथा दुष्टता, दूसरो का बुरा चाहने तथा दूसरो को हानि पहुँचाने की कोई बात उसके हृदय में उत्पन्न न हुई। ईश्वर ने उसे उन दोषों तथा अवगुणो से, जिनके विषय में दुष्ट लोग सर्वदा सोच विचार किया करते हैं, आजीवन सुरक्षित रक्खा। वह सर्वदा बडे सम्मान, वैभव, गौरव तथा शान्ति से जीवन व्यतीत करता रहा।

यदि बादशाहो का कर्त्तव्य दूसरो की सेवाओ का पहचानना, दूसरो का अधिकार उन्हे प्रदान करना तथा प्राचीन सेवको की सेवाओ का बदला चुकाना समझा जाय तो सुल्तान तुगलुक शाह प्राचीन तथा नवीन बादशाहो की अपेक्षा इस क्षेत्र में भी अद्वितीय था। उसे शनै शनै उन्नति प्राप्त हुई थी और अन्त में वह बादशाही तक पहुँचा था। जिन लोगो ने सुल्तान तुगलुक शाह की उस समय सेवा की थी जबकि वह सिपहसालार अथवा मलिक था या किसी ने उसकी कोई सहायता की थी तो उसने सिपहसालारी के समय सेवा करने वालों को मलिकी के समय और मलिकी के समय सेवा करने वालों को बादशाही के समय उचित रूप से सम्मानित किया। वह अपने प्राचीन सेवकों पर इतनी दया करता था जितनी कोई पिता अपने आज्ञाकारी पुत्र पर भी न करता होगा। अपने प्राचीन सेवको का पालन पोषण वह अपने भाईयो तथा पुत्रो की भाँति करता था। वह उनके परिवार को अपना परिवार समझता था और उन पर तथा उनके दासों एव दासियो पर कोई अत्याचार न होने देता था।

(४४५) सुल्तान तुगलुक शाह ने अपनी महन शीलता और दूसरो के हक पहचानने तथा दूसरों के हक़ का ध्यान रखने के कारण, अपने प्राचीन परिवार वालो के साथ बादशाही आतक एव राजकीय नियमो का पालन न किया। जिस प्रकार वह अपनी सिपहसालारी तथा मलिकी के समय में अपने परिवार वालो तथा अपने प्राचीन सहायको से व्यवहार करता था, उनके चोचले सहता था, उसी प्रकार वह अपनी बादशाही के समय में भी उन लोगो से व्यवहार करता था। "मखदूमये जहाँ"[१] तथा प्राचीन दासों और सेवको एव उन लोगो के साथ, जिनका उस पर कोई हक होता था, व्यवहार करने में उसने सुई की नोक के बराबर भी बादशाही आतक से कार्य न किया और पूर्व ही के समान व्यवहार करता रहा।

वीरता, युद्ध-विद्या की जानकारी एव रणक्षेत्र में युद्ध करने के ढग का जितना ज्ञान सुल्तान तुगलुक शाह को था उतना ज्ञान हिन्दुस्तान तथा खुरासान के किसी स्थान के समस्त सेना नायको तथा सरदारो को न था। यदि मै उसके उस समय के युद्ध तथा उसके उन आक्रमणो एव लडाइयो का हाल सविस्तार लिखना चाहू जब कि वह मलिक था, तो उसके लिये मुझे एक ग्रथ पृथक् लिखना पडेगा। यदि वह कुछ वर्ष और बादशाह रह जाता तो वह इस्लामी पताका को ससार में पूर्व से लेकर पश्चिम तक पहुँचा देता, बेदीनो तथा अधर्मियो के राज्य एव प्रदेश इस्लाम के अधीन हो जाते। उसने अमीरी तथा मलिकी के समय जिस (वीरता का) प्रदर्शन किया था उस प्रकार रुस्तम ने भी न किया होगा। यदि बादशाही के समय वह कुछ काल तक और जीवित रह जाता तो सिकन्दर से भी अधिक सफलता प्राप्त कर लेता।

सुल्तान अलाउद्दीन अपने राज्य के प्रदेशो में अत्यधिक रक्तपात कठोरता, अत्याचार तथा दूसरो को कष्ट पहुँचा कर अपनी आज्ञाओ का पालन करा सका था किन्तु सुल्तान तुगलुक शाह ने ४ वर्ष एव कुछ महीनो में बिना किसी कठोरता, अत्याचार, निष्ठुरता तथा रक्तपात के अपनी आज्ञाओं का पालन करा लिया। सुल्तान तुगलुक शाह के राज्य काल के योग्य तथा

१ सुल्तान की पत्नी, मुहम्मद तुगलुक की माता।

यदि बादशाह के लिये यह आवश्यक समझा जाय कि वह मार्गों में शान्ति तथा डाकुओ एव लुटेरों के विनाश का प्रयास करे तो ईश्वर ने तुगलुक शाह की तलवार की धाक समस्त लुटेरों तथा डाकुओ के हृदय में इस प्रकार आरूढ कर दी थी कि उसके राज्यकाल में लुटेरे मार्ग के रक्षक बन गये थे। लुटेरो ने, जिनके पास लूट-मार के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य (४४३) नही होता था, अपनी तलवारें तोड़ डाली थी और हल के फाले बनवा लिये; धनुष बेच डाले और बैलो की जोडी की व्यवस्था करली; वे सब कृषि-कार्य में लग गये थे और किसी की जिह्वा पर डाकुओ का नाम तक न आता था। किसी के हृदय में लुटेरों का भय उत्पन्न न होता था। उसके राज्यकाल में किसी को इस बात का साहस न होता था कि कोई किसी के खलियान से एक बाली भी चुरा ले। तुगलुक शाह की तलवार के आतक से उसके राज्य की सीमा की तो चर्चा ही नही; लुटेरे, गजनी की सीमा पर भी डाका न मार सकते थे और व्यापारियो तथा कारवान वालो के निकट न फटक सकते थे।

यदि बादशाही की यह शर्त समझी जाय कि इस्लाम में उसका विश्वास दृढ हो और वह फर्ज़ (अनिवार्य) तथा अन्य नमाजें पढता हो, जेहाद[1] में तल्लीन रहता हो, उसकी आत्मा शुद्ध हो और वह इस्लामी नियमों का पालन करता हो तो सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह अन्य विलासी सुल्तानों की अपेक्षा बडी शुद्ध आत्मा, शुद्ध दृष्टि, उत्कृष्ट गुण एव पवित्र विश्वास रखता था। पाँचो समय की फर्ज नमाजें जमाअत[2] के साथ पढता था। जब तक सोने के समय की नमाज भी जमाअत के साथ न पढ लेता था, तब तक अन्त पुर में न जाता था। जुमे और ईद की नमाजो में अनुपस्थित न रहता था। रमजान के महीने की समस्त तीस रातो में तरावीह[3] की नमाज पढता था। उसने कभी जान बूझ कर रमज़ान के महीने का कोई रोज़ा न त्यागा। सुल्तान की दृष्टि एव आत्मा इतनी शुद्ध थी कि वह किसी रूपवान तरुण दास, गुलाम बच्चे तथा ख्वाजा सरा[4] को अपने पास न फटकने देता था। जिस किसी के विषय में यह सुन लेता कि उसने कोई व्यभिचार अथवा कोई बाल मैथुन किया है तो वह उसका भी शत्रु हो जाता था। सुल्तान तुगलुक शाह ने अपनी फ़ुफ़दी व्यभिचार के लिये कभी न खोली थी[5]। उसने अपनी बादशाही के समय में मदिरा की कोई सभा न की। अपने राज्य के साधारण तथा विशेष व्यक्तियो को मदिरा-पान करने से मना कर दिया था। (४४४) अपनी मलिकी तथा बादशाही के समय में उसने कभी जुआ न खेला था। भोग-विलास बादशाह के लिये अत्यन्त आवश्यक समझा जाता है किन्तु किसी ने सुल्तान तुगलुक शाह को न तो मदिरा-पान करते हुये देखा और न व्यभिचार। सुल्तान तुगलुक शाह का इस्लाम में इतना दृढ विश्वास था कि वह अधर्मियो, तार्किको तथा इस्लाम में विश्वास न रखने वालों से बातें न करता था। स्वर्गवासी सुल्तान अधिकतर वज़ू[6] किये रहता था। झूठी डींग तथा

---

१ इस्लाम के प्रसार के लिए युद्ध। साधारणतया सुल्तानों के सभी युद्धों को जेहाद कहा जाता था। मुसलमान विद्रोहियों के विरुद्ध युद्ध को भी जेहाद लिखा गया है। इसलिये इसे साधारण युद्ध ही समझना चाहिये।

२ पाँचों समय की फर्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ों के सामूहिक रूप से पढ़ने का इस्लाम में बड़ा महत्व बताया गया है।

३ इस नमाज़ में थोड़ा थोड़ा करके पूरे क़ुरान का पाठ होता है और रमज़ान मास में पढ़ी जाती है।

४ नपुन्सक।

५ उसने कभी व्यभिचार न किया था।

६ नमाज़ के लिये क्रमशः हाथ मुँह धोना। कुछ दशाओं में वज़ू टूट जाता है। उन दशाओं को रोकना अथवा वज़ू टूट जाने के उपरान्त पुनः वज़ू कर लेने का बड़ा महत्व बताया गया है। वज़ू की दशा में किसी दुराचार की आशा नहीं की जा सकती।

व्यर्थ में अपने आपको बढा कर दिखाना उसको न आता था। बाल्यावस्था से युवावस्था तथा युवावस्था से वृद्धावस्था तक छल, षड्यन्त्र, विद्रोह, विरोध तथा दुष्टता, दूसरो का बुरा चाहने तथा दूसरों को हानि पहुँचाने की कोई बात उसके हृदय में उत्पन्न न हुई। ईश्वर ने उसे उन दोषो तथा अवगुणों से, जिनके विषय में दुष्ट लोग सर्वदा सोच विचार किया करते हैं, आजीवन सुरक्षित रक्खा। वह सर्वदा बडे सम्मान, वैभव, गौरव तथा शान्ति से जीवन व्यतीत करता रहा।

यदि बादशाहो का कर्त्तव्य दूसरो की सेवाओ का पहचानना, दूसरो का अधिकार उन्हें प्रदान करना तथा प्राचीन सेवको की सेवाओ का बदला चुकाना समझा जाय तो सुल्तान तुगलुक शाह प्राचीन तथा नवीन बादशाहो की अपेक्षा इस क्षेत्र में भी अद्वितीय था। उसे शनैं शनैं उन्नति प्राप्त हुई थी और अन्त में वह बादशाही तक पहुँचा था। जिन लोगो ने सुल्तान तुगलुक शाह की उस समय सेवा की थी जबकि वह सिपहसालार अथवा मलिक था या किसी ने उसकी कोई सहायता की थी तो उसने सिपहसालारी के समय सेवा करने वालों को मलिकी के समय और मलिकी के समय सेवा करने वालो को बादशाही के समय उचित रूप से सम्मानित किया। वह अपने प्राचीन सेवकों पर इतनी दया करता था जितनी कोई पिता अपने आज्ञाकारी पुत्र पर भी न करता होगा। अपने प्राचीन सेवकों का पालन-पोषण वह अपने भाईयो तथा पुत्रो की भाँति करता था। वह उनके परिवार को अपना परिवार समझता था और उन पर तथा उनके दासो एव दासियो पर कोई अत्याचार न होने देता था।

(४४५) सुल्तान तुगलुक शाह ने अपनी महन शीलता और दूसरों के हक पहचानने तथा दूसरों के हक़ का ध्यान रखने के कारण, अपने प्राचीन परिवार वालों के साथ बादशाही आतक एव राजकीय नियमों का पालन न किया। जिस प्रकार वह अपनी सिपहसालारी तथा मलिकी के समय में अपने परिवार वालों तथा अपने प्राचीन सहायकों से व्यवहार करता था, उनके चोचले सहता था, उसी प्रकार वह अपनी बादशाही के समय में भी उन लोगो से व्यवहार करता था। "मखदूमये जहाँ"[1] तथा प्राचीन दासों और सेवकों एव उन लोगों के साथ, जिनका उस पर कोई हक होता था, व्यवहार करने में उसने सुई की नोक के बराबर भी बादशाही आतक से कार्य न किया और पूर्व ही के समान व्यवहार करता रहा।

वीरता, युद्ध-विद्या की जानकारी एव रणक्षेत्र में युद्ध करने के ढग का जितना ज्ञान सुल्तान तुगलुक शाह को था उतना ज्ञान हिन्दुस्तान तथा खुरासान के किसी स्थान के समस्त सेना नायको तथा सरदारों को न था। यदि मैं उसके उस समय के युद्ध तथा उसके उन आक्रमणो एव लडाइयों का हाल सविस्तार लिखना चाहूँ जब कि वह मलिक था, तो उसके लिये मुझे एक ग्रंथ पृथक् लिखना पडेगा। यदि वह कुछ वर्ष और बादशाह रह जाता तो वह इस्लामी पताका को ससार में पूर्व से लेकर पश्चिम तक पहुँचा देता, बेदीनों तथा अधर्मियों के राज्य एव प्रदेश इस्लाम के अधीन हो जाते। उसने अमीरी तथा मलिकी के समय जिस (वीरता का) प्रदर्शन किया था उस प्रकार रुस्तम ने भी न किया होगा। यदि बादशाही के समय वह कुछ काल तक और जीवित रह जाता तो सिकन्दर से भी अधिक सफलता प्राप्त कर लेता।

सुल्तान अलाउद्दीन अपने राज्य के प्रदेशों में अत्यधिक रक्तपात कठोरता, अत्याचार तथा दूसरो को कष्ट पहुँचा कर अपनी आज्ञाओ का पालन करा सका था किन्तु सुल्तान तुगलुक शाह ने ४ वर्ष एव कुछ महीनो में बिना किसी कठोरता, अत्याचार, निष्ठुरता तथा रक्तपात के अपनी आज्ञाओं का पालन करा लिया। सुल्तान तुगलुक शाह के राज्य काल के योग्य तथा

---

१ सुल्तान की पत्नी [illegible]

अनुभवी पुरुष उसे ईश्वर की एक बहुत बडी देन समझते थे और भगवान् के कृतज्ञ होते रहते थे तथा उसके लिये ईश्वर से प्रार्थना किया करते और सर्वदा उसकी प्रशसा किया करते थे। लोभी, लालची, कृतघ्न तथा सत्य को न पहचानने वाले, जिनके लालच तथा लोभ का पेट (४४६) कारुन[1] के राजकोष से भी नही भर सकता, उस जैसे बादशाह से दुःखी रहते थे और उसकी निन्दा किया करते थे तथा उस जैसे ससार की रक्षा करने वाले की मृत्यु की प्रतीक्षा किया करते थे।

सुल्तान मुहम्मद का जिसकी पदवी उस समय उलुग खाँ थी आरंगल (वारंगल) पर आक्रमण करने के लिये प्रथम बार नियुक्त होना :—

७२१ हि० (१३२१ ई०) में सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह ने सुल्तान मुहम्मद को चत्र (छत्र) प्रदान किया और एक सुसज्जित सेना देकर आरगल[2] (वारगल) तथा तिलग प्रदेश पर आक्रमण करने के लिये भेजा[3]। कुछ प्राचीन अलाई अमीरो को भी उसके साथ नियुक्त कर दिया। कुछ अपने विशेष सहायको तथा विश्वास-पात्रो को भी उसके साथ भेजा। सुल्तान मुहम्मद ने राजसी ठाठ-बाट से बहुत बडी सेना लेकर आरगल (वारगल) की ओर प्रस्थान किया। देवगिरि में पहुँचने के उपरान्त उसने उस स्थान के कुछ प्रतिष्ठित अमीरो एव अनुभवी सैनिकों को लेकर तिलग प्रदेश की ओर बढना प्रारम्भ कर दिया। सुल्तान तुगलुक शाह के राज्य के वैभव तथा सुल्तान मुहम्मद के आतक से राय लुद्दर देव (रुद्र देव) समस्त अधीन रायो तथा मुकद्दमो को लेकर किले में बन्द हो गया और युद्ध तथा लडाई का विचार भी अपने हृदय में न लाया। सुल्तान मुहम्मद ने आरगल (वारगल) में पहुँच कर आरगल (वारगल) के मिट्टी के किले को घेर लिया और वही उतर पडा। कुछ अमीरों को आदेश दिया कि वे तिलग प्रदेश का विध्वस प्रारम्भ कर दें और इस्लामी सेना को अत्यधिक लूट की सम्पत्ति तथा भोजन सामग्री भेजें। इस्लामी सेना की लूटमार से सेना के शिविर में अपार धन-सम्पत्ति तथा भोजन सामग्री पहुँचने लगी। सेना पूर्ण-व्यवस्था के साथ किला विजय करने में तल्लीन हो गई। आरगल (वारगल) के पत्थर तथा मिट्टी के किले में हिन्दू बहुत बडी सख्या में एकत्र हो गये थे और वहाँ पर्याप्त सामग्री इकट्ठा करली थी। दोनो ओर से मगरिबी[4]

---

१ मूसा पैगम्बर के समय का एक बादशाह जो अपनी धन सम्पत्ति तथा आतक के लिये बड़ा प्रसिद्ध था।

२ आरगल (वारगल) तिलगाना के काकतीय वश की राजधानी। इस पर सर्व प्रथम अलाउद्दीन के राज्य काल में विजय प्राप्त हुई (खजाइनुल फुतूह पृ० ८६ १२२ खलजी कालीन भारत पृ० १३१ ३५)

३ अपने सिंहासनारोहण के दूसरे वर्ष, वारगल के हाकिम लुद्दर देव (रुद्र देव) के कर न अदा करने तथा देवगिरि की अव्यवस्था के कारण, उलुग खाँ को अपने कुछ प्राचीन सहायकों तथा चन्देरी, मालवा, बदायूँ आदि की सेना के साथ बड़े वैभव से तिलग की ओर भेजा। उलुग खाँ ने वहाँ पहुँच कर लूटमार तथा विध्वस प्रारम्भ कर दिया। लुद्दर देव ने भीषण युद्ध किया और पिछली कायरता का बदला चुका दिया और अन्त में विवश होकर वारगल के क़िले में बन्द होकर बैठ रहा। किले की दीवारें तथा बुर्जियाँ शीघ्रातिशीघ्र ठीक कर लीं। उलुग खाँ नित वीरता तथा पौरुष का प्रदर्शन करता था। दोनों ओर से लोग बहुत बड़ी सख्या में मारे जाते थे। जब उलुग खाँ ने सरकोब तथा सुरग तैयार कराली और वारगल के किले पर विजय प्राप्त होने वाली ही थी कि लुद्दर देव ने विवश होकर उलुग खाँ के पास दूत भेजे और धन, सम्पत्ति, हाथी, जवाहरात तथा बहुमूल्य वस्तुएँ देनी स्वीकार कीं और यह वचन दिया कि भविष्य में वह उसी प्रकार खराज भेजता रहेगा, जिस प्रकार सुल्तान अलाउद्दीन के समय में भेजा करता था। (तारीखे फ़िरिश्ता भाग १ पृ० १३१)।

४ इसके विषय में कोई निश्चित ज्ञान नहीं। इसका अर्थ तोप भी बताया गया है किन्तु यह एक प्रकार की मध्यकालीन मशीन थी जिससे आग तथा शीघ्र जलने वाले पदार्थ और पत्थर फेंके जाते थे।

तथा मरादो[1] का प्रयोग होता था। प्रत्येक दिन (शाही) सेना किले के भीतर वालों से घोर युद्ध करती थी। क़िले के भीतर से आग फेंकी जाती थी और दोनों ओर से (४४७) हत्या-काण्ड होता था। इस्लामी सेना हिन्दुओं पर भारी पड़ी और उन्हें निराश तथा विवश कर दिया। आरगल (वारंगल) के मिट्टी के किले पर विजय प्राप्त होने ही वाली थी कि आरगल (वारंगल) के राय लुद्दर देव (रुद्र देव) तथा उसके मुकद्दमो ने सन्धि की वार्ता प्रारम्भ करदी। सुल्तान मुहम्मद की सेवा में बसीठ[2] (दूत) धन सम्पत्ति देकर भेजे तथा माल हाथी, जवाहरात एवं बहुमूल्य वस्तुयें प्रदान करने का वचन दिया। उनकी इच्छा थी कि जिस प्रकार अलाई राज्य-काल में उन्होने मलिक नायब को धन-सम्पत्ति, हाथी, जवाहरात प्रदान करके खराज अदा करना स्वीकार कर लिया था और इस प्रकार उन्हें लौटा दिया था उसी प्रकार सुल्तान मुहम्मद को भी लौटा दें[3]। सुल्तान मुहम्मद ने उन्हें क्षमा प्रदान न की और किले पर अधिकार जमाने तथा राय आरगल (वारंगल) को बन्दी बनाने पर ज़ोर देने लगा और सन्धि स्वीकार न की। बसीठों को निराश करके लौटा दिया।

जिस समय किले वाले निराश हो चुके थे और सन्धि की प्रार्थना कर रहे थे उस समय लगभग एक मास से अधिक व्यतीत हो जाने पर भी देहली से कोई उलाग (समाचार वाहक) प्राप्त न हुये थे। इससे पूर्व सुल्तान मुहम्मद को अपने पिता से प्रत्येक सप्ताह २-३ फरमान प्राप्त हो जाते थे, किन्तु इस समय फरमान न आने तथा समाचार न पहुँचने से सुल्तान मुहम्मद एवं उसके विश्वास पात्रों को कुछ परेशानी होने लगी और वे सोचने लगे कि कदाचित मार्ग के कुछ थानों[4] का विनाश हो चुका है जिसके कारण न तो कोई सूचना मिल रही है और न कोई दूत तथा फरमान प्राप्त हो रहा है। दूतों के न पहुचने के कारण सुल्तान मुहम्मद की व्याकुलता के समाचार सेना में भी प्रसारित हो गये और सैनिक नाना प्रकार की आशंकायें करने लगे, लोग भिन्न भिन्न प्रकार की बातें सोचने लगे।

(४४८) उबैद[5] कवि तथा शेखज़ादा दमिश्की, जोकि बडे ही दुष्ट, धूर्त तथा षड्यन्त्रकारी थे और जो किसी प्रकार सुल्तान मुहम्मद के विश्वासपात्र हो गये थे, सेना में यह अफवाह उडाने लगे कि सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह की देहली में मृत्यु हो चुकी है और देहली के राज्य की व्यवस्था बिगड चुकी है, कोई अन्य देहली के राज सिंहासन पर आरूढ हो गया है। इसी कारण उलाग एवं धावे[6] (समाचार वाहक तथा दूत) आने बन्द हो गये हैं। सभी लोग अपनी-अपनी चिन्ता में पड गये।

उन्ही अभागे उबैद तथा शेखज़ादा दमिश्की ने, जोकि बडे दुष्ट, धूर्त, षड्यन्त्रकारी हरामखोर एवं कृतघ्न थे, एक दूसरी अफवाह उडानी प्रारम्भ करदी। उन्होंने मलिक तिमुर, मलिक तिगीन मलिक मुल अफगान[7] तथा मलिक काफूर मुहरदार से कहा कि सुल्तान मुहम्मद

१ पत्थर तथा आग फेंकने की एक मशीन।

२ इस शब्द का मूल फारसी पुस्तक में प्रयोग हुआ है।

३ खज़ाइनुल फुतूह पृ० ११० १२०, खलजी कालीन भारत पृ० १३४ ३८। इसमे सुल्तान मुहम्मद तथा सुल्तान अलाउद्दीन के दक्षिण के सम्बन्ध में दृष्टिकोण पर प्रकाश पड़ता है।

४ वह स्थान जहाँ सवार तथा सैनिक मार्ग की रक्षा एवं समाचार भेजने के लिये नियुक्त होते थे।

५ बदायूनी के अनुसार वह अमीर खुसरो पर व्यंग किया करता था। (मुनतखबुत्तवारीख, भाग १ पृ० २२२ २३) तारीखे मुबारिक शाही का अनुवाद भी देखो।

६ डाक चौकी को उलाग कहते थे। तारीखे फिरिश्ता, भाग १ पृ० १३१, इब्ने बतूता, तबक़ाते अकबरी पृ० १९५।

७ मुल अफगान (बरनी पृ० ४४९), मलिक मुल (तारीखे फिरिश्ता, भाग १ पृ० १३१), मलिक मुल (तबक़ाते अकबरी, भाग १, पृ० १९४)

तुम लोगों को प्रतिष्ठित मलाई मलिक तथा सेना नायक होने के कारण अपना शत्रु और अपने मार्ग का काँटा समझता है।[1] तुम्हारा नाम उन लोगों की सूची में लिखा जा चुका है जिनकी हत्या कराई जाने वाली है। तुम चारों को एक दिन एक समय पर पकड़वा कर तुम्हारी हत्या करा दी जायगी।' उपर्युक्त मलिक उन दोनों दुष्ट षड्यन्त्रकारियों को सर्वदा सुल्तान मुहम्मद के निकट देखा करते थे, अत उन लोगों ने उसकी बातों पर विश्वास कर लिया। वे एक दूसरे के परामर्श से अपने सहायकों के दल को लेकर सेना के बाहर चले गये। उनके सेना मे निकल जाने क कारण समस्त सेना भयभीत हो गई और खलबली मच गई। प्रत्येक दल में परेशानी तथा चीत्कार होने लगा। किसी को भी किसी अन्य की चिन्ता न रही। किले के हिन्दू जो सेना पर किसी दुघटना पड़ने की प्रतीक्षा देख रहे थे, जिससे उन्ह मुक्ति प्राप्त हो जाय एक बार ही किले से दलबन्दी करके बाहर निकल आये, और शाही शिविर का पूर्णतया लूटकर भाग गये। सुल्तान मुहम्मद अपने विश्वास-पात्रों को लेकर देवगिरि की ओर चल दिया। सेना वाले व्याकुल होकर छिन्न भिन्न हो गये।

लौटते समय सुल्तान मुहम्मद के पास शहर (देहली) के उलाग (समाचार वाहक) पहुँचे और उन्होंने सुल्तान तुगलुक के स्वास्थ्य एव सुरक्षित होने के फरमान पहुँचाये। मलाई मलिक, जो सगठित हाकर निकल आये थे, छिन्न भिन्न हो गये और प्रत्येक मनमानी दिशा में चल खडा हुआ। उनके सहायक तथा उनकी सेना उनकी विरोधी हो गई। उनके अस्त्र-शस्त्र तथा घोडे हिन्दुओं को प्राप्त हो गये। सुल्तान मुहम्मद सुरक्षित देवगिरि पहुँचा। देवगिरि में (४४९) सेना एकत्र हुई। मलिक तिमुर अपने कुछ सवारो के साथ भाग कर हिन्दुओं के पास पहुँचा और उसकी वही मृत्यु हो गई। अवध के अमीर मलिक तिगीन की हिन्दुओ न हत्या कर दी और उसकी खाल सुल्तान मुहम्मद के पास देवगिरि में भेज दी। मलिक मुग (मुल) अफगान, उबैद कवि तथा अन्य षड्यन्त्रकारियो को बन्दी बना कर सुल्तान मुहम्मद की सेवा में देवगिरि में भेज दिया गया। सुल्तान मुहम्मद न सभी को जीवित अपने पिता के पास भेज दिया। विद्रोही अमीरों के परिवार इससे पूर्व ही बन्दी बना लिये जा चुके थे। सुल्तान गयासुद्दीन ने सीरी के सैरगाह के मैदान में दरबारे आम किया। उबैद कवि काफूर मुहरदार तथा अन्य विद्रोहियों को सूली पर चढा दिया गया। कुछ अन्य लोग तथा उनके स्त्री और बालक हाथी के पैरों के नीचे कुचलवा दिये गये। सीरी के मैदान के रक्तपात के आतक से बहुत समय तक दशको के हृदय काँपते रहे। सुल्तान तुगलुक शाह के उस दण्ड से, जो उसने स्त्रियो तथा बालको को हाथियों के पाँव के नीचे कुचलवा कर दिया, समस्त देहली वाले काँप उठे।

सुल्तान मुहम्मद का आरंगल (वारंगल) की विजय के लिये पुनः भेजा जाना—

चार मास के उपरान्त[2] सुल्तान गयासुद्दीन ने सुल्तान मुहम्मद को अत्यधिक सेना देकर आरगल (वारगल) की ओर भेजा। इस बार भी सुल्तान मुहम्मद तिलग तक पहुँच गया

१ एसामी ने उबैद कवि के षड यन्त्र का कारण बड़े विस्तार से लिखा है। इब्ने बतूता ने उलुग खाँ को विद्रोही सिद्ध किया है।

२ उलुग खाँ अपने पिता की सेवा में उपस्थित हुआ और चार मास उपरान्त सुल्तान ने उसे पुन आरगल (वारगल) भेजा। (तबकाते अकबरी भाग १, पृ० १९६), चूँकि उलुग खाँ दो तीन हजार सवार लेकर देहली पहुचा था अत चार मास उपरान्त एक बहुत बडी सेना लेकर देवगिरि के मार्ग से वारगल की ओर बढ़ा। (तारीखे फिरिश्ता भाग १ पृ० १३१) के अनुसार उलुग खाँ ७२४ हि० (१३२३-२४ ई०) में वारगल की ओर दुबारा भेजा गया।

श्रौर बीदर[१] के किले पर अधिकार जमा लिया। उस किले के मुकद्दम को बन्दी बना लिया। वहाँ से आरगल (वारंगल) की ओर प्रस्थान किया और दूसरी बार मिट्टी के किले को घेर लिया। बाणो तथा मगरिबी पत्थरों द्वारा आरगल (वारंगल) के भीतरी तथा बाहरी किले पर अधिकार जमा लिया। आरगल (वारंगल) का राय लुद्दर देव, समस्त राय, मुकद्दम तथा उनके परिवार एवं हाथी घोडे उसे प्राप्त हो गये और उसने देहली में विजय-पत्र भेज दिया। (४५०) तुगलुकाबाद, देहली तथा सीरी में कुब्बे[२] सजाये गये और खुशियाँ मनाई गई। दुहगाना[3] ढोल बजाये गये। सुल्तान मुहम्मद ने तिलग के राय लुद्दर देव तथा उसके सहायकों एवं विश्वास-पात्रों और हाथियों तथा राज-कोष को मलिक बेदार, जिसकी उपाधि कदर खाँ हो गई थी तथा ख्वाजा हाजी नायब अर्जे ममालिक के हाथ सुल्तान की सेवा में भेज दिया। आरगल (वारंगल) का नाम सुल्तानपुर रक्खा गया और समस्त तिलग पर अधिकार जमा लिया गया। उसे मुक्तो तथा वालियो को प्रदान कर दिया गया। वहाँ मुतसर्रिफ तथा आमिल नियुक्त किये गये। उसने एक वर्ष का खराज समस्त तिलग प्रदेश से प्राप्त किया। आरगल (वारंगल) से सुल्तान मुहम्मद ने जाजनगर[४] पर चढाई की और वहाँ से ४० हाथी तथा विजय एवं सफलता प्राप्त करके तिलग वापस हुआ। हाथियो को सुल्तान की सेवा में देहली भेज दिया।

सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह का लखनौती, सुनार गाँव तथा सत गाँव पर आक्रमण एवं विजय, तथा लखनौती के शासकों का बन्दी बनाया जाना।

मुगलों का आक्रमण–

जिस समय आरगल (वारंगल) पर विजय प्राप्त हुई और जाजनगर से हाथी पहुँचे उसी समय कुछ मुगल सेना सीमा के प्रदेशो पर चढ आई। इस्लामी सेना ने मुगलो से युद्ध करके उन्हे छिन्न-भिन्न कर दिया और दोनों मुगल सरदारो को बन्दी बना कर दरबार में भेज दिया।

सुल्तान गयासुद्दीन ने अपनी राजधानी तुगलुकाबाद में बना ली थी। अमीर, मलिक, प्रतिष्ठित तथा गण्यमान्य व्यक्ति अपने परिवारो सहित वहीं निवास करने लगे थे और उन्होंने अपने-अपने घर बनवा लिये थे। उसी समय लखनौती के कुछ अमीर वहाँ के शासकों के अत्याचार तथा अन्याय के कारण सुल्तान तुगलुक शाह की सेवा में उपस्थित हुये। उनके अत्याचार तथा अन्याय, शोषण एवं विरोध के कारण मुसलमानों की परेशानियों के समाचार सुल्तान तुगलुक शाह को पहुचाये। सुल्तान गयासुद्दीन ने लखनौती पर आक्रमण करने का दृढ संकल्प कर

१ बीदर नगर का ज़िला तिलग की सीमा पर था और राजा वारंगल से सम्बन्धित था। उसने (सुल्तान मुहम्मद ने) कुछ अन्य किलों के साथ, जो मार्ग में थे, इसे भी विजय करके अपने विश्वास पात्रों को प्रदान कर दिया। (तारीखे फ़िरिश्ता, भाग १ पृ० १३१)।

२ एक प्रकार के गुम्बद तथा द्वार जो खुशी के समय सजाये जाते थे।

३ एक प्रकार के ढोल। सम्भवतया बहुत बड़े ढोल।

४ लगभग आधुनिक उड़ीसा। राजमहेन्दरी मे एक मस्जिद उलुग खाँ की अधीनता म सालार उलवी ने बनवाई। मस्जिद के एक लेख में निर्माण तिथि २० रमज़ान ७२४ हि० (१० सितम्बर, १३२४ ई०) लिखी है। (महदी हुसैन "The Rise and Fall of Muhammad Bin Tughluq पृ० ६१, २४३, Annual Report of Archaeological Survey of India, 1925-6 p. 150)। इस प्रकार इस विजय को ७२४ हि० की घटना कहा जा सकता है।

(४५१) लिया। उसने सुल्तान मुहम्मद[1] के पास आरगल में उलाग (समाचार वाहक) भेज कर उसे बुलवाया। अपनी अनुपस्थिति में उसे अपना नायब नियुक्त किया और शासन प्रबन्ध का पूर्ण अधिकार उसे प्रदान कर दिया। स्वय सेना लेकर लखनौती की ओर रवाना हुआ। सेना को गहरी नदियो, दलदल तथा कीचड के मार्ग से लखनौती की जैसी लम्बी यात्रा में इस प्रकार ले गया कि किसी का बाल भी बाँका न हुआ। चूँकि तुगलुक शाह का ऐश्वर्य तथा वैभव, खुरासान, हिन्दुस्तान तथा हिन्द एव सिन्ध के प्रदेश वालो तथा पूव से पश्चिम तक के सरदारो एव सेना नायको के हृदय में एक करन से आरूढ हो चुका था अत तुगलुक शाही पताकाओ की तिरहुट में छाया पडते ही लखनौती का शासक सुल्तान नासिरुद्दीन अपनी दासता तथा सेवा-भाव का प्रदर्शन करने के लिये दरबार में उपस्थित हुआ और दरबार में खाकबोस[2] करके सम्मानित हुआ। तुगलुक शाही विजय प्राप्त करने वाली तलवार के निकलने के पूर्व ही उन प्रदेशो के समस्त राजे तथा राय उसके आज्ञाकारी बन गये और दासता के लिये तैयार हो गये।[3]

तातार खाँ, जिसे सुल्तान तुगलुक शाह अपना पुत्र कहा करता था और जो जफराबाद की अक्ता का स्वामी था, अमीरों तथा सेना के साथ आगे भेजा गया। उसन वहाँ के स्थानो को अपने अधिकार में कर लिया। वह सुनार गाँव के सुल्तान बहादुर शाह को, जो अपने समान किसी को न समझता था, गर्दन बाँध करके सुल्तान की सेवा में लाया। समस्त हाथी, जो उस प्रदेश में थे, शाही गज-गृह में भिजवा दिये। जो इस्लामी सेना उस प्रदेश में (पहुची) थी, उसे लूटमार द्वारा अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हुई। सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह ने लखनौती क शासक सुल्तान नासिरुद्दीन को, जो अधीनता तथा दासता स्वीकार करने के लिये सबसे पहले उपस्थित हुआ था, छत्र तथा दूरबाश[4] प्रदान किये। लखनौती उसी के हवाले कर दी। (सुल्तान ने) सत गाँव तथा सुनार गाँव पर अधिकार जमा लिया। सुनार गाँव क शासक बहादुर शाह को बन्दी बनाकर शहर (देहली) की ओर भेज दिया। सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक (४५२) शाह विजय तथा सफलता प्राप्त करके तुगलुकाबाद की ओर वापस हो गया। बगाल की विजय के विजय-पत्र देहली में मिम्बरों[5] पर पढे गये, कुब्बे सजाए गये, ढोल बजाये गये और आनन्द मनाया गया। लौटत समय सुल्तान तुगलुक शाह सेना से पृथक् होकर शीघ्राति-शीघ्र दो दो मंजिलो को एक-एक मंजिल बनाता हुआ राजधानी की ओर रवाना हुआ।

सुल्तान गयासुद्दीन तुग़लुक शाह का तुग़लुकाबाद के निकट पहुँचना, पड़ाव के पास के कूश्क (महल) की छत के नीचे दबकर स्वर्गवास होना और उसकी मृत्यु से संसार की परेशानी—

गलुकाबाद की ओर वर सबीले जरीदा[1] आ रहा है, तो उसने आदेश दिया कि तुगलुकाबाद ३-४ कोस पर अफगानपुर के निकट एक छोटा सा कूश्क (महल) बनवाया जाय जहाँ ल्तान रात्रि में उतरे और दूसरे दिन प्रातःकाल राजसी ठाठ-बाट से राजधानी तुगलुकाबाद प्रवेश करे। तुगलुकाबाद में कुब्बे सजाये गये और बाजे बजने लगे। सुल्तान तुगलुक शाह ध्याह्नोत्तर की नमाज के उपरान्त उस नये कूश्क (महल) में पहुँच कर उतरा। सुल्तान हुम्मद ने समस्त मलिको, अमीरो तथा गण्यमान्य व्यक्तियो को लेकर अपने पिता का स्वागत कया तथा पिता के चरण चूमने का सम्मान प्राप्त किया। जिस समय सुल्तान तुगलुक शाह वशेष भोजन मँगवा कर भोजन कर चुका और मलिक तथा अमीर हाथ धोने के लिये बाहर नकले तो दैवी विपत्ति का बज्र पृथ्वी निवासियो पर गिरा।[2] सायबान (सुफ्फा) की छत जसके नीचे सुल्तान बैठा था अचानक सुल्तान के ऊपर गिर पड़ी[3] और सुल्तान तथा ५-६ अन्य मनुष्य छत के नीचे दब कर स्वर्गवासी हो गये। ससार को विजय करने वाला उस जैसा बादशाह जोकि ससार में न समा सकता था चार गज भूमि में दफन हो गया।

छन्द

(४५३) कौन देखने का साहस कर सकता है, हे! आकाश की अन्धी आँख,
दोनो ससार चार गज की कब्र में।
सुल्तान की मृत्यु से एक प्रकार से ससार को विशेष हानि पहुँची।

मसनवी (पद्य)

वह राज्य का नगर जो तूने देखा था नष्ट हो गया,
गौरव की वह नील नदी जिसकी चर्चा तूने सुनी थी अब मृग तृष्णा है।
वह शान्ति का शरीर तथा सुख सम्पन्नता की आत्मा,
देखने वालों की दृष्टि से छिप गयी।
आसमानो के लिये कष्टों के वस्त्र बिछा दिये गये,
नक्षत्रों के लिये अन्धकार पर्दा बन गया।

वे लोग सत्य के मार्ग पर हैं जो इस ससार को त्याग देते हैं और इस अत्याचारी तथा धोखा देने वाली दुनिया से मुँह फेर लेते हैं और जो केवल भूमी की रोटी तथा नमक से सतुष्ट रहते हैं। ससार तथा ससार में जो कुछ भी है, देखने के योग्य नही। क्या ससार

१ कुछ थोड़े से सवारों को लेकर। जरीदा का अर्थ "अकेला", 'शीघ्रातिशीघ्र', अथवा "कुछ थोड़े से सवार जोकि बड़े दल का भाग हों", है। अफगानपुर में पड़ाव करने की आवश्यकता का मुख्य कारण यह था कि इतनी बड़ी विजय के उपरान्त, जब कि नगर में समारोह हो रहा हो, सुल्तान का थोड़े से सवारों के साथ प्रविष्ट होना उचित न था।

२ इस वाक्य के अर्थ पर इतिहासकारों में बड़ा मत भेद है। बाद के मध्यकालीन इतिहासकारों ने इस वाक्य को विभिन्न ढगों से अपने इतिहासों में लिखा है। कुछ इतिहासकारों के वाक्य बाद के इतिहासों के अनुवाद के भाग में दिये गये हैं। बरनी के शब्दों से पता चलता है कि यह दुर्घटना अकस्मात हो गयी। इसामी ने सब दोष सुल्तान मुहम्मद पर रखा है।

३ रामपुर की तारीखे फीरोजशाही की हस्तलिखित पोथी में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है। 'और क्योंकि सुल्तान तुगलुक शाह सेना से जरीदा तर शीघ्रातिशीघ्र शहर (देहली) की ओर प्रस्थान कर रहा था और अमावल अर्थात् तुगलुकाबाद की आबादी के निकट पहुंचा और तीन कोस की हद में एक कूश्क (महल) के नीचे, जो नवनिर्मित था, उतरा तो दैवी (आसमानी) भाग्य (कज़ा व क़दर) से वह सायबान (सुफ्फा) जिसके नीचे सुल्तान आकर बैठा था गिर पड़ा और उस जैसा सरदार उसके नीचे आ गया। (पृ० ४५७)

वालो की शिक्षा के लिये यह पर्याप्त नही है कि जिस बादशाह ने हिन्दुस्तान की इकलीम पर विजय प्राप्त की और जो सफलता तथा विजय प्राप्त करके अपनी राजधानी के निकट पहुँच गया वह अपने परिवार वालो का मुँह न देख सका, ऐश्वर्ययुक्त राज-सिंहासन से मिट्टी में स्थान ग्रहण कर लिया।

छन्द

तू पूछता है कि उस समय के राज-मुकुट धारण करने वाले कहाँ गये,
देखो उनके द्वारा मिट्टी का पेट हमेशा भरा रहेगा।
भूमि मस्त है क्योंकि उसने मदिरा पान किया है,
हुरमुज[1] के सिर के प्याले में नोशीरवाँ[2] के हृदय का रक्त।
किसरा[3] तथा सुनहरी नारगी परवेज[4] तथा सुनहरी औषधि।
वे सब के सब नष्ट-भ्रष्ट हो गये और वायु द्वारा एक हो गये।

---

१ ईरान के एक बादशाह का नाम जो २७२ ई० के लगभग राज्य करता था।
२ ईरान के एक बादशाह का नाम जो मुहम्मद साहब का समकालीन था। (५७८ ई०)
३ नोशीरवाँ की उपाधि। ईरान के अन्य बादशाह भी किसरा कहलाते थे।

मलिक उमदतुलमुल्क शरफुद्दीन—दबीर
मलिक गजनी
मलिक मुख अफगान, अफगान का भाई
मलिक अजीज हिमार (खम्मार) बद असल
मलिक शाहू लोदी अफगान
मलिक करनफुल, सुब्बाक
मलिक फीरोज अर्थात् सुल्तान फीरोज शाह—बारबक मलिक
नेक पै—सर दावतदार
खुदावन्दजादा किवामुद्दीन—नायब वकीलदर[1] आजम
मलिक ख्वाजा हाजी दावर
मलिक, सुल्तान का भानजा
मलिक शरफुलमुल्क, अलप खाँ—गुजरात का वाली
बुरहानुल इस्लाम
मलिक इख्तियारुद्दीन बवाकिर बेग
मलिक दीनार—जौनपुर का मुक्ता
मलिक जहीरुल जयूश
मलिकुन्नुदमा[2] नासिर खानी
मलिकुल मुलूक[3] एमादुद्दीन
मलिक रजीउल मुल्क—विश्वास पात्र वजीर
(४५५) मलिकुल हुकमा
मलिक खास—कड़े का मुक्ता
मलिक काफूर लग
निजामुलमुल्क जोना बहादुर तुर्क—गुजरात का नायब
मलिक इज्जुद्दीन हाजी दीनी
मलिक अली सर जामदार सरगदी
नसीरुलमुल्क कुबली
मलिक हुसामुद्दीन, अबू रिजा
मलिक अशरफ, वजीर तिलग

---

१ वकीलदर :—शाही महल तथा सुल्तान के विशेष कर्मचारियों का मुख्य प्रबन्धक।
२ सुल्तान के मुसाहिब नदीम कहलाते थे। इनका मुख्य अधिकारी मलिकुन्नुदमा होता था।
३ मुख्य मलिक; यह उपाधि मलिकों के विशेष सम्मानार्थ प्रदान की जाती थी।

सुल्तान मुहम्मद इब्ने तुग़लुक़ शाह

(४५६) समस्त प्रशंसा ईश्वर के लिये है जोकि दोनो लोको का पोषक है तथा बहुत बहुत दरूद और सलाम उसके रसूल मुहम्मद एव उनकी समस्त सन्तान पर।

सुल्तान का सिंहासनारोहण—

मुसलमानों का शुभचिन्तक ज़िया बरनी इस प्रकार निवेदन करता है कि जब ७२५ हि० (१३२५ ई०) में सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) तुग़लुक़ शाह, जोकि सुल्तान तुग़लुक़ शाह का उत्तराधिकारी था, राजधानी तुग़लुक़ाबाद में राजसिंहासन पर आरूढ हुआ और उसकी बादशाही से इस्लामी राज्य को शोभा प्राप्त हुई, तो उसने शासन के राज सिंहासन को सुशोभित करने के उपरान्त ४०वें दिन तुग़लुक़ाबाद से शहर (देहली) की ओर प्रस्थान किया और शाही महल में प्राचीन सुल्तानो के राजसिंहासन पर बर्कत तथा आशीर्वाद के लिये आसीन हुआ। सुल्तान मुहम्मद के शहर में प्रवेश करने के पूर्व कुब्बे सजाये गये, खुशी के बाजे बजाये गये और बाजार तथा गलियाँ रग-बिरंगे, फूलदार वस्त्रों से सुसज्जित की गई। सुल्तान मुहम्मद ने आदेश दे दिया था कि शहर की गलियो तथा मुहल्लों में सुल्तानी चत्र के पहुँचने पर सोना (धन) लुटाया जाय और सोने चाँदी के तन्के मुट्ठियो में भर भर कर गलियो में फेंके जायें, उन्हें कोठों पर फेंका जाय और दर्शकों के पल्लुओं में डाल दिया जाय।

(४५७) जिस समय ससार दान करने वाला सुल्तान महमूदी तथा सन्जरी[1] वैभव एव ऐश्वर्य से बदायूँ द्वार में प्रविष्ट हुआ तथा राज-भवन में उतरा तो अमीर एव गण्यमान्य व्यक्ति हाथियो के हौदज में बैठकर सोने चाँदी के तन्कों के भरे हुये थाल अपने सामने रक्खे हुये मुट्ठियों में भर भर कर गलियों और बाजारो में फेंकते जाते थे और कोठो पर भी फेंकते थे। कोठों पर बैठे हुये दर्शक सुल्तान मुहम्मद शाह का न्यौछावर चुनते जाते थे। कोठो पर तथा गलियों में लोगो पर सोने चादी के तन्को की वर्षा होती थी। सर्वसाधारण, स्त्री-पुरुष, छोटे-बड़े, युवक तथा वृद्ध, दास-दासियाँ तथा मुसलमान-हिन्दू सुल्तान मुहम्मद के लिये चिल्ला-चिल्ला कर ईश्वर से प्रार्थना करते थे और उसकी प्रशसा करते थे। सोने चाँदी के तन्को से उन्होने अपनी पगड़ियाँ, जेबें तथा अपनी-अपनी मुट्ठियाँ भर ली थी। देहली उपवन बन गया था जिसमें सफेद और सुनहरे फूल उग आये थे। लाल (रत्न) के फल भी कलियों से निकल आये थे। सर्वसाधारण के सिरों पर फूलो की वर्षा हो रही थी। इस प्रकार की राजसी न्यौछावर किसी राज्य-काल तथा किसी बादशाह के समय में न हुई थी। लोगों की आवश्यकताओं की रज्जु कट गई थी, वृद्ध लोगों के हृदय में भी भोग-विलास की आकाक्षा पैदा हो गई थी। आसक्तों के हृदय की अभिलाषा के वृक्ष में फल आ गये थे। आकाश भी इस न्यौछावर के दृश्य मे बदमस्त तथा चक्कर में पड गया था। प्रत्येक घर में सुल्तान के आगमन के कारण ढोलक तथा बाजे बजने लगे थे। स्त्री तथा पुरुष नाना प्रकार से विभिन्न स्वरों में गान गाते थे।

सुल्तान मुहम्मद के गुण—

ईश्वर ने सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ शाह को प्राणियों में एक विचित्र तथा अद्भुत जीव बनाया था। उसके साहस के समान आकाश तथा पृथ्वी की कोई वस्तु भी न बनाई

[1] महमूद तथा संजर सम्बन्धी।

जा सकती थी। राज्य व्यवस्था तथा शासन-प्रबन्ध-सम्बन्धी विशेषताएँ उसमें स्वाभाविक रूप से पाई जाती थी। उसकी नस-नस तथा रोम-रोम में जमशेदी और कैसुमरवी[1] भरी थी। (४५८) उसे ऐसा साहस प्राप्त हुआ था कि वह समस्त संसार को अपने अधीन किये बिना संतुष्ट न हो सकता था। उसकी हार्दिक आकांक्षा यह थी कि वह समस्त जिन्नातों[2] तथा मानव जाति पर राज्य करे। उसके हृदय में बाल्यावस्था में ही सुलेमानी[3] तथा सिकन्दरी करने की महत्वाकांक्षा आरूढ थी। उसमें अत्यधिक समझ बूझ, योग्यता बुद्धिमत्ता, दानशीलता एव उच्च कोटि के गुण विद्यमान थे। बाल्यावस्था तथा युवावस्था को प्राप्त होने के पूर्व ही उसके हृदय में महमूद, सन्जर, कैकुबाद तथा कैखुसरो[4] की परम्परा पर चलने की आकांक्षा पैदा हो गई थी। वह नेतृत्व तथा सरदारी पर आसक्त था। उसने अपने जीवन के अन्तिम काल में जमशेद तथा फरीदूँ[5] के गुणों का प्रदर्शन किया। उसकी मृत्यु के उपरान्त उसकी सुलेमानी तथा सिकन्दरी के गुण स्पष्ट हुये। ईश्वर प्रशंसनीय है, ऐसा ज्ञात होता था कि राज्य व्यवस्था के वस्त्र तथा शासन-प्रबन्ध की केबा[6] उसके शरीर पर सीं गई हो तथा बादशाही सिंहासन की उत्पत्ति उसके आरोहण के लिए ही की गई हो। उसके साहस की उत्कृष्टता अद्वितीय थी। सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुकशाह में यह बात यहाँ तक स्वाभाविक रूप से पाई जाती थी कि यदि समस्त संसार उसके दासों के अधीन हो जाता तथा पूर्व से पश्चिम तक एव उत्तर से दक्षिण तक के सभी स्थान तथा जाबुल्सा और जाबुल्का[7] उसके दीवान[8] में खराज भेजने लगते, तथा समस्त संसार वाले उसके अधीन हो जाते और समस्त संसार में उसके नाम का खुत्बा तथा सिक्का चालू हो जाता तो भी यदि उसे यह ज्ञात होता कि अमुक टापू अथवा किसी इकलीम (संसार के भाग) का कोई छोटा सा स्थान भी उसके अधीन नहीं हुआ है तो उसका समुद्र के समान हृदय तथा संसार को नापने वाला स्वभाव उस समय तक संतुष्ट न होता जब तक कि वह उस टापू अथवा स्थान को अपने अधीन न कर लेता।

सुल्तान मुहम्मद के मस्तिष्क में आकांक्षायें, अभिलाषायें, उच्च विचार, अत्यधिक सम्मान एव वैभव प्राप्त करने की भावनायें आरूढ हो चुकी थी और उनके फलस्वरूप उसकी महत्वाकांक्षा यह थी कि वह संसार में कयूमुर्स तथा फरीदूँ[9] की बराबरी करे, संसार (४५९) वालों पर जमशेद तथा कैसुमरो के समान बादशाही करे। वह केवल सिकन्दर बन जाने पर ही संतुष्ट न होना चाहता था अपितु सुलेमान के स्थान पर पहुँच जाना चाहता था। उसकी आकांक्षा थी कि जिन्नात तथा समस्त मनुष्य उसके आदेशों का पालन करने लगें तथा नबूवत[10] एव बादशाहत के आदेश उसकी राजधानी में चलने लगे, बादशाही

---

१ ईरान के आतंकमयी बादशाहों के गुण।।

२ अग्नि से उत्पन्न मनुष्य की विरोधी एक जाति। (भूत)

३ एक पैगम्बर जिनका राज्य हवा पर भी बताया जाता है।

४ कैकुबाद तूरान का प्रसिद्ध बादशाह तथा कैखसरो ईरान का प्रसिद्ध बादशाह।

५ ईरान के प्रसिद्ध बादशाह।

६ समस्त साधारण वस्त्रों के ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र, लबादा।

७ दो काल्पनिक नगर जिनके विषय में विचार है कि वे संसार के पश्चिमी तथा पूर्वी छोर पर स्थित हैं।

८ वित्त विभाग।

९ ईरान के बादशाह जो अपने वैभव तथा ऐश्वर्य के लिए प्रसिद्ध थे।

१० नबी होने का कार्य।

और पैगम्बरी[1] को मिला दे, प्रत्येक इकलीम का बादशाह उसके दासों का दास बन जाय, उसकी बराबरी कोई भी न कर सके।

मै उसके उच्च साहस को, जोकि अति विचित्र था, देख देख कर चकित हो जाता हू तथा असमजस में पड जाता हू। यदि उस बादशाह के साहस को फिरऔन[2] तथा नमरूद[3] के समान कहू जो इतने बडे साहस वाले थे कि वे मानव जाति को केवल दास बनाने ही से सन्तुष्ट न थे वरन् ईश्वर बन गये थे और भगवान् बनने के अतिरिक्त किसी अन्य सम्मान से सन्तुष्ट न थे तो मै ऐसा नही कर सकता क्योकि सुल्तान मुहम्मद पाचों समय की नमाज पढता था, उन इस्लामी नियमो पर दृढ था जो उसे अपने पूर्वजो से प्राप्त हुये थे तथा समस्त एबादत (उपासना) एव बदगी (दासता) के कार्य करता था। यदि मै सुल्तान मुहम्मद के उच्च साहस को बायजीद बस्तामी[4] के उच्च साहस के समान कहू, जिन्होंने ईश्वर के समस्त गुण अपने आप में देख लिए थे और जो कहा करता था "मुझ से बडा कोई नही तथा मै ही "वह" हूँ जिसकी सब लोग प्रशसा करते हैं', और यदि मै उसे हुसैन मसूर हल्लाज[5] के समान कहू जोकि पूर्णतया ईश्वर में लीन हो गये थे और अनलहक (अहब्रह्म) कहा करते थे, तो यह भी सम्भव नही क्योकि 'उसका मुसलमानो को दण्ड देना तथा ईमान वालों अन्य सैयिदो, सूफियो, आलिमों, सुन्नियो, अनुयायियो, शरीफो, स्वतन्त्र लोगो एव अन्य लोगो की हत्या कराना इस अधिक सीमा को प्राप्त हो गया था, कि उसके विषय में यह विश्वास करना सम्भव नही, अत मै इसके अतिरिक्त कुछ नही लिख सकता कि ईश्वर ने सुल्तान मुहम्मद को एक अद्भुत जीव बनाया था। उसके विरोधाभासी गुणों तथा योग्यताओं का समझना आलिमों एव बुद्धिमानो के लिए सम्भव नही। उसे देख कर बुद्धि चकरा जाती हैं और उसके गुणो को देख कर चकित तथा स्तब्ध रह जाना पडता है।

(४६०) वह व्यक्ति, जिसके बाप दादा मुसलमान थे और जो पाँचो समय की फर्ज (अनिवार्य) नमाज पढता था, किसी नशे की वस्तु का सेवन न करता था, व्यभिचार तथा गुदाभोग में न पडता था, अपहरण करने तथा हराम की वस्तुयें लेने पर दृष्टि न डालता था, जुआ न खेलता था, दुराचार तथा व्यभिचार से घृणा तथा परहेज करता था, ऐसा होने पर भी सुन्नी मुसलमानो तथा पवित्र विश्वास रखने वालो का रक्त दण्ड के रूप में नदी की भाँति महल के द्वार के सामने बहा देता था। मुसलमानों को अत्यधिक दण्ड देते समय उसे इस बात का कोई भय न होता था कि मुसलमानो के रक्त की एक बूंद ईश्वर के निकट दोनों लोको मे अधिक मूल्य रखती है। इससे अधिक और किस विचित्र बात की कल्पना की जा सकती है कि किसी को विशेष तथा साधारण मुसलमानो की हत्या कराते समय कुरान के कठोर आदेशो तथा मुहम्मद साहब की हदीस[6] मे कोई भय न हो। वह इस बात पर ध्यान न देता कि किस प्रकार मोमिनों (धर्मनिष्ठ मुसलमानों) के रक्तपात के विरुद्ध आसमानी पुस्तको में लिखा हुआ है और १ लाख २४ हजार पैगम्बरों[7] ने इसके विरुद्ध कहा है। इस पर भी वही व्यक्ति पाँचो

१ ईश्वर के दूत। मुहम्मद साहब को मुसलमान अन्तिम दूत मानते हैं।

२ मूसा पैगम्बर का समकालीन मिस्र का बादशाह जो अपने आपको ईश्वर कहता था।

३ एक अत्याचारी बादशाह जो अपने आप को ईश्वर कहता था और जिसने इबराहीम पैगम्बर को अग्नि में डलवा दिया था।

४ एक प्रसिद्ध सूफी सत जिनकी मृत्यु ८४८ ई० के लगभग बताई जाती है।

५ एक प्रसिद्ध सूफी सत जिनकी मृत्यु फाँसी द्वारा ८११ ई० में हुई।

६ मुहम्मद साहब के कथन तथा तत्सम्बन्धी उदाहरणों का सग्रह।

७ पैगम्बरों की सख्या १,२४,००० बताई गई है।

समय की नमाज पढ़ता हो, जुमे तथा जमाग्रत की नमाज़ में उपस्थित रहता हो, किसी नशे की वस्तु का सेवन न करता हो, वे बातें न करता हो जिनकी ईश्वर की ओर से मनाही की गई है, श्रमीरुल मोमिनीन ग्रब्बासी खलीफा[1] का अपने आपको एक तुच्छ दास समझता हो और उसकी आज्ञा तथा आदेश के बिना राज्य-व्यवस्था के किसी कार्य में हाथ न डालता हो। इस प्रकार उसमें स्पष्ट रूप से एक दूसरे के विरुद्ध गुण पाये जाते थे। जिन लोगों ने उसके दर्शन किये थे और जो उसके विश्वासपात्र भी थे, वे भी उस अद्भुत जीव के किस गुण पर विश्वास करके, उसके विषय में कौन सी बात कह सकते थे।

यदि सुल्तान मुहम्मद के दान पुण्य तथा उदारता के विषय में अनेक ग्रन्थों की रचना की जाय और यदि उसके इनाम-इकराम के विषय में पुस्तकें लिखी जायें तथा उसके साहस का उल्लेख करते हुये किताबें लिखी जायें तो भी वे कम होंगी क्योंकि सुल्तान मुहम्मद के दान पुण्य का अनुमान लगाना, जोकि स्वाभाविक रूप से उसमें पाया जाता था, बड़ा कठिन है। (४६१) उस ससार को विजय करने वाले तथा ससार को दान करने वाले के दान पुण्य करने की कोई सीमा न थी, वह कारून के खज़ाने को भी एक ही व्यक्ति को दे डालना चाहता था। कयानी[2] राजकोष तथा गड़ी हुई धन-सम्पत्ति वह एक ही क्षण में प्रदान कर देना चाहता था। वह दान पुण्य करते समय योग्यता तथा अयोग्यता, पहचाने हुये अथवा न पहचाने हुये, स्थायी तथा यात्री, धनी तथा निर्धन में कोई भेद भाव न करता था और सभी को एक समान समझता था। वह माँगने तथा प्रार्थना करने के पूर्व ही दान कर देता था। वह पहली ही सभा में तथा पहली ही भेंट के समय इतना प्रदान कर देता था कि किसी को उसका विचार तथा अनुमान तक न होता था और इस प्रकार प्रदान करता था कि लेने वाला स्वयं विस्मित हो जाता था। उसकी तथा उसके परिवार की भी आवश्यकताओं की रज्जु कट जाती थी। सुल्तान मुहम्मद के अत्यधिक इनाम के फलस्वरूप भिखारी कारून हो गये थे और दरिद्र तथा दीन धन-धान्य सम्पन्न हो गये थे। हातिम[3], बरामिका[4], मग्नन ज़ाइदा[5] तथा अन्य प्रसिद्ध दानियों ने जो धन सम्पत्ति वर्षों में दान करके यश प्राप्त किया था, वह सब सुल्तान मुहम्मद एक ही क्षण में प्रदान कर देता था। कुछ बादशाहों ने खज़ाने से धन सम्पत्ति प्रदान की होगी और कुछ बादशाहों ने खज़ाने से सोना चाँदी प्रदान किया होगा किन्तु सुल्तान मुहम्मद शाह समस्त राज-कोष प्रदान कर देता था और भरा हुआ खज़ाना लुटा देता था।

उसने सुल्तान बहादुर शाह को सुनार गाँव का राज्य प्रदान करते समय समस्त राज-कोष प्रदान कर दिया था। मलिक सन्जर बदख्शानी को ८० लाख तन्के, मलिकुलमुलूक एमादुद्दीन को ७० लाख तन्के, सैयिद अज़दुद्दौला को ४० लाख तन्के, मौलाना नासिर तवील, काज़ी काशानी, खुदावन्दज़ादा गयासुद्दीन, खुदावन्दज़ादा किवामुद्दीन तथा मलिकुन्नुदमा नासिर काफी को लाखों तथा अपार सोना (धन) प्रदान किया। मलिक बहराम गजनी को प्रत्येक वर्ष १०० लाख तन्के देता था। गजनी के काज़ी को इतनी धन सम्पत्ति और इतने जवाहरात प्रदान किये कि उसने (उतना धन) अपनी आँख से भी कभी न देखा था।

---

१ अन्तिम ३७ वाँ अब्बासी खलीफ़ा, जिसकी हत्या हलाकू ने १२५८ ई० में कर दी थी, की सन्तान।

२ ईरान के बादशाहों का एक वंश।

३ हातिमताई, अरब के तै कबील का एक बहुत बड़ा दानी सरदार।

४ खुरासान के बलख नामक स्थान का एक वंश जो अपने दान के लिये बड़ा प्रसिद्ध था। वे प्रारम्भिक अब्बासी खलीफाओं के वजीर थे। बरनी ने भी इनके इतिहास पर एक पुस्तक लिखी थी।

५ एक दानी

उसने अपने समस्त राज्यकाल में केवल गण्य-मान्य तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियो एव विश्वास-पात्रो, प्रत्येक कला तथा ज्ञान में कुशलता रखने वालो को ही धन-सम्पत्ति न प्रदान (४६२) की अपितु प्रत्येक दरिद्र को, जोकि उसके मान तथा दया के समाचार सुनकर खुरासान, एराक, मावराउन्नहर, ख्वारज्म सीस्तान, हिरात, मिस्र तथा दमिश्क से, आकाश के समान वैभव रखने वाले उसके दरबार में पहुँचता था, धन सम्पत्ति प्रदान करके माला माल कर देता था। सुल्तान मुहम्मद के राज्यकाल के अन्तिम वर्षों में प्रत्येक वर्ष मुगल अमीराने तुमन[1], अमीराने हजारा[2], प्रतिष्ठित मुगल तथा मुगलिस्तान के गण्य मान्य स्त्री एव पुरुष सुल्तान मुहम्मद शाह के दरबार में दासता तथा निष्कपट सेवा के लिये उपस्थित होते रहते थे। कुछ लोग उसकी सेवा में रुक जाते थे और कुछ लौट जाते थे। उन्हे लाखों और करोडों की धन-सम्पत्ति, जडाऊ तथा बहुमूल्य चीजें, मोती तथा जवाहरात, सोने चाँदी के बर्तन, सोने चाँदी के भरे हुये तको के थाल, मनो मोती, सोने के काम के वस्त्र, सुनहरे कपडो की पेटियाँ तथा सजे हुये घोडे प्रदान किये जाते थे। अक्ता तथा विलायतें उन्हें इनाम के रूप में प्रदान की जाती थी। समस्त ससार प्रदान कर देने वाली उसकी दृष्टि में सोना चाँदी और मोती, ककड तथा ठिकरो से भी अल्प मूल्य रखते थे।

मे इससे पूर्व लिख चुका हू कि सुल्तान मुहम्मद प्राणियों में एक अद्भुत जीव उत्पन्न हुआ था। यही बात मे पुन दुहराता हू और लिखता हू। अत्यधिक दान, उदारता तथा उच्च साहस के अतिरिक्त सुल्तान में अन्य प्रकार के भी गुण पाये जाते थे। जहाँदारी (राज्य-व्यवस्था) तथा जहाँगीरी (दिग्विजय) के अनेक नियमो का उसने समस्त ससार में भ्रमण करने वाले अपने हृदय द्वारा आविष्कार किया था। उसके विचित्र तथा अद्भुत आविष्कारो के समक्ष (समय) यदि आसफ[3], अरस्तू, अहमद हसन[4] तथा निज़ामुलमुल्क[5] जीवित होते तो आश्चर्य में अगुली दाँतो के नीचे दबा लेते। उसके मस्तिष्क में नाना प्रकार के आविष्कारो की योग्यता पाई जाती थी। यद्यपि उसके कुछ परामर्श-दाता भी थे और वह उनसे परामर्श भी (४६३) किया करता था किन्तु राज्य व्यवस्था की छोटी बडी सभी बातें तथा राज्य के छोटे बडे समस्त कार्य वह दूसरो के परामश तथा परामर्श दाताओं के आविष्कार के अनुसार न करता था। उसके हृदय में जो कुछ आता और जो कोई नई बात उसकी समझ में आती तो वह उस विचार को कार्यान्वित करा देता। ससार को उज्ज्वल करने वाले उसके विचारो तथा आविष्कारो के विरुद्ध कोई भी अपनी राय प्रस्तुत करने का साहस न कर सकता था। परामर्श-दाता उसके विचारो की सराहना करने तथा सैकडो प्रकार के उदाहरणो द्वारा सुल्तान के विचारों की प्रशसा करने के अतिरिक्त कुछ न कर सकते थे।

सुल्तान मुहम्मद की बुद्धि तथा योग्यता के विषय में कुछ कहना अथवा लिखना सम्भव नही। वह किसी को पहली बार देखन तथा उससे पहली बार मिलने ही से उसके गुणों अवगुणो तथा उसकी अच्छी और बुरी बातो का पता लगा लेता था, उसकी पिछली योग्यताओ तथा दोषो की जानकारी प्राप्त कर लेता था। वह बडा जादूबयान (सुन्दर वक्ता) था और मीठे भाषण करने में उसे बडी दक्षता प्राप्त थी। यदि वह प्रातःकाल से रात्रि तक

१ १०,००० सवारों के सरदार।

२ १००० सवारों के सरदार।

३ कहा जाता है कि आसफ़ बिन बरख़िया सुलेमान पैग़म्बर का प्रधान मंत्री था।

४ अहमद बिन हसन मैमन्दी, सुल्तान महमूद गज़नवी का वज़ीर। उसकी मृत्यु १०३३ ई० में हुई।

५ मलजूक़ सुल्तान अलप अरसलाँ तथा मलिक शाह का वज़ीर, एवं सियरुलमुलूक (सयासतनामे) का लेखक। उसकी मृत्यु १०९२ ई० में हुई।

समय की नमाज पढता हो, जुमे तथा जमाअत की नमाज में उपस्थित रहता हो, किसी नशे की वस्तु का सेवन न करता हो, वे बातें न करता हो जिनकी ईश्वर की ओर से मनाही की गई है, अमीरुल मोमिनीन अब्बासी खलीफा[१] का अपने आपको एक तुच्छ दास समझता हो और उसकी आज्ञा तथा आदेश के बिना राज्य-व्यवस्था के किसी कार्य में हाथ न डालता हो। इस प्रकार उसमे स्पष्ट रूप से एक दूसरे के विरुद्ध गुण पाये जाते थे। जिन लोगो ने उसके दर्शन किये थे और जो उसके विश्वासपात्र भी थे, वे भी उस अद्भुत जीव के किस गुण पर विश्वास करके, उसके विषय में कौन सी बात कह सकते थे।

यदि सुल्तान मुहम्मद के दान पुण्य तथा उदारता के विषय में अनेक ग्रन्थों की रचना की जाय और यदि उसके इनाम-इकराम के विषय में पुस्तकें लिखी जायें तथा उसके साहस का उल्लेख करते हुये किताबें लिखी जायें तो भी वे कम होंगी क्योंकि सुल्तान मुहम्मद के दान पुण्य का अनुमान लगाना, जोकि स्वाभाविक रूप से उसमें पाया जाता था, बड़ा कठिन है। (४६१) उस ससार को विजय करने वाले तथा ससार को दान करने वाले के दान पुण्य करने की कोई सीमा न थी, वह कारून के खजाने को भी एक ही व्यक्ति को दे डालना चाहता था। कयानी[२] राजकोष तथा गड़ी हुई धन-सम्पत्ति वह एक ही क्षण में प्रदान कर देना चाहता था। वह दान पुण्य करते समय योग्यता तथा अयोग्यता, पहचाने हुये अथवा न पहचाने हुये, स्थायी तथा यात्री, धनी तथा निर्धन में कोई भेद भाव न करता था और सभी को एक समान समझता था। वह माँगने तथा प्रार्थना करने के पूर्व ही दान कर देता था। वह पहली ही सभा में तथा पहली ही भेंट के समय इतना प्रदान कर देता था कि किसी को उसका विचार तथा अनुमान तक न होता था और इस प्रकार प्रदान करता था कि लेने वाला स्वय विस्मित हो जाता था। उसकी तथा उसके परिवार की भी आवश्यकताओं की रज्जु कट जाती थी। सुल्तान मुहम्मद के अत्यधिक इनाम के फलस्वरूप भिखारी कारून हो गये थे और दरिद्र तथा दीन धन-धान्य सम्पन्न हो गये थे। हातिम[३], बरामिका[४], मअन जाइदा[५] तथा अन्य प्रसिद्ध दानियों ने जो धन सम्पत्ति वर्षों में दान करके यश प्राप्त किया था, वह सब सुल्तान मुहम्मद एक ही क्षण में प्रदान कर देता था। कुछ बादशाहो ने खजाने से धन-सम्पत्ति प्रदान की होगी और कुछ बादशाहो ने खजाने से सोना चाँदी प्रदान किया होगा किन्तु सुल्तान मुहम्मद शाह समस्त राज-कोष प्रदान कर देता था और भरा हुआ खजाना लुटा देता था।

उसने सुल्तान बहादुर शाह को सुनार गाँव का राज्य प्रदान करते समय समस्त राज-कोष प्रदान कर दिया था। मलिक सन्जर बदख्शानी को ८० लाख तन्के, मलिकुलमुलूक एमादुद्दीन को ७० लाख तन्के, सैयिद अजदुद्दौला को ४० लाख तन्के, मौलाना नासिर तबील, काजी *कासना, खुदावन्दजादा गयासुद्दीन, खुदावन्दजादा किवामुद्दीन तथा मलिकुन्नुदमा नासिर* काफी को लाखों तथा अपार सोना (धन) प्रदान किया। मलिक बहराम गजनी को प्रत्येक वर्ष १०० लाख तन्के देता था। गजनी के काजी को इतनी धन-सम्पत्ति और इतने जवाहरात प्रदान किये कि उसने (उतना धन) अपनी आख से भी कभी न देखा था।

१ अन्तिम ३७ वाँ अब्बासी खलीफा, जिसकी हत्या हलाकू ने १२५८ ई० में कर दी थी, की संतान।

२ ईरान के बादशाहों का एक वंश।

३ हातिमताई, अरब के तै कबीले का एक बहुत बड़ा दानी सरदार।

४ खुरासान के बलख नामक स्थान का एक वंश जो अपने दान के लिये बड़ा प्रसिद्ध था। वे प्रारम्भिक अब्बासी खलीफाओं के वजीर थे। बरनी ने भी इनके इतिहास पर एक पुस्तक लिखी थी।

५ एक दानी

उसने अपने समस्त राज्यकाल में केवल मान्य-मान्य तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों एवं विश्वास-पात्रों, प्रत्येक कला तथा ज्ञान में कुशलता रखने वालों को ही धन-सम्पत्ति न प्रदान (४६२) की अपितु प्रत्येक दरिद्र को, जोकि उसके मान तथा दया के समाचार सुनकर खुरासान, एराक़, मावराउन्नहर, ख्वारज़्म सीस्तान, हिरात, मिस्र तथा दमिश्क से, आकाश के समान वैभव रखने वाले उसके दरबार में पहुँचता था, धन सम्पत्ति प्रदान करके माला माल कर देता था। सुल्तान मुहम्मद के राज्यकाल के अन्तिम वर्षों में प्रत्येक वर्ष मुग़ल अमीराने तुमन[1], अमीराने हज़ारा[2], प्रतिष्ठित मुग़ल तथा मुग़लिस्तान के सम्मानित स्त्री एवं पुरुष सुल्तान मुहम्मद शाह के दरबार में कामना तथा निष्कपट सेवा के लिए उपस्थित होते रहते थे। कुछ लोग उसकी सेवा में रह जाते थे और कुछ लौट जाते थे। उन्हें लाखों और करोड़ों की धन-सम्पत्ति, जड़ाऊ तथा बहुमूल्य चीज़ें, मोती तथा जवाहरात, सोने चाँदी के बर्तन, सोने चाँदी के भरे हुये तश्तों के थाल, मर्दों मोती, सोने के साज़ के घोड़े, सुनहरे कपड़ों की पेटियाँ तथा सजे हुये घोड़े प्रदान किये जाते थे। अकथ्य तथा विशाल उन्हें इनाम के रूप में प्रदान की जाती थीं। समस्त संसार प्रदान कर देने वाले उसकी दृष्टि में सोना चाँदी और मोती, कंकड़ तथा ठिकरों से भी अल्प मूल्य रखते थे।

मैं इससे पूर्व लिख चुका हूँ कि सुल्तान मुहम्मद प्राणियों में एक अद्भुत और उत्पात हुआ था। यही बात मैं पुनः दुहराता हूँ और लिखता हूँ। अत्यधिक दान, उदारता तथा उच्च साहस के अतिरिक्त सुल्तान में अन्य प्रकार के भी गुण पाये जाते थे। जहाँदारी (राज्य-व्यवस्था) तथा जहाँगीरी (दिग्विजय) के अनेक नियमों का उसने समस्त संसार में प्रकाश करने वाले अपने हृदय द्वारा आविष्कार किया था। उसके विचित्र तथा अद्भुत आविष्कारों के समक्ष (समय) यदि आसफ़[3], अरस्तू, अहमद हसन[4] तथा निज़ामुलमुल्क[5] जीवित होते तो आश्चर्य में अंगुली दाँतों के नीचे दबा लेते। उसके मस्तिष्क में नाना प्रकार के आविष्कारों की योग्यता पाई जाती थी। यद्यपि उसके कुछ परामर्श-दाता भी थे और वह उनसे परामर्श भी (४६३) किया करता था किन्तु राज्य व्यवस्था की छोटी बड़ी सभी बातें तथा राज्य के छोटे बड़े समस्त कार्य वह दूसरों के परामर्श तथा परामर्श दाताओं के आविष्कार के अनुसार न करता था। उसके हृदय में जो कुछ आता और जो कोई नई बात उसकी समझ में आती तो वह उस विचार को कार्यान्वित करा देता। संसार को उज्ज्वल करने वाले उसके विचारों तथा आविष्कारों के विरुद्ध कोई भी अपनी राय प्रस्तुत करने का साहस न कर सकता था। परामर्श-दाता उसके विचारों की सराहना करने तथा सैकड़ों प्रकार के उदाहरणों द्वारा सुल्तान के विचारों की प्रशंसा करने के अतिरिक्त कुछ न कर सकते थे।

सुल्तान मुहम्मद की बुद्धि तथा योग्यता के विषय में कुछ कहना अथवा लिखना सम्भव नहीं। वह किसी को पहली बार देखने तथा उससे पहली बार मिलने ही से उसके गुणों अवगुणों तथा उसकी अच्छी और बुरी बातों का पता लगा लेता था, उसकी छिपी योग्यताओं तथा दोषों की जानकारी प्राप्त कर लेता था। वह बड़ा ज़बाँदान (सुन्दर वक्ता) था और मीठे भाषण करने में उसे बड़ी दक्षता प्राप्त थी। यदि वह प्रातःकाल से रात्रि तक

---

१ १०,००० सवारों के सरदार।

२ १००० सवारों के सरदार।

३ कहा जाता है कि आसफ़ बिन बरख़िया सुलेमान पैग़म्बर का प्रधान मंत्री था।

४ अहमद बिन हसन मैमन्दी, सुल्तान महमूद ग़ज़नवी का वज़ीर। उसकी मृत्यु १०३३ ई० में हुई।

५ मनसूर सुल्तान अल्प अरसलाँ तथा मलिक शाह का वज़ीर, एवं सियरुलमुलूक (सियासतनामे) का लेखक। उसकी मृत्यु १०९२ ई० में हुई।

समय की नमाज पढता हो, जुमे तथा जमाअत की नमाज में उपस्थित रहता हो, किसी नशे की वस्तु का सेवन न करता हो, वे बातें न करता हो जिनकी ईश्वर की ओर से मनाही की गई है, अमीरुल मोमिनीन अब्बासी खलीफा[1] का अपने आपको एक तुच्छ दास समझता हो और उसकी आज्ञा तथा आदेश के बिना राज्य-व्यवस्था के किसी कार्य में हाथ न डालता हो। इस प्रकार उसमें स्पष्ट रूप से एक दूसरे के विरुद्ध गुण पाये जाते थे। जिन लोगों ने उसके दर्शन किये थे और जो उसके विश्वासपात्र भी थे, वे भी उस अद्भुत जीव के किस गुण पर विश्वास करके, उसके विषय में कौन सी बात कह सकते थे।

यदि सुल्तान मुहम्मद के दान पुण्य तथा उदारता के विषय में अनेक ग्रन्थों की रचना की जाय और यदि उसके इनाम-इकराम के विषय में पुस्तकें लिखी जायें तथा उसके साहस का उल्लेख करते हुये किताबें लिखी जायें तो भी वे कम होंगी क्योंकि सुल्तान मुहम्मद के दान पुण्य का अनुमान लगाना, जोकि स्वाभाविक रूप से उसमें पाया जाता था, बडा कठिन है। (४६१) उस ससार को विजय करने वाले तथा ससार को दान करने वाले के दान पुण्य करने की कोई सीमा न थी, वह क़ारून के खज़ाने को भी एक ही व्यक्ति को दे डालना चाहता था। कयानी[2] राजकोष तथा गडी हुई धन-सम्पत्ति वह एक ही क्षण में प्रदान कर देना चाहता था। वह दान पुण्य करते समय योग्यता तथा अयोग्यता, पहचाने हुये अथवा न पहचाने हुये, स्थायी तथा यात्री, धनी तथा निर्धन में कोई भेद भाव न करता था और सभी को एक समान समझता था। वह माँगने तथा प्रार्थना करने के पूर्व ही दान कर देता था। वह पहली ही सभा में तथा पहली ही भेंट के समय इतना प्रदान कर देता था कि किसी को उसका विचार तथा अनुमान तक न होता था और इस प्रकार प्रदान करता था कि लेने वाला स्वय विस्मित हो जाता था। उसकी तथा उसके परिवार की भी आवश्यकताओं की रज्जु कट जाती थी। सुल्तान मुहम्मद के अत्यधिक इनाम के फलस्वरूप भिखारी कारून हो गये थे और दरिद्र तथा दीन धन-धान्य सम्पन्न हो गये थे। हातिम[3], बरामिका[4], मअन जाइदा[5] तथा अन्य प्रसिद्ध दानियों ने जो धन सम्पत्ति वर्षों में दान करके यश प्राप्त किया था, वह सब सुल्तान मुहम्मद एक ही क्षण में प्रदान कर देता था। कुछ बादशाहो ने खजाने से धन-सम्पत्ति प्रदान की होगी और कुछ बादशाहो ने खजाने से सोना चाँदी प्रदान किया होगा किन्तु सुल्तान मुहम्मद शाह समस्त राज-कोष प्रदान कर देता था और भरा हुआ खजाना लुटा देता था।

उसने सुल्तान बहादुर शाह को सुनार गाँव का राज्य प्रदान करते समय समस्त राज-कोष प्रदान कर दिया था। मलिक सन्जर बदख्शानी को ८० लाख तन्के, मलिकुलमुलूक एमादुद्दीन को ७० लाख तन्के, सैयिद अजदुद्दौला को ४० लाख तन्के, मौलाना नासिर तबोल, काज़ी कासना, खुदावन्दज़ादा गयासुद्दीन, खुदावन्दजादा किवामुद्दीन तथा मलिकुननुदमा नासिर काफी को लाखों तथा अपार सोना (धन) प्रदान किया। मलिक बहराम गज़नी को प्रत्येक वर्ष १०० लाख तन्के देता था। ग़ज़नी के क़ाज़ी को इतनी धन-सम्पत्ति और इतने जवाहरात प्रदान किये कि उसने (उतना धन) अपनी आख से भी कभी न देखा था।

१ अन्तिम ३७ वाँ अब्बासी खलीफ़ा, जिसकी हत्या हलाकू ने १२५८ ई० में कर दी थी, की संतान।

२ ईरान के बादशाहों का एक वंश।

३ हातिमताई, अरब के तै कबीले का एक बहुत बड़ा दानी सरदार।

४ खुरासान के बलख नामक स्थान का एक वंश जो अपने दान के लिये बड़ा प्रसिद्ध था। वे प्रारम्भिक अब्बासी खलीफाओं के वजीर थे। बरनी ने भी इनके इतिहास पर एक पुस्तक लिखी थी।

५ एक दानी

उसने अपने समस्त राज्यकाल में केवल गण्य-मान्य तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों एवं विश्वास-पात्रों, प्रत्येक कला तथा ज्ञान में कुशलता रखने वालो को ही धन-सम्पत्ति न प्रदान (४६२) की अपितु प्रत्येक दरिद्र को, जोकि उसके मान तथा दया के समाचार सुनकर खुरासान, एराक, मावराउन्नहर, ख्वारज्म सीस्तान, हिरात, मिस्र तथा दमिश्क से, आकाश के समान वैभव रखने वाले उसके दरबार में पहुँचता था, धन सम्पत्ति प्रदान करके माला माल कर देता था। सुल्तान मुहम्मद के राज्यकाल के अन्तिम वर्षो में प्रत्येक वर्ष मुगल अमीराने तुमन[1], अमीराने हजारा[2], प्रतिष्ठित मुगल तथा मुगलिस्तान के गण्य-मान्य स्त्री एव पुरुष सुल्तान मुहम्मद शाह के दरबार में दासता तथा निष्कपट सेवा के लिये उपस्थित होते रहते थे। कुछ लोग उसकी सेवा में रुक जाते थे और कुछ लौट जाते थे। उन्हें लाखो और करोडो की धन-सम्पत्ति, जडाऊ तथा बहुमूल्य जीनें, मोती तथा जवाहरात, सोने चाँदी के बर्तन, सोने चाँदी के भरे हुये तन्को के थाल, मनों मोती, सोने के काम के वस्त्र, सुनहरे कपडो की पेटियाँ तथा सजे हुये घोडे प्रदान किये जाते थे। अक्ता तथा विलायतें उन्हें इनाम के रूप में प्रदान की जाती थी। समस्त ससार प्रदान कर देने वाली उसकी दृष्टि में सोना चाँदी और मोती, कंकड तथा ठिकरो से भी अल्प मूल्य रखते थे।

मैं इससे पूर्व लिख चुका हू कि सुल्तान मुहम्मद प्राणियों में एक अद्भुत जीव उत्पन्न हुआ था। यही बात मै पुन दुहराता हू और लिखता हू। अत्यधिक दान, उदारता तथा उच्च साहस के अतिरिक्त सुल्तान में अन्य प्रकार के भी गुण पाये जाते थे। जहाँदारी (राज्य-व्यवस्था) तथा जहाँगीरी (दिग्विजय) के अनेक नियमो का उसने समस्त ससार में भ्रमण करने वाले अपने हृदय द्वारा आविष्कार किया था। उसके विचित्र तथा अद्भुत आविष्कारो के समक्ष (समय) यदि आसफ[3], अरस्तू, अहमद हसन[4] तथा निजामुलमुल्क[5] जीवित होते तो आश्चर्य में अगुली दाँतो के नीचे दबा लेते। उसके मस्तिष्क में नाना प्रकार के आविष्कारों की योग्यता पाई जाती थी। यद्यपि उसके कुछ परामर्श-दाता भी थे और वह उनसे परामर्श भी (४६३) लिया करता था किन्तु राज्य-व्यवस्था की छोटी बडी सभी बातें तथा राज्य के छोटे बडे समस्त कार्य वह दूसरो के परामर्श तथा परामर्श दाताओं के आविष्कार के अनुसार न करता था। उसके हृदय में जो कुछ आता और जो कोई नई बात उसकी समझ में आती तो वह उस विचार को कार्यान्वित करा देता। ससार को उज्ज्वल करने वाले उसके विचारों तथा आविष्कारो के विरुद्ध कोई भी अपनी राय प्रस्तुत करने का साहस न कर सकता था। परामर्श-दाता उसके विचारो की सराहना करने तथा सैकडों प्रकार के उदाहरणो द्वारा सुल्तान के विचारों की प्रशसा करने के अतिरिक्त कुछ न कर सकते थे।

सुल्तान मुहम्मद की बुद्धि तथा योग्यता के विषय में कुछ कहना अथवा लिखना सम्भव नही। वह किसी को पहली बार देखने तथा उससे पहली बार मिलने ही से उसके गुणों अवगुणों तथा उसकी अच्छी और बुरी बातो का पता लगा लेता था, उसकी पिछली योग्यताओं तथा दोषो की जानकारी प्राप्त कर लेता था। वह बडा जादूबयान (सुन्दर वक्ता) था और मीठे भाषण करने में उसे बडी दक्षता प्राप्त थी। यदि वह प्रात काल से रात्रि तक

१ १०,००० सवारों के सरदार।

२ १००० सवारों के सरदार।

३ कहा जाता है कि आसफ़ बिन बरखिया सुलेमान पैगम्बर का प्रधान मंत्री था।

४ अहमद बिन हसन मैमन्दी, सुल्तान महमूद गजनवी का वजीर। उसकी मृत्यु १०३२ ई० में हुई।

५ सलजूक सुल्तान अलप अरसलाँ तथा मलिक शाह का वजीर, एवं सियरुलमुलूक (सयासतनामे) का लेखक। उसकी मृत्यु १०९२ ई० में हुई।

वार्त्ता करता और भाषण देता तो श्रोताओं को कोई कष्ट तथा थकावट न होती। जितनी ही अधिक वह बातें करता उतनी ही सुनने वालो की इच्छा प्रबल हो जाती थी। पत्र व्यवहार तथा लिखने में सुल्तान मुहम्मद बडे-बडे योग्य दबीरों (लेखको) को चकित कर देता था। सुलेख तथा सुन्दर रचनाओं एव विचित्र शैली तथा भाव व्यजन में बडे-बडे लेखक तथा रचना में नवीनता उत्पन्न करने वाले गुरु उसका सामना न कर सकते थे। विचित्र बातें निकालने तथा रूपक के प्रयोग में वह अद्वितीय था। यदि बडे-बडे लेखक उसके समान लिखने का प्रयास करते तो सफल न होते। उसे बहुत बडी सख्या में फारसी कवितायें कठस्थ थी और वह अपने लेखो में उनका उचित प्रयोग करता था। वह प्राय स्वय कविता करता था। सिकन्दर नामे[१] का बहुत बडा भाग उसे कठस्थ था। अबुमुस्लिम[२] नामा तथा तारीखे महमूदी[३] उसे कठस्थ थी अन्य बातों के अतिरिक्त सुल्तान मुहम्मद की स्मरण-शक्ति भी विचित्र थी। जो कुछ उसने सुना था वह उसे याद था। तिब (चिकित्सा) में उसे बडा अनुभव प्राप्त था। (४६४) वह नाना प्रकार के रोगो की चिकित्सा बडे अच्छे ढग से कर सकता था। वह बहुत से रोगियों की चिकित्सा किया करता था। तबीबों (चिकित्सको) से बडी योग्यता से वाद विवाद करता था और उनकी त्रुटियाँ उन्हे बताया करता था।

दर्शन-शास्त्र के ज्ञान में भी उसे विशेष रुचि थी। उसने इस ज्ञान की भी कुछ[४] जानकारी प्राप्त की था। यह ज्ञान उसके हृदय में ऐसा आरूढ हो गया था कि वह न्याय-सिद्ध बातो के अतिरिक्त जो कुछ भी सुनता उस पर विश्वास न करता था। किसी भी विद्वान, आलिम, कवि, दबीर (सचिव), नदीम (मुसाहिब) तथा तबीब (चिकित्सक) को इतना साहस न हो सकता था कि वह सुल्तान मुहम्मद की एकान्त की गोष्ठियो में अपने ज्ञान के विषय में कोई वार्त्ता कर सकता अथवा अपनी योग्यता तथा अपने ज्ञान के अनुसार सुल्तान मुहम्मद को उसके असख्य प्रश्नो के समक्ष कोई बात समझा सकता। सुल्तान मुहम्मद को वीरता तथा पौरुष अपने पूर्वजों द्वारा प्राप्त हुआ था तथा जो कुछ उसने स्वय सीखा था, उनमें वह अद्वितीय था। बाण तथा भाला चलाने, गेंद खेलने, घोडा दौडाने तथा शिकार खेलने में उसके समान कोई शहसवार करनो अथवा युगो से न देखा गया होगा। उसमें अत्यधिक योग्यता तथा बुद्धि पाई जाती थी। वह बडा ही रूपवान तथा सजधज वाला व्यक्ति था। इसी कारण उसका सभी सम्मान करते थे। वीरता तथा (सैनिकों की) पक्तियों का विनाश करने में वह इतना निपुण था कि वह अकेले ही पूरी सेना पर आक्रमण करके उसका विनाश कर सकता था। सुल्तान मुहम्मद उसके पिता तथा चाचा वीरता में हिन्दुस्तान एव खुरासान में आदर्श समझे जाते थे। यदि सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) तुगलुक़ शाह दान

१ निज़ामी गजवी (मृत्यु १२०० ई०) की प्रसिद्ध कविता जो उसने ११०० ई० में समाप्त की। यह उसकी अन्तिम कविता थी। यह उसकी विख्यात पाँच कविताओं (खम्से) के सग्रह की अन्तिम कविता है।

२ अबूमुस्लिम एक बहुत बड़ा सैनिक तथा प्रचारक था। अब्बासी खलीफाओं का राज्य उसी के द्वारा स्थापित हुआ। ७५८ ई० मे उसकी हत्या करा दी गई। "शाहनामे, अबूमुस्लिम तथा अमीर हमज़ा की कहानियाँ उसे कठस्थ थीं।" (तारीखे फिरिश्ता भाग १, पृ० १३३)

३ इस इतिहास के लेखक का नाम ज्ञात नहीं। सम्भवतया यह सुल्तान महमूद गजनवी का इतिहास होगा।

४ इस शब्द का प्रयोग बरनी ने सम्भवतया व्यंग के रूप में किया है। उसने लिखा है "चीज़े अज़ इल्मे माक़ूल खान्दा बूद"। रामपुर की हस्तलिखित पोथी में इस सम्बन्ध मे इस प्रकार लिखा है "वह इल्मेमाकूल पर (दर्शन शास्त्र) वाद विवाद करता था और दार्शनिकों में दोष निकालता था।" (पृ० २८२)

करना प्रारम्भ कर देता तो सैकडों हातिम ताई लुटाकर भिखारियो को प्रदान कर देता था। यदि वह जहाँगीरी (दिग्विजय) का सकल्प कर लेता था तो खुरासान तथा एराक में भूकम्प आ जाता था, मावराउन्नहर तथा ख्वारज्म असमजस में पड जाते थे।

सुल्तान के अत्याचार करने के कारण—

इस बात का बडा दु ख तथा खेद है कि अत्यधिक सम्मान, ऐश्वर्य, श्रेष्ठता, योग्यता, सूझ-बूझ, वीरता, दान पुण्य तथा बुद्धिमत्ता के होते हुये भी उस (सुल्तान मुहम्मद) जैसे (४६५) हिन्दुस्तान तथा खुरासान के बादशाह और बादशाहजादे का युवावस्था में अधर्मी साद मन्तकी,[१] उबैद कवि, नज्मइनतेशार[२] फलसफी से सम्बन्ध तथा मेल हो गया। मौलाना अलीमुद्दीन,[३] जोकि बहुत बडा फलसफी (दार्शनिक) था, उसके साथ एकान्त में रहा करता था। उन दुष्टो न जोकि माकूलात[४] में विश्वास रखते थे तथा माकूलात सम्बन्धी ज्ञानो के विषय में उठते बैठते विचार तथा तर्क वितर्क किया करते थे, उन्हीं ज्ञानो का प्रचार करते थे, सुल्तान मुहम्मद के हृदय में सुन्नी धर्म के विरुद्ध बातें तथा १ लाख २४ हजार पैगम्बरो की कही हुई बातो के विषय में इस प्रकार अविश्वास उत्पन्न करा दिया था कि उसके हृदय में आसमानी पुस्तकों में लिखी हुई बातो तथा नबियो की हदीस के लिये जो इस्लाम तथा ईमान के स्तम्भ, इस्लामी बातो की खान और मुक्ति तथा भगवान् के निकट उच्च स्थान प्राप्त करने का साधन हैं कोई स्थान न रह गया था। जो चीज भी प्रमाणित न हो सकती थी उस वह न सुनता था, न उस पर विश्वास करता था तथा वह चीज उसके पवित्र हृदय में आरूढ न हो पाती थी। यदि सुल्तान मुहम्मद के हृदय में दार्शनिको के ज्ञान[५] न स्थान न प्राप्त कर लिया होता और उसे आसमानी कही हुई बातो[६] में रुचि तथा विश्वास होता तो नाना प्रकार के गुणो तथा श्रेष्ठता का स्वामी होते हुये, वह अल्लाह उसके रसूल, नबियो, तथा आलिमो की कही हुई बातो के विरुद्ध कदापि किसी ईमान वाले तथा एकेश्वरवादी की हत्या का आदेश न देता। चूकि दार्शनिको की ज्ञान सम्बन्धी बातो न, जिनके द्वारा हृदय में कठोरता उत्पन्न हो जाती है उस पर अधिकार जमा लिया था और आसमानी पुस्तको में लिखी हुई बातो तथा नबियो की हदीस का जिसके द्वारा मनुष्य में नम्रता, दीनता, तथा कयामत के दण्ड का भय होता है उसके हृदय में कोई स्थान न था, अत मुसलमानों की हत्या तथा एकेश्वरवादियो का रक्त पात उसका स्वभाव बन गये थे। वह अनक आलिमो, सैयिदो, सूफिया कलन्दरो,[७] नवीसिन्दों[८] तथा सैनिको की हत्या कराया करता था। कोई दिन अथवा सप्ताह ऐसा

---

१ मलिक सादुद्दीन मतक़ी को सुल्तान जलालुद्दीन खलजी के दरबार में बड़ा सम्मान प्राप्त था। वह उसका बहुत बड़ा विश्वास-पात्र था। (बरनी पृ० १९८, खलजी कालीन भारत पृ० १५)। वह सुल्तान अलाउद्दीन का भी विश्वास पात्र था और उसी ने मौलाना शम्सुद्दीन तुर्क के पत्र के विषय में सुल्तान को सूचना दी थी। (बरनी पृ० २९९ खलजी कालीन भारत पृ० ७५)। दोनों स्थानों में से किसी स्थान पर भी बरनी ने साद मतक़ी के विषय में किसी प्रकार के कठोर शब्द का प्रयोग नहीं किया है।

२ मौलाना नज्मुद्दीन इनतेशार अलाउद्दीन के समय के उन ४६ आलिमों में थे जो बरनी के अनुसार ससार में अद्वितीय थे (बरनी पृ० ३५२ ३५४, खलजी कालीन भारत पृ० १०८)

३ फ़िरिश्ता के अनुसार "मौलाना इल्मुद्दीन शीराज़ी' (तारीखे फ़िरिश्ता भाग १, पृ० १३३)

४ उन बातों में जो केवल बुद्धि तथा तर्क द्वारा सिद्ध हो सकती हैं।

५ माक़ूलाते फिलास्फा।

६ मक़ूलाते आसमानी।

७ स्वतंत्र विचार के सूफ़ी। इनका अन्य सूफ़ियों से साधारणतया विरोध रहा करता था।

८ कारिंदा या लिपिक।

वार्त्ता करता और भाषण देता तो श्रोताओं को कोई कष्ट तथा थकावट न होती। जितनी ही अधिक वह बातें करता उतनी ही सुनने वालो की इच्छा प्रबल हो जाती थी। पत्र व्यवहार तथा लिखने में सुल्तान मुहम्मद बडे-बडे योग्य दबीरो (लेखको) को चकित कर देता था। सुलेख तथा सुन्दर रचनाओ एव विचित्र शैली तथा भाव व्यजन में बडे-बडे लेखक तथा रचना में नवीनता उत्पन्न करने वाले गुरु उसका सामना न कर सकते थे। विचित्र बातें निकालने तथा रूपक के प्रयोग में वह अद्वितीय था। यदि बडे-बडे लेखक उसके समान लिखने का प्रयास करते तो सफल न होते। उसे बहुत बडी सख्या में फारसी कवितायें कठस्थ थी और वह अपने लेखों में उनका उचित प्रयोग करता था। वह प्राय स्वय कविता करता था। सिकन्दर नामे[1] का बहुत बडा भाग उसे कठस्थ था। अबूमुस्लिम[2] नामा तथा तारीखे महमूदी[3] उसे कठस्थ थी अन्य बातों के अतिरिक्त सुल्तान मुहम्मद की स्मरण-शक्ति भी विचित्र थी। जो कुछ उसने सुना था वह उसे याद था। तिब (चिकित्सा) में उसे बडा अनुभव प्राप्त था। (४६४) वह नाना प्रकार के रोगो की चिकित्सा बडे अच्छे ढग से कर सकता था। वह बहुत से रोगियों की चिकित्सा किया करता था। तबीबो (चिकित्सको) से बडी योग्यता से वाद विवाद करता था और उनकी त्रुटियाँ उन्हे बताया करता था।

दर्शन-शास्त्र के ज्ञान में भी उसे विशेष रुचि थी। उसने इस ज्ञान की भी कुछ[4] जानकारी प्राप्त की था। यह ज्ञान उसके हृदय में ऐसा आरूढ हो गया था कि वह न्याय-सिद्ध बातों के अतिरिक्त जो कुछ भी सुनता उस पर विश्वास न करता था। किसी भी विद्वान, आलिम, कवि दबीर (सचिव), नदीम (मुसाहिब) तथा तबीब (चिकित्सक) को इतना साहस न हो सकता था कि वह सुल्तान मुहम्मद की एकान्त की गोष्ठियो में अपने ज्ञान के विषय में कोई वार्त्ता कर सकता अथवा अपनी योग्यता तथा अपने ज्ञान के अनुसार सुल्तान मुहम्मद को उसके असख्य प्रश्नो के समक्ष कोई बात समझा सकता। सुल्तान मुहम्मद को वीरता तथा पौरुष अपने पूर्वजों द्वारा प्राप्त हुआ था तथा जो कुछ उसने स्वय सीखा था, उनमें वह अद्वितीय था। बाण तथा भाला चलाने, गेंद खेलने, घोडा दौडाने तथा शिकार खेलने में उसके समान कोई शहसवार करनो अथवा युगों से न देखा गया होगा। उसमें अत्यधिक योग्यता तथा बुद्धि पाई जाती थी। वह बडा ही रूपवान तथा सजधज वाला व्यक्ति था। इसी कारण उसका सभी सम्मान करते थे। वीरता तथा (सैनिको की) पक्तियों का विनाश करने में वह इतना निपुण था कि वह अकेले ही पूरी सेना पर आक्रमण करके उसका विनाश कर सकता था। सुल्तान मुहम्मद उसके पिता तथा चाचा वीरता में हिन्दुस्तान एव खुरासान में आदर्श समझे जाते थे। यदि सुल्तान मुहम्मद बिन (पुत्र) तुगलुक शाह दान

१ निजामी गजवी (मृत्यु १२०० ई०) की प्रसिद्ध कविता जो उसने १२०० ई० में समाप्त की। यह उसकी अन्तिम कविता थी। यह उसकी विख्यात पाँच कविताओं (खम्से) के सग्रह की अन्तिम कविता है।

२ अबूमुस्लिम एक बहुत बड़ा सैनिक तथा प्रचारक था। अब्बासी खलीफाओं का राज्य उसी के द्वारा स्थापित हुआ। ७५८ ई० मे उसकी हत्या करा दी गई। "शाहनामे, अबूमुस्लिम तथा अमीर हमजा की कहानियाँ उमे कठस्थ थीं।" (तारीखे फिरिश्ता भाग १, पृ० १३३)

३ इस इतिहास के लेखक का नाम ज्ञात नहीं। सम्भवतया यह सुल्तान महमूद गजनवी का इतिहास होगा।

४ इस शब्द का प्रयोग बरनी ने सम्भवतया व्यंग के रूप में किया है। उसने लिखा है "चीजे अज इल्मे माकूल खुन्दा बूद"। रामपुर की हस्तलिखित पोथी में इस सम्बन्ध मे इस प्रकार लिखा है "वह इल्मेमाकूल पर (दर्शन शास्त्र) वाद विवाद करता था और दार्शनिकों में दोष निकालता था।" (पृ० २८२)

(कविता)

यदि तू राज्य में आगे बढ़ता है तो तू एक बादशाह है।
यदि तू पीछे रहता है तो संसार की रक्षा करता है।
यदि तू दाहिनी ओर मुड़ता है तो तू प्राणों की रक्षा करता है,
यदि तू बाईं ओर मुड़ता है तो वृद्धावस्था का आधार बन जाता है।

ईश्वर ने, जोकि बादशाहों का बादशाह तथा राज्यों का स्वामी है, सुल्तान मुहम्मद को २७ वर्ष तक जोकि एक क़रन होता है, अनेक राज्यों पर राज्य करने के योग्य बनाया। हिन्दुस्तान के प्रान्तों गुजरात, मालवा, मरहट, तिलंग, कम्पिला और समुन्दर (द्वार समुद्र) माबर, लखनौती, सत गाँव, सुनार गाँव तथा तिरहुट[1] के निवासियों को उसका अधीन तथा आज्ञाकारी बनाया। यदि मैं उसके राज्यकाल के प्रत्येक वर्ष का हाल लिखूं और जो युद्ध उस वर्ष (४६८) में हुआ उसका सविस्तार उल्लेख करूं तो कई ग्रन्थ हो जायेंगे। मैंने इस इतिहास में सुल्तान मुहम्मद की राज्य व्यवस्था तथा शासन-सम्बन्धी समस्त कार्यों का संक्षिप्त उल्लेख किया है। प्रत्येक विजय के आगे पीछे घटने तथा प्रत्येक हाल और घटना के प्रथम या अन्त में घटने पर कोई ध्यान नहीं दिया है क्योंकि बुद्धिमानों को शासन नीति एवं राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी कार्यों के अध्ययन से शिक्षा प्राप्त होती है। असावधान तथा अचेत लोगों को प्राचीन लोगों के अच्छे बुरे हाल की जानकारी से कोई रुचि नहीं होती। वे इतिहास की, जोकि समस्त ज्ञानों से उत्कृष्ट तथा लाभदायक है, कोई जानकारी नहीं रखते। यदि वे अबूमुस्लिम के किस्सों के ग्रन्थों का बराबर अध्ययन किया करें तो भी बुद्धि तथा समझ के अभाव के कारण उन्हें इससे कोई लाभ नहीं हो सकता और वे उस असावधानी से मुक्त नहीं हो सकते जो उनमें जन्म ही से विद्यमान है।

इक़लीमों के शासन-प्रबन्ध का उल्लेख जोकि सुल्तान मुहम्मद द्वारा राजसिंहासन पर आरूढ़ होने के उपरान्त सम्पन्न हुआ।

ख़राज की वसूली—

उन इकलीमों का ख़राज देहली के प्रदेशों के ख़राज के समान कूश्के (महल) हज़ार सुतून[2] में निश्चित हुआ। इन इक्लीमों के वज़ीर, वाली तथा मुतसर्रिफ़ अपने आय-व्यय का लेखा[3] देहली के दीवाने विज़ारत में भेजा करते थे। सुल्तान मुहम्मद के सिंहासनारोहण के कुछ प्रारम्भिक वर्षों में देहली, गुजरात, मालवा, देवगिरि, तिलंग, कम्पिला, और समुद्र (द्वार समुद्र) माबर, तिरहुत, लखनौती, सत गाँव तथा सुनार गाँव का ख़राज इस प्रकार सुव्यवस्थित हो गया था कि उपर्युक्त इक्लीमों तथा प्रान्तों का लेखा[4] दूरी के बावजूद देहली के दीवाने विज़ारत में इस प्रकार जाँचा जाता था जिस प्रकार दुआब के क़स्बों तथा ग्रामों का लेखा। जिस प्रकार लेखा प्राप्त होने तथा हिसाब की जाँच के उपरान्त, हवाली[5] की अक्ता के कारकुनों तथा मुतसर्रिफ़ों से शेष धन, अक्ता का फ़वाज़िल[6] (वसूल कर लिया जाता था)

1 यह सूची पूरी नहीं। सुल्तान के प्रांतों की सूची मसालेकुल-अबसार में देखिये।
2 इस महल का सविस्तार उल्लेख इब्ने बतूता ने किया है।
3 मुजमेलाते जमा व ख़र्च।
4 मुजमेलात।
5 देहली के आसपास।
6 अक्ता के व्यय से बचा हुआ धन।

(४६६) व्यतीत न होता था जबकि अनेक मुसलमानों की हत्या न कराई जाती हो और उसके महल के द्वार के समक्ष रक्त की नदी न बहती हो। माकूलात सम्बन्धी ज्ञानो की कठोरता तथा मनकूलात सम्बन्धी ज्ञानो के अभाव के कारण ही वह मुसलमानो का रक्तपात किया करता था। जो कुछ भी सुल्तान मुहम्मद के हृदय में आता उसके विषय में वह सर्वसाधारण को आदेश दे देता और उनसे यह आशा की जाती थी कि वे उसके आदेशो का पालन करेंगे किन्तु वास्तव में वे लोग, जो उन्हे कार्यान्वित कराने के लिये नियुक्त होते थे, पूर्णतया लोगो को उन बातों को समझा न सकते थे, और इस प्रकार वे उसे कार्यान्वित न करा पाते थे। सुल्तान इसे अपने अधीनों की अवज्ञा, शत्रुता तथा विरोध का कारण समझता था।

इस प्रकार सहस्रो मनुष्य अवज्ञा तथा शत्रुता के सन्देह से, और इस विचार से कि वे सुल्तान का बुरा चाहते हैं तथा उसके हितैषी नही हैं, कष्ट में पड जाते थे। उसे अपनी प्रत्येक नई योजना को कार्यान्वित करानें के लिये अन्य योजनाओ के बनाने की आवश्यकता पडती रहती थी और इस प्रकार उसे समस्त योजनाओ पर आचरण करान के लिये जोर देना पडता था, और सर्वसाधारण की हत्या होती रहती थी।

हम जैसे कुछ कृतघ्न भी, जो थोडा बहुत पढे लिखे थे[1] और उन विद्याओ को समझते थे जिनसे मनुष्य को यश प्राप्त होता है ससार के लोभ तथा लालच में पाखडपन करते थे और सुल्तान के विश्वासपात्र होकर शरा के विरुद्ध हत्याकाड के सम्बन्ध में सत्य बात सुल्तान के समक्ष न कहते थे। प्राणों के भय से, जोकि नश्वर है तथा धन-सम्पत्ति के लिये जो पतनशील हैं, आतंकित रहते थे और तन्के, जीतल तथा उसका विश्वास-पात्र बनने के लोभ में धर्म के आदेशों के विरुद्ध उसके आदेशो की सहायता करते थे, अप्रमाणित रवायतें[2] पढा करते थे। उनमें से दूसरो का तो मुझे कोई ज्ञान नही, किन्तु मैं देख रहा हू कि मेरे ऊपर क्या बीत रही है। मैं जो कुछ कह चुका तथा कर चुका हू उसका बदला मुझे इस वृद्धावस्था में इस प्रकार मिल रहा है कि मैं ससार में लज्जित, अपमानित तथा पतित हो चुका हू। न मेरा कोई मूल्य ही है और न मुझ पर कोई विश्वास ही करता है। (४६७) मैं दर-दर की ठोकरें खाता हू और अपमानित होता रहता हू। मै नही समझता कि कयामत में मेरी क्या दुर्दशा होगी और मुझे कौन-कौन से कष्ट भोगने पडेंगे।

उपर्युक्त चर्चा का उद्देश्य यह है कि ससार में सुल्तान मुहम्मद ने मुझे आश्रय प्रदान किया था और वह मेरा पोषक था। उसके द्वारा जो इनाम-इकराम प्राप्त हो चुका है, न इससे पूर्व ही मैंने देखा है और न इसके उपरान्त मै स्वप्न ही में देखूगा। यदि सुल्तान मुहम्मद में कुछ बातें, जैसे मुसल्मानो का हत्याकाण्ड जिसके कारण उसके राज्य का पतन हो गया, तथा सभी लोग उससे घृणा करने लगे, न होती और माकूलात सम्बन्धी ज्ञानो में उसका विश्वास न होता, मनकूलात के ज्ञान में शून्य न होता और वह अत्यधिक विचित्र आदेश न देता तथा क्रोध, कोप एव कठोरता उसमें न होती, तो मैं यह लिखता कि सुल्तान मुहम्मद के समान किसी बादशाह का इस समय तक जन्म नही हो सका है और आदम[3] से लेकर इस समय तक ऐसा कोई सुल्तान राजसिंहासन पर आरूढ नही हुआ है। सुल्तान मुहम्मद उन अद्वितीय व्यक्तियों में था जिनके विषय में यह कविता लिखनी उचित है।

---

१ सियाह सफेद पढ़े थे।

२ मुहम्मद साहब तथा उनके अनुयायियों के कथन।

३ मुसलमानों के धर्मशास्त्रों के अनुसार प्रथम मनुष्य जिसे ईश्वर ने अपने आदेश से उत्पन्न किया।

(कविता)

यदि तू राज्य में आगे बढ़ता है तो तू एक बादशाह है।
यदि तू पीछे रहता है तो ससार की रक्षा करता है।
यदि तू दाहिनी ओर मुड़ता है तो तू प्राणों की रक्षा करता है,
यदि तु बाईं ओर मुड़ता है तो वृद्धावस्था का आधार बन जाता है।

ईश्वर ने, जोकि बादशाहो का बादशाह तथा राज्यो का स्वामी है, सुल्तान मुहम्मद को २७ वर्ष तक जोकि एक करन होता है, अनेक राज्यो पर राज्य करने के योग्य बनाया। हिन्दुस्तान के प्रातों गुजरात, मालवा, मरहट, तिलग, कम्पिला और समुन्दर (द्वार समुद्र) माबर, लखनौती, सत गाँव, सुनार गाँव तथा तिरहुट[१] के निवासियो को उसका अधीन तथा आज्ञाकारी बनाया। यदि मैं उसके राज्यकाल के प्रत्येक वर्ष का हाल लिखूँ और जो कुछ उस वर्ष (४६८) में हुआ उसका सविस्तार उल्लेख करूँ तो कई ग्रन्थ हो जायेंगे। मैंने इस इतिहास में सुल्तान मुहम्मद की राज्य व्यवस्था तथा शासन-सम्बन्धी समस्त कार्यों का सक्षिप्त उल्लेख किया है। प्रत्येक विजय के आगे पीछे घटने तथा प्रत्येक हाल और घटना के प्रथम या अन्त में घटने पर कोई ध्यान नही दिया है क्योंकि बुद्धिमानों को शासन नीति एव राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी कार्यों के अध्ययन से शिक्षा प्राप्त होती है। असावधान तथा अचेत लोगों को प्राचीन लोगो के अच्छे बुरे हाल की जानकारी से कोई रुचि नही होती। वे इतिहास को, जोकि समस्त ज्ञानों से उत्कृष्ट तथा लाभदायक है, कोई जानकारी नही रखते। यदि वे अबूमुस्लिम के किस्से के ग्रन्थों का बराबर अध्ययन किया करें तो भी बुद्धि तथा समझ के अभाव के कारण उन्हें इससे कोई लाभ नहीं हो सकता और वे उस असावधानी से मुक्त नही हो सकते जो उनमें जन्म ही से विद्यमान है।

इक़लीमो के शासन-प्रबन्ध का उल्लेख जोकि सुल्तान मुहम्मद द्वारा राजसिंहासन पर आरूढ़ होने के उपरान्त सम्पन्न हुआ।

खराज की वसूली—

उन इक़लीमो का खराज देहली के प्रदेशो के खराज के समान कूश्के (महल) हज़ार सुतून[२] में निश्चित हुआ। इन इक़लीमो के वज़ीर, वाली तथा मुतसर्रिफ अपने आय-व्यय का लेखा[३] देहली के दीवाने विज़ारत में भेजा करते थे। सुल्तान मुहम्मद के सिंहासनारोहण के कुछ प्रारम्भिक वर्षों में देहली, गुजरात, मालवा, देवगिरि तिलग, कम्पिला, और समुद्र (द्वार समुद्र) माबर, तिरहुत, लखनौती, सत गाँव तथा सुनार गाँव का खराज इस प्रकार सुव्यवस्थित हो गया था कि उपर्युक्त इक़लीमो तथा प्रातो का लेखा[४] दूरी के बावजूद देहली के दीवाने विज़ारत में इस प्रकार जाँचा जाता था जिस प्रकार दुआब के कस्बों तथा ग्रामो का लेखा। जिस प्रकार लेखा प्राप्त होने तथा हिसाब की जाँच के उपरान्त, हवाली[५] की अक्ता के कारकुनो तथा मुतसर्रिफो से शेष धन, अक्ता का फवाज़िल[६] (वसूल कर लिया जाता था)

१ यह सूची पूरी नहीं। सुल्तान के प्रांतों की सूची मसालेकुल-अबसार में देखिये।
२ इस महल का सविस्तार उल्लेख इब्ने बत्तूता ने किया है।
३ मुजमेलाते जमा व खर्च।
४ मुजमेलात।
५ देहली के आसपास।
६ अक्ता के व्यय से बचा हुआ धन।

(४६६) व्यतीत न होता था जबकि अनेक मुसलमानों की हत्या न कराई जाती हो और उसके महल के द्वार के समक्ष रक्त की नदी न बहती हो। माकूलात सम्बन्धी ज्ञानों की कठोरता तथा मनकूलात सम्बन्धी ज्ञानों के अभाव के कारण ही वह मुसलमानों का रक्तपात किया करता था। जो कुछ भी सुल्तान मुहम्मद के हृदय में आता उसके विषय में वह सर्वसाधारण को आदेश दे देता और उनसे यह आशा की जाती थी कि वे उसके आदेशों का पालन करेंगे किन्तु वास्तव में वे लोग, जो उन्हें कार्यान्वित कराने के लिये नियुक्त होते थे, पूर्णतया लोगों को उन बातों को समझा न सकते थे, और इस प्रकार वे उसे कार्यान्वित न करा पाते थे। सुल्तान इसे अपने अधीनों की अवज्ञा, शत्रुता तथा विरोध का कारण समझता था।

इस प्रकार सहस्रों मनुष्य अवज्ञा तथा शत्रुता के सन्देह से, और इस विचार से कि वे सुल्तान का बुरा चाहते हैं तथा उसके हितैषी नहीं हैं, कष्ट में पड़ जाते थे। उसे अपनी प्रत्येक नई योजना को कार्यान्वित कराने के लिये अन्य योजनाओं के बनाने की आवश्यकता पड़ती रहती थी और इस प्रकार उसे समस्त योजनाओं पर आचरण कराने के लिये ज़ोर देना पड़ता था; और सर्वसाधारण की हत्या होती रहती थी।

हम जैसे कुछ कृतघ्न भी, जो थोड़ा बहुत पढ़े लिखे थे[1] और उन विद्याओं को समझते थे जिनसे मनुष्य को यश प्राप्त होता है संसार के लोभ तथा लालच में पाखण्डपन करते थे और सुल्तान के विश्वासपात्र होकर शरा के विरुद्ध हत्याकाण्ड के सम्बन्ध में सत्य बात सुल्तान के समक्ष न कहते थे। प्राणों के भय से, जोकि नश्वर है तथा धन-सम्पत्ति के लिये जो पतनशील हैं, आतंकित रहते थे और तन्के, जीतल तथा उसका विश्वास-पात्र बनने के लोभ में धर्म के आदेशों के विरुद्ध उसके आदेशों की सहायता करते थे, अप्रमाणित रवायतें[2] पढ़ा करते थे। उनमें से दूसरों का तो मुझे कोई ज्ञान नहीं, किन्तु मैं देख रहा हूं कि मेरे ऊपर क्या बीत रही है। मैं जो कुछ कह चुका तथा कर चुका हूं उसका बदला मुझे इस वृद्धावस्था में इस प्रकार मिल रहा है कि मैं संसार में लज्जित, अपमानित तथा पतित हो चुका हूं। न मेरा कोई मूल्य ही है और न मुझ पर कोई विश्वास ही करता है। (४६७) मैं दर-दर की ठोकरें खाता हूं और अपमानित होता रहता हूं। मैं नहीं समझता कि क़यामत में मेरी क्या दुर्दशा होगी और मुझे कौन-कौन से कष्ट भोगने पड़ेंगे।

उपर्युक्त चर्चा का उद्देश्य यह है कि संसार में सुल्तान मुहम्मद ने मुझे आश्रय प्रदान किया था और वह मेरा पोषक था। उसके द्वारा जो इनाम-इकराम प्राप्त हो चुका है, न इससे पूर्व ही मैंने देखा है और न इसके उपरान्त मैं स्वप्न ही में देखूंगा। यदि सुल्तान मुहम्मद में कुछ बातें, जैसे मुसलमानों का हत्याकाण्ड जिसके कारण उसके राज्य का पतन हो गया, तथा सभी लोग उससे घृणा करने लगे, न होतीं और माकूलात सम्बन्धी ज्ञानों में उसका विश्वास न होता, मनकूलात के ज्ञान में शून्य न होता और वह अत्यधिक विचित्र आदेश न देता तथा क्रोध, कोप एवं कठोरता उसमें न होती, तो मैं यह लिखता कि सुल्तान मुहम्मद के समान किसी बादशाह का इस समय तक जन्म नहीं हो सका है और आदम[3] से लेकर इस समय तक ऐसा कोई सुल्तान राजसिंहासन पर आरूढ़ नहीं हुआ है। सुल्तान मुहम्मद उन अद्वितीय व्यक्तियों में था जिनके विषय में यह कविता लिखनी उचित है।

---

१ सियाह सफ़ेद पढ़े थे।

२ मुहम्मद साहब तथा उनके अनुयायियों के कथन।

३ मुसलमानों के धर्मशास्त्रों के अनुसार प्रथम मनुष्य जिसे ईश्वर ने अपने आदेश से उत्पन्न किया।

(कविता)

यदि तू राज्य में आगे बढ़ता है तो तू एक बादशाह है।
यदि तू पीछे रहता है तो ससार की रक्षा करता है।
यदि तू दाहिनी ओर मुड़ता है तो तू प्राणों की रक्षा करता है,
यदि तु बाईं ओर मुड़ता है तो वृद्धावस्था का आधार बन जाता है।

ईश्वर ने, जोकि बादशाहो का बादशाह तथा राज्यो का स्वामी है, सुल्तान मुहम्मद को २७ वर्ष तक जोकि एक करन होता है, अनेक राज्यो पर राज्य करने के योग्य बनाया। हिन्दुस्तान के प्रांतो गुजरात, मालवा, मरहट, तिलग, कम्पिला और समुनदर (द्वार समुद्र) माबर, लखनौती, सत गाँव, सुनार गाँव तथा तिरहुट[१] के निवासियो को उसका अधीन तथा आज्ञाकारी बनाया। यदि मैं उसके राज्यकाल के प्रत्येक वर्ष का हाल लिखूं और जो कुछ उस वर्ष (४६८) में हुआ उसका सविस्तार उल्लेख करूँ तो कई ग्रन्थ हो जायेंगे। मैने इस इतिहास में सुल्तान मुहम्मद की राज्य व्यवस्था तथा शासन-सम्बन्धी समस्त कार्यों का सक्षिप्त उल्लेख किया है। प्रत्येक विजय के आगे पीछे घटने तथा प्रत्येक हाल और घटना के प्रथम या अन्त में घटने पर कोई ध्यान नही दिया है क्योकि बुद्धिमानों को शासन नीति एव राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी कार्यों के अध्ययन से शिक्षा प्राप्त होती है। असावधान तथा अचेत लोगो को प्राचीन लोगों के अच्छे बुरे हाल की जानकारी से कोई रुचि नही होती। वे इतिहास की, जोकि समस्त ज्ञानो से उत्कृष्ट तथा लाभदायक है, कोई जानकारी नही रखते। यदि वे अबूमुस्लिम के किस्सों के ग्रन्थो का बराबर अध्ययन किया करें तो भी बुद्धि तथा समझ के अभाव के कारण उन्हे इससे कोई लाभ नही हो सकता और वे उस असावधानी से मुक्त नही हो सकते जो उनमें जन्म ही से विद्यमान है।

इकलीमों के शासन-प्रबन्ध का उल्लेख जोकि सुल्तान मुहम्मद द्वारा राजसिंहासन पर आरूढ़ होने के उपरान्त सम्पन्न हुआ।

खराज की वसूली—

उन इकलीमो का खराज देहली के प्रदेशो के खराज के समान कूश्के (महल) हजार सुतून[२] में निश्चित हुआ। इन इकलीमों के वजीर, वाली तथा मुतसर्रिफ अपने आय-व्यय का लेखा[३] देहली के दीवाने विजारत में भेजा करते थे। सुल्तान मुहम्मद के सिंहासनारोहण के कुछ प्रारम्भिक वर्षों में देहली, गुजरात, मालवा, देवगिरि तिलग, कम्पिला, धोर समुद (द्वार समुद) माबर, तिरहुत, लखनौती, सत गाँव तथा सुनार गाँव का खराज इस प्रकार सुव्यवस्थित हो गया था कि उपर्युक्त इकलीमों तथा प्रातो का लेखा[४] दूरी के बावजूद देहली के दीवाने विजारत में इस प्रकार जाँचा जाता था जिस प्रकार दुआब के कस्बों तथा ग्रामो का लेखा। जिस प्रकार लेखा प्राप्त होने तथा हिसाब की जाँच के उपरान्त, हवाली[५] की अक्ता के कारकुनों तथा मुतसर्रिफो से शेष धन, अक्ता का फवाजिल[६] (वसूल कर लिया जाता था)

१ यह सूची पूरी नहीं। सुल्तान के प्रांतों की सूची मसालेकुल-अबसार में देखिये।
२ इस महल का सविस्तार उल्लेख इब्ने बतूता ने किया है।
३ मुजमेलाते जमा व खर्च।
४ मुजमेलात।
५ देहली के आसपास।
६ अक्ता के व्यय से बचा हुआ धन।

और कारकुनो की सच्चाई की जांच होती थी तथा एक दाँग अथवा दिरहम की भूल नही (४६६) होती थी, उसी प्रकार इकलीमो तथा दूर के प्रदेशो के नायबो, वालियो, मुतसर्रिफो एव कारकुनो से, इकलीमों के अत्यधिक सुव्यवस्थित होने के फलस्वरूप हिसाब किताब किया जाता और उनसे मुतालबा[1] लिया जाता था। दूर के प्रदेशो तथा विलायतो के दूर होने के कारण उन्हे छोड न दिया जाता था।[2]

मुहम्मद शाह के राज्य के उन थोडे से वर्षों में बडी विचित्र सुव्यवस्था एव अनुशासन दृष्टिगत हुआ था। अनेक स्थानो पर निरन्तर विजय प्राप्त हुई। जिस स्थान पर भी विजय प्राप्त होती थी वहाँ वाली, नायब तथा आमिल नियुक्त हो जाते थे और सभी सुव्यवस्थित हो जाते थे। इकलीम तथा निकट एव दूर के प्रदेश किसी भी राज्यकाल में तथा किसी भी सुल्तान के समय इस प्रकार सुव्यवस्थित न हुये थे। धन, खराज उपहार तथा भेट के रूप में जितना धन उन वर्षों में देहली में प्राप्त हुआ था, उतना खराज किसी भी राज्यकाल में न प्राप्त हुआ था। दूर-दूर की इकलीमें इतनी सुव्यवस्थित हो गई थी कि इतने प्रदेशो में, जिनकी सीमायें एक दूसरे से मिली हुई थी, कोई भी विद्रोही मुकद्दम, विरोधी खूत तथा खराज न अदा करने वाला ग्राम शेष न रह गया था। उन इकलीमो तथा प्रदेशो का शेष कर तथा (वर्तमान) खराज, दुआब के कस्बो तथा ग्रामो के समान कारकुनो तथा मुतसर्रिफों से बडी कठोरता से वसूल कर लिया जाता था।

सुल्तान मुहम्मद के दरबार में अत्यधिक मलिकों, अमीरो तथा देहली के प्रतिष्ठित एव गण्य-मान्य व्यक्तियो, आस पास के प्रतिष्ठित लोगों एव मुतसर्रिफो, अत्यधिक लाव लश्कर, भिन्न भिन्न समूहो के लोगों, रायो, उनकी सन्तानों तथा प्रत्येक स्थान के मुकद्दमों की दासता के कारण बडी विचित्र रौनक़ पैदा हो गई थी। देहली में उस प्रकार की रौनक तथा आदमियों की इतनी भीड भूतकाल में कभी न देखी गई थी। अत्यधिक धन-सम्पत्ति उपहार, तुहफे, सामान, पशु आदि भेट में चारो ओर की इकलीमो से बराबर पहुँचते रहते थे। देहली के आस पास के स्थानो का खराज बहुत अधिक तथा सुव्यवस्थित हो गया था और वह बराबर (४७०) खजाने में पहुँचता रहता था। सुल्तान मुहम्मद, महमूद तथा सन्जर के समान जो कुछ व्यय करना चाहता था, वह उस धन सम्पत्ति के कारण पर्याप्त होता था।

सुल्तान मुहम्मद शाह राज्य की आय में से जो कुछ व्यय करता था उससे देहली के प्राचीन खजाने को कोई हानि न पहुँचती थी। यदि मैं इसका सविस्तार उल्लेख करूँ कि किस प्रकार कोई दूर की इक्लीम विजय हुई, किस प्रकार सुव्यवस्थित हुई, किन लोगों ने

---

१ जो कुछ अदा करना हो।

२ राजसिंहासन की ओर से मुहस्सिल (कर वसूल करने वाले) नियुक्त होते थे और उसके आदेशानुसार शेष कर वसूल करते थे। यदि बुद्धिमान लोग इस विषय पर सोच विचार करें और पता लगायें कि किस प्रकार जहाँगीरी तथा जहाँबानी (दिग्विजय एव राज्य-व्यवस्था) का सचालन होता था जिससे कि इतनी दूर-दूर की इकलीमें जो देहली से सहस्रों कोस पर स्थित थीं उसके अधिकार में आ गईं थीं तथा सुव्यवस्थित हो गईं थीं, और वे देहली के मीनारे के पास के स्थानों के समान प्रतीत होती थीं, तो वे *आश्चर्यचकित रह जायेंगे। (उन्हें आश्चर्य होगा)* कि कितनी सेना द्वारा, ये विलायतें, (प्रदेश) तथा आमिल सुव्यवस्थित होते होंगे और आज्ञाकारी बने रहते होंगे। किस प्रकार पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण तक इतनी सुव्यवस्था रहती होगी। किस प्रकार का आतंक, भय तथा प्रभाव होगा कि उसके आतंक तथा भय एवं उसकी बुद्धि के आविष्कारों द्वारा तथा अधिनियमों के बनाने की योजना से समस्त संसार का आधा भाग सुव्यवस्थित था। (तारीखे फ़ीरोजशाही, रामपुर पोथी, पृ० २८५)

उसे सुव्यवस्थित किया, किस प्रकार धन-सम्पत्ति तथा खज़ाना शहर (देहली) में पहुँचता था, और किस प्रकार सुल्तान मुहम्मद उन्हें दानपुण्य में व्यय करता था तो यह हाल बडा विस्तृत हो जायगा और इसमे मेरे उद्देश्य की पूर्ति न हो सकेगी।

सुल्तान की महत्त्वाकांक्षायें तथा नये आदेश—

मैं ने सुल्तान के गुणों में से केवल थोडी सी उन बातों का उल्लेख किया है जोकि उसके उच्च साहस, ससार को विजय करने की इच्छा, समस्त ससार पर अधिकार प्राप्त करने की महत्त्वाकांक्षा से सम्बन्धित थी तथा मैंने यह उल्लेख किया है कि किस प्रकार सुल्तान मुहम्मद युवावस्था ही से ऐसी बातें करने का प्रयास किया करता था जिनका होना सम्भव नही। इस प्रकार की महत्त्वाकांक्षाओं तथा दूर एव निकट के स्थानों पर अधिकार जमाने और विजय किये हुये देशो को सुव्यवस्थित रखने की अभिलाषा का परिणाम यह था कि वह नये-नये आदेश निकाला करता था। दीवाने खरीतादार[1] में, जिसका नाम दीवाने तलबे अहक़ामे तौकी पड गया था, प्रतिदिन शाही तौकी[2] से १००, २०० नये आदेश प्राप्त हो जाते थे। उन नये आदेशो के अनुसार इकलीमो तथा निकट और दूर के वालियो, मुक्तो तथा मुतसर्रिफों को, उन्हे कार्यान्वित कराने के लिये विवश किया जाता था। इसमें असमर्थ रहने तथा देर करने के कारण पदाधिकारियो को कठोर दण्ड दिये जाते थे और उनका स्थानान्तरण कर दिया जाता था। चूकि वाली तथा मुक्तों को नये आदेशो का पालन कराना, जो कल्पना पर निर्भर थे और जोकि शाही तौकी द्वारा चालू किये जाते थे, असम्भव ज्ञात होता था, अत उससे सर्वसाधारण में घृणा उत्पन्न हो जाती थी। यदि वे इकलीमो तथा प्रदेशो में उन आदेशों का प्रचार करते तथा उन्हें कार्यान्वित कराते तो लोग उसे न कर पाते और विरोध प्रारम्भ कर देते थे। शासन-व्यवस्था में विघ्न पड जाता तथा सुव्यवस्थित अवस्था में गडबडी (४७१) पैदा हो जाती। इन नये आदेशो के अतिरिक्त[3] ३ या ४ योजनायें सुल्तान मुहम्मद के मस्तिष्क में घूमा करती थी। सुल्तान को यह आशा थी कि उनकी पूर्ति द्वारा समस्त ससार उसके दासो के अधीन हो जायगा। सुल्तान ने इन योजनाओ की पूर्ति तथा उनको कार्यान्वित कराने हेतु अपने किसी परामर्शदाता, मित्र अथवा हितैषी से परामर्श न किया और जो कुछ भी उसके हृदय में आया उसे उसने पूर्णतया उचित समझ लिया। उन पर आचरण करने तथा उनके प्रचार से उसका सुव्यवस्थित राज्य उसके हाथ से निकल गया और समस्त लोग उससे घृणा करने लगे। राजकोष रिक्त हो गया और अशान्ति पर अशान्ति तथा अव्यवस्था पर अव्यवस्था पैदा होती गई। सर्वसाधारण की घृणा के फलस्वरूप विद्रोह तथा षड्यन्त्र होने लगे। जैसे-जैसे सुल्तान अपनी नवीन आविष्कृत योजनाओ का पालन कराने के लिये बहुत बडी सख्या में आदेश निकाला करता वैसे ही सर्वसाधारण अधिक सख्या में विद्रोह करने लगते। सुल्तान के मस्तिष्क में अपनी प्रजा के प्रति परिवर्तन होने लगा। अत्यधिक लोगो की हत्या कराई जाती थी। बहुत सी इकलीमो का खराज तथा दूर-दूर के प्रदेश उसके हाथ से निकल गये। उसका अत्यधिक लाव-लश्कर छिन्न-भिन्न हो गया। उन्हे दूर-दूर के प्रदेशो में नियुक्त करना पडता था। राजकोष में कमी हो गई। सुल्तान मुहम्मद का भी मस्तिष्क सतुलित न रहा। अपने स्वभाव की कठोरता तथा नाजुकी[4] के कारण सुल्तान मुहम्मद ने कठोर दण्ड देन प्रारम्भ

---

१ वह सुल्तान के पत्र आदि की रक्षा तथा लेखन सामग्री आदि का प्रबन्ध करता था। इब्ने बत्तूता ने उसे "साहिबुल कागज़ वल क़लम" लिखा है।

२ तौकी—(शाही आदर्श वाक्य) की मुहर से जो आदेश निकाले जाते थे, वे अहकामे तौकी कहलाते थे। अधिकारियों को आदेश, नियुक्ति पत्र आदि अहकामे तौकी द्वारा ही निकाले जाते थे।

३ शीघ्र रुष्ट होने के कारण।

कर दिये। देवगिरि तथा गुजरात के प्रदेशो के अतिरिक्त कोई स्थान तथा प्रदेश सुव्यवस्थित न रहा। राज्य के प्रदेशों विशेष कर राजधानी देहली में भी अत्यधिक विद्रोह तथा अशान्ति फैल गई। दुर्भाग्यवश तथा भगवान् की इच्छा से अन्य कल्पनायें सुल्तान मुहम्मद के हृदय में पैदा होने लगी किन्तु इनका पालन कई वर्षों तक न हो सका। प्रजा शाही योजनाओ को कार्यान्वित करने में असमर्थ थी। उन योजनाओ को कार्यान्वित कराने से सुल्तान के राज्य का पतन प्रारम्भ हो गया और प्रजा का विनाश होने लगा।

आदेशों का पालन न करने वालों को कठोर दण्ड—

(४७२) उपर्युक्त योजनाओं में से जिस योजना को भी कार्यान्वित कराया जाता उसके कारण राज्य में अशान्ति, गडबडी तथा अव्यवस्था पैदा हो जाती। विशेष तथा साधारण प्रजा के हृदय सुल्तान मुहम्मद से घृणा करने लगते। सुव्यवस्थित प्रदेश तथा स्थान भी हाथ से निकल जाते। सुल्तान मुहम्मद के हृदय में जो कुछ भी आता उसके अनुसार वह आदेश जारी करता किन्तु उनका पालन न हो पाता। सुल्तान और भी खिन्न होता तथा असन्तुष्ट होने के कारण वह प्रजा को खीरे, ककडी के समान कटवा डालता। अत्यधिक रक्तपात करता। अनेक दुष्ट, एकेश्वरवादियो, मुसलमानो तथा सुन्नियो की हत्या कराने के लिए उद्यत रहते थे। उनके समान दुष्ट, आदम से लेकर इस समय तक नही पैदा हो सके हैं। दुष्टता में हज्जाज बिन यूसुफ[1] की गणना उनके दासों तथा सेवको में भी नही हो सकती। जैनबन्दा-मुल्तसुलमुल्क, यूसुफ बुग़रा, सरदावतदार के पुत्र खलील, मुहम्मद नजीब, अभागा शाहज़ादा निहावन्दी, करनफल सय्याफ[2], दुष्ट ऐबा, मुबीर अबूरिजा—उस पर ईश्वर की लाखो लानतें हो—गुजरात के काजी का पुत्र अन्सारी, अभागे थानेश्वरी के तीनों पुत्रो के पास मुसलमानों की हत्या के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य न था। मैं भगवान् पर विश्वास करके कह सकता हूँ कि यदि जैनबन्दा, यूसुफ बुगरा तथा दुष्ट खलील को २० पैगम्बरों को भी हत्या करने के लिए कह दिया जाता तो वे रात भी व्यतीत न होने देते (और उनकी हत्या कर देते)। इस इतिहास का असहाय सकलन-कर्त्ता इसका उल्लेख किस प्रकार कर सकता है कि सुल्तान मुहम्मद जगत के प्राणियों में एक अद्भुत जीव था। रात दिन वह दुष्टो के विनाश का प्रयत्न किया करता था। वह दुष्टो की जिनकी सख्या हजारों से अधिक थी, उनकी दुष्टता के कारण हत्या कराया करता था किन्तु इसी के साथ-साथ उसने इन कुछ व्यक्तियों को जिनका उल्लेख हो चुका है और जो लोक तथा परलोक में अत्यन्त दुष्ट थे अपना विश्वासपात्र बना लिया था। ऐसे बादशाह का व्यक्तित्व प्राणियो में फिर किस प्रकार अद्भुत न होता।

सुल्तान की योजनायें

(१) दोआब के कर में वृद्धि—

(४७३) सुल्तान की पहली[3] योजना जिसके फलस्वरूप प्रजा का विनाश तथा राज्य में अशान्ति हुई यह थी कि सुल्तान मुहम्मद के हृदय में यह बात आई कि दोआब के मध्य की

---

१ पाँचवें उमय्या खलीफा, अब्दुल मलिक की ओर से अरब तथा इराक़ का शासक। कहा जाता है कि उसने १,२०,००० मनुष्यों की हत्या कराई और जब उसकी मृत्यु हुई तो उस समय उसके कारागार में ५०,००० बन्दी थे। उसकी मृत्यु ७१४ ई० में हुई।

२ तलवार चलाने वाला।

३ महदी हुसेन के अनुसार यह अन्तिम योजना थी (महदी हुसेन पृ० १३६-३७)

विलायत का खराज एक के स्थान पर दस और बीस लेना चाहिये[1]। सुल्तान की उपर्युक्त योजना के कार्यान्वित कराने में कुछ और भी कठोर अबवाब (अतिरिक्त कर) जारी कर दिये गये। कुछ नवीन कर भी लागू किये, जिनके फलस्वरूप प्रजा की कमर टूट गई[2]। उन अबवाबों को इस कठोरता से वसूल किया गया कि निस्सहाय तथा निर्धन प्रजा का पूर्णतया विनाश हो गया। धनी प्रजा, जिसके पास धन-सम्पत्ति थी, विद्रोही बन गई। विलायतो का विनाश हो गया। कृषि पूर्णतया नष्ट हो गई। दूर दूर की विलायतों की प्रजा को दोआब की प्रजा के विनाश के समाचार से यह भय हुआ कि कही उनसे भी उसी प्रकार का व्यवहार न किया जाय, जो दोआब वालो से किया गया। इस भय से उन्होने विद्रोह कर दिया और जगलो में घुस गये।

दोआब में कृषि की कमी, वहाँ की प्रजा के विनाश, व्यापारियो की कमी तथा हिन्दुस्तान[3] की अक्ताओं से अनाज के न पहुचने के कारण देहली तथा देहली के आस-पास एव दोआब में घोर अकाल पड गया। अनाज का भाव बढ गया। वर्षा न हुई। पूर्णतया दुर्भिक्ष पड गया। वह अकाल कई वर्ष तक चलता रहा। कई हज़ार मनुष्य इस अकाल में मर

---

१ "दर दिले सुल्तान मुहम्मद उफ्ताद कि खराजे विलायते दोआब यके ब देह व यके ब बिस्त मी बायद सितद'।" इस वाक्य में यके ब दह तथा यके ब बिस्त का अनुवाद १।१० तथा १।२० अथवा १०%, ५% हो गया। बरनी ने यके ब देह या कई स्थानों पर प्रयोग किया है और इसका अर्थ उन स्थानों पर दस गुना है। "शफक्ते व एहतेमामे कि सुल्तान रा दर बाबे औं पिसर बूद यके ब देह शुद" सुल्तान की जो कुछ भी कृपा तथा दया इस पुत्र के विषय में थी वह दस गुनी बढ़ गई (बरनी पृ० १०६, आदि तुर्क कालीन भारत पृ० २००)। "निर्खे शराब यके ब देह रसीद" मदिरा का भाव दस गुना चढ गया (बरनी पृ० १३०, आदि तुर्क कालीन भारत पृ० २१५)। इसी प्रकार बरनी ने 'यके ब सद' सौ गुने के अर्थ में प्रयोग किया है (बरनी पृ० ३०, ८४, १३८, आदि तुर्क कालीन भारत पृ० १४४, १८३, २२०)। इसी प्रकार बरनी ने 'यके ब चहार, शब्द का प्रयोग किया है और उसका अर्थ चौगुना है (बरनी पृ० ३८५, खलजी कालीन भारत पृ० १२७)। बरनी ने 'यके ब हजार' का भी प्रयोग किया है जिसका अर्थ हजार गुना है (बरनी पृ० ५६८)। सोने की मुद्रा के मूल्य मे वृद्धि का उल्लेख करते हुये भी बरनी ने "यके ब चहार व यके ब पज" का उल्लेख किया हैं, जिसका अर्थ चौगुना पचगुना है (बरनी पृ० ४७५)। प्रत्येक स्थान पर अतिशयोक्ति सूचक वाक्य ही है। किसी स्थान पर निश्चित सख्या का उल्लेख नहीं। इसी प्रकार इस स्थान पर भी किसी निश्चित वृद्धि का उल्लेख नहीं अपितु यह वाक्य अतिशयोक्ति के रूप मे ही प्रयोग हुये हैं। मोरलैंड का भी यही विचार है।

बदायूनी ने 'यके ब दह बिस्त' लिखा है जिसका अर्थ यह हुआ कि १० से २० के अनुपात में अर्थात् दुगुना हो गया (मुन्तखबुत्तवारीख भाग १, पृ० २३७)। होदीवाला का विचार है कि सम्भव है बरनी ने यक ब देह बिस्त लिखा हो और नकल करने वालों ने यके ब देह व यके ब बिस्त बना दिया हो (होदीवाला, Studies in Indo-Muslim History पृ० २६४)। तारीखे मुबारकशाही मे यके ब देह व यके ब बिस्त ही लिखा है (पृ० ११३)। इस प्रकार सम्भवतया आरम्भ ही में बरनी की पुस्तक नकल करने वालों से भूल हो गई और बाद में लोगों ने इसे भिन्न भिन्न प्रकार से लिखा और या यह अतिशयोक्ति का वाक्य हो। इसका साधारण अर्थ अत्यधिक वृद्धि भी हो सकता है। रामपुर की तारीखे फ़ीरोजशाही की हस्तलिखित पोथी में इस वाक्य का उल्लेख नहीं। दोआब के कर की वृद्धि के सम्बन्ध में जो उल्लेख हैं उसमे यही पता चलता है कि कर अत्यधिक बढ़ा दिया गया था (पृ० २८८)।

२ "व दर आमाले अन्देराये मजकूर सुल्तान दुरुस्त अबवाबे पैदा आवुरदन्द व माले वजा करदन्द कि कमरे रिआया बे शिकस्त।" इस स्थान पर बरनी ने अन्य करों का उल्लेख नहीं किया। बाद के इतिहासकारों ने उन करों के नाम भी लिखे हैं।

३ दोआब के पूर्व का भाग।

थे और घोडे अस्त्र-शस्त्र तथा नाना प्रकार की बहुमूल्य वस्तुयें खरीदते थे। हवाली (देहली के आसपास) के निवासी, मुक़द्दम तथा खूत ताबे की मुद्राओ द्वारा धन-धान्य सम्पन्न हो गये और राज्य में बडी अव्यवस्था हो गई। थोडे ही समय बाद दूर के स्थानो (देशो) के निवासी ताँबे के तन्के को ताँबे के भाव पर ही लेने लगे। जिन स्थानो पर सुल्तान का आतक छाया था वहाँ एक सोने का तन्का १०० ताँबे के (तन्के के) मूल्य पर लिया जाता था। प्रत्येक सुनार अपने घर में ताँबे की मुद्रा ढालने लगा। ताँबे की मुद्रा द्वारा खज़ाना भर गया। ताँबे की मुद्रा इतनी निर्मूल्य एव क्षुद्र हो गई कि वह कक्ड तथा ठिकरे के समान बन गई। प्राचीन मुद्राओ का मूल्य उनके अत्यधिक सम्मान के कारण चौगुना पच-गुना बढ गया। जब चारो ओर क्रय विक्रय में अव्यवस्था होने लगी और ताँबे के तन्को का मूल्य मिट्टी के ढेलो से भी कम हो गया और वह किसी काम के न रहे तो सुल्तान मुहम्मद (४७६) ने ताँबे के सिक्के क विषय में अपना आदेश रद्द कर दिया और अत्यधिक क्रोधावस्था में आदेश दिया कि जिस किसी के पास ताँबे का सिक्का हो उसे वह ख़ज़ाने में दाखिल करदे और उसके स्थान पर प्राचीन सोने की मुद्रा खज़ाने से ले जाय। भिन्न-भिन्न गरोहो के हज़ारो मनुष्य, जिनके पास हज़ारों ताँबे के सिक्के थे और जो उन सिक्कों से परेशान हो चुके थे और जिन्होने उन सिक्को को ताँबे के बर्तनो के पास अपने घरो के कोनो में फेंक दिया था, उन सिक्को को लेकर खज़ाने में पहुँच गये और उनके स्थान पर सोने चाँदी के तन्के, शशगानी तथा दोगानी ले लेकर अपने अपने घरो को वापस हो गये खज़ाने में ताँबे के सिक्के इतनी सख्या में पहुँच गये कि तुग़लुक़ाबाद में ताँबे के तन्को के ढेर पर्वत के समान लग गये। ताँबे के सिक्के के स्थान पर खज़ाने की धन सम्पत्ति निकल गई। खज़ाने में जो एक बहुत बडी अव्यवस्था हुई उसका कारण ताबे के तन्के थे। ताँबे के सिक्के चालू करने के आदेश अपितु ताबे के सिक्कों के कारण खज़ाने की बहुत बडी धन-सम्पत्ति नष्ट हो जाने पर सुल्तान का हृदय अपने राज्य के प्रदेशो की प्रजा से घृणा करने लगा[1]।

१ ७३० हि० से लेकर ७३२ हि० तक के ताँबे के सिक्के मिलते हैं। इस प्रकार यह योजना लगभग १३२९-३० से १३३१ ३२ ई० तक चली। इब्ने बत्तूता जो सिन्ध में १२ सितम्बर १३३३ ई० को पहुँचा, इस विषय पर कुछ नहीं लिखता। इससे यह निष्कर्ष निकालना कि लोग इस योजना को भूल चुके थे, कठिन है। सम्भव है कि इब्ने बत्तूता इसके विषय में लिखना भूल ही गया हो। सिक्कों के सम्बन्ध में परिशिष्ट "स" देखिये।

रामपुर की तारीखे फ़ीरोज़शाही की हस्तलिखित पोथी में इसका उल्लेख राजकोष के रिक्त होने के सम्बन्ध में किया गया है। "खज़ाने के खाली होने का तीसरा कारण यह था कि सुल्तान मुहम्मद को दान पुण्य तथा सेना के लिये अपार खज़ाने की आवश्यकता थी। खज़ाने में इतनी चाँदी, दिरहम तथा दीनार न रह गये थे जिससे शाही महत्वाकाक्षायें पूरी हो सकतीं; राज्य व्यवस्था हेतु योजनाओं के लिये पर्याप्त होता। सुल्तान ने वर्षों से सेवकों (मुजाविरों, तुज्जारान-व्यापारियों) से सुन रखा था कि चीन मे क्रय विक्रय तथा लोगों के लेन देन के लिये अचार (चाउ) का प्रयोग करते हैं। चाउ कागज़ का टुकडा होता है, जिस पर चीन के बादशाहों का नाम तथा उपाधि चित्रित रहती है। वहाँ के लोग उसे तन्का व जीतल तथा सोने और चाँदी के स्थान पर लेते देते हैं। सुल्तान मुहम्मद ने चाउ को सुनकर ताँबे के तन्के निकाले और यह समझा कि ये मेरे राज्य के प्रदेशों में जारी हो जायंगे तथा पूर्ण रूप से माने जायंगे। कोई इन तन्कों को मना न करेगा; जिस प्रकार चाउ चलता है उसी प्रकार ताँबे के तन्के चालू हो जायेंगे। तदनुसार टकसाल में ताँबे के तन्के ढलने लगे और ताँबे के तन्कों के ढेर लग गये। शहर, कस्बों तथा बड़े-बड़े ग्रामों में कुछ समय तक ताँबे

(शेष आगे के पृष्ठ पर)

विलायत का खराज एक के स्थान पर दस और बीस लेना चाहिये[1]। सुल्तान की उपर्युक्त योजना के कार्यान्वित कराने में कुछ और भी कठोर अबवाब (अतिरिक्त कर) जारी कर दिये गये। कुछ नवीन कर भी लागू किये, जिनके फलस्वरूप प्रजा की कमर टूट गई[2]। उन अबवाबो को इस कठोरता से वसूल किया गया कि निस्सहाय तथा निर्धन प्रजा का पूर्णतया विनाश हो गया। धनी प्रजा, जिसके पास धन-सम्पत्ति थी, विद्रोही बन गई। विलायतों का विनाश हो गया। कृषि पूर्णतया नष्ट हो गई। दूर दूर की विलायतो की प्रजा को दोग्राब की प्रजा के विनाश के समाचार से यह भय हुआ कि कही उनसे भी उसी प्रकार का व्यवहार न किया जाय, जो दोग्राब वालो से किया गया। इस भय से उन्होने विद्राह कर दिया और जगलो में घुस गये।

दोग्राब में कृषि की कमी, वहाँ की प्रजा के विनाश, व्यापारियो की कमी तथा हिन्दुस्तान[3] की अवताओ से अनाज के न पहुचने के कारण देहली तथा देहली के आस-पास एव दोग्राब में घोर अकाल पड गया। अनाज का भाव बढ गया। वर्षा न हुई। पूर्णतया दुर्भिक्ष पड गया। वह अकाल कई वर्ष तक चलता रहा। कई हजार मनुष्य इस अकाल में मर

---

१ "दर दिले सुल्तान मुहम्मद उफ्ताद कि खराजे विलायते दोग्राब यके व देह व यके ब बिस्त मी बायद सितद्।" इस वाक्य में यके ब दह तथा यके ब बिस्त का अनुवाद १। १० तथा १। २० अथवा १०%, ५% हो गया। बरनी ने यके ब देह का कई स्थानों पर प्रयोग किया है और इसका अर्थ उन स्थानों पर दस गुना है। "शफकते व पदतेमामे कि सुल्तान रा दर बाबे औं पिसर बूद यके ब देह शुद" सुल्तान की जो कुछ भी कृपा तथा दया इस पुत्र के विषय में थी वह दस गुनी बढ गई (बरनी पृ० १०६, आदि तुर्क कालीन भारत पृ० २००)। "निर्खे शराब यके ब दह रसीद" मदिरा का भाव दस गुना चढ गया (बरनी पृ० १३०, आदि तुर्क कालीन भारत पृ० २१५)। इसी प्रकार बरनी ने 'यके ब सद' सौ गुने के अर्थ में प्रयोग किया है (बरनी पृ० ३०, ८४, १३८, आदि तुर्क कालीन भारत पृ० १४४, १८३, २२०)। इसी प्रकार बरनी ने 'यके ब चहार,' शब्द का प्रयोग किया है और उसका अर्थ चौगुना है (बरनी पृ० ३८५, खलजी कालीन भारत पृ० १२७)। बरनी ने 'यके ब हजार' का भी प्रयोग किया है जिसका अर्थ हजार गुना है (बरनी पृ० ५६८)। सोने की मुद्रा के मूल्य में वृद्धि का उल्लेख करते हुये भी बरनी ने "यके ब चहार व यके ब पज" का उल्लेख किया है, जिसका अर्थ चौगुना पचगुना है (बरनी पृ० ४७५)। प्रत्येक स्थान पर अतिशयोक्ति सूचक वाक्य ही है। किसी स्थान पर निश्चित सख्या का उल्लेख नहीं। इसी प्रकार इस स्थान पर भी किसी निश्चित वृद्धि का उल्लेख नहीं अपितु यह वाक्य अतिशयोक्ति के रूप मे ही प्रयोग हुये हैं। मोरलैंड का भी यही विचार है।

बदायूनी ने 'यके ब देह बिस्त' लिखा है जिसका अर्थ यह हुआ कि १० से २० के अनुपात मे अर्थात् दुगुना हो गया (मुन्तखबुत्तवारीख भाग १, पृ० २३७)। होदीवाला का विचार है कि सम्भव है बरनी ने यक ब देह बिस्त लिखा हो और नक्ल करने वालों ने यके ब देह व यके ब बिस्त बना दिया हो (होदीवाला, Studies in Indo-Muslim History पृ० २६४)। तारीखे मुबारकशाही में यके ब देह व यके ब बिस्त ही लिखा है (पृ० ११३)। इस प्रकार सम्भवतया आरम्भ ही में बरनी की पुस्तक नकल करने वालों से भूल हो गई और बाद में लोगों ने इसे भिन्न भिन्न प्रकार से लिखा और या यह अतिशयोक्ति का वाक्य हो। इसका साधारण अर्थ अत्यधिक वृद्धि भी हो सकता है। रामपुर की तारीखे फ़ीरोजशाही की हस्तलिखित पोथी में इस वाक्य का उल्लेख नहीं। दोग्राब के कर की वृद्धि के सम्बन्ध में जो उल्लख है उसम यही पता चलता है कि कर अत्यधिक बढ़ा दिया गया था (पृ० २८८)।

२ "व दर आमाले अन्देराये मजकूर सुल्तान दुरस्त अबवाबे पैदा आवुरदन्द व माले वजा करदन्द कि कमरे रिआया बे शिकस्त।" इस स्थान पर बरनी ने अन्य करों का उल्लेख नहीं किया। बाद के इतिहासकारों ने उन करों के नाम भी लिखे हैं।

गये। प्रजा परेशान हो गई। बहुतो के घर बार नष्ट हो गये। सुल्तान मुहम्मद के राज्य-व्यवस्था सम्बन्धी आदेशों के पालन तथा उसके राज्य की रौनक में उस तिथि से कमी होने लगी और उसकी वह शान न रही।

(२) राजधानी का परिवर्तन—

सुल्तान मुहम्मद की दूसरी योजना[१], जिसको कार्यान्वित कराने के कारण राजधानी में खराबी तथा विशेष व्यक्तियों की दुर्दशा हुई और चुने हुये लोगों को हानि पहुँची[२], जो उसके हृदय में आई यह है कि देवगिरि का नाम दौलताबाद रक्खा जाय और

१ रामपुर की तारीखे फीरोजशाही की हस्तलिखित पोथी में इस घटना का उल्लेख बड़े स्पष्ट रूप से किया गया है। '७२७ हि० में खुदावन्दे आलम (सम्राट के स्वामी) सुल्तान ने देवगीर का दृढ़ संकल्प कर लिया और देवगीर का नाम दौलताबाद रखा। "(पृ० २८५)। जब देवगीर का नाम दौलताबाद रख लिया गया और सभी इक्लीमों की राजधानी दौलताबाद निश्चित की गई तो उसने आदेश दिया कि उसकी माता मखदूमये जहाँ, जो इस्लामी प्रदेशों की शरण तथा आश्रयदात्री थीं और जिनके समान दान पुण्य में समार में कोई भी न था और जो राज्य के सहायकों तथा विश्वास पात्रों एवं उनके परिवार की आश्रयदात्री थी, तथा राज्य के समस्त मलिक एवं अमीर, सहायक तथा विश्वास पात्र दौलताबाद की ओर प्रस्थान करें दरबार के हाथी घोड़े, खजाना तथा बहुमूल्य वस्तुयें दौलताबाद भेज दी जायें। देवगीर को भली भाँति दौलताबाद बना दिया गया। मखदूमये जहाँ के प्रस्थान के उपरान्त, सैयिद, मशायख (सूफी) आलिम तथा देहली के प्रतिष्ठित, गण्यमान्य एवं प्रसिद्ध लोग दौलताबाद बुलाये गये। शहर (देहली) के सभी प्रतिष्ठित लोग अपने सहायकों को लेकर वहाँ पहुंचे और सुल्तान के दस्त बोस का सम्मान प्राप्त कर सके। उनके इदरार तथा इनाम में वृद्धि कर दी गई। उन्हें ग्राम प्रदान किये गये और भवन निर्माण हेतु धन उन्हें अलग से प्रदान हुआ। वे लोग सम्पन्न हो गये। वर्ष के अन्त में किशलू खाँ बहराम ऐबा ने विद्रोह कर दिया। (पृ० २८६) ..... ।

(विद्रोह दमन से लौट कर) सुल्तान मुहम्मद पुनः शहर (देहली) में आया। उसने आदेश दिया कि देहली तथा चार पाँच कोस तक के कस्बों के निवासियों को काफिलों में विभाजित करके दौलताबाद भेजा जाय, शहर वालों के घर उनसे मोल ले लिये जाय, देहली के घरों का मूल्य खजाने से नकद दे दिया जाय जिससे जाने वाले लोग दौलताबाद में अपने लिये घर बनवा लें। शाही आदेशानुसार देहली तथा आस-पास के निवासी देहली की ओर भेज दिये गये देहली शहर इस प्रकार रिक्त हो गया कि कुछ दिन तक देहली के समस्त द्वार बन्द रहे और शहर में कुत्ते बिल्ली तक न रह गये थे। तत्पश्चात् प्रदेशों से आलिमों, मशायख (सूफियों) तथा प्रतिष्ठित लोगों को ला कर शहर (देहली) में बसाया गया और उन्हें इनाम तथा इदरार प्रदान किये गये। दौलताबाद शहर (देहली) के लोगों द्वारा सुसज्जित हो गया। शहर वालों के भेजने के उपरान्त, सुल्तान मुहम्मद दो वर्ष तक देहली में निवास करता रहा। (पृ० २८७)

बदायूनी ने यात्रा की सुविधाओं का बड़ा विषद वर्णन किया है और देहली से दौलताबाद, लोगों के दो बार भेजे जाने का उल्लेख किया है। एक बार ७२७ हि० (१३२६-२७ ई०) में और दूसरी बार ७२६ हि० (१३२८-२६ ई०) में। (मुन्तखबुत्तवारीख पृ० २२६, २२८)।

सर्व प्रथम सुल्तान अपनी माता तथा अन्तःपुर के साथ १३२७ ई० में दौलताबाद पहुँचा। १३२६ ई० में उसने बहराम ऐबा किशलू खाँ का मुल्तान में विद्रोह शान्त करने के लिये दौलताबाद से प्रस्थान किया और देहली में सेना एकत्र करने के लिये रुका। मुल्तान से लौट कर वह देहली में दो वर्ष तक निवास करता रहा। १३२६ ई० में सैयिदों, सूफियों, तथा देहली के आलिमों को दौलताबाद प्रस्थान करने का दूसरा आदेश प्रदान हुआ। (महदी हुसैन पृ० ११५-१६)

२ इस स्थान पर जन साधारण का उल्लेख नहीं। "अबतरीये खवासे खल्क व बर उफ्तादं मर्दुमे गुजीदा व चीदा"। यदि अबतरीये खवासे खल्क' के स्थान पर "खवास व खल्क" पढ़ा जाय तो इसका अर्थ सर्वसाधारण, एवं विशेष व्यक्ति हो जायगा।

उसे राजधानी बनाया जाय, क्योंकि अन्य इकलीमों की दूरी तथा निकटता देखते हुये देवगिरि मध्य में स्थित है। देहली, गुजरात, लखनौती, सत गाँव, सुनार गाँव, तिलग, माबर, घोरसमुनदर (४७४) (द्वार समुद्र) तथा कम्पिला इस स्थान से कुछ कमी बेशी के साथ समान दूरी पर स्थित हैं। इस योजना के विषय में किसी से परामर्श किये बिना तथा उसके लाभ एवं हानि पर प्रत्येक दृष्टिकोण से दृष्टिपात किये बिना उसने देहली को, जोकि १६० अथवा १७० वर्ष में इस प्रकार आबाद हुई थी और जोकि एक बहुत बड़ा नगर बन गई थी तथा बगदाद एवं मिस्र के समान हो गई थी, तथा उसके समस्त भवनों एवं ४, ५ कोस के आसपास के स्थानों तक के कस्बों को नष्ट कर दिया। यहाँ तक कि राजधानी तथा भवनों और आसपास के कस्बों में कोई कुत्ता बिल्ली भी न छोड़ा गया। वहाँ के समस्त निवासियों, उनके दासों-दासियों, स्त्रियों और बालकों को भी रवाना कर दिया। यहाँ के निवासी, जोकि वर्षों से तथा अपने पूर्वजों के समय से इस स्थान पर निवास करते चले आये थे और जिन्हें इस स्थान से विशेष प्रेम हो गया था, इस लम्बी यात्रा के कष्ट से मार्ग ही में नष्ट हो गये। बहुत से लोग, जोकि देवगिरि पहुँचे, अपनी मातृ भूमि का वियोग सहन न कर सके और वापस होने की इच्छा ही में परलोकगामी हो गये। देवगिरि के चारों ओर, जोकि प्राचीन काल से कुफ्र का स्थान था, मुसलमानों की कब्रें बन गई। यद्यपि सुल्तान ने देहली से प्रस्थान करने वाली प्रजा को अत्यधिक इनाम इकराम दिये और यात्रा के लिये प्रस्थान करने तथा देवगिरि के पहुँचने के समय तक (अत्यधिक इनाम इकराम दिये किन्तु प्रजा कोमल होने के फलस्वरूप परदेश तथा कष्टों को सहन न कर सकी और उसी कुफ्र के स्थान में उनकी मृत्यु हो गई। भेजी जाने वाली प्रजा में बहुत कम लोग अपने घरों को सुरक्षित पहुँच सके। उसी तिथि से यह नगर, जोकि ससार के नगरों के लिये ईर्ष्या की वस्तु था, नष्ट हो गया। यद्यपि सुल्तान मुहम्मद ने राज्य के प्रदेशों, प्रसिद्ध कस्बों तथा स्थानों के आलिमों एवं गण्य-मान्य व्यक्तियों को शहर (देहली) में लाकर बसाया किन्तु इस प्रकार लोगों के लाने से शहर (देहली) आबाद न हो सका। उनमें से कुछ की शहर ही में (४७५) मृत्यु हो गई और कुछ लौट गये और अपने-अपने घरों को चल दिये। इन परिवर्तनों तथा इस उथल-पुथल से राज्य को विशेष हानि पहुँची।

(३) ताँबे की मुद्रा—

सुल्तान मुहम्मद की तीसरी योजना, जिससे उसके राज्य को हानि पहुँची और जिससे हिन्दुस्तान के विद्रोहियों तथा षड्यन्त्रकारियों को विशेष प्रोत्साहन प्राप्त हुआ और जिससे उनकी शक्ति तथा धृष्टता बढ़ गई और जिससे समस्त हिन्दू धन-धान्य सम्पन्न हो गये, यह थी कि क्रय विक्रय में ताम्र मुद्राओं का प्रयोग होने लगे। सुल्तान मुहम्मद की अपनी महत्वाकांक्षाओं के कारण उसके हृदय में यह आया कि समस्त ससार पर अधिकार जमाया जाये और उसे अपने अधीन बनाया जाय। इस असम्भव कार्य के लिये अत्यधिक एवं अपार लावलश्कर की आवश्यकता थी। विशाल सेना बिना अपार धन-सम्पत्ति के भर्ती न हो सकती थी। सुल्तान के खजानों में दान पुण्य की अधिकता से बड़ी अव्यवस्था हो गई थी। सुल्तान मुहम्मद ने ताँबे के सिक्के चालू किये और आदेश दिया कि क्रय-विक्रय में ताँबे की मुद्रा को सोने तथा चाँदी की मुद्रा के समान प्रचलित किया जाये। उपर्युक्त आदेश के पालन के फलस्वरूप हिन्दुओं[1] के घरों में से प्रत्येक घर टकसाल बन गया। राज्य के प्रदेशों के हिन्दुओं ने लाखों करोड़ों ताँबे की मुद्रा बनवाली। वे उसी से खराज अदा करते

१ सम्भवतया सुनार तथा अन्य कारीगर अधिकतर हिन्दू ही रहे होंगे। इसी लिये बरनी ने हिन्दुओं के घरों को टकसाल कहा; वैसे जाली सिक्के बनवाने में हिन्दू तथा मुसलमान सभी सम्मिलित रहे होंगे।

थे और घोड़े अस्त्र-शस्त्र तथा नाना प्रकार की बहुमूल्य वस्तुयें खरीदते थे। हवाली (देहली के आसपास) के निवासी, मुकद्दम तथा खूत तांबे की मुद्राओं द्वारा धन-धान्य सम्पन्न हो गये और राज्य में बड़ी अव्यवस्था हो गई। थोड़े ही समय बाद दूर के स्थानों (देशों) के निवासी तांबे के तन्के को तांबे के भाव पर ही लेने लगे। जिन स्थानों पर सुल्तान का आतंक छाया था वहाँ एक सोने का तन्का १०० तांबे के (तन्के के) मूल्य पर लिया जाता था। प्रत्येक सुनार अपने घर में तांबे की मुद्रा ढालने लगा। तांबे की मुद्रा द्वारा खजाना भर गया। तांबे की मुद्रा इतनी निर्मूल्य एवं क्षुद्र हो गई कि वह कंकड़ तथा ठिकरे के समान बन गई। प्राचीन मुद्राओं का मूल्य उनके अत्यधिक सम्मान के कारण चौगुना पचगुना बढ़ गया। जब चारों ओर क्रय विक्रय में अव्यवस्था होने लगी और तांबे के तन्कों का मूल्य मिट्टी के ढेलों से भी कम हो गया और वह किसी काम के न रहे तो सुल्तान मुहम्मद (४७६) ने तांबे के सिक्के के विषय में अपना आदेश रद्द कर दिया और अत्यधिक क्रोधावस्था में आदेश दिया कि जिस किसी के पास तांबे का सिक्का हो उसे वह खजाने में दाखिल करदे और उसके स्थान पर प्राचीन सोने की मुद्रा खजाने से ले जाय। भिन्न-भिन्न गरोहों के हजारों मनुष्य, जिनके पास हजारों तांबे के सिक्के थे और जो उन सिक्कों से परेशान हो चुके थे और जिन्होंने उन सिक्कों को तांबे के बर्तनों के पास अपने घरों के कोनों में फेंक दिया था, उन सिक्कों को लेकर खजाने में पहुँच गये और उनके स्थान पर सोने चाँदी के तन्के, शशगानी तथा दोगानी ले लेकर अपने अपने घरों को वापस हो गये। खजाने में तांबे के सिक्के इतनी संख्या में पहुँच गये कि तुगलुकाबाद में तांबे के तन्कों के ढेर पर्वत के समान लग गये। तांबे के सिक्के के स्थान पर खजाने की धन सम्पत्ति निकल गई। खजाने में जो एक बहुत बड़ी अव्यवस्था हुई उसका कारण तांबे के तन्के थे। तांबे के सिक्के चालू करने के आदेश अपितु तांबे के सिक्कों के कारण खजाने की बहुत बड़ी धन-सम्पत्ति नष्ट हो जाने पर सुल्तान का हृदय अपने राज्य के प्रदेशों की प्रजा से घृणा करने लगा[1]।

---

१ ७३० हि० से लेकर ७३२ हि० तक के तांबे के सिक्के मिलते हैं। इस प्रकार यह योजना लगभग १३२६ ई० से १३३१ ३२ ई० तक चली। इब्ने बत्तूता जो सिन्ध में १२ सितम्बर १३३३ ई० को पहुंचा, इस विषय पर कुछ नहीं लिखता। इससे यह निष्कर्ष निकालना कि लोग इस योजना को भूल चुके थे, कठिन है। सम्भव है कि इब्ने बत्तूता इसके विषय में लिखना भूल ही गया हो। सिक्कों के सम्बन्ध में परिशिष्ट "स" देखिये।

रामपुर की तारीखे फीरोजशाही की हस्तलिखित पोथी में इसका उल्लेख राजकोष के रिक्त होने के सम्बन्ध में किया गया है। "खजाने के खाली होने का तीसरा कारण यह था कि सुल्तान मुहम्मद को दान पुण्य तथा सेना के लिये अपार खजाने की आवश्यकता थी। खजाने में इतनी चाँदी, दिरहम तथा दीनार न रह गये थे जिनसे शाही महत्वाकांक्षायें पूरी हो सकतीं, राज्य व्यवस्था हेतु योजनाओं के लिये पर्याप्त होता। सुल्तान ने वर्षों से सेवकों (मुजाविरों, तुज्जारान-व्यापारियों) से सुन रखा था कि चीन में क्रय विक्रय तथा लोगों के लेन देन के लिये अजार (चाउ) का प्रयोग करते हैं। चाउ कागज का टुकड़ा होता है, जिस पर चीन के बादशाहों का नाम तथा उपाधि चित्रित रहती है। वहाँ के लोग उसे तन्का व जीतल तथा सोने और चाँदी के स्थान पर लेते देते हैं। सुल्तान मुहम्मद ने चाउ को सुनकर तांबे के तन्के निकाले और यह समझा कि ये मेरे राज्य के प्रदेशों में जारी हो जायेंगे तथा पूर्ण रूप से माने जायेंगे। कोई इन तन्कों को मना न करेगा, जिस प्रकार चाउ चलता है उसी प्रकार तांबे के तन्के चालू हो जायेंगे। तदनुसार टकसाल में तांबे के तन्के ढलने लगे और तांबे के तन्कों के ढेर लग गये। शहर, कस्बों तथा बड़े-बड़े ग्रामों में कुछ समय तक तांबे

(शेष आगे)

(४) खुरासान विजय—

सुल्तान मुहम्मद की चौथी योजना, जिससे खजाने में अव्यवस्था हुई और खजाने की अव्यवस्था के कारण देश में अशान्ति फैली, खुरासान तथा एराक पर विजय प्राप्त करने की थी। इस लोभ में सुल्तान उन प्रदेशो के प्रतिष्ठित तथा गण्यमान्य व्यक्तियों को अत्यधिक धन सम्पत्ति प्रदान करता था। उन राज्यो के प्रतिष्ठित लोग उसके सम्मुख नाना प्रकार की विचित्र योजनायें प्रस्तुत किया करते थे और जहां तक सम्भव होता राज्य से धन सम्पत्ति प्राप्त करते किन्तु वे इकलीमें तथा प्रदेश उसके हाथ न आये। सुव्यवस्थित इकलीमें (राज्य) तथा प्रदेश हाथ से निकल गये। खजाना, जोकि राज्य का आधार है, रिक्त हो गया।

(५) सेना की भर्ती—

सुल्तान मुहम्मद की पाँचवी योजना, जिसमे उसकी राज्य व्यवस्था में गड़बडी हो गई, यह थी कि उसने एक वर्ष खुरासान विजय हेतु सेना तैयार करने का आदेश दे दिया। (४७७) असख्य तथा अपार सेना भर्ती करने का आदेश हुआ। प्रथम वर्ष में उन्हे खजाने तथा अक्ताओ से वेतन दिया गया। अनेक कठिनाइयो के कारण वह योजना कार्यान्वित न हो सकी। दूसरे वर्ष खजाने में इतना धन न रहा कि इस सेना के वेतन का भुगतान हो सकता, उसे स्थायी बनाया जा सकता। वह सेना भी छिन्न-भिन्न हो गई और खजाना, जिस पर राज्य व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध आधारित है, रिक्त हो गया। जिस वर्ष सैनिको की बहुत बडी सख्या भर्ती की गई थी उस वर्ष इस कार्य में कोई सावधानी न दिखाई गई, किसी का हुलिया न लिखा गया, तलवार आदि चलाने की कोई परीक्षा न ली गई, घोडे के मूल्य तथा दाग पर ध्यान न दिया गया। केवल उन लोगों के सिरो की गणना करके देहली तथा कस्बो और प्रदेशो में उन्हे नकद धन (वेतन) प्रदान किया गया। उस वर्ष ३ लाख ७० हजार सवारों की सूची दीवाने अर्ज द्वारा राज-सिंहासन के समक्ष प्रस्तुत हुई। एक पूरा साल सवारों की भर्ती, उनके प्रबन्ध तथा उन्हे धन (वेतन) प्रदान करने में व्यतीत हो गया। इतने बडे लश्कर को किसी स्थान की विजय के लिये न भेजा जा सका जिससे लूट की धन-सम्पत्ति द्वारा दूसरे वर्ष सेना का कार्य चल सकता। दूसरा वर्ष प्रारम्भ हो गया और न तो वेतन के लिये खजाने में ही धन रहा और न अक्ताओ में जिससे सेना स्थायी रूप से रह

के तन्के चलते रहे और खजाने में खराज में (के बदले) ताँबे के तन्के लिये जाते थे। पास तथा दूर के हिन्दुओं ने ताँबे के तन्के ढलवा लिये और खराज अदा करने लगे। उसी से घोड़े, सामग्री तथा अस्त्र शस्त्र मोल लेते थे। उस तिथि से हिन्दू धन-धान्य सम्पन्न तथा पूंजीपति हो गये। कुछ दिन उपरान्त इकलीम (प्रान्तो) के समस्त नगरों में तांबे के तन्कों का चलन कम होने लगा और पूर्व की भाँति न चलता था और कोई उन्हें हाथ न लगाता था। कोई भी सोने के एक तन्के को १२० तांबे के तन्के लेकर भी न देता था। सुल्तान मुहम्मद ने ताँबे के तन्के के विषय में पूछताछ कराई तो पता चला कि बहुत बड़ा विद्रोह हो जायगा और लोग मिलकर बगावत कर देंगे। सुल्तान ने तांबे के सिक्के से सम्बन्धित आदेश बन्द करा दिये, और हुक्म दे दिया कि जिसके पास तांबे के तन्के हों, वह उन्हें खजाने में पहुँचा दे और उनके स्थान पर सोने चांदी के तन्के तथा शशगानी ले जाय। तांबे के तन्के खजाने में दाखिल कर दिये गये और उनके स्थान पर लोग सोने चादी के तन्के एवं दुगनो ले गये। खजाना खाली हो गया। तांबे के तन्कों के ढेर तुगलुकाबाद में लग गये। सुल्तान के दु:ख तथा उसके द्वारा अत्यधिक हत्याकाड का एक कारण यह भी था, (३०२) कि उसके आदेशानुसार तांबे के तन्के न चल सके और लोगों ने उसकी आज्ञाओं का पालन न किया।

थे और घोडे अस्त्र-शस्त्र तथा नाना प्रकार की बहुमूल्य वस्तुयें खरीदते थे। हवाली (देहली के आसपास) के निवासी, मुक्द्दम तथा खूत तावे की मुद्राओ द्वारा धन-धान्य सम्पन्न हो गये और राज्य म बडी अव्यवस्था हो गई। थोडे ही समय बाद दूर के स्थानो (देशों) के निवासी ताँबे के तन्के को ताँबे के भाव पर ही लेने लगे। जिन स्थानों पर सुल्तान का आतक छाया था वहाँ एक सोने का तन्का १०० ताँबे के (तन्के के) मूल्य पर लिया जाता था। प्रत्येक सुनार अपने घर मे ताँबे की मुद्रा ढालने लगा। ताँबे की मुद्रा द्वारा खजाना भर गया। ताँबे की मुद्रा इतनी निर्मूल्य एव क्षुद्र हो गई कि वह ककड तथा ठिकरे के समान बन गई। प्राचीन मुद्राओ का मूल्य उनके अत्यधिक सम्मान के कारण चौगुना पचगुना बढ गया। जब चारो ओर क्रय विक्रय में अव्यवस्था होने लगी और ताँबे के तन्को का मूल्य मिट्टी के ढेलो से भी कम हो गया और वह किसी काम के न रहे तो सुल्तान मुहम्मद (४७९) ने ताँबे के सिक्के के विषय में अपना आदेश रद्द कर दिया और अत्यधिक क्रोधावस्था में आदेश दिया कि जिस किसी के पास ताँबे का सिक्का हो उसे वह खजाने में दाखिल करदे और उसके स्थान पर प्राचीन सोने की मुद्रा खजाने स ले जाय। भिन्न भिन्न गरोहो के हजारो मनुष्य, जिनके पास हजारो ताँबे के सिक्के थे और जो उन सिक्को से परेशान हो चुके थे और जिन्होंने उन सिक्कों को ताँबे के बर्तनो के पास अपने घरो के कोनो में फक दिया था, उन सिक्को को लेकर खजाने में पहुँच गय और उनके स्थान पर सोन चाँदी व तन्के, शशगानी तथा दोगानी ले लेकर अपने अपन घरो को वापस हो गये खजाने में ताँबे के सिक्के इतनी सख्या में पहुँच गये कि तुगलुकाबाद में ताँबे के तन्को के ढेर पर्वत के समान लग गये। ताँबे के सिक्के के स्थान पर खजान की धन सम्पत्ति निकल गई। खजाने में जो एक बहुत बडी अव्यवस्था हुई उसका कारण ताबे के तन्के थे। ताँबे के सिक्के चालू करन के आदेश अपितु ताबे के सिक्कों के कारण खजाने की बहुत बडी धन-सम्पत्ति नष्ट हो जान पर सुल्तान का हृदय अपने राज्य के प्रदेशो की प्रजा से घृणा करने लगा[१]।

१ ७३० हि० मे लकर ७३२ हि० तक के ताँबे के सिक्क मिलने हैं। इस प्रकार यह योजना लगभग १३२९ ३० से १३३१ ३२ ई० तक चली। इब्ने बत्तूता जो सिन्ध में १२ सितम्बर १३३३ ई० को पहुचा, इस विषय पर कुछ नहीं लिखता। इससे यह निष्कर्ष निकालना कि लोग इस योजना को भूल चुके थे, कठिन है। सम्भव है कि इब्ने बत्तूता इसके विषय में लिखना भूल ही गय हो। सिक्कों के सम्बन्ध में परिशिष्ट "स" देखिये।

रामपुर की तारीखे फीरोजशाही की हस्तलिखित पोथी में इसका उल्लेख राजकोष के रिक्त होने के सम्बन्ध में किया गया है। "खजाने के खाली होने का तीसरा कारण यह था कि सुल्तान मुहम्मद को दान पुण्य तथा सेना के लिये अपार खजाने की आवश्यकता थी। खजाने में इतनी चाँदी, दिरहम तथा दीनार न रह गये थे जिससे शाही महत्वाकाक्षायें पूरी हो सकतीं राज्य व्यवस्था हेतु योजनाओं के लिये पर्याप्त होता। सुल्तान ने वर्षो से सेवकों (मुजाविरों, तुज्जारान-व्यापारियों) से सुन रखा था कि चीन में क्रय विक्रय तथा लोगों के लन दन के लिये अजार (चाउ) का प्रयोग करते हैं। चाउ कागज का टुकडा होता है, जिस पर चीन के बादशाहों का नाम तथा उपाधि चित्रित रहती है। वहाँ के लोग उसे तन्का व जीतल तथा सोने और चाँदी के स्थान पर लेते देते हैं। सुल्तान मुहम्मद ने चाउ को सुनकर ताँबे के तन्के निकाले और यह समझा कि ये मेरे राज्य के प्रदेशों में जारी हो जायंगे तथा पूर्ण रूप मे माने जायग। कोई इन तन्कों को मना न करेगा, जिस प्रकार चाउ चलता है उसी प्रकार ताँबे के तन्के चालू हो जायेंगे। तदनुसार टकसाल में ताँबे के तन्के ढलने लग और ताँबे क तन्कों के ढेर लग गये। शहर, कस्बों तथा बड़े-बड़े ग्रामों में कुछ समय तक ताँबे

(शेष आगे के पृष्ठ पर)

(४) खुरासान विजय—¹

सुल्तान मुहम्मद की चौथी योजना, जिससे खजाने में अव्यवस्था हुई और खजाने की अव्यवस्था के कारण देश में अशान्ति फैली, खुरासान तथा एराक पर विजय प्राप्त करने की थी। इस लोभ में सुल्तान उन प्रदेशों के प्रतिष्ठित तथा गण्यमान्य व्यक्तियों को अत्यधिक धन सम्पत्ति प्रदान करता था। उन राज्यों के प्रतिष्ठित लोग उसके सम्मुख नाना प्रकार की विचित्र योजनायें प्रस्तुत किया करते थे और जहाँ तक सम्भव होता राज्य से धन सम्पत्ति प्राप्त करते किन्तु वे इक्लीमें तथा प्रदेश उसके हाथ न आये। सुव्यवस्थित इक्लीमें (राज्य) तथा प्रदेश हाथ से निकल गये। खजाना, जोकि राज्य का आधार है, रिक्त हो गया।

(५) सेना की भर्ती—

सुल्तान मुहम्मद की पाँचवी योजना, जिससे उसकी राज्य व्यवस्था में गड़बड़ी हो गई, यह थी कि उसने एक वर्ष खुरासान विजय हेतु सेना तैयार करने का आदेश दे दिया। (४७७) असंख्य तथा अपार सेना भर्ती करने का आदेश हुआ। प्रथम वर्ष में उन्हें खजाने तथा अक्ताओं से वेतन दिया गया। अनेक कठिनाइयों के कारण वह योजना कार्यान्वित न हो सकी। दूसरे वर्ष खजाने में इतना धन न रहा कि इस सेना के वेतन का भुगतान हो सकता, उसे स्थायी बनाया जा सकता। वह सेना भी छिन्न-भिन्न हो गई और खजाना, जिस पर राज्य व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध आधारित है, रिक्त हो गया। जिस वर्ष सैनिकों की बहुत बड़ी संख्या भर्ती की गई थी उस वर्ष इस कार्य में कोई सावधानी न दिखाई गई, किसी का हुलिया न लिखा गया, तलवार आदि चलाने की कोई परीक्षा न ली गई, घोड़े के मूल्य तथा दाग पर ध्यान न दिया गया। केवल उन लोगों के सिरों की गणना करके देहली तथा कस्बों और प्रदेशों में उन्हें नक्द धन (वेतन) प्रदान किया गया। उस वर्ष ३ लाख ७० हजार सवारों की सूची दीवाने अर्ज द्वारा राज-सिंहासन के समक्ष प्रस्तुत हुई। एक पूरा साल सवारों की भर्ती, उनके प्रबन्ध तथा उन्हें धन (वेतन) प्रदान करने में व्यतीत हो गया। इतने बड़े लश्कर को किसी स्थान की विजय के लिये न भेजा जा सका जिससे लूट की धन-सम्पत्ति द्वारा दूसरे वर्ष सेना का कार्य चल सकता। दूसरा वर्ष प्रारम्भ हो गया और न तो वेतन के लिये खजाने में ही धन रहा और न अक्ताओं में जिससे सेना स्थायी रूप से रह

के तन्के चलते रहे और खजाने में खराज में (के बदले) ताँबे के तन्के लिये जाते थे। पास तथा दूर के हिन्दुओं ने ताँबे के तन्के ढलवा लिये और खराज अदा करने लगे। उसी से घोड़े, सामग्री तथा अस्त्र शस्त्र मोल लेते थे। इस विधि से हिन्दू धन-धान्य सम्पन्न तथा पूँजीपति हो गये। कुछ दिन उपरान्त इक्लीम (प्रान्तों) के समस्त नगरों में ताँबे के तन्कों का चलन कम होने लगा और पूर्व की भाँति न चलता था और कोई उन्हें हाथ न लगाता था। कोई भी सोने के एक तन्के को १२० ताँबे के तन्के लेकर भी न देता था। सुल्तान मुहम्मद ने ताँबे के तन्के के विषय में पूछताछ कराई तो पता चला कि बहुत बड़ा विद्रोह हो जायगा और लोग मिलकर बग़ावत कर देंगे। सुल्तान ने ताँबे के सिक्के से सम्बन्धित आदेश बन्द करा दिये, और हुक्म दे दिया कि जिसके पास ताँबे के तन्के हों, वह उन्हें खजाने में पहुँचा दे और उनके स्थान पर सोने चाँदी के तन्के तथा शशगानी ले जाय। ताँबे के तन्के खजाने में दाखिल कर दिये गये और उनके स्थान पर लोग सोने चाँदी के तन्के एवं दुगनी ले गये। खजाना खाली हो गया। ताँबे के तन्कों के ढेर तुग़लुक़ाबाद में लग गये। सुल्तान के दुःख तथा उसके द्वारा अत्यधिक हत्याकाण्ड का एक कारण यह भी था, (३०२) कि उसके आदेशानुसार ताँबे के तन्के न चल सके और लोगों ने उसकी आज्ञाओं का पालन न किया।

सकती। इस प्रकार सेना छिन्न-भिन्न हो गई और सभी अपने-अपने कार्य में लग गये, किन्तु खजाने से लाखो और करोडो खर्च हो गये।[1]

(६) क़राजिल पर आक्रमण—

सुल्तान मुहम्मद की छठी योजना, जिसके कारण राज्य की सुव्यवस्थित सेना में बडी गडबडी हुई, कराजिल[2] पर्वत की विजय की थी। सुल्तान मुहम्मद के हृदय में आया कि चूंकि खुरासान तथा मावराउन्नहर के विजय की योजना बनाई जा रही है अत कराजिल पर्वत को, जोकि हिन्दुस्तान तथा चीन के निकट के मार्ग के मध्य में है, इस्लामी पताकाओ द्वारा विजय कर लिया जाय जिससे सेना को घोडे प्राप्त होने तथा सेना की यात्रा में सुगमता हो। उपर्युक्त विचार से राज्य की वर्षों की सुव्यवस्थित सेना, प्रतिष्ठित अमीर तथा बडे-बडे सेना नायकों की अधीनता में कराजिल पर्वत की विजय के लिये नियुक्त हुई। सुल्तान ने आदेश दिया कि समस्त सेना कराजिल पर्वत के बीच के स्थानो पर विजय प्राप्त कर ले। इस (४७८) आदेश के अनुसार समस्त सेना ने कराजिल पर्वत की ओर प्रस्थान किया और प्रविष्ट होकर भिन्न-भिन्न स्थानो पर पडाव डाल दिये। कराजिल के हिन्दुओं ने वापसी के मार्ग की घाटियों पर अधिकार जमा लिया और इस प्रकार समस्त सेना का उस पर्वत में पूर्णतया विनाश हो गया। इतनी बडी सुव्यवस्थित तथा चुनी हुई सेना में से केवल १० सवार लौट सके। इस विचित्र घटना से देहली की सेना को बहुत बडी हानि पहुची। इतनी बडी अव्यवस्था तथा हानि का किसी उपाय द्वारा समाधान न हो सका।

उपर्युक्त विचार जिनके कारण राज्य-व्यवस्था में गडबडी तथा राज कोष को क्षति पहुँची, सुल्तान मुहम्मद की महत्त्वाकाक्षाओ के फलस्वरूप पैदा होते थे। वह अपनी इन महत्त्वाकाक्षाओ को कार्य रूप में परिणित कराना चाहता था किन्तु इन पर आचरण होना असम्भव था। इसके फलस्वरूप सुव्यवस्थित राज्य भी हाथो से निकल गया और राज्य-व्यवस्था में भी गडबड पडी। खजाना तथा धन-सम्पत्ति का भी विनाश हुआ।

---

१ चौथी और पाँचवीं दोनों योजनायें एक ही हैं। रामपुर की तारीखे फीरोजशाही की हस्तलिखित पोथी में इस घटना का उल्लेख खजाना खाली होने के सम्बन्ध में किया गया है और इसे खजाना खाली होने का दूसरा कारण बताया गया है। "खजाना खाली होने का दूसरा कारण यह था कि सुल्तान मुहम्मद के हृदय में उसके उच्च स्वभाव के कारण ऊपर की ओर के राज्यो को अपने अधिकार में करने का लोभ उत्पन्न हो गया। उसकी आकाक्षा थी कि गजनी नगर से सोने तथा लोहे का पुल बनवा दे अर्थात् असख्य तथा अपार सेना लेकर उन इक़लीमों (देशों) पर आक्रमण करे ताकि उस के चत्र के पहुंचते ही उस देश के निवासी स्वेच्छा तथा अपनी खुशी से उसके सेवक बन जायें, सुल्तान के दान पुण्य का जो कुछ हाल उन्होंने अपने कानों से सुना है उसे आंखों से देखलें। इसी कारण धन एकत्र करने का प्रयत्न किया जाता था और सेना के बढाने का प्रयास होता था। मैंने जहीरुल जुयूश (सेनापति) नायब अर्जे ममालिक से सुना है कि दीवाने अर्जे ममालिक में ४,७०,००० सवार पंजीकृत हुये। उनके वेतन का अधिकाश भाग खजाने से प्रदान हुआ। दूसरे वर्ष उनके वेतन का खजाने से भुगतान न हो सका और वे छिन्न भिन्न हो गये। यदि हिसाब करने वाले हिसाब करें, तो ज्ञात हो जायगा कि ४,७०,००० सवारों पर कितना धन व्यय हुआ होगा। (तारीखे फीरोजशाही; रामपुर पोथी पृ० २०१)।

२ छपी हुई पुस्तक मे क़राजिल है। इब्ने बत्तूता ने क़राजील तथा फ़िरिश्ता एवं तबक़ाते अकबरी आदि में हिमाचल लिखा है। (तबक़ाते अकबरी भाग १ पृ० २०४)। बदायूनी ने हिमाचल तथा क़राचल को एक बताया है। बदायूनी ने इस घटना को ७३८ हि० (१३३७-३८ ई०) के हाल में लिखा है (मुन्तखबुत्तवारीख भाग १, पृ० २२६)। होदीवाला का विचार है कि यह कुमायूं का प्राचीन नाम कूर्माचल है, और गढ़वाल तथा कुमायूं के भाग से अभिप्राय है (होदीवाला पृ० २६४-६५)।

सुल्तान मुहम्मद के राज्यकाल के षड्यन्त्र तथा विद्रोह जो प्रत्येक दिशा से उठ खड़े हुये और (जिनके कारण) सुव्यवस्थित राज्य हाथ से निकल गये।

यद्यपि सुल्तान मुहम्मद के समय के षड्यन्त्रों, विद्रोहों तथा अत्याचारों का उल्लेख क्रमानुसार एवं तिथि के अनुसार नहीं हुआ है और न उनका सविस्तार वर्णन किया गया है, किन्तु मैंने वे सब बातें लिख दी हैं, जिनसे पाठकों के उद्देश्य की पूर्ति हो सके। जब सुल्तान मुहम्मद ने अत्यधिक कठोरता तथा अत्यधिक धन-सम्पत्ति वसूल करना, अपनी महत्वाकांक्षाओं के अनुसार राज्य व्यवस्था एवं शासन-प्रबन्ध प्रारम्भ कर दिया और जब राज्य के साधारण तथा विशेष व्यक्ति सुल्तान मुहम्मद के आदेशों का पालन असम्भव समझ कर उससे घृणा करने लगे, तो विद्रोह प्रारम्भ हो गया।

बहराम[1] ऐबा का विद्रोह—

सर्व प्रथम[2] मुल्तान में बहराम ऐबा ने विद्रोह कर दिया। जिस समय उसने मुल्तान में (४७९) विद्रोह किया उस समय सुल्तान मुहम्मद देवगीर (देवगिरि) में था। जैसे ही उस विद्रोह की सूचना सुल्तान को मिली, सुल्तान देवगीर (देवगिरि) से शहर (देहली) पहुँचा। शहर में सेना एकत्र की और मुल्तान पर चढ़ाई कर दी। जब सुल्तान मुहम्मद की सेना का बहराम ऐबा की सेना से युद्ध हुआ तो पहले ही आक्रमण में बहराम ऐबा पराजित हो गया। उसका सिर काटकर सुल्तान के समक्ष लाया गया। बहराम ऐबा की सेना हार गई। बहुत से मार डाले गये। बहुत से भाग गये तथा छिन्न भिन्न हो गये।

उपर्युक्त दुर्घटना के उपरान्त मुल्तान की सेना पहले के समान कभी भी सुव्यवस्थित तथा स्थायी न हो सकी। सुल्तान को जब बहराम ऐबा पर विजय प्राप्त हो गई तो उसकी यह इच्छा हुई कि मुल्तान निवासियों की, जो बहराम ऐबा के सहायक हो गये थे, एक साथ हत्या कर दी जाय। (शेखुल इस्लाम) शेख रुक्नुद्दीन मुल्तानी[3] ने सुल्तान से मुल्तान निवासियों की सिफारिश की। सुल्तान मुहम्मद ने शेखुल इस्लाम रुक्नुलहक वद्दीन की सिफारिश स्वीकार करली और उनकी हत्या का आदेश न दिया।

दोआब में विद्रोह[4]—

सुल्तान मुहम्मद मुल्तान से विजय तथा सफलता प्राप्त करके देहली की ओर लौटा और देवगीर (देवगिरि) को, जहाँ शहर (देहली) निवासी अपने परिवार सहित प्रस्थान कर चुके थे, न गया। वह देहली में ही निवास करने लगा। दो वर्ष तक सुल्तान देहली में रहा। अमीर, मलिक तथा सैनिक बराबर सुल्तान के साथ देहली में रहे। उनका परिवार देवगीर (देवगिरि)

---

१ बदायूनी के अनुसार यह विद्रोह ७२८ हि० (१३२७-२८ ई०) में हुआ (मुन्तखबुत्तवारीख पृ० २२७)।

२ बदायूनी के अनुसार दूसरा विद्रोह। पहला विद्रोह ७२७ हि० के अन्त में मलिक बहादुर गुर्शास्प का देहली में हुआ (मुन्तखबुत्तवारीख पृ० २२६ २७)।

३ भारतवर्ष में सुहरवर्दी सिलसिले की स्थापना करने वाले शेख बहाउद्दीन जकरिया (मृत्यु १२६६ ई०) के पोते। सुल्तान अलाउद्दीन के समय से उन्हें बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त हो गई थी। इनकी मृत्यु १३३७ ई० में हुई।

४ तारीखे फीरोजशाही की रामपुर की हस्तलिखित पोथी में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है: "सुल्तान शहर वालों को भेजने के उपरान्त दो तीन वर्ष तक देहली में ठहरा। शहर के आसपास के ग्रामों, दोआब, बरन, कोल तथा मेरठ के कस्बों एवं विलायतों से शाही अबवाब (लगान के अतिरिक्त अन्य कर) के अनुसार धन प्राप्त किया जाता था। अबवाब के अनुसार अपार धन वसूल किया जाता तथा कर वसूल करने में अत्यधिक कठोरता की जाती थी। प्रत्येक विलायत तथा कस्बे में कठोर जानदार एवं मुहसिल नियुक्त किये जाते थे, अत्यधिक कठोर दण्ड दिये जाते, आमिलों तथा मुतसर्रिफों

ही में रहा। उन दो वर्षों तक जबकि सुल्तान देहली में था दोआब-प्रदेश मुतालबे (देय धन) की अधिकता तथा अबवाब (लगान के अतिरिक्त कर) की ज्यादती से नष्ट हो गया। हिन्दू[1] अनाज के खलियानों को जला डालते थे और अपने मवेशियों को घर से निकाल देते थे। सुल्तान ने शिक्दारों तथा फौजदारों को उन लोगों के विनाश तथा ध्वंस का आदेश दे दिया। कुछ खूत तथा मुकद्दम मार डाले गये, कुछ अन्धे बना डाले गये और जो बच जाते थे वे दलबन्दी करके जंगलों में घुस जाते थे। विलायत (दोआब) नष्ट हो रही थी। उन्हीं दिनों सुल्तान (४८०) मुहम्मद शिकार खेलने के नियम से[2] बरन प्रदेश की ओर गया। उसने आदेश दिया कि समस्त बरन प्रदेश विध्वंश तथा नष्ट कर दिया जाय और हिन्दुओं के कटे हुए सिरों को बरन के किले की अटारियों पर लटका दिया जाय।[3]

बंगाल में विद्रोह—[4]

उन्हीं दिनों में बहराम खाँ की मृत्यु के उपरान्त बंगाल में फखरा का विद्रोह उठ खड़ा हुआ। फखरा[5] तथा बंगाल की सेना विद्रोही हो गई। उन्होंने कदर खाँ की हत्या कर दी और उसके स्त्री बालक तथा हाथियों और सैनिकों के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। लखनौती का राज-कोष क्षीण हो गया। लखनौती, सत गाँव तथा सुनार गाँव हाथ से निकल गये।

पर जुर्माने एवं कठोरता की जाती। प्रजा शाही कठोर माँगों को सहन न कर सकी। विलायत (प्रदेश) व्याकुल हो उठे। प्रत्येक दिशा में 'मंडल' बना लिये गये। दस-दस, बीस-बीस ने संगठित हो हो कर जंगलों तथा तालाबों के निकट शरण ले ली और वहीं निवास करने लगे। अधिकांश प्रजा का पता न चल पाता। बरवात दारान (सम्भवतया वे अधिकारी जिनके पास शाही कागज रहते होंगे) तथा मुहस्सिल लौट आते। सुल्तान ने प्रजा के आज्ञा उल्लंघन से क्रोधित होकर हिन्दुस्तान की ओर चढ़ाई की तथा विद्रोहियों की विलायतें विध्वंस करदीं। प्रदेशों की परेशानी इसी प्रकार प्रारम्भ हुई। सुल्तान फिर देहली वापस आया और उसने दुबारा बरन की ओर प्रस्थान किया। समस्त बरन की विलायत (प्रदेश) विध्वंस कर दी (पृ० २८८), मृतकों के खलियान लग गये और रक्त की नदियाँ बहा दी गई। बरन के हिसार (कोट) के समस्त बुर्जों पर प्रजा को जीवित लटका दिया गया। दंड के भय तथा आतंक से लोगों की घृणा में वृद्धि हो गई। वहाँ से खुदावन्दे आलम (संसार के स्वामी) सुल्तान मुहम्मद ने पुनः हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की और आदेश दिया कि जंगलों को घेर लिया जाय तथा आज्ञा का उल्लङ्घन करने वालों की हत्या कर दी जाय। संक्षेप में सुल्तान मुहम्मद हिन्दुस्तान के प्रदेशों का बादशाह तथा बादशाहजादा था और इन इक्लीमों (राज्यों) की सभी प्रजा मुसलमान तथा हिन्दू उसके तथा उसके पिता के आश्रित थे। उन्हें सुल्तान मुहम्मद द्वारा अत्यधिक इनाम इकराम प्राप्त होता रहता था और वे उसकी आज्ञाओं का पालन किया करते थे। एक वर्ष ऐसा हुआ कि विलायत के खराज में वृद्धि कर दी गई और आमों में शाही अबवाब, उनके अदा करने की शक्ति के बाहर लगा दिये गये। इनको अदा करने के लिये कहा गया और इस सम्बन्ध में फरमान बन गये। प्रजा सहन न कर सकी। वे शाही मुहस्सिल तथा बरवातदार उनके हाथ पकड़ कर उन्हें निकाल लाते थे कारकुन, आमिल, बरवात वाले तथा दीवान के मुहस्सिल राजसिंहासन के समक्ष निवेदन करते कि प्रजा शाही करों को कान से सुनने को तैयार नहीं। वे क्या कर सकते हैं? सभी सहमत होकर कहते कि प्रजा (अदा करने के) योग्य होने के बावजूद विद्रोही हो गई है। सुव्यवस्थित विलायतें (प्रदेश) नष्ट हो गईं। दुष्ट तथा धूर्त आकाश द्वारा विनाश प्रारम्भ हो गया। (पृ० २८६)

१ हिन्दू शब्द सभी किसानों के लिये प्रयोग हुआ है।

२ इस स्थान पर मनुष्य के शिकार का कोई उल्लेख नहीं। बरनी ने बल्बन के तुग़रिल के विरुद्ध प्रस्थान करने के सम्बन्ध में भी इन्हीं शब्दों का प्रयोग किया है (बरनी पृ० ८१, आदि तुर्क कालीन भारत पृ० १८३)।

३ महदी हुसेन के अनुसार यह छठा विद्रोह था (महदी हुसेन पृ० १४८, १५२)।

४ महदी हुसेन के अनुसार यह १३वाँ विद्रोह था।

कवरा तथा अन्य विद्रोहियो ने उन पर अधिकार जमा लिया और वे इसके उपरान्त पुन विजय न हो सके।

कन्नौज से दलमऊ तक का विनाश—

सुल्तान ने उन्ही दिनो में हिन्दुस्तान के ध्वस हेतु चढाई की और कन्नौज स दलमऊ[1] तक विध्वस कर दिया। जो कोई भी पकड जाता उसकी हत्या करदी जाती थी। बहुत से लोग भाग गये और जगलो में घुस गये किन्तु जगलो को भी घेर लिया गया। जो कोई भी जगल में मिल जाता उसकी हत्या कर दी जाती थी। इस प्रकार उस वर्ष कन्नौज से दलमऊ तक के स्थान विध्वस कर दिये गये।

माबर मे विद्रोह—

जब सुल्तान मुहम्मद हिन्दुस्तान में कन्नौज के आस पास तथा कन्नौज के आगे के विद्रोहियों के विनाश में सलग्न था, उसी समय तीसरा विद्रोह मावर[2] में हो गया। इबराहीम खरीतदार[3] के पिता सैयिद एहसन ने माबर में विद्रोह कर दिया। वहाँ के अमीरों की हत्या कर दी और उस देश पर अपना अधिकार जमा लिया। जो सेना देहली से माबर पर अधिकार स्थापित रखने हेतु नियुक्त थी वह वही रह गई। जब यह सूचना सुल्तान को प्राप्त हुई तो उसने इबराहीम खरीतेदार तथा उसके सम्बन्धियो को बन्दी बना लिया। सुल्तान मुहम्मद शहर (देहली) पहुँचा। शहर में सेना सुव्यवस्थित करके मावर पर आक्रमण करने के लिए देवगीर (देवगिरि) की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान अभी देहली से ३-४ मजिल आगे न गया था कि देहली में अनाज का मूल्य बढ गया। अकाल प्रारम्भ हो गया। चारों ओर से मार्ग बन्द हो गये। सुल्तान देवगीर (देवगिरि) पहुचा। उसने वहाँ के मुक्तों, अमीरो तथा मरहठा आमिलों पर भारी कर लगा दिये। बहुत से लोग कर की अधिकता से मर गये। (४८१) उसने मरहठा प्रदेश में भी भारी अबवाब निश्चित किये। राज-सिंहासन के समक्ष से (ओर से) मुहसिल (कर वसूल करने वाले) नियुक्त हुये। कुछ समय उपरान्त सुल्तान ने अहमद अयाज को देहली भेज दिया और स्वय तिलग की ओर प्रस्थान किया। अहमद अयाज देहली पहुँचा। उसी समय लाहौर में विद्रोह होगया किन्तु अहमद अयाज ने उसे दबा दिया। सुल्तान सेना लेकर अरगल (वारगल) पहुँचा। वहाँ महामारी का प्रकोप था। बहुत से लोग वहाँ पहुँच कर रुग्ण हो गये। वहाँ से लोगों को दूसरे स्थानों पर भेजा गया। सुल्तान मुहम्मद भी रुग्ण हो गया। उसने मलिक कुबूल नायब वजीर को उस स्थान पर नियुक्त किया और तिलग की विलायत (प्रदेश) उसे प्रदान कर दी। इसके उपरान्त वह शीघ्रातिशीघ्र

---

१ आधुनिक राय बरेली (उत्तर प्रदेश) जिले की एक तहसील। W. C. Benett ने "A Report on the Family History of the Chief Clans of Roy Boreilly" म जौना शाह द्वारा दलमऊ के सुन्दर बनाये जाने का हाल लिखा है किन्तु उस जौना शाह के विषय म मूल पुस्तक म लिखा है कि वह फीरोजशाह की सेना का एक अधिकारी था। बिनेट का विचार है कि यह जौना, मुहम्मद बिन तुगलुक ही था। (Benett, W C., A Report on the Family History of the Chief Clans of Roy Bareilly District, महदी हुसेन पृ० १५३ १५५)

२ इब्ने बत्तूता के अनुसार मुहम्मद बिन तुगलुक ८ जून १३३४ ई० को देहली पहुँचा और ८ जनवरी १३३५ ई० को माबर की ओर रवाना हुआ। इस प्रकार यह विद्रोह १३३४ ई० में प्रारम्भ हुआ डा० महदी हुसेन के अनुसार यह सातवाँ विद्रोह था। (महदी हुसेन १५८ १६०)

३ फरमानों को भेजने वाले अधिकारी।

वहाँ से वापस हुआ और रुग्णावस्था में देवगीर (देवगिरि) पहुँचा। कुछ दिनो देवगीर (देवगिरि) में अपनी चिकित्सा कराई।[1]

दक्षिण का प्रबन्ध—

उसने शिहाब सुल्तानी को नुसरत खाँ की पदवी प्रदान की और उसे बिदर तथा उस ओर की विलायत प्रदान की। उसन उस ओर की अक्ताम्रो का १०० लाख तन्के मुक़ातेम्रा (ठेका) निश्चित किया। देवगीर (देवगिरि) तथा मरहठा प्रदेश कुतलुग खाँ को प्रदान किये और स्वय रुग्णावस्था में ही देहली वापस हुआ।

देहली निवासियों की वापसी की आज्ञा—

जब सुल्तान तिलग की ओर प्रस्थान कर रहा था उसी समय उसने देहली के निवासियो को, जोकि देवगीर (देवगिरि) में थे, शहर (देहली) को लौट जाने का आम (सामान्य) आदेश दे दिया था। २-३ काफिले जो रह गये थे, उन्हें देवगीर (देवगिरि) से शहर (देहली) की ओर भेज दिया। जिन्हें मरहठा प्रदेश अच्छा लगा वे सपरिवार वहीं रह गये।

सुल्तान मुहम्मद की देवगीर (देवगिरि) से शहर (देहली) की ओर वापसी तथा मार्ग मे खराबी; (लोगो के कष्टो) का निरीक्षण करना।

देहली मे अकाल तथा सुल्तान द्वारा प्रबन्ध—

जब सुल्तान मुहम्मद देवगीर (देवगिरि) से रुग्णावस्था में देहली लौटा और धार पहुँचा तो वहाँ कुछ दिन विश्राम किया। वहाँ से देहली की ओर प्रस्थान किया। मालवे में (४८२) भी अकाल पडा हुआ था। समस्त मार्ग के धावे (डाक) का प्रबन्ध नष्ट हो चुका था, मार्ग की विलायतें तथा कस्बे बडे दुख तथा कष्ट में थे। सुल्तान देहली पहुँचा। देहली की (पिछली) रौनक[2] का हजारवाँ भाग भी अब शेष न रह गया था। समस्त विलायतें नष्ट हो चुकी थी, घोर अकाल पडा हुआ था,[3] और कृषि न रह गई थी। सुल्तान ने यह देख कर कुछ समय तक कृषि की व्यवस्था करने तथा प्रजा को आबाद करने का प्रयास किया किन्तु उस वर्ष वर्षा ही न हुई और कोई सफलता प्राप्त न हुई। घोडो तथा मवेशियो के लिये घास भी न रह गई थी। अनाज का भाव १६-१७ जीतल प्रति सेर हो गया था। प्रजा का विनाश हो रहा था। सुल्तान मुहम्मद सोन्धार[4] के रूप में कृषि के लिये राजकोष से धन-सम्पत्ति प्रदान करता था। प्रजा कष्ट में तथा दुःखी होती जाती थी। वर्षा के न होने के कारण कृषि भी न हो सकती थी और लोगो की मृत्यु होती जाती थी। सुल्तान देहली पहुच कर रोग मे मुक्त हो गया और शीघ्र ही स्वस्थ हो गया।

---

१ बरनी ने माबर के स्वतत्र होने तथा वहाँ एक स्वतत्र राज्य स्थापित होने का हाल स्पष्ट रूप मे नहीं लिखा है। बदायूनी ने उसी को हसन काँगू अलाउद्दीन बहमन शाह लिखा है। (मुन्तखबुत्तवारीख भाग १ पृ० २३१)।

२ पुस्तक में 'आबादानी है' जिसका अनुवाद आबादी तथा रौनक दोनों ही सम्भव हैं।

३ देहली में अनाज का भाव १५ १६ जीतल तक पहुँच गया था। (तारीखे फीरोजशाही–रामपुर पोथी पृ० २६१)। जब सुल्तान देहली में स्थायी रूप से रहने लगा तो भी (अनाज) १०–१२ जीतल प्रति सेर से कम न हुआ। (तारीखे फीरोजशाही—रामपुर पोथी–पृ० २६२)

४ ऋण (तकावी) के रूप मे। बरनी ने धन की सख्या नहीं लिखी। अफ़ीफ के अनुसार दो करोड़ दिया गया था। (तारीखे फीरोजशाही लेखक, शम्स सिराज अफीफ–पृष्ठ ६२ ६३)।

शाहू अफ़ग़ान का मुल्तान में विद्रोह और सुल्तान का मुल्तान की ओर प्रस्थान करना।[1]

जिस समय सुल्तान मुहम्मद कृषि को सुव्यवस्थित करने तथा "सोन्धार" बाँटने में तल्लीन था, उसे मुल्तान से यह सूचना मिली कि शाहू अफ़ग़ान ने विद्रोह कर दिया है और मुल्तान के नायब बेहज़ाद की हत्या करदी है। मलिक नवा मुल्तान से शहर (देहली) की ओर भाग गया। शाहू ने अफ़ग़ानों को एकत्र करके मुल्तान पर अधिकार जमा लिया। सुल्तान ने शहर (देहली) में तैयारी करके शाहू अफ़ग़ान से युद्ध करने के लिये मुल्तान की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान अभी कुछ मंज़िल भी आगे न बढ़ा था कि शहर (देहली) में सुल्तान मुहम्मद की माता मख़दूमये जहाँ का निधन हो गया। उस सत्यवती मलिका के निधन से सुल्तान तुग़लुक शाह का वंश टूट गया। प्रजा को मख़दूमये जहाँ द्वारा जितना दानपुण्य, सहायता तथा प्रोत्साहन प्राप्त होता था वह अन्य लोगों द्वारा न प्राप्त हो सका। शहर (देहली) में मख़दूमये जहाँ की आत्मा की शान्ति के लिये भोजन वितरित हुआ तथा अत्यधिक दान पुण्य हुआ। मुल्तान की ओर जाते हुये सुल्तान को मख़दूमये जहाँ के निधन का हाल ज्ञात (४८३) हुआ। वह इस समाचार से बड़ा दुःखी हुआ। मख़दूमये जहाँ के दान पुण्य तथा कृपा द्वारा अनेक वंशों का कार्य चलता था। उस पवित्र, चरित्रवती तथा सती सावित्री द्वारा अनेक स्त्री तथा पुरुष, सुख-सम्पन्नता एवं आराम से जीवन व्यतीत करते थे। सुल्तान मुहम्मद आगे की ओर रवाना हुआ। मुल्तान पहुँचने में कुछ ही मंज़िलें रह गईं थी कि उसे शाहू के अधीनता-सम्बन्धी प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुये। उसने विद्रोह त्याग कर पश्चाताप प्रकट किया था। वह मुल्तान छोड़कर अपने अफ़ग़ानों के साथ अफ़ग़ानिस्तान[2] की ओर चल दिया। सुल्तान मार्ग से लौट पड़ा और सुनाम पहुँचा। सुनाम से उसने अगरोहा में पड़ाव किया और वहीं कुछ समय तक रहा। अगरोहा से वह कूच करता हुआ (देहली) पहुँचा। देहली में घोर अकाल पड़ा हुआ था। आदमी-आदमी को खाये जाते थे। सुल्तान मुहम्मद ने कृषि (की उन्नति) के विषय में बड़ा प्रयास किया। कुए खुदवाने का आदेश दिया, किन्तु प्रजा इस आदेश का पालन करने में भी असमर्थ रही। लोगों के मुह से यदि उसके विरुद्ध कुछ निकल जाता तो उन्हें उसके कारण कठोर दण्ड दिये जाते और बहुतों की हत्या करा दी जाती।

सुल्तान का सुनाम, सामाने कैथल तथा कुहराम की ओर प्रस्थान, उन प्रदेशों का विध्वंस कराना, क्योंकि सभी विद्रोही हो गये थे। वहाँ से कोहपाया[3] की ओर प्रस्थान। कोहपाया के रायों का अधीन होना, मुकद्दमों सरान (सरदारों), बेराहों[4], मन्दाहरों[5], जौवान, भट्टों

१ डा० महदी हुसैन के अनुसार इस विद्रोह की तिथि ७४२ हि०। (१३४१ ई०) निश्चित की जा सकती है। यह १६ वाँ विद्रोह था। (महदीहुसेन पृ० १८०)।

२ इससे आधुनिक अफ़ग़ानिस्तान न समझना चाहिये। इब्ने बत्तूता के अनुसार खम्भायत, गुजरात तथा नहरवाला अफ़ग़ानों के मुख्य निवास स्थान थे। यह कहना कठिन है कि वह उन्हीं स्थानों में से कहीं गया। बरनी का अफ़ग़ानिस्तान से अभिप्राय अफ़ग़ानों का निवास स्थान है।

३ पर्वत के नीचे के स्थान।

४ सम्भवतया बुर्रा, एक जाट जाति जो अब डेरा ग़ाज़ी ख़ाँ तथा भावलपुर में पाई जाती थी।

५ एक राजपूत जाति जो कर्नाल, अम्बाला तथा पटियाला में निवास करती थी। (Ibetson, Sir D, (A Glossary of the Tribes and Castes of the Punjab and North-West Frontier Provinces, Lahore, 1916, Vol I P. 135)

(भट्टियों)[1] तथा मनहियान[2] का देहली लाया जाना, उनका मुसलमान होना, और उनका मलिकों तथा अमीरों के सिपुर्द होना एवं शहर (देहली) में रखा जाना।

(४८४) सुल्तान ने दूसरी बार सुनाम तथा सामाने की विलायतों पर आक्रमण किया। वहाँ के विद्रोहियो तथा विरोधियो ने मन्दल[3] बना लिये थे। वे खराज नही अदा करते थे और उपद्रव मचाया करते थे तथा मार्ग में लूटमार किया करते थे। सुल्तान मुहम्मद ने उनके मन्दलो का विनाश कर दिया, उनके दल छिन्न-भिन्न कर दिये। उनके मुकद्दम तथा सरदार शहर (देहली) लाये गये। उनमें से कुछ मुसलमान हो गये। उनके समूह अमीरों को सौंप दिये गये। वे अपने परिवार सहित शहर (देहली) में निवास करने लगे। उन्हे उनकी प्राचीन भूमि से पृथक् कर दिया गया और उस प्रदेश में उनका उपद्रव शान्त हो गया। यात्रियो को लूटमार के भय से मुक्ति प्राप्त हो गई।

वारंगल तथा कम्पिला[4] में विद्रोह[5] :—

जब सुल्तान शहर (देहली) में ही था उसी समय अारगल (वारगल) के हिन्दुओं ने विद्रोह कर दिया। कण्या नायक[6] की उस प्रदेश में शक्ति बढ़ गई। मलिक मकबूल नायब वजीर अारगल (वारगल) से शहर (देहली) की ओर भाग गया और सुरक्षित देहली पहुच गया। अारगल (वारगल) पर हिन्दुओ ने अधिकार जमा लिया और वह प्रदेश पूर्णतया हाथ से निकल गया। उसी समय कण्या के एक सम्बन्धी ने, जिसे सुल्तान मुहम्मद ने कम्पिला की ओर भेजा था, इस्लाम त्याग दिया तथा मुर्तद[7] हो गया और विद्रोह कर दिया। कम्पिला प्रदेश भी सुल्तान के हाथ से निकल गया और हिन्दुओ के हाथ में आ गया[8]। उसे मुर्तदो ने अपने अधिकार में कर लिया।

चारों ओर अशान्ति—

देवगीर (देवगिरि) तथा गुजरात के अतिरिक्त कोई भी स्थान सुव्यवस्थित न रहा। प्रत्येक दिशा में विद्रोह तथा षड्यन्त्र होने लगा। जैसे-जैसे षड्यन्त्र तथा विद्रोह बढते जाते, सुल्तान मुहम्मद प्रजा से खिन्न होता जाता और लोगो को कठोर दण्ड देता। लोगो को जब सुल्तान द्वारा हत्या-काण्ड के समाचार प्राप्त होते तो वे उससे और भी घृणा करने लगते और अशान्ति बढती जाती। सुल्तान मुहम्मद कुछ समय तक देहली में ठहरा रहा। सोन्धार प्रदान करता तथा कृषि की उन्नति का प्रयास करता रहा। वर्षा के न होने के कारण प्रजा का उपकार न हो सका। देहली में अनाज का भाव बढता गया और लोग बहुत बडी

१ जाट तथा भट्टी—सिन्धु तथा सतलज के निचले भाग की एक राजपूत जाति। (Ibetson p. 144)

२ रावलपिंडी, झेलम, सियालकोट तथा गुर्दासपुर की ओर की एक राजपूत जाति। (Ibetson p. 154) बरनी के अनुसार यह सब भिन्न-भिन्न विद्रोही जातियाँ थी।

३ यह शब्द मंडल भी हो सकता है और इसका यह अर्थ हुआ कि संगठित हो गये थे किन्तु यहाँ रक्षा का घेरा समझना चाहिये।

४ होसपेत, तालुका, बेलारी जिले में अनिगुन्दी से ८ मील पूर्व।

५ डा० महदी हुसेन के अनुसार यह ११ वाँ विद्रोह था, जो लगभग १३३६ ई० के हुआ। (महदी हुसेन पृ० १६१-६२)।

६ कृष्ण नायक।

७ इस्लाम त्याग देने वाला मुर्तद कहलाता है।

८ तबकाते फिरिश्ता के अनुवाद में इस विषय पर विस्तार से [illegible] किया गया है।

(४८५) सख्या में नष्ट होने लगे। यद्यपि सुल्तान बदायूँ तथा कटिहर[1] की ओर चरागाह की खोज में एक दो बार गया और कई दिनो तक भ्रमण करके देहली लौट आया किन्तु फिर भी किसी का उपकार न हुआ। अकाल के कारण कष्टो में वृद्धि होती गई। लोग भूख से तथा चौपाये चारे के अभाव से मरते ही गये। इस घोर अकाल के कारण सुल्तान मुहम्मद राज्य व्यवस्था सम्बन्धी महत्त्वाकाक्षाओ की पूर्ति न कर सकता था।

सुल्तान मुहम्मद का सुर्गद्वारी (स्वर्गद्वारी) की ओर प्रस्थान तथा कुछ समय तक वहाँ निवास करना।

जब सुल्तान मुहम्मद ने देखा कि किसी प्रकार देहली वालों को अनाज तथा चारे के अभाव से मुक्ति नही प्राप्त होती और बिना वर्षा के कृषि किसी प्रकार सम्भव नही और देहली की प्रजा का कष्ट दिन प्रति दिन बढता जा रहा है तो उसने आदेश दिया कि शहर (देहली) के निवासियों को द्वार तथा चहारदीवारी हिन्दुस्तान की ओर, अपने परिवार सहित प्रस्थान करने से न रोकें[2]। प्रजा को हिन्दुस्तान की ओर जाने की आज्ञा प्रदान की गई जिससे वे कुछ समय तक के लिये अकाल के कष्ट से मुक्त हो सके। उन्हे उस स्थान पर स्वय तथा अपने परिवार सहित रहने की अनुमति प्रदान कर दी गई। प्रजा बहुत बडी सख्या में अनाज के अभाव के कारण हिन्दुस्तान की ओर अपने परिवारो सहित चली जा चुकी थी[3]।

सुल्तान मुहम्मद भी शहर (देहली) से बाहर निकला और यहाँ से पटियाली[4] कम्पिला[5] से होता हुआ खोर[6] कस्बे के आगे गगा तट पर उतर पडा और उसी स्थान पर सेना के साथ निवास करने लगा। लोगो ने उसी स्थान पर छप्पर डाल लिये और वही निवास करने लगे। उस ग्राम का नाम स्वर्गद्वारी पड गया। अवध तथा कडे से उस स्थान पर अनाज पहुँचाने लगा और शहर (देहली) की अपेक्षा वहा अनाज सस्ता था।

ऐनुल मुल्क के विद्रोह के कारण—

जिस समय सुल्तान मुहम्मद स्वर्गद्वारी में निवास कर रहा था, मलिक ऐनुलमुल्क, अवध तथा जफराबाद[7] की अक्ता का स्वामी था। मलिक ऐनुलमुल्क के भाइयो ने वहाँ भीषण युद्ध करके अवध तथा जफराबाद के विद्रोहियो को कठोर दण्ड दिये थे और दोनो (४८६) अक्ताओं का सुव्यवस्थित कर दिया था। जिस समय सुल्तान मुहम्मद का पडाव स्वर्गद्वारी में था, उस समय अनाज तथा चारे की ओर से देहली की अपेक्षा सुगमता प्राप्त हो गई थी। मलिक ऐनुलमुल्क तथा उसके भाइयो ने केवल स्वर्गद्वारी ही में नही वरन् देहली में भी धन-सम्पत्ति, भोजन सामग्री, अनाज तथा वस्त्र आदि भेजे थे। इन सब का मूल्य लगभग ७० या ८० लाख तन्क था। सुल्तान मुहम्मद को ऐनुलमुल्क के प्रति बडी श्रद्धा

१ पुस्तक में कान्दर है परन्तु इसे कटिहर अथवा आधुनिक रुहेलखण्ड होना चाहिये।

२ उन्हें जाने की अनुमति प्रदान की।

३ बरनी के आगे के कथन से भी इस वाक्य की पुष्टि होती है।

४ उत्तर प्रदेश के एटा जिले में।

५ कम्पिला उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले मे।

६ उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले की कायमगज तहसील में शम्साबाद से तीन मील दूर। रामपुर की तारीखे फीरोज शाही की हस्तलिखित पोथी मे खोरा है। "सुल्तान ने खोरा कस्बे के आगे गगा तट पर एक ऊचा स्थान देखा और उसे अपने निवास के लिये निश्चित कर लिया"। (तारीखे फीरोज शाही, रामपुर पृ० २६२)।

७ जौनपुर से पौने पाँच मील दक्षिण पूर्व।

(भट्टियों)[1] तथा मनहियान[2] का देहली लाया जाना, उनका मुसलमान होना, और उनका मलिकों तथा अमीरों के सिपुर्द होना एवं शहर (देहली) में रक्खा जाना।

(४८४) सुल्तान ने दूसरी बार सुनाम तथा सामाने की विलायतो पर आक्रमण किया। वहाँ के विद्रोहियो तथा विरोधियो ने मन्दल[3] बना लिये थे। वे खराज नही अदा करते थे और उपद्रव मचाया करते थे तथा मार्ग में लूटमार किया करते थे। सुल्तान मुहम्मद ने उनके मन्दलों का विनाश कर दिया, उनके दल छिन्न-भिन्न कर दिये। उनके मुकद्दम तथा सरदार शहर (देहली) लाये गये। उनमें से कुछ मुसलमान हो गये। उनके समूह अमीरों को सौंप दिये गये। वे अपने परिवार सहित शहर (देहली) में निवास करने लगे। उन्हें उनकी प्राचीन भूमि से पृथक् कर दिया गया और उस प्रदेश में उनका उपद्रव शान्त हो गया। यात्रियों को लूटमार के भय से मुक्ति प्राप्त हो गई।

वारंगल तथा कम्पिला[4] में विद्रोह[5] :—

जब सुल्तान शहर (देहली) में ही था उसी समय अरंगल (वारंगल) के हिन्दुओं ने विद्रोह कर दिया। कण्या नायक[6] की उस प्रदेश में शक्ति बढ गई। मलिक मक़बूल नायब वज़ीर अरंगल (वारंगल) से शहर (देहली) की ओर भाग गया और सुरक्षित देहली पहुँच गया। अरंगल (वारंगल) पर हिन्दुओं ने अधिकार जमा लिया और वह प्रदेश पूर्णतया हाथ से निकल गया। उसी समय कण्या के एक सम्बन्धी ने, जिसे सुल्तान मुहम्मद ने कम्पिला की ओर भेजा था, इस्लाम त्याग दिया तथा मुर्तद[7] हो गया और विद्रोह कर दिया। कम्पिला प्रदेश भी सुल्तान के हाथ से निकल गया और हिन्दुओं के हाथ में आ गया[8]। उसे मुर्तदों ने अपने अधिकार में कर लिया।

चारों ओर अशान्ति—

देवगीर (देवगिरि) तथा गुजरात के अतिरिक्त कोई भी स्थान सुव्यवस्थित न रहा। प्रत्येक दिशा में विद्रोह तथा षड्यन्त्र होने लगा। जैसे-जैसे षड्यन्त्र तथा विद्रोह बढ़ते जाते, सुल्तान मुहम्मद प्रजा से खिन्न होता जाता और लोगों को कठोर दण्ड देता। लोगों को जब सुल्तान द्वारा हत्या-काण्ड के समाचार प्राप्त होते तो वे उससे और भी घृणा करने लगते और अशान्ति बढती जाती। सुल्तान मुहम्मद कुछ समय तक देहली में ठहरा रहा। सोन्धार प्रदान करता तथा कृषि की उन्नति का प्रयास करता रहा। वर्षा के न होने के कारण प्रजा का उपकार न हो सका। देहली में अनाज का भाव बढता गया और लोग बहुत बड़ी

---

१ जाट तथा भट्टी—सिन्धु तथा सतलज के निचले भाग की एक राजपूत जाति। (*Ibetson p. 144*)

२ रावलपिंडी, झेलम, सियालकोट तथा गुर्दासपुर की ओर की एक राजपूत जाति। (Ibetson p. 154) बरनी के अनुसार यह सब भिन्न-भिन्न विद्रोही जातियाँ थी।

३ यह शब्द मंडल भी हो सकता है और इसका यह अर्थ हुआ कि संगठित हो गये थे किन्तु यहाँ रक्षा का घेरा समझना चाहिये।

४ होसपेत, तालुका, बेलारी ज़िले में अनिगुन्दी से ८ मील पूर्व।

५ डा० महदी हुसेन के अनुसार यह ११ वाँ विद्रोह था, जो लगभग १३३६ ई० के हुआ। (महदी हुसैन पृ० १६१-६२)।

६ कृष्ण नायक।

७ इस्लाम त्याग देने वाला मुर्तद कहलाता है।

८ तत्सम्बन्धी फ़िरिश्ता के अनुवाद में इस विषय पर विस्तार से नोट लिखा गया है।

४८५) सख्या में नष्ट होने लगे। यद्यपि सुल्तान बदायूँ तथा कटिहर[1] की ओर चरागाह की खोज में एक दो बार गया और कई दिनो तक भ्रमण करके देहली लौट आया किन्तु फिर भी किसी का उपकार न हुआ। अकाल के कारण कष्टों में वृद्धि होती गई। लोग भूख से तथा चौपाये चारे के अभाव से मरते ही गये। इस घोर अकाल के कारण सुल्तान मुहम्मद राज्य व्यवस्था सम्बन्धी महत्त्वाकाक्षाओं की पूर्ति न कर सकता था।

सुल्तान मुहम्मद का सुर्गद्वारी (स्वर्गद्वारी) की ओर प्रस्थान तथा कुछ समय तक वहाँ निवास करना।

जब सुल्तान मुहम्मद ने देखा कि किसी प्रकार देहली वालो को अनाज तथा चारे के अभाव से मुक्ति नही प्राप्त होती और बिना वर्षा के कृषि किसी प्रकार सम्भव नही और देहली की प्रजा का कष्ट दिन प्रति दिन बढता जा रहा है तो उसने आदेश दिया कि शहर (देहली) के निवासियों को द्वार तथा चहारदीवारी हिन्दुस्तान की ओर, अपने परिवार सहित प्रस्थान करने से न रोकें[2]। प्रजा को हिन्दुस्तान की ओर जाने की आज्ञा प्रदान की गई जिससे वे कुछ समय तक के लिये अकाल के कष्ट से मुक्त हो सके। उन्हे उस स्थान पर स्वय तथा अपने परिवार सहित रहने की अनुमति प्रदान कर दी गई। प्रजा बहुत बडी सख्या में अनाज के अभाव के कारण हिन्दुस्तान की ओर अपने परिवारो सहित चली जा चुकी थी[3]।

सुल्तान मुहम्मद भी शहर (देहली) से बाहर निकला और यहाँ से पटियाली[4] कम्पिला[5] से होता हुआ खोद[6] कस्बे के आगे गंगा तट पर उतर पडा और उसी स्थान पर सेना के साथ निवास करने लगा। लोगो ने उसी स्थान पर छप्पर डाल लिये और वही निवास करने लगे। उस ग्राम का\नाम स्वर्गद्वारी पड गया। अवध तथा कडे से उस स्थान पर अनाज पहुँचाने लगा और शहर (देहली) की अपेक्षा वहा अनाज सस्ता था।

ऐनुल मुल्क के विद्रोह के कारण—

जिस समय सुल्तान मुहम्मद स्वर्गद्वारी में निवास कर रहा था, मलिक ऐनुलमुल्क, अवध तथा ज़फराबाद[7] की अक्ता का स्वामी था। मलिक ऐनुलमुल्क के भाइयों ने वहाँ भीषण युद्ध करके अवध तथा ज़फराबाद के विद्रोहियो को कठोर दण्ड दिये थे और दोनो (४८६) अक्ताओ को सुव्यवस्थित कर दिया था। जिस समय सुल्तान मुहम्मद का पडाव स्वर्गद्वारी में था, उस समय अनाज तथा चारे की ओर से देहली की अपेक्षा सुगमता प्राप्त हो गई थी। मलिक ऐनुलमुल्क तथा उसके भाइयों ने केवल स्वर्गद्वारी ही में नही वरन् देहली में भी धन-सम्पत्ति, भोजन सामग्री, अनाज तथा वस्त्र आदि भेजे थे। इन सब का मूल्य लगभग ७० या ८० लाख तन्के था। सुल्तान मुहम्मद की ऐनुलमुल्क के प्रति बडी श्रद्धा

१ पुस्तक में कान्हर है परन्तु इसे कटिहर अथवा आधुनिक रुहेलखण्ड होना चाहिये।

२ उन्हें जाने की अनुमति प्रदान की।

३ बरनी के आगे के कथन से भी इस वाक्य की पुष्टि होती है।

४ उत्तर प्रदेश के एटा जिले में।

५ कम्पिला उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले में।

६ उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले की कायमगंज तहसील में शम्साबाद से तीन मील दूर। रामपुर की तारीखे फीरोज शाही की हस्तलिखित पोथी में खोरा है। "सुल्तान ने खोरा कस्बे के आगे गंगा तट पर एक ऊँचा स्थान देखा और उसे अपने निवास के लिये निश्चित कर लिया"। (तारीखे फीरोज शाही, रामपुर पृ० २९२)।

७ जौनपुर से पौने पाँच मील दक्षिण-पूर्व।

हो गई थी और वह उसकी योग्यता पर विश्वास करने लगा था। इससे पूर्व सुल्तान को देवगीर (देवगिरि) से निरन्तर यह समाचार प्राप्त होते रहते थे कि कुतलुग खाँ के कारकुन लोभ तथा स्वार्थ में पड चुके हैं, उन्होने कर कम कर दिया है। सुल्तान मुहम्मद के हृदय में यह आया कि वह ऐनुलमुल्क को देवगीर (देवगिरि) की विजारत प्रदान करदे और उसको तथा उसके भाइयो, सहायको तथा घरबार को देवगीर (देवगिरि) की ओर भेज दे[1]। कुतलुग खाँ उसके घरबार तथा सहायको को देवगीर (देवगिरि) से देहली में बुला ले।

जब यह सूचना ऐनुलमुल्क तथा उसके भाइयो को प्राप्त हुई तो वे बडे भयभीत हुये। वे इसे सुल्तान का छल समझने लगे क्योकि उन लोगो ने उस प्रदेश में कई वर्षों से अपना अधिकार स्थापित कर रक्खा था। देहली के प्रतिष्ठित तथा गण्य-मान्य व्यक्ति विशेषकर नवीसिन्दे (कारणिक) सुल्तान के दण्ड के भय से धीरे-धीरे अनाज की महगाई का बहाना करके अपने परिवार सहित अवध तथा जफराबाद में पहुँच चुके थे। कुछ लोग ऐनुलमुल्क तथा उसके भाइयो के सेवक हो गये थे, कुछ लोगो को मुकातेआ पर ग्राम प्राप्त हो गये थे और उन्होने सुल्तान के दण्ड के भय से उसकी शरण ग्रहण करली थी। सुल्तान को प्रजा का प्रस्थान तथा उनकी शरण में पहुँच जाना बार बार ज्ञात होता रहता था। सुल्तान इससे अधिक खिन्न होता था किन्तु सुल्तान ने यह बात कभी किसी से न कही और इसे अपने हृदय में ही रक्खा कि वह उन लोगो के इस कार्य से असन्तुष्ट है। एक दिन उसने स्वर्गद्वारी से ऐनुलमुल्क के पास सन्देश भेजा कि उन योग्य तथा अनुभवी लोगो को एव जिन्हे कठोर दण्ड दिये जाने का (४८७) आदेश हो चुका था और जो देहली से अवध तथा जफराबाद पहुँच चुके थे, बन्दी बना कर देहली भेज दिया जाय। देहली के विशेष तथा साधारण व्यक्तियो में से जो उसकी भक्ता में पहुंच गये हो, चाहे उनकी इच्छा हो अथवा न हो उन्हे पुन देहली भेज दिया जाय। इस सन्देश तथा सुल्तान के क्रोध से ऐनुलमुल्क और उसके भाइयो का भय और बढ गया। वे समझ गये कि उन्हे छल द्वारा देवगीर (देवगिरि) भेजा जा रहा है और वही उनकी हत्या करा दी जायगी। इस कारण वे उससे घृणा करने लगे और गुप्त रूप से विद्रोह में तल्लीन हो गये।[2]

निजाम माईं का विद्रोह[3]—

जिस समय सुल्तान दहली में था और फिर वहां से स्वर्गद्वारी में निवास करने के लिये गया, चार विद्रोह शीघ्र शीघ्र हुये और उन्हें शान्त कर दिया गया। सुल्तान मुहम्मद को

१ "मैं तारीखे फीरोजशाही का संकलनकर्त्ता सुल्तान के नदीमों (मुसाहिबों) में थोड़ा बहुत सम्मान रखता था। मैं ने सुल्तान द्वारा सुना था कि वह बार बार कहता था कि ऐनुलमुल्क ने अपनी योग्यता से हमारे लिये इतनी धन सम्पत्ति अवध तथा जफराबाद से पहुँचाई है। देवगीर (देवगिरि) अवध तथा जफराबाद की अपेक्षा सौ गुना है। देखता हूँ कि वह उस स्थान से कितनी सम्पत्ति तथा खजाना भेजता है। ऐनुल मुल्क तथा उसके भाई अपने पदच्युत होने का हाल सुना करते थे। सुल्तान अत्यधिक कठोर दण्ड देता था। दूसरे उनके वहाँ जड़ पकड लेने तथा शहर (देहली) वालों से उनके पत्र-व्यवहार का हाल सुल्तान ने बहुत सुन रखा था। तीसरे उन लोगों ने समझा कि देवगीर (देवगिरि) का पद इन्हें छल द्वारा दिया जा रहा है अन्यथा कुतलुग खाँ को, जो सुल्तान का गुरु है और वर्षों से वहाँ का वाली तथा वजीर है एव जड पकड़ चुका है, किस प्रकार हटाया जाता और हमें प्रदान किया जाता। वे अपनी मूर्खता के कारण सुल्तान से भयभीत हो गये। (तारीखे फीरोजशाही, रामपुर, पृ० २६३)

२ सुल्तान १३३८ ई० के अन्त से १३४१ ई० तक स्वर्गद्वारी में रहा। इस बीच मे चार विद्रोह हुये। १५, १६, १७, १८ (महदी हुसेन पृ० १६५)।

१५ वाँ विद्रोह १३३८ ई० (महदी हुसेन पृ० १६५)।

विद्रोहियो पर विजय प्राप्त हुई। सर्व प्रथम निज़ाम माई[1] ने कड़े में विद्रोह किया। निज़ाम माई बड़ा भगड़ी, भगी तथा ख़ुराफ़ाती[1] था। उसने बकवादी तथा प्रलापी होने के कारण कड़े की अक्ता कई लाख तन्के के मुक़ातेये (ठेके) पर प्राप्त कर ली। उसने वहाँ पहुँच कर बहुत हाथ पैर मारे। चूंकि उसके पास कोई धन-सम्पत्ति, तथा सहायक न थे और उसका कोई आधार न था, अत उसे अपने मुक़ातेये से कोई लाभ न हुआ। जो कुछ उसने अदा करने के लिये लिख कर दिया था, उसका दसवाँ भाग भी वह वसूल न कर सका। अपने आप को बेचने वाले कुछ गुलामो को मोल लेकर तथा कुछ भगड़ी पायको को अपना मित्र बना कर बिना किसी आधार के, शक्ति तथा धन-सम्पत्ति के बिना विद्रोह कर दिया। चत्र धारण कर लिया। अपनी उपाधि सुल्तान अलाउद्दीन निश्चित की। जब यह सूचना देहली पहुँची तो इससे पूर्व कि सुल्तान मुहम्मद कोई सेना उससे युद्ध करने के लिये शहर (देहली) से भेजता, ऐनुलमुल्क तथा उसके भाइयो ने अवध से निज़ाम माई पर आक्रमण कर दिया और उसके विद्रोह को शान्त कर दिया। निज़ाम माई की खाल खिचवा कर शहर (देहली) भेज दी। (४८८) सुल्तान का आदेश पहुचने के पूर्व ही यह विजय ऐनुलमुल्क द्वारा प्राप्त हुई थी। देहली से सुल्तान मुहम्मद की बहिन का पति शेखज़ादा बस्तामी कड़े की ओर भेजा गया और कड़े की अक्ता उसे प्रदान कर दी गई। वह निज़ाम माई के साथी विद्रोहियो को राजसिंहासन के आदेशानुसार कठोर दण्ड देने में बड़ा पथ-भ्रष्ट हो गया।

शिहाबे सुल्तानी का विद्रोह[2] :—

इसी बीच में, शिहाबे सुल्तानी ने बिदर में विद्रोह कर दिया। यह दूसरा विद्रोह था। इस शिहाबे सुल्तानी ने, जिसकी उपाधि नुसरत खाँ निश्चित हुई थी बिदर तथा उससे सम्बन्धित समस्त अक्ताओ को राजसिंहासन के समक्ष तीन वर्ष के लिये एक करोड कर मुक़ातेये (ठेके) पर अदा करने का वचन देकर प्राप्त कर लिया था। इस मुक़ातेये के विषय में स्वीकृति-पत्र लिखकर दे दिया था। उसने वहाँ पहुच कर बड़ी योग्यता तथा बुद्धिमत्ता से प्रबन्ध किया किन्तु फिर भी मुक़ातेये (ठेके) का तीन चौथाई कर भी प्राप्त न कर सका। वह सुल्तान के कठोर दण्ड के समाचार निरतर बिदर में सुना करता था। बक्काल पेशा होने के कारण वह आतकित तथा विवश था। दण्ड तथा अपमान के भय से उसने विद्रोह कर दिया और बिदर के किले में बन्द होकर बैठ रहा। कुतलुग खाँ देवगीर (देवगिरि) से उसका विद्रोह शान्त करने के लिये नियुक्त हुआ। देहली के कुछ मलिक तथा अमीर एव धार की सेना कुतलुग खाँ के साथ बिदर भेजी गई। वह सेना लेकर बिदर पहुँचा और वहाँ के किले पर विजय प्राप्त करली। शिहाबे सुल्तानी को बन्दी बनाकर सुल्तान के दरबार में भेज दिया। वह विद्रोह शान्त हो गया और वह विलायत भी सुव्यवस्थित हो गई।

अली शाह का गुलबर्गे में विद्रोह[3] :—

कुछ महीनों के उपरान्त अली शाह ने, जोकि ज़फ़र खाँ[4] अलाई का भानजा था, उसी प्रदेश में विद्रोह कर दिया। यह तीसरा विद्रोह था। अली शाह, कुतलुग खाँ का अमीर सदा[5]

१ ये शब्द बरनी के ही हैं।

२ १६ वाँ विद्रोह, १३३८ ई० (महदी हुसेन पृ० १६५)।

३ १७ वाँ विद्रोह, १३३९ ई० (महदी हुसेन पृ० १६६)।

४ ज़फ़र खाँ ने सुल्तान अलाउद्दीन के राज्यकाल में मंगोलों पर विजय के कारण अपनी वीरता के लिये बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त करली थी। (बरनी पृ० २६०-६१; ख़लजी कालीन भारत पृ० ५२-५३)।

५ १०० सैनिकों के अधिकारी।

हो गई थी और वह उसकी योग्यता पर विश्वास करने लगा था। इससे पूर्व सुल्तान को देवगीर (देवगिरि) से निरन्तर यह समाचार प्राप्त होते रहते थे कि कुतलुग खाँ के कारकुन लोभ तथा स्वार्थ में पड चुके हैं, उन्होने कर कम कर दिया है। सुल्तान मुहम्मद के हृदय में यह आया कि वह ऐनुलमुल्क को देवगीर (देवगिरि) की विजारत प्रदान करदे और उसको तथा उसके भाइयो, सहायकों तथा घरबार को देवगीर (देवगिरि) की ओर भेज दे[1]। कुतलुग खाँ उसके घरबार तथा सहायकों को देवगीर (देवगिरि) से देहली में बुला ले।

जब यह सूचना ऐनुलमुल्क तथा उसके भाइयो को प्राप्त हुई तो वे बडे भयभीत हुये। वे इसे सुल्तान का छल समझने लगे क्योंकि उन लोगो ने उस प्रदेश में कई वर्षों से अपना अधिकार स्थापित कर रक्खा था। देहली के प्रतिष्ठित तथा गण्य-मान्य व्यक्ति विशेषकर नवीसिन्दे (कारणिक) सुल्तान के दण्ड के भय से धीरे-धीरे अनाज की महगाई का बहाना करके अपने परिवार सहित अवध तथा जफराबाद में पहुँच चुके थे। कुछ लोग ऐनुलमुल्क तथा उसके भाइयो के सेवक हो गये थे, कुछ लोगो को मुकातेआ पर ग्राम प्राप्त हो गये थे और उन्होने सुल्तान के दण्ड के भय से उसकी शरण ग्रहण करली थी। सुल्तान को प्रजा का प्रस्थान तथा उनकी शरण में पहुँच जाना बार बार ज्ञात होता रहता था। सुल्तान इससे अधिक खिन्न होता था किन्तु सुल्तान ने यह बात कभी किसी से न कही और इसे अपने हृदय में ही रक्खा कि वह उन लोगो के इस कार्य से असन्तुष्ट है। एक दिन उसने स्वर्गद्वारी से ऐनुलमुल्क के पास सन्देश भेजा कि उन योग्य तथा अनुभवी लोगो को एव जिन्हे कठोर दण्ड दिये जाने का (४८७) आदेश हो चुका था और जो देहली से अवध तथा जफराबाद पहुँच चुके थे, बन्दी बना कर देहली भेज दिया जाय। देहली के विशेष तथा साधारण व्यक्तियों में से जो उसकी भक्ता में पहुच गये हो, चाहे उनकी इच्छा हो अथवा न हो उन्हे पुन देहली भेज दिया जाय। इस सन्देश तथा सुल्तान के क्रोध से ऐनुलमुल्क और उसके भाइयो का भय और बढ गया। वे समझ गये कि उन्हे छल द्वारा देवगीर (देवगिरि) भेजा जा रहा है और वही उनकी हत्या करा दी जायगी। इस कारण वे उससे घृणा करने लगे और गुप्त रूप से विद्रोह में तल्लीन हो गये।[2]

निज़ाम माईं का विद्रोह[3]—

जिस समय सुल्तान देहली में था और फिर वहाँ से स्वर्गद्वारी में निवास करने के लिये गया, चार विद्रोह शीघ्र-शीघ्र हुये और उन्हे शान्त कर दिया गया। सुल्तान मुहम्मद को

---

१ "मैं तारीखे फीरोजशाही का संकलनकर्ता सुल्तान के नदीमों (मुसाहिबों) मे थोड़ा बहुत सम्मान रखता था। मैं ने सुल्तान द्वारा सुना था कि वह बार बार कहता था कि ऐनुलमुल्क ने अपनी योग्यता मे हमारे लिये इतनी धन सम्पत्ति अवध तथा जफराबाद से पहुँचाई है। देवगीर (देवगिरि), अवध तथा जफराबाद की अपेक्षा सौ गुना है। देखता हूँ कि वह उस स्थान मे कितनी सम्पत्ति तथा खजाना भेजता है। ऐनुल मुल्क तथा उसके भाई अपने पदच्युत होने का हाल सुना करते थे। सुल्तान अत्यधिक कठोर दण्ड देता था। दूसरे उनके वहाँ जड़ पकड लेने तथा शहर (देहली) वालों से उनके पत्र-व्यवहार का हाल सुल्तान ने बहुत सुन रखा था। तीसरे उन लोगों ने समझा कि देवगीर (देवगिरि) का पद इन्हें छल द्वारा दिया जा रहा है अन्यथा कुतलुग खाँ को, जो सुल्तान का गुरु है और वर्षों मे वहाँ का वाली तथा वजीर है एवं जड़ पकड़ चुका है, किस प्रकार हटाया जाता और हमें प्रदान किया जाता। वे अपनी मूर्खता के कारण सुल्तान से भयभीत हो गये। (तारीखे फीरोजशाही, रामपुर, पृ० २६३)

सुल्तान १३३८ ई० के अन्त मे १३४१ ई० तक स्वर्ग द्वारी में रहा। इस बीच में चार विद्रोह हुये। १५, १६, १७, १८ (महदी हुसेन पृ० १६५)।

१५ वाँ विद्रोह १३३८ ई० (महदी हुसेन पृ० १६५)।

विद्रोहियो पर विजय प्राप्त हुई। सर्व प्रथम निज़ाम माईं ने कड़े में विद्रोह किया। निज़ाम माईं बड़ा भगड़ी, भगी तथा ख़ुराफ़ाती[1] था। उसने बकवादी तथा प्रलापी होने के कारण कड़े की अक्ता कई लाख तन्के के मुकातेये (ठेके) पर प्राप्त कर ली। उसने वहाँ पहुँच कर बहुत हाथ पैर मारे। चूँकि उसके पास कोई धन-सम्पत्ति, तथा सहायक न थे और उसका कोई आधार न था, अत उसे अपने मुकातेये से कोई लाभ न हुआ। जो कुछ उसने अदा करने के लिये लिख कर दिया था, उसका दसवाँ भाग भी वह वसूल न कर सका। अपने आप को बेचने वाले कुछ गुलामो को मोल लेकर तथा कुछ भगड़ी पायकों को अपना मित्र बना कर बिना किसी आधार के, शक्ति तथा धन-सम्पत्ति के बिना विद्रोह कर दिया। चत्र धारण कर लिया। अपनी उपाधि सुल्तान अलाउद्दीन निश्चित की। जब यह सूचना देहली पहुँची तो इससे पूर्व कि सुल्तान मुहम्मद कोई सेना उससे युद्ध करने के लिये शहर (देहली) से भेजता, ऐनुलमुल्क तथा उसके भाइयो ने अवध से निज़ाम माईं पर आक्रमण कर दिया और उसके विद्रोह को शान्त कर दिया। निज़ाम माईं की खाल खिंचवा कर शहर (देहली) भेज दी। (४८८) सुल्तान का आदेश पहुचने के पूर्व ही यह विजय ऐनुलमुल्क द्वारा प्राप्त हुई थी। देहली से सुल्तान मुहम्मद की बहिन का पति शेखज़ादा बस्तामी कड़े को और भेजा गया और कड़े की अक्ता उसे प्रदान कर दी गई। वह निज़ाम माईं के साथी विद्रोहियो को राजसिंहासन के आदेशानुसार कठोर दण्ड देने में बड़ा पथ-भ्रष्ट हो गया।

शिहाबे सुल्तानी का विद्रोह[2] :—

इसी बीच में, शिहाबे सुल्तानी ने बिदर में विद्रोह कर दिया। यह दूसरा विद्रोह था। इस शिहाबे सुल्तानी ने, जिसकी उपाधि नुसरत खाँ निश्चित हुई थी बिदर तथा उससे सम्बन्धित समस्त अक्ताओ को राजसिंहासन के समक्ष तीन वर्ष के लिये एक करोड़ कर मुकातेये (ठेके) पर अदा करने का वचन देकर प्राप्त कर लिया था। इस मुकातेये के विषय में स्वीकृति-पत्र लिखकर दे दिया था। उसने वहाँ पहुच कर बड़ी योग्यता तथा बुद्धिमत्ता से प्रबन्ध किया किन्तु फिर भी मुकातेये (ठेके) का तीन चौथाई कर भी प्राप्त न कर सका। वह सुल्तान के कठोर दण्ड के समाचार निरतर बिदर में सुना करता था। बक्काल पेशा होने के कारण वह आतंकित तथा विवश था। दण्ड तथा अपमान के भय से उसने विद्रोह कर दिया और बिदर के किले में बन्द होकर बैठ रहा। कुतलुग खाँ देवगीर (देवगिरि) से उसका विद्रोह शान्त करने के लिये नियुक्त हुआ। देहली के कुछ मलिक तथा अमीर एव धार की सेना कुतलुग खाँ के साथ बिदर भेजी गई। वह सेना लेकर बिदर पहुँचा और वहाँ के किले पर विजय प्राप्त करली। शिहाबे सुल्तानी को बन्दी बनाकर सुल्तान के दरबार में भेज दिया। वह विद्रोह शान्त हो गया और वह विलायत भी सुव्यवस्थित हो गई।

अली शाह का गुलबर्गे में विद्रोह[3] :—

कुछ महीनों के उपरान्त अली शाह ने, जोकि ज़फ़र खाँ[4] अलाई का भानजा था, उसी प्रदेश में विद्रोह कर दिया। यह तीसरा विद्रोह था। अली शाह, कुतलुग खाँ का अमीर सदा[5]

१ ये शब्द बरनी के ही हैं।

२ १६ वाँ विद्रोह, १३३८-३६ ई० (महदी हुसेन पृ० १६५)।

३ १७ वाँ विद्रोह, १३३६ ई० (महदी हुसेन पृ० १६६)।

४ ज़फ़र खाँ ने सुल्तान अलाउद्दीन के राज्यकाल में मंगोलों पर विजय के कारण अपनी वीरता के लिये बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त करली थी। (बरनी पृ० २६०-६१; ख़लजी कालीन भारत पृ० ५२ ५३)।

५ १०० सैनिकों के अधिकारी।

था। वह देवगीर (देवगिरि) से कर वसूल करने के लिये गुलबर्गे गया था। उस स्थान पर सवार, प्यादे, मुक्ते तथा वाली न पाकर उसने अपने भाइयों को अपनी ओर मिला लिया और गुलबर्गे के मुतसर्रिफ मीरन की हत्या करदी। वहाँ की धन-सम्पत्ति लूट ली। वहाँ से बिदर की ओर प्रस्थान किया। वहाँ के नायब की भी हत्या करदी। बिदर तथा गुलबर्गा दोनो ही अपने अधिकार में कर लिये और विद्रोह तथा अत्याचार प्रारम्भ कर दिया। सुल्तान मुहम्मद ने कुतलुग खाँ को पुन उस ओर भेजा। देहली के कुछ मलिक तथा अमीर एव धार की सेना कुतलुग खाँ के साथ भेजी। कुतलुग खाँ ने सेना लेकर देवगीर (देवगिरि) से (४८६) उस ओर प्रस्थान किया। विद्रोही अली शाह ने आगे बढ कर कुतलुग खाँ से युद्ध किया और पराजित होगया। वह भाग कर बिदर के क़िले में घुस गया। कुतलुग खाँ इस बार भी बिदर पहुचा और बिदर को घेर लिया। विद्रोही तथा षडयन्त्रकारी अली शाह और उसके भाइयों को बन्दी बना कर किले से निकाल लाया और उन्हें सुल्तान मुहम्मद के पास स्वर्गद्वारी भेज दिया। इस प्रकार वह विद्रोह शान्त हो गया और वहाँ की प्रजा को शान्ति प्राप्त हो गई। सुल्तान मुहम्मद ने अली शाह तथा उसके भाइयों को गज़नी भेज दिया किन्तु वे वहाँ से फिर लौट आये और दोनो भाइयो की (महल) के द्वार के समक्ष हत्या कराही गई।

ऐनुलमुल्क का विद्रोह[1]—

उन्हीं दिनो में चौथा विद्रोह ऐनुलमुल्क तथा उसके भाइयों का स्वर्गद्वारी में हुआ। ऐनुलमुल्क सुल्तान मुहम्मद का मित्र तथा विश्वासपात्र रह चुका था। वह सुल्तान मुहम्मद के क्रोध तथा सुल्तान की कठोरता एव आतंक से बहुत भयभीत था। वह अपने विचार में अपने आपको मृत्यु के निकट देखता था। उसने सुल्तान से अपने भाइयो तथा अवध और जफराबाद की सेना लाने की अनुमति प्राप्त करली। वह उन्हें स्वर्गद्वारी के निकट कुछ कोस तक ले गया। अचानक एक आधी रात में वह स्वर्गद्वारी से भाग कर अवध तथा जफराबाद की सेना के शिविर में अपने भाइयों के पास पहुँच गया। उसके भाई ३-४ हज़ार[2] सवारों की सेना लेकर गगा नदी पार करके स्वर्गद्वारी की ओर पहुच गये। उन्होंने हाथियों तथा घोडो के गल्लों को, जो उन्हें मार्ग में चरते हुये मिले, पकड लिया और उन्हें अपनी सेना में ले गये। स्वर्गद्वारी में बहुत बडा कोलाहल मच गया। सुल्तान मुहम्मद ने सामाने, अमरोहे, बरन तथा कोल की सेनायें बुलवाईं। अहमद अयाज[3] की सेना भी उन दिनो वहीं पहुँच गई। सुल्तान मुहम्मद ने कुछ दिनो तक स्वर्गद्वारी में रुक कर तैयारी की और कन्नौज की ओर चढाई करदी। कन्नौज के निकट सेना के शिविर लगा दिये।

(४९०) ऐनुलमुल्क तथा उसके भाई युद्ध विद्या का कोई ज्ञान न रखते थे। वे वीर तथा पराक्रमी न थे। उन्हें इस कार्य (युद्ध) का कोई अनुभव प्राप्त न था। वे सुल्तान मुहम्मद से युद्ध के लिए तैयार हो गये यद्यपि सुल्तान मुहम्मद उसका पिता तथा चाचा मुगलों तथा खुरासान की सेना से युद्ध कर चुके थे और मुगलो पर बीसियों बार विजय प्राप्त कर चुके थे। उन्होंने खुसरो खाँ तथा खुसरो खानियों (खुसरो खाँ के सहायकों) से तलवार, तीर गदा तथा भाले द्वारा युद्ध करके देहली का राज्य हिन्दुओं तथा बरवारों से छीन लिया था।

---

१ १८ वाँ विद्रोह १३४० ई० (महदी हुसेन पृ० १६६-६७)।

२ पुस्तक में सी सद व हज़ार सद है जिसका अर्थ ३००० व ४००० है किन्तु यह चेहल सद होना चाहिये और इस प्रकार संख्या ३-४ हज़ार हो जाती है।

३ पुस्तक में अहमदाबाद है किन्तु यह अहमद अयाज होना चाहिये। (होदीवाला पृ० २६७)।

विद्रोहियों ने मूर्खता तथा अनुभव-शून्यता के कारण गंगा नदी, बाँगरमऊ[1] के नीचे बटला, सनाही तथा मजरावा (ग्रामों) की ओर से पार की। उन्हें भ्रम था कि सुल्तान मुहम्मद के अत्यधिक दण्ड के भय से लोग उससे घृणा करने लगे हैं। सेना, सुल्तान से, जोकि उसका वर्षों से आश्रयदाता तथा उसके आश्रयदाता का पुत्र है, फिर जायगी, उन नवीसिन्दों तथा बक्कालों से जिन्हें लगाम तथा घोड़े के साज़ की दुमची का भी ज्ञान न था, मिल जायगी। ऐनुलमुल्क तथा उसके भाई शाही सेना से युद्ध करने के लिए उसके मुकाबले में आये। इन अभागे कायर विद्रोहियों ने रात के अन्तिम पहर में सुल्तान की सेना से युद्ध प्रारम्भ कर दिया और बाणों की वर्षा करने लगे। सुबह होते होते सुल्तान मुहम्मद के लश्कर की एक सेना ने उन पर आक्रमण कर दिया। उनकी सेना पहले ही आक्रमण में पराजित होकर छिन्न-भिन्न हो गई। ऐनुलमुल्क को जीवित ही बन्दी बना लिया गया। शाही सेना ने १२-१३ कोस तक उनका पीछा किया। उनके बहुत से सवार तथा प्यादे भागते हुये मारे गये। ऐनुलमुल्क के दोनों भाई, जोकि सेना नायक बन गये थे, सुल्तान की सेना से युद्ध करते हुये मारे गये। उनकी सेना के बहुत से सैनिक अपने प्राणों के भय से गंगा में कूद पड़े। बहुत से लोग नदी में डूब गये। जिस सेना ने उन लोगों का पीछा किया उसे इतनी धन-सम्पत्ति प्राप्त हुई कि उसका उल्लेख सम्भव नहीं। उनके सवार तथा प्यादे, जो गंगा पार करके भाग सके मवासात[2] में हिन्दुओं के हाथ में पड़ गये। उनके घोड़ों तथा अस्त्र शस्त्र का (४६१) विनाश हो गया। सुल्तान मुहम्मद ने ऐनुलमुल्क की हत्या का आदेश न दिया। उसका विचार था कि वह वास्तव में विद्रोही नहीं है, केवल भूल से वह इस दुर्घटना में फँस गया है, वह योग्य बुद्धिमान तथा काम का आदमी है। सुल्तान ने उन्हीं दिनों में ऐनुलमुल्क को मुक्ति प्रदान करदी। कुछ समय उपरान्त उसे अपने सम्मुख बुलवाया और सम्मानित किया। उसे खिलअत तथा उच्च पद प्रदान किये। उसे बहुत कुछ इनाम दिया। उसके पुत्रों तथा उसके शेष घर बार को भी उसे प्रदान कर दिया।

सुल्तान का बहराइच को प्रस्थान तथा वहाँ से देहली को वापसी—

सुल्तान मुहम्मद, ऐनुलमुल्क का विद्रोह शान्त करके बाँगरमऊ से हिन्दुस्तान की ओर चल खड़ा हुआ। बहराइच पहुँचा। सिपहसालार मसऊद शहीद के रौज़े की, जो सुल्तान महमूद सुबुक्तिगीन की सेना का एक योद्धा था, जियारत (दर्शन) की। रौज़े के मुजाविरों[3] को बहुत कुछ दान-पुण्य किया। बहराइच से अहमद अयाज को आगे प्रस्थान करने के लिये नियुक्त किया और आदेश दिया कि वह लखनौती के मार्ग में शिविर लगा दे और वहीं उतर पड़े, ऐनुलमुल्क के भागे हुये सैनिकों तथा उन लोगों को, जो विद्रोह में अवध तथा जफराबाद से उसके सहायक हो गये थे, लखनौती न जाने दे, देहली के जो निवासी अकाल अथवा सुल्तान के दण्ड के भय से जफराबाद पहुँच कर निवास करने लगे हैं उन्हें जिस प्रकार सम्भव हो उनकी मातृ भूमि की ओर भेज दे। सुल्तान मुहम्मद बहराइच से लौट कर निरन्तर कूच करता हुआ देहली

१ उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले की सफीपुर तहसील में। यहाँ से दो मध्य कालीन मार्ग कटते थे। १ कन्नौज से फ़ैज़ाबाद दूसरा देहली से बनारस। यहाँ एक सूफी अलाउद्दीन का मज़ार है। जिसमें एक शिला लेख १३०२ ई० का है। फीरोज तुग़लुक़ द्वारा १३७४ ई० का निर्मित यहाँ एक मज़ार भी है। (Imperial Gazetteer of India, 1908, Vol. VI, P. 380, होदीवाला पृ० २६७)।

२ इसका अर्थ "शरण या रक्षा का स्थान है।" मवासात उन स्थानों को कहते थे, जहाँ विद्रोही रक्षा के लिये छिप जाते थे।

३ रौज़े (समाधि-क्षेत्र) के प्रबन्धक।

पहुँचा। वहाँ पहुँच कर वह राज्य-व्यवस्था में तल्लीन हो गया। अहमद अयाज़ जिस कार्य के लिये नियुक्त हुआ था, उसे पूरा करके शहर (देहली) पहुँच गया।

अब्बासी खलीफा का मनशूर (आज्ञा-पत्र)—

जब सुल्तान मुहम्मद शहर (देहली) से स्वर्गद्वारी में निवास करने लगा था तो उसके हृदय में यह बात आई कि बादशाहो की सल्तनत तथा उनका शासन बिना खलीफा[1] की अनुमति के, जोकि अब्बास[2] की सन्तान से है, उचित नही। जो बादशाह अब्बासी खलीफाओ (४६२) की अनुमति के बिना स्वय बादशाही कर चुके हैं अथवा कर रह हैं वे अपहरणकर्त्ता हैं। सुल्तान यात्रियो से खुलफाये अब्बासी के विषय में बडी पूछ-ताछ किया करता था। उसन अनक यात्रियो द्वारा यह सुना था कि अब्बासी सन्तान का खलीफा मिस्र में खिलाफत की गद्दी पर आरूढ है[3]। सुल्तान मुहम्मद ने अपने सहायको तथा विश्वास-पात्रों सहित मिस्र के उस खलीफा की बैअत[4] करली। स्वर्गद्वारी से २-३ महीने तक खलीफा की सेवा मे प्रार्थना-पत्र भेजता रहा और उसे प्रत्येक बात की सूचना देता रहा। जब वह शहर (देहली) पहुँचा तो उसने जुमे तथा ईद की नमाजें स्थगित करा दी। सिक्के से अपना नाम निकलवा दिया और आदेश दिया कि सिक्के में खलीफा का नाम तथा उपाधि लिखी जाय।[5] वह अब्बास की सन्तान की खिलाफत के विषय में इतनी अत्यधिक श्रद्धा प्रदर्शित करता था कि उसका उल्लेख तथा वर्णन सम्भव नही।

७४४ हि० (१३४३ ई०) में हाजी सईद सरसरी मिस्र स शहर (देहली) आया और खलीफा क दरबार ने सुल्तान मुहम्मद के लिये मनशूर, लिवा[6] तथा खिलअत लाया। सुल्तान मुहम्मद न राज्य के समस्त उच्च पदाधिकारियो, सैयिदो, मशायख (सूफियो) आलिमो, प्रतिष्ठित तथा गण्य मान्य व्यक्तियो एवं भिन्न-भिन्न समूहों के नेताओ को लेकर खलीफा का मनशूर तथा खिलअत लाने वाले हाजी सईद सरसरी का स्वागत किया। खलीफा के खिलअत तथा मनशूर का अत्यधिक सत्कार किया और उसमें बडी अतिशयोक्ति से काम लिया। (सत्कार की पराकाष्ठा प्रदर्शित की)। अत्यधिक आदर-सत्कार का उल्लेख भी सम्भव नही। वह कुछ तीर पर ताब[7] तक आगे पैदल गया। मनशूर तथा खिलअत सिर पर रक्खी। सईद सरसरी के चरणो का चुम्बन किया। शहर में कुब्बे सजाये गये। मनशूर तथा खिलअत पर सोने की वर्षा की गई। प्रथम शुक्रवार को जब खलीफा का नाम मिम्बर[8] पर पढा गया तो सोने तथा चाँदी

---

१ मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी खलीफा कहलाते हैं। प्रथम चार खलीफाओ के बाद (६६१ ई०) बनी उमय्या की खिलाफत रही (७४९ ई०) उनके बाद अब्बासी खलीफा हुये और हलाकू ने १२५८ ई० में मोतसिम बिल्लाह की हत्या करके बगदाद पर अधिकार जमा लिया और अब्बासी खलीफाओं के राज्य का अन्त हो गया। मोतसिम का एक चाचा अहमद मिस्र भाग गया। वहां ममलूक तुर्कों का १२५२ ई० मे राज्य था। समकालीन बादशाह जहीर (१२५८-६५ ई०) ने उसका स्वागत किया और उसे नाम मात्र को खलीफा बना दिया। इस प्रकार मिस्र मे अब्बासी खलीफाओं का राज्य प्रारम्भ हो गया।

२ मुहम्मद साहब के चाचा तथा अब्दुल मुत्तलिब के पुत्र। इनकी मृत्यु ६८३ ई० में हुई। उनके वश के एक व्यक्ति सफ्फाह ने अबू मुस्लिम खुरासानी की सहायता से ७४९ ई० में अब्बासी खलीफाओं का राज्य स्थापित किया।

३ खलीफा है।

४ अधीनता स्वीकार करना।

५ मुहम्मद बिन तुगलुक के समय के ७४१ हि० (१३४०-४१) के सिक्कों के विषय में परिशिष्ट पढ़िये।

६ मनशूर—आज्ञा पत्र, लिवा—झंडा।

७ तीर के पहुँचने की दूरी।

८ मसजिद का मच।

के तन्कों के भरे हुये थाल न्योछावर किये गये। उस तिथि से जुमे तथा ईद की नमाजो की अनुमति दे दी गई। खलीफा के नाम के सम्मान के लिये, जोकि खुत्बो में पढ़ा जाता था कई शुक्रवार को सुल्तान महल से मीरी की जामा मस्जिद तक समस्त मलिको, अमीरो, प्रतिष्ठित तथा गण्य मान्य व्यक्तियों को लेकर पैदल जाता था। उसने आदेश दे दिया था कि खुत्बे में केवल उन्ही (४६३) बादशाहो के नाम पढे जायें जिन्हे अब्बासी खलीफाओ द्वारा अनुमति तथा आज्ञा प्राप्त हुई थी, जिन्हे इस प्रकार की अनुमति न प्राप्त हो, उनके नाम खुत्बे से पृथक् कर दिये जाय, उन्हें अपहरणकर्त्ता समझा जाय। उसने यह भी आदेश दिया कि जरबफ्त के (सुनहरे काम) वस्त्रों तथा अन्य बहुमूल्य वस्तुओ पर तथा ऊँचे ऊँचे भवनो पर खलीफा का नाम लिखा जाय, खलीफा का नाम लिखे बिना किसी अन्य का नाम न लिखा जाय। हाजी सरसरी के पहुचने के उपरान्त, सुल्तान मुहम्मद ने एक बहुत लम्बा चौडा प्रार्थना-पत्र अत्यधिक विनय प्रदर्शित करते हुये तथा ऐसे बहुमूल्य जवाहरात देकर जिनके समान जवाहरात खज़ान में न थे, हाजी रजब बुरकई के हाथ खलीफा की सेवा में मिस्र भेजा।

मलिक कबीर का सम्मान तथा हाजी रजब बुरकई का मिस्र भेजा जाना—

सुल्तान मुहम्मद अब्बासी खलीफा पर इतनी अधिक श्रद्धा रखने लगा था कि यदि मार्ग में डाकुओं का भय न होता तो वह अपना समस्त खजाना, जो उस समय उसके पास था, देहली से मिस्र भेज देता और खलीफा की अनुमति के बिना जल भी न पीता। खलीफा के ऊपर सुल्तान इतनी अपार श्रद्धा रखने लगा था कि उसने मलिक कबीर सर जानदार[1] को, जोकि उसका बडा विश्वास-पात्र था और जिससे बढ कर श्रेष्ठ उसके निकट कोई न था, उसकी सेवाओं के लिये मलिक खलीफा की उपाधि प्रदान की। खलीफा का अधिकार, जिसे वह स्वीकार करता था, दृढ बनाने के लिये वह समस्त प्राथना पत्रो में मलिक कबीर को अपनी मृत्यु तक कुबूले खलीफी लिखवाता रहा। यह मलिक कबीर जिसकी उपाधि कुबूले खलीफी थी, एक ऐसा दास (गुलाम) था जिसके समान चरित्रवान् बुद्धिमान, योग्य, सुव्यवस्थापक, तथा धर्मनिष्ठ, पवित्र हृदय तथा पवित्र विचारो वाला ईश्वर का भक्त एव उपासक, न्यायकारी कोई भी दास देहली के राज्य में किसी बादशाह को कदाचित् ही प्राप्त हुआ हो। सुल्तान की दृष्टि में किसी को भी इतना आदर-सम्मान तथा श्रेष्ठता न प्राप्त हो सकी। यदि किसी के विषय में यह कहा जाता कि वह सुल्तान का उत्तराधिकारी है तो वह मलिक कबीर ही (अल्लाह उस पर दया करे) था। इस दास को, जोकि राज्य तथा शासन (४६४) के योग्य था, सुल्तान मुहम्मद ने अपनी श्रद्धा के कारण मलिक खलीफा बना दिया था। इस प्रकार यह फरिश्तों के समान गुण रखने वाला अद्वितीय मलिक, खलीफा की सेवा में उपहार के लिये समर्पित कर दिया गया था। उसने मलिक कबीर को आदेश दिया कि वह खलीफा की सेवा में हाजी रजब बुरकई के हाथ, एक प्रार्थना-पत्र अपनी दासता का उल्लेख करते हुये भेजे।

शेखुश्शुयूख का हाजी रजब के साथ मिस्र से खलीफा की ओर से आना—

प्रार्थना पत्र तथा हाजी रजब बुरकई के भेजने के दो वर्ष उपरान्त मिस्र का शेखुश्शुयूख, सुल्तान मुहम्मद के नाम नियाबते खिलाफत[2] का मनशूर, अमीरुल मोमिनीन की प्रदान की

---

[1] पुस्तक में सर आबदार है किन्तु इब्ने बतूता ने जो उसके बारे में उल्लेख किया है, उससे ज्ञात होता है कि वह सर जानदार था।

[2] खलीफा का नायब होना, सहायक होना।

हुई साम खिलग्रत तथा लिवा (झंडा) देहली लाया[1]। सुल्तान मुहम्मद ने समस्त ग्रमीरो, मलिको, गण्यमान्य एव प्रतिष्ठित लोगों को लेकर मिस्र के शेखुश्शुयूख तथा हाजी रजब बुरक़ई का, जो ग्रमीरुल मोमिनीन का खिलग्रत, मनशूर, तथा लिवा मिस्र से लाये थे, स्वागत किया। वे दूर तक पैदल गये ग्रौर उनका इतना ग्रादर सम्मान किया कि दर्शकगण चकित हो गये। यदि मै चाहू कि सुल्तान मुहम्मद की ग्रब्बासी खलीफा के विषय में श्रद्धा के सौवें भाग का भी उल्लेख कर सकू तो यह सम्भव नही।

खलीफा के प्रति सुल्तान की श्रद्धा—

उसने राज्य व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध-सम्बन्धी, छोटे बडे तथा साधारण एव विशेष कार्यों में ग्रपने ग्रापको जिस प्रकार खलीफा के ग्रादेशो का ग्रधीन समझना प्रारम्भ कर दिया था, उसके उल्लेख के लिये एक ग्रन्थ की ग्रावश्यकता होगी। सुल्तान मुहम्मद उठते बैठते, बोलते-चालते, कहते-सुनते, किसी को कुछ लेते-देते समय खलीफा के ग्रतिरिक्त कोई ग्रन्य नाम न लेता था। इस समय जब शेखुश्शुयूख मिस्र तथा हाजी रजब बुरकई पहुँचे तो शहर (देहली) में कुब्बे सजाये गये। सुल्तान ग्रमीरुल मोमिनीन की लिवा तथा मनशूर ग्रपने सिर पर रख कर शहर के द्वार से महल के भीतर तक पैदल गया ग्रौर ग्रत्यधिक ग्रादर सम्मान का प्रदर्शन किया। जो ग्रमीर तथा मुगलिस्तान एव खुरासान के ग्रमीर तुमन[2] सुल्तान मुहम्मद के पास पहुँचते, उन्हें वह ग्रमीरुल मोमिनीन[3] के मनशूर की बैग्रत करने का ग्रादेश (४६५) दिया करता था। कुरान, मशारिक[4] तथा ग्रमीरुल मोमिनीन का मनशूर सामने रख कर बैग्रत कराता। लोगो से स्वीकृति-पत्र तथा इकरार-नामे ग्रमीरुल मोमिनीन के नाम से लेता था। ग्रनेक मुगल शाहजादे, ग्रमीराने हजारा,[5] ग्रमीराने सदा[6] तथा ग्रन्य उच्च पदाधिकारी एव उच्च श्रेणी की स्त्रियाँ[7] जो भी सुल्तान के दरबार में पहुँचती उन सब से सर्व प्रथम ग्रमीरुल मोमिनीन के नाम की बैग्रत का पत्र लिया जाता था, तत्पश्चात् उन्हे लाखो तथा करोडो प्रदान कर दिये जाते थे। इस ग्रवसर पर भी शेखुश्शुयूख मिस्री तथा उन लोगों को, जो उनके साथ ग्राये थे, ग्रत्यधिक इनाम इकराम देकर बडे ग्रादर-सम्मानक साथ विदा किया। नहरवाला तथा खम्बायत (खम्भायत) के मार्ग से सुल्तान ने खलीफा की सेवा में उन लोगो के हाथ ग्रत्यधिक धन-सम्पत्ति तथा जवाहरात मिस्र भेजे। इस के ग्रतिरिक्त दो बार फिर ग्रमीरुल मोमिनीन का मनशूर भरोच तथा खम्बायत में प्राप्त हुग्रा। प्रत्येक बार सुल्तान मुहम्मद ने उसका ग्रत्यधिक ग्रादर सम्मान किया। वह बादशाह, जो ग्रातक तथा वैभव से परिपूर्ण था, खलीफा का मनशूर लाने वालो की इतनी सेवा करता था जितनी कोई तुच्छ दास भी ग्रपने स्वामी की न कर सकता होगा। वह उनका ग्रत्यधिक ग्रादर सम्मान करता था ग्रौर हाजी सईद सरसरी, हाजी रजब बुरकई तथा शेखुश्शुयूख मिस्री के चरणो का चुम्बन किया करता था ग्रौर ग्रपना सिर उनके चरणों पर रख दिया करता था। इतनी नम्रता,

---

१ हाजी सईद ७४४ हि० (१३४३ ई०) में पहुँचा। हाजी रजब उसी वर्ष दूत बना कर भेज दिया गया होगा ग्रौर वह ७४६ हि० में शेखुश्शुयूख के साथ लौटा।

२ १०,००० सैनिकों के ग्रधिकारी।

३ मोमिनों का सरदार, खलीफा की पदवी।

४ 'मशारिकुल ग्रनवार' हदीसों का प्रसिद्ध संग्रह। इसके संकलनकर्त्ता रजी उद्दीन हसन इमाम सग़ानी थे। इस पुस्तक की उस समय हिन्दुस्तान में बडी प्रसिद्धि थी।

५ हजार सैनिकों के ग्रधिकारी।

६ १०० सैनिकों के ग्रधिकारी।

७ खातूनान।

ऐसे बादशाह द्वारा, जिसका पालन पोषण सरदारी तथा नेतृत्व के वातावरण में हुआ था, आश्चर्यजनक प्रतीत होती थी। वह बाल्यावस्था से मलिकी, मलिकी से खानी तथा खानी से बादशाही के समय तक बडे आदर सम्मान तथा वैभव से जीवन व्यतीत करता रहा था और सर्वदा लोग उसकी सेवा करते रह थे। दर्शकगण सुल्तान की दीनता तथा दासता पर आश्चर्य (४९६) किया करते थे। आलिम तथा बुद्धिमान एक दूसरे से आश्चर्य करते हुये कहते थे कि सुल्तान मुहम्मद को अपने समकालीन खलीफा से कितना प्रेम है कि वह उसके नाम पर जान देता है। उसे उसमे कितनी अधिक श्रद्धा है और मनशूर तथा खिलअत लाने वालो की वह किस प्रकार इतनी सेवा करता है, जितनी सेवा कोई दास अपने स्वामी की न करता होगा। यदि सुल्तान मुहम्मद की अमीरुल मोमिनीन से भेंट हो जाय तो ईश्वर ही जानता है कि वह उसकी कितनी सेवा तथा कितना आदर सम्मान करेगा।

मखदूमजादे का आगमन—

सुल्तान को अब्बासी खलीफा में इतनी अधिक श्रद्धा थी कि बगदाद के मखदूमजादे[1] के देहली आने पर वह उसका स्वागत करने के लिए पालम तक गया। उसने उसका बडा आदर सम्मान किया और उसे लाखों तथा अपार धन-सम्पत्ति प्रदान की। उसकी उपाधि मखदूमजादा निश्चित की। जब वह सुल्तान को सलाम करने जाता तो सुल्तान राजसिंहासन से उतर कर कुछ दूर तक आगे बढ कर अन्य लोगो के समान अपने दोनो हाथ तथा मुख उसके सामने भूमि पर रख कर अभिवादन करता। सुल्तान के आदर सम्मान से जिन्नात[2] तथा मनुष्य विस्मित थे। दरबारे आम में तथा ईदो और समारोहो के समय सुल्तान मखदूम-जादे को अपने बराबर राजसिंहासन पर बैठाता था। उसके समक्ष राजसिंहासन पर बडे अदब से पालथी मार कर बैठता था। उसकी वापसी के समय भी वह विनयपूर्वक अभिवादन करता। उसे अब्बासी खलीफा में इतनी श्रद्धा थी कि उसने १० लाख तन्के, कन्नौज प्रदेश, सीरी का कूश्क (महल), सीरी के कोट के भीतर का समस्त कर, और बहुत कुछ भूमि, हौज तथा उद्यान मखदूमजादे को प्रदान कर दिये थे।

सुल्तान के चरित्र के विषय मे बरनी के विचार—

इस तारीखे फीरोजशाही का लेखक, सुल्तान मुहम्मद के विरोधाभासी गुणो से चकित तथा विस्मित है। उसके आतक तथा उसकी दीनता में से किसी एक के पक्ष में भी (४९७) विश्वास से कुछ नही कह सकता। मैं यह देखता हू कि एक ओर वह शरीअत के आदेशों का बडे नियमित रूप से पालन करता था तथा इस्लाम के आदेशो पर आचरण करता था, और दूसरी ओर वह ऐसी बातें करता था जो इस्लाम के विरुद्ध होती थी। वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसे इस्लाम में इतना विश्वास था कि उसने अपनी उपाधि सुल्तान मुहम्मद निश्चित की थी, क्योंकि मुहम्मद का नाम मनुष्य जाति के नामो में सर्वश्रेष्ठ है। वह प्राचीन बादशाहों की बडी बडी उपाधियो से घृणा करता था और उनमे उसे लज्जा आती थी। उसे अब्बासी खलीफा में बडी श्रद्धा थी। वह विगत तथा जीवित समस्त अब्बासी खलीफाओ का इतना आदर सम्मान करता था कि यदि उनके पास से कोई भी उसकी सेवा में पहुँच जाता तो वह उसका इतना आदर सम्मान करता जितना एक दास अपने स्वामी का भी न कर सकता था।

---

१ अमीर गयासुद्दीन मुहम्मद जिसे इब्ने बत्तूता 'इब्नुल खलीफा' कहा करता था। वह ७४२ हि० (१३४१-४२ ई०) के लगभग आया होगा। इब्ने बत्तूता ने उसका उल्लेख विस्तार से किया है।

२ कहा जाता है कि जिन्नात अग्नि द्वारा उत्पन्न ग्र प्राणी हैं।

मुगलो को दान-पुण्य के विषय में थी। प्रत्येक वर्ष शीत ऋतु के प्रारम्भ में अनेक अमीराने तुमन, अमीराने हजारा, स्त्रियाँ तथा राजकुमार उसके राज्य में आते थे। उन्हे लाखो करोडो की धन-सम्पत्ति, खिलअत, जीन सहित घोडे, कई कई हज़ार मोती प्रदान किये जाते। प्रत्येक दिन किसी न किसी की दावत होती रहती थी। दो तीन मास तक सुल्तान के पास मुगलो को दान-पुण्य करने तथा उनका सम्मान और सेवा करने के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य न रहा।

उसलूब की तैयारी -

सुल्तान मुहम्मद इन वर्षों में असालीब[1] बनाने में तल्लीन रहता था अर्थात् वह धन सम्पत्ति एव सेना को बढाने तथा कृषि को उन्नति देने की योजनायें लिखा करता था। उनका नाम उसने उसलूब रक्खा था। उसका विश्वास था कि उसकी प्रजा उसकी मिली-जुली कृपा तथा कठोरता के कारण उसका पालन करेगी। वह रात दिन असालीब तैयार किया करता था और उन्हे कार्यान्वित कराने का प्रयत्न किया करता था।

विद्रोह तथा कठोर दण्ड—[2]

चौथा कार्य जिसमें सुल्तान मुहम्मद उस समय जबकि वह देहली में था तल्लीन रहा, दूसरो को कठोर दण्ड देना था। इसके कारण अनेक सुव्यवस्थित स्थान हाथ से निकल गये। जो स्थान उसके हाथ में रह गये उनमें भी उथल-पुथल तथा विद्रोह होने लगे। उनके (५००) षड्यन्त्र तथा विद्रोह के समाचार सुल्तान को प्राप्त होते रहते थे और राजधानी में कठोर दण्ड देने का कार्य बढता जाता था। जो कोई बात, चाहे वह सच्ची हो अथवा झूठी शत्रुता के कारण हो अथवा द्वेष रखने के फलस्वरूप किसी के विषय में जो कोई कह देता उसे कठोर दण्ड प्रदान किया जाता। आग से जला कर तथा मार पीट कर के लोगो से ऐसी बात स्वीकार करा ली जाती थी, जिन पर उन्हे दण्ड दिया जा सकता। कुछ विश्वास के योग्य मुसलमान, जो उन लोगो के विषय में पूछ ताछ करने के लिए नियुक्त थे जिन्हे दण्ड दिया जाने वाला होता था। वे लोगो को कठोर दण्ड दिलाया करते थे। शहर मे कठोर दण्डो की सख्या जितनी ही बढती उतना ही चारो ओर के लोग सुल्तान से घृणा करने लगते और विद्रोह तथा विरोध होने लगते। राज्य को अत्यधिक हानि तथा क्षति पहुँचती रहती। जिसे दण्ड दिया जाता उसका नाम शरीर (दुष्ट) रख दिया जाता था। यद्यपि सुल्तान मुहम्मद बडा ही योग्य, समझदार तथा अनुभवी बादशाह था किन्तु ईश्वर ने उसे शासन नीति तथा राज्य व्यवस्था में गहन दृष्टि प्रदान न की थी। वह ऐसी ही बाते किया करता था जिससे उसकी प्रजा तथा सेना, जोकि राज्य की हुमा[3] के दो पखो के समान हैं, उससे घृणा करने

---

१ उसलूब का बहुवचन।

२ सुल्तान के अत्यधिक दड तथा क्रोध का तीसरा कारण यह था कि जो फरमान आज्ञाओं को कार्यान्वित कराने हेतु राज सिंहासन द्वारा चालू कराये जाते उनका पालन प्रजा की शक्ति मे न होता। लोग अपनी विवशता के विषय मे एक दूसरे से वार्त्तालाप करते और यदि एक आदमी बन्दी बनाया जाता तो उसके द्वारा २०० ३०० अन्य लोग बन्दी बना लिये जाते और क्रम बध जाता तथा शाखा से शाखा निकलती रहती कि इसने उससे सुना, उसने उसके समक्ष शिकायत की। राजसिंहासन के समक्ष यह अनुमान लगाया जाता कि इस बात से यह निकलता है और उससे वह। लोग इस प्रकार की बातें अपनी आदत के अनुसार किया करते थे। सुल्तान मुहम्मद जो कुछ भी उसके हृदय में आता और जो कुछ वह समझता उसके अनुसार इन बातों को प्रजा की शत्रुता तथा विरोध का कारण समझ कर उन्हें दंड देता। दड देते समय सैयिद, शेख (सूफी) बुद्धिमान (विद्वान्), विद्यार्थी, प्रसिद्ध, *प्रतिष्ठित, सैनिक तथा बाजारी किसी पर ध्यान न देता। (तारीखे फीरोज़शाही, रामपुर पोथी,* पृ० ३००)।

३ एक काल्पनिक पक्षी जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यदि किसी पर उसकी छाया पड जाय तो वह बादशाह हो जाता है।

लगी थी। वह जान बूझ कर अपने देश तथा राज्य के विनाश का प्रयत्न किया करता था। प्रथम बात जिसके कारण सभी उससे घृणा करने लगे थे, अत्यधिक दण्ड था। दूसरे असालीब का बनाना क्योकि वे देखने में तो ठीक ज्ञात होती थे, किन्तु उनका कार्यान्वित होना असम्भव था। जो कोई उसे स्वीकार न करता या जो कोई लोभ तथा भय के कारण स्वीकार कर भी लेता परन्तु उसे पूरा न कर पाता उसका बध करा दिया जाता था। कठोर दण्ड दिये जाते थे। समस्त बुद्धिमान लोग चकित रहते थे और ईश्वर की लीला देखा करते थे।

देवगीर (देवगिरि) का शासन प्रबन्ध—

पांचवाँ कार्य जिसमे सुल्तान मुहम्मद अन्तिम वर्षों में तल्लीन रहा, देवगीर (देवगिरि) तथा मरहठ प्रदेश की सुव्यवस्था एव वहाँ के लिये वालियो, मुक्तो तथा पदाधिकारियो की नियुक्ति था। राज्य के कुछ शत्रुओ ने, जो अपने आपको राज्य का हितैषी कहते थे, (५०१) सुल्तान मुहम्मद से यह निवेदन करना प्रारम्भ कर दिया कि "देवगीर (देवगिरि) तथा मरहठ प्रदेश में कुतलुग़ ख़ाँ के पदाधिकारियो की चोरी के कारण बहुत बडे धन का गबन (अपहरण) हुआ है। लाखो और करोडो मूल्य का कर हज़ारो तक पहुच चुका है।" सुल्तान मुहम्मद ने बडे साहस से मरहठ प्रदेश के कर के विषय में ६–७ करोड का लेखा तैयार किया, और उसी के अनुसार समस्त मरहठ प्रदेश को ४ शिको[1] में विभाजित किया। एक शिक मलिक सर दावतदार को, दूसरी शिक मलिक मुखलिसुलमुल्क को, तीसरी शिक यूसुफ बुगरा को और चौथी शिक कमीने अज़ीज़ ख़म्मार[2] को प्रदान की। वे सब के सब बडे दुष्ट तथा पतित थे। देवगीर (देवगिरि) की विज़ारत एमादुलमुल्क सरीरे[3] सुल्तानी को, नियाबते विज़ारत[4] धारा को तथा अन्य पद उन लोगो को प्रदान किये जिन्होने शाही उसलूबो को कार्यान्वित कराने का वचन दिया। वे लोग निरन्तर उसलूबो के अनुसार ख़राज का लेखा तैयार कराने तथा कृषि को उन्नति देने की चेष्टा करते रहे। उसने जिन पदाधिकारियो को उस प्रदेश में नियुक्त किया उन्हें आदेश दिया कि वहाँ निवास करने वाले अमीराने सदा, प्रतिष्ठित लोगो, मुक़ातेआ (ठेका) करने वालो तथा नवीसिन्दो, जिन्होने विद्रोह तथा षड्यन्त्र किया हो, में से किसी एक को भी जीवित न छोडा जाय, क्योंकि वे सब राज-द्रोही तथा उसके शत्रु हैं। उस प्रदेश में केवल उन लोगो की रक्षा की जाय तथा आश्रय प्रदान किया जाय जोकि सुल्तान के उसलूबो पर आचरण कर सकें और जो लोग उसके लेख के अनुसार ख़राज अदा कर सकें। देवगीर (देवगिरि) के निवासियो को राजधानी के समस्त समाचार तथा देवगीर (देवगिरि) और मरहठा प्रदेश की राज्य व्यवस्था से सम्बन्धित योजनाओ के समाचार प्राप्त होते रहते थे। सब के सब अत्यधिक आतंकित थे और सुल्तान से घृणा करने लगे थे।

कुतलुग़ ख़ाँ का देहली बुलाया जाना—

उस वर्ष के अन्त से जबकि देवगीर (देवगिरि) के वालियो, मुक्तो तथा वहा के कर की व्यवस्था की गई, सुल्तान मुहम्मद के राज्य का पतन निकट आ गया। कुतलुग़ ख़ाँ तथा

---

१ प्रान्त का भूमि कर के अनुसार विभाजन।

२ कई शब्द हेमार (गधा), हम्मार (गधा हाँकने वाले) तथा ख़म्मार (मदिरा बेचने वाला) पढ़ा जाता है। इब्ने बतूता, जिसे अज़ीज़ के विषय में पूर्ण जानकारी थी, उसे 'ख़म्मार' कहता था। रामपुर की तारीख़े फ़ीरोज़शाही की हस्तलिखित पोथी में भी ख़म्मार है (पृ० ३०३)।

३ एमादुलमुल्क सरतेज़ सुल्तानी (बरनी पृ० ४५४)

४ नायब वज़ीर।

मुगलो को दान-पुण्य के विषय में थी। प्रत्येक वर्ष शीत ऋतु के प्रारम्भ में अनेक अमीराने तुमन, अमीराने हजारा, स्त्रियाँ तथा राजकुमार उसके राज्य में आते थे। उन्हे लाखो करोडो की धन-सम्पत्ति, खिलअत, जीन सहित घोडे, कई कई हजार मोती प्रदान किये जाते। प्रत्येक दिन किसी न किसी की दावत होती रहती थी। दो तीन मास तक सुल्तान के पास मुगलो को दान-पुण्य करने तथा उनका सम्मान और सेवा करने के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य न रहा।

उसलूब की तैयारी

सुल्तान मुहम्मद इन वर्षों में असालीब[1] बनाने में तल्लीन रहता था अर्थात् वह धन सम्पत्ति एव सेना को बढाने तथा कृषि को उन्नति देन की योजनायें लिखा करता था। उनका नाम उसने उसलूब रक्खा था। उसका विश्वास था कि उसकी प्रजा उसकी मिली जुली कृपा तथा कठोरता क कारण उसका पालन करेगी। वह रात दिन असालीब तैयार किया करता था और उन्हे कार्यान्वित करान का प्रयत्न किया करता था।

विद्रोह तथा कठोर दण्ड—[2]

चौथा कार्य जिसमें सुल्तान मुहम्मद उस समय जबकि वह देहली में था तल्लीन रहा, दूसरो को कठोर दण्ड देना था। इसके कारण अनक सुव्यवस्थित स्थान हाथ से निकल गये। जो स्थान उसके हाथ में रह गये उनमें भी उथल-पुथल तथा विद्रोह होन लगे। उनके (५००) षडयन्त्र तथा विद्रोह क समाचार सुल्तान को प्राप्त होते रहत थ और राजधानी में कठोर दण्ड देने का काय बढता जाता था। जो कोई बात, चाहे वह सच्ची हो अथवा भूठी शत्रुता के कारण हो अथवा द्वेष रखन के फलस्वरूप किसी के विषय में जो कोई कह देता उस कठोर दण्ड प्रदान किया जाता। आग से जला कर तथा मार पीट कर के लोगो से एसी बात स्वीकार कराली जाती थी जिन पर उन्हे दण्ड दिया जा सकता। कुछ विश्वास के योग्य मुसलमान, जो उन लागा क विषय में पूछ ताछ करने के लिए नियुक्त थे जिन्हें दण्ड दिया जान वाला होता था। व लोगो को कठोर दण्ड दिलाया करत थ। शहर में कठोर दण्डो की सख्या जितनी ही बढती उतना ही चारों आर के लोग सुल्तान से घृणा करने लगते और विद्रोह तथा विरोध होन लगते। राज्य को अत्यधिक हानि तथा क्षति पहुँचती रहती। जिसे दण्ड दिया जाता उसका नाम शरीर (दुष्ट) रख दिया जाता था। यद्यपि सुल्तान मुहम्मद बडा ही योग्य, समझदार तथा अनुभवी बादशाह था किन्तु ईश्वर ने उसे शासन नीति तथा राज्य व्यवस्था में गहन दृष्टि प्रदान न की थी। वह ऐसी ही बातें किया करता था जिससे उसकी प्रजा तथा सेना, जोकि राज्य की हुमा[3] के दो पखो के समान हैं, उससे घृणा करन

---

१ उसलूब का बहुवचन।

२ सुल्तान के अत्यधिक दड तथा क्रोध का तीसरा कारण यह था कि जो फरमान आज्ञाओं को कार्यान्वित कराने हेतु राज सिंहासन द्वारा चालू कराये जाते उनका पालन प्रजा की शक्ति में न होता। लोग अपनी विवशता के विषय में एक दूसरे से वार्त्तालाप करते और यदि एक आदमी बन्दी बनाया जाता ता उसके द्वारा २०० ३०० अन्य लोग बन्दी बना लिये जाते और क्रम बध जाता तथा शाखा से शाखा निकलती रहती कि इसने उसस सुना, उसने उसके समक्ष शिकायत की। राजसिंहासन के समक्ष यह अनुमान लगाया जाता कि इस बात से यह निकलता है और उससे वह। लोग इस प्रकार की बातें अपनी आदत के अनुसार किया करते थे। सुल्तान मुहम्मद जो कुछ भी उसके हृदय में आता और जो कुछ वह समझता उसके अनुसार इन बातों को प्रजा की शत्रुता तथा विरोध का कारण समझ कर उन्हें दंड देना। दड देते समय सैयिद, शेख (सूफी) बुद्धिमान (विद्वान्), विद्यार्थी, प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित, सैनिक तथा बाजारी किसी पर ध्यान न देता। (तारीखे फीरोजशाही, रामपुर पोथी, पृ० ३००)।

३ एक काल्पनिक पक्षी जिसके विषय म प्रसिद्ध है कि यदि किसी पर उसकी छाया पड जाय तो वह बादशाह हो जाता है।

लगी थी। वह जान बूझ कर अपने देश तथा राज्य के विनाश का प्रयत्न किया करता था। प्रथम बात जिसके कारण सभी उससे घृणा करने लगे थे, अत्यधिक दण्ड था। दूसरे मसालीव का बनाना क्योंकि वे देखने में तो ठीक ज्ञात होती थे, किन्तु उनका कार्यान्वित होना असम्भव था। जो कोई उसे स्वीकार न करता या जो कोई लोभ तथा भय के कारण स्वीकार कर भी लेता परन्तु उसे पूरा न कर पाता उसका बध करा दिया जाता था। कठोर दण्ड दिये जाते थे। समस्त बुद्धिमान लोग चकित रहते थे और ईश्वर की लीला देखा करते थे।

देवगीर (देवगिरि) का शासन प्रबन्ध—

पाँचवाँ कार्य जिसमें सुल्तान मुहम्मद अन्तिम वर्षों में तल्लीन रहा, देवगीर (देवगिरि) तथा मरहठ प्रदेश की सुव्यवस्था एवं वहाँ के लिये वालियो, मुक्तो तथा पदाधिकारियो की नियुक्ति था। राज्य के कुछ शत्रुओ ने, जो अपने आपको राज्य का हितैषी कहते थे, (५०१) सुल्तान मुहम्मद से यह निवेदन करना प्रारम्भ कर दिया कि "देवगीर (देवगिरि) तथा मरहठ प्रदेश में कुतलुग खाँ के पदाधिकारियो की चोरी के कारण बहुत बड़े धन का ग़बन (अपहरण) हुआ है। लाखो और करोडो मूल्य का कर हजारो तक पहुच चुका है।" सुल्तान मुहम्मद ने बड़े साहस से मरहठ प्रदेश के कर के विषय में ६–७ करोड का लेखा तैयार किया, और उसी के अनुसार समस्त मरहठ प्रदेश को ४ शिको[1] में विभाजित किया। एक शिक मलिक सर दावतदार को, दूसरी शिक मलिक मुखलिसुलमुल्क को, तीसरी शिक यूसुफ बुगरा को और चौथी शिक कमीने अज़ीज़ खम्मार[2] को प्रदान की। वे सब के सब बड़े दुष्ट तथा पतित थे। देवगीर (देवगिरि) की विजारत एमादुलमुल्क सरीरे[3] मुल्तानी को, नियाबते विजारत[4] धारा को तथा अन्य पद उन लोगो को प्रदान किये जिन्होंने शाही उसलूबो को कार्यान्वित कराने का वचन दिया। वे लोग निरन्तर उसलूबो के अनुसार खराज का लेखा तैयार कराने तथा कृषि को उन्नति देने की चेष्टा करते रहे। उसने जिन पदाधिकारियों को उस प्रदेश में नियुक्त किया उन्हें आदेश दिया कि वहाँ निवास करने वाले अमीराने सदा, प्रतिष्ठित लोगो, मुक़ातेमा (ठेका) करने वालो तथा नवीसिन्दों, जिन्होंने विद्रोह तथा षड्यन्त्र किया हो, में से किसी एक को भी जीवित न छोड़ा जाय, क्योंकि वे सब राज-द्रोही तथा उसके शत्रु हैं। उस प्रदेश में केवल उन लोगो की रक्षा की जाय तथा आश्रय प्रदान किया जाय जोकि सुल्तान के उसलूबो पर आचरण कर सकें और जो लोग उसके लेख के अनुसार खराज अदा कर सकें। देवगीर (देवगिरि) के निवासियो को राजधानी के समस्त समाचार तथा देवगीर (देवगिरि) और मरहठा प्रदेश की राज्य व्यवस्था से सम्बन्धित योजनाओ के समाचार प्राप्त होते रहते थे। सब के सब अत्यधिक आतंकित थे और सुल्तान से घृणा करने लगे थे।

क़ुतलुग़ ख़ाँ का देहली बुलाया जाना—

उस वर्ष के अन्त से जबकि देवगीर (देवगिरि) के वालियो, मुक्तो तथा वहा के कर की व्यवस्था की गई, सुल्तान मुहम्मद के राज्य का पतन निकट आ गया। कुतलुग खाँ तथा

१ प्रान्त का भूमि कर के अनुसार विभाजन।
२ यह शब्द हेमार (गधा), हम्मार (गधा हाँकने वाले) तथा खम्मार (मदिरा बेचने वाला) पढ़ा जाता है। इब्ने बतूता, जिसे अज़ीज़ के विषय में पूर्ण जानकारी थी, उसे 'खम्मार' कहता था। रामपुर की तारीखे फ़ीरोज़शाही की हस्तलिखित पोथी में भी खम्मार है (पृ० २०३)।
३ एमादुलमुल्क सरतेज़ मुल्तानी (बरनी पृ० ४५४)
४ नायब वज़ीर।

उसके समस्त परिवार और सम्बन्धियों को देवगीर (देवगिरि) से शहर (देहली) बुलवा लिया गया[1]। दुष्ट, मूर्ख तथा विनाशक अज़ीज़ ख़म्मार को धार एवं समस्त मालवा प्रदान किया (५०२) गया और दण्ड का कार्य कठोरता से होने लगा। कुतलुग ख़ाँ के पदच्युत होने से समस्त देवगीर (देवगिरि) निवासियों के हाथ-पैर फूल गये और प्रत्येक व्यक्ति अपनी मृत्यु निकट समझने लगा। समस्त बुद्धिमान लोग इस बात पर विश्वास करते थे कि देवगीर (देवगिरि) की प्रजा को कुतलुग ख़ाँ की इस्लाम के प्रति निष्ठा, सत्यता, न्याय तथा दया एवं कृपा के फलस्वरूप शान्ति प्राप्त थी। वहाँ के निवासी, हिन्दू तथा मुसलमान, बादशाह के अत्यधिक कठोर दण्डों के समाचार सुन कर उससे घृणा करने लगे थे और कुछ लोग गुप्त रूप से षड्यन्त्र रचने लगे थे किन्तु कुतलुग ख़ाँ की उपस्थिति में वे अपने आपको सुरक्षित समझते थे। उन्हें विश्वास था कि जो कोई भी उसकी शरण में होगा, उसे सुल्तान के दण्ड से मुक्ति प्राप्त हो जायगी। जब कुतलुग ख़ाँ को देहली बुला लिया गया तो उस पवित्र आत्मा वाले मलिक के सम्बन्धियों में से किसी को भी उस प्रदेश में रहने न दिया गया।[2]

निज़ामुद्दीन की अस्थायी नियुक्ति—

कुतलुग ख़ाँ के भाई मौलाना निज़ामुद्दीन को, जोकि एक अनुभव-शून्य परन्तु सज्जन पुरुष था, आदेश दिया गया कि वह भरौंच से देवगीर (देवगिरि) पहुच जाय और उस समय तक जब तक कि देवगीर (देवगिरि) का वज़ीर तथा नये मुक्ते और वाली उस स्थान पर न पहुँचें, उस स्थान की सेना तथा विलायत का प्रबन्ध करता रहे। जो ख़ज़ाना कुतलुग ख़ाँ

---

१ बद्र चाच के एक छन्द के अनुसार यह घटना ७४५ हि० (१३४४-४५ ई०) में घटी। वह सुल्तान के आदेशानुसार ७४५ हि० में देवगिरि भेजा गया।

"ब साले दौलत शह बुवद दर रये शाबान
कि सूये मुमलकते देवगीर शुद फरमान"

दाल=४, वाव=६, लाम=३०, ते=४००, शीन=३००, हे=५=७४५

२ बहुत से बुद्धिमान आपस में कहते थे कि मरहठ की प्रजा कुतलुग ख़ाँ की बातों तथा लेखनी पर विश्वास करती थी। वह आश्रयदाता ख़ान, जिसने जड़ पकड़ ली थी, मुसलमानों, हिन्दुओं, सेना तथा प्रजा के प्रति न्याय, कृपा और अनुकम्पा रखता था। उसके इस स्थान से स्थायी रूप से शहर (देहली) की ओर चल जाने से प्रजा का विश्वास नष्ट हो गया। उन्होंने शिकों तथा उसलूबों के विषय में सुना था तथा उन्हें कठोर मलिकों की नियुक्ति एवं ख़राज (की वृद्धि) के विषय में ज्ञान प्राप्त था और उन्होंने यह देखा था कि शाही चत्र तथा सायाबान (छत्र) आज्ञाओं का उल्लघन करने वालों तथा विरोधियों के लिये उस प्रदेश में कई बार पहुच चुका है और अन्य लोगों की इमारत तथा विलायत (अधिकार) के कारण अब शान्ति नहीं। इस कारण उनका दिल ठिकाने न रह सका। सुल्तान के कुछ निकटवर्तियों को इस बात का ज्ञान था किन्तु वे सुल्तान के समक्ष कह न सकते थे क्योंकि सुल्तान देवगीर (देवगिरि) से ऊपर की भार की इक्लीमों (ख़ुरासान, एराक़ तथा मावराउन्नहर) के लिये अपार धन प्राप्त करना चाहता था। जो लोग उन देशों से सुल्तान की सेवा में पहुँचते थे वे अपनी प्रतिष्ठा तथा अत्यधिक लोभ के कारण राजसिंहासन के समक्ष कहते कि "उन राज्यों पर सुगमता पूर्वक अधिकार प्राप्त हो जायगा, जैसे शत्रु होने चाहिये वैसे नहीं रह गये हैं, सुल्तान के दानपुण्य की प्रसिद्धि वहाँ पहुँच चुकी है।" सुल्तान को असंख्य सेना की आवश्यकता थी और उस सेना के लिये शहर (देहली) के आस पास की विलायतों से अत्यधिक कर माँगा जाता था और दूर दूर की अक्ताओं पर भारी ख़राज लगाया जाता था (पृ० २९९)। निकट तथा दूर के लोग शाही माँगों तथा ख़राज को सहन न कर सकते थे और इस कारण उसकी आज्ञाओं का उल्लंघन कर देते और पिछला कर भी प्राप्त न होता था और जो कुछ मौजूद होता उसे व्यय किया जाता तथा उपस्थित सेना में भी कमी हो जाती। सुल्तान क्रोध करता तथा अत्यधिक दण्ड देता (पृ० ३००)। [तारीख़े फ़ीरोज़शाही, रामपुर पोथी]

के कर्मचारियों ने देवगीर (देवगिरि) में एकत्र किया था, वह मार्ग की खराबी, मालवा की अशान्ति तथा मुक़द्दमों में विद्रोह के कारण देहली न लाया जा सकता था। उसके सम्बन्ध में आदेश हुआ कि वह धारागीर के किले में, जोकि बड़ा दृढ किला था, रक्खा जाय जिससे क़ुतलुग खाँ की अनुपस्थिति के कारण देवगीर (देवगिरि) में कोई उपद्रव तथा अशान्ति न हो सके। जिस दिन क़ुतलुग़ खाँ अपने सम्बन्धियों तथा परिवार को लेकर चला, समस्त बुद्धिमान तथा अनुभवी लोग एक स्वर में कहने लगे कि देवगीर (देवगिरि) इस प्रकार हाथ से निकल जायगा कि इस पर उस समय तक अधिकार न हो सकेगा जब तक कि बादशाह स्वयं वहाँ आकर कुछ समय तक निवास न करे और उस प्रदेश को विद्रोहियों से रिक्त न कर दे।

कमीने मलिक अज़ीज़ ख़म्मार का धार तथा मालवा प्रदेश प्राप्त करना; उस कमीने पतित का उस प्रदेश की ओर प्रस्थान; उस अयोग्य कमीने एवं कमीने के पुत्र के आचरण द्वारा विद्रोह तथा आम बग़ावत के द्वार खुलना—

(५०३) जिस वर्ष के अन्त में क़ुतलुग खाँ को देवगीर (देवगिरि) से देहली बुलवाया गया, सुल्तान मुहम्मद ने कमीने अज़ीज़ ख़म्मार को धार की विलायत प्रदान की और समस्त मालवा उसके सिपुर्द कर दिया। उसे कई लाख तन्के प्रदान किये ताकि उसके सम्मान एवं उसकी शक्ति में उन्नति हो जाय। उस कमीन तथा अभागे व्यक्ति के उस प्रदेश का शासन-प्रबन्ध करने के लिए, जोकि बहुत ही विस्तृत है, प्रस्थान करते समय सुल्तान ने उससे ऐसी बातें की जिससे वह और भी पथ-भ्रष्ट हो गया। सुल्तान ने उससे कहा कि, "हे अज़ीज़! तू देखता है कि किस प्रकार प्रत्येक दिशा में विद्रोह तथा षड्यन्त्र हो रहे हैं। मैंने सुना है कि प्रत्येक विद्रोही अमीराने सदगान (सदा) की सहायता से विद्रोह करता है, अमीरे सदगान लूटमार के लोभ में उसके सहायक बन जाते हैं। इस प्रकार विद्रोही विद्रोह कर देते हैं। तू जाने और धार के अमीरे सदगान। यदि तू धार के अमीराने सदगान में से विद्रोही तथा षड्यन्त्रकारी लोगों को पाये तो जिस प्रकार हो सके और जिस विधि से सम्भव हो उनका विनाश कर दे। इसके उपरान्त तू उस प्रदेश में, जहाँ के निवासी पथ भ्रष्ट न हो चुके हैं, निश्चिन्त होकर शासन कर सकेगा।

अज़ीज़ द्वारा अमीराने सदा की हत्या—

उस दुष्ट ने देहली से बड़ी शान से प्रस्थान किया। उसके साथ कुछ अन्य कमीने भी थे जोकि उसके विश्वास पात्र तथा सहायक बन गये थे। उसने उन जन्मजात दुष्ट, मूर्खों के साथ धार पहुँच कर धार का शासन प्रबन्ध प्रारम्भ कर दिया। एक दिन उस कमीने तथा व्यभिचार द्वारा जन्म पाये हुए ने एक योजना बनाई जिसके अनुसार लगभग ८० अमीराने (५०४) सदा तथा धार के प्रतिष्ठित सैनिकों को बन्दी बना लिया गया। उसने उनसे कहा कि देवगीर (देवगिरि) के अमीराने सदा के कारण ही चारों ओर विद्रोह हुआ करता है। इस बहाने से उसने महल के द्वार के समक्ष सभी की हत्या करा दी। उस अभागे कमीने के हृदय में यह बात न आई कि यदि अमीरे सदा होना ही हत्या का कारण बनाया जायगा तो देवगीर (देवगिरि), गुजरात तथा अन्य सभी स्थानों के अमीराने सदा उससे असन्तुष्ट होकर विद्रोह कर देंगे। अमीराने सदा की घृणा तथा उनके विद्रोह कर देने के कारण राज्य किस प्रकार चल सकता है। धार के अमीरान सदा के इस पद के अधिकारी होने के दोष पर,

वध कराये जाने के समाचार देवगीर (देवगिरि) तथा गुजरात पहुँचे। दोनो प्रदेशो के अमीराने सदा जहाँ कहीं भी थे, सावधान हो गये और उन्होंने दलबन्दी करके विद्रोह कर दिया। उस दुष्ट तथा दुष्ट के पुत्र के अनुचित कार्य के फलस्वरूप राज्य में बहुत बड़ी *अव्यवस्था हो गई। जब अज़ीज़ ख़म्मार ने धार के अमीराने सदा की हत्या के समाचार* अपने प्रार्थना-पत्र में लिख कर सुल्तान की सेवा में भेजे तो सुल्तान ने उसे खिलअत तथा फरमान भेज कर सम्मानित किया। चूंकि उसके राज्य का पतन होने ही वाला था, अत उसने अपने दरबार के प्रतिष्ठित लोगों एव विश्वास-पात्रों को आदेश दिया कि वे सब अज़ीज़ के पास बधाई-पत्र भेजे और उसके उस अनुचित कार्य की प्रशसा कर, उसकी सेवा में वस्त्र तथा सजे हुये घोडे उपहार के रूप में भेज।

नजबा को गुजरात, मुल्तान एव बदायूँ प्राप्त होना—

इस तारीख़े फ़ीरोज़शाही का सकलनकर्त्ता १७ वर्ष तथा ३ मास तक सुल्तान मुहम्मद के दरबार का सेवक रह चुका है। उसे सुल्तान द्वारा अत्यधिक इनाम तथा धन-*सम्पत्ति प्राप्त हुआ करती थी। वह उस बादशाह के, जोकि ससार के प्राणियों में एक* अद्भुत प्राणी था, विरोधाभासी गुणों का अवलोकन करके चकित रह चुका है। वह जीवन पर्यन्त उसके शुभ वचन, कमीनो, बदअसलो, पतितो तथा तुच्छ लोगो के अपमान के विषय में (५०५) सुना करता था। वह कमअसलो, हरामखोरो, नमकहरामो, दुष्टों, दुराचारियो तथा व्यभिचारियो के विषय में तर्क-पूर्ण भाषण किया करता था और ऐसा ज्ञात होता था कि वह कमीने तथा बदअसलों को मूर्तियो से अधिक शत्रु समझता है। दूसरी ओर उसन एक कमीने गायक के पुत्र नजबा को इतनी उन्नति प्रदान की कि उसकी श्रेणी समस्त मलिकों की अपेक्षा बहुत बढा दी। उसे गुजरात, मुल्तान तथा बदायूँ प्रदान कर दिया।

कमीनो को उच्च पद—

इसी प्रकार उसने अज़ीज़ ख़म्मार, उसके भाई, फ़ीरोज़ हज्जाम (नाई), मनका तब्बाख (बावर्ची), मसऊद ख़म्मार, लद्धा माली तथा अन्य ऐसे लोगो को, जो कमीनो में रत्न के समान थे, सम्मान प्रदान किया। उन्हे उच्च पद तथा अक्तायें प्रदान की। शेख बाबू, नायक[1] बच्चा जुलाहे को अपना विश्वासपात्र बना लिया और उस कमीने तथा तुच्छ को अत्यधिक सम्मान प्रदान किया। पीरा माली को, जोकि हिन्दुस्तान तथा सिन्ध के कमीनो तथा पतितो में सबसे अधिक कमीना एव पतित था, दीवाने विज़ारत प्रदान की और उसे समस्त मलिकों अमीरो, वालियो तथा मुक्तों का हाकिम बना दिया। किशन बाज़रम इन्दरी को, जोकि बड़ा ही कमीना था, अवध प्रदेश प्रदान कर दिया। अहमद अयाज़ के दास मुकबिल को, जोकि रूप तथा गुण में समस्त दासों से पतित था, गुजरात का नायब वज़ीर नियुक्त किया। *यह पद केवल बड़े-बड़े ख़ानो तथा प्रतिष्ठित वज़ीरों को प्राप्त होता था।* वह जिस प्रकार बड़े-बड़े पद बडी विलायतो तथा प्रदेशो का शासन प्रबन्ध कमीनो एव तुच्छ लागो को प्रदान करता था, उससे प्रत्येक व्यक्ति को आश्चर्य होता था। ऐसा बादशाह, जो अपने अत्यधिक ऐश्वर्य तथा वैभव के कारण जमशेद एव कैख़ुसरो के बराबर था और जो बगाले तथा मुग़लिस्तान के शासको को अपने सेवको की श्रेणी में रखना अपना अपमान समझता हो, और जो अपने समय के बड़े-बड़े कुलीनो तथा बुज़ुर्चमेहरों को अपनी सेवा के योग्य न समझता हो, न जाने किस प्रकार कमीनो को बड़े-बड़े पद तथा अक्तायें प्रदान किया करता था।

---

१ मानक जुलाहा बच्चा (तबकाते अकबरी पृ० २१५), नायक जुलाहा बच्चा (तारीखे फिरिश्ता पृ० १४०)

सुल्तान मुहम्मद के विषय मे बरनी के विचार—

मैं, जोकि एक तुच्छ व्यक्ति हूँ, उस बादशाह के, जोकि समस्त ससार वालों का स्वामी तथा आश्रयदाता था, विरोधाभासी गुणो को देखकर चकित एव विस्मित हूँ। यदि मैं उस (५०६) बादशाह द्वारा उच्च पद तथा बड़ी-बड़ी अक्तामो को अयोग्य लोगों, उनकी सन्तानो, व्यभिचार द्वारा जन्म पाये हुये व्यक्तियो तथा कमीनों को प्रदान करने और उन्हें नेतृत्व तथा सरदारी देने, समस्त ससार को उनकी आज्ञा का आश्रित बनाने तथा दुनिया भर को उनके दरबार पर निर्भर रखने का उल्लेख करके यह कहूँ कि वह ईश्वर बनना चाहता था और अपने आपको समस्त ससार का पोषक समझता था, और जिस प्रकार बडे सम्मान वाला ईश्वर ससार का राज्य तथा शासन, दुनिया का सुख तथा धन-सम्पत्ति अयोग्य कमीनों तथा अपने शत्रुओं को प्रदान करता है और किसी बात का भय न करके अमीरी, धन-सम्पत्ति, राज्य-व्यवस्था तथा शासन-प्रबन्ध तुच्छ लोगों और उनकी सन्तानों को दे देता है और किसी बात की चिन्ता न करते हुये समस्त ससार का शासन-प्रबन्ध अयोग्य तथा कृतघ्न अपितु काफिरो, मुशरिकों, फिरऔन तथा नमरूद जैसे अवगुण वालो को प्रदान कर देता है, उसी प्रकार सुल्तान मुहम्मद भी करता था तो यह उचित नही क्योंकि वह बडा धर्मनिष्ठ था और अपने आपको ईश्वर का तुच्छ दास समझता था। नमाज के लिये जैसे ही अजान[1] होती वैसे ही वह उठ खडा होता और उस समय तक खडा रहता जब तक कि अजान होती रहती। प्रात काल की नमाज के उपरान्त अनेक अवराद[2] पढा करता था। अन्त पुर में जाने के पूर्व वह ख्वाजा-सराओं को महल में सूचना देने के लिये भेज देता था ताकि उसमे पर्दा करने वाली स्त्रियाँ छिप जाय और बादशाह की दृष्टि उन पर न पडे। वह कुतलुग खाँ का, जिससे उसने बाल्या-वस्था में कुछ पढा था, इतना अधिक सम्मान करता था और इस कार्य में इतनी अतिशयोक्ति (अधिकता) प्रदर्शित करता था जितनी कोई शिष्य अपने गुरु की न करता होगा। वह मखदूमये जहाँ की आज्ञाओं का इतना अधिक पालन करता था कि कभी भी कोई बात उसकी आज्ञा के विरुद्ध न करता था। मैं इस बादशाह के गुणों के विषय में यह कहूँ कि वह बड़ा ही नम्र तथा दीन स्वभाव रखता था या यह लिखू कि वह स्वय ईश्वर बनना चाहता था ? (५०७) वास्तव में मैं ससार की रक्षा करने वाले उस बादशाह के गुणो को नही समझ सकता। मैं यही कह सकता और लिख सकता हूँ कि ईश्वर ने सुल्तान मुहम्मद को जगत के प्राणियो में एक अद्भुत प्राणी बनाया था।

दभोई तथा बरौदा के अमीराने सदा का विद्रोह—

जिस समय मलिक अजीज खम्मार ने इतना बडा अनर्थ किया कि एक साथ ८६ अमीराने सदा की इस कारण हत्या करादी कि वे इस पद पर नियुक्त थे, उसी समय गुजरात का नायब वजीर मुकबिल पायगाह (शाही अस्तबल) के घोडों तथा खजाने को जो गुजरात में एकत्र था, देहुई[3] तथा बरौदा के मार्ग से देहली ला रहा था। जब वह देहुई (दभोई) तथा बरौदा की सीमा में पहुचा तो देहुई (दभोई) तथा बरौदा के अमीराने सदा, जोकि अजीज खम्मार के हत्याकाण्ड स आतकित हो गये थे और जिन्होंने गुप्त रूप से विद्रोह कर दिया था, मुक़बिल नायब वजीर गुजरात पर टूट पडे। समस्त घोडे तथा खज़ाना, जो वह ला रहा था, उससे छीन लिया। उन्होंने गुजरात के उन व्यापारियों को भी धन-सम्पत्ति

१ नमाज के लिये अजान (बाँग) द्वारा बुलाया जाता है।
२ कुरान तथा ईश्वर की वदना-सम्बन्धी अन्य पुस्तकों के विभिन्न भागों का पढना। इसे अनिवार्य नमाजों से पृथक् पढते हैं।
३ दभोई होना चाहिये।

तथा बहुमूल्य सामान, कपड़े आदि, जो वे उसके साथ देहली से जा रहे थे, लूट लिये। वह (मुकबिल) नहरवाला लौट गया और उसके साथी छिन्न भिन्न हो गये। देहुई (दभोई) तथा बरौदा के अमीराने सदा इस धन सम्पत्ति तथा घोड़े आदि के कारण बड़े शक्तिशाली बन गये। उन्होंने उपद्रव की ज्वाला भड़का दी और विद्रोह कर दिया। वे सेना एकत्र करके खम्बायत पर अधिकार जमाने के लिये चल खड़े हुये। देहुई (दभोई) तथा बरौदा के अमीराने सदा के विद्रोह तथा उपद्रव से समस्त गुजरात में हा हाकार मच गया और उस प्रदेश के राज्य में उथल पुथल प्रारम्भ हो गयी। इस विद्रोह तथा देहुई (दभोई) और बरौदा के अमीराने सदा के मुकबिल नायब वज़ीर गुजरात पर आक्रमण, मुकबिल की पराजय तथा घोड़ों और धन-सम्पत्ति के विनाश के समाचार देहली में सुल्तान मुहम्मद के दरबार में रमज़ान ७४५ हि० (जनवरी १३४५ ई०) के अन्त में प्राप्त हुये। सुल्तान मुहम्मद उपर्युक्त विद्रोह के समाचार से बड़ी चिन्ता में पड़ गया। वह उपर्युक्त विद्रोह तथा विस्फोट को दबाने के लिये स्वयं गुजरात की ओर प्रस्थान करना चाहता था

विद्रोह शान्त करने के लिये क़ुतलुग खाँ द्वारा आज्ञा माँगना—

कुतलुग खा ने, जोकि सुल्तान का गुरु था, तारीखे फीरोजशाही के संकलनकर्त्ता अर्थात् (५०८) जिया बरनी द्वारा सुल्तान की सेवा में यह सदेश भेजा कि "दभोई तथा बरौदा के अमीराने सदा का क्या महत्त्व है और वे क्या चीज़ हैं, जो जगत का रक्षक बादशाह उनके दमन हेतु प्रस्थान कर रहा है। उन लोगों ने अजीज खम्मार के हत्या-काण्ड तथा अनुचित व्यवहार के कारण विद्रोह कर दिया है। यदि उन्हें यह ज्ञान हुआ कि सम्मानित पताकाओं (सुल्तान) ने इस युद्ध के लिए प्रस्थान किया है, तो वे और भी विरोध करने लगेंगे और हिन्दुओं के पास भाग जायेंगे या किसी दूर के स्थान को चले जायेंगे। बादशाह के आक्रमण तथा दण्ड के भय से अन्य विलायतों के अमीरान सदा भी घृणा तथा विद्रोह करने लगेंगे। यदि मुझ दरबार के प्राचीन हितैषी को आदेश प्रदान हो जाय तो उन्हीं इनामों से जो बादशाह के दास द्वारा मुझे प्राप्त हुये हैं, सेना तैयार करके देहुई (दभोई) तथा बरौदा पर आक्रमण करके उनका विद्रोह तथा उपद्रव शान्त कर दूँ। शिहाबे सुल्तानी तथा जफर खाँ अलाई के भतीजे अली शाह करा (कड़ा) के समान, जिनकी गर्दनों को रस्सी से बँधवा कर मैंने बिदर से राजसिंहासन के समक्ष भेज दिया था, इन विद्रोहियों को भी भेज दूँ और उस प्रदेश को सुव्यवस्थित कर दूँ[१]"। इस इतिहास के संकलनकर्त्ता ने कुतलुग खाँ की प्रार्थना सुल्तान के कानों तक पहुँचा दी। सुल्तान को कुतलुग खाँ की प्रार्थना, जोकि राज्य व्यवस्था के हित में थी, पसन्द न आई। उसने उसकी प्रार्थना का कोई उत्तर न दिया और आदेश दिया कि शीघ्रातिशीघ्र कूच की तैयारी प्रारम्भ कर दी जाय, सेना की संख्या बढ़ाई जाय।

विद्रोह शान्त करने के लिए सुल्तान का प्रस्थान—

विद्रोह के समाचार पहुँचने के पूर्व सुल्तान ने शेख अलाउद्दीन अजोधनी के पुत्र शेख मुइज्जुद्दीन को गुजरात का नायब नियुक्त कर दिया था। जब गुजरात पर आक्रमण होना निश्चय हो गया तो उसने आदेश दिया कि शेख मुइज्जुद्दीन को ३ लाख तन्के नकद प्रदान किये जाय जिससे वह दो तीन दिन में १ हज़ार सवार एकत्र करले और वह शाही पताकाओं (५०९) के साथ प्रस्थान करे। सुल्तान ने अपनी अनुपस्थिति में युग के सम्राट् फीरोज शाह

१ क़ुतलुग खाँ ने यह प्रार्थना [illegible] पहुँचने के तुरन्त बाद अपने खोये हुये सम्मान को पुन प्राप्त करने के लिये की होगी। [illegible] [illegible]बान ७४५ हि० को क़तलुग [illegible] बुलवाने दौलताबाद भेजा गया था और इस वि[illegible] रमज़ान ७४५ हि० [illegible] हुये थे (बरनी पृ० ५०७)।

सुल्तान, मलिक कबीर तथा अहमद अयाज को अपना नायब नियुक्त किया। शुभ कूस्क (महल) से निकल कर सुल्तानपुर[1] नामक कस्बे में, जोकि शहर (देहली) से १५ कोस पर है, ठहरा। रमज़ान के महीने के ३-४ दिन शेष थे। वह उन दिनों वहीं रुका रहा।

विद्रोहियों द्वारा अज़ीज़ खम्मार की हत्या—

सुल्तानपुर में अज़ीज़ खम्मार का धार से प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुआ जिसमें लिखा था कि "देहुई (दभोई) तथा बरौदा के अमीराने सदा ने उपद्रव तथा विद्रोह कर दिया है। चूँकि मैं उनके निकट हूँ अत मैं धार की सेना तैयार करके उनके उपद्रव की ज्वाला बुझाने के लिये प्रस्थान करता हूँ।" सुल्तान ने कमीने अज़ीज़ खम्मार का देहुई (दभोई) तथा बरौदा की ओर प्रस्थान करना पसन्द न किया। उसकी चिन्ता और भी बढ़ गई। उसने कहा कि अज़ीज़ युद्ध करना नहीं जानता। आश्चर्य नहीं कि इन विद्रोहियों द्वारा वह मारा जाय। इस सूचना के बाद ही यह समाचार मिला कि अज़ीज़ ने वहाँ पहुँच कर उन लोगों से युद्ध किया किन्तु युद्ध में उसके होश जाते रहे और वह घोड़े से नीचे गिर कर असावधान हो गया। उन विद्रोहियों ने उसे बन्दी बना लिया और उसे बहुत बुरी तरह मार डाला। उपद्रव और भी बढ़ गया।

ज़िया बरनी से परामर्श—

रमज़ान के उन ४-५ दिनों में, जबकि सुल्तान मुहम्मद सुल्तानपुर क़स्बे में था, उसने अन्तिम रात्रि में इस तुच्छ ज़िया बरनी को बुलवाया। सुल्तान ने कहा कि "हे अमुक व्यक्ति! तू देखता है कि किस प्रकार विद्रोह उठ खड़े हुये हैं। मुझे इन विद्रोहों की चिन्ता नहीं। लोग यही कहेंगे कि यह सब विद्रोह सुल्तान के अत्यधिक दण्ड के कारण होते हैं। मैं लोगों के कहने तथा विद्रोह के कारण दण्ड देने से बाज नहीं आ सकता।" तत्पश्चात् सुल्तान ने बरनी से कहा कि "तूने बहुत से इतिहासों का अध्ययन किया है। क्या तूने नहीं पढ़ा है कि बादशाह किन-किन अपराधों में लोगों को कठोर दण्ड (प्राण दंड) दिया करते थे?" इस दास ने उत्तर दिया (५१०) कि "दास ने तारीखे किसरवी[2] में पढ़ा है कि बादशाह के लिये कठोर दण्ड दिये बिना बादशाही करना सम्भव नहीं। यदि बादशाह लोगों को कठोर दण्ड नहीं देता तो ईश्वर ही जानता है कि अवज्ञाकारियों की अवज्ञा से कौन-कौन से उपद्रव न उठ खड़े हों, और आज्ञाकारी कैसे-कैसे व्यभिचार तथा दुराचार न करने लगें। जमशेद के एक विश्वास पात्र ने उससे यह पूछा कि 'बादशाह को किन किन अपराधों में मृत्यु-दण्ड देना चाहिये?' उसने उत्तर दिया कि बादशाह को ७ प्रकार के अपराधों के लिये लोगों को मृत्यु-दण्ड देना उचित है। जो कोई इस सीमा से बढ़ जाता है उसके राज्य में अशान्ति फैल जाती है और विद्रोह होने लगता है और राज्य का हित समाप्त हो जाता है। (१) जो कोई सच्चे दीन (इस्लाम) को त्याग दे और अपनी बात पर दृढ़ रहे उसे मृत्यु दण्ड दिया जाय। (२) जो कोई जान बूझ कर बादशाह के आज्ञाकारियों की हत्या कर उसे मृत्यु दण्ड दिया जाय। (३) जिस किसी का विवाह हो चुका हो और वह दूसरों की स्त्रियों से व्यभिचार करे तो उसको भी मृत्यु दण्ड देना चाहिये। (४) जो बादशाह के विरुद्ध षड्यन्त्र रचे और उसका षडयन्त्र प्रमाणित हो जाय तो उसके लिये भी मृत्यु-दण्ड है। (५) जो कोई विद्रोहियों का नेता हो तथा विद्रोह फैलाता हो उसे भी मृत्यु-दण्ड दे दिया जाय। (६) बादशाह की जो प्रजा बादशाह के विरोधियों, शत्रुओं तथा उसकी बराबरी

---

१ गुर्गांवों ज़िले में देहली से २५ मील दक्षिण पश्चिम की ओर।

२ इस इतिहास की चर्चा बरनी ने अन्य प्रसिद्ध इतिहासों के साथ अपनी प्रस्तावना में की है किन्तु इसके लेखक का उल्लेख नहीं किया। सम्भव है कि यह मूसा बिन ईसा अल किसरवी का इतिहास हो जिसका उल्लेख अलबरूनी ने किया है। (Sachau's Translation of the Asarul Baqiya, Page 122, 127, 208, होदीवाला पृ० २६६)

करने वालो से मिल जाय और उसे समाचार, अस्त्र-शस्त्र आदि पहुचाये और उसकी सहायता प्रमाणित हो जाय तो उसकी भी हत्या कर दी जाय। (७) यदि कोई बादशाह की आज्ञाओं का उल्लघन करे और यदि उस आज्ञा-उल्लघन द्वारा बादशाह के राज्य को हानि पहुँचे तो उसको भी मृत्यु-दण्ड दे दिया जाय किन्तु अन्य आज्ञाओ के उल्लघन पर नही। हत्या उसी दशा में कराई जा सकती है जब कि राज्य की हानि का भय हो क्योकि जब खुदा के दास खुदा की आज्ञाओ तक का उल्लंघन किया करते हैं, तो यदि वे बादशाह की आज्ञाओं का उल्लघन करें, जो उसका नायब है, तो क्या हुआ, किन्तु यदि आज्ञा पालन न करने से राज्य को (५११) हानि पहुचने का भय हो और उस पर भी बादशाह उन्हे मृत्यु-दण्ड न दे तो वह अपने राज्य का स्वय ही विनाश कर देगा।" सुल्तान ने मुझ से पूछा कि, "इन सातो मृत्यु-दण्डो में से किन-किन का उल्लेख मुस्तफा[१] (ईश्वर का दरूद और सलाम उन पर हो) की हदीस में हुआ है और उनमें से कौन-कौन बादशाहो से सम्बन्धित हैं।" मैंने उत्तर दिया कि "उपर्युक्त सात अपराधो में से तीन अपराधो के लिये मृत्यु-दण्ड है : मुर्तद हो जाने, मुसलमानो की हत्या तथा विवाहित द्वारा व्यभिचार। चार अन्य अपराधो पर मृत्यु-दण्ड सुल्तानों के अपने राज्य के हित से सम्बन्धित हैं। उपर्युक्त लाभो का उल्लेख करते हुए जमशेद ने कहा है कि बादशाह इस कारण वजीर चुनते तथा उन्हे अत्यधिक सम्मान प्रदान करते और अपना राज्य उनके अधिकार में दे देते हैं कि वजीर बादशाहो के राज्य में अधिनियम बनाते हैं और उसे सुव्यवस्थित रखते हैं। उन अधिनियमो का पालन करने के कारण बादशाह को किसी के रक्तपात की आवश्यकता नही रहती।" सुल्तान ने उत्तर दिया कि 'जमशेद ने जिन दण्डो के विषय में कहा है वे प्राचीन काल से सम्बन्धित हैं। इस युग में दुष्ट तथा आज्ञाओ का उल्लघन करन वाले बहुत बडी सख्या में पैदा हो गये हैं। मै नित षड्यन्त्र, उपद्रव तथा छल की आशका पर लोगो को मृत्यु दण्ड देता हूँ। यदि प्रजा में से कोई जरा भी आज्ञा का उल्लघन करता है तो मैं उसकी भी हत्या करा देता हूँ। मै उन्हें इसी प्रकार उस समय तक दण्ड देता रहूँगा जब तक कि या तो मेरा देहावसान न हो जाय या लोग ठीक न हो जायें और विद्रोह तथा आज्ञा का उल्लघन करना बन्द न कर दें। मेरे पास कोई ऐसा वज़ीर नही है जो मेरे राज्य के लिये अधिनियम बनाये और मुझे किसी के रक्त से अपने हाथ न रगने पडे। इसके अतिरिक्त मैं लोगो की हत्या इस कारण करता हूँ कि लोग एकबारगी मेरे विरोधी तथा शत्रु बन गये हैं। मैंने लोगों को इतनी धन-सम्पत्ति प्रदान की किन्तु फिर भी मेरा कोई भी विश्वास-पात्र अथवा हितैषी न बना। मुझे लोगों के स्वभाव के विषय में भली भाँति जानकारी प्राप्त हो चुकी है कि वे मेरे शत्रु तथा विरोधी हैं।"

गुजरात के विद्रोहियों की पराजय —

(५१२) सुल्तानपुर से सुल्तान मुहम्मद निरतर कूच करता हुआ गुजरात की ओर रवाना हुआ। जब सुल्तान नहरवाला पहुँचा तो शेख मुइज्जुद्दीन तथा अन्य कारकुनो (पदाधिकारियो) को नहरवाला नगर मे भेजा और सुल्तान स्वय नगर को अपने बाईं ओर छोडता हुआ आबू के पर्वत में प्रविष्ट हुआ। उस स्थान से देहुई (दभोई) तथा बरोदा निकट थे। सुल्तान ने एक सना-नायक तथा अन्य सैनिको को उन विद्रोहियों से युद्ध करने के लिये भेजा। वह सेना-नायक आबू पर्वत से देहुई (दभोई) तथा बरोदा में प्रविष्ट हुआ और उन विद्रोहियों का मुकाबला किया। विद्रोही युद्ध न कर सके। उनके बहुत से सवार मारे गये। अन्य पराजित हुये। बहुत से अपनी स्त्रियो तथा बालको को लेकर देवगीर (देवगिरि)

---

१ मुहम्मद साहब।

भाग गये। सुल्तान आबू पर्वत से भरोंच गया। वहाँ से उसने मलिक मकबूल[1] नायब वजीरे ममालिक तथा देहली के कुछ सैनिक तथा भरोंच के अमीराने सदा एव भरोंच की सेना देहुई (दभोई) तथा बरौदा के भागने वालो का पीछा करने के लिये नियुक्त की। मलिक मकबूल नायब वजीरे ममालिक ने नर्बदा-तट के निकट पहुच कर देहुई (दभोई) तथा बरौदा के भागने वालो से युद्ध करके उन्हे पराजित तथा तहस नहस कर दिया। उन भागने वालो में से बहुत से मारे गये। उनके स्त्री बालक तथा उनकी धन-सम्पत्ति मलिक मकबूल नायब वजीर को प्राप्त हो गई। उन भागने वालो में से कुछ प्रतिष्ठित लोग घोडे की नगी पीठ पर सवार होकर सालीर तथा मालीर[2] पर्वत के मुकद्दम मान देव के पास भाग गये। मान देव ने उन्हे बन्दी बना लिया और उनके पास जो कुछ धन-सम्पत्ति जवाहरात तथा मोती थे, उनसे छीन लिये और गुजरात से उनके उपद्रव का पूर्णतया अन्त कर दिया। मलिक मकबूल नायब वजीर नर्बदा-तट पर कुछ दिनों ठहरा रहा। सुल्तान के आदेशानुसार, भरोंच के बहुत से प्रतिष्ठित अमीराने सदा बन्दी बना लिये और उन सब की तुरन्त हत्या करादी। जो लोग नायब वजीर की तलवार से बच गये उनमें से कुछ देवगीर (देवगिरि) भाग गये और कुछ गुजरात के मुकद्दमों के पास चले गये। सुल्तान मुहम्मद कुछ समय तक भरोंच में ठहरा रहा। भरोंच, (५१३) खम्बायत तथा गुजरात का कर, जो वर्षों से शेष था, प्राप्त करने के लिये उसने विशेष पूछताछ तथा प्रयास किया। कर वसूल करने वाले कठोर व्यक्ति नियुक्त किये। उसने बडी कठोरता से अत्यधिक धन-सम्पत्ति एकत्र की। उन दिनो सुल्तान मुहम्मद का प्रजा के प्रति क्रोध बहुत बढा था और उसके हृदय में बदला लेने की भावनायें बढती जाती थी। जिन लोगो ने खम्बायत तथा भरोंच में नायब से अनुचित बातें कही थी या किसी प्रकार विद्रोहियो को सहायता पहुचाई थी, उन्हें बन्दी बना लिया जाता था और उनकी हत्या करादी जाती थी प्रत्येक श्रेणी के मनुष्य बहुत बडी सख्या में मार डाले गये।

देवगीर (देवगिरि) मे विद्रोह—

जब सुल्तान भरोंच में था तो उसने जैनबन्दा तथा रुक्न थानेश्वरी के मॅझले पुत्र को, जोकि अपने समय के बहुत बडे दुष्ट लोगों में थे तथा दुराचारियों के नेता और ससार के समस्त दुष्टो से भी अधिक दुष्ट थे, देवगीर (देवगिरि) के दुष्टो के विषय में पूछताछ करने के लिये नियुक्त किया। थानेश्वरी का पुत्र, जोकि बहुत बडा दुष्ट था, देवगीर (देवगिरि) पहुँचा ही था तथा जैन बन्दा, जोकि दुष्ट एव काफिरो के समान था और जो मजदुलमुल्क कहलाता था, अभी मार्ग ही में था कि देवगीर (देवगिरि) के मुसलमानों के मध्य में खलबली मच गई क्योंकि दो अभागे दुष्ट उस प्रदेश के षड्यन्त्रकारियों के विषय में 'पूछताछ करने और उनकी हत्या के लिये नियुक्त हुये थे। एक को उन लोगो ने अपनी आँखों से देख लिया था और दूसरे के विषय में उन्हे ज्ञात था कि वह धार पहुँच गया होगा। भाग्यवश सुल्तान ने उसी समय दो प्रतिष्ठित अमीरों को देवगीर (देवगिरि) भेजा। कुतलुग खाँ के भाई को यह फरमान लिखा कि वह देवगीर (देवगिरि) की सेना में से १½ हजार सवारो को तैयार करके प्रतिष्ठित अमीराने सदा के नेतृत्व में भरोंच भेज दे। वे दोनो दरबारी अमीर देवगीर (देवगिरि)

१ इससे पूर्व बरनी ने उसे मुकबिल लिखा है। अफीफ ने भी उसे मकबूल लिखा है। वह प्रारम्भ में हिन्दू था और उसका नाम कन्नू था। फ़ीरोज शाह के राज्यकाल में उसे बड़ा सम्मान प्राप्त हुआ। (अफीफ, तारीखे फ़ीरोजशाही पृ० ३९४ ४०६, ४२१-४२५)।

२ बगलाना के ७ किलों में से दो किले (मोलीर व सालीर)। बगलाना, सूरत तथा नन्द्रबार के मध्य में एक पर्वतीय प्रदेश है (आईने अकबरी भाग (२) नवलकिशोर प्रेस लखनऊ १८९३ पृ० १२०)। राजा का नाम नान्यदेव था।

पहुँचे। कुतलुग ख़ाँ के भाई मौलाना निज़ामुद्दीन ने १½ हज़ार सवारो को तैयार करके उन्हें (५१४) व्यय देकर प्रतिष्ठित ग्रमीराने सदा के नेतृत्व में उन दो ग्रमीरो के साथ, जो उन्हे बुलाने ग्राये थे, भरौंच की ग्रोर भेज दिया। देवगीर (देवगिरि) के ग्रमीराने सदा ने भरौंच की ग्रोर ग्रपने ग्रधीन सवारो के साथ प्रस्थान किया। जब वे भरौंच की ग्रोर प्रस्थान करते समय पहले पडाव[1] पर पहुँचे तो उन्होने सोचा कि "हम लोग राज-सिहासन के सम्मुख इस लिये बुलाये गये हैं कि हमारी हत्या करादी जाय। यदि हम वहाँ जायेंगे तो हम में से एक भी न लौट सकेगा। सभी ग्रमीराने सदा की हत्या करादी जायगी"। उन्होने उपर्युक्त सोच विचार करके उन दोनो ग्रमीरो की, जोकि राजसिंहासन द्वारा भेजे गये थे, पहले ही पडाव में हत्या करदी ग्रौर विद्रोह कर दिया। वे वहाँ से शोर मचाते हुये वापस हुये ग्रौर शाही महल में पहुँच गये। मौलाना निज़ामुद्दीन को, जो उस स्थान का शासक था, बन्दी बना लिया। वे पदाधिकारी, जो देवगीर (देवगिरि) में रक्षा के विचार से नियुक्त किये गये थे, बन्दी बना लिये गये ग्रौर सभी की हत्या कर दी गई। थानेश्वरी के पुत्र के टुकडे-टुकडे कर दिये। धारागीर[2] के खजाने को वे ले ग्राये। मलिक मल ग्रफगान के भाई मुख ग्रफगान को, जोकि देवगीर (देवगिरि) की सेना का एक ग्रमीर सदा था, ग्रपना नेता बना लिया ग्रौर उसे राजसिंहासनारूढ कर दिया। धन सम्पत्ति तथा खज़ाना उस स्थान के सवारो एव प्यादो को बाँट दिया। मरहठ की विलायतें ग्रमीराने सदा म वितरित करदी। ग्रनेक विद्रोही तथा षड्यन्त्रकारी उन ग्रफगानो के सहायक एव मित्र हो गये। देहुई (दभोई) तथा बरोदा के ग्रमीराने सदा मान देव के पास से देवगीर (देवगिरि) पहुँच गये। देवगीर (देवगिरि) में बहुत बडा विद्रोह उठ खडा हुग्रा। वहाँ की प्रजा विद्रोहियो की सहायक हो गई।

सुल्तान का देवगीर (देवगिरि) की ग्रोर प्रस्थान तथा उसकी विजय—

जब सुल्तान को देवगीर (दवगिरि) के ग्रमीरों के विद्रोह तथा विरोध के समाचार मिले तो उसने एक बहुत बडी सना तैयार की। भरौंच से देवगीर (देवगिरि) पर चढाई कर दी। सुल्तानी पताकायें निरन्तर धावे मारती हुई देवगीर (देवगिरि) पहुच गई। देवगीर (देवगिरि) के विद्रोहियो तथा हरामखोरो न सुल्तान से युद्ध किया। सुल्तान मुहम्मद न (५१५) उनसे युद्ध करके उन्हे पराजित कर दिया। उनके बहुत से सवार युद्ध करते हुये मारे गये। मुख ग्रफगान, जोकि वहाँ पर उनका सरदार था ग्रौर जिसने चत्र धारण कर लिया था ग्रौर ग्रपने ग्रापको सुल्तान कहलवाता था, ग्रपने सहायक तथा साथी विद्रोहियो एव उनके परिवारो को लेकर धारागीर क ऊपर चला गया। वे विद्रोही जो सरदार बन चुके थे, उस क़िले में घुस गये। हसन काँगू, बिदर के विद्रोही तथा मुख ग्रफगान के भाई शाही सेना से भाग कर ग्रपनी-ग्रपनी विलायतो को चले गये।

देवगीर (देवगिरि) के निवासी, मुसलमान तथा हिन्दू, सैनिक तथा बाज़ारी नष्ट भ्रष्ट कर दिये गये। सुल्तान ने एमादुलमुल्क सरतेज सुल्तानी तथा कुछ ग्रन्य ग्रमीरों ग्रौर सैनिको को गुलबर्गा भेज कर यह ग्रादेश दिया कि वह गुलबर्गा तथा उस ग्रोर के प्रदेश ग्रपने ग्रधिकार में कर ले। जो लोग शाही सेना से भाग गये हैं उनके विषय में यह ग्रादेश हुग्रा कि उन्हे ढूढ-ढूढ कर उनके षड्यन्त्र का ग्रन्त कर दिया जाय। सुल्तान देवगीर (देवगिरि) में कूश्के खास (खास महल) में ठहरा रहा। उसने उन समस्त मुसलमानो को जो देवगीर (देवगिरि) में थे

---

१ यह पडाव नासिक ज़िले के मानिकपुञ्ज दर्रे पर दौलताबाद के ४० मील उत्तर पश्चिम में हुग्रा होगा। (होदीवाला पृ० ३००)।

२ यह एक बड़ा ही मज़बूत क़िला था।

नौरोज करगन (गुरगीन[1]) के साथ शहर (देहली) भेज दिया। देवगीर (देवगिरि) के विजय-पत्र इस युग के सुल्तान (फीरोज शाह) मलिक कबीर, तथा अहमद अयाज के पास देहली भेज दिये गये। शहर (देहली) में खुशी के बाजे बजवाये गये। राजधानी से सुल्तान की अनुपस्थिति के समय इन लोगो ने राज्य को पूर्ण रूप से सुव्यवस्थित रक्खा और प्रजा उनसे सतुष्ट थी।

देवगीर (देवगिरि) का शासन प्रबन्ध तथा तग़ी का विद्रोह—

सुल्तान मुहम्मद देवगीर (देवगिरि) की व्यवस्था तथा मरहठ प्रदेश के शासन प्रबन्ध में लग गया। वह अमीरो को अक्तायें प्रदान करता था। अभी वह सेना तथा विलायत के प्रबन्ध से निश्चित भी न हुआ था कि कृतघ्न तग़ी के विद्रोह के समाचार देवगीर (देवगिरि) में प्राप्त हुये। उस दास ने, जोकि मोचों था और सफ्दर मलिक सुल्तानी[2] का दास रह चुका था, गुजरात के अमीराने सदा को मिला कर विद्रोह कर दिया। गुजरात के कुछ मुकद्दम भी उसके (५१६) सहायक बन गये। वह हरामखोर नहरवाला पहुँचा और उसने शेख मुइज्जुद्दीन के सहायक मलिक मुजफ्फर की हत्या कर दी। शेख मुइज्जुद्दीन तथा अन्य पदाधिकारियो को पकड कर बन्दी बना लिया। तग़ी हरामजादा तथा हरामखोर (दुष्ट) अन्य विद्रोहियों के साथ खम्बायत पहुँचा और खम्बायत को लूट लिया। खम्बायत से हिन्दुओ तथा मुसलमानो के साथ भरौंच के किले के नीचे आ पहुँचा। भरौंच के किले वालों से नित युद्ध करने तथा किले को हानि पहुँचाने लगा। सुल्तान मुहम्मद तग़ी के विद्रोह के समाचार सुन कर खुदावन्द जादा किवामुद्दीन मलिक जौहर तथा शेख बुरहान बलारामी, जहीरुल जुयूश (सेना-नायक) को तथा कुछ सेना देवगीर (देवगिरि) में छोड कर और देवगीर (देवगिरि) की व्यवस्था समाप्त न करके तथा अधूरी छोडकर शीघ्रातिशीघ्र देवगीर (देवगिरि) से भरौंच की ओर रवाना हुआ। उस स्थान के जो छोटे बडे मुसलमान वहाँ रह गये थे, उन्हे सेना के साथ भरौंच भेज दिया। उस समय अनाज का मूल्य बहुत बढ गया था और सेना वालो को इससे बडा कष्ट था।

सुल्तान की सेवा मे बरनी का पहुँचना तथा विद्रोह के विषय मे वार्त्ता—

इस तारीखे फीरोजशाही का सकलनकर्त्ता जिया बरनी सुल्तान मुहम्मद से, जब कि वह भरौंच की ओर १-२ पडाव आगे पहुँच चुका था और सागौन घाटी को पार कर चुका था शहर (देहली) से आकर मिला। इस युग के बादशाह (फीरोज), मलिक कबीर तथा अहमद अयाज के बधाई-पत्र जो इन लोगो ने शहर (देहली) से मेरे हाथ भेजे थे, मैंने सुल्तान की सेवा में प्रस्तुत किये। सुल्तान ने मेरा बडा आदर सम्मान किया।

एक दिन मैं सुल्तान के साथ-साथ यात्रा कर रहा था और सुल्तान मुझ से वार्त्तालाप करता जाता था कि इसी बीच मे विद्रोह के विषय में वार्त्ता होने लगी। सुल्तान ने मुझ से कहा कि 'तू देखता है कि हरामखोर (दुष्ट) अमीराने सदा किस प्रकार विद्रोह कर रहे हैं। यदि मैं एक ओर व्यवस्था करता हूं और उनका विद्रोह शान्त करता हूं तो वे दूसरी ओर (५१७) से विद्रोह कर देते हैं। यदि मैं प्रारम्भ ही में यह आदेश दे देता कि समस्त देवगीर (देवगिरि) गुजरात तथा भरौंच के अमीराने सदा की एक साथ हत्या करदी जाय तो मुझे इतना कष्ट का सामना न करना पडता। इसी हरामखोर (दुष्ट) तग़ी की, जोकि मेरा दास है, यदि मैं हत्या करा देता अथवा उसे अदन के बादशाह के पास उपहार के रूप में भेज

१ पुस्तक में नौरोज कर्कन है। एक अन्य स्थान पर बरनी ने उसका नाम करगन लिखा है। वह तरमा शीरी का जामाता था और सुल्तान मुहम्मद का बड़ा विश्वास पात्र था (बरनी पृ० ५३३)।

२ इब्ने बतूता के अनुसार उसका नाम कीरान था। उसने उसे सफ्दर मलिक लिखा है। बरनी ने उसका नाम तथा पद सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के अमीरों की सूची में मलिक सफ्दर मलिक सुल्तानी आखुरबके मैसरा रखा है (बरनी पृ० ४५४)।

देता तो फिर वह किस प्रकार यह उपद्रव तथा विद्रोह कर सकता।" मैं सुल्तान की सेवा में यह निवेदन न कर सकता था कि "प्रत्येक दिशा में विद्रोहों तथा अशान्ति का फैलना सुल्तान के हत्या काण्ड का फल है। यदि वह कुछ समय के लिए हत्या का दण्ड रोक दे तो सम्भव है कि लोग शान्त हो जायें और साधारण तथा विशेष व्यक्ति उससे घृणा करनी कम कर दें। मैं सुल्तान के क्रोध से भय करता था और उपर्युक्त बात उससे न कह सकता था किन्तु मैं अपने हृदय में सोचता था कि यह एक विचित्र बात है कि जिस बात से उसके राज्य में उथल पुथल तथा उसका विनाश हो रहा है, वही राज्य तथा शासन को सुव्यवस्थित एवं उसके उपकार के लिए सुल्तान मुहम्मद के हृदय में नहीं आती। सुल्तान मुहम्मद कूच करता हुआ भरौंच पहुँचा। नर्बदा तट पर जोकि भरौंच के नीचे से बहती है सेना लेकर उतर पड़ा। जब तग़ी हरामख़ोर (दुष्ट) ने सुना कि शाही पताकायें भरौंच पहुँच चुकी हैं तो वह उस स्थान को त्याग कर अन्य विद्रोहियों के साथ, जोकि उसके सहायक बन गये थे और जिनकी संख्या ३ हज़ार से अधिक न थी, भाग गया।

सुल्तान मुहम्मद ने नर्बदा-तट पर मलिक यूसुफ़ बुग़रा को सेना-नायक बनाया और उसे दो हज़ार सवार प्रदान किये। उसे तथा कुछ अन्य अमीरों को खम्बायत भेजा। वह सेना लेकर ४-५ दिन में खम्बायत की सीमा पर पहुँच गया और तग़ी से युद्ध किया। दुर्भाग्यवश मलिक यूसुफ़ बुगरा तथा कुछ अन्य लोग विद्रोहियों द्वारा मारे गये। शाही सेना पराजित होकर भरौंच पहुँची। जब मलिक यूसुफ़ बुगरा की हत्या तथा शाही सेना की (५१८) पराजय के समाचार सुल्तान को प्राप्त हुये तो उसने तुरन्त नदी पार की। २-३ दिन तक उसने भरौंच में तैयारी की। तत्पश्चात् शीघ्रातिशीघ्र खम्बायत की ओर प्रस्थान किया। तग़ी को जब यह ज्ञात हुआ कि सुल्तान खम्बायत आ रहा है तो वह खम्बायत से भाग कर असावल[1] चला गया। जब कृतघ्न तग़ी ने यह सुना कि शाही पताकायें असावल पहुँचने वाली हैं, तो वह वहाँ से भी भाग कर नहरवाला पहुँचा। सुल्तान के भरौंच से प्रस्थान करने के पूर्व हरामख़ोर (दुष्ट) तग़ी ने शेख मुइज्ज़ुद्दीन तथा अन्य पदाधिकारियों को जिन्हें उसने बन्दी बना लिया था, हत्या करा दी।

इस इतिहास का सङ्कलनकर्त्ता कहता है कि "मुझे यह उचित ज्ञात नहीं होता कि इस तारीखे फीरोजशाही में, जिसमें सुल्तान का इतिहास तथा राज्य के गण्य-मान्य व्यक्तियों का उल्लेख है, मैं तग़ी की दुष्टता तथा नीचता का उल्लेख करूँ और यह लिखूँ कि तग़ी किस प्रकार कुछ सवारों को लेकर सुल्तान के मुकाबले में दृष्टिगत होता था और किस प्रकार प्रत्येक सेना से युद्ध करने के लिए बुरीदगान[2] की भाँति जाता था और तुरन्त भाग खड़ा होता था। सुल्तान की सेना से उस कमीने माबून (गुदा भोग्य) का युद्ध निम्नांकित छन्द में पूर्ण रूप से इस प्रकार स्पष्ट कहा जा सकता है।

छन्द

यह किस प्रकार सम्भव है कि मक्खी तलवार से काट डाली जाय।
किस प्रकार शेर मच्छर के चाँटा मारे।

तग़ी से युद्ध—

सुल्तान जब असावल पहुँचा तो लगभग एक मास तक सेना के घोड़ों की दुर्दशा तथा निरन्तर वर्षा के कारण असावल में रुका रहा। कुछ समय उपरान्त जब कि निरंतर वर्षा हो

१ फ़िरिश्ता के अनुसार अहमदाबाद।
२ बुरीदा "वह जिसका खतना हो चुका हो।" यहाँ इसका अर्थ नामर्द है।

रही थी, नहरवाले से सूचना मिली कि वलदुज ज़िना (व्यभिचार द्वारा जन्म पाया हुआ) तगी कुछ सवारो को, जिन्हे उसने एकत्र कर लिया था, लेकर नहर वाले के बाहर निकल कर असावल पर धावा मारने वाला है और कडा[1] नामक कस्बे में पहुँच चुका है। सुल्तान मुहम्मद उस निरन्तर वर्षा में ही असावल से निकल खडा हुआ और तीसरे चौथे दिन कडावत्ती[2] नामक कस्बे के निकट, जहाँ तगी था, पहुँच गया। दूसरे दिन सुल्तान ने सेना तैयार करके (५१९) उस हरामखोर (दुष्ट) पर आक्रमण किया। जब उन हरामखोरों की दृष्टि सुल्तान के लश्कर पर पडी तो सभी मदिरापान करके मस्त हो गये। उन लोगो के मध्य में से अमीराने सदा के कुछ सवार बराओ फेदाइयों[3] की भाँति अपने प्राण हथेली पर रख कर और नगी तलवारें अपने हाथ में लिये हुए शाही सेना पर टूट पडे। शाही सेना ने हाथियों द्वारा उन पर आक्रमण किया। वे अभागे शाही मस्त हाथियो का सामना न कर सके और शाही सेना के पीछे से होते हुये किसी प्रकार घने जगलों में घुस गये। वे पराजित होकर नहरवाले की ओर भाग गये। शाही सेना ने कुछ विद्रोहियो तथा उनके पूरे शिविर पर अधिकार जमा लिया। लगभग ४०० या ५०० विद्रोही युवक तथा वृद्ध, जो विद्रोहियो के शिविर से इस्लामी सेना द्वारा बन्दी बनाये गये थे, मार डाले गये। सुल्तान मुहम्मद ने मलिक यूसुफ बुगरा के पुत्र को सेना देकर भागने वालो का पीछा करने के लिये नहरवाले की ओर भेजा। जब रात्रि हो गई और काफी समय हो गया तो मलिक यूसुफ का पुत्र मार्ग में रुक गया और वह तथा उसकी सेना सो गई।

तगी की पराजय तथा सुल्तान का नहरवाला की ओर प्रस्थान—

तगी उन सवारों को लेकर जो उसके साथ भाग सके थे, नहरवाला पहुँचा। वे विद्रोही नहरवाले से अपने परिवार तथा सहायकों को लेकर किसी मार्ग से कन्त[4] चले गये। कुछ दिन तक वे वहाँ रहे। वहाँ से वे राय कर्नाल (गिरनार[5]) के पास छिपने के लिये प्रार्थना-पत्र भेज कर कर्नाल (गिरनार) चले गये। वहाँ से वे तहया (थट्टा) तथा दमरीला पहुचे और उन लोगों की शरण में आ गये। सुल्तान दो-तीन दिन पश्चात् नहरवाला पहुँचा और सहसीलग हौज के चबूतरे पर उतर पडा। वहाँ से वह गुजरात प्रदेश की शासन-व्यवस्था ठीक करने में तल्लीन हो गया। गुजरात के मुकद्दम, राना लोग, तथा महन्त सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुये और उन्होने उपहार भेंट किये। उन्हे खिलअत तथा इनाम प्रदान किये गये। थोडे ही समय में लोग शान्त हो गये। विद्रोह तथा उपद्रव का अन्त हो गया और

१ अहमदाबाद सरकार का एक महाल (करी)। (आईने अकबरी भाग २ पृ० १२१)

२ होदीवाला के अनुसार पट्टन के निकट कडी। गैकवाड़ राज्य के एक जिले का मुख्य क़स्बा।

३ फेदाई—हसन बिन सब्बाह के इस्माइली सहायक जो अपने प्राणों का भय न करके अपने नेता की आज्ञानुसार सब कुछ कर डालते थे। क़ज़्वीन तथा गीलान के मध्य में स्थित अलमूत पर्वत पर उसने एक दृढ तथा दुर्गम क़िला बनवा लिया था। यहीं से उसके ध्वंस का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ और उसने अनेक क़िलों पर अधिकार जमा लिया। उसकी मृत्यु ११२४ ई० में हुई। अमीर खुसरो के अनुसार हिन्दू बराओ (बराओं) भी इसी प्रकार अपने स्वामियों के लिये प्राण त्याग देते थे। (तुग़लुक़नामा पृ० १६, खलजी कालीन भारत पृ० १८४)।

४ पुस्तक में 'दर कन्त ब राहे रफ्त' है जिसका अर्थ "किसी मार्ग से कन्त चला गया" है। डाउसन ने इस कन्त बराही पढा (History of India, III, p 261)। Cambridge History of India में भी इस शब्द को इसी प्रकार पढ़ कर इसे खम्भालिया (जामनगर में) बताया गया है (Vol. III, p. 170)। होदीवाला का विचार है कि कन्त, कच्छ के पूर्व में कंथ कोट नामक स्थान हो सकता है। (होदीवाला पृ० ३०२)

५ गिरनार अथवा जूनागढ़।

(५२०) प्रजा विद्रोहियों की लूटमार से मुक्त हो गई। कुछ प्रतिष्ठित विद्रोही तगी से पृथक् होकर मण्डल तथा टेरी (पटरी)[1] के राना के पास उसकी शरण में पहुँच गये। मण्डल तथा टेरी (पटरी) के राना ने उनकी हत्या करादी और उनके सिर सुल्तान की सेवा में भेज दिये। उनके स्त्री बालक तथा धन-सम्पत्ति अपने अधिकार में कर लिये। राज सिंसाहन की ओर से उसे खिलअत, इनाम तथा सोने के बर्तन प्रदान हुये। राना इतना सम्मान पाने के उपरान्त दरबार में उपस्थित हुआ।

हसन काँगू का देवगीर (देवगिरि) पर अधिकार—

जिस समय सुल्तान सहसीलग के चबूतरे पर विराजमान था और राज्य-व्यवस्था तथा शासन-प्रबन्ध को ठीक करने में तल्लीन था और यह चाहता था कि नहरवाले पर आक्रमण करे, उसी समय देवगीर (देवगिरि) से समाचार प्राप्त हुआ कि हसन काँगू तथा अन्य विरोधियों एव विद्रोहियों ने, जोकि रणक्षेत्र में शाही सेना के सामन से भाग गये थे, एमादुल-मुल्क पर आक्रमण कर दिया। एमादुलमुल्क मारा गया। उसकी सेना छिन्न-भिन्न हो गई। खुदावन्द जादा किवामुद्दीन, मलिक जौहर तथा ज़हीरुल-जुयूश (सेना नायक) देवगीर (देवगिरि) से धार की ओर भाग गये। हसन काँगू ने देवगीर (देवगिरि) पहुँच कर छत्र धारण कर लिया। जो लोग शाही सेना के भय से धारागीर (धारागिरि) के ऊपर पहुच चुके थे वे भी नीचे उतर आये और देवगीर (दवगिरि) में बहुत बडी अशान्ति फैल गई। सुल्तान मुहम्मद उपर्युक्त समाचार सुनकर बडा दुखी हुआ और भली भाँति समझ गया कि प्रजा पूण रूप से घृणा करने लगी है और अब उसे ठीक करना सम्भव नही, शासन सम्बन्धी कार्यों की दृढता समाप्त हो चुकी है और राज्य का पतन भी होने ही वाला है। कुछ महीनों तक जब तक कि सुल्तान नहरवाले म रहा उसने किसी की हत्या नही कराई। सुल्तान ने देवगीर (देवगिरि) पर आक्रमण करने के लिये अहमद अयाज, मलिक बहराम गज़नी, अमीर कबतगा अमीरे महान[2] तथा सेना को देहली से बुलवाया। वे पूर्ण रूप से तैयार होकर शहर (देहली) से उसकी सेवा में पहुचे। तत्पश्चात् सूचना मिली कि हसन काँगू ने देवगीर (देवगिरि) में बहुत बडी सेना एकत्र करली है। सुल्तान को अहमद अयाज, मलिक बहराम गज़नी तथा अमीर कबतगा को देवगीर (देवगिरि) भेजना उचित ज्ञात न हुआ। सुल्तान ने देवगीर (देवगिरि) पर आक्रमण करने का विचार त्याग दिया और निश्चय किया कि सर्व प्रथम गुजरात को मुक्त (५२१) करले और कर्नाल (गिरनार) पर अधिकार जमा ले। हरामखोर (दुष्ट) तगी को परास्त करने के उपरान्त ही देवगीर (देवगिरि) पर आक्रमण करे, जिससे उस कोई चिन्ता तथा परेशानी न रहे और निश्चिन्त होकर पूर्ण रूप से देवगीर (दवगिरि) के विद्रोहियों तथा विरोधियों का विनाश कर दे। सुल्तान मुहम्मद ने कर्नाल का युद्ध तथा खिगार[3] का विनाश परमावश्यक समझ लिया। देवगीर (देवगिरि) के मुकद्दम, जोकि शाही सेना मे देवगीर

१ रन खाडी के निकट दो छोटे कस्बे। (बम्बई गजेटियर भाग ४, पृ० ३४५)

२ ये दो व्यक्ति नहीं, अपितु एक ही हैं। बरनी ने सुल्तान फ़ीरोज शाह के हाल म लिखा है - "चीन तथा खता के उन दो बुजुर्ग जादों में एक अमीर कबतगा (कबतगा) अमीर मेहमान (महान) है। स्वर्गीय सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक़ शाह उसका बड़ा सम्मान करता था और अमीर महान कहता था।" (बरनी पृ० ५८४ ८५)। डा० महदी हुसेन तथा डा० ईश्वरी प्रसाद इन्हें दो व्यक्ति समझते थे। (महदी हुसेन पृ० १८६, Qarauna Turks p 247.)

३ इस स्थान पर मूल पोथी में कनहगार है किन्तु दूसरे स्थान पर बरनी ने खिंगार लिखा है और यही उचित है (बरनी पृ० ५२३)। यदि इसे गुनहगार पढा जाय तो इसका अर्थ अपराधी तथा अभिप्राय तगी से हो सकता है।

(देवगिरि) से आये हुये थे, यह देख कर कि देवगीर (देवगिरि) के युद्ध में कुछ देर है एक-एक दो-दो करके देवगीर (देवगिरि) लौट गये।

बरनी से परामर्श–

देवगीर (देवगिरि) के विद्रोहियों की सफलता तथा देवगीर (देवगिरि) के हाथ से निकल जाने से सुल्तान के हृदय में बदले की भावनायें बडी तीव्र हो गईं। जिस समय सुल्तान मुहम्मद देवगीर (देवगिरि) के हाथ से निकल जाने पर खिन्न था उसने मुझको अर्थात् तारीखे फीरोजशाही के सकलनकर्त्ता को राज-सिंहासन के समक्ष बुलवाया। सुल्तान ने इस तुच्छ से कहा कि "मेरा राज्य रुग्ण है और रोग किसी प्रकार समाप्त नही होता। जिस प्रकार यदि कोई हकीम सिर के पीडा[1] की चिकित्सा करता है तो ज्वर बढ जाता है और यदि ज्वर को दूर-करने का प्रयास करता है तो सुद्दे[2] पड जाते हैं, उसी प्रकार मेरा राज्य भी रोगी हो गया है। यदि एक ओर सुव्यवस्थित करता हू तो दूसरी ओर अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती है। यदि मैं किसी एक दिशा को सुशासित कर लेता हू तो दूसरी ओर अशान्ति फैल जाती है। तू मुझे बता कि प्राचीन बादशाह राज्य के इन रोगों के विषय में किस प्रकार आचरण करते थे।" इस तुच्छ ने उत्तर दिया कि "प्राचीन बादशाहो के राज्य के रोगो के उपचार का उल्लेख इतिहास की पुस्तको में कई प्रकार से लिखा है। कुछ सुल्तान, यह देख कर कि उनके प्रति उनकी प्रजा का विश्वास उठ गया है तथा सभी लोग घृणा करनी प्रारम्भ कर चुके हैं, राज्य त्याग कर अपने जीवन ही में अपने पुत्रो में से किसी पुत्र को बादशाह बना कर स्वय एकान्त-वास ग्रहण कर लेते थे और इस प्रकार वे सब कुछ त्याग कर अपने कुछ विशेष मित्रों सहित (५२२) राज्य के एक कोने में शान्ति-पूर्वक जीवन व्यतीत करने लगते थे और राज्य व्यवस्था में हस्तक्षेप न करते थे। कुछ लोग ऐसी अवस्था मे जब सभी लोग घृणा (विद्रोह) करने लगते थे, स्वय शिकार, सगीत तथा मदिरापान में तल्लीन हो जाते थे और राज्य व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध-सम्बन्धी समस्त छोटे बडे कार्य अपने वज़ीरो, विश्वास-पात्रो, सहायको तथा मित्रो को प्रदान कर देते थे और स्वय किसी बात की पूछताछ तथा कोई आदेश न देते थे। इस उपचार से, कि बादशाह प्रजा के कार्य में हाथ नही डालता, तथा किसी से बदला लेने के लिये प्रसिद्ध नही है, उसके राज्य का रोग ठीक हो जाता है। राज्य के रोगो में सबसे बडा तथा घातक रोग यह है कि राज्य के साधारण तथा विशेष व्यक्ति बादशाह से घृणा करने लगे तथा प्रजा का विश्वास बादशाह पर न रहे।" सुल्तान ने उत्तर दिया कि "मैं चाहता हू कि यदि राज्य मेरी इच्छानुसार सुव्यवस्थित हो जाय तो मै देहली का राज्य इन तीन व्यक्तियों अर्थात् इस युग के बादशाह फीरोज शाह अस्सुल्तान, मलिक कबीर तथा अहमद अयाज को सौंप कर मक्के चला जाऊँ किन्तु इस समय मैं प्रजा से रुष्ट हूँ और प्रजा मुझ से दुखी है। प्रजा को मेरे स्वभाव का ज्ञान प्राप्त हो चुका है और मैं प्रजा की शक्ति तथा निर्बलता के विषय में सब कुछ समझ चुका हू। मैं जो उपचार करता हू उससे लाभ नही होता। विद्रोहियो, आज्ञा का उल्लघन करने वालो तथा विरोधियो की ओषधि मेरे पास तलवार है। मैं लोगो की हत्या कराता हू तथा तलवार चलाता हू जिससे वे या तो टुकडे टुकडे हो जायँ और या ठीक ही हो जायँ। जितना अधिक लोग विद्रोह करेंगे उतना ही अधिक मैं लोगों की हत्या कराऊँगा।"

गुजरात का प्रबन्ध–

जब सुल्तान मुहम्मद देवगीर (देवगिरि) पर आक्रमण करने के विचार त्याग कर

१ पुस्तक में खुदा है किन्तु यह सुदा (सिर की पीड़ा) हो सकता है। खुदा से कोई अर्थ नहीं निकलता।

२ पट का बहुत सख्त हुआ मल।

(५२०) प्रजा विद्रोहियों की लूटमार से मुक्त हो गई। कुछ प्रतिष्ठित विद्रोही तगी से पृथक् होकर मण्डल तथा टेरी (पटरी)[1] के राना के पास उसकी शरण में पहुँच गये। मण्डल तथा टेरी (पटरी) के राना ने उनकी हत्या करादी और उनके सिर सुल्तान की सेवा में भेज दिये। उनके स्त्री बालक तथा धन-सम्पत्ति अपने अधिकार में कर लिये। राज-सिंहासन की ओर से उसे खिलअत, इनाम तथा सोने के बर्तन प्रदान हुये। राना इतना सम्मान पाने के उपरान्त दरबार में उपस्थित हुआ।

हसन कांगू का देवगीर (देवगिरि) पर अधिकार—

जिस समय सुल्तान सहसीलग के चबूतरे पर विराजमान था और राज्य-व्यवस्था तथा शासन-प्रबन्ध को ठीक करने में तल्लीन था और यह चाहता था कि नहरवाले पर आक्रमण करे, उसी समय देवगीर (देवगिरि) से समाचार प्राप्त हुआ कि हसन कांगू तथा अन्य विरोधियो एव विद्रोहियो ने, जोकि रणक्षेत्र में शाही सेना के सामने से भाग गये थे, एमादुलमुल्क पर आक्रमण कर दिया। एमादुलमुल्क मारा गया। उसकी सेना छिन्न-भिन्न हो गई। खुदावन्द जादा किवामुद्दीन, मलिक जौहर तथा जहीरुल-जुयूश (सेना नायक) देवगीर (देवगिरि) से धार की ओर भाग गये। हसन कांगू ने देवगीर (देवगिरि) पहुँच कर चत्र धारण कर लिया। जो लोग शाही सेना के भय से धारागीर (धारागिरि) के ऊपर पहुच चुके थे वे भी नीचे उतर आये और देवगीर (देवगिरि) में बहुत बडी अशान्ति फैल गई। सुल्तान मुहम्मद उपर्युक्त समाचार सुनकर बडा दुखी हुआ और भली भाँति समझ गया कि प्रजा पूर्ण रूप स घृणा करने लगी है और अब उसे ठीक करना सम्भव नही, शासन सम्बन्धी कार्यों की दृढता समाप्त हो चुकी है और राज्य का पतन भी होने ही वाला है। कुछ महीनों तक जब तक कि सुल्तान नहरवाले म रहा उसने किसी की हत्या नही कराई। सुल्तान न देवगीर (दवगिरि) पर आक्रमण करने के लिये अहमद अयाज, मलिक बहराम ग़ज़नी, अमीर कबतगा अमीरे महान[2] तथा सेना को देहली से बुलवाया। वे पूर्ण रूप से तैयार होकर शहर (देहली) से उसकी सेवा में पहुचे। तत्पश्चात् सूचना मिली कि हसन कांगू ने देवगीर (देवगिरि) में बहुत बडी सेना एकत्र करली है। सुल्तान को अहमद अयाज, मलिक बहराम गजनी तथा अमीर कबतगा को देवगीर (देवगिरि) भेजना उचित ज्ञात न हुआ। सुल्तान ने देवगीर (देवगिरि) पर आक्रमण करने का विचार त्याग दिया और निश्चय किया कि सर्व प्रथम गुजरात को मुक्त (५२१) करले और कर्नाल (गिरनार) पर अधिकार जमा ले। हरामखोर (दुष्ट) तगी को परास्त करने के उपरान्त ही देवगीर (देवगिरि) पर आक्रमण करे, जिससे उस कोई चिन्ता तथा परेशानी न रहे और निश्चिन्त होकर पूर्ण रूप से देवगीर (देवगिरि) के विद्रोहियो तथा विरोधियो का विनाश कर दे। सुल्तान मुहम्मद न कर्नाल का युद्ध तथा खिगार[3] का विनाश परमावश्यक समझ लिया। देवगीर (देवगिरि) क मुक्द्दम, जोकि शाही सना में देवगीर

१ रन खाडी के निकट दो छोटे कस्बे। (बम्बई गजेटियर भाग ४, पृ० २४५)

२ य दो व्यक्ति नहीं, अपितु एक ही हैं। बरनी ने सुल्तान फीरोज शाह के हाल म लिखा है "चीन तथा खता के उन दो बुजुर्ग जादों म एक अमीर कतबगा (क़बतगा) अमीर मेहमान (महान) है। स्वर्गीय सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ शाह उसका बड़ा सम्मान करता था और अमीर महान कहता था।" (बरनी पृ० ५८४ ८५)। डा० महदी हुसेन तथा डा० ईश्वरी प्रसाद इन्हें दो व्यक्ति समझते थे। (महदी हुसेन पृ० १८६, Qarauna Turks p. 247.)

३ इस स्थान पर मूल पोथी में कनहगार है किन्तु दूसरे स्थान पर बरनी ने खिंगार लिखा है और यही उचित है (बरनी पृ० ५२३)। यदि इसे गुनहगार पढ़ा जाय तो इसका अर्थ अपराधी तथा अभिप्राय तगी से हो सकता है।

(देवगिरि) से आये हुये थे, यह देख कर कि देवगीर (देवगिरि) के युद्ध में कुछ देर है एक-एक दो करके देवगीर (देवगिरि) लौट गये ।

रनी से परामर्श–

देवगीर (देवगिरि) के विद्रोहियो की सफलता तथा देवगीर (देवगिरि) के हाथ से निकल जाने से सुल्तान के हृदय में बदले की भावनायें बडी तीव्र हो गई । जिस समय सुल्तान मुहम्मद देवगीर (देवगिरि) के हाथ से निकल जाने पर खिन्न था उसने मुझको अर्थात् तारीखे फ़ीरोज़शाही के सकलनकर्त्ता को राज-सिंहासन के समक्ष बुलवाया। सुल्तान ने इस तुच्छ से कहा कि "मेरा राज्य रुग्ण है और रोग किसी प्रकार समाप्त नहीं होता । जिस प्रकार यदि कोई हकीम सिर के पीडा[1] की चिकित्सा करता है तो ज्वर बढ जाता है और यदि ज्वर को दूर करने का प्रयास करता है तो सुद्दे[2] पड जाते हैं, उसी प्रकार मेरा राज्य भी रोगी हो गया है। यदि एक ओर सुव्यवस्थित करता हू तो दूसरी ओर अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती है। यदि मैं किसी एक दिशा को सुशासित कर लेता हू तो दूसरी ओर अशान्ति फैल जाती है। तू मुझे बता कि प्राचीन बादशाह राज्य के इन रोगों के विषय में किस प्रकार आचरण करते थे।" इस तुच्छ ने उत्तर दिया कि "प्राचीन बादशाहों के राज्य के रोगो के उपचार का उल्लेख इतिहास की पुस्तकों में कई प्रकार से लिखा है। कुछ सुल्तान, यह देख कर कि उनके प्रति उनकी प्रजा का विश्वास उठ गया है तथा सभी लोग घृणा करनी प्रारम्भ कर चुके हैं, राज्य त्याग कर अपने जीवन ही में अपने पुत्रों में से किसी पुत्र को बादशाह बना कर स्वय एकान्त-वास ग्रहण कर लेते थे और इस प्रकार वे सब कुछ त्याग कर अपने कुछ विशेष मित्रों सहित (५२२) राज्य के एक कोने में शान्ति-पूर्वक जीवन व्यतीत करने लगते थे और राज्य व्यवस्था में हस्तक्षेप न करते थे। कुछ लोग ऐसी अवस्था में जब सभी लोग घृणा (विद्रोह) करने लगते थे, स्वय शिकार, सगीत तथा मदिरापान में तल्लीन हो जाते थे और राज्य व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध-सम्बन्धी समस्त छोटे बडे कार्य अपने वज़ीरो, विश्वास-पात्रो, सहायको तथा मित्रो को प्रदान कर देते थे और स्वय किसी बात की पूछताछ तथा कोई आदेश न देते थे। इस उपचार से, कि बादशाह प्रजा के कार्य में हाथ नहीं डालता, तथा किसी से बदला लेने के लिये प्रसिद्ध नहीं है, उसके राज्य का रोग ठीक हो जाता है। राज्य के रोगो में सबसे बडा तथा घातक रोग यह है कि राज्य के साधारण तथा विशेष व्यक्ति बादशाह से घृणा करने लगें तथा प्रजा का विश्वास बादशाह पर न रहे।" सुल्तान ने उत्तर दिया कि "मैं चाहता हू कि यदि राज्य मेरी इच्छानुसार सुव्यवस्थित हो जाय तो मैं देहली का राज्य इन तीन व्यक्तियो अर्थात् इस युग के बादशाह फीरोज़ शाह अस्सुल्तान, मलिक कबीर तथा अहमद अयाज़ को सौंप कर मक्के चला जाऊँ किन्तु इस समय मैं प्रजा से रुष्ट हूँ और प्रजा मुझ से दुखी है। प्रजा को मेरे स्वभाव का ज्ञान प्राप्त हो चुका है और मै प्रजा की शक्ति तथा निर्बलता के विषय में सब कुछ समझ चुका हू। मैं जो उपचार करता हू उससे लाभ नही होता। विद्रोहियो, आज्ञा का उल्लघन करने वालो तथा विरोधियों की औषधि मेरे पास तलवार है। मैं लोगो की हत्या कराता हू तथा तलवार चलाता हू जिससे वे या तो टुकडे टुकडे हो जायें और या ठीक ही हो जायें। जितना अधिक लोग विद्रोह करेंगे उतना ही अधिक मैं लोगों की हत्या कराऊँगा।"

गुजरात का प्रबन्ध–

जब सुल्तान मुहम्मद देवगीर (देवगिरि) पर आक्रमण करने के विचार त्याग कर

---

१ पुस्तक में खुक्ता है किन्तु यह सुदा (सिर की पीड़ा) हो सकता है। खुक्ता से कोई अर्थ नहीं निकलता।

२ पट का बहुत सूखा हुआ मल।

गुजरात को सुव्यवस्थित करने में लग गया तो उसने तीन बरसातें गुजरात में व्यतीत की। एक वर्षा सुल्तान मण्डल पातेरी (पटरी) में रहा। इस वर्षा में सुल्तान गुजरात को सुव्यवस्थित (५२३) तथा सेना को तैयार करता रहा। दूसरी वर्षा में सुल्तान कर्नाल (गिरनार) के क़िले के निकट रहा। जब कर्नाल (गिरनार) के मुक़द्दम ने शाही सेना की संख्या तथा उस अगणित सेना का ऐश्वर्य देखा तो उसने यह निश्चय कर लिया कि हरामखोर (दुष्ट) तग़ी को जीवित बन्दी बना कर सुल्तान के पास भेज दे। तग़ी को जब यह हाल ज्ञात हुआ तो वह वहाँ से भाग कर थट्टा चला गया और थट्टा के जाम से मिल गया। वर्षा के अन्त पर सुल्तान ने कर्नाल (गिरनार) पर अधिकार जमा लिया और उस ओर के समुद्र-तट तथा टापू अपने अधिकार में कर लिये। उस स्थान के राना तथा मुक़द्दम शाही दरबार में उपस्थित हो गये और उन्हे इनाम तथा खिलअत प्रदान हुये। कर्नाल (गिरनार) में एक महता राजसिंहासन की ओर से नियुक्त हो गया। कर्नाल (गिरनार) का राना खिंगार[१] बन्दी बना लिया गया और दरबार में उपस्थित किया गया। वह समस्त प्रदेश पूर्णतया सुव्यवस्थित हो गया।

मलिक कबीर की मृत्यु—

सुल्तान मुहम्मद तीसरी वर्षा में कोन्दल (गोन्डाल)[२] में रहा। यह स्थान कोन्दल (गोन्डाल), सूमरा[३] (जाति) के ठट्ठा तथा मडीला (डमरीला) की ओर स्थित है। कोन्दल (गोन्डाल) में सुल्तान रुग्ण हो गया और उसको ज्वर आने लगा। उस रोग के कारण उसे कुछ समय तक वहाँ रुकना पड़ा। सुल्तान के कोन्दल (गोन्डाल) पहुँचने तथा वहाँ पड़ाव करने के पूर्व देहली से मलिक कबीर की मृत्यु के समाचार प्राप्त हुये। उसकी मृत्यु से सुल्तान बड़ा दुःखी हुआ। उसने अहमद अयाज़ तथा मलिक मक़बूल नायब वज़ीरे ममालिक को देहली की राज्य व्यवस्था ठीक रखने के लिये भेज दिया। उसने देहली से खुदावन्दज़ादा[४], मखदूमज़ादा, कुछ शेखों (सूफ़ियो), आलिमों, प्रतिष्ठित तथा सम्मानित व्यक्तियो एव उनके परिवार तथा सवारों और प्यादों की सेना को कोन्दल (गोन्डाल) बुलवाया। जो लोग भी बुलवाये गये थे वे सवार और प्यादो की सेना के साथ बड़े वैभव से कोन्दल (गोन्डाल) में दरबार में उपस्थित हुये। सुल्तान की सेवा में बहुत से लोग एकत्र हो गये और सेना सुव्यवस्थित हो गई। धोपालपुर, मुल्तान, उच्च तथा सिविस्तान से नौकायें पहुच गईं। (५२४) सुल्तान मुहम्मद भी रोग से मुक्त हो गया और समस्त सेना लेकर कोन्दल (गोन्डाल) से सिन्धु नदी के तट पर पहुँचा। सिन्धु नदी, सेना तथा हाथियो सहित बड़ी शान्ति तथा सतोष से पार की। इस स्थान पर अमीर फर्गन (वर्गन) द्वारा भेजा हुआ अल्तून बहादुर तथा ४-५ हजार मुग़ल सवार सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुये। सुल्तान ने अल्तून बहादुर *तथा उस सेना के प्रति जो उसकी सहायता के लिये आई थी, बड़ी कृपा दिखाई और उसे* अत्यधिक इनाम प्रदान किया। सुल्तान उस स्थान से अपनी सेना जो चींटियो तथा टिड्डियो से भी अधिक थी, लेकर सिन्धु नदी के किनारे-किनारे ठट्ठा (थट्टा) की ओर चल दिया और सूमरा

१ पुस्तक में खिंगार व रानये कर्नाल है किन्तु इसे खिंगार, रानये कर्नाल (कर्नाल का राना खिंगार होना चाहिये)।

२ काठियावाड़ में है।

३ तारीखे मासूमी का अनुवाद देखिये। ये एक शक्तिशाली स्थानीय जाति थी और ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य से चौदहवीं शताब्दी के प्रथम २५ वर्षो तक इन्हें दक्षिणी सिन्ध मे बड़ा अधिकार प्राप्त रहा।

४ खुदावन्दज़ादा क़िवामुद्दीन को देवगिरि में नियुक्त किया गया था। (बरनी पृ० ५१६) सुल्तान तुग़लुक़ की एक पुत्री का नाम भी खुदावन्दज़ादा था। सम्भव है कि उसी को बुलवाया गया हो। (अफ़ीफ़, तारीखे फीरोज़शाही पृ० ४५)

जाति तथा हरामखोर (दुष्ट) तग़ी, जो उन लोगो की शरण में पहुँच चुका था के विनाश के लिये निरतर कूच करता हुआ रवाना हो गया।

सुल्तान मुहम्मद का पुनः रुग्ण होना तथा उसकी मृत्यु—

जब सुल्तान मुहम्मद ने अपार सेना लेकर ट्ठा की ओर प्रस्थान किया और ट्ठा से ३० कोस की दूरी पर पहुँच गया तो उस दिन मुहर्रम की दसवी थी। सुल्तान ने रोजा रक्खा था। रोजा खोलते समय उसने मछली खाई। मछली का भोजन उसके अनुकूल सिद्ध न हुआ। *सुल्तान पुनः रुग्ण हो गया* और उसको *पुनः ज्वर आने लगा।* उसी रोग की अवस्था में सुल्तान ने नौका पर बैठ कर १२-१३ मुहरम को निरन्तर कूच करके ट्ठा से १४ कोस की दूरी पर पडाव किया। शाही लश्कर तैयार हुआ। यदि सुल्तान का आदेश हो जाता तो एक ही दिन में ट्ठा के सूमरो तथा तग़ी हरामखोर (दुष्ट) एव अन्य विद्रोहियो को पाव के नीचे कुचल दिया जाता और उन्हें नष्ट कर दिया जाता; किन्तु मनुष्य का प्रयास ईश्वर के निश्चित किये हुये भाग्य का सामना नही कर सकता।

छन्द

बादशाह इस प्रकार योजना बनाता है किन्तु उसे यह ज्ञात नही कि ईश्वर *की आज्ञा से,*
भाग्य ने उसके प्रयास के पृष्ठ पर रेखा खीच दी है।

(५२५) उन २-३ दिनो में, जब कि सुल्तान मुहम्मद ट्ठा से १४ कोस की दूरी पर पडाव डाले था, उसका रोग बढने लगा। सुल्तान के रोग के बढने के कारण सेना वाले परेशान हो गये और लोगों में कोलाहल मच गया। लोग इस कारण और भी विस्मित थे कि वे अपनी स्त्रियो तथा बालको सहित देहली से हजारो कोस दूर पडे हुये थे और शत्रु उनके निकट था। वे निर्जन जंगलों में निराश तथा दु.खी अवस्था में थे। न तो उन्हे लौट जाने का और न भागने का मार्ग दीख पडता था। उन्होने अपने प्राणो से हाथ धो लिये थे। सुल्तान मुहम्मद की मृत्यु के उपरान्त वे अपनी मृत्यु भी अनुभव के दर्पण में देख रहे थे।

२१ मुहर्रम ७५२ हि० (२० मार्च, १३५१ ई०) को भाग्यशाली, शहीद, सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक शाह का ट्ठा से १४ कोस पर सिन्धु नदी के तट पर निधन हो गया। वह जहाँपनाह (व) जहाँगीर (ससार को शरण देने वाला तथा दिग्विजयी) राज-सिंहासन से लकडी के तख्तों के नीचे सो गया। उलिल-अमरी की मसनद (राज-सिंहासन) से मिट्टी में बन्दी हो गया।

छन्द

तू ने अल्प[1] अरसलान का शीश बलन्दी में आकाश तक उठा देखा,
किन्तु उसकी मृत्यु के उपरान्त अल्प अरसलान का शरीर मिट्टी में देख।
वह इतना बडा अमीर था कि हज़ारों लोग उसके महल पर पहरा देते थे,
किन्तु अब तू देख उसके मकबरे के गुम्बद पर केवल कौवे पहरा देते हैं।

मकडी ने किसरा की मिहराबों में जाले तान दिये हैं,
अफरासियाब[2] के *गुम्बद पर* उल्लू बोल रहा है।

मैं अविश्वासी आकाश के विरुद्ध न्याय चाहता हू और सदैव के अत्याचार के विरुद्ध

---

१ ईरान का एक सलजूक़ सुल्तान जिसने १०६३ ई० से १०७२ ई० तक राज्य किया। वह अपने उत्कृष्ट कार्यों के लिये बडा प्रसिद्ध है।

२ तूरान का एक प्राचीन प्रतापी बादशाह। उसके पिता का नाम पशंग था और उसने ईरान पर भी

(५२६) न्याय की प्रार्थना करता है क्योंकि वह पूर्व तथा पश्चिम के बादशाह को ४ गज़ क़ब्र में अपमानित करके डाल देता है। इन बादशाहों तथा सागरों के पास सितारों के समान अगणित सेना थी।

छन्द[1]

मदिरापान समस्त संसार के लिये विष बन चुका है,
मेवे आदम के पुत्रों के लिये मौत के बीज बन चुके हैं।
हे विनाश के मित्र! अपने पग रोक ले,
इस तुच्छ संसार को अधिक परेशान न कर।
क़यामत की प्रातः हो रही है और हम सो रहे हैं
दुनिया के सोने वाला के लिये नारे लगा।
देख मृत्यु का फ़र्श बिछ चुका है,
अतः प्रसन्नता का बिछौना समेट ले,
यह क़यामत का दिन है उठ! और फाड़ डाल,
आसमानों के महल के गुम्बद की छत।
बादशाह मुहम्मद मिट्टी के पेट में सो गया,
दुःख प्रकट करने के लिये अपने वस्त्र काले कर ले।
और फिर शोक के हाथों से संसार के शरीर पर,
मिट्टी फेंक! इस सम्मानित वस्त्र पर।

सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ शाह के निधन के उपरान्त प्रजा तथा सेना शत्रुओं, विद्रोहियों, मुग़लों तथा गूमरों के क्रोध में जंगल और मैदान में घोर तथा कष्ट में पड़ी थी। सब ने अपने प्राणों से हाथ धो लिये थे। समस्त छोटे बड़े नमाज़, दुआ, ईश्वर के सामने रोने चिल्लाने तथा अपनी दीनता प्रकट करने में तल्लीन थे। समस्त दुःखी तथा परेशान थे और सब की दोनों आँखें आकाश की ओर लगी हुई थीं और समस्त सेना की वाणी पर यही प्रार्थना था, "हे दुखियों को मार्ग दर्शाने वाले, और हे सहायता की प्रार्थना करने वालों की सहायता!" (हे ईश्वर)

---

१ यह छन्द तबक़ाते अकबरी में भी नक़ल किये गये हैं। (पृ० २३३ २४)

फ़ुतूहुस्सलातीन

[लेखक—एसामी]

[प्रकाशन मदरास यूनीवर्सिटी १९४८ ई०]

सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लुक शाह

सिंहासनारोहण तथा नये पद—

तुग़लुक, ग़यासुद्दीन बना। मलिक फ़खरुद्दीन, उलुग खाँ हुआ। वह सुल्तान का ज्येष्ठ पुत्र था। सुल्तान का दूसरा पुत्र बहराम खाँ हुआ। वह संसार में दूसरा हातिम (दानी) था। तीसरे पुत्र की उपाधि ज़फ़र खाँ हुई। चौथा पुत्र जो कनिष्ठतम था, महमूद खाँ हुआ। मीर ऐबा का पुत्र सेना का खान बनाया गया। (३८८)[1] बहाउद्दीन की पदवी गुर्शास्प हुई। इसी प्रकार अन्य सरदारों को पद प्रदान किये गये। समस्त राज्य को अत्याचार से मुक्ति प्राप्त हो गई और सभी प्रसन्न हो गये। तीसरे दिन नासिरुद्दीन एक उद्यान में बन्दी बना लिया गया। उसकी हत्या करा दी गई और संसार को चार मास के उपरान्त शान्ति प्राप्त हो गई। ७२० हि० (१३२० ई०) में संसार को यह प्रसन्नता प्राप्त हुई।[2]

खज़ाने का वापस लिया जाना तथा इनाम व इदरार का बन्द होना—

जब ग़यासी राज्य द्वारा चारो ओर शान्ति हो गई तो नये बादशाह ने प्रत्येक कारखाने में पूछताछ कराई। राजकोष के विषय में पूछताछ की गई, जमा तथा खर्च का पता लगाया गया। जब खज़ाने की बारी आई तो वह रिक्त मिला। सुल्तान ने इस बात का पता लगाने का आदेश दिया कि धन के लोभ में कौन-कौन लोग विश्वासघाती से मिल गये थे और किन किन लोगो ने दो वर्ष का वेतन प्राप्त किया था। कातिबो ने प्रत्येक सूची से जमा व खर्च निकाला और उसे बादशाह के समक्ष पढ़ा। वे लोग बुलाये गये और उनसे बड़ी कठोरता से धन प्राप्त किया गया। सेना का अर्ज़[3] किया गया और परीक्षा के उपरान्त प्रत्येक की रोटी[4] निश्चित की गई। तत्पश्चात् ऐमा[5] पर दृष्टिपात किया गया। सुल्तान ने लोगो के इदरार (वृत्ति) में बड़ी कमी करदी। जब लोगो के इनाम[6] के ग्राम ले लिये गये तो सन्तुष्ट लोगो के हृदय को बड़ा कष्ट हुआ। (३८६, ३६०)

एसामी के पूर्वजों के ग्रामो का छीना जाना—

मेरे पूर्वजों को भी प्राचीन शाहो के समय से उस आबादी के निकट (देहली) दो स्वर्ग रूपी ग्राम वर्षों से प्राप्त थे। प्रत्येक ग्राम से बड़ा धन प्राप्त होता था। जो शाह भी सिंहासनारूढ होता वह प्रत्येक (पिछले) बादशाह का फरमान देख कर उन्हें मेरे पूर्वजो के पास ही रहने

१ मूल पुस्तक की पृष्ठ संख्या वाक्य के अन्त में कोष्ठ-बद्ध है। प्रत्येक छन्द का अनुवाद नहीं किया गया है। केवल महत्वपूर्ण छन्दों का अनुवाद किया गया है।

२ ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ की विजय का सविस्तार उल्लेख अमीर खुसरो ने तुग़लुक़ नामे में किया है। (हैदराबाद दक्षिण १९३३ ई०, खलजी कालीन भारत पृ० १८४-१९४)

३ निरीक्षण।

४ वेतन।

५ वह भूमि जो धार्मिक तथा अन्य लोगों को दान के रूप में दी जाती थी।

६ धार्मिक लोगों को दान में दिये हुये ग्राम।

देता और पिछले बादशाहो के आदेशो में उलट फेर न करता और उन्हें ताजा (नया) फरमान प्रदान कर देता। जब तुगलुक सुल्तान हुआ तो उसने दोनो ग्राम ले लिये। उसने सन्तुष्ट लोगो के हृदय को कष्ट पहुचाया। इसका फल अच्छा न हुआ।

यदि ईश्वर तुझे राज्य प्रदान करे तो फकीरो (सन्तो) की कमली की ओर दृष्टिपात न कर, दीनो के स्थान को नष्ट न कर। इससे तेरी गणना सुव्यवस्थापको में हो सकेगी। यदि तू भला नही कर सकता तो बुरा भी मत कर। धन एकत्र करने के लिए दीनो को कष्ट न पहुँचा। उस धन से क्या लाभ कि लोग तुझे घृणा से याद करें। (३६१)

उलुग खाँ का तिलंग पर आक्रमण तथा तिमुर व तिगीन का विद्रोह—

सुल्तान ने धन प्राप्त करने तथा सेना के अर्ज तथा प्रत्येक कार्य के प्रबन्ध के उपरान्त उलुग खाँ को तिलग पर आक्रमण करने का आदेश दिया। उलुग खाँ सुल्तान के आदेशानुसार राजधानी से एक बहुत बडी सेना लेकर चला। बल[१], तिमुर, तिक्नितास तथा तिगीन सेना के विशेष सरदारो में थे। वह खान विद्रोहियों को दण्ड देता तथा प्रत्येक जमीदार से कर प्राप्त करता हुआ चला। मरहठा प्रदेश लूटता हुआ अरगल की ओर बढा और तिलग के किले के नीचे शिविर लगा दिये।

उबैद के झूठ के कारण तिमुर तथा तिगीन का विद्रोह—

छ मास तक उस किले की विजय का कोई उपाय न हो सका। उस विजेता खान को सुल्तान का फरमान प्रत्येक सप्ताह में प्राप्त होता रहता था जिसमें लिखा होता था कि, 'मैं समझता हूँ कि खान का हृदय मुझ से भर गया है और शैतानो की बात सुन कर खान मुझे भूल गया है। (३६२) न जाने क्या बात हुई कि खान को इधर आने का ध्यान नही।" सुल्तान को दुखी पाकर खान इस बात का प्रयत्न करने लगा कि यथा शीघ्र किले को प्राप्त कर ले और राजधानी में पहुँच कर बादशाह के चरणों का चुम्बन कर सके। खान के साथ एक बडा ही धूर्त्त था जो ज्योतिष तथा रमल (फलित ज्योतिष) की जानकारी के विषय में बडी डींगें मारा करता था। वह असावधान लोगो को पथ-भ्रष्ट किया करता था। उलुग खाँ ने एक दिन उसे गुप्त रूप से बुला कर पूछा कि वह हिसाब लगा कर यह निश्चित कर दे कि तिलग के किले पर कब विजय प्राप्त होगी। उबैद एक सप्ताह तक अपने कार्य में तल्लीन रहा। तत्पश्चात् उसने खान से कहा, "अमुक दिन तथा अमुक समय अवश्य विजय प्राप्त हो जायगी।" जब उसकी बताई हुई अवधि के अनुसार बहुत दिन व्यतीत हो गये और वह समय निकट आ गया तो उबैद न अपनी धूर्त्तता के खुल जाने के भय से सेना में एक उपद्रव खडा कर दिया।[२]

कहा जाता है कि उसने तिगीन तथा तिमुर से चुपके से कहा कि "सुल्तान की मृत्यु हो गई है और इस घटना को एक दो सप्ताह हो चुके हैं। (३६३) दो तीन सप्ताह से खान बडा दुखी है और यह समाचार छिपाता है। यदि तीन चार दिन में प्रान्तो के सरदारो के पास से पत्र प्राप्त होंगे तो वह हम सब स उन्हे गुप्त रक्खेगा। मुझे ऐसा ज्ञात होता है कि वह सेना के सरदारो पर अत्याचार करेगा और वीरो से विश्वासघात करके उनका बध करा देगा।" तिगीन तथा तिमुर उस दुशील से यह बात सुन कर खान के विरोधी बन गये और उन्होंने यह बात अन्य सरदारों को भी बता दी। काफूर, जो पहले मुहरदार था और

१ एक हस्तलिखित पोथी में मुल।

२ बरनी ने उबैद के इस षड्यन्त्र का उल्लेख नहीं किया है। सम्भव है एसामी को इसके विषय में दक्षिण में जानकारी हुई होगी।

फिर वकीलदर हो गया था, कंथूनी, नसीर-कुलहेज़र, रन बावला, तिक्नितार्श जो हृदय से खान के हितैषी थे, प्राणों के भय से उसके विरोधी बन गये।

तिमुर तथा तिगीन का भागना और तिलंग के राय से संधि—

तिगीन तथा तिमुर दोनों सरदारों ने, जो दूसरों से श्रेष्ठ थे, अरगल (वारंगल) के राय रुद्र देव से लिख कर यह निश्चय किया कि वह भागते समय उन्हें कोई हानि न पहुँचाये। राय ने दूत से सूर्य, गंगाजल, यज्ञोपवीत, मूर्तियों (देवी देवताओं), सोमनाथ तथा लात व उज्जा[1] की शपथ लेकर उन्हें हानि न पहुँचाने का विश्वास दिलाया। तत्पश्चात् सरदार प्रत्येक मलग[2] में आग लगा कर ढोल पीटते हुये भाग खड़े हुये। उलुग खाँ ने यह कोलाहल सुन कर भागने के अतिरिक्त कोई उपाय न देखा। वह घोड़े पर सवार हुआ और कुछ समय तक सराचा (शिविर) के समक्ष ठहरा। बहुत से हितैषी सरदार उससे आकर मिले। उनमें ऐनुलमुल्क, नसीरे ममालिक, जिसे लोग ख्वाजा चाची कहते थे, बल अफगान तथा एक अन्य पहलवान जिसकी उपाधि बाद में क़दर खाँ हो गई, खान के पास आकर एकत्र हो गये। (३६४-३६५) प्रत्येक के साथ बहुत बड़ी सेना थी और खान की सेना अत्यन्त दृढ थी किन्तु अधिक सेना के भाग खड़े होने के कारण खान को भी सेना लेकर प्रस्थान करना पड़ा। इस प्रकार किले के नीचे से दो सेनायें एक ही मार्ग पर चल पड़ी किन्तु एक तो दाहिनी ओर तथा दूसरी बाईं ओर। एक समूह भागने वालों के साथ और दूसरा खान की पताका के नीचे। इस प्रकार वे तीन चार दिन तक चलते रहे। खान ने उनके पास दूत भेज कर उनकी ओर से विश्वास-पात्रता का आश्वासन दिलाया और दोनों ही सेनाओं के खतरे में होने के समाचार कहलाये। "दो तीन दिन से दो सेनायें एक ही मार्ग पर जा रही हैं। दोनों में किसी प्रकार युद्ध न हुआ किन्तु यह उचित नहीं कि दो सेनायें एक स्थान पर इस प्रकार जायें। कल से दोनों में से एक सेना इसी शिविर पर रुक जाय और दूसरी आगे बढ कर पड़ाव करे।" (३६६)

उन लोगों ने भी आज्ञाकारिता के अतिरिक्त कोई उपाय न देखा। उन्होंने खान के पास 'पा बोस' के उपरान्त सन्देश भेजा कि "एक दुष्ट ने हमें खान की ओर से भय दिला दिया था, इसी कारण हम लोग प्राणों के भय से भाग खड़े हुये। अब हमारा भला इसी में है कि खान की सेवा में उपस्थित हो जायें। अतः यही अच्छा है कि खान अपने आज्ञाकारियों से दो फरसंग आगे बढ कर अपना शिविर लगाये।" सुना जाता है कि दूसरे दिन खान आगे बढ़ गया और वे लोग वहीं रह गये।

उलुग खाँ का कोटगीर पहुँचना तथा मुजीर अबू रिजा से, जो कोटगीर को घेरे था, भय करना।

खान देवगीर (देवगिरि) की ओर चल दिया और कोटगीर पहुँचा। वहाँ दो एक मास से मुजीर अबू रिजा किले को घेरे था और शत्रुओं से युद्ध कर रहा था। उसके आने के समाचार पाकर वहाँ के हिन्दू क़िले में घुस गये थे। खान को उससे (मुजीर से) विश्वासघात का भय हो गया। (३६७) जब मुजीर ने खान के भय का अनुभव किया तो उसने एक रात्रि में अपनी अक्ता का समस्त कर ले जाकर खान के समक्ष रख दिया और अपनी राजभक्ति का विश्वास दिलाया और कहा कि जो लोग उसके विरोधी हो गये हैं, उनसे वह भय न करे।

१ प्राचीन अरब के दो देवता। इसामी ने उन्हें हिन्दुओं का देवता बना दिया।

२ शरध, वह दीवार जो क़िले पर विजय प्राप्त करने तथा अपनी रक्षा के लिए बनाई जाती थी।

यह उन्हे भी शीघ्र ही बन्दी बना लेगा। खान यह वार्त्ता सुन कर सतुष्ट हो गया और उसे तिगीन तथा तिमुर की कोई चिन्ता न रही।

मुजीर अबू रिजा का देवगीर के जमींदारों के पास पत्र भेजना और तिमुर तथा तिगीन की सेना का कल्यान में विनाश—

तत्पश्चात् सुना जाता है कि मुजीर ने प्रत्येक दिशा में सदेश-वाहक प्रेषित किये और वहाँ के सरदारो को लिख भेजा कि कुछ लोगों ने विद्रोह कर दिया है अत वे चारो ओर आक्रमण करके उनके शीश काट कर भेज दें। इसके लिये उन्हे अत्यधिक पुरस्कार मिलेगा। जब प्रत्येक स्थान के अधिकारी को मुजीर का यह पत्र प्राप्त हुआ तो प्रत्येक परगने से सेनायें चल पडी और उन्होने मार्ग रोक दिये। (३६८)

जब विद्रोही कल्यान ग्राम में पहुचे तो चारो ओर से जमींदारों ने चढाई कर दी। विद्रोही यह देख कर भाग खडे हुये। कुछ की तो ग्राम वासियो ने हत्या कर दी और कुछ हिन्दुओ द्वारा बन्दी बना लिये गये। उलुग खाँ ने देवगीर (देवगिरि) में अपने शिविर लगाये और मुजीर अपने कार्य में कटिबद्ध रहा।

महमूद खाँ का देहली पहुँचना, सुल्तान तुग़लुक का दरबार तथा विद्रोहियो को दण्ड—

महमूद खाँ को सुल्तान ने देवगीर (देवगिरि) का मुक्ता नियुक्त कर दिया था। उलुग खाँ के आदेशानुसार वह विद्रोहियो को बन्दी बना कर यथा शीघ्र राजधानी की ओर चल दिया। उनमें एक उबैद ज्योतिषी था जिसने किले की विजय के विषय में भविष्यवाणी की थी। (३६६) दूसरा प्राचीन बादशाहो का मुहरदार था जो वकीलदर हो चुका था। नसीरुद्दीन कुलाहे जर[1], वीर कँयूनी तथा अन्य सरदार भी बन्दी बना कर उसके साथ कर दिये गये थे। महमूद खाँ मरहठा राज्य से चल कर राजधानी पहुचा और शाही महल में बन्दियो को ले जाकर सुल्तान के चरणो का चुम्बन किया। उबैद को फाँसी दे दी गई। मुहरदार की हत्या करा दी गई। सभी लोग इससे आतकित हो गये। नसीर कुलाहे जर को हाथी के पैरो के नीचे कुचलवा दिया गया।

उलुग खाँ द्वारा तिलंग पर पुनः चढ़ाई तथा तिलंग एवं बोदन की विजय—

उलुग खाँ ने तिलग पर आक्रमण करने के लिये पुन प्रस्थान किया। दूसरे दिन उस ने सुनारी में बरगाह (शिविर) लगायी। फिर तिलग की ओर चल खडा हुआ और किसी भी पडाव पर देर न की। कुछ समय उपरान्त वह बोदन[2] पहुच गया। तीन चार दिन तक वहाँ के किले वालों से युद्ध होता रहा। किले वाले आतकित हो गये। राय ने अपनी धन-सम्पत्ति समर्पित करके क्षमा याचना करली। क्षमा के उपरान्त वह स्वय ही नही अपितु अपने घरबार सहित ईमान ले आया।[3] (४००) वहाँ से चल कर खान दसवें दिन अरगल (वारगल) पहुँच गया। रुद्र देव बडा आतकित हुआ।

तिलंग की विजय—

सुना जाता है कि जब अगणित सेना विद्रोह करके किले से भाग गई तो अरगल (वारगल) के राय रुद्र देव ने मुक्ति प्राप्त करके एक बहुत बडे समारोह का आयोजन किया।

---

१ सुनहरी टोपी वाला।

२ बौधन, तिलग मे एक कस्बा।

३ मुसलमान हो गया।

उसने अपने आप को सुरक्षित समझ कर अनाज की सभी खत्तियाँ रिक्त करा दी। किसानो को सब अनाज बाँट दिया गया और समस्त प्रदेश में कृषि करने का आदेश दे दिया गया। उलुग खाँ ने अचानक पहुँच कर किला घेर लिया। वह पाँच मास तक किला घेरे रहा। अनाज के कम हो जाने के कारण राय को रक्षा की प्रार्थना करनी पडी। खान ने उसे शरण प्रदान कर दिया। तत्पश्चात् उसे विवश होकर किले के बाहर निकलना पडा। (४०१) सेना ने लूटमार प्रारम्भ कर दी। उन लोगो ने किले के भवन को भी हानि पहुँचाई।

उलुग खाँ ने तिलंग के किले पर विजय प्राप्त कर ली। इससे पूर्व किसी ने जिजया लेने के अतिरिक्त विजय प्राप्त न की थी।[1] उलुग खाँ ने विजय के उपरान्त राय को समस्त धन-सम्पत्ति तथा हाथियो सहित राजधानी भेज दिया।

उलुग खाँ का जाजनगर पर आक्रमण—

वहाँ कुछ दिन शिविर लगा कर उसने जाजनगर की ओर प्रस्थान किया। हिन्दू (शाही) सेना के पहुचने के समाचार पाकर जगलो में घुस गये। राय ने अन्य सेना नायको को एक सेनापति के अधीन करके युद्ध करने के लिये सेना भेजी। इस में ५००,००० पैदल, ४०,००० सवार तथा हाथियों की एक सेना थी। (४०२) खान की सेना से हिन्दुओ की यह सेना पराजित होकर भाग खडी हुई। बहुत से लोग मारे गये। हाथियो की सेना खान के लश्कर को प्राप्त हो गई। तुर्कों को हिन्दुओं के शिविर से अत्यधिक धन-सम्पत्ति प्राप्त हुई। वहाँ से उलुग खाँ ने दो एक दिन पश्चात् राजधानी की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान ने शाहज़ादे को बहुत सम्मानित किया और उसे अपनी एक विशेष जडाऊ खिलअत प्रदान की। बादशाह के आदेशानुसार एक जश्न का आयोजन हुआ। दो तीन सप्ताह तक खुशी मनाई जाती रही। (४०३)

मुग़लों का आक्रमण—

एक दिन (बहाउद्दीन) गर्शास्प ने, जो सामाने का अधिकारी था, शाह के पास दूत भेज कर सूचना भेजी कि 'मुगलो की दो सेनायें सिन्धु नदी पार करके हिन्दुस्तान में प्रविष्ट हो गई हैं। यदि सहायतार्थ कोई सेना इस ओर भेज दी जाय तो मैं उन्हे पराजित करदूं।" सुल्तान यह समाचार पाकर कि उसके राज्य में यह दुघटना हो गई चिन्ता में पड गया। उसने एक सेना तैयार कराई। उसमें वीर शादी दादर तथा शादो सतलिया थे। इस सेना ने सामाने की ओर प्रस्थान किया। गर्शास्प को सूचना भेजी कि वह शीघ्र सामाने से सेना लेकर प्रस्थान करे और मुगल सेना के विरुद्ध इस प्रकार प्रयत्नशील हो कि सभी का विनाश हो जाय। (४०४) गर्शास्प आदेशानुसार सेना लेकर नगर के बाहर निकला। वह उन लोगो की खोज में निरन्तर रहता था। अन्त में सुना जाता है कि उसे ज्ञात हुआ कि कुछ मुगल पहुँच गये। जकरिया तथा हिन्दुये बूरी तथा अरश मुगलो के हज़ार सैनिको के प्रसिद्ध सरदार थे। इन दोनो (जकरिया तथा हिन्दू) ने दोआब में और शेर ने पर्वत के आँचल में शिविर लगा दिये थे।

गर्शास्प ने यह समाचार पाकर पर्वत के आँचल की ओर प्रस्थान किया और उन लोगो पर अचानक टूट पडा। अब उनके सरदार शेर के पास युद्ध के अतिरिक्त कोई उपाय न रह गया। तीन चार हज़ार मुगल घोडे पर सवार हुये। दोनो सेनाओ में युद्ध होने लगा। (४०५) हिन्दुस्तानियो की सेना को विजय प्राप्त हुई और मुगल सेना भाग खडी हुई। मुगल बहुत बडी सख्या में मार डाले गये और बहुत से बन्दी बना लिये गये। शेर भाले से

१ इससे खलजी सुल्तानों तथा तुग़लुक़ सुल्तानों की दक्षिण नीति का पता चलता है और बरनी के तत्सम्बन्धी वाक्य की पुष्टि होती है।

वह उन्हे भी शीघ्र ही बन्दी बना लेगा। खान यह वार्त्ता सुन कर संतुष्ट हो गया और उसे तिगीन तथा तिमुर की कोई चिन्ता न रही।

मुजीर अबू रिजा का देवगीर के जमींदारों के पास पत्र भेजना और तिमुर तथा तिगीन की सेना का कल्यान में विनाश—

तत्पश्चात् सुना जाता है कि मुजीर ने प्रत्येक दिशा में संदेश-वाहक प्रेषित किये और वहाँ के सरदारो को लिख भेजा कि कुछ लोगों ने विद्रोह कर दिया है अत वे चारो ओर आक्रमण करके उनके शीश काट कर भेज दें। इसके लिये उन्हे अत्यधिक पुरस्कार मिलेगा। जब प्रत्येक स्थान के अधिकारी को मुजीर का यह पत्र प्राप्त हुआ तो प्रत्येक परगने से सेनायें चल पड़ी और उन्होने मार्ग रोक दिये। (३६८)

जब विद्रोही कल्यान ग्राम में पहुचे तो चारो ओर से ज़मीदारो ने चढाई कर दी। विद्रोही यह देख कर भाग खडे हुये। कुछ को तो ग्राम वासियो ने हत्या कर दी और कुछ हिन्दुओं द्वारा बन्दी बना लिये गये। उलुग खाँ ने देवगीर (देवगिरि) में अपने शिविर लगाये और मुजीर अपने कार्य में कटिबद्ध रहा।

महमूद खाँ का देहली पहुँचना, सुल्तान तुग़लुक का दरबार तथा विद्रोहियो को दण्ड—

महमूद खाँ को सुल्तान ने देवगीर (देवगिरि) का मुक्ता नियुक्त कर दिया था। उलुग खाँ के आदेशानुसार वह विद्रोहियो को बन्दी बना कर यथा शीघ्र राजधानी की ओर चल दिया। उनमें एक उबैद ज्योतिषी था जिसने किले की विजय के विषय में भविष्यवाणी की थी। (३६६) दूसरा प्राचीन बादशाहो का मुहरदार था जो वकीलदर हो चुका था। नसीरुद्दीन कुलाहे जर[१], वीर कैथूनी तथा अन्य सरदार भी बन्दी बना कर उसके साथ कर दिये गये थे। महमूद खाँ मरहठा राज्य से चल कर राजधानी पहुचा और शाही महल में बन्दियो को ले जाकर सुल्तान के चरणों का चुम्बन किया। उबैद को फाँसी दे दी गई। मुहरदार की हत्या करा दी गई। सभी लोग इससे आतंकित हो गये। नसीर कुलाहे जर को हाथी के पैरो के नीचे कुचलवा दिया गया।

उलुग खाँ द्वारा तिलंग पर पुनः चढ़ाई तथा तिलंग एवं बोदन की विजय—

उलुग खाँ ने तिलग पर आक्रमण करने के लिये पुन प्रस्थान किया। दूसरे दिन उस ने सुनारी में बरगाह (शिविर) लगायी। फिर तिलग की ओर चल खडा हुआ और किसी भी पडाव पर देर न की। कुछ समय उपरान्त वह बोदन[२] पहुच गया। तीन चार दिन तक वहाँ के किले वालो से युद्ध होता रहा। किले वाले आतंकित हो गये। राय ने अपनी धन-सम्पत्ति समर्पित करके क्षमा याचना करली। क्षमा के उपरान्त वह स्वय ही नही अपितु अपने घरबार सहित ईमान ले आया।[३] (४००) वहाँ से चल कर खान दसवें दिन अरगल (वारगल) पहुँच गया। रुद्र देव बडा आतंकित हुआ।

तिलंग की विजय—

सुना जाता है कि जब अगणित सेना विद्रोह करके किले मे भाग गई तो अरगल (वारगल) के राय रुद्र देव ने मुक्ति प्राप्त करके एक बहुत बड़े समारोह का आयोजन किया।

१ सुनहरी टोपी वाला।
२ बौधन, तिलग में एक कस्बा।
३ मुसलमान हो गया।

उसने अपने आप को सुरक्षित समझ कर अनाज की सभी खत्तियाँ रिक्त करा दी। किसानो को सब अनाज बाँट दिया गया और समस्त प्रदेश में कृषि करने का आदेश दे दिया गया। उलुग खाँ ने अचानक पहुँच कर किला घेर लिया। वह पाँच मास तक किला घेरे रहा। अनाज के कम हो जाने के कारण राय को रक्षा की प्रार्थना करनी पड़ी। खान ने उसे शरण प्रदान कर दिया। तत्पश्चात् उसे विवश होकर किले के बाहर निकलना पड़ा। (४०१) सेना ने लूटमार प्रारम्भ कर दी। उन लोगो ने किले के भवन को भी हानि पहुँचाई।

उलुग खाँ ने तिलग के किले पर विजय प्राप्त कर ली। इससे पूर्व किसी ने जिज़या लेने के अतिरिक्त विजय प्राप्त न की थी।[1] उलुग खाँ ने विजय के उपरान्त राय को समस्त धन-सम्पत्ति तथा हाथियो सहित राजधानी भेज दिया।

उलुग खाँ का जाजनगर पर आक्रमण—

वहाँ कुछ दिन शिविर लगा कर उसने जाजनगर की ओर प्रस्थान किया। हिन्दू (शाही) सेना के पहुचने के समाचार पाकर जगलो में घुस गये। राय ने अन्य सेना नायको को एक सेनापति के अधीन करके युद्ध करने के लिये सेना भेजी। इस में ५००,००० पैदल, ४०,००० सवार तथा हाथियों की एक सेना थी। (४०२) खान की सेना से हिन्दुओ की यह सेना पराजित होकर भाग खड़ी हुई। बहुत से लोग मारे गये। हाथियो की सेना खान के लश्कर को प्राप्त हो गई। तुर्कों को हिन्दुओं के शिविर से अत्यधिक धन-सम्पत्ति प्राप्त हुई। वहाँ से उलुग खाँ ने दो एक दिन पश्चात् राजधानी की ओर प्रस्थान किया। सुल्तान ने शाहज़ादे को बहुत सम्मानित किया और उसे अपनी एक विशेष जड़ाऊ खिलअत प्रदान की। बादशाह के आदेशानुसार एक जश्न का आयोजन हुआ। दो तीन सप्ताह तक खुशी मनाई जाती रही। (४०३)

मुग़लों का आक्रमण—

एक दिन (बहाउद्दीन) गर्शास्प ने, जो सामाने का अधिकारी था, शाह के पास दूत भेज कर सूचना भेजी कि 'मुगलो की दो सेनायें सिन्धु नदी पार करके हिन्दुस्तान में प्रविष्ट हो गई हैं। यदि सहायतार्थ कोई सेना इस ओर भेज दी जाय तो मैं उन्हे पराजित करदू।" सुल्तान यह समाचार पाकर कि उसके राज्य मे यह दुर्घटना हो गई 'चिन्ता में पड़ गया। उसने एक सेना तैयार कराई। उसमें वीर शादी दादर तथा शादी सतलिया थे। इस सेना ने सामाने की ओर प्रस्थान किया। गर्शास्प को सूचना भेजी कि वह शीघ्र सामाने से सेना लेकर प्रस्थान करे और मुगल सेना के विरुद्ध इस प्रकार प्रयत्नशील हो कि सभी का विनाश हो जाय। (४०४) गर्शास्प आदेशानुसार सेना लेकर नगर के बाहर निकला। वह उन लोगो की खोज में निरतर रहता था। अन्त में सुना जाता है कि उसे ज्ञात हुआ कि कुछ मुगल पहुँच गये। जकरिया तथा हिन्दुये बूरी तथा अरश मुगलो के हज़ार सैनिको के प्रसिद्ध सरदार थे। इन दोनो (जकरिया तथा हिन्दू) ने दोआब में और शेर ने पर्वत के आँचल में शिविर लगा दिये थे।

गर्शास्प ने यह समाचार पाकर पर्वत के आँचल की ओर प्रस्थान किया और उन लोगो पर अचानक टूट पड़ा। अब उनके सरदार शेर के पास युद्ध के अतिरिक्त कोई उपाय न रह गया। तीन चार हजार मुगल घोड़े पर सवार हुये। दोनों सेनाओ में युद्ध होने लगा। (४०५) हिन्दुस्तानियो की सेना को विजय प्राप्त हुई और मुगल सेना भाग खड़ी हुई। मुगल बहुत बड़ी सख्या में मार डाले गये और बहुत से बन्दी बना लिये गये। शेर भाले से

---

१ इससे खलजी सुल्तानों तथा तुग़लुक़ सुल्तानों की दक्षिण नीति का पता चलता है और बरनी के तत्सम्बन्धी वाक्य की पुष्टि होती है।

घायल होकर गिरा। हिन्दुस्तानियों ने उसका सिर काट लिया। उनके शिविरों पर भी अधिकार जमा लिया गया।

वहाँ से हिन्दुस्तान की सेना के सरदार ने दूसरी ओर अन्य काफिरों के संहार हेतु प्रस्थान किया और व्याह (ब्यास) नदी के निकट घात लगा कर बैठ गये। दो तीन दिन तक मुगलों की सेना की खोज होती रही। दूसरे दिन काफिरों की एक सेना से एक बन्दी भाग कर गर्शास्प के पास पहुँचा और सूचना दी कि वे अपनी अक्ता को भागे जा रहे हैं, और यहाँ से तीन फरसंग की दूरी पर हैं। गर्शास्प यह सुनकर अपनी सेना लेकर चल खड़ा हुआ। (४०६)

जब वे व्याह (ब्यास) नदी के तट पर पहुँचे तो काफिर दृष्टिगत हुये। वीर शादी नायब वजीर आगे-आगे था। उसके साथ प्रसिद्ध शादी सतलिया था। महमूद सरबत्ता भी बहुत बड़ी सेना लिये साथ में था। उस ओर मध्य में वीर गर्शास्प था। यूसुफ दाहनये-पील दाहिनी ओर था। मलिक अहमद चप बाईं ओर तथा शाबान सर चत्रदार[१] थे। उधर से जकरिया आगे था। उसके पीछे हिन्दू कूरी था। अरश स्वयं मध्य में था। प्रत्येक के साथ अपार सेना थी। जब शादी दादर आगे बढ़ा तो उसे नदी पार करने के योग्य मिल गई। मुगल सेना को बाईं ओर छोड़ कर वह जकरिया की ओर बढ़ा। सरबत्ता भी एक हज़ार सवार लेकर आगे बढ़ा। मुगल सेना पराजित हुई। शादी ने पीछा करने का आदेश दिया। (४०७) सेना जकरिया के पास, जो बड़ा वीर था, पहुँच गई। वह भी युद्ध के लिये तैयार हो गया। दोनों सेनाओं में युद्ध होने लगा। मुगल शेर की हत्या के पहले ही से हताश थे। अत. पहले ही आक्रमण में पराजित हो गये। जकरिया घोड़े से गिर पड़ा और एक मुरत्तब सवार ने उसे बन्दी बना लिया और उसे अपने सरदार के पास ले गया। शादी ने अत्यधिक प्रसन्न होकर आदेश दिया कि खुशी के बाजे बजाये जायं। हिन्दुस्तानी सेना उन लोगों की धन-सम्पत्ति लूटने लगी। बहुत से मुगल जीवित बन्दी बना लिये गये और उनके घोड़ों की बहुत बड़ी संख्या हाथ लगी। एक ओर से गर्शास्प जब बड़े वेग से नदी की ओर बढ़ा तो उसे वहाँ गहरा जल मिला। उसने मार्ग बन्द पाकर लगाम मोड़ी। दूसरी ओर अरश तथा हिन्दू थे। युद्ध प्रारम्भ हो गया। वे दोनों भागने के लिये तैयार थे। रात्रि के अन्त में वे पर्वत की ओर भागे और अपने देश की ओर चल दिये। (४०८)

हिन्दुस्तानी सेना इस विजय के उपरान्त सुल्तान के पास शेर का शीश तथा जकरिया को बन्दी अवस्था में लेकर पहुँची। सुल्तान ने सरदारों की प्रशंसा की और उन को खिलअतें प्रदान की।[२]

गुजरात मे पराओं द्वारा शादी की हत्या—

इस घटना के एक दो मास उपरान्त शाह ने शादी दादर को गुजरात पर आक्रमण करने का आदेश दिया। उसे आदेश दिया गया कि वह वहाँ के सरदारों को बन्दी बना ले, प्रत्येक विद्रोही को दंड दे और किले के अधिकारियों से कर प्राप्त करले। उस प्रदेश को पूर्ण रूप से सुव्यवस्थित कर दे। शाही दादर सुल्तान के आदेशानुसार एक दो मास में गुजरात पहुँच गया। वह भिन्न-भिन्न दिशाओं में आक्रमण करने लगा। जब वहाँ का बहुत सा भाग सुव्यवस्थित हो गया, तो सुना जाता है उसने एक किले पर आक्रमण किया। (४०९)

दो एक मास तक वह उस किले के नीचे रहा और रात दिन रक्तपात करता रहा। जब हिन्दुओं ने अपने आप को किले में बन्दी पाया तो वे रात दिन कोई न कोई युक्ति सोचते

१ शाही चत्र (छत्र) का मुख्य प्रबन्धक।

२ बरनी ने इस युद्ध का हाल नहीं लिखा है, केवल मुगल सरदारों के सिर के लाये जाने का उल्लेख किया है। (बरनी पृ० ४५०)

है। अन्त में एक समूह (परार्गो) ने विश्वासघात करना निश्चय करके प्राणो की रक्षा की याचना की। उन्होने सन्देश भेजा कि "हम लोग अहले तरब[1] हैं। दो एक मास पूर्व हम लोग इस किले में ईदर से आये थे, अचानक यहाँ सेना पहुँच गई और हम लोग बन्दी बना लिए गये। यदि हमारे प्राणो को हानि न पहुँचाई जाय तो हम लोग सेना के सरदार के मनोरंजन का बहुत बड़ा साधन बन सकते हैं, क्योंकि हम लोगो में से प्रत्येक अपनी अपनी कला में अद्वितीय है।" सेना के सरदार ने यह हाल सुन कर उन्हें रक्षा प्रदान करके बाहर निकाल लिया। (४१०)

सुना जाता है कि कुछ योद्धा नर्तकियो के वेश में अस्त्र शस्त्र छिपाये किले के बाहर निकले। मलिक शादी ने उनके आने के समाचार पाकर उन्हे सराचा (शिविर) में बुलवाया। उन्होंने शिविर में प्रविष्ट होकर तलवारें निकाल ली और उसका सिर काट डाला और किले की ओर चल दिये। दूसरी ओर से कुछ लोग सेना पर टूट पड़े। सेना में कोलाहल मच गया और सरदार की हत्या हो जाने के कारण वे सैनिक राजधानी की ओर भाग गये। (४११) शाह ने नायब वज़ीर की हत्या सुनकर शोक प्रकट किया।[2]

तुग़लुक़ाबाद का निर्माण—

तुगलुक शाह बड़ा ही शूरवीर था। उसके ५ वर्ष के राज्य में किसी प्रकार का कोई उपद्रव न हुआ। सुना जाता है कि जब उसके राज्य के ४ वर्ष सफलता पूर्वक व्यतीत हो गये तो उसने राजधानी से एक फरसग की दूरी पर एक किले का निर्माण कराया। उसने आदेश दिया कि नींव से चोटी तक उसे कठोरतम पाषाण से बनाया जाय। उसने किले के नीचे एक हौज़ (सरोवर) बनाने का भी आदेश दिया। उस किले का नाम तुगलुकाबाद रक्खा।

लखनौती पर आक्रमण—

इसी बीच में वह लखनौती पर आक्रमण करने के उद्देश्य से निकला। उस के साथ शहज़ादा बहराम, जुलची, दौलत शाह बूयवार, तातार जाशगूरी, वीर हिन्दू तथा शाहीन आखुर-बक आदि थे। उसने वीर उलुग खाँ को देहली में छोड़ दिया और दो एक बुद्धिमान उस की सहायता के लिये नियुक्त कर दिये। (४१२) उन में शाहीन आखुरबक तथा अहमद बिन अयाज और, अन्य चुने हुये लोग थे। दूसरे दिन सेना ने प्रस्थान करके राजधानी से दो फरसग पर शिविर लगाये। उसने शिकार खेलते हुये अवध को पार किया और फिर कोसी नदी पार की और शिविर लगा दिये। वहाँ दो एक मास तक शिविर लगाये रहा। एक दिन प्रातःकाल (बहादुर) बूरा का भाई नासिरुद्दीन सुल्तान की सेवा में आज्ञाकारिता प्रदर्शित करने हेतु उपस्थित हुआ। वहाँ का राज्य दोनो भाइयो को प्राप्त था। उसने अधीनता प्रकट करते हुए सुल्तान के चरण चूमे और पिछले अपराधो के लिये क्षमा याचना की। सुल्तान ने उसके हाथ चूमे और उसे सोने की कुरसी पर आसीन होने की आज्ञा दी और उस से सब वृत्तान्त पूछा। उसने सुल्तान के लिये शुभ कामना करते हुये कहा कि "मैने मूर्ख बूरा से तीन वर्ष का कर भेजने को कहा किन्तु उसने स्वीकार न किया और विद्रोह कर रक्खा है। (४१३) उस पर मेरे परामर्श का कोई प्रभाव न हुआ। अब मुझे एक सेना प्रदान कर दी जाय तो मैं उसे तुरन्त बन्दी बना लाऊँ।"

बहराम खाँ का बूरा पर आक्रमण तथा उसका बन्दी बनाया जाना—

दूसरे दिन सुल्तान ने बहराम खाँ को आदेश दिया कि वह सेना लेकर प्रस्थान करे।

---

१ नाचने गाने वाले।

२ बरनी ने इस घटना का उल्लेख नहीं किया है।

जुलची सेना के अग्रिम भाग का नेता था। वीर हिन्दू तथा ततार दाहिनी ओर के सरदार थे। बाईं ओर नासिरुद्दीन *तथा शाहीन आखुरबक मैसरा थे। मध्य में राज्यों को विजय* करने वाला खान था। सेना बूरा को बन्दी बनाने के लिये लखनौती की ओर चल खड़ी हुई। जब वह लखनौती के निकट पहुँची तो बहादुर भी सेना लेकर निकला। दोनों सेनायें बीच के एक मैदान में रुकी। (४१४)

तत्पश्चात् मूर्ख बूरा अग्रसर हुआ। उसे देहली की सेना पर आक्रमण करने की बड़ी प्रसन्नता थी और वह इसमें अपना यश समझता था। उसने जुलची पर आक्रमण कर दिया किन्तु वह अपने स्थान से न हिला। ततार भी उसकी सहायता को पहुँच गया। बहादुर ने अपनी सेना में कोलाहल देख कर भागना ही उचित समझा। जैसे ही वह कुछ पग पीछे हटा वीरों ने मियान से तलवारें निकाल ली और उस की सेना पर टूट पड़े। वे कुछ देर तो रुके किन्तु अन्त में भाग खड़े हुये। भागने वाले आगे-आगे थे और सिंह पीछे-पीछे। बूरा को भागते समय अपनी एक कनीज़ (दासी) याद आ गई। वह उसके रूप पर आसक्त था अत उसने शिविर की ओर वापस होकर उसे शिविर से निकाला और पुन भाग कर दो तीन पहाड़ियाँ पार की किन्तु अचानक एक नदी मिल गई। वह घोड़े के साथ कीचड़ में गिर पड़ा। पीछे से अजगरों (शाही सैनिकों) ने तुरन्त पहुँच कर उसे बन्दी बना लिया और बहराम खा के सम्मुख ले गये। (४१५)

खान अपने शत्रु को बन्दी पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसन आदेश दे दिया कि प्रजा को कष्ट न पहुँचाया जाय और न भागने वालों ही का पीछा किया जाय। वहाँ से वह सुल्तान *की सेवा में उपस्थित हुआ। सुल्तान न बूरा को बन्दी देख कर ईश्वर को धन्यवाद दिया।* उसने उसे बन्दी बना देन का आदेश दे दिया।

तिरहुट पर आक्रमण—

दूसरे दिन उसने प्रात काल बूमी नदी से चल कर तिरहुट की ओर प्रस्थान किया। उसे दो बादशाह एक साथ प्राप्त हो गये। एक युद्ध द्वारा तथा दूसरा सधि से। बादशाह के आने के समाचार पाकर तिरहुट का राय एव घने जगल की ओर भाग गया। (शाही) सेना उस घने जगल की ओर पहुँची। *शाह उस जगल को देख कर बड़ा आश्चर्यान्वित हुआ।* (४१६) सुना जाता है कि सुल्तान स्वय घोड़े से उतर कर जगल के विनाश हेतु कटि-बद्ध हो गया और कुल्हाड़ी लेकर दो एक पुराने वृक्ष स्वय काट डाले। सेना ने यह देख कर कुल्हाड़िया हाथ में ले ली और सेना के लिये मार्ग बना लिया। दो तीन दिन तक सेना मार्ग बनाती रही, और तीसरे दिन तिरहुट के किले पर पहुँच गई। वहाँ सात गहरी खाइयाँ थी जो जल से पूर्ण थीं। दो तीन सप्ताह तक सुल्तान अपनी सेना दाहिनी ओर बाईं ओर भेजता रहा। उन्हें आदेश दिया कि वे आक्रमण करके जहाँ भी हिन्दू एकत्र हो उन्हें लूट लें। (४१७) तत्पश्चात् उसन (लखनौती के शासक नासिरुद्दीन को) चत्र प्रदान करके लखनौती भेज दिया। सुल्तान वीर मलवगा के पुत्र अहमद को तिरहुट में छोड़ कर दूसरे दिन वहाँ से चल दिया और दो एक मास उपरान्त राजधानी के निकट पहुँच गया।

अफगानपुर के कूश्क (महल) में सुल्तान की मृत्यु—

जब उलुग खाँ ने थान वालों से सुल्तान की पताकाओं के देहली के निकट पहुँचने के समाचार सुन तो उसने अयाज के पुत्र अहमद को आदेश दिया कि वह अफगानपुर में एक बहुत ही ऊँचे महल का निर्माण कराये। (४१८) वह स्वय सुल्तान के चरण चूमने की तैयारियाँ करने लगा। जब उसे यह ज्ञात हुआ कि सुल्तान यमुना तक पहुँच गया है तो शाहजादा उसके स्वागतार्थ शीघ्रता से बढ़ा और उसने यमुना पार करके उसके चरणों का चुम्बन किया और उससे

क्षमा याचना की। शाह उसके अपव्यय के विषय में सुन कर उससे बडा रुष्ट था। दोनों की भेंट से सेना वाले बडे प्रसन्न हुये। दोनो ने तत्काल नदी पार की। जब अफगानपुर के निकट सेना पहुची तो सुल्तान ने एक नया सुसज्जित प्रासाद देखा जिसके निर्माण में अत्यधिक व्यय हुआ था। उसने आदेश दिया कि ठहरने का ढोल बजाया जाय[1] और सेना भी वही उतरे। सेना ने महल के चारो ओर शिविर लगा दिये। वीर सुल्तान महल के भीतर चला गया। उसमें एक अलकृत बारगाह[2] (सभा भवन) थी। उसके आगे एक प्रागण था। वहाँ सुल्तान विराजमान हुआ और मस्त हाथियों के लाने के विषय में आदेश दिया। उस प्राँगण में हाथी दौडाये गये। उनके दौडने से दो मील तक भूमि हिलने लगी। मैंने वृद्धो से सुना है कि प्रागण में हाथियो के दौडने से उस नवनिर्मित भवन में लगी हुई सामग्री भी हिलने लगी और इस कारण शहतीर निराधार हो गये। (४१६) वह सुसज्जित प्रासाद धराशायी हो गया और सुल्तान का शीश शहतीर के नीचे आ गया। वह बहुत कुछ बाहर निकलने के लिये हिला किन्तु सुल्तान का कोमल शरीर चूर्ण हो गया। छोटे निकल गये किन्तु वृद्ध मर गया। यह हाल कुछ लोगो द्वारा इस प्रकार भी बताया जाता है।

अत्याचारी तथा धूर्त शाहजादे ने मलिक (अहमद बिन अयाज) के पुत्र से गुप्त रूप से निश्चय कर लिया था कि वह महल के निर्माण में ऐसा तिलिस्म[3] (कारीगरी) रक्खे कि सुल्तान जैसे ही उसके नीचे बैठे, वह छत बिना किसी प्रयत्न के गिर पडे और सुल्तान का सिर खम्भे के नीचे आ जाय। सुल्तान की मृत्यु के उपरात, शाहजादे के बादशाह हो जाने पर वह उसे वज़ीर नियुक्त कर देगा[4]। उसकी मृत्यु पर राजधानी के विशेष व्यक्तियो ने बडा शोक प्रकट किया। तत्पश्चात् वह दफन कर दिया गया। हे बुद्धिमान्! यदि ईश्वर तुझे राजमुकुट तथा राजसिंहासन प्रदान करे तो तुझे चाहिये कि तू दीनो का दुख दूर करे। (४२०)

सुल्तान मुहम्मद शाह इब्ने तुग़लुक़ शाह

सिंहासनारोहण—

जब अशुभ चरित्र वाला शाहजादा अपने पिता को दफन कर चुका तो उसने दिखाने को तो शोक-सम्बन्धी आयोजन किये किन्तु वह हृदय म बडा प्रसन्न था। तीन दिन तक वह उसका शोक करता रहा। तत्पश्चात् उसने सोने के राज-सिंहासन पर मुकुट धारण करके बडे हर्ष से दरबार किया। उसने अपनी उपाधि अबुल मुजाहिद रक्खी। सेना तथा प्रजा उसे मुहम्मद शाह पुकारती थी। हिन्दी भाषा में उसकी पदवी जोना (जौन्ह) थी। ७२४ हि० (१३२४ ई०) में वह सिंहासनारूढ हुआ। (४२१)

मुहम्मद शाह का हिन्दुस्तान के लोगों को धोखा देना—

उसने प्रजा को अपनी दया तथा न्याय का आश्वासन दिलाया। प्रारम्भ में उसने कहा "मेरे राज्य का प्रत्यक वृद्ध मेरे लिये शहशाह (सुल्तान तुग़लुक) के स्थान पर है। प्रत्येक युवक

१ ठहरने की घोषणा कराई जाय।

२ इब्ने बत्तूता ने इसका सविस्तार उल्लेख किया है।

३ इस शब्द के अशुद्ध अनुवाद के कारण कुछ बाद के तथा आधुनिक इतिहासकार इस महल को जादू से बना हुआ लिखने लगे।

४ ऐसा ज्ञात होता है कि सुल्तान मुहम्मद के शत्रुओं ने इस प्रकार की किम्वदन्ती साधारणतया उड़ा दी थी। इब्ने बत्तूता का तत्सम्बन्धी उल्लेख इन्हीं किम्वदन्तियों से प्रभावित है।

हराम खा के स्थान पर है। प्रत्येक बालक मेरा पुत्र है।" प्रारम्भ में उसने अत्यधिक स्वर्ण
न) लुटाया। मलिक जादा (अहमद बिन अयाज) को वजीर नियुक्त किया और कुछ समय
रान्त उसे पदच्युत करके गुजरात भेज दिया। बहराम खाँ को बड़े सम्मान से लखनौती
जा। बहादुर शाह बूरा को ५ बहुमूल्य चत्र देकर सुनार गाँव भेजा। बुरहान के पुत्र
वामुद्दीन को दक्षिण भेजा। बहराम ऐबा को मुल्तान की सीमा पर सेना ले जाने का
देश दिया। (४२२)

कलानूर तथा फ़रशूर (पेशावर) पर आक्रमण—

उसने अपने राज्य के प्रारम्भ में अपने वीर सरदारों को आदेश दिया कि 'वे खज़ान्ची
एक साल का वेतन लेकर सेना को प्रदान कर दें। युद्ध के नये अस्त्र-शस्त्र तैयार किये
यें क्योंकि मुझे शिकार[1] की अभिलाषा है।' जब सेना वालो को धन दे दिया गया तो
रे दिन सुल्तान ने आदेश दिया कि एक सायाबान (छत्र) मुल्तान की ओर सजाया जाय।
बात के एक दो सप्ताह उपरान्त सुल्तान देहली से सेना लेकर निकला। दो मास पश्चात्
लाहौर पहुँचा। सुना जाता है कि वह स्वय लाहौर में रुक गया और सेना को फरशूर
शावर) की ओर भेजा और यह आदेश दिया कि वे मुगलों के राज्य पर आक्रमण करें।
रो ने कलानूर तथा फरशूर पर अधिकार जमा लिया। काफिरो की स्त्रियों तथा बालकों
बन्दी बना लिया। मुगलो के लिए जो प्रत्येक वर्ष सिन्धु नदी पार करके हिन्दुस्तान में
मार किया करते थे, यह बात उल्टी हो गई कि (शाही) सेना ने कलानूर तथा फरशूर
अधिकार जमा लिया। सुल्तान के नाम का खुत्बा वहाँ पढा जाने लगा। इस युद्ध के
रान्त सरदार तो लौट गये किन्तु सेना दो तीन सप्ताह तक ठहरी रही। (४२३) वहाँ
हे अनाज न होने के कारण केवल शिकार पर जीवन निर्वाह करना पड़ा। सेना दो एक
स उपरान्त सुल्तान के महल में उपस्थित हुई। सुल्तान ने प्रत्येक को सम्मानित किया।
तीन मास तक शाही सेना उस प्रदेश में इधर उधर लूट मार करती रही और उपद्रव-
रियो को दण्ड दिया जाता रहा। तत्पश्चात् वह राजधानी को लौट आया।

शहर (देहली) पहुँच कर उसन न्याय करना प्रारम्भ कर दिया और नित्य नये नियम
ाने लगा। देहली तथा पूरे राज्य के सभी लोग उससे प्रसन्न तथा उसके लिए शुभ
मनायें करते थे। इस घटना के दो वर्ष उपरान्त सुल्तान का हृदय दया तथा न्याय से
र गया। वह शहर (देहली) वालों से इतना सशंकित हो गया कि औषधि विष में परिवर्तित
गई। उसने न्याय के स्थान पर अत्याचार तथा हत्याकाण्ड प्रारम्भ कर दिया।

हाउद्दीन गर्शास्प[2] का विद्रोह—

बहाउद्दीन सुल्तान के चाचा का पुत्र था। सुल्तान (तुगलुक) ने उसकी श्रेष्ठता देख

---

[1] शिकार शब्द का अर्थ युद्ध यहाँ पूर्णतया स्पष्ट है।

[2] तारीखे फीरोजशाही की प्रकाशित पोथी में इस घटना का उल्लेख नहीं। तारीखे फ़ीरोजशाही की रामपुर की हस्तलिखित पोथी में इस विद्रोह का उल्लेख इस प्रकार है: "उस तिथि से जब कि सुल्तान तीन वर्ष देहली मे रहा, दुष्ट समय द्वारा एक बहुत बड़ी दुर्घटना घटी और राज्य में विघ्न पड़ गया। कुछ समय उपरान्त सुल्तान तुगलुक शाह के भान्जे मलिक बहाउद्दीन ने सगर में विद्रोह कर दिया। दौलताबाद के निकट पहुँच कर (शाही) सेना से युद्ध किया और पराजित हुआ, उसकी सेना भाग खड़ी हुई। दौलताबाद के अमीरों को कम्पिला की ओर नियुक्त किया गया। वहाँ के राय को बन्दी बना कर उसकी हत्या करदी। उसका परिवार अन्य हिन्दुओं के साथ बन्दी बना लिया गया। उसका खज़ाना दौलताबाद लाया गया। बहाउद्दीन वहाँ से, धोल समुन्दर (द्वार समुद्र) पहुँचा। अपने परिवार को हिन्दुओं में छोड़ गया। उसे (बहाउद्दीन को)

कर उसकी उपाधि "वीर गर्शास्प" रखी। सुल्तान ने उसे सगर[1] की ओर भेजा। वह सुल्तान (मुहम्मद) के हृदय का परिवर्तन देख कर सेना एकत्र करने लगा और चारो ओर से वीरों को जमा करने लगा। (४२४)

अहमद अयाज़ का गुजरात से देवगिरि की ओर प्रस्थान और गर्शास्प के विरुद्ध आक्रमण—

मलिक ज़ादा को गुजरात में जब यह हाल ज्ञात हुआ तो उसने चारो ओर से सरदारों को बुलवाया और खज़ाना प्रदान करने तथा धन सम्पत्ति लुटाने लगा। एक दिन मलिक ज़ादा को सुल्तान का फ़रमान प्राप्त हुआ कि वह मरहठों के राज्य पर आक्रमण करे। क़िवामुद्दीन पुत्र बुरहान कुतुबुलमुल्क, वीर ततार, तथा अशरफुलमुल्क एवं अन्य सरदारों को एकत्र करने का आदेश हुआ। वह सब का सरदार नियुक्त हुआ। मलिक ज़ादा बहुत बड़ी सेना तैयार करके निकला। (४२५) उस ओर से गर्शास्प भी आगे बढा। जब (अहमद अयाज़) को देवगीर (देवगिरि) की ओर से सेना के आने के समाचार प्राप्त हुए तो उसने भी गोदावरी नदी पार की। जब देवगीर (देवगिरि) की सेना निकट पहुँची तो मलिक ज़ादा ने स्वयं अपनी सेना के मध्य में स्थान ग्रहण किया। दाहिनी ओर अशरफुलमुल्क था। ततार उसकी सहायता के लिए था। बुरहानुद्दीन का पुत्र क़िवामुद्दीन बाईं ओर था। दूसरी ओर गर्शास्प सेना के मध्य में था। खिज़्र बहराम दाहिनी ओर तथा बेदर बाईं ओर थे। जब दोनों ओर की सेनायें तैयार हो गईं तो प्रत्येक युद्ध की प्रतीक्षा करने लगा। गर्शास्प ने अयाज़ के पुत्र की सेना के दाहिनी ओर आक्रमण किया (४२६) और अचानक मध्य भाग को चीरने लगा। समस्त सेना कम्पित हो गई। ततार तथा अशरफुलमुल्क भी हिल गये। दोनो सेनाओं के कारण युद्ध क्षेत्र में अन्धकार व्याप्त हो गया। ऐसे अवसर पर दुष्ट खिज़्र बहराम मुज़ीर की सेना से मिल गया और देवगीर (देवगिरि) की सेना का सहायक बन गया।

अपने सहायक के निकल जाने के पश्चात् गर्शास्प को भी भागना पड़ा। वह नदी की ओर भागा। देवगीर (देवगिरि) की सेना ने उसका पीछा किया। वह पलट-पलट कर सिंह की भाँति शत्रु पर आक्रमण करता था। अन्त में उसने भी नदी पार की। उसकी सेना भी उसी ओर भागी। सुना जाता है कि जब वह सगर नामक किले में पहुँचा तो वहाँ से अपने परिवार को लेकर तथा वहाँ की धन-सम्पत्ति नष्ट करके कम्पिला की ओर चल दिया। जब वह भाग कर कूमटा पहुँचा तो शरण के लिये उस क़िले में घुस गया। वहाँ से उसने (राय) कम्पिला को अपनी सहायता के लिये उद्यत किया। कम्पिला (के राय) ने उसे हर प्रकार की सहायता का आश्वासन दिलाया और उसे निश्चिंत हो जाने के लिये कहा। (४२७) उसने सूय, यज्ञोपवीत, लात तथा मनात की शपथ लेकर कहा कि उसके शरीर पर जब तक जीता है तब तक उसे (गर्शास्प को) कोई हानि नहीं पहुँचा सकता। जब इस घटना के पश्चात् कुछ समय व्यतीत हो गया तो राजधानी से निरंतर सेनायें आने लगीं। समुद्र के समान उस दुर्ग के चारों ओर सेनाओं का वेग बढ़ने लगा।

बन्दी बनाकर सुल्तान की सेवा में दौलताबाद भेज दिया गया। सुल्तान ने उसकी हत्या करा दी और हाथी के पाँव के नीचे फिंकवा दिया। कम्पिला शाही सेवकों के अधीन हो गया। (पृ० २८६)। "तारीखे मुबारकशाही के अनुसार यह विद्रोह ७२७ हि० के अन्त (१३२७ ई०) में हुआ [तारीखे मुबारकशाही पृ० ९९, मुन्तखबुत्तवारीख भाग १ पृ०, २२६ २७]

1 गुलबर्गे के निकट।

सुल्तान मुहम्मद का दौलताबाद पहुँचना तथा अहमद अयाज़ को कम्पिला भेजना और उसका अचानक कूमटा पहुँचना—

सुना जाता है कि शाह सेना लेकर दौलताबाद की ओर बढा। जब सुल्तान ने गर्शास्प की पराजय का हाल सुना तो उसने मलिक जादा को अपने पास बुलवा लिया। मलिक रुक्नुद्दीन कुतुबुलमुल्क ने सुल्तान के आदेशानुसार कम्पिला की ओर दो बार आक्रमण किया, किन्तु प्रत्येक बार पराजित होकर उसे लौटना पडा। तीसरी बार सुल्तान की ओर से मलिक-जादा (अहमद अयाज) युद्ध के लिये किले की ओर बढा। वह कूमटा पर अचानक पहुच गया। (४२८) दो तीन बार गर्शास्प तथा कम्पिला (का राय) युद्ध के लिये समर भूमि में निकले किन्तु पराजित होकर किले में घुस गये। एक दो मास तक इसी प्रकार रक्तपात होता रहा। एक दिन हिन्दुस्तान की सेना के सरदार ने सुल्तान से निवेदन किया कि सभी सैनिक एक बार टूट पड। इस प्रकार एक साथ समस्त सैनिको ने आक्रमण कर दिया और किले पर टूट पडे।

कम्पिला के राय तथा गर्शास्प को पराजय एवं हुसदुर्ग को विजय—

बहाउद्दीन तथा राय कम्पिला यह देख कर कि किला हाथ से निकला जाता है, किला छोड कर भाग गये और बडी दु खमय अवस्था में हुसदुग चले गये। शाही मेना ने उन का पीछा किया। उस किले में एक मास तक बाण, भाले, ईंट तथा पत्थर से युद्ध होता रहा। एक दिन समस्त (शाही) सेना किले पर टूट पड़ी और सभी साधारण तथा विशेष व्यक्ति किले में प्रविष्ट हो गये। गर्शास्प ने यह देख कर तीन चार घोडे लिये और अपनी स्त्रियो को दो तीन घोडो पर बैठाया और स्वय एक घोडे पर बैठ कर भाग खडा हुआ। (४२९)

जो कोई उसका पीछा करता उसका वह शीश काट लेता। इस प्रकार वह शत्रु की मेना के मध्य से रात्रि में नही अपितु दिन में निकल गया। प्रतिज्ञा का पालन करन वाले हिन्दू कम्पिला (के राय) ने शूरवीरों के समान युद्ध-प्राङ्गण न छोडा। वह मित्र के लिये अपना घर बार लुटा रहा था। उसन घोर युद्ध किया, किन्तु अन्त में आहत हुआ और उसे अपने शीश को बलि देनी पडी। सेना ने किले में प्रविष्ट होकर बहुत से हिन्दू मार डाले और अपार धन-सम्पत्ति एकत्रित की। हुसदुर्ग की विजय के उपरान्त मलिक जादा के सम्मुख एक व्यक्ति लाया गया। मलिक जादा ने उसे किले वालो का परिचय देने का आदेश दिया। जो सिर उसके समक्ष लाया जाता, वह उसका परिचय दे देता। जब एक मिर, जो बाण से छिदा था, लाया गया, तो उसने विलाप प्रारम्भ कर दिया। मलिक जादा ने विलाप का कारण पूछा और कहा, "यह किस का सिर है?" उसने विलाप करते हुए कहा, "यह हमारे राय का सिर है।" मलिक जादा ने कहा, "यह सिर एक सोने के थाल में रखा जाय।" और तत्पश्चात् उसकी खाल में घास भर दी जाय।" किले में आग लगा दी गई और वह सिर मलिक जादा ने सुल्तान के पास भिजवा दिया। (४३०) तत्पश्चात् गर्शास्प का पीछा करने के लिये एक बहुत बडी मेना भेजी।

बहाउद्दीन का भाग कर धोर समुन्दर (द्वार समुद्र) पहुँचना तथा बन्दी बनाया जाना—

सुना जाता है कि जब गर्शास्प, जिसके पास धन सम्पत्ति न रह गई थी बलाल[१] (के राज्य) की सीमा में प्रविष्ट हुआ, तो उसका भाग्य उसके प्रतिकूल था और केवल दु ख तथा कष्ट ही उसके पास रह गये थे। बलाल ने उसे छल तथा धूर्तता से बन्दी बना कर मलिक जादा

१ द्वार समुद्र का वीर बल्लाल तृतीय, होयमल राज्य का स्वामी।

के पास भेज दिया। मलिकजादा ने उसे भारी शृङ्खलाओं में बंधवा कर संसार के सम्राट् के पास भिजवा दिया। शाह ने आदेश दिया कि "उसकी खाल खींच कर उसमें घास भूसा भर कर प्रत्येक स्थान पर घुमाने के लिये भेज दिया जाय जिससे प्रत्येक सरदार सावधान हो जाय, उसका शरीर बवरचियों (रसोइयों) को दे दिया जाय और वे उसका भोजन बना कर हाथियों के सामने डाल दें और प्रत्येक प्रान्त तथा नगर में सूचना करा दी जाय कि सभी विद्रोही इसी दंड के पात्र होंगे।" तत्पश्चात् उसके आदेशानुसार समारोह तथा मनोरंजन का आयोजन किया गया और दो सप्ताह तक लोग रात दिन तक शहर में खुशी मनाते रहे। (४३१)

मुहम्मद शाह इब्ने तुगलुक शाह द्वारा गंधियाना की विजय—

इस कार्य से निश्चिन्त होकर सुल्तान कुछ मास तक दौलताबाद में रहा। एक दिन उसने सेना लेकर गन्धियाना[1] पर चढ़ाई की। जब कोलियो[2] के सरदार नाग नायक ने सुल्तान के आने के समाचार सुने तो भय के कारण दुर्ग के कपाट बन्द कर लिये। पर्वत की चोटी पर वह किला इस प्रकार बना था कि वह भूतों का किला कहलाता था और कोई भी उसके निकट न पहुँच सकता था। किसी को भी अभी तक उसकी परिधि के विषय में कोई ज्ञान न था। देहली की सेना प्रशंसा की पात्र है कि उसने नदियों तथा पर्वतों का विजय किया और समुद्र से लेकर सिन्धु नदी तक अनेकों किलों का विजिय किया। जब सेना गन्धियाना पहुंची तो भय के कारण पर्वत तृण-तुल्य बन गया। प्रत्येक समय क़िले में कोलाहल मचा रहता था। जब इस अवस्था में आठ मास व्यतीत हो गये तो प्रत्येक बुर्ज से हिन्दुओं का दुःख प्रकट होने लगा और हिन्दुओं ने सुल्तान से अपने प्राणों की रक्षा की याचना प्रारम्भ कर दी। (४३२)

बहुत कुछ वार्त्ता के उपरान्त नाग नायक ने क़िले से निकल कर बड़ी दीनता से शाह के चरणों का चुम्बन किया और सुल्तान ने उसे क़बा तथा कुलाह (सम्मान सूचक वस्त्र) प्रदान किये। दूसरे दिन सुल्तान ने वहाँ से दौलताबाद की ओर प्रस्थान किया। सेना ने दौलताबाद पहुँच कर एक सप्ताह तक यात्रा के कष्ट के कारण विश्राम किया।[3]

बहराम ऐबा के विद्रोह की सूचना—

एक दिन एक दूत ने यह समाचार पहुँचाये कि "मैं देहली की ओर से आ रहा हूँ। मुझे प्रत्येक व्यक्ति से मार्ग में यह ज्ञात हुआ है कि बहराम ऐबा ने विद्रोह कर दिया है और मुल्तान का विध्वंस कर रहा है।"

सुल्तान का दौलताबाद से देहली को प्रस्थान—

दूत से यह समाचार पाकर बादशाह ने पश्चिम की ओर शिविर लगवाये। दूसरे दिन वहाँ से निरन्तर यात्रा करते हुये देहली की ओर प्रस्थान किया। राजधानी में पहुँच कर एक मास तक बादशाह ने विश्राम किया। एक दिन उसने आदेश दिया कि बारजा (सभा भवन) में बहुत से खेमें लगाये जायें और एक उत्कृष्ट सायाबान (शामियाना) उसमें लगाया जाय। उस बारगाह[4] (सभा करने का स्थान) पर एक सुन्दर मिम्बर (मंच) सजाया गया। उसने आदेश दिया कि दरबारी उसमें दाहिना और बायाँ स्थान लें। (४३३) नक़ीब सभी को सूचना दें और सभी शहर वालों को दावत दी जाय। सब छोटे बड़े बुलाये

---

१ गंधियाना अथवा गोन्धाना, कुन्दना एक ही नाम के भिन्न भिन्न रूप हैं। यह स्थान पूना से १२ मील पर सिंहगढ़ है।

२ दक्षिण के हिन्दुओं की एक जाति।

३ समकालीन इतिहासकारों में एसामी ही ने इस विजय का उल्लेख किया है और फ़िरिश्ता ने उसी के आधार पर इसकी चर्चा की है। यह विजय १३२८ ई० में प्राप्त हुई।

४ इसकी व्याख्या के लिये इब्ने बत्तूता का उल्लेख पढ़िये।

जायें और सभी नगर वासी सम्मिलित हों। वहाँ एक बहुत बडी सभा हुई और बहुत से लोग उस दिन पद-दलित हो गये क्योंकि जनसमूह की कोई सीमा न रही थी। तत्पश्चात् सुल्तान ने आदेश दिया कि जलाल हुसाम मिम्बर पर लोगों को उपदेश दे। उसके वाज (धार्मिक प्रवचन) के उपरान्त सुल्तान ने मच (मिम्बर) पर एक खुत्बा (प्रवचन) पढा। ईश्वर तथा मुहम्मद साहब की प्रशसा के उपरान्त उसने सभी को आशीर्वाद दिया। खेद है कि ऐसे बुद्धिमान बादशाह ने गेहू दिखाने और जौ बेचने का पाप किया। न्याय के बहाने से वह अत्याचार करता था। सेना के साथ प्रजा की भी हत्या होती थी। तत्पश्चात् सगीत तथा नृत्य का आयोजन हुआ। इसके उपरान्त लोगों को भोजन कराया गया। प्रत्येक सरदार को सोने के ख्वान (थाल) प्रदान किये गये जिनमें ऊपर तक नाना प्रकार की वस्तुयें भरी थी। वहाँ का बचा हुआ भोजन बहुत से लोग ले गये। वह इतना अधिक था कि लोगों ने छ मास तक उन रोटियों के अतिरिक्त कुछ न खाया। (४३४)

सुल्तान मुहम्मद इब्ने तुग़लुक शाह का मुल्तान की ओर प्रस्थान—

इस बात के एक सप्ताह के उपरान्त एक दिन सुल्तान राजसी ठाठ-बाट से सवार होकर शिकार के प्रयोजन से निकला और हौजे खास पर पहुँचा। उसके पीछे-पीछे एक मसार था। उसकी पताका के पीछे सरदारों की पताकायें थी। लखनौती से मीर नासिरुद्दीन, ततार, सफ्दर (कीरान), हुशग (तुगलुकी), लाला बहादुर, लाला करग, शाह का सर दावतदार, शादी सतलिया, मकबूल, नायब बारबक मलिक मुखलिसुलमुल्क यजकियो का सिह अमीर दौलत शाह वूषवारी, कुशमीर किमली, नवा तथा तगी शहनये बारगाह, सुल्तान के साथ थे। दूसरे दिन कीलो में शिविर लगा। इसी प्रकार प्रत्येक दिन एक पडाव पार करता हुआ मुल्तान अचानक लाहौर पहुँच गया। (४३५)

किशली ख़ाँ तथा सुल्तान का पत्र व्यवहार—

जब किशली ख़ाँ (बहराम ऐबा) ने यह सुना कि देहली की सेना उस पर चढाई करने के लिये पहुँच गई तो उसने सुल्तान को पत्र लिखा कि "सुल्तान को मूर्ख लोगों की बातें सुन कर इस हितैषी पर सदेह हो गया। यदि सुल्तान अपने राज्य की ओर देहली लौट जाय तो मैं शाह के आदेशो का पालन करता रहूगा और निश्चित कर प्रत्येक वर्ष तथा मास में भेजता रहूगा। यदि शाह इस स्थान पर उसी प्रकार आक्रमण करे जिस प्रकार अफरासियाब (तूरान का बादशाह) ने ईरान पर आक्रमण किया था तो उसे समझ लेना चाहिये कि जब तक इस भूमि पर रुस्तम वर्तमान है, उस समय तक अफरासियाब का क्या भय हो सकता है ?[1]

सुल्तान का किशली ख़ाँ को उत्तर—

शाहशाह को जब इस पत्र का ज्ञान हुआ तो उसने दबीरो को उसका उत्तर इस प्रकार लिखने के लिये आदेश दिया "हे भाग्यवान तथा बुद्धिमान ! ईश्वर ने जिन्हे उन्नति दी है, उनका विरोध न कर। मुझे ईश्वर ने हिन्दुस्तान प्रदान किया है। (४३६) मैं जब किसी वृक्ष को अपनी सीमा से अधिक सिर उठाये देखता हू तो मैं उसका सिर कुल्हाडी से काट कर उसके स्थान पर दूसरा वृक्ष लगा देता हू। यदि तू अपने प्राण चाहता है तो मेरा विरोध न कर। यदि तेरा भाग्य तुझे उचित मार्ग-प्रदर्शित करे तो तू इस स्थान पर चला आ। मुझ से युद्ध करने वाला बच कर नहीं जाता। यदि तू मुगलो के राज्य में भागना चाहेगा तो मैं वहाँ से भी

१ शाहनामे की अफरासियाब तथा रुस्तम की कहानी की चर्चा, जिसमें अफरासियाब के ईरान पर आक्रमण तथा रुस्तम की प्रतिरक्षा का उल्लेख है।

तुझे निकाल लाऊँगा। यदि तू आज्ञाकारिता स्वीकार कर लेगा तो बच जायगा अन्यथा तुझे अपने धन जन से वंचित होना पड़ेगा।"

लाला बहादुर तथा लाला करंग का युद्ध के लिये बोहनी भेजा जाना और किशली खाँ के यज़कियों से युद्ध—

सुना जाता है कि किशली खाँ को पत्र भेजने के पश्चात् सुल्तान ने मुल्तान की सीमा की ओर एक सेना भेज कर आदेश दिया कि वे लोग सीधे बोहनी ग्राम पहुँच जायँ और वहाँ से युद्ध करते रहें। (४३७) युद्ध के लिये स्थान को दृढ़ बना कर वहीं रात दिन सावधान रहें। यदि शत्रु के यज़क[1] आयें तो उन पर तुरन्त टूट पड़ें। उस सेना के दो तीन आदमी सरदार रहें और शत्रु का मार्ग रोक दें। लाला बहादुर तथा लाला करंग (सरदार) रहें क्योंकि व चतुर तथा वीर हैं। जब यह सेना बोहनी पहुँची तो बहराम ऐबा को भी पता लग गया। उसने अपनी सना के सरदार कुशमीर को, जो उसका जामाता भी था, आदेश दिया कि वह आक्रमण करके उस थाने[2] पर अधिकार जमा ले और वहाँ से शत्रु के यज़क को भगा दे। जब कुशमीर, बोहनी पहुँचा तो उसे शत्रु के यज़क दृष्टिगोचर हुये। उसने उन पर एक साधारण आक्रमण किया किन्तु यज़क के सरदारों न अपनी सेना को आदेश दिया कि वे अपने-अपने स्थान पर डटे रहें और प्रत्येक अपनी ढाल को अपने मुख के सामने करले। कुशमीर की सेना उन लोगों को दृढ़ पाकर भाग गई और मुल्तान की ओर चल दी। यज़क ने उन लोगों को भागते हुये देख कर उनका ३ फरसंग तक पीछा किया, और मृतकों से मार्ग को पाट दिया। वहाँ से लौटकर उन्होंने इसकी सूचना सुल्तान को लिख कर भेजदी। बादशाह उस पत्र को पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ। (४३८)

सुल्तान का युद्ध के लिए प्रस्थान—

उसने लाहौर से युद्ध के लिए दूसरे दिन मुल्तान की ओर प्रस्थान किया। जब कुछ पड़ाव शेष रह गये तो एक पड़ाव पर अबुल फ़तह शेख रुक्नुद्दीन सुल्तान के सम्मुख अभिवादन करने के लिए आया। सुल्तान ने प्रणाम किया और उसके चरण चूम कर उससे सहायता की याचना की। अबुल फ़तह द्वारा प्रोत्साहन प्राप्त करके सुल्तान निरंतर बढ़ता चला गया और उसने किसी पड़ाव पर भी विश्राम न किया। जब शाही सेना तलहम्बा[3] की सीमा पर पहुँची तो खान भी मुल्तान से सना लेकर निकला और शीघ्र ही रावी नदी पार करली। बोहनी पहुँच कर उसने युद्ध के लिए सामान एकत्र किये। वहाँ से चल कर तलहम्बा की ओर प्रस्थान किया और वहाँ से भी एक कोस आगे एक ग्राम में पहुँच गया।

दोनों ओर के यज़क दृष्टिगोचर होने लगे। इस ओर से सुल्तान सेना की तैयारी के लिए कटि बद्ध हो गया। उसने कल्ब (मध्य भाग की सेना) के तीन टुकड़े किये और प्रत्येक भाग में विभिन्न प्रकार के चत्र रक्खे। (४३९) लखनौती का शासक नासिरुद्दीन कल्ब के मध्य भाग की सेना में था। कल्ब के बाईं ओर शेख अबुल फ़तह का भाई इस्माईल तथा दाहिनी ओर सर दावतदार था। दाहिनी पक्ति के आगे हुसाम था और बीच में वीर दौलत शाह था। तनार तथा अन्य वीर बाईं पक्ति के आगे थे। सुल्तान स्वयं बाईं पक्ति से कुछ दूर वीरों को साथ लिए घात लगाये बैठा था। लोहा पहिने हुये हाथियों की एक पंक्ति सुल्तान की पक्ति के सम्मुख चिंघाड़ रही थी। हौदे के नीचे उनके शरीर ऐसे थे कि मानो

१ सेना का अग्रिम भाग; गुप्तचारी सेना।
२ ग्रामों के सैनिक केन्द्र।
३ एक हस्तलिखित पोथी में तिलम्द है।

पर्वत बादल के नीचे छिप गया हो। अर्ज (निरीक्षण तथा गणना) के समय सेना की संख्या एक लाख निकली।

उस ओर किशली खा ने भी अपनी सेना तैयार की। दाहिनी पंक्ति में मन्दी अफगान, तथा बाईं पंक्ति में खान का भाई शम्सुद्दीन थे। मध्य में खान तथा कुशमीर थे। सुना जाता है कि उसके साथ १२००० सवार थे। (४४०) जब दोनो ओर की सेनायें टकराईं तो मन्दी अफगान ने हुशग की ओर आक्रमण किया किन्तु न तो उस पर और न सर दावतदार पर आक्रमण का कोई प्रभाव हुआ और वह अपनी सेना की ओर लौट गया। तत्पश्चात् शम्सुद्दीन ने इस्माईल की पंक्ति पर आक्रमण किया क्योंकि शाह उसके पीछे हाथियों की सेना लिये उपस्थित था। उसने एक आक्रमण से उस सेना को पराजित कर दिया और सेना यह दशा देख कर दग रह गई। इस्माईल उस युद्ध में मारा गया। जब बादशाह को यह हाल ज्ञात हुआ तो उसने कुतुबुलमुल्क को इस्माईल की पंक्ति की सहायता करने के लिए भेजा। उस शूरवीर ने एक ऐसा आक्रमण किया कि शम्सुद्दीन पराजित हो गया। उसी समय सुल्तान भी अपने स्थान से चल पडा। उसके चलने से शम्सुद्दीन काँप उठा। पूर्व का बादशाह उस के दाहिनी ओर से पहुँच गया और समस्त सेना धूल में लुप्त हो गई। हाथी के हौदो पर बैठे हुये सैनिकों ने अपने भालो से (रक्त) की नदी बहा दी। (४४१) भीषण युद्ध होता रहा। खान (किशली) उस युद्ध में मारा गया, शाही सेना की विजय हुई। सरदार के न रहने के कारण (खान) की सेना युद्ध न कर सकी और भाग खडी हुई। देहली की सेना ने चारो ओर लूटमार प्रारम्भ करदी। शाह के एक सिलहदार[1] ने खान के मृतक शरीर से उसका सिर काट लिया और उसे सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत कर दिया। सुल्तान ने उसे भाले की नोक पर लगवा कर फिराया और नकीबों[2] को आदेश दिया कि वे इस बात की घोषणा करदें कि जो कोई विद्रोह करेगा उसका अन्त यही होगा। दूसरे दिन उसने मुल्तान की ओर प्रस्थान किया। समस्त बन्दियों की हत्या करा दी। प्रत्येक पड़ाव पर अत्यधिक रक्तपात किया। (४४२)

शेख रुक्नुद्दीन की सिफारिश—

जब सम्मानित पताकायें मुल्तान पहुँची तो सुल्तान ने आदेश दिया कि मुल्तान के सभी निवासियों को कठोर दण्ड दिये जायें। एक सप्ताह तक वहाँ घोर रक्तपात हुआ। जो कोई मुल्तान से भाग गया वही सुरक्षित रह सका। अबुल फतह शेख रुक्नुद्दीन ... की सिफारिश के लिये वास में थे। जब उन्हें इस रक्तपात का पता चला ... की सिफारिश पर सुल्तान ने कबीर को नंगे सिर तथा नंगे पाँव सुल्तान के समक्ष प... ये और बन्दियों को खोल दिया जाय। जो आदेश दिया कि अपराधी सब क्षमा कर ... र के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और उस नगर का नाम लोग उस रक्तपात से बच गये उन्हों... आजादपुर हो गया। (४४३)

सुल्तान का मुल्तान से दीपालपुर पहुँचना तथा लखनौती से बूरा की हत्या के समाचार प्राप्त होना—

वहाँ से चल कर सुल्तान पाँचवें दिन दीपालपुर पहुँचा। एक दिन लखनौती में बहराम खां के पास से एक दूत ने आकर धरती-चुम्बन करके कहा कि "(बहादुर) बूरा ने विद्रोह करके

लखनौती में रक्तपात मचा रखा था। बहराम खाँ ने उस पर आक्रमण करके उसे पराजित कर दिया। बहादुर, खान द्वारा पराजित होकर एक नदी की ओर भागा और उसमें गिर पड़ा। खान ने वहाँ पहुंच कर उसे बन्दी बना लिया और उसकी खाल खिंचवा डाली। विजय-पत्र के साथ खान ने वह खाल भी सुल्तान के पास भेजी है।" सुल्तान ने यह सुन कर आदेश दिया कि चालीस दिन तक नगर में आनन्द उल्लास मनाया जाय, उसकी तथा बहराम (किशलो खाँ) की खाल एक ही कुब्बे[1] पर लटकाई जाय। (४४४)

सुल्तान का देहली पहुँचना—

वहाँ से दूसरे दिन सुल्तान ने राजधानी की ओर प्रस्थान किया। जिस दिन वह शहर देहली में पहुँचा तो शहर में आनन्द उल्लास मनाया गया। चारों ओर सजावट की गई। चालीस दिन तक खुशी के बाजे बजते रहे। उस समय के नगर की तुलना किसी भी वस्तु से सम्भव न थी। (४४५) नगर इस प्रकार मनुष्यों से परिपूर्ण था कि ईर्ष्यालु समय उसे कम करने लगा।[2]

सुल्तान का देहली नगर पर अत्याचार और प्रजा को देवगीर (देवगिरि) भेजना—

सुल्तान को शहर वालो पर सदेह था और वह उनके लिये विष छिपाये रहता था। उसने अत्याचार द्वारा अत्यधिक मनुष्यों की हत्या करादी किन्तु जब उसे यह भी पर्याप्त ज्ञात न हुआ तो उसने गुप्त रूप से यह कुत्सित योजना बनाई कि एक मास में नगर का विनाश कर दिया जाय। उसने प्रत्येक दिशा में स्पष्ट रूप से यह सूचना कराई कि "जो कोई भी सुल्तान का हितैषी हो, वह मरहठा प्रदेश की ओर प्रस्थान करे। जो कोई उसकी आज्ञा का पालन करेगा, वह अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त करेगा और जो कोई भी इसका उल्लघन करेगा उसका सिर काट डाला जायगा।" उसने आदेश दिया कि नगर में आग लगा दी जाय और सभी लोगो को नगर से निकाल दिया जाय। सभी लोगो को रोते पीटते अपने-अपने घर छोडने पडे। (४४६) परदे वाली स्त्रियो, तथा एकातवासी पवित्र लोगो (सन्तो) को उनके घरो से बडा कष्ट देकर बाल पकड कर निकाल दिया गया। वे लोग अवानो[3] के भय से निकल पडे और उन लोगों ने नगर के बाहर शिविर लगा दिये। लोगो ने इस प्रकार चीत्कार मचाते हुये प्रस्थान किया, जिस प्रकार किसी जीवित मनुष्य को कब्र में दफन किया जाय। प्रत्येक पडाव पर मजार ही मजार बन गये और मृतकों के अतिरिक्त कुछ भी दृष्टिगत न होता था। सभी जन्म-भूमि के प्रति प्रेम से पीड़ित थे।

सिपेह सालार इज्जुद्दीन एसामी की देहली से तिलपट पहुंच कर मृत्यु—

मेरे पूर्वजों में से भी एक वृद्ध का निवास उसी नगर में था। उनकी अवस्था ९० वर्ष की थी और वे एकान्तवासी थे। अपने पूर्वजों द्वारा इनाम में प्राप्त किये हुये ग्राम अपनी सतान में बाँटा करते थे। वे कभी अपने घर से न निकलते थे। शुक्रवार तथा ईद के अतिरिक्त कभी भी अपने द्वार के बाहर न दिखाई पडते थे। रात दिन वे एक कोने (दालान) में एबादत किया करते थे। (४४७) उनकी उपाधि इज्जे दीन (इज्जुद्दीन) थी और कभी किसी को उन से कोई उपालम न हुआ था। सद्रुलकेराम, वीर जहीरे ममालिक, जिससे एसामी का उद्यान हरा भरा था, उसका पिता था। वह सुल्तान बलबन का वकीलदर था।

[1] एक प्रकार के गुम्बद तथा द्वार जो खुशी के समय सजाये जाते थे।
[2] एसामी ने किशली खाँ के विद्रोह के पूर्व देहली वालों के देवगिरि भेजे जाने का उल्लेख नहीं किया।
[3] शाही पुलिस के वे कर्मचारी जो सुल्तान के आदेशों का कठोरता से पालन कराते थे।

जब एसामी का वह वृद्ध ९० वर्ष की अवस्था में निकाला गया और चारपाई पर तिलपट पहुँचा तो उसके साथ वालो ने उसके मुख से चादर हटाई। उसने चारों ओर वृक्षों का झुड देख कर कहा कि, "मेरा एबादत का स्थान कहाँ है? मैं इस स्थान पर जगल के अतिरिक्त कुछ नही पाता।" सेवकों ने उत्तर दिया कि, जब वह सो रहा था तो अवानों ने आकर अत्याचार से उसकी चारपाई घर के बाहर करदी, अब उस नगर से देवगीर (देवगिरि) की ओर प्रस्थान हो रहा है, अब वह स्थान पुनः कभी नही प्राप्त हो सकता। उस वृद्ध ने निराश होकर एक ठडी श्वास ली और मृत्यु को प्राप्त हो गया तथा उन भूतो से अपने धर्म की रक्षा करली। चारो ओर कोलाहल मच गया। सभी स्त्री तथा पुरुष अपना मुह और बाल नोचने लगे। (४४८)

अन्त में उसे दफन कर दिया गया। तीन दिन और रात तक लोग विस्मित रहे। तीसरे दिन लोगो ने उस स्थान से प्रस्थान किया। सभी वृद्ध, युवक, स्त्री तथा बालक यात्रा करने के लिये विवश थे। बहुत से कोमल, मृत्यु को प्राप्त हो गये। बहुत से बालक दूध बिना मर गये। अनकों लोगो ने प्यास के कारण प्राण त्याग दिये। ऐसे सुकुमार व्यक्ति, जिन्हें स्वप्न में भी सूर्य की उष्णता का अनुभव न हुआ था, फटे पुराने वस्त्र लपेटे गिरते पडते चले जाते थे। कोई नगे पैर ही चला जाता था। जिन मुखों पर चन्दन के अतिरिक्त कुछ न लगता था, वे धूल से ढके हुये थे। जो आँखे उपवनो के अतिरिक्त कुछ न देखती थी, उनमें धूलि का अजन लगा रहता था। जो चरण वाटिकाओ के अतिरिक्त कहीं न जाते थे, उनमें जगलो तथा व्याबानों में चलने के कारण छाले पड गये थे। उस काफिले में से अत्यधिक कठिनाई सहन करके केवल दसवाँ भाग ही दौलताबाद पहुच सका।

सुल्तान ने अत्याचार से उस काफिले को छ: भागो में विभाजित कर दिया था। किसी के पास कोई सामान न था। प्रत्येक क़ाफिला शहर से उसके क्रोध तथा अत्याचार के कारण, न कि न्याय तथा उपकार के कारण, चल दिया। (४४९) उसने ऐसा बसा हुआ नगर नष्ट कर डाला। पता नही वह ईश्वर को क्या उत्तर देगा। जब उस नगर में कोई न रह गया तो समस्त द्वार बन्द कर दिये गये। सब घर भूतो के निवास-स्थान बन गये। उसी समय घरो में आग लगा दी गई। नगर इस प्रकार रिक्त हो गया था कि द्वार तथा दीवारें विलाप करने लगी थी। सुना जाता है कि कुछ समय उपरान्त नीच तथा अत्याचारी बादशाह ने कस्बों के परगनो से ग्रामीणो को बुलवा कर नगर को बसवाया। तोतो तथा बुलबुलों को उद्यान से निकाल कर कौओ को बसा दिया। न जाने शाह को किस प्रकार उन निर्दोषों लोगो के प्रति सदेह उत्पन्न हो गया कि उसने उनके पूर्वजो की नीव उखाड डाली और अभी तक उनकी सतानो के विनाश में तल्लीन है। उसे किसी बालक अथवा वृद्ध पर दया न आई। न तो कोई धनी ही सुरक्षित था और न कोई दीन ही। उसके कोई सतान न थी, अत उसने अपने समान सभी को कर देना चाहा। जुहाक[1] ने बडा अत्याचार किया किन्तु कोई भी उसे अत्याचारी के अतिरिक्त कुछ नही कहता था। यदि वह दुष्ट इस समय होता तो सभी नगर-वासी उसे आशीर्वाद देते। सुना जाता है कि सर्पों से अपनी रक्षा के लिये वह नगर-वासियो तथा सैनिको में से प्रति दिन दो मनुष्यो का रक्तपात किया करता था। दोनो का मस्तिष्क सर्पों को दिया जाता था जिससे वे सोते रहें और उसे कोई कष्ट न पहुचायें। जुहाक अधर्मी तथा शैतान का उपासक था। (४५०)

बडे आश्चर्य की बात है कि हमारा समकालीन सुल्तान न तो शैतान के वश में है,

---

[1] शाहनामे के अनुसार ईरान का एक बादशाह जिसके दोनों कधों पर शैतान के चूमने के कारण दो सर्प निकल आये थे और वे नित्य दो मनुष्यों का मस्तिष्क खाते थे।

और न किसी ने उसके कन्धों का चुम्बन किया और न किसी ने उससे यह कहा कि उसका उपचार मनुष्यों के मस्तिष्क के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु से हो ही नहीं सकता, और न वह जुहाक के धर्म का अनुयायी ही है। फिर भी उसने इस समय इतने अत्याचार किये जितने जुहाक ने एक हज़ार वर्ष में किये होंगे। यदि वह दुष्ट शैतान की शिक्षानुसार दो मनुष्यों की हत्या कराता था, तो हमारा बादशाह प्रकारण ही हज़ारों मनुष्यों की हत्या कराया करता है। यदि उसने बाबुल की प्रजा का रक्तपात किया तो उसी कारण से संसार का आधार समाप्त हो गया। यदि देहली वाले उसके आदेशों का पालन न करते तो वे इतने कष्ट में न पड़ते। ऐसे लोगों को इसी प्रकार का फल भोगना पड़ता है। जो कोई अत्याचारी पर दया करता है तो वही उसका सिर मिट्टी में मिला देता है। लोगों ने एक उपद्रवी को अपना बादशाह बना लिया और उस समय से युद्ध न किया। यदि कोई सरदार उस उपद्रवी के विरुद्ध किसी प्रदेश में अपनी पताका उठाता है तो बहुत से अयोग्य उस उपद्रवी (सुल्तान) की सहायता करने लगते हैं और उस व्यक्ति का साथ नहीं देते। यह दुष्ट अत्याचारी (सुल्तान) ससार भर में अकाल, तथा अत्याचार उत्पन्न कर रहा है। यदि इस देश के सब लोग संघठित हो जायें और उस पर आक्रमण कर दें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं कि उसका सिर मिट्टी में मिल जाय। ऐसी राजधानी को, जिसमें फ़रिश्ते अपने पंखों से झाड़ू देते थे, जिसकी मरम्मत प्रत्येक बादशाह ने कराई, जिसकी मस्जिद काबे के समान थी जिसके हौज़े शम्सी को सूर्य से जल प्राप्त होता था जिसमें १६० वर्षों के भवन थे, जिसकी चारों फ़स्लें बड़ी ही अनुकूल थीं, जिसके चारों ओर उद्यान, उपवन तथा वाटिकायें थीं, जहाँ प्रत्येक वस्तु प्राप्य थी, बादशाह ने छोटे बड़े से रिक्त कर दिया। (४५१-५२) वही नगर देवगीर (भूतों का स्थान) हो गया। फिर लोग क्यों देवगीर (देवगिरि) गये ? एक मास तक वहाँ के द्वार बन्द रहे और उस नगर में कुत्तों के अतिरिक्त कोई न रह गया था। सुल्तान ने फिर आदेश दिया कि ग्रामीणों को लाकर उस नगर में बसाया जाय और कौओं को बुलबुल का स्थान प्रदान किया जाय।

देहली के नष्ट होने का पहला कारण—

सुना जाता है कि १०० वर्ष उपरान्त प्रत्येक वस्तु में परिवर्तन हो जाता है, पुरानी बातों के स्थान पर नई बातें प्रारम्भ हो जाती हैं। (४५३) शम्सुद्दीन के बसाये हुये देहली को १०० वर्ष व्यतीत हो चुके थे और उसके भवनों को पूर्ण उन्नति प्राप्त हो चुकी थी अतः उसके विनाश का पहला कारण यही थी।

दूसरा कारण—

दूसरा कारण यह था कि प्रत्येक गली में बिदअती[1] पैदा हो गये थे। उनके अशुभ अस्तित्व के कारण सौभाग्य का अन्त हो गया। लोगों ने प्राचीन नियम त्याग कर प्रत्येक स्थान पर नये नियम बना लिये, नये प्रकार के वस्त्र धारण करने प्रारम्भ कर दिये और गेहूँ दिखा कर जौ बेचने लगे। दिखाने को तो वे आदर सम्मान करते थे किन्तु हृदय में वे शत्रुता रखते थे। अनेकों हृदय उनके व्यंग से दुःखी रहते और प्रत्येक व्यक्ति परिहास में २०० कुफ्र की बातें कह डालता था। वे लोगों के हृदय को कष्ट पहुँचाया करते थे। (४५४) नमाज की चटाई तथा तस्बीह (माला) छोड़ कर उन लोगों ने (मदिरा की) सुराही तथा प्याला उठा लिया था। वे ऐसे-ऐसे कार्य करते थे कि कोई बुद्धिमान उनका नाम भी न ले सकता था। उनकी संख्या अधिक तथा उनके कुकर्मों के असीम हो जाने के कारण देहली की नींव

१ धर्म (इस्लाम) में नई-नई बातें निकालने वाले।

में विघ्न पड़ा गया। ईश्वर ने उन पर एक अत्याचारी नियुक्त कर दिया जिसने उनका समूल उच्छेदन कर दिया। उन्हें उनके देश से निकलवा दिया। उन पापियो के कारण अनक स्वर्ग के पात्रों को भी कष्ट उठाने पड़े। ईश्वर अपने भक्तों को अपनी कृपा की गली के अतिरिक्त कोई अन्य स्थान न दे। (४५५)

तीसरा कारण (शेख निज़ामुद्दीन)—

यद्यपि प्रत्येक देश में एक अमीर बादशाह होता है, किन्तु वह किसी फकीर (सत) की शरण में होता है। यदि अमीर राज्य के अधिकारी होते हैं तो फकीर (सत) राज्य के कष्टों का निवारण करता है। निज़ामुल हक ऐसे ही पीर (सन्त) थे जिनके द्वार पर प्रत्येक उपस्थित रहने में गर्व किया करता था। सर्व प्रथम उनका निधन हुआ[1] तत्पश्चात् उस नगर तथा राज्य का विनाश हुआ। (४५६)

देवगीर (देवगिरि) का आबाद होना; शेख बुरहानुद्दीन का उल्लेख—

ससार का यह नियम है कि यदि वह किसी को हानि पहुँचाता है तो दूसरे को लाभ। (४५७) इस प्रकार जब देहली नष्ट हो गई तो वहाँ के निवासियो के केवल दसवें भाग के पहुँचने से देवगीर (देवगिरि) को सुषमा प्राप्त हो गई। उसका नया नाम दौलताबाद रखा गया। हिन्दुस्तान के भिन्न-भिन्न भागो से नाना प्रकार के लोगों ने पहुँच कर यहाँ निवास प्रारम्भ कर दिया। वहाँ एक बहुत बड़े सूफी बुरहानुद्दीन निवास करते थे। उनके आशीर्वाद से दौलताबाद को विशेष शोभा प्राप्त हो गई। (४५८) उनके कारण किसी क पाप तथा कुकर्म का नगर पर कोई प्रभाव न होता था किन्तु उनके निधन के पश्चात् आकाश न पुन अत्याचार प्रारम्भ कर दिया। अत्याचार के कारण चारों ओर कोलाहल रहन लगा, और पूरा दौलताबाद, दवगीर (भूतो का निवास स्थान) हो गया। सभी से अत्याचार द्वारा धन प्राप्त किया जाने लगा और पूरे राज्य में कोलाहल प्रारम्भ हो गया। सभी को दड दिया जाने लगा। अवानो ने प्रत्येक दिशा में धावा मार कर अनेकों घरों का समूल उच्छेदन कर दिया। धनी लोग बन्दी बनाये जाने लगे। लोग भीख माँगने लगे।

चाँदी, ताँबे, लोहे तथा चमड़े का उल्लेख—

सुना जाता है कि जब तुच्छ लोगों को आश्रय देने वाले सुल्तान को गुप्तचरो द्वारा यह ज्ञात हुआ कि प्रत्येक दिशा क नगर पुन सम्पन्न हो गये ता उसन अपने हृदय में सोचा कि यह सुखी लोग धन के कारण नष्ट नही होते, (४५९) इन्हें धन की सहायता प्राप्त होती है अत इस आश्रय का अन्त हा जाना चाहिये। जब सभी धनी दरिद्र हो जायंगे, तो कोई किसी की सहायता न कर सकेगा। विनाशी स्वभाव वाले सुल्तान न खज़ान वालो को आदेश दिया कि चादी सोन के स्थान पर सराय वालों (बाजारियो) को लोह तथा चम[2] के दिरम दिये जायँ। नये सिक्के ढाले जाय और लोह तथा ताम्र पर छाप लगाई जाय और उन पर शाह का नाम अकित किया जाय। जब सुल्तान ने इस प्रकार की मुद्राय ढलवाइ तो नगरो में एक उपद्रव उठ खड़ा हुआ। कोई खुल्लम खुल्ला किसी प्रकार से चिल्ला न सकता था। उस दुष्ट के भय स सभी लोग स्वर्ण के मूल्य पर ताम्र मोल लेते थे। प्रत्येक घर ताँबे के बर्तनो

१ शेख निज़ामुद्दीन औलिया अपने समय के बड़े प्रतिष्ठित सूफी थे। (बरनी पृ० ३४३ ३४६, खलजी कालीन भारत पृ० १०१ १०३) उनका निधन देहली में १३२५ ई० में हुआ।

२ लोह तथा चर्म का किसी स्थान पर उल्लेख नहीं। इसामी ने जो कुछ लिखा है उससे उसका सुल्तान पर क्रोध पूर्णतया स्पष्ट होता है। उसकी कृति द्वारा उन लोगों के दृष्टिकोण का पूरा पता चलता है जो उससे असन्तुष्ट थे अथवा जिन्हें उससे किसी प्रकार की हानि पहुँची थी।

तथा प्रत्येक स्थान लोहे से रिक्त हो गई। प्रत्येक स्थान पर जूते थाल तथा कुल्हाड़ी सोने चाँदी के बराबर हो गये। लोग प्राणों के भय से लोहे के बदले में मोती बेचते थे। इस मुद्रा द्वारा तीन वर्ष में जहाँ कहीं भी धन था, वह नष्ट हो गया। एक दिन उस धन के पुजारी ने आदेश दिया कि कोई भी ताम्र मुद्रा न ले। उन मुद्राओं के २०० तन्के कोई आधे दाँग को भी मोल न लेता था। (४६०) प्रत्येक धनी निर्धन हो गया। राज्य में इस प्रकार का घोर अत्याचार हुआ।

शेख़ ज़ैनुद्दीन का उल्लेख—

बादशाह के अत्याचार से हिन्दुस्तान के उद्यान में पतझड़ आ गया। लोगों के दुर्भाग्य से चारों ओर घोर अकाल पड़ गया। मनुष्य, मनुष्य का भक्षण करने लगा। किसी स्थान पर धन अथवा अनाज का पता न था। जो कोई सुल्तान के अत्याचार से बच गया वह अकाल तथा दरिद्रता के कारण नष्ट हो गया। देवगीर (देवगिरि) में विशेष रूप से कोई ऐसा धर्मात्मा न रह गया कि जिसकी शरण में दीन तथा दुखी जा सकते। अन्त में एक व्यक्ति प्रकट हुआ। उसकी उपाधि ज़ैनुद्दीन थी। (४६१) उसके आशीर्वाद से देवगीर (देवगिरि) वालों को सुख प्राप्त हुआ। कुतलुग़ ख़ाँ उसी की शरण में गया। उस ने उस फकीर (सन्त) की शरण में जाकर इस प्रदेश को सुल्तान के अत्याचार से मुक्त कर दिया। यदि कोई अत्याचारी शाह के आदेशानुसार राजधानी से यहाँ आता तो उसे सफलता न प्राप्त होती और वह व्याकुल होकर लौट जाता। लोगों ने देहली त्याग कर यहाँ निवास प्रारम्भ कर दिया था। देहली में देहली के नाम के अतिरिक्त कुछ शेष न रह गया था। इस प्रकार कुशलता-पूर्वक १४ वर्ष व्यतीत हो गये और यहाँ से सौभाग्य एक यव मात्र भी कम न हुआ। मरहठा राज्य में जगलों तथा पर्वतों में नगर एव ग्राम बस गये। (४६२)

तुर्माशीरीन[1] का हिन्दुस्तान पर आक्रमण तथा उसकी पराजय—

एक दिन एक सदेश-वाहक ने सुल्तान से आकर निवेदन किया कि मुग़ल सेना ने रावी पार करली है। उसने सिन्ध की सीमा पर बड़ा उत्पात किया है और अब हिन्दुस्तान की ओर बढ़ रही है। जब सुल्तान को यह ज्ञात हुआ कि दुष्ट मुल्तान की सीमा को पार कर चुके हैं तो वह भी युद्ध के लिये कटिबद्ध हो गया। प्रत्येक दिशा में सदेश वाहक भेज कर उसने सेनायें बुलवाई। सेना के अर्ज़ (निरीक्षण) के समय राजधानी में जो सेना चारों ओर से आकर एकत्र हुई थी, उसकी सख्या ५००,००० निकली। सेना के शिविर सीरी से जूद (उद्यान) तक लगे। प्रत्येक दिन उसकी सेना बढ़ती जाती थी। दूसरे दिन एक सदेश-वाहक ने आकर कहा कि "तीन दिन हुये, कि मुग़ल मेरठ पहुँच कर उत्पात मचा रहे हैं, समस्त प्रजा किले में घुस गई है और वह स्थान नष्ट हो रहा है। एक सेना समुद्र के समान बड़े वेग से बढ़ती जा रही है। तुर्माशीरीन उस सेना का सेना नायक है।"

सुल्तान ने यह सुन कर बुग़रा के पुत्र (यूसुफ) को आदेश दिया कि "१०,००० सवारों की सेना मेरठ की ओर ले जाकर मुग़लों पर टूट पड़ो। (४६३) यदि उस सेना पर आक्रमण

१ रामपुर की तारीखे फीरोजशाही की हस्तलिखित पोथी में तुर्माशीरीन के आक्रमण का उल्लेख इस प्रकार है "शहर (देहली) वालों को दौलताबाद रवाना करने के पश्चात् सुल्तान दो वर्ष वहाँ रहा। उन दिनों तुर्माशीरीन ने अत्यधिक सेना लेकर हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की और दोआब तक पहुँच गया। सुल्तान मुहम्मद ने अपनी समस्त सेना एकत्र की। इसी समय लखनौती के अमीरों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग जाना चाहा और अपने प्रदेश में पुन पहुँच कर विद्रोह करना चाहा। सुल्तान मुहम्मद का तुर्माशीरीन से बहुत बड़ा युद्ध हुआ। तुर्माशीरीन ने घोर प्रयत्न तथा युद्ध किया और अपनी सेना के साथ लौट गया। (तारीख़े फीरोजशाही रामपुर पोथी पृ० २८७-८८)

करना सम्भव न हो तो तू सेना लेकर किले में घुस जाना। कोई सुरक्षित स्थान देख कर उनकी घात में बैठे रहना। यदि उनकी सेना पहले ही चल पड़े तो उनके विनाश के लिए सेना लेकर प्रस्थान करना। उस ओर से तू चल और इस ओर से मैं चलूँ। इस प्रकार उन्हे बीच में घेर लिया जाय और उन पर आक्रमण करके उनकी सेना का विनाश कर दिया जाय।"

बुगरा के पुत्र (यूसुफ) ने शाह के आदेशानुसार मेरठ पहुँच कर शिविर लगा दिए। एक दिन तुर्माशीरीन ने ५०० सवारों को आक्रमण के लिए भेजा। यूसुफ (बुगरा के पुत्र) ने सेना की सख्या कम पाकर उन पर आक्रमण कर दिया। वे सख्या की कमी के कारण भाग गये। तुर्मा की बहिन का एक पुत्र दस सवारों के साथ मदिरा-पान कर रहा था। उसके दाहिने तथा बाईं ओर से सेना निकल गई और उसे कोई सूचना न हुई। हिन्दुस्तान की एक सेना ने वहाँ पहुँच कर उसे तथा उसके साथियों को बन्दी बना लिया। उसे क़िले की ओर भेज दिया। वहाँ से शूरवीर आगे बढे। मुगलो ने अपने विरुद्ध सेना को आते देख कर उनसे युद्ध प्रारम्भ कर दिया। (४६४)

हिन्दी[1] (तुर्मा) के सवार भाग खड़े हुये। यूसुफ ने सुल्तान के पास मुगलो के हिन्दुस्तान से भागने के समाचार भेज दिये। जो लोग बन्दी बनाये गये थे, उन्हे भी उसने भेज दिया। तुर्मा की बहिन के पुत्र के हाथ पैर बाँध कर उसे सौ वीरों के साथ भेजा गया। जब शाह को उनके भागने की सूचना प्राप्त हुई तो वह भी आगे बढा। थानेश्वर पहुच कर उसने उस स्थान से बहुत से सैनिक उन लोगों के पीछे भेजे। शाही सेना न सिन्धु नदी तक उनका पीछा करके घोर रक्तपात किया। सेना के वापस लौट आने के उपरान्त सुल्तान ने थानेश्वर से राजधानी की ओर प्रस्थान किया। (४६५)

कछवाहा की पराजय—

उस समय एक हिन्दू था जो कछवाहा कोतल कहलाता था। उसने विद्रोह कर दिया। सुना जाता है कि सुल्तान ने लौटने के पश्चात् उस पर आक्रमण किया।[2] मुईनुद्दीन[3] सिजज़ी की क़ब्र के, जो अजमेर में है, दर्शन करके वह राजधानी को लौट गया। वहाँ पहुँच कर लोगों ने कुछ समय तक विश्राम किया।

लोगों के विनाश के उद्देश्य से क़राचल पर्वत में सुल्तान मुहम्मद शाह इब्ने तुग़लुक़ शाह का सेना भेजना—

एक दिन सुल्तान प्रातःकाल एक वाटिका की सैर करने गया। वहाँ से लौटते समय वह बाज़ार में से गुज़रा। वहाँ उसे बडी चहल पहल मिली। लोग क्रय विक्रय में व्यस्त थे। उसने अपने हृदय में कहा कि यह नगर अब भी आबाद है। इन लोगो का किसी उपाय से विनाश कराना चाहिये। वह राजधानी पहुंचा। दूसरे दिन उसने आदेश दिया कि तिलपट में बारगाह (दरबार) सजाई जाय। सेना ने बाहर शिविर लगाये। (४६६)

उसने अपने भागिनेय खुसरो मलिक को आदेश दिया कि वह देहली से क़राचल पर्वत की ओर प्रस्थान करे, वह सेना को उन गुफाओं की ओर ले जाय जो सर्वदा काँटों से भरी

१ इस स्थान पर तुर्माशीरीन होना चाहिये।
२ इस युद्ध से सम्बन्धित छन्दों का कोई पता नहीं।
३ भारतवर्ष में चिश्ती सिलसिले के चलाने वाले। इनकी क़ब्र अजमेर में है। इनकी मृत्यु १२३५ ई० में हुई।

रहती थी। वहां ले जाकर वह सेना को नष्ट करा दे जिस से प्रजा की सख्या में कमी हो जाय। सुना जाता है कि सुल्तान ने उसके साथ एक लाख सवार भेजे।

पर्वत के नीचे एक नदी थी जिसके चारो ओर काटे ही काटे थे। हिन्दुस्तान के बुद्धिमानों ने उसमे एक बडी ही विचित्र कारीगरी रखी थी। उसके झरने के मुह पर एक विचित्र प्रकार की कुजी थी। वहां बहुत से लोग रात दिन नियुक्त रहते थे। जब तक वह कुजी बन्द रहती वहां मैदान रहता और जब वह खोल दी जाती तो वहां नदी हो जाती थी। जब सेना उस नदी को पार करके गुफाओ तथा पर्वत में पहुंची तो हिन्दुओ ने सेना को पर्वत में प्रविष्ट हो जाने दिया। जब सेना पर्वत तथा गुफाओं मे पहुच गई तो हिन्दू उस पर्वत से उबल पडे और उन्होने (शाही) सेना का मार्ग रोक दिया। सुना जाता है कि एक लाख सैनिको मे केवल ५, ६ हजार लौट सके। (४६७)

जब वे लोग सुल्तान के पास पहुँचे तो उसने क्रोध करते हुये कहा कि "तुम लोग जीवित लौट कर क्यो आये ? तुमने भी गुफाओ में अपने प्राण क्या न त्याग दिये ? तुमने अपने साथियो को खतरे में डाल दिया।" सुल्तान ने इस अपराध पर उनके सिर भी कटवा डाले।

तत्पश्चात् उसने मनुष्य का शिकार करने वाले अपने जवानो को प्रजा की हत्या करने के लिये भेजा। उसने आदेश दिया कि धनी लोगों से धन प्राप्त किया जाय, जहां कही कोई सरदार मिले उसका सिर काट लिया जाय, जहाँ कही कोई धनी मिले उसे दरिद्र बना दिया जाय।' प्रत्येक स्थान पर विद्रोही बन्दी बनाये जाने लगे, और लोगों के घरो में आग लगाई जाने लगी। (४६८)

माबर मे सैयिद जलाल का विद्रोह तथा सुल्तान का तिलग की ओर प्रस्थान—

माबर में एक सैयिद जलाल कोतवाल था। उसने देहली के बादशाह से विद्रोह कर के, बादशाहों के समान चत्र धारण कर लिया। जब सुल्तान को पता चला तो वह एक बहुत बडा सेना लेकर दक्षिण की ओर तेजी से चल खडा हुआ। दक्षिण पहुँच कर दो एक मास तक वह दौलताबाद में रहा। वहाँ से उसने तिलग पर चढाई की। वहां पहुँच कर वह दो एक मास तक माबर विजय की तैयारियां करता रहा। सुना जाता है कि उसके अशुभ चरणों के पहुँचते ही वहां गरम (विषैली) वायु चलन लगी। इसके कारण प्रजा की बहुत बडी सख्या मे मृत्यु हो गई। प्रत्येक घर में बहुत से मनुष्य मर गये। बादशाह इस दुर्घटना से विस्मित हो गया। वह स्वय रुग्ण हो गया। देहली की सेना के आधे सरदार भी मर गये। सुल्तान उस नगर से वापस हुआ क्योंकि उस वायु के कारण वह भी अन्तिम समय को प्राप्त हो रहा था। उसने एक पालकी में वहाँ से प्रस्थान किया। मार्ग में एक दूत ने पहुँच कर निवदन किया कि 'कुतलुग खां ने गुप्त रूप मे यह सूचना भेजी है कि एक मास हुआ कि हुशग (होशगे) शाह ने विद्रोह कर दिया है।" (४६९)

वह[१] भाग कर बदमरा (बरहरा) पर्वत पहुँचा। जब सेना हवाली पहुँची तो शहशाह न उसे बाईं ओर कर लिया। वह किला हिन्दुओं के छिपने का स्थान था। सेना वहाँ उतरी और बादशाह ने चारो ओर धावे मारने के लिये सेना भेजी। जब हुशग को यह पता चला तो वह कोकन की ओर भाग गया। सुल्तान ने कुतलुग खाँ को उसके पास इस आशय स भेजा कि वह सुल्तान की ओर मे उसे रक्षा का आश्वासन दिलाये। सुल्तान के आदेशानुसार

१ इस युद्ध से सम्बन्धित छन्द किसी भी हस्तलिखित पोथी म नहीं मिलते।

यहाँ दो तीन दिन रुक कर कुतलुग खाँ ने अलप खाँ को देवगीर (देवगिरि) भेज दिया और स्वयं सेना लेकर सुनारी के कूश्क (महल) से चल दिया। नुसरत खाँ ने अपनी सेना को एक वर्ष की धन-सम्पत्ति प्रदान कर दी थी, और आसपास के स्थानों का विनाश कर रहा था। उसने मलिक शेख को गुलबर्गे की ओर भेज दिया था। शाही सेना के पहुँचने पर उसने उसे बुलवाया और एक गोष्ठी आयोजित की। (४७७) उसने खुर्रम से कहा कि वह सरदार बनें, बिदर में सेना लेकर दो फरसंग आगे प्रस्थान करे, वहाँ एक कटघर (कठगढ)[१] लकड़ी तथा काँटों से बनवाये, देवगीर (देवगिरि) की सेना के उस स्थान पर पहुँचने के उपरान्त वह उनसे युद्ध करे।

क़ुतलुग़ ख़ाँ तथा नुसरत ख़ाँ का युद्ध, क़ुतलुग़ ख़ाँ की विजय—

जब (शाही) सेना कटघर के निकट पहुची तो खुर्रम की सेना भी मैदान में उतरी। दोनों ओर की सेनायें मैदान में डट गईं। मलिक शेख सेना के मध्य में था। खुर्रम सेना के अग्रिम भाग में था। वृद्ध हमीदुद्दीन दाहिनी ओर तथा अनुभवी मसऊद आरिज बाईं ओर युद्ध के लिये तैयार थे। (४७८) इधर से (शाही सेना की ओर से) खान मध्य में था। अली शाह नत्थू अग्रिम भाग में था। अहमद लाची तथा कलाता दाहिनी ओर एवं सादे मुल्क बाईं ओर थे। धार के सरदारों की एक सेना, मलिक आलम खान के मध्य भाग की सेना से आकर मिल गई। अन्य सरदार अर्थात् बीरम कुरा, नवा, अलमास, फतहुल्लाह हुशंग, खड्डे राय, खान के साथ दायें बायें थे। एक ही प्रदेश की सेनाओं में युद्ध होने लगा। दोनों ओर की सेनाओं में एक ही स्थान के निवासी सम्मिलित थे। एक ओर पिता तो दूसरी ओर पुत्र था। चारों ओर से सेना के वेग के कारण मलिक शेख की मध्य भाग की सेना पराजित हो गई। मलिक शेख तथा खुर्रम कटघर में घुस गये। कुछ समय तक बाणों से युद्ध होता रहा। अली शाह नत्थू जो खान के सम्मुख था विद्रोहियों के कटघर पर टूट पड़ा। शत्रुओं के रक्त की नदी बह निकली। (४७९) सादे मुल्क भी उसकी सहायता को पहुँच गया। जब समस्त (शाही) सेना कटघर पर टूट पड़ी तो मलिक शेख बिदर की ओर भाग गया। खुर्रम कटघर में जीवित बन्दी बना लिया गया। सेना ने लूटमार प्रारम्भ कर दी। खान ने लूटमार के उपरान्त रात्रि में रणक्षेत्र ही में शिविर लगाये। खुर्रम को बन्दी बना कर सुल्तान के पास भिजवा दिया। दूसरे दिन सेना ने बिदर की ओर प्रस्थान किया। (४८०)

नुसरत ख़ाँ का बिदर के किले से निकलना तथा क्षमा याचना करना—

सेना के बिदर पहुचने पर बिदर का समस्त लश्कर किले में घुस गया। दो तीन दिन तक खान ने किला घेरने में देर की। उसने दूसरे दिन नुसरत खाँ के पास अंगूर तथा पान भेज कर उसे गुप्त रूप से संदेश भेजा कि "तू मार्ग-भ्रष्ट हो गया है। अब तू शीघ्र नीचे उतर आ क्योंकि मेरा तुझ से युद्ध करना उचित नहीं। तू मुझे सुल्तान के सम्मुख जमानत में प्रस्तुत करदे। तेरा शाही तलवार से बचना सम्भव नहीं। यदि तुझे अपना घरबार प्रिय है तो चला आ। जब खान ने यह बात सुनी तो उसे सन्धि के अतिरिक्त कोई उपाय समझ में न आया। रात्रि में वह किले से निकल कर पवित्र स्थान से मिल गया। किले में कोलाहल मच गया और किले के द्वार बल-पूर्वक खुलवा लिये गये। भीतर वाले बाहर भाग गये और बाहर वाले भीतर घुस गये। लूट मार प्रारम्भ हो गई। दूसरे दिन खान ने विद्रोहियों के साथियों तथा सम्बन्धियों को बन्दी बना कर सुल्तान के पास भेज दिया। (४८१)

---

१ कठघर अथवा कठगढ लकड़ी का किला। रक्षा के लिये इस प्रकार का क़िला लकड़ी तथा काँटों आदि से तैयार किया जाता था। दक्षिण के युद्ध में इसका विशेष उल्लेख है।

कुतलुग ख़ाँ का बिदर से कोटगीर की ओर प्रस्थान—

(कुतलुग) ख़ान ने अलमास को बिदर में राज्य करने के लिए छोड़ दिया। वहाँ से उसने अली शाह को युद्ध करने के लिए कुएर भेजा और स्वयं सेना लेकर कोटगीर पर चढ़ाई की। विद्रोही मुगला किले की दृढ़ता पर विश्वास करके उसमें घुस गया था। पर्वत पर वह किला ईंटों तथा पत्थरों से बना था और वहाँ युद्ध करना सम्भव न था। ख़ान ने वहाँ पहुँच कर किला घेर लिया और प्रत्येक दिशा में आक्रमणकारी नियुक्त कर दिये और मंजनीकें तथा साबात लगा दिए। पर्वत के तोड़ने के लिए गरगच लगाये गये। दूसरी ओर गुप्त रूप से सुरंग लगाई गई। छ मास तक सेना किले को घेरे रही और दो तीन स्थान पर पर्वत तोड़ डाला और युद्ध के लिए मार्ग बना लिया। अग्नि पूजक मुगला, जो हिन्दुओं में विजयी रहता था, सेना से युद्ध करता रहा। (४८२) जब उसने प्रत्येक दिशा से किले को नष्ट होते देखा तथा अनाज की कमी पाई तो उसने ख़ान के पास दूत भेज कर उससे क्षमा याचना करनी चाही। इसी वार्ता में दो तीन दिन व्यतीत हो गये। एक अँधेरी रात्रि में सेना को असावधान पाकर वह अपनी स्त्री तथा बालकों को लेकर अँधेरे में किले से निकल गया। सेना में कोलाहल मच गया। इसी कोलाहल में वह एक ओर भाग गया। कुछ लोगों ने उसका पीछा किया किन्तु उसके सीमा को पार कर लेने के कारण वे लोग लौट आये। उस रात्रि में उसकी एक पुत्री बन्दी बना ली गई और कोटगीर का किला विजित हो गया।

अली शाह नत्थू ज़फ़रख़ानी का विद्रोह—

जिस दिन बिदर से देवगीर (देवगिरि) की सेना ने कोटगीर की ओर प्रस्थान किया था, तो ख़ान ने अली शाह को कोएर पर आक्रमण करने के लिये भेजा था। (४८३) अली शाह प्रस्थान करके कुछ दिन उपरान्त कोएर पहुँच गया और उसने शिविर लगा दिये। चारों ओर लूटमार करने लगा। एक दिन तिलंग के कुछ दुष्टों ने उस पर एक सकीर्ण स्थान पर रात्रि में छापा मारा। अली शाह ने तुरन्त हिन्दुओं की सेना पर आक्रमण किया। दूसरी ओर से अहमद शाह ने विद्रोहियों की सेना के विरुद्ध पहुँच कर नारा लगाया। उसके भाई मलिक इख़्तियार तथा मुहम्मद शाह भी हिन्दुओं पर आक्रमण करते रहे और उन्होंने हिन्दुओं की समस्त सेना को छिन्न भिन्न कर दिया। बहुत से लोग बन्दी बना लिये गये। अली शाह को ज्ञात हुआ कि इस उपद्रव का कारण चोब देव था। उसने आदेश दिया कि उसकी खाल खींच ली जाय, उसके पुत्र का सिर काट कर उसकी माता के पास भेज दिया जाय। जब कोएर के चारों ओर कोई विद्रोही न रहा तो अली शाह ने वह राज्य तथा नगर सुव्यवस्थित किया। प्रत्येक वर्ष वह ख़लजी वंश का पुरुष, निश्चित कर दीवान में भेजा करता था और सर्वदा ख़ान के आदेशों का पालन किया करता था। सभी लोग उसके व्यवहार से संतुष्ट थे।

इस घटना के एक दो वर्ष उपरान्त अचानक एक उपद्रव उठ खड़ा हुआ। (४८४) भरन नामक एक हिन्दू ने, जिसके अधिकार में गुलबर्गे की अक्ता थी, जब प्रत्येक से कोएर के गुण सुने और वहाँ के कर में अत्यधिक अपहरण देखा तो उसे इस बात की आकांक्षा हुई कि वह स्थान उसके अधिकार में आ जाय। उसने ख़ान के पास एक पत्र, धन सम्पत्ति, घोड़े तथा वस्त्र भेज कर कोएर में तौफ़ीर[१] का सुझाव रक्खा। उसने एक के स्थान पर डेढ़ देना स्वीकार किया। तुच्छ कुत्ता, सिंहों पर गुर्राया। (कुतलुग) ख़ाँ ने अपहरण देख कर वह प्रदेश उस हिन्दू को सौंप दिया। परवाना (आज्ञा-पत्र) प्राप्त करके उस हिन्दू भरन

१ कर में वृद्धि। बरनी ने सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ शाह के कर सम्बन्धी एक आदेश में लिखा है कि मुतसर्रिफ़ों के सुझाव पर कोई ध्यान न दिया जाय। (बरनी पृ० ४२६)

ने जफर खानियों[१] को गुलबर्गे में बुलवाया और उनसे बड़े कठोर शब्द कहे। अली शाह ने अपने भाइयों, अर्थात् अब्दुल्लाह, मुहम्मद शाह, अहमद शाह तथा मलिक इख्तियारुद्दीन, के साथ, जो बड़े शूरवीर थे, गुप्त रूप से एक गोष्ठी की। एक ने कहा कि 'दुष्ट भरना हिन्दू हमें सभा में अपमानित करता है। (४८५) ऐसा ज्ञात होता है कि खान हमारे प्राणों के पीछे पड़ा है अन्यथा एक हिन्दू किस प्रकार मुसलमानों पर राज्य करता।" अली शाह ने कहा "तलवार के धनी एक बात पर सैकड़ों देश जला डालते हैं। यदि वह हिन्दू हम पर अत्याचार करता है तो मैं उससे बदला लेने तथा उसका वध करने के लिये तैयार हूं।" अनुभवी अब्दुल्लाह के अतिरिक्त सभी लोग इसमें सहमत हो गये। उन्होंने निश्चय किया कि सर्व प्रथम भरना से बदला लिया जाय और फिर यदि सम्भव हो तो इस प्रदेश को अत्याचारियों से रिक्त कर दें। अब्दुल्लाह ने कहा "क्रोध में आत्म हत्या न करनी चाहिये। यदि हिन्दू सरदारी के अभिमान में अशिष्टता करता है तो खान के आदेशों का उल्लघन करना उचित नहीं। इस में बहुत सोच समझ कर कार्य करना चाहिये। (४८६) तुम्हारे पास न तो अत्यधिक सेना है और न तुम्हारा कोई पड़ोसी तुम्हारा सहायक है। युद्ध के समय बहुत बड़ी सेना के मुकाबले में छोटी सेना का सफल होना सम्भव नहीं।" अली शाह ने जब यह परामर्श सुना तो उसने कहा कि "एक अनुभवी व्यक्ति को इसी प्रकार कहना चाहिये था किन्तु मेरा हृदय क्रोध के कारण प्रत्येक समय जला भुना करता है और जो कोई भी इस कार्य में मेरा साथ न देगा वह मेरा घोर शत्रु होगा, चाहे वह मेरा सम्बन्धी ही क्यों न हो। मैं उसका रक्त बहा दूंगा। मैं इस कार्य हेतु कटिबद्ध हो गया हूँ। यदि तू मेरा मित्र है तो इस कार्य में हाथ डाल।" यह कह कर उसने अपने मित्रों को बुलवाया और उन्हें यह सब हाल बताया। दूसरे दिन उसने चार सेनाय बनाई। एक सेना का सरदार अहमद शाह को नियुक्त किया। मलिक इख्तियारुद्दीन को कुछ वीरों का सरदार नियुक्त किया। अमीरे अमीरान को एक सेना देकर गुप्त रूप से रवाना किया जिससे वे अपने साथियों को किले से निकाल लायें। अली शाह स्वयं कुछ साथियों को लेकर बिदर के किले पर आक्रमण करने के लिये कटिबद्ध हुआ।

जो लोग गुलबर्गा गये थे उन्होंने उसी रात्रि में सफलता प्राप्त कर ली। एक पहर रात्रि व्यतीत हो जाने पर उन्होंने भरन की हत्या कर दी। गुलबर्गा की सेना में कोलाहल मच गया। सब लोग घोड़ों पर जीन कस कर सवार हो गये और भरन के महल के चारों ओर एकत्र हो गये। (४८७)

मलिक इख्तियार तथा अहमद शाह ने लोगों की भीड़ देख कर कहा कि, "यदि तुम्हारे नगर में हिन्दू की खान के आदेशानुसार हत्या कर दी गई तो तुम्हें इतना कोलाहल न मचाना चाहिए।" तत्पश्चात् उन लोगों ने कुछ सोना (धन) छत पर चढ़ कर लुटा दिया। लोगों ने सोना (धन) लूटना प्रारम्भ कर दिया, और लोग भय के कारण तथा धन के लोभ में शान्त हो गये। इस प्रकार उन लोगों ने गुलबर्गे पर अधिकार जमा लिया।

जो लोग गुप्त रूप से नियुक्त हुए थे वे भी उसी रात्रि में पहुँच गये। उन्होंने अपने साथियों को निकाल लिया और किसी द्वारपाल को सूचना भी न हुई। अली शाह ने महमूद पर अधिकार प्राप्त कर लिया। वह बिदर का शासक था। उसने महमूद को खान का जाली परवाना, जो इसी आशय से तैयार कराया था, दिखाया। इस प्रकार बिदर पर अधिकार प्राप्त कर लिया। समस्त संसार इस बात पर चकित था कि एक ही रात्रि में किस प्रकार दो-तीन किलों पर अधिकार प्राप्त हो गया। (४८८)

१ जफर खाँ के सहायकों।

अली शाह की सगर पर चढ़ाई—

आसपास के लोग उसके सहायक बन गये लोगों को अपना सहायक पाकर उसने सगर पर आक्रमण किया। लाचीन के पुत्र, अहमद शाह तथा उसके कुछ सहायकों ने सगर में सेना एकत्र की और क़िले के बाहर एक कटघर बनाया। एक ओर हौज, दूसरी ओर क़िला और अन्य दिशा में कटघर था। जब अली शाह की सेना दृष्टिगोचर हुई तो प्रत्येक युद्ध के लिए तैयार हो गया। तत्पश्चात् वे कटघर के बाहर निकले। अहमद क़िलाता सेना के मध्य में था। लाचीन का पुत्र बाईं ओर तथा अहमद जिन्द एव गुलगू दाहिनी पंक्ति में थे।

उस ओर अली शाह स्वय मध्य मे था। अहमद शाह बाईं पंक्ति में तथा इख्तियारुद्दीन दाहिनी पंक्ति में थे। (४८९) अली शाह शत्रु की सेना को बढते देख कर सावधान हो गया वीर अहमद शाह ने बाईं पंक्ति से ऐसा आक्रमण किया कि सगर की सेना में अन्धकार छा गया। वह चीत्कार करता हुआ उनके मध्य भाग पर टूट पडा और वाणों की वर्षा प्रारम्भ करदी। एक वाण क़िलाता के लगा और वह व्याकुल होकर अपने कटघर की ओर भागा। सगर की सेना के मध्य भाग के पराजित हो जाने से उनकी सेना छिन्न भिन्न हो गई। वे भाग कर क़िले में घुस गये। प्रत्येक दिशा से अली शाह की सेना पहुँच गई। वे कटघर पर टूट पडे और सेना की समस्त सम्पत्ति लूट ली। सगर पर विजय प्राप्त करके उसने एक पर्वत पर शिविर लगाये। उस दिन से लोग उस पर्वत को कोहे अली शाह (अली शाह का पर्वत) कहने लगे। अली शाह ने वहाँ दस दिन रुक कर चारों ओर सेनायें भेजी।

अली शाह की सगर से वापसी तथा धारुवर में चत्र धारण करना—

एक दिन एक दूत ने पहुँच कर यह सूचना दी कि "अलप खाँ सेना लेकर पहुच गया है। (४९०) वह बीड तक आ गया है।" अली शाह ने यह सुन कर उस पर आक्रमण करन क लिये प्रस्थान किया। एक दो पडाव पार करके अलमिला की ओर चला। वहाँ स ग्रामो तथा परगनों में लूटमार करता हुआ गुलबर्गे का उसने पार कर लिया, और कान गाँव मे शिविर लगाये। वहाँ उसने एक गोष्ठी की। किसी ने कहा रात्रि में छापा मार कर शत्रु पर अधिकार जमा लिया जाय। कुछ लोगो ने कहा इस स्थान से चल कर उन पर अचानक टूट पडना चाहिये। अन्य लोगो न कहा कि बिदर मे सेना ले जाकर वहाँ किले के बाहर कटघर का निर्माण करें और शत्रु के पहुचने पर आक्रमण कर दें। विजय के उपरान्त दक्षिण तथा देहली सभी पर हमारा अधिकार स्थापित हो जायगा। (४९१)

अली शाह ने यह सुन कर कहा, "हमें किसी बात का भय न करना चाहिये और इस प्रकार युद्ध करना चाहिये कि या तो हम प्राण त्याग दें, और या विजय प्राप्त करें। मैंने हिन्दुस्तान क बादशाह के विरुद्ध तलवार उठाई है अत मेरे लिये युद्ध के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नही। मैं अब इस स्थान से आगे बढता हूं। अली शाह ने सफेद चत्र धारण किया। (४९२) उसने प्रत्येक को पदवी वितरण की। मलिक अब्दुल्लाह को खाने खानाँ, मुहम्मद शाह को खाने खालम, मलिक अहमद को जफर खाँ, तथा इख्तियारुद्दीन को फीरोज खाँ की पदवी प्रदान की। उसने अपनी पदवी अलाउद्दीन रक्खी। उसने बिदर के किले की ओर अहमद शाह को भेजा और स्वय धारुवर की ओर सेना लेकर अग्रसर हुआ। धारुवर में उसने एक कटघर बनवाया। उसके एक ओर पर्वत, एक ओर गुफा, एक ओर हौज तथा दूसरी ओर क़िला था। वह कटघर में सेना के आने तथा उसमे युद्ध करने की प्रतीक्षा करता रहा।

सुल्तान को अली शाह के विद्रोह की सूचना प्राप्त होना तथा देहली से सेनायें भेजना—

जब सुल्तान को यह हाल ज्ञात हुआ तो उसने देहली में दो तीन सेनायें नियुक्त कीं। (४६३) नवा, मुख्लिसुलमुल्क, सञर बदख्शानी, कुरा बेरम, तिमुर तनी, जिसकी पदवी जफर थी, को सुल्तान ने आदेश दिया कि वे सेना लेकर देवगीर (देवगिरि) पहुंच जायें और (कुतलुग) खां से कहें कि वह अली शाह पर आक्रमण करे, उस सेना का सरदार अमर खां को बनाये आसपास से सेनायें तथा मलिक आलम आदि जैसे सरदारों को बुलवाये।

कुतलुग खां का अली शाह के विरुद्ध देवगीर से धारुवर तथा बिदर के ऊपर आक्रमण—

खान (कुतलुग) दौलताबाद से चल कर बीड पहुंचा। एक न्याय चाहने वाले ने खान से आकर निवेदन किया कि 'एक सेना घाटी से धारवर पहुंच गई है और परगना की प्रजा को बन्दी बना लिया है। तक्नूर पहुंच कर वहां के लोगों की उसने बुरी तरह हत्या की है।' खान ने यह सुन कर तक्नूर की घाटी को पार करके दूसरे दिन धारवर की ओर प्रस्थान किया। (४६४)

दूसरे दिन वहां पहुंच कर उसने युद्ध की तैयारी करदी। कुतलुग खां सेना के मध्य में था। अलप खां सेना के अग्रिम भाग में नियुक्त हुआ। उसके सामने सर दावतदार खड़ा हुआ। सफा शेख बाबू उसके बीच में नियुक्त हुआ। मलिक आलम दाहिनी पंक्ति में था। भरूची उसके साथ था। नवा, हसन सरआबदार, बाईं पंक्ति में नियुक्त हुये। बुगरा का पुत्र भी उसी ओर था।

उस ओर अनुभवी अली शाह ने सिख बिन (पुत्र) मलिक से कहा कि वह सेना को कुछ भागों में विभाजित करे। वह ५०० सवारों को लेकर एक गुफा में घात लगाये बैठा रहे। वह सर्वदा चत्र की ओर देखता रहे। जब दो एक बार चत्र दृष्टिगोचर हो तथा लुप्त हो जाय तो वह चीत्कार करता हुआ गुफा से निकल कर सेना पर टूट पड़े। उसे सावधान कर दिया कि वह इस चिह्न को न भूले। अब्दुल्लाह को, जो विद्रोह न करना चाहता था उसने सेना के मध्य भाग में रखा। मुहम्मद शाह को दाहिनी पंक्ति में नियुक्त किया। (४६५) इख्तियारुद्दीन बाईं पंक्ति में था। वह वीर स्वयं युद्ध की प्रतीक्षा करता रहा। मन्दिरों पर उसने बुर्ज[1] बनवा दिये थे और उन पर धनुर्धारी नियुक्त कर दिये थे। एक सेना पानी के हौज पर नियुक्त कर दी थी। उसका सरदार नत्थू था। उस वीर ने युद्ध के लिये बड़े विचित्र आयोजन किये किन्तु उसे ईश्वर की सहायता प्राप्त न थी।

जब युद्ध प्रारम्भ हुआ तो खान ने आदेश दिया कि सेना कटघर की ओर प्रस्थान करे। जब खान की सेना धीरे-धीरे विद्रोहियों की सेना के निकट पहुंची तो नवा ने बाईं पंक्ति से घोड़ा आगे बढ़ाया। एक मन्दिर पर चत्र लगाया गया। उस चत्र पर बाणों की वर्षा होने लगी। एक ओर सरआबदार[2] ने पहले ही आक्रमण में हौज पर अधिकार जमा लिया। अली शाह ने जब यह देखा कि चारों ओर से सेना ने युद्ध प्रारम्भ कर दिया है तो उसने उस चत्र को ऊंचा नीचा करने के लिए कहा। (४६६) कोई भी छिपने के स्थान से दृष्टिगोचर न हुआ और उसकी सहायतार्थ न आया। सुना जाता है कि मलिक का पुत्र

१ क़िले आदि की दीवारों का वह ऊपरी भाग जिसमें बैठने के लिये थोड़ा स्थान होता है।
२ जल का मुख्य प्रबन्धक।

इतना भयभीत हो गया था कि वह भाग खड़ा हुआ। अली शाह अपने साथियों की शिथिलता देख कर सेना के मध्य भाग में पहुंचा और कटार निकाल ली। उसके साथ ५० सवार थे। वह सबके पूर्व स्वयं सवार हुआ। उसने अपने मध्य भाग से आक्रमण किया। जो कोई भी सामने था, वह पराजित हुआ। उसने सर दावतदार की पंक्ति पर अधिकार जमा लिया। समस्त (शाही) सेना इस आक्रमण से कम्पित हो उठी। अली शाह ने दो तीन बार इस प्रकार तलवार चलाई कि (शाही) सेना पर अन्धकार छा गया और कोई उसकी ओर दृष्टिपात न कर सका। (कुतलुग) खाँ ने सेना को छिन्न-भिन्न होते देख कर उसे ललकारा। अली शाह ने (कुतलुग) खाँ को अग्रसर होते देख कर अपने घोड़े को उसी ओर बढ़ाया। बड़ा घोर युद्ध होने लगा। बाईं ओर से इख्तियारुद्दीन ने मध्य भाग के अनेक सरदारों की हत्या कर दी। (४६७) दोपहर तक इसी प्रकार युद्ध होता रहा। खान ने नवा को दाहिनी ओर से बाईं ओर भेज दिया। एक पहर तक युद्ध और होता रहा। जब अली शाह का कार्य बिगड़ गया तो वह अपने सहायकों को लेकर दाहिनी ओर से बाहर निकला और उसने कुतरा के पुत्र पर आक्रमण किया। वह शिथिल व्यक्ति उस आक्रमण से पराजित हो गया। उसकी दाहिनी तथा बाईं ओर की पंक्ति भागने लगी। अली शाह को मध्य से मार्ग मिल गया और वह अपने सहायकों को लेकर उस मार्ग से निकल गया। शाही सेना ने कदघर पर विजय प्राप्त करली। उसके चत्र तथा दूरबाश[1] पर भी अधिकार जमा लिया। अब्दुल्लाह भी बन्दी बना लिया गया, मुहम्मद शाह की युद्ध में हत्या हो गई, समस्त सेना तथा सामान नष्ट हो गया।

अली शाह की धारुवर में पराजय तथा बिदर के क़िले में उसका बन्द होना—

अली शाह, कुछ वीर सवार तथा इख्तियारुद्दीन उस सेना द्वारा पराजित होकर बिदर की ओर भागे। (४६८) दो तीन दिन तक कुतलुग की सेना ने उस समर भूमि में विश्राम किया। अब्दुल्लाह की, जिसका कोई अपराध न था, हत्या करदी गई। तिमुर तग्गी को भागने वालों का पीछा करने के लिए भेजा गया। तत्पश्चात् सेना ने बिदर की ओर प्रस्थान किया। एक सप्ताह उपरान्त सेना बिदर पहुँच गई। अली शाह क़िले के बाहर न निकला। उसी दिन क़िले को घेरने के लिए सेना के दस्ते नियुक्त हो गये। प्रत्येक समय रक्तपात होने लगा। दोनों ओर से मन्जनीक़ों का प्रयोग प्रारम्भ हो गया। नित्य बाणों की वर्षा हुआ करती। रात्रि में दोनों ओर से कोलाहल मचा रहता। प्रत्येक दिशा में साबात बाँधे गये। अली शाह ५ मास तक क़िले में बन्द रहा। अन्त में एक बुर्ज को खोद डाला गया। वहाँ प्रातःकाल से सन्ध्या के समय तक युद्ध हुआ करता था। (४६६)

अली शाह द्वारा शरण की याचना करना तथा बिदर की विजय—

अली शाह ने जब क़िले की बुरी दशा में देखा तो उसने खान से शरण की याचना की। खान ने उसे शरण प्रदान करदी। सर्व प्रथम इख्तियारुद्दीन ने बाहर आकर शरण के सम्बन्ध में वार्ता की। दूसरे दिन प्रातःकाल अली शाह ने क़िले के द्वार खुलवा दिये। उसने क़िले के निस्सहाय लोगों की रक्षा के लिए खान के चरणों का चुम्बन करके याचना की। सेना ने क़िले में घुस कर लूट मार प्रारम्भ करदी। वहाँ एक सप्ताह विश्राम करके खान ने अली शाह तथा समस्त धन-सम्पत्ति देहली भिजवा दी और स्वयं बिदर से दौलताबाद लौट आया। (५००)

अलप ख़ाँ बिन (पुत्र) कुतलुग़ ख़ाँ का चांदगढ पर आक्रमण तथा विद्रोहियो को दण्ड—

अली शाह के युद्ध के उपरान्त खान ने अलप ख़ाँ को चादगढ पर आक्रमण करने तथा हिंदुओं को दण्ड देकर प्रत्येक धनी से धन सम्पत्ति प्राप्त कर लेने के लिए भेजा। उसने आदेश दिया कि जो कोई सूचना पाकर भी ख़राज न अदा करे तो उसकी हत्या करदी जाय। सभी उपद्रवकारियो को दड दिया जाय। उसके साथ हुशग, अबू बक्र तथा अब्दुल्लाह को भी सेनायें देकर साथ किया। बहराम अफगान तथा कलगी मुगल भी उसके साथ भेजे गये। खान सेना लेकर एक दो मास तक धावे मारता रहा। उसने अकोला (अकोला) की भी सीमा पार करली। प्रत्येक ने खान के पास दूत तथा अत्यधिक उपहार तथा कर भेजे। कुछ मास उपरान्त खान प्रत्येक उपद्रवकारी से कर प्राप्त करके देवगीर (देवगिरि) वापस हुआ और (कुतलुग़) ख़ाँ के चरण चूमे। दूसरे वर्ष भी उसने सेना लेकर आक्रमण किया और पर्वतो तथा क़िले के सभी निवासियो ने ख़राज अदा कर दिया। (५०?)

सुल्तान का देवगिरि वालो को देहली भेजने के विषय मे कुतलुग़ ख़ाँ को फरमान भेजना—

उस सेना के लौटने पर एक दूत सुल्तान का यह फरमान लाया कि सुल्तान का प्रत्येक हितैषी देहली की ओर प्रस्थान करे। जो कोई भी इस कार्य में शिथिलता करेगा उसका घर बार ख़तरे में पड जायगा। सुल्तान ने वहाँ सरतेज नामक एक बुद्धिमान व्यक्ति को भेजा और उसे आदेश दिया कि वह उस राज्य तथा प्रदेश वालो को दण्ड दे। उसने पवित्र खान को नगर रिक्त कराने का आदेश दिया। उसे सब लोगो को दो तीन काफिलो में विभाजित करने के लिए लिखा गया। दरिद्रो को सहायता देने का भी आदेश दिया गया। अलप ख़ाँ को सेना लेकर सर्व प्रथम प्रस्थान करने का आदेश मिला। दूसरे क़ाफिले को उसके पीछे भेजने का आदेश हुआ। ६ मास उपरान्त खान को सभी खास व आम के साथ आने का आदेश हुआ। तीसरे काफिले के विषय में आदेश दिया गया कि उसमें सर्वसाधारण तथा विशेष व्यक्ति हों। खान को इस कार्य में विशेष प्रयत्न करने का आदेश प्राप्त हुआ। (५०२)

अलप ख़ाँ का देहली की ओर प्रस्थान तथा आलम मलिक का देवगिरि पहुँचना—

खान ने अलप खाँ को समस्त सेना तथा धन के साथ रवाना किया और स्वय दूसरे आदेश की प्रतीक्षा करता रहा। जब इस बात को एक दो वर्ष[१] व्यतीत हो गये और अलप ख़ाँ मुल्तान के चरणों में पहुँच गया तो शाह के आदेशानुमार मलिक आलिम, जो खान का भाई था, वहां पहुचा। भरौंच से सेना लाकर वह दौलताबाद गया। उसने शाह का फरमान उसे पहुँचाया। इस फरमान के पहुचते ही देवगीर (देवगिरि) का भाग्य पलट गया। शाह के आदेशानुमार पूरे शहर को रोता पीटता छोड कर खान राजधानी की ओर चला गया और मलिक आलिम कतगा में रह गया। वह सेना के प्रबन्ध तथा राज्य की सुव्यवस्था का प्रयत्न करता रहा। वह प्रत्येक की परीक्षा लेकर उसकी योग्यतानुसार रोटी (पद) प्रदान करता था। उस परीक्षा से देवगीर (देवगिरि) की सेना वाण के समान सीधी हो गई।

---

१ मास होना चाहिये।

काज़ी जलाल तथा मुबारक जोर बिम्बाल का सुल्तान के अत्याचार के कारण बड़ौदा मे विद्रोह—

इस घटना के दो वर्ष उपरान्त सुल्तान के अत्याचार के कारण गुजरात में विद्रोह हो गया। प्रत्येक दिशा में कोलाहल मच गया। कुछ लोग उसके अन्याचार के कारण उसके विरोधी हो गये। (५०३) जोर बिम्बाल, काज़ी जलाल, जलाल इब्ने (पुन) लाला, जिहलू अफगान ने बडोदा में सघठित होकर विद्रोह कर दिया। जब उन्होने देखा कि दुष्ट मुकबिल सुल्तान के आदेशानुसार बहुत से लोगो की, विशेष कर सद्रो तथा सरदारों की, हत्या करा रहा है तो एक दिन उन चारों ने सघठित होकर यह निश्चय किया कि "एक ससार की उसके अत्याचारों के कारण हत्या हो रही है। सभी योग्य लोगो को कब्र में पहुँचाया जा रहा है। जो कोई किसी अन्य स्थान को भाग जाता है वह बच जाता है। हमें मिलकर उसके अत्याचार से मुक्ति प्राप्त कर लेनी चाहिये। सम्भव है हम राज्य को अत्याचार से बचा लें। हमें शिथिलता से प्राण न देने चाहिये।" चारो लोगो ने दृढ रूप से वचन बद्ध होकर विद्रोह कर दिया। जब अवान उनसे कर प्राप्त करने तथा उन्हे कष्ट देने आये तो उन्होंने, उन लोगो को बन्दी बना लिया। (५०४)

बड़ौदा की सेना का मुक़बिल की सेना पर अचानक आक्रमण तथा मुक़बिल की पराजय—

जब मुकबिल को यह हाल ज्ञात हुआ तो उसने प्रत्येक दिशा से सेना एकत्र की और सरकीज में शिविर लगाये। एक दिन वीर विद्रोहियो ने मुकबिल की सेना पर इस प्रकार आक्रमण किया कि उसकी पताकायें नीची हो गईं। मुकबिल उनके सामने से भाग कर पटन के किले में घुस गया। वे चारो लूटमार के उपरान्त खम्बायत पहुँचे। वहाँ एक व्यक्ति अखी नामक ने विद्रोहियों को नगर सौंप दिया। सुना जाता है कि तगी शहनये बारगाह[1] सुल्तान के आदेशानुसार उस स्थान को भेज दिया गया था। वीरो ने उसकी जंजीरें काट कर उसे पाँचवाँ सरदार नियुक्त किया किन्तु तीसरे दिन तगी उनके पास से भाग कर तुच्छ मुकबिल के पास पटन पहुँच गया। मुबारक ने दूसरे दिन वहाँ से प्रस्थान करके असावल पर आक्रमण किया (५०५) और २० दिन में उस किले पर विजय प्राप्त करली और आसपास के स्थान अपने अधिकार में कर लिये। इस बात के एक दो मास उपरान्त एक अन्य उपद्रव उठ खड़ा हुआ।

अजीज़ खम्मार का बडौदा की सेना से युद्ध तथा उसका मारा जाना—

अजीज, जो खम्मार[2] वश से था और सुल्तान द्वारा धार का मुक्ता नियुक्त हुआ था, मालवे से सेना लेकर बढा। उस ओर से मुकबिल, इस ओर से अजीज और अन्य दिशाओं से दूसरे स्थान वाले सेना लेकर युद्ध के लिये एकत्र हुये। जब तबलावद की सीमा पर यह सेना पहुँची तो उन चारों ने भी यह सुन कर युद्ध के लिये अपनी सेनायें तैयार की। उन चारों की सना में ७०० सवार से अधिक न थे। दूसरी ओर ६००० वीर थे। खम्मार स्वय मध्य भाग में था। वह नितान्त निर्दोष लोगों का रक्त पात कर चुका था। (५०६) मूख तगी, अजीज की सेना के आगे हुआ। मुक़बिल की सना दाहिनी पंक्ति में थी। दूसरी ओर चारों शूरवीर सिंह के समान युद्ध के लिये सन्नद्ध थे। दाहिने तथा बायें भाग के प्रबन्ध को त्याग कर वे चारों ओर फैले थे। तगी शत्रु की सेना को इधर उधर फैला

१ दरबार का प्रबन्ध करने वाला अधिकारी
२ मदिरा रखने वाला। कलाल

हुआ पाकर उसके विनाश के लिये कटिबद्ध हो गया। मूर्ख, खम्मार ने जो एक अत्याचारी व्यक्ति था, अपनी सेना शत्रु के मध्य भाग की ओर बढ़ाई। वह अपनी सेना को दृढ़ पाकर कुछ समय तक वहाँ डटा रहा। शत्रु यह देख कर रण क्षेत्र से भाग खड़े हुये। प्रत्येक के पीछे थोड़े ही से लोग रह गये। मुबारक, जलाल, जलाल इब्ने (पुत्र) लाला तथा वीर जहलू अपनी सेना में विघ्न पड़ते देख कर दाहिनी एवं बाईं ओर भाग खड़े हुये। सुना जाता है कि उस युद्ध के समय काज़ी जलाल के १४ साथी कपास के एक खेत में छिप गये थे, और प्राण के भय से रुई बन गये थे। (५८७) जब उन लोगों ने देखा कि अज़ीज की सेना इधर उधर हो गई तो जलाल के साथी चीत्कार करते हुये कपास के खेत से निकल कर उन पर टूट पड़े। एक ओर से मुबारक कुछ वीर सवारों को लेकर, दूसरी ओर से जहलू, अन्य दिशा से जलाल इब्ने (पुत्र) लाला नारे लगाते हुये एकत्र हो गये। खम्मार युद्ध न कर सका और भाग खड़ा हुआ किन्तु बन्दी बना लिया गया। तत्पश्चात् उन्होंने मुकबिल पर आक्रमण किया। मुकबिल भाग खड़ा हुआ। अत्याचारी की सेना पराजित हुई। वीरों ने लूटमार प्रारम्भ कर दी। खम्मार की उसी दिन हत्या करदी। (५८८) लूट द्वारा प्राप्त धन-सम्पत्ति चारों वीरों ने आपस में बराबर बराबर बाँट ली।

बड़ौदा की सेना का खम्बायत पर आक्रमण—

वहाँ से वे सेना लेकर दूसरे दिन खम्बायत के लिये चल खड़े हुये और वहाँ पहुँचे किन्तु नगर-वासियों ने उनका साथ न दिया। उन लोगों ने समझा कि वे युद्ध से भाग कर शरण लेने के लिए आये हैं। सभी लोगों ने अपने-अपने घर बन्द कर लिये। विद्रोहियों की सेना ने बाहर शिविर लगाये। उनकी सेना की सख्या प्रत्येक समय बढ़ने लगी। दूसरे दिन नगर-निवासी तलवार लेकर निकले और उन्होंने युद्ध किया किन्तु वे एक ही आक्रमण में पराजित हो गये और अपने-अपने घरों में घुस गये। सुना जाता है उस नगर में प्रत्येक घर एक किला था। (५८९) दो तीन दिन पश्चात् तगी [illegible] रात जगल के मार्ग से खम्बायत में प्रविष्ट हो गया। नगर-वासियों को उसके पहुँच [illegible] हो गया। वे लोग अपने नगर की रक्षा [illegible] लोग मैदान से भो [illegible] से रात दिन युद्ध किया करते थे। कोई [illegible] प्राप्त न [illegible] इसी प्रकार तीन चार मास व्यतीत हो

देहली [illegible] का

तथा [illegible] सुना तो

व्याकुल [illegible] उसके

कारण [illegible] बहुत [illegible] भी

हाल सुन [illegible]

एक सप्ताह [illegible]

फरसग यात्रा

४००० सेना

अत्याचार के [illegible]

तहम्मुल ([illegible]

हुये आकर [illegible]

दिन उपवास करते थे

में प्रविष्ट हुई तो सुल्तान

न जल आदि का कोई प्रबन्ध था। पशुओ के सीग और खुर ही रह गये थे। घोडे केसर तथा दुम चबाते थे। (५११) मनुष्य दु ख के अतिरिक्त कुछ न खाता था और किसी के पास भी दु ख के अतिरिक्त कुछ शेष न रह गया था। वहाँ सेना दो मास तक रही। सुल्तान ने आज़म मलिक को भरौंच की ओर भेजा।

आज़म मलिक का भरौंच पहुँचना और सेना का क़िले में उतरना—

उस शिथिल खुरासानी को आदेश दिया कि वह शीघ्र १०० सवार लेकर भरौंच की ओर प्रस्थान करे, मलिक आलिम का दास कमर उस किले में सेना के साथ है। देवगीर (देवगिरि) की जितनी भी सेना उस किले में है उसकी वह उस किले में रक्षा करे, यदि विद्रोहियो की सेना वहाँ अचानक पहुँच जाय तो वह किले के बाहर न निकले और क़िले में सावधान रहे। खुरासानी ने कुछ दिन उपरान्त भरौंच पहुँच कर कमर को सुल्तान का आदेश पहुँचाया। प्रत्येक स्थान पर किले की रक्षा के लिये वीर नियुक्त किये। (५१२)

बड़ौदा की सेना का भरौंच पहुँचना तथा उसकी पराजय—

जब विद्रोहियो ने सुना कि भरौंच में बहुत बडी सेना पहुँच गई तो वे खम्बायत छोड कर कोलाहल करते हुये भरौंच के किले पर पहुँचे और किले को चारों ओर से घेर लिया। वे सेना के बाहर निकलने की प्रतीक्षा करते रहे। सुना गया है कि विद्रोही तीन दिन तक नित्य किले पर आक्रमण करते थे और रात्रि में दो मील पर निवास करते थे। भीतर ३, ४ हज़ार सेना थी और विद्रोही ७०० सवार थे किन्तु अधिक सख्या में होने पर भी आदेश न होने के कारण वे बाहर न निकले। तीसरे दिन विद्रोहियो की सेना अभिमान में भरी हुई किले के नीचे पहुँची। जहलू अफ़ग़ान अपनी सेना लेकर अपने साथियो के साथ आगे बढा और द्वार पर युद्ध के लिये पहुच गया तथा अपनी सीमा से बहुत बढ गया। देवगीर (देवगिरि) के कुछ सरदारों ने, विशेषकर हमीद ने कहा कि "यह उपद्रवकारी नही जानता कि सिंह सुल्तान के आदेशानुसार किले में बन्दी है। (५१३) चाहे शाह इस अपराध में हमारा रक्त ही क्यो न बहा दे किन्तु हम इसकी हत्या "इस समर भूमि में कर देंगे। यह कह कर वे लोग बाहर निकले। दो तीन बार जहलू ने उन लोगो पर अधिकार प्राप्त करने का प्रयत्न किया किन्तु सफल न हुआ। जब एक पहर दिन शेष रह गया, तो दौलताबाद की सेना ने उन्हें भगा दिया। कमर ने अपनी सेना को विजय प्राप्त करते देख कर किले के बाहर निकल कर उसकी सहायता की। सेना चारों ओर से आक्रमण करके जहलू से युद्ध में भिड गई। युद्ध में उसका घोडा गिर गया। सेना ने पहुच कर उससे युद्ध करके उसका सिर काट लिया। जहलू की हत्या के उपरान्त किले के चारों ओर से सेना निकल पडी। जोर बिम्वाल तथा क़ाज़ी जलाल प्रत्येक दिशा से धावा होते हुये देख कर शिविर छोड कर भाग गये और मान देव[1] के पास पहुच कर शरण ग्रहण की। सुना जाता है कि उस हिन्दू ने उनके प्रति निष्ठा प्रदर्शित करके उन्हे अपने जाल में फाँस लिया और उनकी धन सम्पत्ति पर अधिकार जमा लिया। सुल्तान ने उसके पास दूत भेजकर अपने शत्रुओं को उससे मागा। उस दुष्ट हिन्दू ने उन्हे शाह के पास भेजना निश्चय कर लिया। (५१४)

देवगीर (देवगिरि) वालों का विद्रोह तथा इस्माईल मुख् का राज्य—

दुष्ट एव नीचों के मित्र तथा इस्लाम के शत्रु शहशाह से, जिसने इस्लाम पूर्णतया त्याग दिया था, छोटे बडे सभी खिन्न थे। उसके विरुद्ध प्रदेशो का विद्रोह उचित था। शरा

१ एक हस्तलिखित पोथी में नानदेव है।

हुआ पाकर उसके विनाश के लिये कटिबद्ध हो गया। मूर्ख, खम्मार ने जो एक बाजारी व्यक्ति था, अपनी सेना शत्रु के मध्य भाग की ओर बढ़ाई। वह अपनी सेना को दृढ़ पाकर कुछ समय तक वहाँ डटा रहा। शत्रु यह देख कर रण क्षेत्र से भाग खड़े हुये। प्रत्येक के पीछे थोड़े ही से लोग रह गये। मुबारक, जलाल, जलाल इब्ने (पुत्र) लाला तथा वीर जहलू अपनी सेना में विघ्न पड़ते देख कर दाहिनी एवं बाईं ओर भाग खड़े हुये। सुना जाता है कि उस युद्ध के समय काज़ी जलाल के १४ साथी कपास के एक खेत में छिप गये थे, और प्राण के भय से रुई बन गये थे। (५८७) जब उन लोगों ने देखा कि अज़ीज की सेना इधर उधर हो गई तो जलाल के साथी चीत्कार करते हुये कपास के खेत से निकल कर उन पर टूट पड़े। एक ओर से मुबारक कुछ वीर सवारों को लेकर, दूसरी ओर से जहलू, अन्य दिशा से जलाल इब्ने (पुत्र) लाला नारे लगाते हुये एकत्र हो गये। खम्मार युद्ध न कर सका और भाग खड़ा हुआ किन्तु बन्दी बना लिया गया। तत्पश्चात् उन्होंने मुकबिल पर आक्रमण किया। मुकबिल भाग खड़ा हुआ। अत्याचारी की सेना पराजित हुई। वीरों ने लूटमार प्रारम्भ कर दी। खम्मार की उसी दिन हत्या करदी। (५८८) लूट द्वारा प्राप्त धन-सम्पत्ति चारों वीरों ने आपस में बराबर बराबर बाँट ली।

बड़ौदा की सेना का खम्बायत पर आक्रमण—

वहाँ से वे सेना लेकर दूसरे दिन खम्बायत के लिये चल खड़े हुये और वहाँ पहुँचे किन्तु नगर-वासियों ने उनका साथ न दिया। उन लोगों ने समझा कि वे युद्ध से भाग कर शरण लेने के लिए आये हैं। सभी लोगों ने अपने-अपने घर बन्द कर लिये। विद्रोहियों की सेना ने बाहर शिविर लगाये। उनकी सेना की संख्या प्रत्येक समय बढ़ने लगी। दूसरे दिन नगर-निवासी तलवार लेकर निकले और उन्होंने युद्ध किया किन्तु वे एक ही आक्रमण में पराजित हो गये और अपने-अपने घरों में घुस गये। सुना जाता है उस नगर में प्रत्येक घर एक किला था। (५०६) दो तीन दिन पश्चात् तगी रातों रात जंगल के मार्ग से खम्बायत में प्रविष्ट हो गया। नगर-वासियों को उसके पहुँच जाने से संतोष हो गया। वे लोग अपने नगर की रक्षा करने लगे। कुछ लोग मैदान से और कुछ लोग नगर से रात दिन युद्ध किया करते थे। कोई एक दूसरे पर विजय प्राप्त न कर पाता था। इसी प्रकार तीन चार मास व्यतीत हो गये।

देहली से गुजरात की ओर सुल्तान का प्रस्थान—

जब सुल्तान ने गुजरात के विद्रोह तथा अज़ीज की हत्या का हाल सुना तो वह बड़ा व्याकुल हुआ। उसके पास उस समय अधिक सवार न थे। (५१०) उसके अत्याचार के कारण नगरों तथा सेना के मनुष्यों की संख्या में बहुत कमी हो गई थी। फिर भी विद्रोह का हाल सुन कर वह देहली से गुजरात की ओर सेना लेकर चल खड़ा हुआ। प्रत्येक पड़ाव पर एक सप्ताह तक रुकता जाता था। वह बड़े धीरे धीरे प्रस्थान करता था। केवल आधा फरसंग यात्रा करता था और भिन्न भिन्न युक्तियाँ सोचा करता था। उसके साथ थकी माँदी ४००० सेना थी। न उनके घोड़ों में प्राण थे और न सवारों में साहस। सभी बादशाह के अत्याचार के कारण दीन अवस्था को प्राप्त हो चुके थे। सुल्तान ने उनकी पदवी अहले तहम्मुल (सहनशील) रक्खी थी। उन लोगों के अतिरिक्त जन साधारण थे जो रोते पीटते हुये आकर सम्मिलित हुये। यदि वे ऐसा न करते तो उनकी हत्या करादी जाती। वे रात दिन उपवास करते थे और मृत्यु की आकांक्षा किया करते थे। जब सेना नागौर की सीमा में प्रविष्ट हुई तो सुल्तान एक उजाड़ स्थान पर ठहरा। सेना के पास न तो अनाज था और

न जल आदि का कोई प्रबन्ध था। पशुओं के सींग और खुर ही रह गये थे। घोड़े केसर तथा दुम चबाते थे। (५११) मनुष्य दुःख के अतिरिक्त कुछ न खाता था और किसी के पास भी दुःख के अतिरिक्त कुछ शेष न रह गया था। वहाँ सेना दो मास तक रही। सुल्तान ने आजम मलिक को भरौंच की ओर भेजा।

आज़म मलिक का भरौंच पहुँचना और सेना का क़िले में उतरना—

उस शिथिल खुरासानी को आदेश दिया कि वह शीघ्र १०० सवार लेकर भरौंच की ओर प्रस्थान करे, मलिक आलिम का दास कमर उस किले में सेना के साथ है। देवगीर (देवगिरि) की जितनी भी सेना उस किले में है उसकी वह उस किले में रक्षा करे, यदि विद्रोहियों की सेना वहाँ अचानक पहुँच जाय तो वह किले के बाहर न निकले और क़िले में सावधान रहे। खुरासानी ने कुछ दिन उपरान्त भरौंच पहुँच कर कमर को सुल्तान का आदेश पहुँचाया। प्रत्येक स्थान पर किले की रक्षा के लिये वीर नियुक्त किये। (५१२)

बड़ौदा की सेना का भरौंच पहुँचना तथा उसकी पराजय—

जब विद्रोहियों ने सुना कि भरौंच में बहुत बड़ी सेना पहुँच गई तो वे खम्बायत छोड़ कर कोलाहल करते हुये भरौंच के किले पर पहुँचे और किले को चारों ओर से घेर लिया। वे सेना के बाहर निकलने की प्रतीक्षा करते रहे। सुना गया है कि विद्रोही तीन दिन तक नित्य किले पर आक्रमण करते थे और रात्रि में दो मील पर निवास करते थे। भीतर ३, ४ हज़ार सेना थी और विद्रोही ७०० सवार थे किन्तु अधिक संख्या में होने पर भी आदेश न होने के कारण वे बाहर न निकले। तीसरे दिन विद्रोहियों की सेना अभिमान में भरी हुई किले के नीचे पहुँची। जहलू अफ़गान अपनी सेना लेकर अपने साथियों के साथ आगे बढ़ा और द्वार पर युद्ध के लिये पहुँच गया तथा अपनी सीमा से बहुत बढ़ गया। देवगीर (देवगिरि) के कुछ सरदारों ने, विशेषकर हमीद ने कहा कि "यह उपद्रवकारी नहीं जानता कि सिंह सुल्तान के आदेशानुसार किले में बन्दी है। (५१३) चाहे शाह इस अपराध में हमारा रक्त ही क्यों न बहा दे किन्तु हम इसकी हत्या इस समर भूमि में कर देंगे। यह कह कर वे लोग बाहर निकले। दो तीन बार जहलू ने उन लोगों पर अधिकार प्राप्त करने का प्रयत्न किया किन्तु सफल न हुआ। जब एक पहर दिन शेष रह गया, तो दौलताबाद की सेना ने उन्हें भगा दिया। कमर ने अपनी सेना को विजय प्राप्त करते देख कर किले के बाहर निकल कर उसकी सहायता की। सेना चारों ओर से आक्रमण करके जहलू से युद्ध में भिड़ गई। युद्ध में उसका घोड़ा गिर गया। सेना ने पहुँच कर उससे युद्ध करके उसका सिर काट लिया। जहलू की हत्या के उपरान्त किले के चारों ओर से सेना निकल पड़ी। जोर बिम्बाल तथा काज़ी जलाल प्रत्येक दिशा से धावा होते हुये देख कर शिविर छोड़ कर भाग गये और मान देव[1] के पास पहुँच कर शरण ग्रहण की। सुना जाता है कि उस हिन्दू ने उनके प्रति निष्ठा प्रदर्शित करके उन्हें अपने जाल में फाँस लिया और उनकी धन सम्पत्ति पर अधिकार जमा लिया। सुल्तान ने उसके पास दूत भेजकर अपने शत्रुओं को उससे माँगा। उस दुष्ट हिन्दू ने उन्हें शाह के पास भेजना निश्चय कर लिया। (५१४)

देवगीर (देवगिरि) वालों का विद्रोह तथा इस्माईल मुख़ का राज्य—

दुष्ट एवं नीचों के मित्र तथा इस्लाम के शत्रु शहंशाह से, जिसने इस्लाम पूर्णतया त्याग दिया था, छोटे बड़े सभी खिन्न थे। उसके विरुद्ध प्रदेशों का विद्रोह उचित था। शारा

१ एक हस्तलिखित पोथी में नानदेव है।

ने उसने रक्तपात की अनुमति दे दी थी। लोगों के हृदय उसकी युक्तियों से बुझ गये थे। काजियों का मत भी उसकी हत्या के विषय में था। उसकी मृत्यु द्वारा ही उससे मुक्ति प्राप्त हो सकती थी। उसने इस्लाम के नियम त्याग दिये थे और कुफ्र प्रारम्भ कर दिया था। उसने अजान बन्द करा दी थी। मुसलमान रात दिन उससे घुला करते थे। उसने जुमे की जमाअत (की नमाज) भी रुकवा दी थी और हिन्दुओं से होली खेला करता था। वह योगियों से एकान्त में गोष्ठी करता था और हृदय से वह कुफ्र के मार्ग पर चला करता था। कोई भी मुफ्ती उससे कम ही सहमत होता था और यदि सहमत होता तो वह स्वयं अपराधी होता था। उसके अत्याचार के कारण प्रत्येक प्रान्त में कोलाहल रहता था। प्रत्येक महजर[1] द्वारा उसके विरुद्ध युद्ध उचित था। सुना जाता है कि उसी हत्यारे तथा अपवित्र ने अपने राज्य के अन्त में अनेक विद्रोहियों की सेना को पराजित किया और अनेक बादशाहों को बन्दी बनाया और जुहाक का अनुसरण किया। (५१५)

अहमद (पुत्र) लाचीन तथा कुलताश की हत्या एवं नासिरुद्दीन अफ़ग़ान का राज्य प्राप्त करना—

गुजरात की सेना से निश्चिन्त होकर (सुल्तान ने) दुष्ट अहमद को, जिसने लाचीन के नाम को कलंकित कर दिया था, आदेश दिया कि वह शीघ्र देवगीर (देवगिरि) की ओर प्रस्थान करे और छल से विद्रोहियों को बन्दी बना ले और उन्हें राजधानी की ओर ले आये। अहमद ने वहाँ पहुंच कर गुप्त रूप से आलिम मलिक को लिखा कि वह सेना को राजधानी की ओर भेज दे। आलिम मलिक ने पत्र पढ़ कर घृणा प्रकट की किन्तु कोई अन्य उपाय न देख कर उसने सेना नगर के बाहर निकाली। सेना के सरदारों को उसने कुछ प्रदान न किया और उन्हें आदेश दिया कि वे निरन्तर प्रस्थान करते रहें और पड़ावों पर कम ठहरें। जब वे नगर से ५ फरसंग प्रस्थान कर चुके तो प्रत्येक को अपना विनाश देख कर दुख होने लगा। सभी सरदारों ने संगठित होकर कहा कि 'हम लोगों के प्राण भय में हैं।' नूरुद्दीन तथा इस्माईल अपनी एवं अन्य लोगों की मुक्ति के लिए कटिबद्ध हो गये। (५१६) उन्होंने कहा 'अत्याचारी सुल्तान को रक्तपात में आनन्द आता है और वह किसी के ऊपर कोई ध्यान नहीं देता।' उन्होंने निश्चय किया कि उस रात्रि में वह न सोयें और दूसरे दिन सर्व प्रथम अहमद का शीश पृथक् कर दें, तत्पश्चात् कुलताश तथा हुसाम सिपहताश की हत्या करदें और उन तीनों के शीश जगग तथा मान देव के पास भेज दें, तत्पश्चात् देवगीर (देवगिरि) पर चढ़ाई करके आलिम मलिक को बन्दी बना लें। प्रातःकाल कुछ लोगों ने लाचीन के पुत्र के पास पहुंच कर उसका शीश उसके शरीर से पृथक् कर दिया। (५१७) कुलताश उस कोलाहल से जाग उठा और एक घोड़े पर सवार होकर भागा। जो लोग उसका पीछा कर रहे थे, उन्होंने उसकी हत्या करदी। हुसाम उस समय शिविर ही में था। जो लोग उसकी हत्या के लिये नियुक्त हुये थे, उन्होंने उसका सिर काट डाला। उनके सिर देवहर भेज दिये गये। देवहर में सिरों को भेज कर सन्ध्या समय नगर में पहुंच गये। नूरुद्दीन तथा इस्माईल ने दौलताबाद की ओर शीघ्र ही प्रस्थान किया। नसीर तुगुलची तथा हाजिब[2] देवगीर (देवगिरि) पहुंचे। मलिक आलिम उस समय सो रहा था। जब उसे जगाया गया तो उसने पूछा कि "यह कैसा कोलाहल है ?" उसे उत्तर मिला कि "जो निर्दोष सेना तू ने भेजी थी, वह मार्ग से लौट आई है। उन्होंने सेना के सरदारों की हत्या करदी

---

१ किसी बात के निर्णय हेतु कोई सभा अथवा दस्तावेज।

२ पुस्तक में सादिब है।

है और अब वे तेरी हत्या करना चाहते हैं।" मलिक ने आदेश दिया कि, 'द्वार शीघ्र बन्द करा दिये जायें और युद्ध के लिये जल्दी की जाय।" उसने कुछ खरखोदह निवासियों को जो उसके साथ रहते थे आदेश दिया कि वे घोड़ों पर सवार होकर युद्ध के लिये निकलें। जब (विद्रोहियों की) सेना उनके द्वार पर पहुँची तो उन खरखोदह निवासियों ने उनसे युद्ध किया। (५१८) उस दिन युद्ध होता रहा। जब रात्रि हुई तो सेना घाटी की ओर चल दी। उन्होंने देवगीर (देवगिरि) की घाटी पर अधिकार जमा लिया, और प्रत्येक दिशा में एक सेना चल पड़ी। आलिम मलिक उस रात्रि में भीतर के महल में घुसा रहा। नसीर तथा हाजिब ने बाहरी किले पर अधिकार प्राप्त कर लिया। कोतवाल किले में घुस गया। समस्त नगर सेना द्वारा पद्दलित हो गया। दूसरे दिन सेना क़िले तथा महल पर टूट पड़ी। उस दिन, रात्रि तक युद्ध होता रहा। दूसरे दिन पुन युद्ध हुआ और आलिम मलिक जीवित बन्दी बना लिया गया और देवगीर (देवगिरि) के किले पर विजय प्राप्त हो गई।

देवगिरि की सेना की विजय तथा सुल्तान नासिरुद्दीन का सिंहासनारोहण--

दुष्ट रुस्तम, वेसू (वेग्रू) तथा शेखज़ादा जो जजीर लाये थे भाग कर सतारा नामक किले में घुस गये। (५१६) हुमाम को सतारा की ओर भेजा गया। उसके भय से वहाँ का किला चूर्ण हो गया। वहाँ वालो ने भय के कारण शरण की याचना की। मलिक (हुमाम) ने उनसे कहा कि वे शीघ्र नीचे उतर आयें अन्यथा कटार द्वारा उन्हे उतार दिया जायगा। सतारा में अनाज का पूर्णरूप से अभाव था अत वे बड़ी नम्रता से बाहर निकल आये। हुसामुद्दीन ने उन लोगो को बन्दी बना लिया और दो तीन दिवस उपरान्त उनकी हत्या करा दी। उन्हे अत्यधिक धन सम्पत्ति तथा अश्व प्राप्त हुये। तत्पश्चात् उन्होंने गोष्ठी करके निश्चय किया कि एक सरदार को बादशाह बनाया जाय। (५२०)

उन लोगों ने इस्माईल के सिर पर राजमुकुट रखना चाहा। इस्माईल ने यह बात सुन कर कहा, "मैं राज्य के योग्य नही। हसन नामक एक वीर जिसका निवास इस राज्य की सीमा पर है, इस कार्य के योग्य है। हुकँरी तथा वदगाँव की अक्ता का वह स्वामी है और हममें से प्रत्येक को उसकी अपेक्षा कम प्रतिष्ठा प्राप्त है। बहमन वश का वह एक उत्तम दीपक है।" लोगो ने कहा उसका मत बड़ा ही उत्कृष्ट है किन्तु शत्रु निकट है और वह दूर है। अत उन लोगो ने तुरन्त एक नारगी रग का चत्र उसके (इस्माईल के) सिर पर रख दिया। उसकी उपाधि नासिरुद्दीन रक्खी गई। नूरुद्दीन 'ख्वाजये जहाँ' नियुक्त हुआ। सेना को बादशाह ने १५ मास का धन (वेतन) प्रदान किया। प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यतानुसार पद प्रदान किये गये। दरबार के समय नकीबो ने जयध्वनि की और,सरदारो ने पा बोस[1] किया और उसके दाहिनी तथा बाईं ओर आदर-पूर्वक खड़े हो गये। (५२१)

काजी जलाल तथा मुबारक खुर्रम मुफ्ती का दौलताबाद पहुचना--

जगन के पास जब सरदार पहुचे तो उसने उन दोनो को मान देव के पास भेज दिया। उनके पहुँचने पर दो सरदारों को मुक्ति प्राप्त हो गई। मुबारक तथा क़ाज़ी जलाल अपनी सेना को पद्दलित होते देख कर मान देव से मिल गये थे। दुष्ट मान देव उन लोगो को सुल्तान के पास भेजना चाहता था। उन दोनो सरदारो के पहुँच जाने से दुष्ट राय ने उन्हे दौलताबाद भेज दिया। इस प्रकार वे मुक्त हो गये। जब वे दोनो सरदार नासिरुद्दीन के पास पहुँचे तो उसने उन्हे अत्यधिक धन तथा अश्व प्रदान किये। जलाल को कदर खाँ की

१ चरणों का चुम्बन।

उपाधि प्रदान की गई। मुबारक को भी खानी का पद प्राप्त हुआ। वे रात दिन उसकी सेवा हेतु कटिबद्ध रहते थे।

नूरुद्दीन का उलुग़ ख़ाँ के साथ गुलबर्गे को प्रस्थान—

एक दो मास उपरान्त नूरुद्दीन ने जुहाकियों (शाही सेना) से युद्ध करने के लिये प्रस्थान किया। उलुग ख़ाँ, बहराम अफ़गान तथा हुसेन[1] भी उसके साथ रवाना हुये। यद्यपि उलुग ख़ाँ सेना का सरदार था किन्तु प्रधान प्रबन्धक नूरुद्दीन था। सर्व प्रथम उन्होंने गुलबर्गे पर चढ़ाई की। गधरा ने अनेक मुसलमानों की हत्या करा दी थी। (५२२) शेख़ इज़्ज़ुद्दीन को भी उस दुष्ट ने मरवा डाला था। सेना के गुलबर्गा पहुँचने पर उस दुष्ट खत्री (क्षत्री) ने किला बन्द कर लिया। कुछ पायक अपने अन्धेपन में किले के बाहर खड़े हो गये। वे पहले ही आक्रमण में पद्दलित हो गये और दूसरे आक्रमण में किले में फिर घुस गये। गधरा ने व्याकुल होकर कल्यान में उस दुष्ट ग्रामीण को पत्र लिखा जिसने दोहनी द्वारा जलाल की पदवी प्राप्त करली थी। उसने लिखा कि "मैं किले में घिर गया हू। तू रात्रि में इन लोगो पर छापा मार और मैं इधर क़िले से निकल कर उन पर आक्रमण कर दूँगा। इस प्रकार शत्रु का रक्त बहा दिया जाय।" जब जलाल के सम्मुख वह पत्र पढ़ा गया तो वह दुष्ट, कल्यान से चल पड़ा। जब सेना को उस के किले वालो की सहायतार्थ आने का समाचार मिला तो सरदार के आदेशानुसार हुसेन एक बहुत बड़ी सेना लेकर अग्रसर हुआ। (५२३)

हुसेन हथिया की जलाल दोहनो (निवासी) पर विजय—

जब वह अपनी सेना को लेकर तीन फरसंग आगे तक बढ़ गया तो उसे शत्रु के सवार आते हुए दिखाई दिये। उस समय उसके साथ १०० प्रसिद्ध सवारों में दस के अतिरिक्त थोड़े ही लोग पहुचे थे किन्तु उसने आक्रमण करना निश्चय कर लिया। शत्रु की सेना के पहुँच जाने पर उसने जलाल को ललकारा कि "जलाल कहाँ है ? मेरा नाम हुसेन (हथिया) है।" जलाल को यह सुन कर अपनी सेना से निकलना पड़ा किन्तु वह उसका सामना न कर सका और मार डाला गया। (५२४) उन दस सैनिको ने फिर उसकी सेना पर आक्रमण किया। उनमें से एक न ढोल बजाने वाले के पास पहुच कर उसका सिर काट डाला और ढोल विदीर्ण कर दिया। उनकी सेना भी पराजित हो गई। सेनापति ने उनका पीछा न किया और अपनी सेना की ओर लौट आया। उनके वापस आने पर तीन दिन और रात खुशी मनाई गई और निश्चिन्त होकर किले पर आक्रमण किया जाने लगा। अरादे तथा मन्जनीकें लगा दी गईं। (५२५)

गुलबर्गा के किले पर ज़फ़र ख़ाँ का पहुँचना—

(ज़फर खाँ) अत्याचारी सुल्तान से एक समूह के विद्रोह कर देने का हाल सुन कर, उनकी सहायता के लिए गुलबर्गा पहुचने के विषय में निरन्तर सोचा करता था। दो एक मास तक वह इसी विषय पर विचार करता रहा। एक रात्रि में उसने स्वप्न देखा कि उसे शीघ्र प्रस्थान करना चाहिये। वह तुरन्त सेना लेकर गुलबर्गा पहुच गया। सेना के सरदार यह समाचार पाकर उसके स्वागतार्थ पहुचे। जब विद्रोहियों को यह हाल ज्ञात हुआ तो, क्या बिदर क्या सगर वाले, सभी सहायता के लिए तैयार हो गये। (५२६) एक बिदर से कल्यान में आया। एक सगर से सेना लेकर गुलबर्गा पहुंचा और वह किला चारों ओर

१ हुसेन हथिया गर्शास्प (कुराबक मैसरा बहमनी)

से घिर गया। एक दिन दूसरी नमाज (सांय की नमाज के पूर्व की नमाज) के समय क़िले वालों ने सगर की सेना पर आक्रमण कर दिया। सगर की सेना असावधान थी। जफर खाँ ने तुरन्त शत्रु पर आक्रमण करके उन्हें पराजित कर दिया।

नासिरुद्दीन को जफर खाँ के पहुचने का समाचार प्राप्त होना—

सरदारों ने बादशाह को लिखा कि 'हसन बहुत बडी सेना लेकर पहुच गया है। वह इस शुभ समाचार को सुन कर बडा प्रसन्न हुआ। उसने उसके पास सोने के बन्द का एक भाला प्रेषित किया। जब इस बात को तीन चार मास व्यतीत हो गये तो किले वाले बड़े भयभीत हो गये। किला दो स्थानों से टूट गया था और अनाज समाप्त हो गया था। (५२७) वे लोग अपने प्राणों की रक्षा की याचना करने लगे। एक दिन शिहाबुद्दीन (पुत्र) जलालुद्दीन, जिसे बादशाह ने अपनी राजधानी का कोतवाल बना दिया था, बादशाह का यह सदेश लाया कि सेना वहाँ से तुरन्त प्रस्थान करे, कुछ सवारों के साथ वहाँ कोई वीर रह जाय और अन्य लोग शीघ्र वहाँ पहुँच जायँ। जब सरदारों ने वह फरमान पढ़ा तो वे बहाना करने लगे। किसी ने कहा कि 'क़िले की विजय के उपरान्त मैं जाऊँगा', किसी ने कहा मै इस सेना से अपनी अक्ता को सुव्यवस्थित करने के उपरान्त जाऊँगा।' जफर खाँ ने यह सुन कर कहा 'हम लोग राजभक्त नहीं"। (५२८) वह दिन भर अपने अज्ञानी साथियो को उपालम्भ देता रहा। दूसर दिन वह दौलताबाद की ओर चल खडा हुआ। बादशाह का भाग्य उससे विपरीत हो गया था, अत आधी सेना भी उसके पास न पहुची।

गुलबर्गे की विजय—

किले के दो स्थानों से टूट जाने तथा अनाज के समाप्त हो जाने से किले वाले क्षमा याचना करने लगे थे। रात्रि में गन्धरा दुर्ग के बाहर भाग गया। सवारों ने उसका पीछा किया, हुसेन सब के आगे उसके पास पहुच गया, किन्तु उसकी दीन अवस्था देख कर उसन उसकी हत्या न की। उसके माल असबाब तथा स्त्री व बालक अपने अधिकार में कर लिये, केवल गन्धरा ही बच गया। गुलबर्गे की विजय के कई दिन बाद तक किसी सेना न राजधानी की ओर प्रस्थान न किया। उलुग खाँ चारो ओर धावे मारता हुआ राजधानी की ओर रवाना हुआ। नूरुद्दीन जो बादशाह का वजीर था, गुलबर्गे ही में रह गया और नगर तथा क़िले का प्रबन्ध करता रहा। (५२९)

सुल्तान मुहम्मद के पास देवगिरि के विद्रोह की सूचना पहुँचना तथा देवगिरि पर आक्रमण—

जब उस दुष्ट एव नीचो के आश्रयदाता तथा क्रोधी सुल्तान ने देवगीर (देवगिरि) की सेना के समाचार सुन तो भूतों की भाँति उसे आवेश आने लगा। तीन दिन और रात वह शयन न कर सका और किसी से गाली के अतिरिक्त कोई बात न करता था। चौथे दिन बदला लेन के लिये उसने अत्याचार करने से साधारण सी तोबा की और ईश्वर से प्रार्थना करते हुये कहने लगा कि वह अब फिर कभी रक्तपात न करेगा। छ मास तक बडी चाल, प्रवचना तथा छल से वह सेना एकत्र करता रहा और ५०,००० सैनिक इकट्ठे कर लिये। जब वह इलोरा की घाटी में पहुँचा तो चारों ओर से मार्ग बन्द पाया। वहाँ से लौट कर उसने सुनारी की ओर प्रस्थान किया। कुछ समय तक वह कभी इधर सेना ले जाता और कभी उधर शिविर लगवाता। (५३०)

सुल्तान मुहम्मद तथा सुल्तान नासिरुद्दीन का युद्ध—

एक दिन सुल्तान ने आदेश दिया कि महावन हाथी के दाँतों में लोहे के अनी लगायें,

हाथियो पर होदे कसे जायें और घोडो पर जीनें बाँधी जायें। जब उसकी सेना तैयार हो गई तो उसने आदेश दिया कि मध्य भाग में ततार रहे, मकबूल की सेना बाईं ओर रहे। वह स्वय दाहिनी पक्ति से थोडी दूर हट कर घात लगा कर बैठ गया। सुल्तान ने आदेश दे दिया कि उसके आदेश के बिना कोई अपने स्थान से न हिले।

दूसरी ओर से नासिरुद्दीन युद्ध के लिये तैयार हुआ। उसने अपने पुत्र खिज्र खाँ को मध्य भाग में नियुक्त किया। खाने ततार तथा खाने जहाँ उसकी सहायता के लिये नियुक्त हुये। खातम खाँ भी शाह के आदेशानुसार मध्य भाग से अग्रसर हुआ। (५३१) वहाँ हिज्बर खास हाजिब, शाह के आदेशानुसार मेघो के समान गर्जना कर रहा था। वह आगे की पक्ति की सहायता करता था। नसीर तुगुलची ने शाह के आदेशानुसार सेना पर आक्रमण किया। गुजरात की सेना के सरदार कदर खाँ तथा मुबारक खाँ को शाह ने दाहिनी पक्ति में नियुक्त किया था। शम्सुद्दीन, पीगू का पुत्र, तथा जफर खा बाईं ओर की पक्ति में नियुक्त हुये। हुसामुद्दीन उसकी पताका की शरण में था। सफदर खाँ भी उसका सहायक था। हुसामुद्दीन पुत्र आराम शाह अपनी सेना के साथ बाईं पक्ति में सम्मिलित हुआ। शाह स्वय एक हजार सवार लिये हुये मध्य भाग से कुछ पीछे घात लगा कर बैठा। उसने सेना के सगठित करने का बडा प्रयत्न किया किन्तु ईश्वर की सहायता उसे प्राप्त न थी, अत उसे कोई लाभ न हुआ।

दोनों सेनायें एक दूसरे के सम्मुख सवार होकर आईं। जब दो घडी से अधिक दिन व्यतीत हो गया तो दोनों सेनाओं में युद्ध प्रारम्भ हो गया। नासिरुद्दीन के पास सरदारो ने जाकर कहा "यदि शाह का आदेश हो तो हम लोग दो एक पग अग्रसर हो और शत्रु पर आक्रमण कर दें।" शहशाह (मुहम्मद) ने सरदारों को सकेत किया कि वे शीघ्र शत्रु के मध्य भाग पर आक्रमण करें। जब सेना का अग्रिम दल आगे बढा तो समस्त सेना चल पडी। (५३२) जफर खाँ ने बाईं पक्ति से सेना को आगे बढा कर शत्रु की सेना के दाहिने भाग पर आक्रमण किया। शत्रु की दाहिनी पक्ति की सेना भाग खडी हुई। मकबूल, जो सेना के दाहिनी ओर था, सेना को भागते हुये देख कर मध्य भाग में बडी युक्ति से प्रविष्ट हो गया। जफर खाँ ने उनके शिविर पर भी छापा मारा। उसने अत्यधिक सवारों की हत्या कर दी और बहुत से अश्वों पर अधिकार प्राप्त कर लिया। किसी को अपना सामना करते हुये न देख कर वह अपनी सेना मे लौट गया। दूसरो का अहित चाहने वाला वह (सुल्तान मुहम्मद) यह देख कर सेना के मध्य भाग में आया और सब सरदार एकत्र हो गये। नौरोज, ततार, तथा मक्बूल जैसे सरदारों ने सगठित होकर आक्रमण किया। दोनो सेनाओ में द्वन्द युद्ध होने लगा। नासिरुद्दीन यह देख कर अपनी सेना के मध्य भाग की सहायता के लिये आगे बढा। उसने समर भूमि में बडी तलवार चलाई किन्तु ईश्वर की सहायता में कमी पाकर वह उस स्थान से धीरे से लौट पडा। नसीर तुगुलची का घोडा उस अहित चाहने वाले (सुल्तान मुहम्मद) के बाण से गिर पडा, किन्तु उसने पैदल ही भीषण युद्ध किया। उसके सईस ने यह देख कर अपना घोडा उसे दे दिया। (५३३) वह स्वय सेना के घोडों द्वारा कुचल गया।

नासिरुद्दीन ने समर भूमि से भाग कर एक नदी पार की। जफर खाँ अपनी सेना की ओर लौट गया। उसके सम्मुख उसी समय शत्रु की एक सेना पहुच गई और उसके लिये युद्ध के अतिरिक्त कोई उपाय न था। उसने उस पर आक्रमण किया और कटार निकाल ली। उसे मार्ग मिल गया और वह अपनी सेना में पहुँच गया। उसे देख कर सेना के हृदय को बडी शक्ति प्राप्त हो गई। एक ओर ईरानियो की पक्ति थी और दूसरी ओर तूरानियो की। कोई

भी नदी को पार करने का साहस न करता था। दोनो सेनायें नदी के चारो ओर रही और अपनी-अपनी रक्षा करती रही। (५३४)

नदी के इस ओर सुल्तान ने अपनी सेना तैयार की और दूसरी ओर देवगीर (देवगिरि) के बादशाह की सेना तैयार हुई किन्तु उसने अपने पास १०० के स्थान पर दस सैनिक भी न, देखे। रातो रात उसकी सेना भाग गई थी। दोनो सेनायें दोपहर तक खडी रही। जब एक पहर दिन शेष रह गया तो देहली के बादशाह ने हाथियो की पक्तियाँ आगे बढाई। हाथियो की चिंघाड से घोडे भाग गये और सवार हाथियो के पैरो के नीचे गिर पडे।

सुल्तान नासिरुद्दीन का भाग कर देवगिरि के क़िले में शरण लेना—

नासिरुद्दीन देवगीर (देवगिरि) के किले की ओर भाग गया। उसकी सेना ने चारो ओर के मार्ग ग्रहण कर लिये। एक सैनिक समूह देवगीर (देवगिरि) में घुस गया। एक दूसरा गरोह जीवित बन्दी बना लिया गया। एक सैनिक समूह मार डाला गया और दूसरा समूह प्राण लेकर भाग गया। उसी दिन बाहरी किले पर, शक्ति के कारण नही अपितु बुरी दशा मे होने के कारण, विजय प्राप्त कर ली गई। (५३५) इस्माईल किले में बन्द रहा। शत्रु की सख्या बहुत अधिक देख कर उन्हे शरण की याचना करनी पडी।

सुल्तान के हृदय में पीड़ा उठना तथा देवगिरि निवासियों का दंड से मुक्त हो जाना—

सुना जाता है उसी रात्रि में एशा[1] के समय सुल्तान के हृदय में पीडा होने लगी। उसने आदेश दिया कि प्रत्येक दिशा में यह सूचना दे दी जाय कि पीडित प्रजा को क्षमा प्रदान की जाती है, लोगो को मुक्त कर दिया जाय। दूसरे दिन जब उसकी पीडा कम हो गई तो उसने अपने अधिकारियों को आदेश दिया कि जिन लोगो को मुक्त कर दिया गया है, उन्हे पुन. बन्दी बना लिया जाय। उसने अपनी प्रतिज्ञा तोड डाली और पुन. अत्याचार प्रारम्भ कर दिया। इस कारण उसके राज्य में विघ्न उत्पन्न हो गया और शेख तथा आलिम उसका विरोध करने लगे। (५३६) वह नगर ग्राम बन गया। प्रत्येक स्थान पर श्वानो का राज्य हो गया। वह देहली नगर, जो दरिद्रो का काबा (आश्रय का स्थान) था, सैकडो अत्याचारो के कारण नष्ट हो गया। (५३७)

गुजरात में तग़ी का विद्रोह तथा सुल्तान मुहम्मद की वापसी—

जब देवगीर (देवगिरि) का कतगा[2] नष्ट हो गया और धर्मनिष्ठ मुसलमानो में से कुछ की हत्या करादी गई और कुछ लोग बन्दी बना लिये गये तो देहली का बादशाह दो मास तक उस स्थान पर रहा, और प्रत्येक समय धर्मनिष्ठ मुसलमानो का रक्तपात करता रहा। एक दिन एक दूत ने आकर कहा कि "तगी ने पुन विद्रोह कर दिया है, उसने गुजरात में लूट मार प्रारम्भ करदी है और बडा रक्तपात कर रहा है।" देहली का बादशाह यह हाल सुन कर अन्य युद्धो को भूल गया, और बडी अशान्त अवस्था को प्राप्त हो गया। उसकी शलवार में (मानो)पिस्सू पड गये हो। उसने सोचा कि "गुजरात की ओर मेरे प्रस्थान करने पर इस स्थान के सिह युद्ध मे मुक्त हो जायेंगे और किले के बन्दी छूट जायेंगे। यदि मैं उसमे युद्ध के लिए सेना भेजता हू, तो कोई भी मुझे उसके समान प्रतीत नही होता।" (५३८) वह बहुत समय तक इसी असमजस्य में रहा। अन्त में एक दुष्ट ने उसे परामर्श दिया कि सब किले वालो को

१ रात्रि की नमाज़।

२ कतगा—राजधानी। देवगीर के किले के नीचे का नगर जो सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ शाह के समय दौलताबाद के नाम से प्रसिद्ध था।

हत्या करा दी जाय। सुल्तान ने उस समय सरतेज को गुलबर्गा भेज कर आदेश दिया कि वह वहाँ रक्तपात प्रारम्भ कर दे।

देवगिरि के क़िले वालों की हत्या, जौहर का अत्याचार तथा सरतेज़ का गुलबर्गे की ओर प्रस्थान—

दौलताबाद में जौहर रह गया। उसने मुसलमानों का बड़ा रक्तपात किया। किसी को किसी बहाने से तथा किसी को जबरदस्ती हत्या कराई गई। उस दुष्ट के आदेशानुसार एक सेना किले के भिन्न-भिन्न स्थानो पर नियुक्त की गई। वह किला ऐसा था, मानो ईश्वर ने कोई पर्वत उत्पन्न कर दिया हो। वह चारो ओर से (पवत) काट कर बनाया गया था और किसी को खोजने पर भी उसका द्वार न मिलता था। किसी को भी उस किले का मार्ग ज्ञात न हो सका था। (५३६) यदि कोई उसकी ऊँचाई देखने का प्रयत्न करता तो उसके सिर से टोपी गिर पड़ती। उस क़िले के नीचे एक खाई सर्वदा जल से भरी रहती थी और ऐसा ज्ञात होता था कि कोई नदी बह रही हो। खिज्र खाँ सरयाक, खाने जहाँ, तातार खाँ, कदर खाँ, मुबारक खाँ, सफदर खाँ, बहाउद्दीन खास हाजिब, नसीर तुगुलची तथा कजक का पुत्र, अचानक बन्दी बना लिये गये।

ज़फ़र ख़ाँ का देवगीर से मिर्ज की ओर प्रस्थान—

वीर जफर खाँ अपने राज्य की ओर भाग गया। बहुत से सवार उससे मिल गये (५४०) कोई भी उसका पीछा करने का साहस न कर सकता था। जब वह बेजारा बर करा (बनजारा बड खेडा) पहुचा तो प्रत्येक दिशा से उसके पास सेना बढने लगी। सर्व प्रथम नूरुद्दीन ने सेना लेकर खान के झंडे के नीचे शरण ग्रहण की। दूसरे दिन उससे उलुग खाँ मिला। उसकी सेना रात दिन बढने लगी। जब सेना ने हलक बुल (पुल) पर शिविर लगाये तो नरायन (नारायण) ने रात्रि में सेना पर छापा मारा। कुछ हिन्दुस्तानी वीर, जो हिन्दी भाषा मे नायक कहलाते थे, नूरुद्दीन पर, जब कि वह असावधान था और घोडो पर जीनें भी न कसी थी, टूट पडे। उन लोगों ने कुछ मनुष्यो को घायल कर दिया। जब प्रत्येक व्यक्ति जाग उठा तो हिन्दू तुर्कों द्वारा पराजित हो गये। जब उन हिन्दुओ को सफलता न प्राप्त हुई, तो वे अपने स्थान को भाग गये। वीर हुसेन ने उनका पीछा करके उन्हे बुरी तरह पद्दलित कर दिया किन्तु रात्रि अँधेरी होने के कारण वह शीघ्र लौट गया।

प्रात काल जफर खाँ ने मिर्ज की ओर प्रस्थान किया। उसी दिन सेना मिर्ज पहुच गई और प्रत्येक व्यक्ति को यात्रा के कष्ट से आराम हो गया। खान अपनी माता के चरणो के चुम्बन हेतु मार्ग ही से सितलगह की ओर चल दिया। बुद्धिमान खान की अनुपस्थिति में सरदार असावधान हो गये थे। उसी जल्दबाज नूरुद्दीन ने अपनी मूर्खता के कारण अपने आपको नष्ट कर लिया। (५४१) वह अपनी असावधानी तथा मूर्खता के कारण बन्दी बना लिया गया और जल्लादो ने उसे देवगीर (देवगिरि) भेज दिया। खान को यह सुन कर बडा दुःख हुआ और वह मिर्ज की ओर चल पडा। वहाँ पहुच कर उसने वह उपद्रव शात कर दिया। तत्पश्चात् वह बुद्धिमान खान उसी स्थान पर निवास करने लगा। देहली के बादशाह ने उसे मत्र, यत्र तथा छल द्वारा प्रभावित करना चाहा किन्तु उस पर कोई प्रभाव न हुआ। (५४२)

जफ़र ख़ाँ का सरतेज़ के विरुद्ध प्रस्थान—

उसने एक रात्रि में स्वप्न देखा कि उसे सर्वदा आशावादी रहना चाहिये। यद्यपि नासिरुद्दीन का भाग्य प्रतिकूल हो गया है किन्तु विजय तथा सफलता उसकी ओर बढ रही है। खान यह सुखद समाचार पाकर अपने राज्य से चल कर सर्व प्रथम अरगह पहुँचा। वह

तीन मास तक उस स्थान पर रुका रहा और फिर वहाँ से उसने सरतेज पर चढाई करने के लिये प्रस्थान किया और ईश्वर से इस कार्य में सहायता की याचना की। सर्व प्रथम वह सगर (नामक) किले पर पहुँचा। सगर का फौजदार उसका सहायक बन गया। जो सेना भागने के लिये तैयार थी, वह जफर खाँ को सरतेज से युद्ध करने के लिये आता हुआ देख कर उसकी सहायता हेतु सन्नद्ध हो गई। (५४३)

सिकन्दर खाँ कीर खाँ तथा वीर हुसेन उससे मिल गये। जब खान की सेना मे तीन चार हजार वीर एकत्र हो गये तो एक दिन खान ने सरदारों को बुला कर उनसे गुप्त रूप से कहा कि 'सरतेज गुलबर्गे में असख्य सेना लिये हुये है। हम लोग सेना लेकर उस पर चढाई करदें और उसकी हत्या करदें, यद्यपि ऐसा करना कठिन भी हो तो सम्भव है कि वह किला बन्द कर लेने पर विवश हो जाय। उस समय हम लोग गुलबर्गा छोड कर दौलताबाद की ओर चलदें। यदि वह दुष्ट हमारा पीछा करेगा तो वह स्वय कष्टों के जाल में फस जायगा। जब वह हमारे निकट पहुच जायगा तो हम लोग पलट कर उस पर आक्रमण कर देंगे और इस प्रकार एक ही आक्रमण में उसकी सेना छिन्न-भिन्न कर देंगे यदि वह हमारा पीछा न करेगा तो हम लोग दौलताबाद पहुच जायेंगे और समस्त (शत्रुओ की) सेना को छिन्न भिन्न करके किले के बन्दियो को मुक्त करा देंगे। देवगीर (देवगिरि) के कतगह पर भी अधिकार प्राप्त कर लगे और वहाँ से बहुत स लोगो को लेकर दुष्ट सरतेज पर आक्रमण कर देंगे।" सरदार यह सुन कर उस बुद्धिमान खान के आदेश का पालन करने के लिए कटि-बद्ध हो गये। दूसरे दिन प्रात काल सेना ने दौलताबाद की ओर प्रस्थान किया। जब शिथिल सरतेज को ज्ञात हुआ कि सेना ने बुरुम की सीमा पार करली है तो वह युद्ध क लिये गुलबर्गा से शीघ्रातिशीघ्र चल पडा। (५४४)

जफर खाँ तथा सरतेज का युद्ध एव जफर खाँ की विजय–

जब जफर खाँ गोदावरी पहुँचा तो उसने सेना को आदेश दिया कि वह कूक के मार्ग पर प्रस्थान करे। जहाँ कही से सम्भव हो नौकाय एकत्र की जायें और प्रत्येक स्थान से सेना इकट्ठी की जाय। वह नदी पार करके दौलताबाद की ओर प्रस्थान करना चाहता था। उसी समय एक गुप्तचर ने यह सुखद समाचार सुनाया कि सरतेज इस ओर युद्ध के लिये सेना लेकर आ रहा है। खान ने यह सुन कर शत्रुओ के विनाशक हुसेन (हथिया) को आदेश दिया कि वह अपने यजकियो (अग्रिम दल) को आगे ले जाकर दुष्टों के यजकियो (अग्रिम सना) पर आक्रमण कर दे। वह वीर २० अथवा ३० सवारो को लकर शीघ्रातिशीघ्र चल खडा हुआ। दाम खडा में उसे शत्रुओ के यजक (अग्रिम दल) दृष्टिगोचर हुये। मुबारक को जो बद्दा के नाम म प्रसिद्ध था, दुष्ट सरतेज ने ३०० सवारो को देकर भेजा था। वीर हुसेन न उसे देख कर उसे क्षण भर भी अवसर मिलने न दिया। (५४५) वह अचानक दुष्ट की सना पर टूट पडा और उसे छिन्न भिन्न कर दिया। मुबारक को अपने हाथ पैर की सुध बुध न रही और वह बीर (बीड) की ओर भाग गया। उसकी सना का बहुत बडा भाग बन्दी बना लिया गया।

हुसेन (हथिया) दुष्ट की सेना को पराजित करके अपनी सेना के शिविर को लौट आया। उसकी विजय को जफर खाँ ने बडा शुभ चिह्न समझा। वह उसी समय गोदावरी से पलट कर महवा घट्टी की ओर लपका। जिस समय खान बडे वेग से बढ रहा था उस मार्ग में आता हुआ एक व्यक्ति मिला। उससे उसने सरतेज के समाचार पूछे। उस बुद्धिमान पुरुष ने कहा कि "सरतेज बीर पार कर चुका है। महवा की ओर उसन सिन्धतन में एक कटधर बना लिया है। अपने एक ओर नहर को करके उसने भागने का मार्ग बन्द कर लिया है।" यह सुन कर

हत्या करा दी जाय। सुल्तान ने उस समय सरतेज को गुलबर्गा भेज कर आदेश दिया कि वह वहाँ रक्तपात प्रारम्भ कर दे।

देवगिरि के क़िले वालों की हत्या, जौहर का अत्याचार तथा सरतेज़ का गुलबर्गे की ओर प्रस्थान—

दौलताबाद में जौहर रह गया। उसने मुसलमानों का बड़ा रक्तपात किया। किसी को किसी बहाने से तथा किसी की जबरदस्ती हत्या कराई गई। उस दुष्ट के आदेशानुसार एक सेना किले के भिन्न-भिन्न स्थानों पर नियुक्त की गई। वह क़िला ऐसा था, मानो ईश्वर ने कोई पर्वत उत्पन्न कर दिया हो। वह चारों ओर से (पर्वत) काट कर बनाया गया था और किसी को खोजने पर भी उसका द्वार न मिलता था। किसी को भी उस किले का मार्ग ज्ञात न हो सका था। (५३६) यदि कोई उसकी ऊँचाई देखने का प्रयत्न करता तो उसके सिर से टोपी गिर पड़ती। उस किले के नीचे एक खाई सर्वदा जल से भरी रहती थी और ऐसा ज्ञात होता था कि कोई नदी बह रही हो। खिज्र खाँ सरयाक, खाने जहाँ, तातार खाँ, कदर खाँ, मुबारक खाँ, सफदर खाँ, बहाउद्दीन खास हाजिब, नसीर तुग़ुलची तथा कजक का पुत्र, अचानक बन्दी बना लिये गये।

जफर खाँ का देवगीर से मिर्ज की ओर प्रस्थान—

वीर जफर खाँ अपने राज्य की ओर भाग गया। बहुत से सवार उससे मिल गये (५४०) कोई भी उसका पीछा करने का साहस न कर सकता था। जब वह बेजारा बर करा (बनजारा बड खेडा) पहुचा तो प्रत्येक दिशा से उसके पास सेना बढने लगी। सर्व प्रथम नूरुद्दीन ने सेना लेकर खान के झंडे के नीचे शरण ग्रहण की। दूसरे दिन उससे उलुग खाँ मिला। उसकी सेना रात दिन बढने लगी। जब सेना ने हलक बुल (पुल) पर शिविर लगाये तो नरायन (नारायण) ने रात्रि में सेना पर छापा मारा। कुछ हिन्दुस्तानी वीर, जो हिन्दी भाषा में नायक कहलाते थे, नूरुद्दीन पर, जब कि वह असावधान था और घोड़ो पर जीनें भी न कसी थी, टूट पड़े। उन लोगो ने कुछ मनुष्यो को घायल कर दिया। जब प्रत्येक व्यक्ति जाग उठा तो हिन्दू तुर्कों द्वारा पराजित हो गये। जब उन हिन्दुओ को सफलता न प्राप्त हुई, तो वे अपने स्थान को भाग गये। वीर हुसेन ने उनका पीछा करके उन्हें बुरी तरह पददलित कर दिया किन्तु रात्रि अँधेरी होने के कारण वह शीघ्र लौट गया।

प्रात काल जफर खाँ ने मिर्ज की ओर प्रस्थान किया। उसी दिन सेना मिर्ज पहुच गई और प्रत्येक व्यक्ति को यात्रा के कष्ट से आराम हो गया। खान अपनी माता के चरणो के चुम्बन हेतु मार्ग ही से सितलगह की ओर चल दिया। बुद्धिमान खान की अनुपस्थिति में सरदार असावधान हो गये थे। उसी जल्दबाज नूरुद्दीन ने अपनी मूर्खता के कारण अपने आपको नष्ट कर लिया। (५४१) वह अपनी असावधानी तथा मूर्खता के कारण बन्दी बना लिया गया और जल्लादो ने उसे देवगीर (देवगिरि) भेज दिया। खान को यह सुन कर बडा दुःख हुआ और वह मिर्ज की ओर चल पडा। वहाँ पहुच कर उसने वह उपद्रव शांत कर दिया। तत्पश्चात् वह बुद्धिमान खान उसी स्थान पर निवास करने लगा। देहली के बादशाह ने उसे मंत्र, यन्त्र तथा छल द्वारा प्रभावित करना चाहा किन्तु उस पर कोई प्रभाव न हुआ। (५४२)

जफर खाँ का सरतेज़ के विरुद्ध प्रस्थान—

उसने एक रात्रि में स्वप्न देखा कि उसे सर्वदा आशावादी रहना चाहिये। यद्यपि नासिरुद्दीन का भाग्य प्रतिकूल हो गया है किन्तु विजय तथा सफलता उसकी ओर बढ रही है। खान यह सुखद समाचार पाकर अपने राज्य से चल कर सर्व प्रथम अरगह पहुँचा। वह

तीन मास तक उस स्थान पर रुका रहा और फिर वहा से उसने सरतेज़ पर चढाई करने के लिये प्रस्थान किया और ईश्वर से इस कार्य में सहायता की याचना की। सर्व प्रथम वह सगर (नामक) किले पर पहुचा। सगर का फौजदार उसका सहायक बन गया। जो सेना भागने के लिये तैयार थी, वह ज़फर खाँ को सरतेज़ से युद्ध करने के लिये आता हुआ देख कर उसकी सहायता हेतु सन्नद्ध हो गई। (५४३)

सिकन्दर खाँ, कीर खाँ तथा वीर हुसैन उससे मिल गये। जब खान की सेना में तीन, चार हज़ार वीर एकत्र हो गये तो एक दिन खान ने सरदारों को बुला कर उनसे गुप्त रूप से कहा कि 'सरतेज़ गुलबर्गे में असख्य सेना लिये हुये है। हम लोग सेना लेकर उस पर चढाई करदें और उसकी हत्या करदें, यद्यपि ऐसा करना कठिन भी हो, तो सम्भव है कि वह किला बन्द कर लेने पर विवश हो जाय। उस समय हम लोग गुलबर्गा छोड कर दौलताबाद की ओर चलदें। यदि वह दुष्ट हमारा पीछा करेगा तो वह स्वय कष्टों के जाल में फस जायगा। जब वह हमारे निकट पहुँच जायगा तो हम लोग पलट कर उस पर आक्रमण कर देंगे और इस प्रकार एक ही आक्रमण में उसकी सेना छिन्न-भिन्न कर देंगे यदि वह हमारा पीछा न करेगा तो हम लोग दौलताबाद पहुच जायेंगे और समस्त (शत्रुओ की) सेना को छिन्न भिन्न करके किले के बन्दियो को मुक्त करा दगे। देवगीर (देवगिरि) के कतगह पर भी अधिकार प्राप्त कर लगे और वहाँ से बहुत स लोगो को लेकर दुष्ट सरतेज़ पर आक्रमण कर देंगे।" सरदार यह सुन कर उस बुद्धिमान खान के आदेशो का पालन करने के लिए कटि-बद्ध हो गये। दूसरे दिन प्रात काल सेना ने दौलताबाद की ओर प्रस्थान किया। जब शिथिल सरतेज को ज्ञात हुआ कि सेना ने बुरम की सीमा पार करली है तो वह युद्ध के लिये गुलबर्गा से शीघ्रातिशीघ्र चल पडा। (५४४)

ज़फ़र ख़ाँ तथा सरतेज़ का युद्ध एव ज़फर ख़ाँ की विजय–

जब ज़फर खाँ गोदावरी पहुँचा तो उसने सेना को आदेश दिया कि वह कूच के मार्ग पर प्रस्थान करे। जहाँ कही से सम्भव हो नौकायें एकत्र की जायें और प्रत्येक स्थान से सेना इकट्ठी की जाय। वह नदी पार करके दौलताबाद की ओर प्रस्थान करना चाहता था। इसी समय एक गुप्तचर ने यह सुखद समाचार सुनाया कि सरतेज इस ओर युद्ध के लिये सेना लेकर आ रहा है। खान ने यह सुन कर शत्रुओ के विनाशक हुसेन (हथिया) को आदेश दिया कि वह अपने यज़कियो (अग्रिम दल) को आगे ले जाकर दुष्टों के यज़कियो (अग्रिम सेना) पर आक्रमण कर दे। वह वीर २० अथवा ३० सवारो को लकर शीघ्रातिशीघ्र चल खडा हुआ। दाम खेडा में उसे शत्रुओ के यज़क (अग्रिम दल) दृष्टिगोचर हुये। मुबारक को जो बद्दा के नाम स प्रसिद्ध था, दुष्ट सरतेज़ ने ३०० सवारो को देकर भेजा था। वीर हुसेन न उसे देख कर उसे क्षण भर भी अवसर मिलने न दिया। (५४५) वह अचानक दुष्ट की सेना पर टूट पडा और उसे छिन्न भिन्न कर दिया। मुबारक को अपने हाथ पैर की सुध बुध न रही और वह बीर (थोड) की ओर भाग गया। उसकी सेना का बहुत बडा भाग बन्दी बना लिया गया।

हुसेन (हथिया) दुष्ट की सेना को पराजित करके अपनी सेना के शिविर को लौट आया। उसकी विजय को ज़फर खाँ ने बडा शुभ चिह्न समझा। वह उसी समय गोदावरी से पलट कर महवा घट्टी की ओर लपका। जिस समय खान बडे वेग से बढ रहा था उसे मार्ग में आता हुआ एक व्यक्ति मिला। उससे उसने सरतेज़ के समाचार पूछे। उस बुद्धिमान पुरुष ने कहा कि "सरतेज़ वीर पार कर चुका है। महवा की ओर उसने सिन्धतन में एक कटघर बना लिया है। अपने एक ओर नहर को करके उसने भागने का मार्ग बन्द कर लिया है।" यह सुन कर

खान ने महवा की ओर सेना लेकर सीधे प्रस्थान किया। जब वह सिन्धतन पहुचा तो शत्रु को सामने छोड कर वह अपने विरोधियो के पीछे की ओर बढा।

जब प्रात काल उसकी सेना पहुँच गई तो उसने अपनी सेना को चारो ओर फैला दिया। इस्कन्दर खाँ तथा कीर खाँ को अग्रिम भाग में नियुक्त किया। उलुग खाँ को दाहिनी पक्ति में स्थान दिया जिससे वह शत्रु के बाँये भाग को नष्ट करदे। हुसेन को उसकी सहायता के लिये नियुक्त किया। अली लाची तथा शरफ बाईं पक्ति में नियुक्त हुये। (५४६) मध्य भाग में वह स्वय विराजमान हुआ। उस ओर सरतेज ने सोचा कि यह सेना अचानक पहुच गई है। *यही अच्छा है कि मैं अपने कटघर में बन्द रहू और युद्ध करने के लिये न निकलूं।* उसने सेना को आदेश दिया कि प्रत्येक भाग पर दृष्टि रखे, कोई भी कटघर के बाहर न निकले तथा कटघर के भीतर ही युद्ध करता रहे। जफर खाँ ने जब यह देखा कि शत्रु अपने स्थान पर जमा हुआ है तो उसने अपनी सेना को आदेश दिया कि वे अपने स्थान से प्रस्थान करें और कटघर पर आक्रमण करें। प्रत्येक वीर अपने अपने दल के साथ विद्युत तथा मेघ के समान गर्जना करता हुआ अग्रसर हुआ। अली लाची ने बाईं पक्ति स सेना आगे बढाई। जब वह चीत्कार करता हुआ कटघर के निकट पहुँचा तो सरतेज को युद्ध के अतिरिक्त कोई उपाय दृष्टिगोचर न हुआ। (५४७)

सरतेज की सेना के आक्रमण से सगर की सेना बडी भयभीत हो गई। वे उस आक्रमण से भागना ही चाहते थे कि जफर खाँ ने मध्य भाग से घोडा बढा कर सगर की सेना को ललकारा कि 'हे कायरो ! मत भागो। क्षण भर के लिए मेरी लीला देखो'। यह कह कर वह चीत्कार करता हुआ कटघर के निकट पहुचा। उसकी सेना ने उसे जब इस प्रकार बढते हुये देखा तो इस्कन्दर खाँ, कीर खाँ तथा हुसेन एव अन्य सरदार दुष्ट के कटघर पर टूट पडे। उन तीनो सिहो ने कुबूलाये लाहौर (सरतेज) को पराजित कर दिया। अली चरगदी भी उसी सेना में था। वह भी पराजित हुआ। अली तथा कुबूला (सरतेज) के भागने पर प्रत्येक सैनिक भाग गया। जफर खाँ ने अपने सरदारो को आदेश दिया कि वे प्रत्येक दिशा से कटार निकाल कर टूट पडें। जैसे ही खान कुछ पग आगे बढा, समस्त सेना कटघर पर टूट पडी। चारो ओर रक्त-पात देख कर सरतेज के लिए भागने के अतिरिक्त कोई उपाय न था किन्तु इस भागने से कोई लाभ न था, क्योकि उसका मार्ग अवरुद्ध था। वह एक बाण द्वारा आहत होकर पिपासा की व्याकुलता के कारण नदी की ओर भागा। बडी कठिनाई से उसने नदी पार की और घोडे पर ठहरने के योग्य न रहने के कारण घोडे से गिर पडा। (५४८)

सरतेज की सेना का भागना तथा सरतेज का मारा जाना—

उसके एक मित्र ने उसके पास पहुच कर उसे पहचान लिया उसने सोचा कि "इस दुष्ट तथा अत्याचारी ने बहुत से राज्य तथा नगर नष्ट कर दिये हैं। मैं यदि उसका सिर काट लू तो उचित है।" अत उसने उसका सिर काट डाला और उसे खान के पास लाया। खान ने सरतेज का सिर देख कर आदेश दिया कि उसे भाले की नोक पर रख कर फिराया जाय। सरतेज का जामाता, कमर जो रक्तपात में उसका बहुत बडा सहायक था बन्दी बना लिया गया। वह बहुत घायल हो चुका था। वीरों ने उसका भी सिर काट डाला। उपद्रवियो के नेता महमूद का भी सिर काट डाला गया ताकि उपद्रव कम हो जाय। एक दूसरा समूह भी अपनी दुष्टता के कारण बन्दी बना लिया गया। ताज किलाता, सैफ अरब, जो धर्म (इस्लाम) का दिन रात विनाश किया करते थे तथा पिथौरा, गधरा, एव दुष्ट शिवराय का, जो प्रत्येक स्थान के मुक्ता थे, विनाश कर दिया गया और कोई भी सिन्धतन से बच कर न जा सका। सवार

भागते हुये नदी में गिर गये। (५४६) भागी हुई सेना ने क्षमा-याचना की और उन्हें क्षमा प्राप्त हो गई।

मलिक ताजुद्दीन विजय के लिये बीड गट्ठी (घाटी) की ओर भेजा गया। सेना को अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हुई (५५०) ज़फ़र खाँ ने शत्रु पर विजय प्राप्त करने के उपरान्त समर भूमि से प्रस्थान किया। एक बहुत बडी सेना दौलताबाद की ओर चल खडी हुई। (५५१)

ज़फ़र ख़ाँ का दौलताबाद की ओर प्रस्थान, किले के बन्दियों की मुक्ति तथा जौहर का भागना—

जौहर यह समाचार सुन कर धार की ओर भाग गया और किले वालों को मुक्ति प्राप्त हो गई। नासिरुद्दीन ने, जो छ मास से बन्दी था, किले से निकल कर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। तत्पश्चात् उसने सोचा कि 'हसन के अतिरिक्त कोई भी राज्य के योग्य नहीं। मुक्त होने के उपरान्त मेरे लिये यही अच्छा है कि मैं उसके चरणों पर अपना शीश नवाऊँ।" उसने अपने सरदारों को बुला कर उनसे परामर्श किया। वे भी उससे सहमत थे। (५५२) तीसरे दिन विजयी खान नगर में प्रविष्ट हुआ। नासिरुद्दीन एक हाथ में तलवार तथा एक हाथ में चत्र लेकर मार्ग में आगे बढा। उसने कहा "मैं आपका चत्रदार[1] हू तथा आपकी तलवार ने मुझे मुक्ति दिलाई है।" खान न उस देख कर उसका बडा आदर सत्कार किया और कहा, 'तू अपना चत्र अपने ही सिर पर रखे रह। वीरो के हाथ में केवल तलवार सौंप दे।" नासिरुद्दीन ने उसे अपनी बात स्वीकार न करते देख कर कहा "चूंकि ईश्वर ने आपको विजय प्रदान की है, अत आप का सिर चत्र का पात्र है। यदि मेरा मुख मुकुट तथा सिंहासन के योग्य होता तो मेरा भाग्य मेरा विरोधी न हो जाता। यदि आप इसे स्वीकार न करेंगे तो मैं भिखारियों के वस्त्र धारण करके इस राज्य से निकल कर कहीं चला जाऊँगा।" (५५३) तत्पश्चात् उस चत्र की छाया बादशाह के सिर पर कर दी और स्वयं कुछ पीछे हट कर भूमि-चुम्बन किया और बडी प्रसन्नता से उसके सम्मुख खडा हो गया।

सुल्तान अलाउद्दीन बहमन शाह का सिंहासनारोहण—

शुक्रवार, २४ रबीउस्सानी ७४८ हि० (३ अगस्त, १३४७ ई०) को ६ घडी दिन चढने पर वह राजसिंहासन पर आरूढ हुआ। उसकी उपाधि अलाउद्दीन हुई। उसका नाम बहमन था और उसका चरित्र फरीदू[2] के समान था। उसकी कुन्नियत[3] अबुल मुज़फ्फर रखी गई। (५५४) बादशाह ने अपने पुत्र मुहम्मद को अपनी प्राचीन पदवी, ज़फर खाँ की दी और उसे ख्वाजये जहाँ किया। इस्कन्दर खाँ बारबक नियुक्त हुआ। शाह बहराम वकीलदर, तथा उमर उसका नायब नियुक्त हुआ। नत्थू शेर खाँ बनाया गया। हुसामे दबल इलची, नायब वज़ीर, मलिक हिन्दू एमादे ममालिक, जैद का पुत्र कुतुबेमुल्क, सैयिद रज़ी उद्दीन, फ़तह मुल्क, शम्स रशीदी खास हाजिब, मलिक शादी नायब बारबक तथा हुसैन गर्शास्प नियुक्त हुये। (५५५) वह कुराबक मैसरा भी नियुक्त हुआ। शम्सुद्दीन, पीगू का पुत्र कुराबक मैमना नियुक्त हुआ। शरफ पारसी उमदतुलमुल्क बनाया गया। इलियास ज़हीर जयूश नियुक्त हुआ। मलिक बैराम कुराबक मैसरा तथा अलाउद्दीन कुराबक मैमना नियुक्त किये गये। ताजुद्दीन, ताजुलमुल्क तथा नजमुद्दीन, जो धार की सीमा से आया था, नसीरे ममालिक बनाये गये। नसीर तुगलची मज्दे मुल्क तथा राजसिंहासन का रक्षक नियुक्त हुआ। हुसेन इब्ने (पुत्र) तूरान ससार के बादशाह

१ शाही छत्र का रक्षक।

२ ईरान का एक प्राचीन प्रसिद्ध बादशाह जिसका राज्य ईसा से ७५० वर्ष पूर्व बताया जाता है।

३ पिता के सम्बन्ध से पुकारने का नाम।

का ख़ाज़िन बनाया गया। मुहम्मद क़दर ख़ाँ मजदरेमुल्क हुआ। मुबारक ख़ाँ का पुत्र शहनये पील हुआ। उसकी पदवी सुल्तान ने परवेज़ रखी। अबू तालिब सर दावतदार तथा मलिक शादी बादशाह के ख़रीताकश नियुक्त हुये। अहमद हरब तथा दहदोर का पुत्र ताजुद्दीन मुख्य जानदार नियुक्त हुये। वे दाहिनी तथा बाईं ओर दूरबाश रखते थे। बहराम नायबे अर्ज़ तथा मलिक छज्जू सभी हाजिबों का सरदार (सैयिदुल हुज्जाब) नियुक्त हुये। क़ाज़ी बहा हाजिबे क़ज़िया, रजब शहनये बारगाह तथा ख़िज़्र उसका नायब, नियुक्त हुये। (५५६)

क़ीमाज़ आख़ुरबके मैमरा तथा ख़ुरासा आख़ुरबके मैमना नियुक्त हुये। महमूद बादशाह के दस्तरख़्वान का शहना तथा शिहाब कुनरबाल सर आबदार नियुक्त हुये। शेरे जालोर सहमुल हशम तथा अली शाह सर परदादार नियुक्त हुये। प्राचीन ख़ान अपने अपने पदों पर विराजमान रहे। उन सब लोगों ने अपनी राजभक्ति प्रदर्शित की। बादशाह ने प्रत्येक को भिन्न-भिन्न स्थान (राज्य) प्रदान किये और उनकी सेना में वृद्धि कर दी। उसके आदेशानुसार सभी अपनी-अपनी अक्ता को चले गये। ख़्वाजये जहाँ मुहम्मद) ने गुलबर्गे से मिज की ओर सेना लेकर प्रस्थान किया। इस्कन्दर ख़ाँ तथा कीर ख़ाँ ने कोएर तथा बिदर की ओर प्रस्थान किया। वीर हुसेन ख़न्दार (कन्धार) की ओर रवाना हुआ और उसने बहुत से विद्रोहियों का रक्तपात किया। कुतुब मलिक महन्द्री की ओर तथा सफ़्दर ख़ाँ ने सगर की ओर प्रस्थान किया। (५५७)

सरदारों की ओर से चिन्ता—

जब सेना इक़्लीमों (प्रान्तों) में चली गई तो शहंशाह दौलताबाद में रह गया। वह सोचने लगा कि 'संसार से राजभक्ति का अभाव हो गया है। मेरे सम्मुख सभी प्राण त्यागने पर सन्नद्ध रहते हैं किन्तु दूर जाकर नाम भी नहीं लेते। सरदार अपनी अपनी अक्ता में व्यस्त हैं। दाहिने तथा बायें, शत्रु मेरी घात में लगे हैं।' रात्रि में उसने एक स्वप्न देखा जिससे वह सन्तुष्ट हो गया। (५५८-५५९)

एमादुलमुल्क तथा मुबारक ख़ाँ का तावी नदी की ओर आक्रमण तथा शत्रुओं के थानों का विनाश—

बादशाह ने सरदारों को आदेश दिया कि वे शत्रु पर आक्रमण करें, सागौन घट्टी को पार करने के उपरान्त शत्रुओं के हितैषियों के शीश काटलें। एमादे ममालिक ने शाह के आदेशानुसार शत्रु की सीमा पर सेना भेजी। मुबारक ख़ाँ के साथ उसने तावी की सीमा पर आक्रमण किया। सर्व प्रथम दाँगरी पर आक्रमण किया। दाँगरी के बुर्ज पृथ्वी पर गिरा दिया। दुष्ट राम नाथ का सिर काट डाला। वहाँ से चचवाल पर चढ़ाई करके वहाँ का किला तोड़ डाला। उस किले से अत्यधिक दास प्राप्त हुये। ढाल महला का सिर काट डाला गया। उसने दो तीन बार तावी नदी तक आक्रमण किया।

अमीरों का अपनी अक़्ताओं की ओर प्रस्थान तथा उनकी विजय—

गर्शास्प ने बादशाह के आदेशानुसार देवगीर (देवगिरि) से कोटगीर की ओर प्रस्थान किया। (५६०) ख़न्दार (कन्धार) में उस समय मुसलमानों की एक सेना थी जो अलराज की सहायक थी। उन लोगों ने एक दिन कोलाहल करके उस किले पर अधिकार जमा लिया। अलराज यह सूचना पाकर आधी रात में किले से भाग खड़ा हुआ। गर्शास्प ने यह सुन कर उनकी बड़ी प्रशंसा की। उसी समय उसने ख़न्दार (कन्धार) की ओर प्रस्थान किया। वहाँ वाले उसके चरणों का चुम्बन करने के लिये उपस्थित हो गये।

वहाँ से उसने कोटगीर (कोटगिरि) की ओर प्रस्थान किया। दूगर का राय उसमें बन्दी बना लिया गया। उस किले में हिन्दुओं का एक समूह रह गया था। गर्शास्प ने बाहर से हिन्दुओं को बुरी तरह परेशान कर दिया। हिन्दू उसके बाणों के भय से किले के बाहर बहुत कम सिर निकालते थे। कुछ लोगो ने अपने प्राणो के भय से सेना को किले में प्रविष्ट होने का मार्ग दे दिया। दूगर का राय किसी न किसी युक्ति से भाग गया। जब गर्शास्प ने कोटगीर (कोटगिरि) पर अधिकार जमा लिया तो उसने देवगीर (देवगिरि) में सदेशवाहक प्रेषित करके बादशाह के पास उस विजय के सुखद समाचार लिख भेजे। बादशाह ने उस विजय पर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। (५६१) नगर में आनन्द मनाया गया।

कुतुबुलमुल्क का सैयिदाबाद अथवा महंद्री पर आक्रमण—

कुतुबुलमुल्क ने बादशाह के आदेशानुसार सेना लेकर प्रस्थान किया। बुरुम पहुँच कर, उस पर अधिकार जमा लिया। तत्पश्चात् उसने अकलकोट विजय किया। वहाँ से उसने महन्द्री पर आक्रमण किया। जिस अधिकारी ने भी विरोध किया, उसकी हत्या कर दी गई। जिसने आज्ञाकारिता स्वीकार करली, वह क्षमा कर दिया गया और उसकी अक्ता सुरक्षित रह गई। किसी को लोहे (शक्ति) से, तो किसी को लोभ द्वारा अधिकार में किया गया। उसके भाग्य से थोडे से सवारो द्वारा तीन चार किलों पर अधिकार जमा लिया गया।

कीर खाँ की कल्यान पर विजय—

कीर खाँ ने कल्यान पर चढाई की। (५६२) किले वालों ने द्वार बन्द कर लिये। यदि वे बाहर निकलते तो परास्त हो जाते। अत्याचारियो पर रात्रि में बाणो की वर्षा होने लगी और अरादो तथा मगरिबी का प्रयोग होने लगा। पाँच मास तक इसी अवस्था में रहने के कारण प्रत्येक व्यक्ति कष्ट से व्याकुल हो गया। जब भोजन सामग्री समाप्त हो गई तो प्रत्येक दिशा से क्षमा-याचना होने लगी। इस प्रकार वे अपमानित होकर बाहर निकले किन्तु खान ने उन्हें क्षमा कर दिया था, अत. किसी ने किसी को कोई हानि न पहुँचाई। वह स्वय किले के द्वार पर बैठ गया और लूट मार रोक दी। (५६३) विजय के उपरान्त कीर खाँ ने विजय पत्र बादशाह के पास भेज दिया। बादशाह इससे बडा प्रसन्न हुआ। एक सप्ताह तक नगर में आनन्द मनाया गया।

इस्कन्दर खाँ का बिदर पर आक्रमण तथा मलीखेड़ पर चढाई—

इस्कन्दर खा ने बिदर पहुँच कर अपनी समस्त अक्ता अपने सेवको में वितरण करदी। प्रत्येक को उसकी योग्यतानुसार ग्राम प्राप्त हो गये। तत्पश्चात् खान ने कहा, "सैनिक युद्ध के नये अस्त्र-शस्त्र तैयार करें।" जब सेना तैयार हो गई तो उसने एक दिन बाहर शिविर लगाये। दूसरे दिन उसने मलीखेड पर चढाई की। जब सेना मलीखेड पहुच गई तो हिन्दुओं की एक सेना ने उन पर आक्रमण किया। तुर्कों ने बहुत से हिन्दुओं की हत्या कर डाली। हिन्दू किले की ओर भाग खडे हुये। वीरो ने हिन्दुओं का पीछा किया। (५६४) जो लोग बाहर थे, वे अश्वों के सुमों द्वारा कुचले गये। अन्य आहत होकर दुर्ग में भाग गये। हिन्दुओं ने दुर्ग का विनाश देख कर आज्ञाकारिता स्वीकार करली। वहाँ से सेना अपने राज्य को लौट गई।

इस्कन्दर का कापानीड के पास पत्र भेजना—

एक दिन खान ने सोचा कि यद्यपि ससार के बादशाह के पास हाथी के अतिरिक्त सभी

वस्तुयें हैं, फिर भी इस स्थान के घोड़ों ने इस प्रकार के पशु नहीं देखे हैं। अत यदि घोड़ों को हाथियों के देखने का अभ्यास हो जाय तो वे हाथियो के सामने से बहुत कम भागा करेंगे। यह सोच कर उसने एक योग्य व्यक्ति तिलग में कापा (नीड) के पास भेजा और उसे मैत्री भाव से परिपूर्ण एक पत्र लिखा कि "हम दोनो पड़ोसी के नाते एक दूसरे की मित्रता तथा सहायता के लिए वचन-बद्ध हो जायें।" (५६५)

कापानीड का उत्तर—

कापा के पास जब यह पत्र पहुँचा तो जो कुछ इसमें लिखा था उसे पढ़ कर वह बड़ा प्रसन्न हुआ और उसे तुरन्त एक पत्र लिखवाया कि 'तू शीघ्र मेरे पास आ जिससे हम आलिंगित हो और शाह के पास आज्ञाकारियों के समान उपहार भेजें।" (५६६)

तिलंग की ओर इस्कन्दर खाँ का प्रस्थान तथा दो हाथी प्राप्त करके राजधानी को भेजना—

कापा का उत्तर पाकर वह शीघ्रातिशीघ्र सेना लेकर बिदर से तिलग की ओर चल खड़ा हुआ। जब वह (कापा) के राज्य की सीमा पर पहुचा तो (कापा) यह समाचार पाकर खान के स्वागतार्थ कुछ फरसग आगे गया। जब कापा की सेना दृष्टिगोचर हुई तो वह सिंह अपनी सेना से पृथक् होकर (राय) की सेना की ओर बढ़ा। दोनों आलिंगित हुये। राय उसे देख कर बड़ा प्रभावित हुआ। वार्त्ता के उपरान्त खान ने उसे बहुत से उपहार भेंट किये।(५६७) कापा ने खान का बड़ा आदर-सम्मान किया और उसके सभी उपहार स्वीकार किये। तत्पश्चात् खान राय को अपने शिविर में ले गया। दोनो सेनायें तीन दिन तक वहाँ शिविर लगाये रही। तीन दिन के उपरान्त खान राय के शिविर में विदा होने के लिये गया और उससे निवेदन किया कि वह शाह के पास उपहार स्वरूप दो हाथी प्रेषित करे। राय ने उत्तर दिया कि "मैं भी यही उपहार शाह के पास भेजने वाला था किन्तु तू दो तीन दिन तक इस स्थान पर और ठहर जिससे मैं तुझे जी भर कर देख लूँ।" दो तीन दिन तक खान राय का अतिथि रहा। तत्पश्चात् उसने सामान बाँधने का आदेश दिया और स्वय राय के शिविर में विदा होने के लिये गया। (५६८) राय ने उससे इतने शीघ्र विदा न होने का आग्रह किया किन्तु खान ने स्वीकार न किया। कापा ने उसे दो हाथी बादशाह के पास भेजने के लिये तथा खान को अत्यधिक उपहार प्रस्तुत किये तत्पश्चात् मित्रता के लिये पुन वचन-बद्ध होकर दोनों विदा हुये। खान ने बिदर पहुँच कर दोनो हाथी, जो पर्वत के समान थे, शाह के पास भेज दिये। शाह ने बिना किसी परिश्रम के हाथी प्राप्त करना अपने लिये बड़ा शुभ समझा और खान के पास, जिसे वह अपना पुत्र कहता था, एक पत्र भेजा। (५६९)

अकार की ओर नासिरुद्दीन का प्रस्थान तथा नरायण द्वारा बन्दी बनाया जाना—

शाह ने नासिरुद्दीन को अपना हितैषी देख कर अकार नामक स्थान प्रदान किया। वह आनन्द विभोर होकर वहाँ पहुँचा किन्तु वह शीघ्र मार्ग-भ्रष्ट हो गया। नरायण ने उसे भ्रम में डाल कर छल द्वारा उसके साथियो की हत्या करा दी और उसे बन्दी बना लिया। सरदारों को चाहिये कि वे बुदबुद के समान प्रत्यक पवन के झोके से जल पर हिलते न रहे। वे अपने किसी कार्य में असावधान न हो और सर्वदा सचेत रहें। वे दो तीन बुद्धिमानों को सदैव अपने साथ रखें। (५७०) उनसे प्रत्येक कार्य में परामर्श करते रहें। अन्यथा असावधानी के कारण उन्हे कष्ट होगा और अन्त मे लज्जित होना पड़ेगा।

गुलबर्गे की ओर ख्वाजये जहाँ का प्रस्थान तथा विजय—

ख्वाजये जहाँ (मुहम्मद पुत्र ऐनुद्दीन वज़ीर बहमनी) ने मिर्जे से गुलबर्गे पर आक्रमण किया। कुतुबेमुल्क (पुत्र जँद बहमनी) महन्द्री से उसकी सहायतार्थ पहुचा। कुछ समय तक वह गुलबर्गे में विध्वस कराता रहा। जब वह पूरा स्थान अधिकार मे आ गया तो उसने दुष्ट बूजा पर आक्रमण किया और उसके प्राचीन दुर्ग को घेर लिया। दुर्ग के एक ओर पत्थर फेंकने के लिए मन्जनीक लगवा दी। उसके चारों ओर दो तीन अरादे भी लगवाये गये। (५७१) कुतुबेमुल्क ने सभी बुर्जों को हानि पहुचाई। बूजा ने दुर्ग का विनाश होते देख कर प्रसिद्ध कर दिया कि 'अब कोई चिन्ता नही। सुल्तान मुहम्मद धार से लौट कर इस स्थान को पहुचने ही वाला है।' कभी वह पताका पर कागज बाँध कर दिखाता कि सुल्तान की ओर से यह फरमान प्राप्त हुआ है। जब क़िले में अनाज न रहा तो किले के कुछ लोग जो बडे दुखी थे एक बुर्ज स कमन्द[1] डाल कर नीचे उतर आये। सेना यह देख कर चारो ओर से किले पर टूट पडी। किले में भगदड मच गई। आक्रमणकारियो ने अत्यधिक धन-सम्पत्ति प्राप्त की। (५७२) गुलबर्गे की विजय के उपरान्त विजय के समाचार, शाह को लिख भेजे गये। तत्पश्चात् वज़ीर के आदेशानुसार एक सप्ताह तक आनन्दोल्लास मनाया जाता रहा, रात दिन सगीत तथा नृत्य का आयोजन होता रहा।

आज़म हुमायूं ख्वाजये जहाँ द्वारा गुलबर्गे की सुव्यवस्था—

तत्पश्चात् वज़ीरे ममालिक (ख्वाजये जहाँ) राजगद्दी पर आरूढ हुआ। (५७३) बडो को अमता प्रदान की। छोटों को कृपि के लिए तैयार किया। राज्य में न्याय का मार्ग खोल दिया, किसी को बल पूर्वक तो किसी को लोभ द्वारा अपने वश में कर लिया। उसने वह राज्य सुव्यवस्थित कर दिया।

सगर की सेना द्वारा सफदर खाँ की हत्या—

आज़म हुमायूं (ख्वाजये जहाँ) शासन प्रबन्ध के कार्य से निश्चिन्त होकर गुलबर्गे में आनन्द-पूर्वक समय व्यतीत करने लगा। (५७४) एक दिन एक दूत ने आकर यह समाचार पहुँचाये कि सगर की सेना में एक उपद्रव उठ खडा हुआ है। सफदर खाँ किम्बा नामक क़िले को विजय करने का प्रयत्न कर रहा था। नौ मास तक उस किले वाले द्वार बन्द किये रहे। किले में अनाज न रहा और लगभग ३० हजार मनुष्य मृत्यु को प्राप्त हो गये किन्तु इसी बीच में मुहम्मद इब्ने (पुत्र) आलम ने अचानक विद्रोह कर दिया। नत्थू अलमबक उसका सहायक हो गया। उन्होंने सेना में विद्रोह करके सफदर खाँ का सिर काट डाला। अली लाची तथा फखरुद्दीन मुहरदार बहाना करके भाग गये। किम्बा से सेना सगर को चल दी। उस (ख्वाजये जहाँ) ने यह सुन कर उन पर आक्रमण करना निश्चय कर लिया। (५७५)

ख्वाजये जहाँ का सगर की सेना को पत्र—

उसने आलम के पुत्र (मुहम्मद) को पत्र लिखवाया कि "सुना जाता है कि तू ने वीरों के सिर काट डाले हैं किन्तु अब निश्चिन्त होकर इस स्थान को चला आ। वहाँ किसी योग्य व्यक्ति को क़िले की कुजी सौंप दे अन्यथा तेरे पास कुछ न रह जायेगा" किन्तु उसने धन के बल पर इस ओर कुछ ध्यान न दिया। (५७६) उसने एक योजना बनाई जिसके द्वारा अपने ही पाँव में कुल्हाडी मार ली। उसने नत्थू अलमबक से कहा कि "तू गुलबर्गे जाकर

१ एक प्रकार की फन्देदार रस्सी जिसे क़िले पर फेंक कर किले पर चढ़ जाते अथवा उतर आते थे।

निवेदन कर कि वह वीर (सफदर) हमारे ऊपर रात दिन अत्याचार किया करता था। जब उसका अत्याचार बहुत बढ़ गया तो उसका शरीर कब्र के योग्य बन गया। यदि स्वामी मुझ से यह राज्य छीन लेगा तो उसे अन्त में लज्जा का प्याला पीना पड़ेगा। यदि वह मेरा राज्य मेरे पास रहने दे तो मैं उसका आज्ञाकारी तथा उसका भक्त रहूँगा और उसके आदेशानुसार प्राणों की बलि दिया करूँगा। मेरे पास एक वीर सेना है और कोई भी इस स्थान पर बलपूर्वक अधिकार नहीं जमा सकता।" जब नत्थू गुलबर्गा पहुँचा और स्वामी (ख्वाजये जहाँ) ने उसकी कथा सुनी तो उसने उसे नगर में बन्दी बना लेने का आदेश दे दिया और शाह के पास समस्त हाल लिख भेजा। शाह ने उसके पास तुरन्त आदेश भेजा कि वह शीघ्र प्रस्थान करे और झवरी नदी (कदाचित भीमा) को पार करे और रात दिन सेना नदी तट पर रखे। (५७७)शाह का फरमान प्राप्त करके उसने सगर की ओर चढ़ाई की और झवरी पार करली। कलकुरू ग्राम से चारो ओर सेना भेजी। सेना ने शत्रुओं के ग्रामो पर आक्रमण करके सगर निवासियो को भयभीत कर दिया। मुहम्मद (पुत्र आलम) कभी युद्ध करता और कभी सन्धि का प्रयत्न करता। कभी युद्ध के लिये सेना भेजता, कभी छल के पत्र लिखता। जब इस प्रकार एक दो मास व्यतीत हो गये तो शहशाह ने राजधानी से प्रस्थान किया।

शाह का सुखद स्वप्न तथा शाही पताकाओं का सगर की ओर प्रस्थान—

बादशाहा में तीन आदतें होती हैं (१) जिन पर अत्याचार हो रहा हो उनका न्याय करना, (२) दीनों को धन प्रदान करना, (३) ईश्वर की उपासना। इस युग में इस प्रकार का कोई अन्य बादशाह दृष्टिगत नहीं हुआ। (५७८) उसकी पदवी अलाउद्दीन है। उसने एक रात्रि में एक स्वप्न देखा जिसमें उसे विजय के शुभ समाचार प्राप्त हुये। उसने देखा कि तुगलुक का पुत्र, जो धर्म का विनाशक है और जिसने हज्जाज[1] की प्रथा प्रचलित कर रक्खी है, भूमि पर तृषित पड़ा है, उसके सिर और आँख पर धूल पड़ी है, उसकी जिह्वा मुह से निकली है और उसका वस्त्र मानो कफन (शव वस्त्र) है। उसके साथी जल की खोज में दौड़ रहे हैं किन्तु जल अप्राप्य है। बादशाह उसे देख कर वहाँ से चल दिया और एक उजाड़ गाँव में पहुँचा। वहाँ से एक वृद्ध मिला जिसने उससे कहा, "तू उस दुष्ट के पास से किस कारण चला आया। ईश्वर तेरा सहायक है। तुझे उससे कुछ भय न करना चाहिये।" (५७९) बादशाह को उस स्वप्न द्वारा विशेष प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। उसने सेना को सगर की ओर प्रस्थान करने का आदेश दिया। तत्पश्चात् उसने देवगीर (देवगिरि) में कदर खाँ, गर्शास्प, एमादे ममालिक, अज्दे मुल्क, किवामुलमुल्क नायब वजीर मलिक अजदर, शम्सुद्दीन पीगू का पुत्र तथा कजक को रहने का आदेश दिया। दूसरे दिन शाह ने सगर की ओर प्रस्थान किया।

शाही पताकाओं का गुलबर्गे पहुँचना तथा आज़म हुमायूँ ख्वाजये जहाँ द्वारा स्वागत—

एक दिन आज़म हुमायूँ (ख्वाजये जहाँ) को दूत ने यह समाचार पहुचाया कि बादशाह दौलताबाद से इस ओर चल चुका है। (५८०) यह सुन कर वह सेना के अधिकारियो को सावधान रहने का आदेश देकर बादशाह की ओर शीघ्रातिशीघ्र चल खड़ा हुआ और उसी

१ हज्जाज बिन (पुत्र) यूसुफ अल सक्फी जो पाँचवें उमय्या खलीफा अब्दुल मलिक की ओर से अरब के कुछ भाग तथा एराक का शासक था। ६६३ ई० में उसने मक्के में काबे को हानि पहुँचाई। प्रसिद्ध है कि उसने अपने जीवन काल में १२०,००० मनुष्यों की हत्या कराई थी और उसकी मृत्यु के उपरान्त बन्दीगृह में ५०,००० बन्दी थे। उसकी मृत्यु ७१४ ई० में हुई।

दिन शाह के पास पहुँच गया। हाजिबों ने उसके पहुँचने के समाचार पाकर शाह को तुरन्त सूचना दी। शाह ने तत्काल उसे उपस्थित होने की अनुमति दे दी। उसने शाह के समक्ष उपस्थित होकर उसके चरणों का चुम्बन किया। शाह ने उसका शीश अपनी गोद में ले लिया। शाह के पूछने पर उसने सात मास की विजयों की एक एक करके चर्चा की। जब एक घड़ी दिन व्यतीत हो गया तो शाह ने मलिक अशबक से कहा कि "सालारे ख्वान (भोजन का प्रबन्ध करने वाला मुख्य अधिकारी) को भोजन लाने का आदेश दो।" (५८१) शाह के आदेशानुसार नाना प्रकार के भोजन खिलाये गये। भोजन के उपरान्त फुक़ा (एक प्रकार की बिना नशे की मदिरा) पी गई। तत्पश्चात् पान बाँटा गया। भोजन के उपरान्त सरदार, शाह के समक्ष दो पंक्तियों में खड़े हो गये। (५८२)

शाही पताकाओं का गुलबर्गे की ओर प्रस्थान तथा मुहम्मद (पुत्र) आलम एवं अन्य सरदारों का बन्दी बनाया जाना—

दो तीन दिन गुलबर्गे में निवास करके शाह ने सगर की ओर प्रस्थान किया। उसी दिन भ्रवरी नदी पार कर ली। तीसरे दिन वह अपने उद्देश्य के निकट पहुँच गया। जब आलम के पुत्र (मुहम्मद) को यह हाल ज्ञात हुआ तो उसके मित्रों ने उसे परामर्श दिया कि वह आज्ञाकारिता स्वीकार कर ले। मुहम्मद अपने मित्रों की वार्ता से विवश होकर बादशाह की सेवा में उपस्थित होने के लिये उठ खड़ा हुआ। उसने बादशाह के चरणों पर अपना सिर रख कर क्षमा-याचना की। बादशाह ने उसकी हत्या का आदेश न दिया और उसे बन्दी बनवा लिया। (५८३) उसने आदेश दिया कि उसकी धन-सम्पत्ति पर अधिकार जमा लिया जाय। यह कह कर वह सगर की ओर चल दिया और वहाँ पहुँच कर हौज़ के किनारे अपने शिविर लगाये।

सगर नगर की सुव्यवस्था तथा मुबारक ख़ाँ का हरियप के राज्य की सीमा की ओर प्रस्थान एवं उसकी विजय—

जिन लोगों पर अन्याचार किया गया था बादशाह ने उनका न्याय किया। प्रत्येक को उसकी योग्यता के अनुसार सम्मानित किया। एक दिन बादशाह ने सरदारों को आदेश दिया कि वे हरियप (हरिहर के राज्य) की सीमा पर आक्रमण करें। (५८४) उस सेना का सरदार मुबारक ख़ाँ नियुक्त हुआ। क़ुतुबेमुल्क (पुत्र जंद बहमनी) ने अग्रिम दल को लेकर प्रस्थान किया। वे विजय करते हुये बढ़ते जा रहे थे कि उन्हें करीचूर नामक क़िला दृष्टिगोचर हुआ। जब सरदार उस किले के निकट पहुचे तो उन्होंने तलवारें खीच ली। उस दिन सायंकाल तक युद्ध होता रहा। रात्रि में दुर्गाध्यक्ष ने दुर्ग समर्पित कर दिया और रक्षा की याचना करने लगा। दूसरे दिन सेना सगर की ओर लौट गई और बादशाह के समक्ष लूट की सामग्री प्रस्तुत कर दी। शाह ने सैनिकों की बड़ी प्रशंसा की।

बादशाह का सगर से मंधौल की ओर प्रस्थान तथा खिपरस एवं अन्य विद्रोहियों से धन प्राप्त करना—

दूसरे दिन शाह ने सगर से किम्बा की ओर प्रस्थान किया। खिपरस यह सुन कर अत्यन्त भयभीत हुआ। (५८५) उसने एक पत्र बादशाह के पास भिजवाया जिसमें उसने यह लिखवाया कि "मैं अपने पापों के कारण शाह के चरणों का चुम्बन करने उपस्थित नहीं हो रहा हूँ यदि शाह मेरे अपराध क्षमा करदें तो मैं दो वर्ष के खराज का भुगतान कर दूंगा।" बादशाह ने

वह तालकोटा पहुँच गया।[1] वह किले से निकल कर शाह के चरणो का चुम्बन करने के लिये बढ़ा और अपने स्त्री तथा बालक शाह के पैरों पर डाल दिये। शाह ने उसे खिलअत प्रदान की और उसे हाथी पर सवार कराया। (५८६)

काज़ी सैफ़ के दूत का पहुँचना तथा अधीनता-स्वीकृति सम्बन्धी पत्र लाना—

दूसरे दिन बादशाह ने एक बहुत बडी सेना लेकर नरायण पर चढाई की। एक पडाव पर सैफ (काज़ी सैफुद्दीन) के दूत ने उपस्थित होकर उसकी ओर से निवेदन किया कि 'वह देहली के बादशाह के अत्याचार देख कर उसकी सेवा के परित्याग के उपरान्त शाह के चरणो का चुम्बन करने आ रहा है।" शाह ने दूत पर विशेष कृपा-दृष्टि प्रदर्शित करके कहा कि वह तुरन्त जाकर अपने स्वामी से कह दे कि वह उससे शीघ्र मिले क्योकि उसके बिना बहुत से कार्य स्थगित हैं। (५८७) दूत शाह की वार्ता सुन कर आनन्दचित्त होकर सैफ के पास लौट गया।

क़ाज़ी सैफ की बादशाह से भेंट—

अरगह का मुक्ता सैफ देहली के बादशाह की सहायता कर रहा था। वह नरायण के साथ रात दिन प्रयत्नशील रहता था। जब उसने यह सुना कि उस अधर्मी हिन्दू ने नासिरुद्दीन से विश्वासघात करके अतिथियो का रक्तपात किया है तो वह उसका विरोधी हो गया। उसने उसे सूचना भेजी कि "मैं शीघ्र तेरा अभिमान समाप्त कर दूगा।" तत्पश्चात् उसने सेना लेकर प्रस्थान किया और मार्ग में देवगीर (देवगिरि) के बादशाह से मिला। शाह ने उसे देख कर उसका स्वागत किया। (५८८) उसे आलिंगन किया और उसके सिर पर स्वर्ण न्योछावर किया। उससे कहा, 'हे सैफ! राजभक्तो को अत्याचारी के विरुद्ध न्यायकारी का साथ देना चाहिये। तू ने जो नासिरुद्दीन की सहायता न की, तो उसका कारण भय होगा। इस समय तू इस्लाम की सहायता करने आया है। बुद्धिमान लोगो को ऐसा ही करना चाहिये। अब हम दोनो मिलकर ससार विजय करलें, इस्लाम के शत्रुओ का सिर मिट्टी में मिला दें। एक व्यक्ति समस्त ससार का रक्तपात कर रहा है। हम मिल कर दुष्ट को बन्दी बना लें तथा वीर बन्दियो को मुक्त करा दे। अभी तक ये लोग पापो के कारण दड देने के लिए जीवित हैं, अत हे ईश्वर! तू विजय के द्वार खोल दे, लोगो की तोबा स्वीकार कर ले और वे अपने पाप का दड भोगने से मुक्त हो जायँ।" (५८९)

शाही पताकाओ का केन्ह नदी पार करना, नरायण के पत्रो का प्राप्त होना और मन्धौल के किले का घेरा जाना—

दूसरे दिन शहशाह ने सेना लेकर मन्धौल पर आक्रमण करने के लिये प्रस्थान किया। वह प्रत्येक शिकारगाह में शिकार खेलता जाता था। जब उसने केन्ह (कृष्णा) पार कर ली तो शत्रु के प्रदेश नष्ट हो गये। सब लोग किलो में घुस गये। नरायण इस समाचार से कि उसका राज्य नष्ट हो रहा है, बडा व्याकुल हुआ। उसने एक बुद्धिमान व्यक्ति को शाह के पास भेज कर लिखा कि, "मैं प्राचीन दास हू। केवल भय के कारण चरण चूमने नही आ रहा हूँ। यदि शाह किसी बुद्धिमान को इस ओर भेज दें तो मै उसे समस्त हाल बता दूँ।" शाह ने आदेश दिया कि काजी बहा हाजिबे कज़िया[2] उस राजद्रोही हिन्दू के पास जाय। (५९०) उससे यह कहे 'हे छली हिन्दू! मै तुझ से बडा रुष्ट हू। यदि तू अपने भाग्य से यहाँ चला आये तो तेरा घरबार सुरक्षित रह जायगा अन्यथा तेरा विनाश कर दिया जायगा।" नरायण ने यह पढ कर किला बन्द करना निश्चय कर लिया। वह स्वय

१ इसके बाद के कुछ छन्दों का पता नहीं।
२ पुस्तक में हाजिब किस्सा है।

जामखण्डी में रह गया। मन्धौल में गोपाल को भेजा। तरदल तथा बगरकोट में भी दो हिन्दू और बहुत बड़ी सेनायें भेजीं। शाह ने यह देख कर सर्व प्रथम मन्धौल नामक किले को विजय करना और तत्पश्चात् उस दुष्ट पर आक्रमण करके उसकी हत्या करना निश्चय कर लिया। (५६१)

नरायण की सेना का रात्रि मे छापा मारना तथा उसकी सेना की पराजय—

तीसर दिन उस विरोधी हिन्दू ने रात्रि में छापा मारा। दो सौ सवार तथा एक हज़ार पैदल सैनिक, जिन में हिन्दू तथा दुष्ट मुसलमान दोनों ही सम्मिलित थे, चीत्कार करते हुये शाही सेना के रक्तपात के लिये बढ़े। शहंशाह कोलाहल सुन कर तुरन्त घोड़े पर सवार हुआ और सेना के सरदार भी बाहर निकले। मुबारक खाँ सैफ, शाह का वकील दर तथा उसका नायब, मलिक अहमद हर्वे और बहुत से सवार एवं प्यादे आक्रमण के लिये अग्रसर हुये। (५६२) जब शाही सेना वाले युद्ध करने को बढ़े तो रात्रि में छापा मारने वाले भाग खड़े हुये। कुछ लोग तो किले में घुस गये और कुछ भाग गये। बहुत से हिन्दू बन्दी बना लिये गये और बहुत से हिन्दू बाणों द्वारा मार डाले गये। कुल दस या बीस सैनिक सिंहों के हाथ से बच कर भाग सके। शाही सेना उनका पीछा करती हुई जामखंडी द्वार तक पहुंची और फिर वहां से लौट आई। प्रात काल बन्दियों में से कुछ को हाथी के पैरों के नीचे कुचलवा दिया गया, कुछ को किले के चारों ओर फांसी देदी गई। उनमें हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध नेता भी बन्दी बना लिया गया। शाह ने उसे देख कर फांसी देने का आदेश दे दिया। उस दिन नरायण की शक्ति बहुत कम हो गई। (५६३) वह इतना भयभीत हो गया कि उसे पुन रात्रि मे छापा मारने की इच्छा न हुई।

शाहज़ादा जफर खाँ का पहुँचना—

शाहज़ादा जफर खाँ, जोकि बादशाह का उत्तराधिकारी था, ससार के बादशाह की पताकाओं के मन्धौल पहुचने की सूचना पाकर अत्यधिक अश्वारोहियों तथा पदातियों को एकत्र करके शाह के चरणों का चुम्बन करने के लिए मिर्ज से चल खड़ा हुआ। अरादे तथा मज्जनीर्ज़े भी उसने भेजी। शाह ने राज्य के अधिकारियों को आदेश दिया कि वे सेना के शिविर से दो फरसग आगे शाहज़ादे के स्वागतार्थ प्रस्थान करें। तत्पश्चात् हाजिबों द्वारा उसके पहुँचने की सूचना देने पर, शाह ने उसे उपस्थित करने का आदेश दिया। उसने शाह के *समक्ष तीन स्थानों पर धरती पर शीश नवाया। शाह उसे देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ।* (५६४) तत्पश्चात् उसे आलिंगन किया। उसने शाह के समक्ष अत्यधिक उपहार प्रस्तुत किये। शाह ने उसे खिलअत प्रदान की।

विजयी सेना का मंधौल वालों से युद्ध—

एक दिन समस्त सरदारों ने घट्टप[१] नदी पार करके किले पर एक ऐसा आक्रमण किया जिससे वह दुर्ग कम्पित हो उठा। बाणों की वर्षा से प्रत्येक बुर्ज में कोलाहल मच गया। दो तीन बुर्जों का समूल उच्छेदन कर दिया। सेना के वीर किले वालों पर बाणों तथा भालों से आक्रमण करने लगे। जब शत्रु का पतन होने लगा तो बादशाह ने हृदय में कहा कि 'यदि इस युद्ध में मुसलमानों की हत्या होती रहे और यदि मैं युद्ध के उपरान्त प्रत्येक मुसलमान के बाल के लिए लाखों हिन्दुओं की हत्या करा दूंगा तो भी कोई लाभ न होगा। अत, यही

---

१ घट्टप अथवा, घटप्रभा, कृष्णा नदी से मिलने वाली एक छोटी नदी।

वह तालकोटा पहुच गया।[1] वह किले से निकल कर शाह के चरणो का चुम्बन करने के लिये बढा और अपने स्त्री तथा बालक शाह के पैरो पर डाल दिये। शाह ने उसे खिलअत प्रदान की और उसे हाथी पर सवार कराया। (५८६)

काज़ी सैफ़ के दूत का पहुँचना तथा अधीनता-स्वीकृति सम्बन्धी पत्र लाना—

दूसरे दिन बादशाह ने एक बहुत बडी सेना लेकर नरायण पर चढाई की। एक पडाव पर सैफ (काज़ी सैफुद्दीन) के दूत ने उपस्थित होकर उसकी ओर से निवेदन किया कि 'वह देहली के बादशाह के अत्याचार देख कर उसकी सेवा के परित्याग के उपरान्त शाह के चरणो का चुम्बन करने आ रहा है।" शाह ने दूत पर विशेष कृपा-दृष्टि प्रदर्शित करके कहा कि वह तुरन्त जाकर अपने स्वामी से कह दे कि वह उससे शीघ्र मिले क्योकि उसके बिना बहुत से कार्य स्थगित हैं। (५८७) दूत शाह की वार्ता सुन कर आनन्दचित्त होकर सैफ के पास लौट गया।

क़ाज़ी सैफ की बादशाह से भेंट—

अरगह का मुक्ता सैफ देहली के बादशाह की सहायता कर रहा था। वह नरायण के साथ रात दिन प्रयत्नशील रहता था। जब उसने यह सुना कि उस अधर्मी हिन्दू ने नासिरुद्दीन से विश्वासघात करके अतिथियो का रक्तपात किया है तो वह उसका विरोधी हो गया। उसने उसे सूचना भेजी कि "मैं शीघ्र तेरा अभिमान समाप्त कर दूगा।" तत्पश्चात् उसने सेना लेकर प्रस्थान किया और मार्ग में देवगीर (देवगिरि) के बादशाह से मिला। शाह ने उसे देख कर उसका स्वागत किया। (५८८) उसे आलिंगन किया और उसके सिर पर स्वर्ण न्योछावर किया। उससे कहा, 'हे सैफ! राजभक्तो को अत्याचारी के विरुद्ध न्यायकारी का साथ देना चाहिये। तू ने जो नासिरुद्दीन की सहायता न की, तो उसका कारण भय होगा। इस समय तू इस्लाम की सहायता करने आया है। बुद्धिमान लोगो को ऐसा ही करना चाहिये। अब हम दोनो मिलकर ससार विजय करलें, इस्लाम के शत्रुओ का सिर मिट्टी में मिला दें। एक व्यक्ति समस्त ससार का रक्तपात कर रहा है। हम मिल कर दुष्ट को बन्दी बना लें तथा वीर बन्दियो को मुक्त करा दें। अभी तक ये लोग पापो के कारण दड देने के लिए जीवित हैं, अत हे ईश्वर! तू विजय के द्वार खोल दे, लोगो की तौबा स्वीकार कर ले और वे अपने पाप का दड भोगने से मुक्त हो जायें।" (५८९)

शाही पताकाओं का केन्ह नदी पार करना, नरायण के पत्रों का प्राप्त होना और मन्धौल के क़िले का घेरा जाना—

दूसरे दिन शहशाह ने सेना लेकर मन्धौल पर आक्रमण करने के लिये प्रस्थान किया। वह प्रत्येक शिकारगाह में शिकार खेलता जाता था। जब उसने केन्ह (कृष्णा) पार कर ली तो शत्रु के प्रदेश नष्ट हो गये। सब लोग किलो में घुस गये। नरायण इस समाचार से कि उसका राज्य नष्ट हो रहा है, बडा व्याकुल हुआ। उसने एक बुद्धिमान व्यक्ति को शाह के पास भेज कर लिखा कि, "मै प्राचीन दास हू। केवल भय के कारण चरण चूमने नही आ रहा हूँ। यदि शाह किसी बुद्धिमान को इस ओर भेज दें तो मै उसे समस्त हाल बता दूँ।" शाह ने आदेश दिया कि काज़ी बहा हाजिबे कज़िया[2] उस राजद्रोही हिन्दू के पास जाय। (५९०) उससे यह कहे 'हे छली हिन्दू! मै तुझ से बडा रुष्ट हू। यदि तू अपने भाग्य से यहाँ चला आये तो तेरा घरबार सुरक्षित रह जायगा अन्यथा तेरा विनाश कर दिया जायगा।" नरायण ने यह पढ कर किला बन्द करना निश्चय कर लिया। वह स्वय

---

१ इसके बाद के कुछ छन्दों का पता नहीं।

२ पुस्तक में हाजिबे क़िस्सा है।

जामखण्डी में रह गया। मन्धोल मे गोपाल को भेजा। तरदल तथा बगरकोट मे भी दो हिन्दू और बहुत बडी सेनाये भेजी। शाह ने यह देख कर सर्व प्रथम मन्धोल नामक किले को विजय करना और तत्पश्तात् उस दुष्ट पर आक्रमण करके उसकी हत्या करना निश्चय कर लिया। (५६१)

नरायण की सेना का रात्रि मे छापा मारना तथा उसकी सेना की पराजय—

तीसरे दिन उस विरोधी हिन्दू ने रात्रि में छापा मारा। दो सौ सवार तथा एक हजार पैदल सैनिक, जिन में हिन्दू तथा दुष्ट मुसलमान दोनों ही सम्मिलित थे, चीत्कार करते हुये शाही सेना के रक्तपात के लिये बढे। शहंशाह कोलाहल सुन कर तुरन्त घोडे पर सवार हुआ और सेना के सरदार भी बाहर निकले। मुबारक खाँ सैफ, शाह का वकील दर तथा उसका नायब, मलिक अहमद हर्ब और बहुत से सवार एव प्यादे आक्रमण के लिये अग्रसर हुये। (५६२) जब शाही सेना वाले युद्ध करने को बढे तो रात्रि में छापा मारने वाले भाग खडे हुये। कुछ लोग तो किले में घुस गये और कुछ भाग गये। बहुत से हिन्दू बन्दी बना लिये गये और बहुत से हिन्दू वाणो द्वारा मार डाले गये। कुल दस या बीस सैनिक सिहों के हाथ से बच कर भाग सके। शाही सेना उनका पीछा करती हुई जामखडी द्वार तक पहुची और फिर वहाँ से लौट आई। प्रात काल बन्दियो में से कुछ को हाथी के पैरो के नीचे कुचलवा दिया गया, कुछ को किले के चारो ओर फाँसी देदी गई। उनमें हिन्दुओ का एक प्रसिद्ध नेता भी बन्दी बना लिया गया। शाह ने उसे देख कर फाँसी देने का आदेश दे दिया। उस दिन नरायण की शक्ति बहुत कम हो गई। (५६३) वह इतना भयभीत हो गया कि उसे पुन रात्रि में छापा मारन की इच्छा न हुई।

शाहजादा जफ़र खाँ का पहुँचना—

शाहजादा जफर खाँ, जोकि बादशाह का उत्तराधिकारी था, ससार के बादशाह की पताकाओ के मन्धोल पहुचने की सूचना पाकर अत्यधिक अश्वारोहियों तथा पदातियो को एकत्र करके शाह के चरणो का चुम्बन करने के लिए मिज से चल खडा हुआ। अरादे तथा मन्जनीकें भी उसने भेजी। शाह ने राज्य के अधिकारियों को आदेश दिया कि वे सेना के शिविर से दो फरसग आगे शाहजादे के स्वागतार्थ प्रस्थान करें। तत्पश्चात् हाजिबों द्वारा उसके पहुँचने की सूचना देने पर, शाह ने उसे उपस्थित करने का आदेश दिया। उसने शाह के समक्ष तीन स्थानों पर धरती पर शीश नवाया। शाह उसे देख कर बडा प्रसन्न हुआ। (५६४) तत्पश्चात् उसे आलिगन किया। उसने शाह के समक्ष अत्यधिक उपहार प्रस्तुत किये। शाह ने उसे खिलअत प्रदान की।

विजयी सेना का मधौल वालो से युद्ध—

एक दिन समस्त सरदारो ने घट्टप[१] नदी पार करके किले पर एक ऐसा आक्रमण किया जिससे वह दुर्ग कम्पित हो उठा। वाणो की वर्षा से प्रत्येक बुर्ज में कोलाहल मच गया। दो तीन बुर्जो का समूल उच्छेदन कर दिया। सेना के वीर किले वालो पर वाणों तथा भालों से आक्रमण करने लगे। जब शत्रु का पतन होने लगा ता बादशाह ने हृदय में कहा कि 'यदि इस युद्ध में मुसलमानों की हत्या होती रहे और यदि मैं युद्ध के उपरान्त प्रत्येक मुसलमान के बाल के लिए लाखो हिन्दुओं की हत्या करा दूँगा तो भी कोई लाभ न होगा। अत, यही

१ घट्टप अथवा घटप्रभा, कृष्णा नदी से मिलने वाली एक छोटी नदी।

उचित है कि मैं युक्ति से कार्य करूँ।" (५६५) उस समय शाह ने यह आदेश दिया कि समस्त सेना किले से लौट जाय। सभी सरदार किले के भिन्न-भिन्न भागों में फैल जाय। उस दिन किले वाले बड़े व्याकुल हुये। कुछ तो मारे गये और शेष घेर लिये गये। चार मास तक सेना रक्तपात करती रही। तत्पश्चात् नरायण ने दूत भेज कर क्षमा-याचना की और निवेदन किया कि "मैं केवल भय के कारण उपस्थित न होता था। जब बादशाह का क्रोध शान्त हो जायगा तो मैं शाह के द्वार पर उपस्थित हो जाऊँगा।" उसने दो वर्ष का खराज भी भिजवाया। जब हिन्दू ने शाह को जिजया देना स्वीकार कर लिया तो दूसरे दिन शाह मन्धौल से मिर्ज की ओर चल पड़ा और दो एक मास तक मिर्ज के किले में रहा।

पट्टन की ओर प्रस्थान—

मिर्ज से उसने कौंकन की ओर प्रस्थान किया। (५६६) उसने पट्टन घाटी बड़े वेग से पार की। बलाल को जब उसके आने की सूचना मिली तो वह भाग गया। पट्टन छोड़ कर वह एक पर्वत में घुस गया। दूसरे दिन सेना पट्टन पहुची। तुर्कों ने हिन्दुओं की धन सम्पत्ति लूट ली। दो तीन सप्ताह तक सेना उस स्थान पर लूट मार करती रही। सभी हिन्दू भयभीत होकर पर्वतों में घुस गये। तत्पश्चात् शाह लूट मार के उपरान्त अपने राज्य की ओर लौट गया। मिर्ज पहुँच कर सेना ने विश्राम किया। शाह उस किले में दो एक मास तक भोग विलास में ग्रस्त रहा। तत्पश्चात् उसने सेना लेकर सगर की ओर प्रस्थान किया।

शाही पताकाओं का सगर तथा गुलबर्गे की ओर प्रस्थान—

जब बादशाह सगर के निकट पहुँचा तो प्रत्येक स्थान से जमींदारों ने उपस्थित होकर उपहार भेंट किये। दूसरे दिन शाह ने प्राचीन सगर में शिविर लगाये। मुक्तों को नये आज्ञा-पत्र दिये और उनसे पिछला कर प्राप्त किया। दो तीन सप्ताह तक सेना परगनों से कर प्राप्त करती रही। अक्ताओं तथा सेना के प्रबन्ध के उपरान्त ग्रामीणों एवं सैनिकों को सुख-सम्पन्न बना कर, उसने भँवरी नदी पार की और गुलबर्गे की अक्ता में प्रविष्ट हुआ। (५६७) उसने मलीखेड़ तथा सीडम (के राय) से खराज प्राप्त किया। शिव राय ने भी उसके पास खराज प्रेषित किया। वहाँ से वह प्रत्येक दिशा में शिविर लगाता तथा शिकार खेलता रहा।

क़ीर खां का कोएर से विद्रोह के विचार से आना तथा उसकी पराजय—

सुना जाता है कि कीर खाँ, जिसे अत्याचार द्वारा उन्नति प्राप्त हुई थी, एक दिन धूर्तता से बादशाह से आकर मिला। शाह ने उसका स्वागत किया और उसे खिलअत प्रदान की। तीसरे दिन वह षड्यन्त्र का भण्डार उस स्थान से चला गया। शाह ने यह सुन कर उसका तुरन्त पीछा किया और उसके शिविर पर अधिकार जमा लिया। उसकी सेना का बहुत बड़ा भाग नष्ट हो गया। क़ीर खाँ स्वयं एक नदी की ओर भागता हुआ पहुचा। वह कोएर की ओर भागा। (५६८) शाह यह देख कर अपने शिविर की ओर लौट आया और बन्दियों को मुक्त कर दिया।

शाही पताकाओं का कल्यान पहुँचना तथा इस्कन्दर खां का बादशाह से मिलना—

तत्पश्चात् वह विजयी बादशाह कल्यान पहुचा और उसने वहाँ का किला घेर लिया। कुछ दिन पश्चात् इस्कन्दर खाँ, जिसे शाह अपना पुत्र कहा करता था, उसके चरणों का चुम्बन करने पहुचा। शाह ने उसे एक चत्र प्रदान किया और उसे आदेश दिया कि वह विश्वासघाती वृद्ध (कीर खाँ) पर आक्रमण करे। शाह के आदेशानुसार वह उस दुष्ट वृद्ध के विरुद्ध, जिसका नाम जिया इब्ने (पुत्र) फीरोज़ (कीर खाँ) था, चल खड़ा हुआ। (५६६)

इस्कन्दर खां का क़ीर ख़ाँ से युद्ध तथा क़ीर ख़ाँ का उसके द्वारा बन्दी बनाया जाना—

इस्कन्दर खां लौट कर कल्यान से बिदर की ओर गया और वहाँ से उसने युद्ध करने के लिये कोएर की ओर चढाई की। जब बिदर से निकल कर उसने दो फ़र्सग पर शिविर लगाये तो वह अत्याचारी तथा विश्वासघाती वृद्ध यह समाचार सुन कर कोएर से सेना लेकर निकला और उसने बिदर की सेना के शिविर पर आक्रमण कर दिया। उस वीर ने अपने शिविर से निकल कर बडे वेग से आक्रमण किया। उस आक्रमण से शत्रु के मध्य भाग की सेना पराजित हो गई और उसने भागने वालो का पीछा किया। सुना जाता है कि वह वृद्ध उस समर भूमि में घात लगाये बैठा था। जब उसने शत्रु द्वारा अपने मध्य भाग की सेना को पराजित होते देखा तो उसने शत्रु के मध्य भाग पर आक्रमण करके उसे पराजित कर दिया और बिदर की सेना का शिविर उसके अधिकार में आ गया। वीर फखरुद्दीन बिन (पुत्र) शाबान ने कुछ सवारो को लेकर उस पर आक्रमण किया। क़ीर खाँ ने, जिसके पास बहुत बडी सेना थी उस पर आक्रमण किया। फखर बिन (पुत्र) शाबान उसका सामना न कर सका। (६००) वह पीछे हटा। अन्त में कुछ वीर युद्ध करने के लिये उसकी सहायता को पहुच गये। उनमे से एक जोर बिम्बाल अबू बक्र था। कुछ अन्य वीरो ने भी आपस मे कहा कि "यदि इस स्थान से हम भागेंगे तो खान को कल कौन सा मुख दिखायेंगे अत यही उचित है कि हम वीरता से युद्ध करें।" तत्पश्चात् उन लोगो ने एक साथ आक्रमण कर दिया। क़ीर खाँ यह देख कर भाग गया। फखर बिन (पुत्र) शाबान ने पीछे से पहुच कर उसके केश खीच लिये। दोनो अश्वारोही, अश्वो से गिर पडे। समर भूमि मे कोलाहल होने लगा। क़ीर खाँ की सेना ने उसे छुडाने का बडा प्रयत्न किया किन्तु उन्हे सफलता न हुई। बिदर की सेना को विजय प्राप्त हो गई। क़ीर खाँ का बन्दी बना कर वे खान के पास ले गये। इस्कन्दर खाँ उसे बन्दी देख कर बडा प्रसन्न हुआ। (६०१) उसने फखर बिन (पुत्र) शाबान को आदेश दिया कि वह विजय-पत्र बादशाह के पास लेजा कर उसे यह सुखद समाचार सुनाये। वह स्वय रण क्षेत्र स कोएर की ओर चल दिया। वहाँ पहुच कर उसन वह किला घेर लिया।

शाही पताकाओं का कल्यान से प्रस्थान तथा किले की विजय—

जब शाही पताकायें काएर पहुँची और इस्कन्दर खाँ को यह हाल ज्ञात हुआ तो वह उस वृद्ध को बन्दी बना कर शाह के चरणो क चुम्बन हेतु आनन्द विभोर हाकर गया। शाह न उसके शीश का चुम्बन करके कहा कि 'इसी प्रकार अपने वचन से विचलित न होना चाहिये।" तत्पश्चात् उसने कहा, "यह दुष्ट वृद्ध इस योग्य है कि इसकी तुरन्त हत्या कर दी जाय।" खान ने यह सुन कर कहा कि "मेरे कहने पर इस क्षमा कर दिया जाय। तत्पश्चात् उसके किले के नीचे शिविर लगाये जायें। यदि वह आज्ञाकारिता तथा अत्याचार से तोबा करना, एव जिजया अदा करना स्वीकार कर ले तो शाह उसे क्षमा कर दे अन्यथा उसका सिर तलवार से नि सकोच काट डाला जायगा।" शाह ने यह सुन कर खान की बात स्वीकार कर ली और राजसी ठाठ से कोएर के किले के नीचे शिविर लगाये। (६०२)

इस्कन्दर ख़ाँ की प्रशंसा तथा पुस्तक के समर्पण का उल्लेख—

मै इस सोच विचार में था कि यह पुस्तक शाह के पास कौन लेजा सकता है कि बादशाह के ख्वास नायबे हाजिब बहाउद्दीन ने, जो इसस पूर्व हाजिबे किस्सा था, मुझ से कहा कि "यह बडा ही उत्तम हो यदि तू यह पुस्तक इस्कन्दर खान क पास ले जाय। वह तेरे निपय

में शाह से कह देगा।" जब मैं ने उस बुद्धिमान से यह बात सुनी तो मैं शाहज़ादे के महल की ओर गया। मुझे कोई भी उसके समान नहीं मिल सका है। वह मानो रुस्तम है। मैं ने उसके जो गुण सुन रखे थे प्रत्यक्ष देख लिये और सुनने की अपेक्षा मुझे उसमें २०० गुणा अधिक दृष्टिगोचर हुये। (६०३)

हिन्दुस्तान तथा सुल्तान अलाउद्दीन खलजी की प्रशंसा एवं मुहम्मद शाह इब्ने (पुत्र) तुगलुक शाह की निन्दा—

हिन्दुस्तान बड़ा ही सुन्दर देश है। स्वर्ग इससे ईर्ष्या करता है। इसकी चारों फसलों की वायु स्वर्ग की वायु के समान है। पग पग पर यहाँ नहरें बहती हैं जिनका जल आबे हयात[1] के समान है। उसकी पतझड़ में बहार का जन्म होता है। आँधी भी यहाँ की पुरवा हवा के समान है। प्रातः तथा सायं, प्रत्येक समय यहाँ मनुष्य के लिये आनन्द रहता है। फूलों तथा मेवों की यहाँ अधिकता है। यहाँ की मिट्टी से भी गुलाब के फूल की सुगंध आती है। यहाँ का जल पीकर वृद्ध युवक बन जाता है और मृतक में प्राण आ जाते हैं। जो कोई भी यहाँ दोनों एराक सिन्ध तथा अरब से आ जाता है तो फिर उसे अपनी जन्मभूमि कभी याद नहीं आती। (६०४) जो लोग सर्वदा यात्रा करते रहते हैं और जिन्हें कोई स्थान अच्छा नहीं लगता और जो किसी नगर में एक मास भी विश्राम नहीं करते, वे यात्रा करते हुये जब हिन्दुस्तान पहुँचते हैं तो अपनी यात्रा त्याग कर यहीं निवास करने लगते हैं और फिर किसी अन्य स्थान को बहुत कम जाते हैं। नाम[2] के दो एक ही मालियों ने इस उद्यान में पतझड़ तथा बहार का कार्य किया। यद्यपि दोनों का नाम मुहम्मद है किन्तु एक ने अत्याचार (मुहम्मद बिन तुगलुक) तथा दूसरे ने (अलाउद्दीन खलजी) सुख पहुँचाया। यदि उस (अलाउद्दीन) ने हिन्द से समुद्र तक के स्थानों पर अधिकार जमाया तो इस (मुहम्मद बिन तुगलुक) ने उन्हें खो दिया। जो स्थान उसके न्याय द्वारा आबाद हुये, वे इसके अत्याचार द्वारा नष्ट हो गए। जो स्थान उसके राज्य में आज्ञाकारी थे वे इसके राज्य में विद्रोही हो गए। जो किले उसके राज्य में पद-दलित थे, वे इसके राज्य में आकाश से बातें करने लगे। यदि उसने इस्लाम फैलाया तो इसने अधिकांश स्थानों पर कुफ्र फैला दिया। यदि लोग उसके राज्य में सुख-सम्पन्नता से जीवन व्यतीत करते थे तो इसके राज्य में दीन अवस्था के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गए। यदि उसके नाम के सोने के सिक्के चलते थे, तो इसने तांबे का सिक्का चला दिया। संसार को सुख देने के कारण ईश्वर उसे इसका अच्छा फल देगा। (६०५) इसने इस प्रकार संसार को नष्ट कर दिया है, मुझे ज्ञात नहीं कि वह ईश्वर को क्या उत्तर देगा। इसने कुलीनों (मुसलमानों) का विनाश कर दिया, काफ़िरों की सन्तान को उन्नति दी। इसने बहुत से (सैयिदों) की अत्याचार-पूर्वक हत्या करा दी। इससे भगवान् तथा मनुष्य दोनों ही अप्रसन्न हो गये। हिन्दुस्तान में वह दूसरा यजीद[3] उत्पन्न हुआ। उसने जितनी बात कही अथवा की वे अनुचित थीं। उस दुष्ट ने समस्त हिन्दुस्तान में किसी को जो भी वचन दिया, उसका पालन न किया। विद्रोहियों की शक्ति बढ़ गई। चारों ओर से उपद्रव उठ खड़ा हुआ। प्रत्येक दिशा में किसी न किसी वीर ने विद्रोह कर दिया। प्रत्येक राज्य में दूसरा बादशाह

१ वह जल जिसके पीने के उपरान्त मनुष्य अमर हो जाता है।

२ सुल्तान मुहम्मद अलाउद्दीन खलजी तथा सुल्तान मुहम्मद इब्ने (पुत्र) तुगलुक शाह।

३ उमय्या वंश के संस्थापक मुआविया का पुत्र यजीद प्रथम जिसने इमाम हुसैन एवं उनके सहायकों तथा वंश वालों की हत्या कराई। उसकी मृत्यु ६८३ ई० में हुई।

हो गया। माबर में एक पृथक् राजसिंहासन हो गया। वहा एक सैयिद बादशाह हो गया। तिलग प्रदेश में विद्रोह हो गया। तिलग का किला तुर्कों के हाथ से निकल गया। एक मुर्तद ने कम्पड के राज्य पर अधिकार जमा लिया। उसने गूती से माबर की सीमा तक (के प्रदेश) अपने अधिकार में कर लिये। कुहराम, तथा सामाना से पजाब तक, लाहौर तथा मुल्तान, के प्रदेश नष्ट हो गये। सत्य के मार्ग पर दृढ रहने वाले फकीरो (सन्तो) को अत्याचार द्वारा परेशान कर दिया गया। लखनौती मे भी एक व्यक्ति बादशाह बन बैठा। तिरहुट तथा गौड मवाम[1] बन गये। सर्व साधारण विद्रोह करने लगे। समस्त मालवा में भी विद्रोह हो गया। कुछ स्थानो के अतिरिक्त सभी पर काफिरो का अधिकार हो गया। हिन्दुओं ने समस्त प्रदेश अपने अधिकार में कर लिये। मुसलमान हिन्दुओं के समान किले में घुस गये। गुजरात में भी विद्रोह हो गया। वहाँ भी कुफ्र में वृद्धि तथा इस्लाम में कमी हो गई। जब बादशाह का अत्याचार सीमा से बढ गया तो समस्त मरहठा राज्य भी उसका विरोधी हो गया। उन्होने कमीने बादशाह के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और उन्हे कुफ्र की ओर अधिक लाभ दृष्टिगत होने लगा। राज्य मे एक ओर से दूसरी ओर तक विद्रोह होने लगा और सरदार विरोध करने लगे। उसमें युद्ध का सामर्थ्य न रहा। (६०६) उसकी सेना नित्य प्रति कम होने लगी। अत्याचार, अकाल तथा हत्या के कारण उससे सर्व साधारण तथा विशेष व्यक्ति सभी घृणा करने लगे।

तग़ी नायब शहनये बारगाह का विद्रोह और सुल्तान मुहम्मद इब्ने तुग़लुक शाह का उसके कारण ३ वर्ष तक परेशान रहना तथा उस के राज्य का पतन—

तग़ी नामक एक तुर्क, सुल्तान का एक विश्वासपात्र था। वह नायब शहनये बारगाह था। वह अनेक वर्षों तक सुल्तान का भक्त रहा और उसने उसके हित के लिए अपना समस्त जीवन समर्पित कर दिया था। उसने उसके शत्रुओं के विरुद्ध घोर युद्ध किया था और उस का परम भक्त तथा बहुत बडा हितैषी था। उसने सुल्तान के अत्यधिक अत्याचार सहन किये थे और उसका आज्ञाकारी रह चुका था। जब सुल्तान के अत्याचार की सीमा न रही तो उसका हृदय भी उसकी कठोरता के कारण कुफ्र (विद्रोह) की ओर प्रवृत्त होने लगा। वह नायब शहनये बारगाह अत्याचारी बादशाह से रुष्ट हो गया। वह गुजरात प्रदेश मे था और वहाँ का शेर बबर था। जब सुल्तान गुजरात से मरहठा राज्य मे मुसलमानो का रक्तपात करने के लिए आया तो वह उस राज्य में उसे छोड आया था। उसने सुल्तान के अत्याचारो से खिन्न होने के कारण विद्रोह कर दिया। समस्त नगरो मे सेनाये उसके पास एकत्र हो गई। देवगीर (देवगिरि) की सेना को पराजित करने के उपरान्त सुल्तान ने तग़ी पर आक्रमण करने के लिये प्रस्थान किया। जब वह गुजरात पहुँचा तो तग़ी ने उससे युद्ध करने के लिए गुजरात मे सेना इकट्ठा की। उसके पास एक हजार सवार एकत्र हो गये थे। (६०७) वह कभी कभी दिन में सुल्तान के मध्य भाग की सेना पर आक्रमण करता और अनेक सरदारों की हत्या कर डालता और सुल्तान की सेना की पक्तियो को छिन्न-भिन्न कर देता। सुल्तान की हत्या न कर पाने के कारण वह अपने शिविर को लौट जाता। सुना जाता है कि वह सिंह प्रत्येक सप्ताह दूसरे-दूसरे बनो तथा पर्वतों में शिविर लगाया करता था। वह एक शिविर में एक मास न रुकता और सेना को बराबर एक स्थान पर न रखता था। रात दिन वह सुल्तान के हृदय को कष्ट पहुँचाया करता था। इस प्रकार तीन वर्ष व्यतीत हो गये और अत्याचारी सुल्तान की बहुत बुरी दशा हो गई।

---

१ [illegible]

अलाउद्दुनिया वद्दीन अबुल मुजफ्फर बहमन शाह सुल्तान के लिए प्रार्थना—

हे भाग्यशाली बादशाह। राजसिंहासन तथा राजमुकुट तेरे लिए रात दिन प्रार्थना करते रहते हैं। तेरी उपाधि अलाउद्दीन इस कारण निश्चित हुई है कि समस्त बादशाहों की अपेक्षा तेरा वंश उत्कृष्ट है। तूने इस देश को अत्याचार से मुक्त करा दिया है, विशेष कर जब कि अत्याचार के कारण देवगीर (देवगिरि) में कोलाहल होने लगा तो ईश्वर ने तुझे तलवार खींचने की ओर प्रेरित किया। तू ने शत्रुओं का विनाश कर दिया। (६०८) तुझे देवगीर (देवगिरि) का राज्य प्राप्त हो गया। तत्पश्चात् तूने न्याय के द्वार खोल दिये और उपद्रव के मार्ग बन्द करा दिये और राज्य को सुव्यवस्थित किया। तूने मुझ दास को इस मसनवी (कविता) लिखने योग्य बना दिया। फ़िरदौसी तूसी[1] तथा निज़ामी गजवी[2] दो कवि इस कार्य में अति कुशल हुए हैं। मैंने इन दोनों का अनुसरण किया है। यदि तूस के वृद्ध ने आदम से लेकर महमूद (ग़ज़नवी) के समय तक का हाल लिखा है तो मैं ने आदम से महमूद तक की संक्षिप्त चर्चा प्रस्तावना में की है। मैंने महमूद से लेकर इस बादशाह तक के प्रत्येक वर्ष तथा मास का हाल लिखा है। हे बादशाह! तू हिन्दुस्तान के बादशाहों में से अन्तिम बादशाह है, अतः यह पुस्तक मैं तेरे नाम से समाप्त करता हूं। (६०९) मैं यह कार्य इस कारण कर रहा हूँ कि संसार वाले तेरा नाम लेते रहें। ईश्वर करे जब तक पृथ्वी तथा काल रहें, जब तक आकाश तथा तारामंडल रहें उस समय तक तेरे नाम के कारण यह शुभ मोती (ग्रन्थ) चमकता रहे। (६१०)

पुस्तक की रचना—

बुद्धिमानों को ज्ञात है कि कविता की रचना कितना कठिन कार्य है। (६११) इस युग में न तो कोई कविता का महत्व समझता है और न कवि को कोई प्रोत्साहन प्राप्त होता है। (६१२) ऐसी अवस्था में ५ मास, ६ दिन और ६ घड़ी पूर्व मैं ने यह कार्य प्रारम्भ किया था। मैं ने रात दिन अपने हृदय के रक्त को इस उद्यान (रचना) के लिये जल बना दिया। सुना जाता है कि फ़िरदौसी ने महमूद को मोतियों का कोष समर्पित किया और बादशाह ने भी उसे सोने से लदा हुआ हाथी प्रदान किया किन्तु (फ़िरदौसी) तूसी इस विषय में महमूद से बढ़ कर है क्योंकि मोतियों का कोष सोने से लदे हुये हाथी की अपेक्षा मूल्य में अधिक होता है। यदि बादशाह ने सोना रक्तपात के उपरान्त प्राप्त किया तो कवि ने हृदय के रक्त द्वारा मोती प्राप्त किये। (६१३) मैं ने भी बादशाह के दान की आशा में हिन्दुस्तान के समस्त बादशाहों के वंश का हाल लिखा। यदि तूसी वृद्ध ने अधर्मियों की प्रशंसा की तो मैं ने अधिकांश मुसलमानों की चर्चा की है। मैं ने जो कुछ लोगों से सुना एवं पुस्तकों में पाया उसे इस पुस्तक में लिखा। प्राचीन कहानियों की सत्यता के अन्वेषण में मैं ने बड़ा परिश्रम किया। हिन्दुस्तान के बादशाहों का हाल बुद्धिमान मित्रों द्वारा ज्ञात कराया। (६१४) सभी के विषय में इतिहासों को पढ़ा। जो मोती मुझे उचित ज्ञात हुआ, उसे मैं ने इस माला में गूँथा। जो कोई भी मोतियों का परखने वाला है, वह मेरी प्रशंसा करेगा। यदि मुझे कोई ऐसा मोती मिला जो औरों की अपेक्षा चमकदार न था तो उसे मैं ने अपनी योग्यता से चमका लिया। जो कोई मोती पहचाने

---

१ अबुल क़ासिम हसन बिन शरफ़ शाह फ़िरदौसी तूसी, शाहनामे का प्रसिद्ध लेखक। उसकी मृत्यु १०२० ई० में हुई।

२ निज़ामी गजवी, फ़ारसी का बड़ा प्रसिद्ध कवि था। उसने ख़म्से (पाँच मसनवियों) की रचना की। उसकी मृत्यु १२०० ई० में हुई।

वाले हैं, वे मेरी प्रशंसा करेंगे। जब यह पुस्तक समाप्त हो गई तो इसमें बादशाहों की विजय का उल्लेख होने के कारण, मैं ने इसका नाम फुतूहुस्सलातीन रक्खा। ईश्वर इसे बुरी दृष्टि से बचाये। (६?५)

एमामी ! तू ने अपनी समस्त अवस्था कुकर्मों तथा पाप में व्यतीत कर दी। इस समय जब कि तू चालीसवें वर्ष में प्रविष्ट हुआ है तो समस्त पापों से तोबा कर, क्योंकि अभी समय शेष है। (६?६) इस पुस्तक को समाप्त करने के पश्चात् मैं ईश्वर का विशेष रूप से कृतज्ञ हूं। ईश्वर करे कि सभी लोग इस ग्रन्थ का आदर सम्मान करें। मैं ने इसकी रचना २७ रमजान ७५० हि० (९ दिसम्बर, १३४९ ई०) को प्रारम्भ की और ६ रबी-उल-अव्वल ७५१ हि० (१४ मई १३५० ई०) को इसे समाप्त कर दिया। (६?८)

क़सायदे[1] बद्रे चाच

[लेखक—बद्रे चाच]

[प्रकाशनः-नवल किशोर कानपुर १८७३ ई०]

अब्बासी खलीफ़ा द्वारा "बादशाह" की उपाधि प्राप्त होने पर बधाई।

जब बादशाह का बैअत[2] सम्बन्धी पत्र खलीफा के राजसिंहासन के समक्ष प्रस्तुत किया गया तो उसने आदेश दिया कि उसकी (सुल्तान मुहम्मद इब्न तुगलुक़ शाह) आज्ञाओ का सातो इकलीमो[3] में पालन किया जाय। अमीरुल मोमिनीन (खलीफा) ने आदेश दिया कि प्रत्येक शुक्रवार को मिम्बर[4] पर सातो इकलीमो में (सुल्तान मुहम्मद) को शहशाहे इस्लाम कहा जाय। इमाम (खलीफा) के पास से आये हुए फरमान के स्वागतार्थ (सुल्तान ने) इस्लाम के प्रति अपनी निष्ठा के कारण सिर तथा पाँव नगे किये। भीड आगे पीछे चल रही थी और फरिश्ते ईश्वर का भजन कर रहे थे। बादशाह ने आँख की पुतली के रग का खिलअत धारण किया। आकाश ने स्वर्ण न्योछावर किये। राज्य से ईर्ष्या रखने वाले व्याकुल तथा कष्ट में पड गये। (१४)

अब्बासी खलीफा के पास से हिन्दुस्तान के बादशाह के पास खिलअत तथा फरमान प्राप्त होना—

इमाम (खलीफा) ने उसे पूर्ण अधिकार प्रदान किये। यह सूचना समस्त ससार को प्राप्त हो गई। धर्म (इस्लाम) की उन्नति प्राप्त हुई और शरा तथा ईमान की रौनक बढ गई। जो लोग मार्ग-भ्रष्ट थे, वे सच्चे धर्म के अभिलाषी हो गये और शरा के नेताओं का सम्मान बढ गया। मोमिनीन (धर्मनिष्ठ मुसलमानों) की ईद शुभ हुई। अमीरुल मामिनीन (खलीफा) द्वारा दो बार सुल्तान को खिलअत प्राप्त हुआ। शाह ने अमीरुल मोमिनीय (खलीफा) के दूतो के सिर पर तन्के न्योछावर किये। ७००+माह (४६)=७४६ हि०[5] में इस यात्रा से मुहर्रम में शाबान के पूर्व का अधिकारी (रजब) पहुँचा। (१५) चूंकि समकालीन शहशाह को इस्लाम के दु ख का ध्यान था अत मुसलमानों के स्वामी के पास से इसकी औषधि प्राप्त हुई। सुल्तान को खलीफा के पास से निरन्तर खिलअत प्राप्त होता रहे। (१६)

शहर देहली में समारोह—

इस काल के स्वामी अहमद इब्ने (पुत्र) अब्बास मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी के पास से फरमान प्राप्त हुआ जिसमें लिखा था कि पृथ्वी, जल (समुद्र) तथा वायु पर उसका अधिकार स्थापित रहे। तुर्कों की इकलीम (राज्य), रूम, खुरासान, चीन तथा शाम क

१ कसीदा उस कविता को कहते हैं जिसमें किसी की प्रशंसा की जाती है।

२ बैअत—अधीनता स्वीकार करने की एक प्रकार की शपथ। सूफी लोग भी इस प्रकार की शपथ लेते हैं।

३ इकलीम—जलवायु के प्रदश। मध्यकालीन मुसलमान भूगोलवेत्ताओं के अनुसार समस्त ससार सात इकलीमों में विभाजित था।

४ मस्जिद का मच, अथवा धार्मिक प्रवचन का मंच।

५ माह में तीन अक्षर हैं। मीम =४०, अलिफ =१, हे=५। इस प्रकार माह शब्द द्वारा ४६ की सख्या निकलती है। ७४६ हि० मुहर्रम मास में अप्रैल-मई १३४५ ई० था। रजब, सुल्तान मुहम्मद के दूत का नाम था और रजब मास शाबान के पूर्व आता है।

शासक उसके आदेशों का पालन करते रहें। खतीब,[1] मिम्बर से उसकी उपाधि सुल्ताने शर्क व ग़र्ब तथा शहशाहे बहर व बर[2] बताया करें। इस अवसर पर नगर में बडा समारोह हुआ। (१७)

हिन्दुस्तान के बादशाह द्वारा जश्न तथा अबुर रबी सुलेमान अब्बासी एवं मुहम्मद शाह की प्रशंसा–

अबुर रबी सुलेमान सच्चा खलीफा एव मुसलमानो का नेता है। हिन्दुस्तान का बादशाह हृदय से उसका सेवक तथा भक्त है। चीन तथा खता के बादशाह अबुल मुजाहिद ग़ाज़ी मुहम्मद तुग़लुक़ हिन्द के बादशाह के अधीन हैं। बीसियो आसफ[3] उसके दरबार के अमीर तथा बू अली सीना[4] उसका खास नदीम[5] है। (२०)

नगरकोट की विजय तथा उसकी प्रशंसा–

बादशाह ने नगरकोट का किला उदखुलू फीहा[6] (७३८ हि०) को विजय किया। वह बडा ही ऊँचा था। (२८) इस भव्य किले पर शहशाह रात्रि में एक लाख की सख्या के साथ पहुच गया। सुल्तान, मुहम्मद साहब की शरा का शरीर से तथा खलीफा के आदेशो का हृदय से पालन करता था। अबुर रबी मुस्तकफी पर शरा का आधार था। यदि वह किला विजय करता था तो खलीफ़ा के नाम पर और यदि नगर बसाता तो उसके सेवको के नाम पर। (२६)

देवगीर (देवगिरि) के किले के लिये प्रस्थान–

दौलते शाह[7] वर्ष में पहली शाबान (८ दिसम्बर १३४४ ई०) को मुझे देवगीर (देवगिरि) की ओर प्रस्थान करने का आदेश हुआ। मेरी यात्रा के विषय में शुभ कामनायें करते हुये सुल्तान ने कहा 'उसे देवगीर मत कहो। वह दौलताबाद है। उसका किला अत्यधिक ऊँचा है। वहाँ तू पहुच कर मलिक कुतलुग खाँ से मेरी ओर से कह कि इस दरबार से आकर मिले।" (६४-६५)

किला खुर्रमाबाद तथा उसकी प्रशंसा—

इस भवन का निर्माण जहीरुद्दीन मेमार द्वारा हुआ। इसका निर्माण ७४४ हि० (१३४३ ई०) में हुआ। (८६-६०)

नासिरुद्दीन कवि की निन्दा–

यदि उसके हृदय को कष्ट पहुँचे तो अच्छा है। वह सैकडो अच्छे लोगों को बुरा कहता है। (१०१)

---

१ ईद, जुमे तथा अन्य शुभ अवसरों पर खुत्बा पढ़ने वाले। खुत्बे में ईश्वर, मुहम्मद साहब, उनकी सन्तान, मित्रों तथा समकालीन बादशाह की प्रशंसा होती है।

२ पूर्व तथा पश्चिम का सुल्तान तथा समुद्र एव स्थल का शहशाह

३ सुलेमान का, जो एक बड़े प्रतापी पैग़म्बर समझे जाते हैं, मन्त्री।

४ अबू अली सीना प्रसिद्ध चिकित्सक तथा दार्शनिक। उनका जन्म बुख़ारा में ६८३ ई० में तथा मृत्यु हमदान में १०३७ ई० में हुई।

५ मुसाहिब अथवा सहवासी या विश्वासपात्र परामर्शदाता।

६ इस शब्द का अर्थ "उसमें प्रविष्ट हुआ" है। इसे शब्द से ७३८ हि० का पता चलता है। अलिफ=१, दाल=४, खे=६००, लाम=३०, वाव=६, अलिफ=१, फे=८०, ये=१०, हे=५, अलिफ़=१ =७३८ हि० (१३३७-३८ ई०)

७ दौलत शाह से ७४५ हि० इस प्रकार निकलता है—दाल=४, वाव=६, लाम=३०, ते=४००, शीन=३००, हे=५।

क़सायदे[1] बद्रे चाच

[लेखक—बद्रे चाच]

[प्रकाशन—नवल किशोर कानपुर १८७३ ई०]

अब्बासी खलीफा द्वारा "बादशाह" की उपाधि प्राप्त होने पर बधाई।

जब बादशाह का बैग्रत[2] सम्बन्धी पत्र खलीफा के राजसिंहासन के समक्ष प्रस्तुत किया गया तो उसने ग्रादेश दिया कि उसकी (सुल्तान मुहम्मद इब्न तुगलुक़ शाह) ग्राज्ञाग्रों का सातो इकलीमो[3] में पालन किया जाय। ग्रमीरुल मोमिनीन (खलीफा) ने ग्रादेश दिया कि प्रत्येक शुक्रवार को मिम्बर[4] पर सातो इकलीमो में (सुल्तान मुहम्मद) को शहशाहे इस्लाम कहा जाय। इमाम (खलीफा) के पास से ग्राये हुए फरमान के स्वागतार्थ (सुल्तान ने) इस्लाम के प्रति ग्रपनी निष्ठा के कारण सिर तथा पाँव नगे किये। भीड ग्रागे पीछे चल रही थी ग्रौर फरिश्ते ईश्वर का भजन कर रहे थे। बादशाह ने ग्राँख की पुतली के रग का खिलग्रत धारण किया। ग्राकाश ने स्वर्ण न्योछावर किये। राज्य से ईर्ष्या रखने वाले व्याकुल तथा कष्ट में पड गये। (१४)

अब्बासी खलीफा के पास से हिन्दुस्तान के बादशाह के पास खिलग्रत तथा फरमान प्राप्त होना—

इमाम (खलीफा) ने उसे पूर्ण ग्रधिकार प्रदान किये। यह सूचना समस्त ससार को प्राप्त हो गई। धर्म (इस्लाम) को उन्नति प्राप्त हुई ग्रौर शरा तथा ईमान की रौनक बढ गई। जो लोग मार्ग-भ्रष्ट थे, वे सच्चे धम के ग्रभिलाषी हो गये ग्रौर शरा के नेताग्रो का सम्मान बढ गया। मोमिनीन (धर्मनिष्ठ मुसलमानों) की ईद शुभ हुई। ग्रमीरुल मोमिनीन (खलीफा) द्वारा दो बार सुल्तान को खिलग्रत प्राप्त हुग्रा। शाह ने ग्रमीरुल मोमिनीय (खलीफा) के दूतो के सिर पर तन्के न्योछावर किये। ७००+माह (४६)=७४६ हि०[5] में इस यात्रा से मुहर्रम में शाबान के पूर्व का ग्रधिकारी (रजब) पहुचा। (१५) चूकि समकालीन शहशाह को इस्लाम के दुख का ध्यान था ग्रत मुसलमानो के स्वामी के पास से इसकी ग्रोषधि प्राप्त हुई। सुल्तान को खलीफा के पास से निरन्तर खिलग्रत प्राप्त होता रहे। (१६)

शहर देहली मे समारोह—

इस काल के स्वामी ग्रहमद इब्ने (पुत्र) ग्रब्बास मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी के पास से फरमान प्राप्त हुग्रा जिसमें लिखा था कि पृथ्वी, जल (समुद्र) तथा वायु पर उसका ग्रधिकार स्थापित रहे। तुर्कों की इकलीम (राज्य), रूम, खुरासान, चीन तथा शाम क

---

१ कसीदा उस कविता को कहते है जिसमें किसी की प्रशसा की जाती है।

२ बैग्रत—ग्रधीनता स्वीकार करने की एक प्रकार की शपथ। सूफी लोग भी इस प्रकार की शपथ लेते हैं।

३ इकलीम—जलवायु के प्रदेश। मध्यकालीन मुसलमान भूगोलवेत्ताग्रों के ग्रनुसार समस्त ससार सात इक्लीमों में विभाजित था।

४ मस्जिद का मच, ग्रथवा धार्मिक प्रवचन का मच।

५ माह में तीन ग्रक्षर हैं। मीम =४०, ग्रलिफ =१, हे=५। इस प्रकार माह शब्द द्वारा ४६ की सख्या निकलती है। ७४६ हि० मुहर्रम मास में ग्रप्रैल मई १३४५ ई० था। रजब, सुल्तान मुहम्मद के दूत का नाम था ग्रौर रजब मास शाबान के पूर्व ग्राता है।

शासक उसके आदेशो का पालन करते रहे। खतीब,[1] मिम्बर से उसकी उपाधि सुल्ताने शर्क व गर्ब तथा शहशाहे बहर व बर[2] बताया करें। इस अवसर पर नगर में बडा समारोह हुआ। (१७)

हिन्दुस्तान के बादशाह द्वारा जश्न तथा अबुर रबी सुलेमान अब्बासी एवं मुहम्मद शाह की प्रशंसा—

अबुर रबी सुलेमान सच्चा खलीफा एव मुसलमानो का नेता है। हिन्दुस्तान का बादशाह हृदय से उसका सेवक तथा भक्त है। चीन तथा खता के बादशाह अबुल मुजाहिद गाजी मुहम्मद तुगलुक हिन्द के बादशाह के अधीन हैं। बीसियों आसफ[3] उसके दरबार के अमीर तथा बू अली सीना[4] उसका खास नदीम[5] है। (२०)

नगरकोट की विजय तथा उसकी प्रशंसा—

बादशाह ने नगरकोट का किला उदखुलू फीहा[6] (७३८ हि०) को विजय किया। वह बडा ही ऊँचा था। (२८) इस भव्य किले पर शहशाह रात्रि में एक लाख की सख्या के साथ पहुच गया। सुल्तान, मुहम्मद साहब की शरा का शरीर से तथा खलीफा के आदेशो का हृदय से पालन करता था। अबुर रबी मुस्तकफ़ी पर शरा का आधार था। यदि वह किला विजय करता था तो खलीफा के नाम पर और यदि नगर बसाता तो उसके सेवको के नाम पर। (२९)

देवगीर (देवगिरि) के क़िले के लिये प्रस्थान—

दौलते शाह[7] वर्ष में पहली शाबान (८ दिसम्बर १३४४ ई०) को मुझे देवगीर (देवगिरि) की ओर प्रस्थान करने का आदेश हुआ। मेरी यात्रा के विषय में शुभ कामनायें करते हुये सुल्तान ने कहा "उसे देवगीर मत कहो। वह दौलताबाद है। उसका किला अत्यधिक ऊँचा है। वहाँ तू पहुच कर मलिक कुतलुग खाँ से मेरी ओर से कह कि इस दरबार से आकर मिले।" (६४-६५)

क़िला खुर्रमाबाद तथा उसकी प्रशंसा—

इस भवन का निर्माण जहीरुद्दीन मेमार द्वारा हुआ। इसका निर्माण ७४४ हि० (१३४३ ई०) में हुआ। (८९-९०)

नासिरुद्दीन कवि की निन्दा—

यदि उसके हृदय को कष्ट पहुँचे तो अच्छा है। वह सैकडो अच्छे लोगों को बुरा कहता है। (१०१)

---

१ ईद, जुमे तथा अन्य शुभ अवसरों पर खुत्बा पढ़ने वाले। खुत्बे में ईश्वर, मुहम्मद साहब, उनकी सन्तान, मित्रों तथा समकालीन बादशाह की प्रशंसा होती है।

२ पूर्व तथा पश्चिम का सुल्तान तथा समुद्र एवं स्थल का शहंशाह

३ सुलमान का, जो एक बड़े प्रतापी पैग़म्बर समझे जाते हैं, मंत्री।

४ अबू अली सीना प्रसिद्ध चिकित्सक तथा दार्शनिक। उनका जन्म बुखारा में ९८३ ई० में तथा मृत्यु हमदान में १०३७ ई० में हुई।

५ मुसाहिब अथवा सहवासी या विश्वासपात्र परामर्शदाता।

६ इस शब्द का अर्थ "उसमें प्रविष्ट हुआ" है। इसी शब्द से ७३८ हि० का पता चलता है। अलिफ=१, दाल=४, खे=६००, लाम=३०; वाव=६, अलिफ=१, फे=८०, ये=१०, हे=५, अलिफ=१ =७३८ हि० (१३३७-३८ ई०)

७ दौलत शाह से ७४५ हि० इस प्रकार निकलता है—दाल=४, वाव=६, लाम=३०, ते=४००, शीन=३००, हे=५।

क़सायदे[1] बद्रे चाच

[लेखक—बद्रे चाच]

[प्रकाशनः—नवल किशोर कानपुर १८७३ ई०]

अब्बासी ख़लीफ़ा द्वारा "बादशाह" की उपाधि प्राप्त होने पर बधाई।

जब बादशाह का बैअत[2] सम्बन्धी पत्र ख़लीफ़ा के राजसिंहासन के समक्ष प्रस्तुत किया गया तो उसने आदेश दिया कि उसकी (सुल्तान मुहम्मद इब्न तुग़लुक़ शाह) आज्ञाओं का सातों इक़लीमों[3] में पालन किया जाय। अमीरुल मोमिनीन (ख़लीफ़ा) ने आदेश दिया कि प्रत्येक शुक्रवार को मिम्बर[4] पर सातों इक़लीमों में (सुल्तान मुहम्मद) को शाहशाहे इस्लाम कहा जाय। इमाम (ख़लीफ़ा) के पास से आये हुए फ़रमान के स्वागतार्थ (सुल्तान ने) इस्लाम के प्रति अपनी निष्ठा के कारण सिर तथा पाँव नंगे किये। भीड़ आगे पीछे चल रही थी और फ़रिश्ते ईश्वर का भजन कर रहे थे। बादशाह ने आँख की पुतली के रंग का ख़िलअत धारण किया। आकाश ने स्वर्ण न्योछावर किये। राज्य से ईर्ष्या रखने वाले व्याकुल तथा कष्ट में पड़ गये। (१४)

अब्बासी ख़लीफ़ा के पास से हिन्दुस्तान के बादशाह के पास ख़िलअत तथा फ़रमान प्राप्त होना—

इमाम (ख़लीफ़ा) ने उसे पूर्ण अधिकार प्रदान किये। यह सूचना समस्त संसार को प्राप्त हो गई। धर्म (इस्लाम) को उन्नति प्राप्त हुई और शरा तथा ईमान की रौनक बढ़ गई। जो लोग मार्ग-भ्रष्ट थे, वे सच्चे धर्म के अभिलाषी हो गये और शरा के नेताओं का सम्मान बढ़ गया। मोमिनीन (धर्मनिष्ठ मुसलमानों) की ईद शुभ हुई। अमीरुल मामिनीन (ख़लीफ़ा) द्वारा दो बार सुल्तान को ख़िलअत प्राप्त हुआ। शाह ने अमीरुल मोमिनीय (ख़लीफ़ा) के दूतों के सिर पर तन्के न्योछावर किये। ७००+माह (४६)=७४६ हि०[5] में इस यात्रा से मुहर्रम में शाबान के पूर्व का अधिकारी (रजब) पहुँचा। (१५) चूंकि समकालीन शहशाह को इस्लाम के दुःख का ध्यान था अतः मुसलमानों के स्वामी के पास से इसकी औषधि प्राप्त हुई। सुल्तान को ख़लीफ़ा के पास से निरन्तर ख़िलअत प्राप्त होता रहे। (१६)

शहर देहली में समारोह—

इस काल के स्वामी अहमद इब्ने (पुत्र) अब्बास मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी के पास से फ़रमान प्राप्त हुआ जिसमें लिखा था कि पृथ्वी, जल (समुद्र) तथा वायु पर उसका अधिकार स्थापित रहे। तुर्कों की इक़लीम (राज्य), रूम, ख़ुरासान, चीन तथा शाम के

१ क़सीदा उस कविता को कहते हैं जिसमें किसी की प्रशंसा की जाती है।

२ बैअत—अधीनता स्वीकार करने की एक प्रकार की शपथ। सूफ़ी लोग भी इस प्रकार की शपथ लेते हैं।

३ इक़लीम—जलवायु के प्रदेश। मध्यकालीन मुसलमान भूगोलवेत्ताओं के अनुसार समस्त संसार सात इक़लीमों में विभाजित था।

४ मस्जिद का मंच, अथवा धार्मिक प्रवचन का मंच।

५ माह में तीन अक्षर हैं। मीम =४०, अलिफ =१, हे=५। इस प्रकार माह शब्द द्वारा ४६ की संख्या निकलती है। ७४६ हि० मुहर्रम मास में अप्रैल मई १३४५ ई० था। रजब, सुल्तान मुहम्मद के दूत का नाम था और रजब मास शाबान के पूर्व आता है।

शासक उसके आदेशो का पालन करते रहे। खतीब,[1] मिम्बर से उसकी उपाधि सुल्ताने शर्क व गर्ब तथा शहशाहे बहर व बर[2] बताया करें। इस अवसर पर नगर में बड़ा समारोह हुआ। (१७)

हिन्दुस्तान के बादशाह द्वारा जश्न तथा अबुर रबी सुलेमान अब्बासी एवं मुहम्मद शाह की प्रशंसा—

अबुर रबी सुलेमान सच्चा खलीफा एव मुसलमानो का नेता है। हिन्दुस्तान का बादशाह हृदय से उसका सेवक तथा भक्त है। चीन तथा खता के बादशाह अबुल मुजाहिद गाजी मुहम्मद तुगलुक हिन्द के बादशाह के अधीन हैं। बीसियो आसफ[3] उसके दरबार के अमीर तथा बू अली सीना[4] उसका खास नदीम[5] है। (२०)

नगरकोट की विजय तथा उसकी प्रशंसा—

बादशाह ने नगरकोट का क़िला उदखुलू फीहा[6] (७३८ हि०) को विजय किया। वह बडा ही ऊँचा था। (२८) इस भव्य किले पर शहशाह रात्रि में एक लाख की सख्या के साथ पहुच गया। सुल्तान, मुहम्मद साहब की शरा का शरीर से तथा खलीफा के आदेशो का हृदय से पालन करता था। अबुर रबी मुस्तकफी पर शरा का आधार था। यदि वह किला विजय करता था तो खलीफा के नाम पर और यदि नगर बसाता तो उसके सेवको के नाम पर। (२६)

देवगीर (देवगिरि) के क़िले के लिये प्रस्थान—

दौलते शाह[7] वर्ष में पहली शाबान (८ दिसम्बर १३४४ ई०) को मुझे देवगीर (देवगिरि) की ओर प्रस्थान करने का आदेश हुआ। मेरी यात्रा के विषय में शुभ कामनायें करते हुये सुल्तान ने कहा "उसे देवगीर मत कहो। वह दौलताबाद है। उसका किला अत्यधिक ऊँचा है। वहाँ तू पहुच कर मलिक कुतलुग खाँ से मेरी ओर से कह कि इस दरबार मे आकर मिले।" (६४-६५)

किला खुर्रमाबाद तथा उसकी प्रशंसा—

इस भवन का निर्माण जहीरुद्दीन मेमार द्वारा हुआ। इसका निर्माण ७४४ हि० (१३४३ ई०) में हुआ। (८६-६०)

नासिरुद्दीन कवि की निन्दा—

यदि उसके हृदय को कष्ट पहुँचे तो अच्छा है। वह सैकड़ो अच्छे लोगों को बुरा कहता है। (१०१)

---

१ ईद, जुमे तथा अन्य शुभ अवसरों पर खुत्वा पढ़ने वाले। खुत्वे में ईश्वर, मुहम्मद साहब, उनकी सन्तान, मित्रों तथा समकालीन बादशाह की प्रशंसा होती है।

२ पूर्व तथा पश्चिम का सुल्तान तथा समुद्र एव स्थल का शहशाह

३ सुलमान का, जो एक बड़े प्रतापी पैग़म्बर समझे जाते हैं, मत्री।

४ अबू अली सीना प्रसिद्ध चिकित्सक तथा दार्शनिक। उनका जन्म बुखारा में ६८३ ई० में तथा मृत्यु हमदान मे १०३७ ई० में हुई।

५ मुसाहिब अथवा सहवासी या विश्वासपात्र परामर्शदाता।

६ इस शब्द का अर्थ "उसमें प्रविष्ट हुआ" है। इन शब्द म ७३८ हि० का पता चलता है। अलिफ=१, दाल=४, खे=६००, लाम=३०; वाव=६, अलिफ=१, फे=८०, ये=१०, हे=५, अलिफ=१ =७३८ हि० (१३३७-३८ ई०)

७ दौलत शह मे ७४५ हि० इस प्रकार निकलता है—दाल=४, वाव=६, लाम=३०, ते=४००, शीन=३००, हे=५।

सियरुल औलिया

[लेखक मौलाना सैयिद मुहम्मद मुबारक अलवी अमीर खुर्द]

[प्रकाशनः—मुहिबबे हिन्द देहली १३०२ हि० १८८५]

सुल्तानुल मशायख निज़ामुद्दीन औलिया[1] के खलीफाओं का उल्लेख

मौलाना शम्सुद्दीन यहया—

(२२८) जब सुल्तान मुहम्मद ने अत्याचार तथा अन्याय प्रारम्भ कर रक्खा था और अपनी रक्त पायी तलवार को ईश्वर के भक्तो के रक्त से तृप्त कर रहा था तो उसने मौलाना शम्सुद्दीन को बुलवाया। कुछ दिन तक उन्हे राजभवन में आतंकित रक्खा। तत्पश्चात् अपने समक्ष बुलवाया। जब वे सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुये तो सुल्तान ने कहा 'तेरा जैसा बुद्धिमान यहाँ क्या कर रहा है ? तू कश्मीर जाकर वहाँ के मन्दिरो में निवास कर और लोगो को इस्लाम की ओर आमंत्रित कर।" इस फरमान के उपरान्त उन्हे रवाना करने के लिए कुछ लोग नियुक्त हुये। मौलाना अपने घर पहुँचे ताकि कश्मीर प्रस्थान करने की तैयारी करें। जो लोग वहाँ उपस्थित थे उनकी ओर (मौलाना ने) देख कर कहा 'यह लोग क्या कहते हैं ? मैने शेख (निजामुद्दीन औलिया) को स्वप्न में देखा है कि वे मुझे बुला रहे हैं। मैं अपने स्वामी की सेवा में जाता हूँ। मुझे यह लोग कहाँ भेज रहे हैं ?" दूसरे दिन मौलाना रुग्ण हो गये। उनके सीने पर एक फोडा निकल आया जिससे उन्हे अत्यन्त पीडा एव कष्ट हुआ। उस फोडे की अस्त्रचिकित्सा की गई। जब सुल्तान को यह सूचना मिली तो उसने आदेश दिया कि उन्हे बुला कर पूछ ताछ की जाय। मौलाना उसी रुग्णावस्था में राज भवन में ले जाये गये और प्रमाण मिल जाने पर लौटा दिये गये। कुछ दिन उपरान्त उनका निधन हो गया।

शेख नसीरुद्दीन महमूद[2]—

(२४५) ससार वालो की सर्व सम्मति से वे अपने समय के बहुत बडे सूफी थे और सभी उनके भक्त थे। सुल्तान मुहम्मद उनको कष्ट पहुँचाया करता था और वे अपने गुरुओ का (२४६) अनुसरण करते हुये सब कुछ सहन करते थे और किसी प्रकार से बदला लेने का प्रयत्न न करते थे। यह बादशाह अपने जीवन-काल के अन्त मे तगी से युद्ध करने के लिए देहली से १००० कोस दूर ठट्ठा पहुँचा। वहाँ से शेख नसीरुद्दीन महमूद तथा अन्य आलिमो एव प्रतिष्ठित लोगो को अपने पास बुलवाया और उनका उचित सम्मान न किया। यह बात उसे राज्य के तख्ते से जनाज़े के तख्त तक पहुचा कर शहर (देहली) लाने का कारण बनी।

लोगो ने शेख नसीरुद्दीन महमूद से पूछा कि 'इस बादशाह ने तुम्हे कष्ट पहुचाये। यह बात किस प्रकार थी ?" आपने उत्तर दिया मेरे तथा ईश्वर के मध्य मे एक बात थी। वह उस ओर प्रेरित हुआ।"

---

१ चिश्ती सिलसिले के देहली के प्रसिद्ध सूफी जो शेख फरीदुद्दीन गजशकर के चेले थे। उनका निधन १३२५ ई० में हुआ।

२ वे चिरागे देहली के नाम से प्रसिद्ध थे। उनका निधन १३५६ ई० में हुआ।

शेख कुतुबुद्दीन मुनव्वर–

(२५०) ईर्ष्या रखने वालों ने शेख कुतुबुद्दीन मुनव्वर के विरुद्ध सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक से नाना प्रकार की बातें उसके हृदय को उत्तेजित करने वाली कही, किन्तु उसे उनमे कुछ कहने का अथवा कष्ट पहुँचाने का अवसर न मिलता था। उसने उन्हें सर्व प्रथम संसार में फसाने, तत्पश्चात् कष्ट पहुंचाने का निश्चय किया। तदनुसार सुल्तान ने शेख के नाम दो ग्रामों के फरमान लिखवा कर सद्रे जहाँ काजी कमालुद्दीन के हाथ भिजवाये और उससे कहा कि 'इसे शेख कुतुबुद्दीन मुनव्वर के पास ले जाओ और जिस प्रकार सम्भव हो इन फरमानों को शेख द्वारा स्वीकार करा दो।" काजी कमालुद्दीन सद्रे जहाँ हांसी पहुंचे और उस फरमान को रूमाल में लपेट कर आस्तीन मे रख कर शेख की सेवा मे ले गये। शेख कुतुबुद्दीन मुनव्वर दालान में उस स्थान पर, जहाँ शेख फरीदुद्दीन के चरण पहुँच चुके थे, बैठे। काजी कमालुद्दीन ने शेख के प्रति सुल्तान की निष्ठा तथा प्रेम की चर्चा करके उस फरमान को शेख के समक्ष रख दिया। शेख कुतुबुद्दीन मुनव्वर ने कहा 'जब सुल्तान नासिरुद्दीन, उच्च तथा मुल्तान की ओर प्रस्थान कर रहा था, तो उस समय सुल्तान गयासुद्दीन बलबन "उलुग खाँ" था। वह दो ग्रामों के फरमान शेख फरीदुद्दीन[1] के पास ले गया। शेख ने उत्तर दिया 'हमारे पीरो (गुरुओं) ने इस प्रकार की वस्तुयें स्वीकार नही की हैं। इनके इच्छुक बहुत बड़ी संख्या में हैं। उन्ही को (२५१) लेजा कर दो।" शेख कुतुबुद्दीन ने इसके उपरान्त कहा कि 'तुम सद्रे जहाँ तथा मुसलमानों के वायज[2] हो। यदि कोई अपने पीरो (गुरुओं) की प्रथा के विरुद्ध आचरण करे तो उसे परामर्श देना चाहिये। कोई प्रलोभन न दिलाना चाहिये।" काजी कमालुद्दीन शेख कुतुबुद्दीन मुनव्वर के उत्तर से लज्जित होकर क्षमा याचना करता हुआ उठ खड़ा हुआ। वहाँ से उसने सुल्तान मुहम्मद के समक्ष शेख के गौरव तथा उनकी श्रेष्ठता का उल्लेख इस प्रकार किया कि सुल्तान का हृदय पूर्णतया नरम हो गया।

(२५२) जिन दिनों सुल्तान मुहम्मद हाँसी की ओर गया और बसी में, जोकि हाँसी से चार कोस है, उतरा तो उसने निज़ामुद्दीन नद्रबारी को, जो मुखलेमुलमुल्क कहलाता था, हाँसी के किले के विषय में पूछताछ करने के लिये भेजा। जब वह शेख कुतुबुद्दीन मुनव्वर के घर के निकट पहुंचा तो उसने पूछा, 'यह किस का घर है ?" उसे बताया गया कि, "यह सुल्तानुल मशायख (शेख निज़ामुद्दीन औलिया) के खलीफा (उत्तराधिकारी) शेख कुतुबुद्दीन मुनव्वर का घर है।" उसने कहा 'आश्चर्य है कि बादशाह इस स्थान पर आये और शेख उससे भेंट करने न जायें।" संक्षेप में, जब उसने किले का हाल सुल्तान को बताते हुये कहा कि सुल्तानुल मशायख का एक खलीफा यहाँ निवास करता है, जो बादशाह के दर्शनार्थ नही आया है, तो सुल्तान के अभिमान को धक्का लगा। उसने शेख हसन सर बरहना को, जो बहुत बड़ा अभिमानी था, शेख कुतुबुद्दीन को बुलाने के लिये भेजा। जब हसन सर बरहना शेख कुतुबुद्दीन मुनव्वर के घर पहुँचा तो वह राजसीय ठाठ बाट को पृथक् कर अकेले पैदल जाकर शेख के घर के द्वार के एक कोने में सिर नीचा करके बैठ गया और अपने आपको प्रकट न किया। शेख रसोई के कोठे पर ईश्वर की उपासना कर रहे थे। जब कुछ समय व्यतीत हो गया तो शेख को दैवी प्रेरणा द्वारा ज्ञात हो गया कि हसन द्वार पर बैठा है। उन्होंने शेखजादा नूरुद्दीन[3] को उसे बुला लाने का आदेश दिया। जब शेखजादा बाहर निकला तो वह शेख

---

१ चिश्ती सिलसिले के शेख कुतुबुद्दीन काकी के प्रसिद्ध चेले शेख फरीदुद्दीन मसऊद गञ्जशकर का कार्य क्षेत्र पंजाब, मुल्तान तथा अजोधन था। उनका निधन १२७१ ई० में हुआ।

२ धार्मिक प्रवचन करने वाले।

३ शेख का पुत्र।

हसन सर बरहना को शेख कुतुबुद्दीन मुनव्वर की सेवा में ले गया। शेख हसन सर बरहना शेख को सलाम करके तथा हाथ मिला कर बैठ गया और कहा "आप को सुल्तान ने बुलवाया है। शेख मुनव्वर ने पूछा "जाने या न जाने में मुझे कोई अधिकार है या नही ?" उसने उत्तर दिया "मुझे फरमान मिला है कि मैं शेख को ले आऊँ।" शेख ने कहा 'ईश्वर को धन्य है कि मै अपनी इच्छा से नही जाता।" अपना मुख घर वालो की ओर करके कहा, "तुम्हे ईश्वर को सौंप दिया।" यह कह कर मुसल्ला[1] तथा असा[2] लेकर पैदल चल खडे हुये। हसन सर बरहना को शेख कुतुबुद्दीन मुनव्वर के ललाट से ईश्वर को प्राप्त हुये पुरुषो के चिह्न दृष्टिगत हुये और उसने उन्हें छल तथा बनावट से शून्य पाया। उसने शेख से कहा, "आप पैदल क्यो चल रहे हैं। सवार हो जाइये।" शेख न उत्तर दिया "कोई आवश्यकता नही। (२५३) मुझ में पैदल चलने की शक्ति है।" मार्ग में जब वे अपने पूर्वजो के घेरे (कब्रस्तान) में पहुँचे तो अपने बाप-दादा (की कब्र) की पाइती खडे हो कर कहा 'मैं आप लोगों के पास से अपनी इच्छा से नही जा रहा हू किन्तु मुझे ले जाया जा रहा है। ईश्वर के कुछ भक्तो को छोड दिया है जिनके पास कोई खर्च नही।" जब वे रोजे[3] से बाहर निकले तो देखा कि एक मनुष्य कुछ चाँदी (धन) लिये खडा है। शेख ने पूछा "यह क्या है ?" उसने उत्तर दिया "मेरी एक इच्छा पूरी हुई है। मैं शुकराना[4] लाया हू।" शेख ने उत्तर दिया "मेरे घर में खर्च न था। वही ले जाओ।"

सक्षेप में, वे हांसी से बसी, जो ४ कोस है, पैदल यात्रा करके पहुँचे। जब सुल्तान को शेख के आने की सूचना मिली और शेख हसन ने जो कुछ देखा था उसकी चर्चा की तो बादशाह ने अभिमानवश उस ओर ध्यान न दिया। अपने समक्ष बुलवाया और वहाँ से देहली की ओर चल दिया। देहली पहुच कर उसने शेख को भेंट करने के लिए बुलवाया। जब वे उसके पास जा रहे थे तो उन्होंने सुल्तान फीरोज शाह से, जो उन दिनो नायब बारबक था, कहा "हम लोग दरवेश हैं। बादशाहों की सभा के शिष्टाचार तथा वार्तालाप के ढग से परिचित नही। जिस प्रकार आज्ञा हो आचरण किया जाय।" (फीरोज) ने कहा, "सुल्तान से आपके विषय में लोगो ने कह दिया है कि आप मलिको तथा सुल्तानो की ओर ध्यान नही देते। चूकि यह बात सत्य है अत शेख को बादशाह का आदर सम्मान एव उसके प्रति निष्ठा प्रदर्शित करनी चाहिये।" जब शेख जा रहे थे तो शेख जादा नूरुद्दीन उनके पीछे पीछे जा रहा था। बादशाह के अमीरों तथा मलिकों की भीड के भय एव आतक से शेखजादे की बुरी दशा होगई। इसका कारण शेखजादे की अल्पावस्था एव कभी बादशाहो का दरबार न देखना था। शेख कुतुबुद्दीन को दैवी प्रेरणा से शेखजादे की दशा का ज्ञान हो गया। सिर पीछे करके शेख ने कहा 'बाबा नूरुद्दीन ! ऐश्वर्य केवल अल्लाह को प्राप्त (२५४) है।" यह बात सुनकर शेखजादे का साहस बढ गया और वह भय-शून्य हो गया। अमीर तथा मलिक भेडों के समान दृष्टिगोचर होने लगे। सुल्तान शेख के आने का समय ज्ञात करके धनुष लेकर खडा हो गया और शेख के ललाट पर ईश्वर के भक्तो के चिह्न देख कर उसने उनका बडा आदर सम्मान किया और हाथ मिलाया। हाथ मिलाते समय शेख ने सुल्तान का हाथ दृढ़ता-पूर्वक पकडा और पहली ही भेंट में उस जैसा अत्याचारी बादशाह शेख का भक्त हो गया। सुल्तान ने कहा "मै आप की ओर गया। आपने मुझे अपनी भेंट से सम्मानित न किया।" शेख ने कहा, "सर्व प्रथम तूने हांसी देखा, तत्पश्चात् हांसी का

---

१ वह चटाई जिस पर नमाज पढी जाती है।

२ लाठी, हाथ की लकडी।

३ वह स्थान जहाँ धार्मिक व्यक्ति दफन हों।

४ भेंट

दरवेश बच्चा। मैं अपने आपको उस स्थिति में नही पाता कि बादशाहो से भेंट करूँ। एक कोने में बादशाह तथा समस्त मुसलमानों के लिये ईश्वर से शुभ कामनायें किया करता हूं। मुझे विवश समझा जाय।"

शेख कुतुबुद्दीन मुनव्वर की बातों से जो, आडम्बररहित थीं, सुल्तान मुहम्मद का हृदय नरम हो गया। सुल्तान फीरोज शाह को आदेश दिया कि शेख की इच्छानुसार कार्य करो। शेख मुनव्वर ने कहा 'मेरी इच्छा अपने पूर्वजो के स्थान पर एकान्त में निवास करने की है।" शेख लौट गये। मलिक कबीर, जो बडा न्यायकारी, सदाचारी तथा दयावान् था, कहा करता था कि "सुल्तान मुहम्मद कहा करता था कि जब कोई सूफी मुझसे हाथ मिलाता था तो उसका हाथ काँप जाता था किन्तु इस बुजुर्ग ने धर्म की शक्ति से मेरे हाथ दृढता पूर्वक पकड लिये। मैं समझ गया कि ईर्ष्यालुओं ने जो कुछ मुझसे कहा वह सत्य नही। मैंने उसके ललाट पर धर्म का तेज देखा।" तत्पश्चात् सुल्तान फीरोज शाह तथा ख्वाजा जियाउद्दीन बरनी को शेख मुनव्वर के पास भेजा और उन्हें एक लाख तन्का इनाम प्रदान किया। शेख मुनव्वर ने कहा 'ईश्वर न करे कि यह दरवेश एक लाख तन्के स्वीकार करे।" जब उन्होंने (२५५) जाकर कहा कि 'शेख स्वीकार नही करते, तो सुल्तान ने आदेश दिया कि "५०,००० दो।" वे शेख की सेवा में गये। शेख ने उसे भी स्वीकार न किया। सुल्तान ने कहा, "यदि शेख इतना भी स्वीकार न करेंगे तो लोग मुझे क्या कहेंगे?' जब बात बहुत बढी और २००० तन्के तक पहुँची तो सुल्तान फीरोज शाह तथा जियाउद्दीन बरनी ने कहा "हम इससे कम के विषय में राजसिंहासन के समक्ष नही कह सकते कि शेख इतना भी स्वीकार नहीं करते।" शेख ने कहा "ईश्वर को धन्य है। दरवेश को दो सेर खिचडी तथा थोडा सा घी पर्याप्त होता है। वह सहस्त्रों लेकर क्या करेगा?" बडे आग्रह के उपरान्त शेख ने २००० तन्के स्वीकार किये और उसमें से अधिकांश सुल्तानुल मशायख तथा शेख कुतुबुद्दीन बख्तियार[१] के रौजों के लिये एवं शेख नसीरुद्दीन महमूद को दे दिये। कुछ अन्य लोगो को बाँट दिये। कुछ दिन उपरान्त वे बडे सम्मान से हाँसी की ओर चल दिये।

मौलाना हुसामुद्दीन मुल्तानी—

(२६२) जिस समय शहर (देहली) वालो को देवगीर (देवगिरि) भेजा जा रहा था तो मौलाना (हुसामुद्दीन मुल्तानी) गुजरात चले गये और वहीं उनका निधन हो गया। उनकी (क़ब्र की) मिट्टी से वहाँ वालो की आवश्यक्तायें पूरी होती हैं।

मौलाना फखरुद्दीन जर्रादी—

(२७१) जिन दिनो सुल्तान मुहम्मद तुगलुक शहर (देहली) के लोगों को देवगीर (देवगिरि) भेज रहा था और तुर्किस्तान तथा खुरासान अपने अधिकार में करना एवं चंगेज खाँ की सन्तान (मुगलो) को परास्त करना चाहता था तो उसने आदेश दिया कि शहर (दहली) तथा आस पास के समस्त सद्र एवं प्रतिष्ठित लोग, जो शहर (देहली) में एकत्र हैं उपस्थित हों और बडे बडे बारगाह[२] लगाये जायें। उसके नीचे मिम्बर[३] रक्खा जाय ताकि वह मिम्बर से लोगों को जिहाद[४] की ओर प्रेरित करे। सक्षेप में, उस दिन मौलाना फखरुद्दीन, मौलाना शम्सुद्दीन यहया तथा शेख नसीरुद्दीन महमूद बुलवाये गये। शेख कुतुबुद्दीन दबीर ने जो

१ वे शेख मुईनुद्दीन चिश्ती के चेले तथा चिश्ती सिलसिले के बड़े प्रसिद्ध सूफी थे। उनका कार्य क्षेत्र देहली था। उनका निधन १२३५ ई० के लगभग हुआ।

२ दरबार के लिए शामियाने।

३ एक प्रकार का मच जिस पर खड़े होकर धार्मिक प्रवचन दिया जाता है।

४ इस्लाम के लिए धर्म युद्ध।

हसन सर बरहना को शेख कुतुबुद्दीन मुनव्वर की सेवा में ले गया। शेख हसन सर बरहना शेख को सलाम करके तथा हाथ मिला कर बैठ गया और कहा "आप को सुल्तान ने बुलवाया है। शेख मुनव्वर ने पूछा "जाने या न जाने में मुझे कोई अधिकार है या नहीं ?" उसने उत्तर दिया "मुझे फरमान मिला है कि मैं शेख को ले आऊँ।" शेख ने कहा 'ईश्वर को धन्य है कि मैं अपनी इच्छा से नहीं जाता।" अपना मुख घर वालों की ओर करके कहा, "तुम्हें ईश्वर को सौंप दिया।" यह कह कर मुसल्ला[1] तथा असा[2] लेकर पैदल चल खड़े हुये। हसन सर बरहना को शेख कुतुबुद्दीन मुनव्वर के ललाट से ईश्वर को प्राप्त हुये पुरुषों के चिह्न दृष्टिगत हुये और उसने उन्हे छल तथा बनावट से शून्य पाया। उसने शेख से कहा, 'आप पैदल क्यों चल रहे हैं। सवार हो जाइये।" शेख ने उत्तर दिया "कोई आवश्यकता नहीं। (२५३) मुझ में पैदल चलने की शक्ति है।" मार्ग में जब वे अपने पूर्वजों के घेरे (कब्रस्तान) में पहुँचे तो अपने बाप-दादा (की कब्र) की पाइती खड़े हो कर कहा 'मैं आप लोगों के पास से अपनी इच्छा से नहीं जा रहा हू किन्तु मुझे ले जाया जा रहा है। ईश्वर के कुछ भक्तों को छोड दिया है जिनके पास कोई खर्च नहीं।" जब वे रौजे[3] से बाहर निकले तो देखा कि एक मनुष्य कुछ चाँदी (धन) लिये खड़ा है। शेख ने पूछा "यह क्या है ?" उसने उत्तर दिया "मेरी एक इच्छा पूरी हुई है। मैं शुकराना[4] लाया हूं।" शेख ने उत्तर दिया "मेरे घर में खर्च न था। वहीं ले जाओ।"

संक्षेप में, वे हाँसी से बसी, जो ४ कोस है, पैदल यात्रा करके पहुँचे। जब सुल्तान को शेख के आने की सूचना मिली और शेख हसन ने जो कुछ देखा था उसकी चर्चा की तो बादशाह ने अभिमानवश उस ओर ध्यान न दिया। अपने समक्ष बुलवाया और वहाँ से देहली की ओर चल दिया। देहली पहुच कर उसने शेख को भेंट करने के लिए बुलवाया। जब वे उसके पास जा रहे थे तो उन्होंने सुल्तान फीरोज शाह से, जो उन दिनो नायब बारबक था, कहा "हम लोग दरवेश हैं। बादशाहों की सभा के शिष्टाचार तथा वार्त्तालाप के ढग से परिचित नहीं। जिस प्रकार आज्ञा हो आचरण किया जाय।" (फीरोज) ने कहा, 'सुल्तान से आपके विषय में लोगों ने कह दिया है कि आप मलिकों तथा सुल्तानों की ओर ध्यान नहीं देते। चूँकि यह बात सत्य है अत शेख को बादशाह का आदर सम्मान एव उसके प्रति निष्ठा प्रदर्शित करनी चाहिये।" जब शेख जा रहे थे तो शेख जादा नूरुद्दीन उनके पीछे पीछे जा रहा था। बादशाह के अमीरों तथा मलिकों की भीड़ के भय एव आतक से शेखजादे की बुरी दशा होगई। इसका कारण शेखजादे की अल्पावस्था एव कभी बादशाहों का दरबार न देखना था। शेख कुतुबुद्दीन को दैवी प्रेरणा से शेखजादे की दशा का ज्ञान हो गया। सिर पीछे करके शेख ने कहा 'बाबा नूरुद्दीन' एश्वर्य केवल अल्लाह को प्राप्त (२५४) है।" यह बात सुनकर शेखजादे का साहस बढ गया और वह भय-शून्य हो गया। अमीर तथा मलिक भेडों के समान दृष्टिगोचर होने लगे। सुल्तान शेख के आने का समय ज्ञात करके धनुष लेकर खड़ा हो गया और शेख के ललाट पर ईश्वर के भक्तों के चिह्न देख कर उसने उनका बड़ा आदर सम्मान किया और हाथ मिलाया। हाथ मिलाते समय शेख ने सुल्तान का हाथ दृढता-पूर्वक पकड़ा और पहली ही भेंट में उस जैसा अत्याचारी बादशाह शेख का भक्त हो गया। सुल्तान ने कहा 'मैं आप की ओर गया। आपने मुझे अपनी भेंट से सम्मानित न किया।" शेख ने कहा, "सर्व प्रथम तूने हाँसी देखा, तत्पश्चात् हाँसी का

१ वह चटाई जिस पर नमाज पढ़ी जाती है।
२ लाठी, हाथ की लकड़ी।
३ वह स्थान जहाँ धार्मिक व्यक्ति दफन हों।
४ भेंट

"यदि सुल्तानुल मशायख से प्रेम के कारण मेरी हत्या करा दी जाय तो मैं इसे अपना सौभाग्य
समझूंगा। मैं शहीद हो जाऊंगा और सुल्तान की सेवा तथा तुम लोगो से लज्जित होने से
मुक्त हो जाऊंगा।" जब कभी सुल्तान मुहम्मद की सभा में शेख फखरुद्दीन की चर्चा होती
तो वह हाथ मल कर कहता कि "खेद है कि फखरुद्दीन जर्रादी मेरी रक्त-पायी तलवार से
बच गया।"

(२७४) जब मौलाना देवगीर (देवगिरि) पहुँचे और हौजे सुल्तान के किनारे उतरे तो हज
करने की इच्छा, जो पूर्व ही से थी, अधिक प्रबल हो गई। उन दिनो काज़ी कमालुद्दीन सद्रे
वहाँ मौलाना फखरुद्दीन की सेवा में बहुत आया करते थे। क़ाज़ी कमालुद्दीन सद्रे जहाँ मौलाना
फखरुद्दीन हाँसवी के भागनेय एवं शिष्य थे। मौलाना फखरुद्दीन जर्रादी भी मौलाना
फखरुद्दीन हाँसवी के शिष्य थे। मौलाना फखरुद्दीन ने इस अत्यधिक प्रेम के कारण काज़ी
कमालुद्दीन सद्रे जहाँ से हज के लिए प्रस्थान करने के विषय में परामर्श किया। काज़ी
कमालुद्दीन ने कहा कि "सुल्तान की अनुमति के बिना प्रस्थान करना उचित नही, इस लिए
कि वह इस नगर को बसाना चाहता है। उसकी इच्छा है कि यह नगर आलिमों, सूफियों
तथा सद्रों के कारण समस्त ससार में प्रसिद्ध हो जाय। वह विशेष रूप से तुम्हें कष्ट पहुँचाने
का प्रयत्न किया करता है।" मौलाना यह उत्तर सुन कर अपना रहस्य बताने पर लज्जित
हुये। मुझे[1] यह हाल मेरे स्वर्गीय पिता ने बताया था। मेरे पिता का कथन था कि यह बात
ठीक न हुई। प्रेम में परामर्श नही होता।

मौलाना कहते थे कि "मैंने उसकी मित्रता पर विश्वास किया और उसने यह बात
उचित समझी।" मेरे पिता ने कहा "यदि क़ाज़ी कमालुद्दीन से अब आपकी भेंट हो तो इस
बात की कोई चर्चा न कीजियेगा। कुछ समय उपरान्त इस कार्य का उपाय किया जायगा।"
कुछ समय पश्चात् मौलाना के भतीजे ने, जो क़स्बे में था, मौलाना को अपने विवाह में भतयून
इन्हे बुलवाया। मौलाना विवाह के उपरान्त कोकन थाना घाट से हज के लिये चल दिये।

(२७५) हज के बाद वे बगदाद गये। बग़दाद के आलिमों तथा सूफियों ने उन के
विषय में सुन कर उनका स्वागत किया। वहाँ जब तक वे रहे हदीस[2] पर वाद विवाद करते
रहे और सभी आलिमों से श्रेष्ठ रहे। वहा से वे देहली के लिये लौटते हुये जहाज पर सवार
हुये। उस जहाज़ में अत्यधिक शाही सामान भरा था। भारी होने के कारण वह डूबने लगा।
जहाज़ के मुक़द्दमों (अधिकारियों) ने उनसे आकर कहा कि "जहाज डूब रहा है। यदि आप
आज्ञा दें तो कुछ सामान समुद्र में फेंक दिया जाय जिससे जहाज हल्का हो जाय।" मौलाना
ने उत्तर दिया कि "मुझे लोगों के सामान पर क्या अधिकार जो फेंकने की अनुमति दे दूं।"
मौलाना नमाज़ पढ़ने के लिए मुसल्ले पर बैठ गये, और डूब गये।

मौलाना सिराजुद्दीन उस्मान "अखी सिराज"—

(२८१) जब लोग देवगीर (देवगिरि) भेजे जाने लगे तो वे लखनौती चले गये और
सुल्तानुल मशायख के पुस्तकालय की कुछ प्रमाणित पुस्तकें, जो वक़्फ़ थीं, अध्ययन तथा वाद-
विवाद के लिये और सुल्तानुल मशायख का वस्त्र, जो उन्होंने मौलाना को प्रसन्न-मुद्रा में दिया
था, अपने साथ ले गये।

महज़र[3]—

(२२६) जब सुल्तानुल मशायख के भाग्य तथा चमत्कार एवं गौरव का गुप्त गमार

---

१ मैनक, कबीर मुद्दे।
१ मुहम्मद साहब की वाणी तथा कार्यों का उल्लेख।
३ वाद विवाद द्वारा किसी विषय का निर्णय करने के लिये सभा।

सुल्तानुल मशायख (शेख निज़ामुद्दीन औलिया) का निष्ठावान चेला तथा फखरुद्दीन जर्रादी का शिष्य था, अन्य सूफियो के आने के पूर्व शेख को आगे लेजाना चाहा। शेख सुल्तान से भेंट न करना चाहते थे। वे अनेक बार कह चुके थे कि 'मै अपना सिर उसके द्वार के समक्ष लोटता हुआ पाता हू। मै उससे मेल न करूँगा और वह मुझे जीवित न छोडेगा।"

(२७२) सक्षेप में, जब मौलाना की सुल्तान से भेंट हुई, तो शेख कुतुबुद्दीन दबीर ने मौलाना के पाँव के जूते उठा लिये और सेवको के समान बगल में दाब कर खडा हो गया। सुल्तान यह बात देख कर उस समय कुछ न बोला। मौलाना फखरुद्दीन से वार्त्तालाप करने लगा और कहा "मैं चगेज खाँ की सतान को परास्त करना चाहता हू। तुम इस कार्य में मेरा साथ दो।" मौलाना ने कहा "इनशा अल्लाह"[१]। सुल्तान ने कहा "यह सन्देह का वाक्य है।" मौलाना ने कहा "भविष्य के सम्बन्ध में इसी प्रकार कहा जाता है।" मौलाना का यह उत्तर सुन कर वह बडा खिन्न हुआ और उसने कहा, "तुम मुझे परामर्श दो जिसके अनुसार मैं कार्य करूँ।" मौलाना ने उत्तर दिया "क्रोध मत किया करो।" सुल्तान ने पूछा 'कैसा क्रोध ?' मौलाना ने कहा "भयकर क्रोध।" सुल्तान इस बात से रुष्ट हो गया और इसके चिह्न उसके मुख से दृष्टिगत होते थे किन्तु उसने कुछ न कहा। आदेश दिया कि भोजन लाया जाय। जब भोजन आया तो सुल्तान तथा मौलाना एक थाल मे भोजन करने बैठे। मौलाना फखरुद्दीन भोजन करते समय इतना कुपित थे कि सुल्तान समझ गया कि मौलाना को मेरे साथ भोजन करना अच्छा नही लग रहा है। सुल्तान आग्रह हेतु हड्डी से माँस निकाल निकाल कर मौलाना के समक्ष रखता जाता था। मौलाना अत्यन्त घृणा से थोडा थोडा खाते जाते थे।

जब भोजन हटाया गया तो मौलाना शम्सुद्दीन यहया तथा शेख नसीरुद्दीन महमूद को बुलवाया गया। इस स्थान पर दो प्रकार से यह हाल बताया जाता है। एक यह कि जब यह लोग आये तो मौलाना फखरुद्दीन ने मौलाना शम्सुद्दीन को स्थान दिया और मौलाना नसीरुद्दीन को अपने से ऊँचे स्थान पर बिठाया। दूसरे यह कि एक ओर मौलाना शम्सुद्दीन यहया तथा मौलाना नसीरुद्दीन बैठे और दूसरी ओर मौलाना फखरुद्दीन जर्रादी। प्रथम बात ठीक है क्योंकि शेख कुतुबुद्दीन दबीर का, जो वहाँ उपस्थित था, कथन सत्य है। उठते समय इन लोगो के लिये एक एक ऊनी वस्त्र तथा एक एक चाँदी (तन्के) की थैली लाई गई। प्रत्येक ने वस्त्र तथा चाँदी (२७३) (के तन्कों) को लिया और अभिवादन करके लौट गये किन्तु वस्त्र तथा चाँदी (के तन्कों) को मौलाना फखरुद्दीन के हाथ में दिये जाने के पूर्व शेख कुतुबुद्दीन दबीर ने वस्त्र तथा धन ले लिया, इस लिये कि उसे ज्ञात था कि शेख वस्त्र तथा धन न लेगे और यह बात उनके सम्मान को नष्ट किये जाने का कारण बन जायेगी।

जब यह लोग वापस हो गये तो सुल्तान ने शेख कुतुबुद्दीन दबीर से कहा, 'हे दुष्ट तथा धूर्त ! यह क्या हरकत की ? सर्व प्रथम फखरुद्दीन के जूते बगल मे ले लिये। तत्पश्चात् वस्त्र तथा चाँदी (के तन्को को) स्वय ले लिया और उसे मेरी तलवार से मुक्त करा दिया।" शेख कुतुबुद्दीन दबीर ने कहा "वे मेरे गुरु तथा मेरे स्वामी (शेख निज़ामुद्दीन औलिया) के खलीफा हैं। मेरे लिये यह उचित है कि मैं उनके जूते आदर-पूर्वक अपने सिर पर रक्खू न कि बगल में। वस्त्र तथा धन का क्या मूल्य है," सुल्तान ने उससे बडे कठोर शब्द कहे और कहा "अपने इस कुफ्रयुक्त विश्वास को त्याग दे अन्यथा मै तेरी हत्या कर दूंगा।" सुल्तान को शेख के प्रति उसकी निष्ठा का पूर्ण ज्ञान था। यदि कुछ अभागे अर्थात् एहतेसान दबीर एव उस जैसे लोग शेख कुतुबुद्दीन दबीर को हानि पहुचाने के लिये सुल्तान के समक्ष असभ्य वाद विवाद करते तो शेख कुतुबुद्दीन उन लोगो को बडे कठोर उत्तर देता और कहता

१ यदि ईश्वर की इच्छा हुई।

करते और कहते "यह हदीस शाफई[1] से सम्बन्धित है और वह हमारे आलिमो का शत्रु है। हम इसे नहीं सुनते।" मैं नही समझता कि उन्हें (इस्लाम पर) श्रद्धा है अथवा नहीं, क्योंकि बादशाह के समक्ष अभिमान-पूर्वक व्यवहार करते थे। प्रमाणित हदीसो का निषेध करते थे। मैने न कोई ऐसा आलिम देखा है और न सुना है जिसके समक्ष मुहम्मद साहब की हदीसो का उल्लेख किया जाय और वह कहे कि मैं नही सुनता। मैं नही जानता कि यह कैसा समय है। ऐसा नगर जहाँ इस प्रकार के अभिमान का प्रदर्शन हो किस प्रकार आबाद है। आश्चर्य है कि यह नष्ट क्यो नही हो जाता। बादशाह, अमीर तथा सर्व साधारण, शहर के काजी तथा आलिमों से यह सुन कर कि इस नगर में हदीस पर आचरण नही होता, किस प्रकार मुहम्मद साहब की हदीसों के प्रति श्रद्धा रख सकते हैं। जिस समय से मैं ने हदीस के (५३२) निषेध के सम्बन्ध में सुना, मुझे भय होता है कि इस प्रकार के शहर के आलिमो के अविश्वास के कलक के कारण आकाश से कही कष्टो, देश-निकाले, अकाल तथा व्यापक रोगो की वर्षा न होने लगे।

इस घटना के चौथे वर्ष वे सब आलिम जो इस महज़र में सम्मिलित थे तथा अन्य लोग उनके कारण देवगीर (देवगिरि) भेज दिये गये। उन आलिमो में से बहुत से आलिमों ने देवगीर (देवगिरि) में सिर झुकाया (चले गये)। शहर (देहली) में घोर अकाल तथा व्यापक रोग फैल गया, यहाँ तक कि अभी तक इन कष्टों का पूर्णतया निवारण नही हुआ है।

---

१ अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन (पुत्र) इदरीस "शाफ़ई" इस्लाम की नियमावली के चार संग्रह कर्त्ताओं में से एक थे। इनका निधन मिस्र में ८२० ई० में हुआ।

इस वाद-विवाद के अवसर पर शैख बहाउद्दीन जकरिया[1] के नाती मौलाना इल्मुद्दीन आ गये। बादशाह ने उनकी ओर मुख करके कहा, "आप विद्वान् भी हैं और यात्री भी। आज मेरे समक्ष समा के प्रश्न पर वाद विवाद हो रहा है। मैं आप से पूछता हूं कि (५३०) समा सुनना हलाल है अथवा हराम?" मौलाना ने कहा, "मैंने इस विषय पर मकसदा नामक पुस्तक की रचना की है। उसमें इसके हराम अथवा हलाल होने पर तर्क वितर्क किया है। जो लोग हृदय से सुनें उनके लिये हलाल (उचित) है और जो वासना से सुनें उनके लिये हराम है।" सुल्तान ने मौलाना इल्मुद्दीन से पुनः पूछा, "आप बगदाद, शाम तथा रूम की यात्रा कर चुके हैं। वहाँ के सूफी समा सुनते हैं अथवा नहीं। उन्हें कोई इस कार्य से रोकता है अथवा नहीं?" मौलाना इल्मुद्दीन ने कहा, "सभी नगरों के बुजुर्ग तथा सूफी समा सुनते हैं और कुछ लोग बाजों के साथ। समा सूफियों में शैख जुनैद[2] तथा शैख शिबली[3] के समय से प्रचलित है।" बादशाह मौलाना इल्मुद्दीन से यह सुन कर चुप हो रहा और कुछ न बोला।

मौलाना जलालुद्दीन ने कहा, "बादशाह को समा के हराम होने के विषय में आदेश दे देना चाहिये और इस विषय में इमामे आजम के धर्म का ध्यान रखना चाहिये। सुल्तानुल मशायख ने बादशाह से कहा "मैं नहीं चाहता कि तू इस विषय में कोई आदेश दे।" बादशाह ने सुल्तानुल मशायख का आदेश स्वीकार कर लिया और कोई हुक्म न दिया।....

(५३१) उन्हीं दिनों में किसी ने सुल्तानुल मशायख से पूछा "क्या इस प्रकार का आदेश हुआ है कि आप जब चाहें समा सुनें, आप के लिये हलाल है?" सुल्तानुल मशायख ने कहा, "यदि हराम है तो किसी के कहने से हलाल न हो जायगा और यदि हलाल है तो किसी के कहने से हराम न हो जायगा।"..... इसके उपरान्त बादशाह ने सुल्तानुल मशायख को बड़े सम्मान से विदा कर दिया।

मौलाना ज़िया उद्दीन बरनी ने अपनी (पुस्तक) हैरत नामे[4] में लिखा है कि सुल्तानुल मशायख ने महज़र से घर लौट कर मध्याह्न के उपरान्त की नमाज के समय मौलाना मुही-उद्दीन काशानी तथा अमीर खुसरो कवि को बुला कर कहा कि "देहली के विद्वान् मेरे प्रति विरोध तथा ईर्ष्या से परिपूर्ण थे। मैदान खुला देख कर उन्होंने अत्यधिक शत्रुता पूर्ण बातें कीं। आज यह देख कर आश्चर्य हुआ कि वाद विवाद के समय मुहम्मद साहब की हदीस नहीं सुनते थे और कहते थे कि हमारे नगर में फिकह[5] की रवायतों पर आचरण करना हदीस से श्रेष्ठ समझते हैं। ये बातें ऐसे लोग करते हैं जिन्हें मुहम्मद साहब की हदीस पर विश्वास नहीं होता। प्रत्येक बार जब मुहम्मद साहब की प्रमाणित हदीसों का उल्लेख होता तो निषेध

इमाम अबू हनीफा के अनुयायी हनफ़ी कहलाते थे। अधिकांश सुन्नी मुसलमान उन्हीं के अनुयायी हैं। भारतवर्ष के लगभग सभी सुन्नी उन्हीं को मानते हैं। उनकी मृत्यु ७६७ ई० में हुई। उन्होंने मुहम्मद साहब की शिक्षा तथा कुरान में बताये गये नियमों के आधार पर इस्लाम की शिक्षाओं का कट्टरपन से पृथक् होकर समझाने का प्रयत्न किया है।

१ भारतवर्ष में सुहरवर्दी सिलसिले के प्रसिद्ध संस्थापक। उनका कार्य-क्षेत्र मुलतान था जहाँ उस समय इस्लाम का बड़ा प्रचार था। उनकी मृत्यु १२६७ ई० में हुई। सुहरवर्दी सूफ़ी समा के विरोधी थे।

२ शैख जुनैद बग़दादी बड़े प्रसिद्ध सूफ़ी हुये हैं। इनका निधन ९११ ई० में हुआ।

३ शैख अबू बक्र शिबली भी बग़दाद के एक प्रसिद्ध सूफी थे। इनका निधन ९४६ ई० में हुआ।

४ हसरत नामा (सियरुल औलिया पृ० ३१३)।

५ इस्लाम की नियमावली।

करते और कहते "यह हदीस शाफई[1] से सम्बन्धित है और वह हमारे आलिमों का शत्रु है। हम इसे नहीं सुनते।" मैं नहीं समझता कि उन्हें (इस्लाम पर) श्रद्धा है अथवा नहीं, क्योंकि बादशाह के समक्ष अभिमान-पूर्वक व्यवहार करते थे। प्रमाणित हदीसों का निषेध करते थे। मैंने न कोई ऐसा आलिम देखा है और न सुना है जिसके समक्ष मुहम्मद साहब की हदीसों का उल्लेख किया जाय और वह कहे कि मैं नहीं सुनता। मैं नहीं जानता कि यह कैसा समय है। ऐसा नगर जहाँ इस प्रकार के अभिमान का प्रदर्शन हो किस प्रकार आबाद है। आश्चर्य है कि यह नष्ट क्यों नहीं हो जाता। बादशाह, अमीर तथा सर्व साधारण, शहर के काजी तथा आलिमों से यह सुन कर कि इस नगर में हदीस पर आचरण नहीं होता, किस प्रकार मुहम्मद साहब की हदीसों के प्रति श्रद्धा रख सकते हैं। जिस समय से मैं ने हदीस के (५३२) निषेध के सम्बन्ध में सुना, मुझे भय होता है कि इस प्रकार के शहर के आलिमों के अविश्वास के कलंक के कारण आकाश से कहीं कष्टों, देश निकाले, अकाल तथा व्यापक रोगों की वर्षा न होने लगे।

इस घटना के चौथे वर्ष वे सब आलिम जो इस महज़र में सम्मिलित थे तथा अन्य लोग उनके कारण देवगीर (देवगिरि) भेज दिये गये। उन आलिमों में से बहुत से आलिमों ने देवगीर (देवगिरि) में सिर झुकाया (चले गये)। शहर (देहली) में घोर अकाल तथा व्यापक रोग फैल गया, यहाँ तक कि अभी तक इन कष्टों का पूर्णतया निवारण नहीं हुआ है।

———

१ अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन (पुत्र) इदरीस "शाफई" इस्लाम की नियमावली के चार संग्रह कर्ताओं में से एक थे। उनका निधन मिस्र में ८२० ई० में हुआ।

भाग ब

समकालीन यात्रियों के पर्यटन-वृत्त

इब्ने बत्तूता
(क) यात्रा विवरण

शिहाबुद्दीन अल उमरी
(ख) मसालिकुल अबसार फी मेमालिकुल अमसार

इब्ने बत्तूता

यात्रा विवरण

[प्रकाशन पेरिस १८४६ ई०]

(६३) शेख अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन (पुत्र) मुहम्मद बिन (पुत्र) इबराहीम अल्लवाती[1] तन्जा (तन्जीर) निवासी, जो इब्ने बत्तूता (ईश्वर उस पर दया करे) के नाम से प्रसिद्ध है, इस प्रकार निवेदन करता है।

मुहर्रम ७३४ हि० (१२ सितम्बर, १३३३ ई०) की पहली तारीख को हम लोग सिन्ध घाटी[2] पर पहुँचे। यह बन्जाब[3] (पजाब) के नाम से प्रसिद्ध है। इसका अर्थ ५ नदियाँ है। यह ससार की सबसे बडी नदी है। ग्रीष्म-ऋतु में इसमें बहिया आ जाती है। पजाब निवासी बहिया के उपरान्त यहाँ उसी प्रकार कृषि करते हैं, जिस प्रकार मिस्र निवासी सिन्ध (६४) में बहिया आजाने के उपरान्त कृषि करते हैं। यह नदी सुल्ताने मुअज्जम मुहम्मद शाह मलिकुल हिन्द व सिन्ध (हिन्द तथा सिंध का सुल्तान) के राज्य की सीमा पर स्थित है।

जब हम इस नदी पर पहुँचे तो समाचार पहुँचाने वाले पदाधिकारी, जो इसी कार्य के लिये नियुक्त हैं, हमारे पास आये और हमारे पहुँचने की सूचना मुल्तान नगर के अमीर (अधिकारी) कुतुबुलमुल्क को भेज दी। उस समय सिन्ध का अमीरुल उमरा (मुख्य अधिकारी) सरतेज नामक था। वह सुल्तान का ममलूक (दास) था और अर्जे ममालिक के पद पर नियुक्त था। वह सुल्तान की सेनाओं का अर्ज[4] करता था। हमारे पहुचने के समय वह सिन्ध के सिविस्तान नगर में था, जो मुल्तान से १० दिन की दूरी पर स्थित है। सिन्ध प्रदेश तथा सुल्तान की राजधानी 'देहली' के मध्य में ५० दिन की यात्रा की दूरी है। जब सुल्तान को समाचार भेजते वाले अधिकारी सुल्तान के पास सिन्ध से कोई सूचना भेजते हैं तो वह सूचना बरीद (डाक) द्वारा ५ दिन में पहुँच जाती है।

बरीद (डाक)—

(६५) हिन्दुस्तान में बरीद दो प्रकार के होते हैं। घोडे के बरीद, उलाक़ (उलाग़) कहलाते हैं। वे सुल्तान द्वारा प्रदान किये हुये घोडो पर यात्रा करते हैं। प्रत्येक ४ कोस के उपरान्त घोडा बदल लिया जाता है। पैदल बरीद का प्रबन्ध इस प्रकार होता है कि एक मील में ३ चौकियाँ डाक ले जाने वालों की होती हैं। इसे दावा कहते हैं। इसका अर्थ मील का ⅓ भाग है। मील, कुरोह के नाम से प्रसिद्ध है। प्रत्येक तिहाई मील की दूरी पर एक गाँव आबाद होता है। गाँव के बाहर ३ कुब्बे (बुर्जियाँ) होते हैं। प्रत्येक बुर्जी में डाक ले जाने वाले उद्यत रहते हैं। प्रत्येक डाक ले जाने वाले के पास दो जरा (हाथ) लम्बा डडा होता है। इसके सिरे पर ताँबे की घण्टियाँ बधी होती हैं। जब समाचार ले जाने वाला नगर से निकलता है तो वह पत्र को एक हाथ में और घण्टियों व डंडे को दूसरे हाथ में लेकर बडी तीव्र गति से दौडता है। जब बुर्जियों के आदमी घटियो का बजना सुनते हैं तो वे सन्नद्ध

१ लवाता—अन्दलुस में एक स्थान।

२ पुस्तक में प्रत्येक स्थान पर 'वादी' का उल्लेख है। नदी के लिये पृ० १०० पर "नहर" शब्द का प्रयोग हुआ है। तुग़लुक़ कालीन भारत, भाग १, पृ० १५६।

३ मूल पुस्तक में प्रत्येक स्थान पर बन्जाब है।

४ निरीक्षण तथा भरती।

अवस्था १४० वर्ष से अधिक है और जब तन्केज (चंगेज़ खाँ) के पुत्र हलऊन बिन तन्केज अलतमरी[1] ने अन्तिम अब्बासी खलीफा मुस्तासिम बिल्लाह[2] की हत्या की तो वह बगदाद में उपस्थित था। इतनी वृद्धावस्था को प्राप्त हो जाने पर भी वह अभी बडा हृष्ट पुष्ट है और सुगमता-पूर्वक चल फिर सकता है।

कहानी—

इस नगर में अमीर वुनार सामेरी तथा अमीर कैंसर रूमी निवास करते थे। वे दोनों ही सुल्तान की सेवा में थे। वुनार का उल्लेख पहले हो चुका है। उनके अधीन १ हजार ८ सौ सवार थे। वहीं एक काफिर हिन्दू भी निवास करता था। उसका नाम रतन था। वह हिसाब किताब तथा सुलेख में दक्ष था। वह सुल्तान की सेवा में एक अमीर के साथ उपस्थित (१०६) हुआ। सुल्तान ने उसका बडा आदर-सम्मान किया और उसे अज़ीमुस्-सिन्ध की उपाधि तथा सिन्ध प्रदेश का शासन और सिविस्तान एव उसके अधीन स्थानों की अक्ता प्रदान कर दी। उसे तबल[3] तथा ध्वज रखने की अनुमति प्रदान की। मरातिब[4] रखने की आज्ञा, जो केवल बडे-बडे अमीरो को ही दी जाती है, प्रदान की। जब वह इस प्रदेश में पहुचा तो वुनार, कैंसर तथा अन्य लोगों को काफिर का यह आदर सम्मान अच्छा न लगा और उन्होने उसकी हत्या कर देनी निश्चित की। उसके पहुँचने के कुछ दिन उपरान्त उन्होने उससे कहा कि वह अपने राज्य के स्थानों का निरीक्षण करले। इस प्रकार वह उनके साथ निरीक्षण के लिए गया। रात्रि में जब सभी शिविर में थे तो लोगो ने कोलाहल प्रारम्भ कर दिया कि कोई सिंह घुस आया है और इस प्रकार उस काफिर की हत्या करवा दी। वहाँ से लौट कर उन्होंने सुल्तान के खज़ाने पर, जो वहाँ एकत्र था और जो १२ लाख के लगभग था, अपना अधिकार जमा लिया। १ लाख में १०० हजार दीनार[5] होते हैं और प्रत्येक लाख का मूल्य १० हजार हिन्दुस्तानी सोने के दीनार के बराबर होता है। एक हिन्दुस्तानी दीनार मगरिब[6] (१०७) के २½ सोने के दीनार के बराबर होता है[7]। उसके उपरान्त लोगो ने वुनार को अपना सरदार बना लिया और उसकी पदवी मलिक फीरोज़ हुई। उसने सेना को धन-सम्पत्ति प्रदान की, किन्तु कुछ समय उपरान्त वह अपनी जाति वालो से दूर रहने के कारण आतंकित हो गया और वहाँ से अपने सम्बन्धियों को लेकर चल दिया। शेष सेना ने कैंसर रूमी को अपना नेता बना लिया। इस विद्रोह की सूचना मुल्तान के ममलूक (दास) एमादुल-मुल्क सरतेज़ को प्राप्त हुई। वह उस समय सिन्ध का अमीर (अधिकारी) था और मुल्तान में निवास करता था। उसने सेना एकत्र करके सिन्ध नदी के तथा स्थल दोनो मार्गों से आगे बढना प्रारम्भ कर दिया। मुल्तान से सिविस्तान तक १० दिन का मार्ग है। कैंसर उससे युद्ध करने के लिए निकला और दोनो में युद्ध हुआ। कैंसर तथा उसके सहायक बुरी तरह पराजित हुये। वे नगर में पहुच कर किले में बन्द हो गये। एमादुलमुल्क सरतेज ने उन्हे घेर लिया। मन्जनीकों द्वारा किले वालो पर आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। वे लोग बुरी तरह घिर गये थे। ४० दिन उपरान्त कैंसर ने क्षमा माँग ली।

---

१ हलाकू मगोल, चगेज़ का पोता। (मृत्यु १२६५ ई०)
२ ३७ वाँ तथा अन्तिम अब्बासी खलीफा (मृत्यु १२५८ ई०)
३ बडा ढोल।
४ इसका उल्लेख इब्ने बतूता ने आगे किया है।
५ चाँदी के तन्के।
६ मराक़ो।
७ इस विषय में मसालिकुल अबसार का अनुवाद देखिए।

(१०८) जब कैसर तथा उसकी सेना क्षमा के वचन पाकर बाहर निकली तो सरतेज ने उनके साथ विश्वासघात किया। उनकी धन-सम्पत्ति लूट ली और उनकी हत्या का आदेश दे दिया। प्रत्येक दिन किसी का बध करा देता और किसी को तलवार से दो टुकड़े करा देता था, किसी की खाल खिंचवाता और खाल में भूसा भरवा कर नगर की चहार दीवारी पर लटकवा देता था। बहुतो की यही दशा की गई और चहार दीवारी का बहुत बड़ा भाग इन्ही खालो द्वारा भर गया था, जो खूटियो से लटकी रहती थी। दर्शकगण इसे देख कर कांप उठते थे। उनकी खोपड़ियां एकत्र करके नगर के मध्य में ढेर लगा दिया गया था।

मैं इस घटना के कुछ ही समय उपरान्त इस नगर में पहुचा और एक बहुत बड़े मदरसे में उतरा। मैं मदरसे की छत पर सोया करता था। वहाँ से यह लाशें लटकी हुई दीख पड़ती थी। जब मैं रात्रि में उठता तो उन्ह देख कर भयभीत हो जाता था। मैं उन्हे मदरस से बराबर देखना सहन न कर सकने के कारण मदरसे में न ठहर सका और अन्य स्थान को चला गया।

(१०९) योग्य फिक्ह वेत्ता, अलाउलमुल्क खुरासानी जो फसीहुद्दीन के नाम से प्रसिद्ध था और जो इससे पूर्व हिरात का काजी रह चुका था, हिन्दुस्तान के सुल्तान[1] की सेवा में उपस्थित हुआ और सिन्ध में लाहरी[2] नगर का वाली (अधिकारी) नियुक्त हो गया था। उसने भी अपने सैनिकों सहित एमादुलमुल्क सरतेज की सहायता की थी। मैंने उसके साथ लाहरी नगर तक यात्रा करना निश्चय कर लिया। उसके पास १५ जहाज़ थे जिनके द्वारा वह अपना सामान लेकर सिन्ध नदी से आया था, अत मैं उसी के साथ चल दिया।

सिन्ध नदी की यात्रा तथा उसका प्रबन्ध—

फ़क़ीह अलाउलमुल्क के पास एक जहाज था जिसे अहौरा कहते थे। वह हमारे देश के तरीदा[3] के समान था किन्तु यह अधिक चौड़ा और छोटा था। इसके मध्य म एक लकड़ी की कोठरी थी। उस तक पहुँचने के लिए सीढी लगाई जाती थी। इसके ऊपर अमीर के बैठने के लिये स्थान बनाया गया था। उसके मित्र उसके सम्मुख बैठते थे और उसके दास उसके दाये बाये खड़े रहते थे। उस जहाज को ४० मल्लाह खेते थे। (११०) अहौरा के दाहिनी तथा बाईं ओर ४ नौकायें चलती थी। इनमें से २ में अमीर की अमीरी के मरातिब अर्थात् विशेष चिह्न बड़े ढोल, दुन्दुभी, तुरही, बिगुल तथा बाँसुरियां होती थी। अन्य दो में गायक बैठते थे। बारी-बारी ढोल तथा तुरही बजती थी और गायक गाने गाते थे। इस प्रकार गाना बजाना प्रात काल से लेकर मध्याह्न के भोजन तक होता रहता था। जब भोजन का समय आ जाता तो नौकायें एक दूसरे से जोड़ दी जाती थी। उनके बीच में सीढियां रख दी जाती थी और गायक अमीर की नौका अहौरा मे पहुच जाते थे। जब तक अमीर भोजन करता था तब तक यह लोग गाया बजाया करते थे। इसके उपरान्त वे लोग भी भोजन करके अपनी अपनी नौकाओ में चले जाते थे। इसके उपरान्त यात्रा पुन प्रारम्भ हो जाती थी और रात्रि तक नौकायें चलती रहती थी। जब अँधेरा हो जाता था तो शिविर नदी के किनारे लगा दिये जाते थे। अमीर उतर कर अपने शिविर में (१११) पहुँच जाता था। दस्तरख्वान[4] बिछा दिया जाता था और अधिकतर सेना अमीर

---

१ सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़।

२ चौदहवीं शताब्दी ईसवी में सिन्ध का एक प्रसिद्ध बन्दरगाह जो अब करौंची का एक ग्राम है।

३ एक प्रकार का छोटा जहाज।

४ वह कपड़ा जिस पर भोजन रख कर खाया जाता है।

के साथ ही भोजन करती थी। एशा[1] की नमाज के उपरान्त पहरा देने वाले रात्रि में बारी-बारी से पहरा दिया करते थे। जब पहरे वालो की एक टोली अपना पहरा समाप्त कर लेती तो उनमें से एक चिल्लाकर कहता था कि "हे श्राखुन्द मलिक (स्वामी)! इतनी रात्रि व्यतीत हो चुकी है।" इसके उपरान्त पहरा बदल जाता था और दूसरे पहरे वाले उनका स्थान ले लेते थे। जब उनका भी पहरा समाप्त हो जाता तो उनमें से भी एक व्यक्ति चिल्ला कर कहता कि "इतनी रात्रि समाप्त हो चुकी है।" प्रात काल ढोल तथा तुरही बजाई जाती और प्रात काल की नमाज़ पढी जाती। इसके उपरान्त भोजन लाया जाता और जब सब लोग भोजन कर चुकते तो यात्रा पुन प्रारम्भ हो जाती।

जब अमीर जल द्वारा यात्रा करता था तो वह नौकाओ पर उसी प्रकार यात्रा करता था जिसका उल्लेख हो चुका है। यदि वह स्थल के मार्ग से यात्रा करना चाहता था तो सब से आगे ढोल तथा तुरही बजती थी। हाजिब आगे-आगे चलते थे। उनके पीछे पदाति होते थे। पदातियो के पीछे अमीर चलता था। हाजिब के सामने ६ अश्वारोही चलते थे। इनमें से (११२) तीन ढोल लटकाये रहते थे और तीन बाँसुरियाँ लिये रहते थे। जब वे किसी गाँव अथवा किसी ऊँची भूमि पर पहुचते थे तो समस्त ६ सवार अपनी बाँसुरियाँ तथा ढोल बजाते थे। इसके उत्तर में अन्य सैनिक भी अपने ढोल तथा अपनी तुरही बजाते थे। हाजिबो के दाहिनी तथा बाईं ओर गायक होते थे जो बारी-बारी से गाते बजाते थे। जब मध्याह्न के भोजन का समय आ जाता तो सभी रुक जाते थे।

पाँच दिन की यात्रा के उपरान्त हम लोग अलाउलमुल्क की विलायत लाहरी में पहुचे। यह एक बडा ही सुन्दर नगर है और समुद्र-तट पर स्थित है। सिन्ध नदी यही गिरती है। इस प्रकार लाहरी मे दो समुद्र मिलते हैं। यह एक बहुत बडा बन्दरगाह है। यहाँ, यमन, फारस एव अन्य देशो के लोग आते हैं। इसी कारण यहाँ अत्यधिक कर प्राप्त होता है और यह नगर बडा ही धनी है। अमीर अलाउलमुल्क ने मुझे बताया था कि इस नगर में ६० लक (लाख) कर प्रति वर्ष प्राप्त होता है। लक का उल्लेख पहले हो चुका है। अमीर (११३) को इसमें से २० वाँ भाग प्राप्त होता है। सुल्तान अपने पदाधिकारियो को भिन्न-भिन्न प्रदेश इसी हिसाब से प्रदान करता है। वे कर का २०वाँ भाग स्वय ले लेते हैं।

एक विचित्र बात जो हमने नगर के बाहर देखी—

एक दिन मैं अलाउलमुल्क के साथ सवार होकर लाहरी से ७ मील की दूरी पर तारना[2] नामक मैदान में पहुचा। वहाँ मनुष्यों तथा जानवरो की मूर्तियाँ बहुत बडी सख्या में पडी थीं। उनमें से अधिकतर टूटी फूटी थी और पहचानी न जाती थी। किसी का केवल सिर और किसी का पैर ही अवशिष्ट था। कुछ पत्थर, अनाज, गेहू, सरसो और मिश्री आदि के समान थे। घरों की दीवारो तथा अन्य चहार दीवारियो के खडहर वर्त्तमान थे। हमने एक घर के खडहर देखे जो तराशे हुए पत्थर का बना था। इसके बीच में एक (११४) चबूतरा था जो एक ही पत्थर का बना था। उस पर एक आदमी की मूर्ति थी। उस मनुष्य का सिर कुछ लम्बा था और उसका मुह एक ओर फिरा हुआ था। दोनो हाथ कमर से बन्दियो के समान कसे हुये थे। वहाँ पानी के हौज़ थे, जिनमे बडी दुर्गन्ध आती थी। उसकी दीवारो पर हिन्दी शब्दो में कुछ लिखा हुआ था।

अमीर अलाउलमुल्क ने मुझ से कहा कि इतिहासकारो का कथन है कि इस स्थान पर एक बहुत बडा नगर था। यहाँ के निवासी बडे दुष्ट थे, अत. उन्हे पत्थर बना दिया गया।

१ रात्रि की नमाज।
२ मोरा मारी।

घर में चबूतरे पर जो पत्थर की मूर्ति थी वह वहाँ के राजा की बताई जाती है। वह घर अभी तक राजा का महल बताया जाता है। कहा जाता है कि हिन्दी अक्षरों में उस नगर के विनाश का इतिहास लिखा था। उस नगर का विनाश एक हज़ार वर्ष पूर्व हो चुका था। मैं अमीर अलाउलमुल्क के पास ५ दिन ठहरा। उसने मेरा बड़ा सम्मान किया और मेरी यात्रा (११५) के लिये आवश्यक सामग्री का प्रबन्ध कर दिया।

बकार (बक्कर)—

वहाँ से मैं बकार (बक्कर) की ओर गया। बकार (बक्कर) एक सुन्दर नगर है। सिन्ध नदी की एक शाखा उसके बीच से गुज़रती है। इसका उल्लेख आगे किया जायगा। उस शाखा के मध्य में एक सुन्दर खानकाह है, वहाँ यात्रियों को भोजन प्रदान होता है। इसे किशलू खाँ ने, *जब वह सिन्ध का वाली (प्रान्त का अधिकारी) था, बनवाया था।* इसका उल्लेख भी आगे होगा। मैं इस नगर में फकीह इमाम सद्रुद्दीन हनफ़ी, नगर के क़ाज़ी अबू हनीफा तथा पवित्र धर्मनिष्ठ शेख शम्सुद्दीन मुहम्मद शीराज़ी से, जोकि बड़े वृद्ध थे, मिला। शेख शम्सुद्दीन उमर की अवस्था १२० वर्ष की बताई जाती थी।

उज (उच्च)—

बकार (बक्कर) से मैं उज (उच्च) की ओर गया। यह एक बहुत बड़ा नगर है और बड़े सुन्दर ढग से बना है। यह सिन्ध नदी के तट पर स्थित है। यहाँ के बाज़ार बड़े सुन्दर तथा भवन बड़े मजबूत हैं। उस समय बकार (बक्कर) का अमीर, मलिक शरीफ जलालुद्दीन कीजी था। वह बड़ा विद्वान, पराक्रमी तथा दानी था। वह इसी नगर में अपने घोड़े से गिर कर मर गया।

इस मलिक की दानशीलता—

(११६) मलिक शरीफ जलालुद्दीन मेरा बड़ा मित्र हो गया था। हम लोग एक दूसरे से बड़ा प्रेम करते थे तथा हममें परस्पर बड़ी निष्ठा थी। इसके उपरान्त हम लोग राजधानी देहली में भी मिले। इस समय सुल्तान दौलताबाद की ओर चला गया था। इसका उल्लेख बाद में होगा। मुझे राजधानी में ही ठहरने का आदेश हुआ था। जलालुद्दीन ही ने मुझसे कह दिया था कि 'तुम्हें अपने व्यय के लिये अत्यधिक धन की आवश्यकता होगी। सुल्तान बहुत समय तक बाहर रहेगा अत तुम मेरे गाँव का कर वसूल करके व्यय कर लिया करना। तदनुसार मैंने ५ हज़ार दीनार व्यय कर दिये। ईश्वर उसे इसका प्रतिकार दे।

उज़ (उच्च) में मेरी भेंट आबिद, ज़ाहिद, शरीफ, शेख कुतुबुद्दीन हैदर अलवी से हुई। उसने मुझे खिरका (चीवर) प्रदान किया। वह बहुत बड़ा सूफी था। वह खिरका मेरे पास उस समय तक रहा जब तक कि मैं समुद्र में काफिर हिन्दुओं द्वारा नही लूटा गया।

मुलतान—

(११७) उज (उच्च) से मै मुल्तान पहुचा। यह नगर सिन्ध की राजधानी है और सिन्ध का अमीरुल उमरा (मुख्य अधिकारी) यहीं निवास करता है। मुल्तान के मार्ग में १० मील दूर एक नदी मिलती है जो खुसरवाबाद[1] के नाम से प्रसिद्ध है। यह एक बहुत बड़ी नदी है और नाव के बिना पार नही की जा सकती। इस स्थान पर यात्रियो के विषय में कड़ी पूछ ताछ की जाती है और उनके असबाब की तलाशी ली जाती है। जिस समय हम लोग वहाँ पहुचे उस समय वहाँ का नियम यह था कि यात्रियो के माल में से राज्य की

१ सम्भवतया रावी नदी की कोई शाखा अथवा रावी नदी। अब इस नाम की किसी नदी का कोई पता नहीं।

ओर से चौथाई ले लिया जाता था और प्रत्येक घोडे पर सात दीनार कर देना पडता था। हमारे हिन्दुस्तान पहुँचने के दो वर्ष उपरान्त सुल्तान ने ये कर क्षमा कर दिये। उसने यह आदेश दे दिया कि यात्रियों से जकात[1] तथा उश्र[2] के अतिरिक्त कुछ न वसूल किया जाय। इस समय सुल्तान ने अब्बासी खलीफा अबुल अब्बास की बैअत करली थी।

जब हम लोग नदी पार करने लगे और सामानो की तलाशी होने लगी तो मैं इस विचार से बडा दुखी हुआ कि मेरे सामान की भी तलाशी होगी। यद्यपि उसमें कुछ न था (११८) फिर भी लोगों को देखने में वह अधिक ज्ञात होता था। मुझे भय था कि कही मेरी पोल न खुल जाय किन्तु उसी समय सुल्तान के (अमीर) कुतुबुलमुल्क द्वारा भेजा हुआ एक बहुत बडा सैनिक पदाधिकारी पहुच गया। उसने आदेश दिया कि मेरी तलाशी न ली जाय। उसके आदेश का पालन हुआ। मैं इसके लिये ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। उस रात में हम लोग नदी तट पर रहे। प्रात काल मलिकुल बरीद[3] जिसका नाम देहकान था, हमारे पास आया। वह समरकन्द का निवासी था। वह सुल्तान को उस नगर तथा उससे सम्बन्धित स्थानो का समस्त हाल एव यात्रियों का वर्णन भेजने के लिये नियुक्त था। मेरा उससे परिचय कराया गया और मै उसके साथ अमीर मुल्तान (मुल्तान के हाकिम) की सेवा में उपस्थित हुआ।

मुल्तान के अमीर तथा उसके दरबार का हाल—

मुल्तान का अमीर (अधिकारी) कुतुबुलमुल्क बहुत बडा तथा योग्य अमीर था। जब मैं उसकी सेवा में उपस्थित हुआ तो वह मेरा स्वागत करने के लिये खडा हो गया। मुझसे हाथ मिलाया और मुझे अपन निकट बैठने का आदेश दिया। मैंने उसे एक दास, एक घोडा तथा किशमिश और बादाम भेंट किये। यह वस्तुयें यहाँ बडा बहुमूल्य उपहार समझी जाती हैं क्योंकि यह इस देश में नही होती वरन् खुरासान से लाई जाती हैं।

(११६) अमीर एक बहुत बडे चबूतर पर बैठा था जिस पर बडे बडे फर्श (कालीन) बिछे थे। उसके निकट काजी जिसका नाम सालार तथा खतीब जिसका नाम मुझे याद नही बैठे थे। सेना के बडे बडे अधिकारी उसके दाहिनी और बाईं ओर खडे थे। सशस्त्र सैनिक उसक पीछे खडे थे। सेना के समूह अर्ज[4] के लिए उसके समक्ष प्रस्तुत किये जा रहे थे और बहुत से धनुष वहाँ रक्खे थे। जब कोई धनुर्धारी सना में भर्ती होन क लिए आता तो उसे एक धनुष दिया जाता और वह अपनी शक्ति क अनुसार धनुष को हाथ में लेकर खीचता था। उसका वेतन जिस शक्ति से वह धनुष खीचता था उसी के अनुसार निश्चित होता था। जो कोई सवारों की सना में भर्ती होना चाहता था उसकी परीक्षा इस प्रकार ली जाती थी। एक छोटा नगाडा दीवार में लगा हुआ था। वह घोडा दौडाता हुआ आता और उस पर भाले स वार करता था। एक नीची दीवार में एक अंगूठी लटकी थी। परीक्षार्थी बडी तीव्र गति से घोडा दौडाता आता और यदि वह उस अपन भाले स उठा लेता तो वह बडा कुशल अश्वारोही समझा (१२०) जाता था। जो लोग धनुर्धारी सवारो की सेना में भर्ती होना चाहते थे उनके लिए भूमि पर एक गेंद रख दिया जाता था प्रत्येक व्यक्ति घोडा दौडाता हुआ आता और उस पर बाण फेंकता। उसके बाण चलान की योग्यता के अनुसार उसका वेतन निश्चित किया जाता था।

---

१ वह धार्मिक कर जो केवल मुसलमानों से वसूल किया जाता था।

२ वह कर जो मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य जाति वालों से प्राप्त किया जाता था। यह $\frac{1}{10}$ क हिसाब से लगाया जाता था।

३ डाक से सम्बन्धित कर्मचारियों का मुख्य अधिकारी।

४ निरीक्षण तथा भर्ती।

घर में चबूतरे पर जो पत्थर की मूर्ति थी वह वहाँ के राजा की बताई जाती है। वह घर अभी तक राजा का महल बताया जाता है। कहा जाता है कि हिन्दी अक्षरों में उस नगर के विनाश का इतिहास लिखा था। उस नगर का विनाश एक हज़ार वर्ष पूर्व हो चुका था। मैं अमीर अलाउलमुल्क के पास ५ दिन ठहरा। उसने मेरा बड़ा सम्मान किया और मेरी यात्रा (११५) के लिये आवश्यक सामग्री का प्रबन्ध कर दिया।

बकार (बक्कर)—

वहाँ से मैं बकार (बक्कर) की ओर गया। बकार (बक्कर) एक सुन्दर नगर है। सिन्ध नदी की एक शाखा उसके बीच से गुज़रती है। इसका उल्लेख आगे किया जायगा। उस शाखा के मध्य में एक सुन्दर खानकाह है, वहाँ यात्रियों को भोजन प्रदान होता है। इसे किशलू खाँ ने, जब वह सिन्ध का वाली (प्रान्त का अधिकारी) था, बनवाया था। इसका उल्लेख भी आगे होगा। मैं इस नगर में फकीह इमाम सद्रुद्दीन हनफी, नगर के काज़ी अबू हनीफा तथा पवित्र धर्मनिष्ठ शेख शम्सुद्दीन मुहम्मद शीराज़ी से, जोकि बड़े वृद्ध थे, मिला। शेख शम्सुद्दीन उमर की अवस्था १२० वर्ष की बताई जाती थी।

उज (उच्च)—

बकार (बक्कर) से मै उज (उच्च) की ओर गया। यह एक बहुत बड़ा नगर है और बड़े सुन्दर ढग से बना है। यह सिन्ध नदी के तट पर स्थित है। यहाँ के बाज़ार बड़े सुन्दर तथा भवन बड़े मज़बूत हैं। उस समय बकार (बक्कर) का अमीर, मलिक शरीफ जलालुद्दीन कीजी था। वह बड़ा विद्वान, पराक्रमी तथा दानी था। वह इसी नगर में अपने घोड़े से गिर कर मर गया।

इस मलिक की दानशीलता—

(११६) मलिक शरीफ जलालुद्दीन मेरा बड़ा मित्र हो गया था। हम लोग एक दूसरे से बड़ा प्रेम करते थे तथा हममें परस्पर बड़ी निष्ठा थी। इसके उपरान्त हम लोग राजधानी देहली में भी मिले। इस समय सुल्तान दौलताबाद की ओर चला गया था। इसका उल्लेख बाद म होगा। मुझे राजधानी में ही ठहरने का आदेश हुआ था। जलालुद्दीन ही ने मुझसे कह दिया था कि "तुम्हे अपने व्यय के लिये अत्यधिक धन की आवश्यकता होगी। सुल्तान बहुत समय तक बाहर रहेगा अत तुम मेरे गाँव का कर वसूल करके व्यय कर लिया करना। तदनुसार मैने ५ हज़ार दीनार व्यय कर दिये। ईश्वर उसे इसका प्रतिकार दे।

उज (उच्च) में मेरी भेंट आबिद, ज़ाहिद, शरीफ, शेख कुतुबुद्दीन हैदर अलवी से हुई। उसने मुझे खिरका (चीवर) प्रदान किया। वह बहुत बड़ा सूफी था। वह खिरका मेरे पास उस समय तक रहा जब तक कि मैं समुद्र में काफिर हिन्दुओ द्वारा नही लूटा गया।

मुल्तान—

(११७) उज (उच्च) से मै मुल्तान पहुचा। यह नगर सिन्ध की राजधानी है और सिन्ध का अमीरुल उमरा (मुख्य अधिकारी) यहीं निवास करता है। मुल्तान के मार्ग में १० मील दूर एक नदी मिलती है जो खुसरवाबाद[1] के नाम से प्रसिद्ध है। यह एक बहुत बड़ी नदी है और नाव के बिना पार नही की जा सकती। इस स्थान पर यात्रियो के विषय में कड़ी पूछ ताछ की जाती है और उनके असबाब की तलाशी ली जाती है। जिस समय हम लोग वहाँ पहुचे उस समय वहाँ का नियम यह था कि यात्रियो के माल में से राज्य की

१ सम्भवतया रावी नदी की कोई शाखा अथवा रावी नदी। अब इस नाम की किसी नदी का कोई पता नहीं।

ओर से चौथाई ले लिया जाता था और प्रत्येक घोडे पर सात दीनार कर देना पडता था। हमारे हिन्दुस्तान पहुँचने के दो वर्ष उपरान्त सुल्तान ने ये कर क्षमा कर दिये। उसने यह आदेश दे दिया कि यात्रियो से ज़कात[1] तथा उश्र[2] के अतिरिक्त कुछ न वसूल किया जाय। इस समय सुल्तान ने अब्बासी खलीफा अबुल अब्बास की बैअत करली थी।

जब हम लोग नदी पार करने लगे और सामानों की तलाशी होने लगी तो मैं इस विचार से बडा दुखी हुआ कि मेरे सामान की भी तलाशी होगी। यद्यपि उसमें कुछ न था (११८) फिर भी लोगो को देखने में वह अधिक ज्ञात होता था। मुझे भय था कि कही मेरी पोल न खुल जाय किन्तु उसी समय मुल्तान के (अमीर) कुतुबुलमुल्क द्वारा भेजा हुआ एक बहुत बडा सैनिक पदाधिकारी पहुच गया। उसने आदेश दिया कि मेरी तलाशी न ली जाय। उसके आदेशो का पालन हुआ। मैं इसके लिये ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। उस रात में हम लोग नदी तट पर रहे। प्रात काल मलिकुल बरीद[3], जिसका नाम देहकान था, हमारे पास आया। वह समरकन्द का निवासी था। वह सुल्तान को उस नगर तथा उससे सम्बन्धित स्थानो का समस्त हाल एव यात्रियो का वर्णन भेजने के लिये नियुक्त था। मेरा उससे परिचय कराया गया और मै उसके साथ अमीर मुल्तान (मुल्तान के हाकिम) की सेवा में उपस्थित हुआ।

मुल्तान के अमीर तथा उसके दरबार का हाल—

मुल्तान का अमीर (अधिकारी) कुतुबुलमुल्क बहुत बडा तथा योग्य अमीर था। जब मैं उसकी सेवा में उपस्थित हुआ तो वह मेरा स्वागत करने के लिये खडा हो गया। मुझसे हाथ मिलाया और मुझे अपन निकट बैठने का आदेश दिया। मैंने उसे एक दास, एक घोडा तथा किशमिश और बादाम भेंट किये। यह वस्तुयें यहाँ बडा बहुमूल्य उपहार समझी जाती हैं क्योकि यह इस देश में नही होती वरन् खुरासान से लाई जाती हैं।

(११६) अमीर एक बहुत बडे चबूतर पर बैठा था जिस पर बडे बडे फर्श (कालीन) बिछे थे। उसके निकट क़ाजी जिसका नाम सालार तथा खतीब जिसका नाम मुझे याद नही बैठे थे। सेना के बडे बडे अधिकारी उसके दाहिनी और बाईं ओर खडे थे। सशस्त्र सैनिक उसके पीछे खडे थे। सेना के समूह अर्ज़[4] के लिए उसके समक्ष प्रस्तुत किये जा रहे थे और बहुत से धनुष वहाँ रक्खे थे। जब कोई धनुर्धारी सेना में भर्ती होने के लिए आता तो उसे एक धनुष दिया जाता और वह अपनी शक्ति के अनुसार धनुष को हाथ में लेकर खीचता था। उसका वेतन जिस शक्ति से वह धनुष खीचता था उसी के अनुसार निश्चित होता था। जो कोई सवारों की सेना म भर्ती होना चाहता था उसकी परीक्षा इस प्रकार ली जाती थी। एक छोटा नगाडा दीवार में लगा हुआ था। वह घोडा दौडाता हुआ आता और उस पर भाले से वार करता था। एक नीची दीवार में एक अंगूठी लटकी थी। परीक्षार्थी बडी तीव्र गति से घोडा दौडाता आता और यदि वह उसे अपने भाले से उठा लेता तो वह बडा कुशल अश्वारोही समझा (१२०) जाता था। जो लोग धनुर्धारी सवारो की सेना में भर्ती होना चाहते थे उनके लिए भूमि पर एक गेंद रख दिया जाता था प्रत्येक व्यक्ति घोडा दौडाता हुआ आता और उस पर बाण फेंकता। उसके बाण चलाने की योग्यता के अनुसार उसका वेतन निश्चित किया जाता था।

१ वह धार्मिक कर जो केवल मुसलमानों से वसूल किया जाता था।

२ वह कर जो मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य जाति वालों से प्राप्त किया जाता था। यह $\frac{1}{10}$ के हिसाब से लगाया जाता था।

३ डाक से सम्बन्धित कर्मचारियों का मुख्य अधिकारी।

४ निरीक्षण तथा भर्ती।

जब हम उस अमीर की सेवा में उपस्थित हो कर अभिवादन कर चुके तो उसने हमें आदेश दिया कि हम नगर के बाहर शेख रुक्नुद्दीन के एक चेले के घर में निवास करें। रुक्नुद्दीन का हाल पहले लिखा जा चुका है। यहाँ का नियम यह है कि जब तक सुल्तान का आदेश प्राप्त नहीं हो जाता उस समय तक किसी को अतिथि नहीं रक्खा जाता।

उन परदेशियों की सूची जिनसे मैं मिला और जो सुल्तान की सेवा में हिन्दुस्तान जा रहे थे--

इनमें से एक खुदावन्द ज़ादा किवामुद्दीन था जो तिरमिज[1] का काजी था। वह सपरिवार यहाँ आया था और मुल्तान में उसके भाई एमादुद्दीन जियाउद्दीन तथा बुरहानुद्दीन भी उसके पास पहुँच गये थे। इनके अतिरिक्त एक मुबारक शाह भी था। वह समरकन्द के (१२१) गणमान्य व्यक्तियों में समझा जाता था। अरुनबुगा, बुखारे का एक सम्भ्रान्त व्यक्ति था। खुदावन्द ज़ादा की बहिन का पुत्र मलिक ज़ादा तथा बद्रुद्दीन फस्साल भी आये हुये थे। सभी के साथ उनके मित्र सहायक तथा दास थे।

हम लोगों के मुल्तान पहुंचने के दो मास उपरान्त नगर में सुल्तान का एक हाजिब शम्सुद्दीन बूशजी तथा मलिक मुहम्मद हरवी कोतवाल आये। सुल्तान ने उन्हें खुदावन्द ज़ादा के स्वागत के लिए भेजा था। खुदावन्द ज़ादा की धर्म पत्नी के स्वागत के लिये सुल्तान की माता मख्दूमये जहाँ ने तीन ख्वाजा सरा भेजे थे। वे लोग उनके तथा उनके पुत्रों के लिए खिलअतें लाये थे और उन्हें समस्त यात्रियों के लिए यात्रा की सामग्री की व्यवस्था करने का आदेश प्रदान हुआ था। उन लोगों ने मेरे पास आकर मेरे हिन्दुस्तान आने का उद्देश्य पूछा। मैंने उत्तर दिया कि मैं खुन्दआलम (संसार के स्वामी) की सेवा के उद्देश्य से उपस्थित हुआ हूं। (१२२) सुल्तान अपने राज्य में इसी नाम से प्रसिद्ध है। उसने यह आदेश दे दिया कि खुरासान के किसी यात्री[2] को उस समय तक हिन्दुस्तान में प्रविष्ट न होने दिया जाय जब तक कि उसकी इच्छा इस देश में निवास करने की न हो। जब मैंने उनसे यह कहा कि मैं इस देश में निवास करना चाहता हूँ तो उन्होंने काजी तथा आदिलों[3] को बुलवाया। उन्होंने मुझसे अपने विषय में तथा अपने साथियों के विषय में, जो यहाँ निवास करना चाहते थे, एक पत्र लिखवाया। मेरे कुछ साथियों ने इस पर हस्ताक्षर न किये। हमने यात्रा की तैयारी प्रारम्भ करदी। राजधानी ४० दिन की यात्रा की दूरी पर स्थित है। मार्ग में बराबर आबादी मिलती है। हाजिबों तथा अन्य पदाधिकारियों ने, जो उसके साथ भेजे गये थे, किवामुद्दीन की यात्रा की सभी आवश्यकताओं का प्रबन्ध किया और मुल्तान से अपने साथ २० खाना पकाने वाले भी ले लिए। हाजिब स्वयं उन्हें लेकर भोजन की व्यवस्था करने के लिए रात्रि में आगे चला जाता था। खुदावन्द ज़ादा को पहुँचने पर सभी वस्तुयें तैयार मिलती थीं। मैंने जिन यात्रियों का उल्लेख किया है उनमें से प्रत्येक अपने साथियों के साथ अपने शिविर में निवास करता था किन्तु कभी कभी वे सब खुदावन्द ज़ादे के साथ वही भोजन करते (१२३) थे जो उसके लिए तैयार होता था। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैंने उसके साथ केवल एक बार भोजन किया।

भोजन इस प्रकार लाया जाता था: पहले रोटियाँ लाई जाती थी जो बहुत पतली चपातियाँ होती हैं। एक भेड़ के चार या छ टुकड़े कर लेते हैं। इस प्रकार भुने हुये भेड़

१ आकमस नदी पर एक प्राचीन नगर।
२ सभी बाहरी यात्री, खुरासान के यात्री अथवा खुरासानी कहलाते थे।
३ लिखित पत्रों को प्रमाणित करने वाला अधिकारी।

के माँस के बड़े बड़े टुकडे एक एक मनुष्य के समक्ष रखे जाते हैं, फिर घी में तली हुई रोटियाँ लाई जाती हैं। यह हमारे देश की उन रोटियो के समान होती हैं जो मुश्रक कहलाती हैं। इसके बीच में हलवा साबुनी[1] भरा जाता है। प्रत्येक रोटी के टुकडे पर एक मीठी रोटी रक्खी जाती है, जिसको खिश्ती कहते हैं। इसका अर्थ है 'ईंट के समान'। यह आटे, शकर तथा घी से बनाई जाती है। उसके उपरान्त घी प्याज और हरे अदरक में पका हुआ माँस चीनी की पलेटो में रक्खा जाता है फिर एक वस्तु लाई जाती है जिसे समोसा कहते हैं। इसमे कीमा किया हुआ माँस होता है। बादाम, जायफल, पिस्ता, प्याज और गरम मसाला डाल-कर पतली चपातियो में लपेट दिया जाता है और घी में तल लिया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति के (१२४) सामने ४ या ५ समास रक्खे जाते है, फिर घी मे पके हुये चावल लाते हैं। उसके ऊपर भुना हुआ मुर्ग होता है। इसके उपरान्त लुक़ैमातुल्‌ क़ाज़ी[2] लाई जाती है। इस हाशिमी भी कहते हैं।

इसके उपरान्त काहिरिया[3] लाते हैं। भोजन प्रारम्भ होने से पूर्व हाजिब दस्तरख्वान पर खड़ा हो जाता है। वह सुल्तान की दिशा में अभिवादन करता है। समस्त उपस्थित जन भी उसी दिशा में अभिवादन करते हैं। हिन्दुस्तान में लोग खिदमत (अभिवादन) इस प्रकार करते हैं जिस प्रकार लोग नमाज के समय घुटनों पर हाथ रख कर झुकते हैं। इस क्रिया के उपरान्त दस्तरख्वान पर बैठते हैं। भोजन प्रारम्भ करने से पूर्व चाँदी, सोने तथा काँच के प्यालो में मिश्री और गुलाब का शरबत पीते है। जब शरबत पी चुकते हैं तो हाजिब बिस्मिल्लाह[4] कहता है उस समय सब भोजन करना प्रारम्भ कर देते हैं। भोजन के उपरान्त फुक़ा[5] के प्याले लाये जाते हैं। जब लोग फुक्क़ा पी चुकते हैं तो पान सुपारी आती है। पान सुपारी ले लेने के उपरान्त हाजिब बिस्मिल्लाह कहता है। सब उठ खड़े होते हैं और (१२५) जिस प्रकार भोजन से पूर्व खिदमत (अभिवादन) की थी उसी प्रकार पुन करते हैं और उसके उपरान्त दस्तरख्वान से उठ कर चले जाते हैं।

अबूहर[6]—

अब हम मुल्तान से रवाना हुये। हमारे हिन्दुस्तान पहुचने तक, जैसा इसमे पूर्व उल्लेख हुआ है, वही व्यवस्था रही। सबसे पहले हम जिस नगर मे प्रविष्ट हुये वह अबूहर था। यह हिन्दुस्तान के नगरो में पहला नगर है। यह एक छोटा और सुन्दर नगर है। यहाँ की आबादी बडी घनी है और इसमें नदियाँ तथा वृक्ष पाये जाते है। हिन्दुस्तान में हमारे देश के वृक्षों में से बेर के अतिरिक्त कोई वृक्ष नही पाया जाता। हमारे देश की अपेक्षा यहाँ का बेर बहुत बडा और मीठा होता है। इसकी गुठली माँजू के दाने के बराबर होती है। यहाँ बहुत से ऐसे वृक्ष भी पाये जाते हैं जो न तो हमारे देश में और न किसी अन्य स्थान में पाये जाते हैं।

भारतीय वृक्ष तथा फल—

(१२६) हिन्दुस्तान में एक फल अम्बा (आम) होता है। उसका वृक्ष नारगी के वृक्ष

---

१ एक प्रकार की मिठाई। अलीगढ़ में यह मिठाई अब भी बहुत बिकती है।

२ एक प्रकार का हलवा।

३ यह भी एक प्रकार का हलवा होता है।

४ अल्लाह के नाम से। मुसलमान प्रत्येक कार्य करने के पूर्व बिस्मिल्लाह कहना बड़ा आवश्यक समझते हैं।

५ एक प्रकार का जौ का पेय जिसमें मद नहीं होता। सम्भवतया इसे भोजन पचाने के लिए तैयार किया जाता होगा।

६ पंजाब के फ़ीरोज़पुर ज़िले की फ़ाज़िल्का तहसील का एक प्राचीन नगर।

के समान होता है, किन्तु यह इससे बहुत बडा होता है और इसमें पत्ते भी अधिक होते हैं। इसकी छाया भी बडी घनी होती है; किन्तु जो इसकी छाया में सोता है वह रुग्ण हो जाता है। उसका फल आलू बुखारे से बडा होता है। पकने के पूर्व यह हरा रहता है। जब यह गिर पडता है तो उसमें नमक डाल कर उसी प्रकार अचार बनाते हैं जिस प्रकार हमारे देश में नीबू तथा खट्टे का अचार बनाया जाता है। हिन्दुस्तानी अदरक तथा मिर्च का भी अचार बनाते हैं और खाने के साथ खाते हैं। प्रत्येक ग्रास के उपरान्त थोडा सा अचार खा लेते हैं। खरीफ में जब अम्बा (आम) पकता है तो पीले रग का हो जाता है और वह सेब के समान खाया जाता है। कुछ लोग उसे चाकू से काट कर खाते हैं और कुछ चूसते हैं। यह फल मीठा होता है, किन्तु इसमें थोडी-सी खटास भी होती है। इसकी गुठली बडी निकलती है। जब गुठली बो दी जाती है तो उसमें से वृक्ष निकल आता है जिस प्रकार अन्य बीजों से वृक्ष निकलते हैं।

यहाँ शकी व बरकी (कटहल) का वृक्ष भी होता है जो बहुत बडा होता है और (१२७) बहुत समय तक वर्तमान रहता है। इसके पत्ते आखरोट के पत्तो के समान होते हैं। इसका फल वृक्ष की जड में लगता है। जो फल भूमि से मिला होता है वह बरकी कहलाता है। वह अधिक मीठा तथा बडा स्वादिष्ट होता है। जो फल ऊपर लगता है वह शकी कहलाता है। उसका फल बडे कद्दू के समान होता है और छिलका गाय की खाल की तरह होता है। जब खरीफ में यह बहुत पीला हो जाता है तो तोड लिया जाता है। जब वह चीरा जाता है तो प्रत्येक कटहल में से १०० या २०० बीज खीरों के समान निकलते है। बीजो के बीच में पीले रग की एक झिल्ली होती है। प्रत्येक बीज में बडी (फूल) सेम के बराबर गुठली होती है इन गुठलियों को भूनकर या पकाकर खाते हैं तो उसका स्वाद फूल (बडी सेम) के समान होता है। फूल (बडी सेम) इस देश में नही होती। इन गुठलियों को लाल मिट्टी में दबा देते और ये दूसरे वर्ष तक रह जाती हैं। यह हिन्दुस्तान का सबसे अच्छा फल समझा जाता है।

तेन्दू, आबनूस के वृक्ष का फल होता है। उसका फल खुबानी के बराबर होता है (१२८) और रग भी वैसा ही होता है। यह बडा मीठा होता है।

जमून (जामुन)—इसका वृक्ष बडा होता है। उसका फल जैतून के फल के बराबर होता है किन्तु यह कुछ कुछ काला होता है। जैतून के समान उसके भीतर एक गुठली होती है।

इस देश में मीठी नारगी बहुत बडी सख्या में होती है किन्तु खट्टी नारगी बहुत कम होती है। यहाँ एक तीसरे प्रकार की भी नारगी होती है जो खट्टी मिट्ठी होती है। मुझे वह बडी स्वादिष्ट ज्ञात होती थी और मैं उसे बडी रुचि से खाता था।

महुआ—इसका वृक्ष बडा होता है। पत्ते आखरोट के पत्तो के समान होते हैं किन्तु इसके पत्तो में कुछ लाली तथा पीलापन मिला होता है। उसका फल भी छोटे आलू बुखारे के समान होता है। वह बडा मीठा होता है। प्रत्येक फल के मुह पर एक छोटा दाना होता है जो अगूर के समान होता है। वह बीच में से खाली होता है। उसका स्वाद अगूर के समान होता है किन्तु अधिक खा लेने से सिर मे पीडा होने लगती है। सूखा महुआ स्वाद में अन्जीर के समान होता है। मै अन्जीर के स्थान पर उसे खाया करता था। अन्जीर इस देश में नही होता। महुए के मुह पर जो दूसरा दाना होता है वह भी अगूर कहलाता है। अगूर हिन्दुस्तान में बहुत कम होता है। केवल देहली के कुछ भागों तथा

कुछ अन्य प्रदेशो में पाया जाता है। महुए में साल मे दो बार फल लगते हैं। उसकी गुठली का तेल निकाला जाता है जो दीपको में जलाया जाता है।

कसेरा (कसेरू)—इसको भूमि से खोद कर निकालते हैं। यह अखरोट के समान होता है और बड़ा मधुर होता है।

जो फल हमारे देश में होते हैं उनमें से अनार भी हिन्दुस्तान में होता है। इसमें साल (१३०) में दो बार फल लगते हैं। मालदीप टापू मे मैने देखा कि अनार १२ महीने फल देता है। हिन्दुस्तानी इसे अनार कहते हैं। इसी से जुलनार (गुलनार) शब्द निकला है, जुल (गुल) फारसी में फूल को कहते हैं और नार अनार को कहते हैं।

हिन्दुस्तान में बोये जाने वाले अनाज जिनका प्रयोग भोजन में होता है—

हिंदुस्तान में साल में दो फस्ल होती हैं। जब ग्रीष्म ऋतु में वर्षा होती है तो खरीफ की फस्ल बोई जाती है। यह ६० दिन के उपरान्त काट ली जाती है। खरीफ की फस्ल में निम्नांकित अनाज पैदा होते हैं:

(१) कुजरू—जो एक प्रकार की ज्वार है और समस्त अनाजो में यह अधिक मात्रा में होती है।

(२) क़ाल—जो अनली[1] के समान होती है।

(३) शामाख—इसके बीज काल के बीजों से छोटे होते हैं। प्राय शामाख बिना बोये ही उग जाता है। प्राय आबिद, जाहिद, (सूफी, सत) फकीर तथा दरिद्र लोग शामाख ही खाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने बांयें हाथ में एक बड़ी टोकरी ले लेता है और दाहिने हाथ (१३१) में एक छड़ी ले लेता है। उसी से वह शामाख झाड़ता जाता है और वह टोकरी में गिरता जाता है। इस प्रकार लोग साल भर के लिये शामाख एकत्र कर लेते हैं। शामाख को एकत्र करके धूप में सुखाया जाता है। काठ की ओखलियो में कूट कर इसकी भूसी पृथक् कर ली जाती है और सफेद दाना भीतर से निकल आता है। उसकी खीर भैंस के दूध में पकाई जाती है जो उसकी रोटी की अपेक्षा अधिक स्वादिष्ट होती है। मैं प्राय खीर पका कर खाया करता था और वह मुझे बड़ी स्वादिष्ट लगती थी।

(४) मांश—मटर की एक किस्म है।

(५) मूज (मूग)—यह मांश की एक किस्म है किन्तु इसका बीज कुछ लम्बा होता है और यह अधिक हरा होता है। मूज (मूग) चावल में मिलाकर पकाया जाता है। यह भोजन किशरी (खिचड़ी) कहलाता है। इसको घी के साथ खाते हैं। प्रातःकाल किशरी (१३२) नाश्ते में उसी प्रकार खाई जाती है जिस प्रकार हमारे देश में हरीरा खाया जाता है।

(६) लोबिया—यह भी एक प्रकार की सेम है।

(७) मोत (मोठ)—यह कुजरू के समान होता है किन्तु इसके दाने छोटे होते हैं। यह घोड़े तथा बैलो को दाने के स्थान पर दिया जाता है। इसे खाकर पशु बड़े मोटे हो जाते हैं। इन लोगो का विचार है कि जौ में इतनी शक्ति नहीं होती, अत पशुओं को अधिकतर मोंठ चक्की में दल कर और पानी में भिगो कर दिया जाता है। हरे चारे के स्थान पर पशुओं को मांश की पत्तियाँ दी जाती हैं। सर्व प्रथम उन्हे पहले, १० दिन घी खिलाया जाता है। कुछ को ३ रतल[2] और कुछ को ४ रतल[2] प्रतिदिन दिया जाता है। इन दिनो उन पर सवारी नहीं की जाती। इसके उपरान्त एक मास तक मांश की पत्तियाँ खिलाई जाती हैं।

---

१ एक प्रकार की ज्वार।

२ [illegible]

जिन अनाजो का उल्लेख किया गया वे खरीफ के अनाज हैं। वे बोने के ६० दिन उपरान्त काट लिये जाते हैं। उसके पश्चात् रबी के अनाज बोये जाते हैं अर्थात् गेहू, जो, (१३३) ममूर। यह सब उन्ही खेतों में बोये जाते हैं जिनमें खरीफ के अनाज। इस देश की भूमि बडी उपजाऊ तथा उत्तम है। चावल साल में तीन बार बोया जाता है। चावलो की पैदावार सब अनाजो से अधिक होती है। तिल और गन्ना भी खरीफ के साथ बोया जाता है।

अब मै यात्रा का पुन उल्लेख करता हूँ। अबूहर से चलकर हम एक मरुभूमि में प्रविष्ट हुये। यह एक दिन की यात्रा थी। उसके किनारों पर बडे बडे पर्वत थे। उन बडे बडे पर्वतों में हिन्दू रहते हैं। वे प्राय यात्रियो को लूट लिया करते हैं। हिन्दुस्तान के निवासियों में अधिकतर लोग काफिर हैं। कुछ लोग जिम्मी हैं। वे इस्लामी राज्य के अधीन हैं और ग्रामो में निवास करते हैं। वे एक मुसलमान हाकिम के अधीन होते हैं। हाकिम एक आमिल अथवा खदीम (खादिम) के अधीन होता है। गाँव उसी की अक्ता में होता है। उनके अतिरिक्त अन्य विद्रोही होते हैं और वे युद्ध किया करते हैं, पर्वतों में घुसे रहते हैं तथा यात्रियो को लूट लेते हैं।

मार्ग मे हमारा युद्ध; यह पहला युद्ध था जो हमने हिन्दुस्तान मे देखा—

(१३४) जब हम अबूहर से चले तो सब लोग प्रातःकाल ही चल दिये। मै तथा कुछ अन्य लोग मध्याह्न तक वहीं रहे और मध्याह्न उपरान्त वहाँ से चले। हम लोग कुल २२ सवार थे। इनमे से कुछ अरब तथा कुछ अन्य थे। हम पर ८० पैदल हिन्दुओ तथा दो सवारो ने आक्रमण कर दिया। मेरे साथी बडे वीर तथा साहसी थे। वे बडी वीरता से लडे। हमने १२ पदातियो तथा एक सवार की हत्या कर डाली और उसका घोडा अधिकार में कर लिया। मैं तथा मेरा घोडा बाण से घायल हो गये किन्तु उनके बाण बडे साधारण होते हैं। हमारे साथियो में से एक का घोडा घायल हो गया था। हमने उसे वह घोडा दे (१३५) दिया जो हमें काफिरो से प्राप्त हुआ था। घायल घोडे को हलाल कर लिया गया। जो तुर्क हमारे साथ थे वे उसे खा गये। हम उन लोगो के सिर, जिनकी हमने हत्या की थी अबी बकहर[1] के किले में ले गये। वहाँ हम लोग रात्रि में पहुचे और उन्हे दीवार में लटका दिया। वहाँ हम आधी रात को पहुँचे। वहाँ से चल कर हम दो दिन के उपरान्त अजोधन पहुच गये।

अजोधन—

यह एक छोटा नगर है और शेख फरीदुद्दीन बदायूनी का नगर है। मुझ से शेख बुरहानुद्दीन अलअारज ने सिकन्दरिया में कहा था कि मेरी भेंट शेख फरीदुद्दीन[2] से होगी। ईश्वर को धन्य है कि मेरी भेंट उनसे हो गई। शेख फरीदुद्दीन मलिकुलहिन्द के गुरु हैं। सुल्तान ने यह नगर उन्हे प्रदान कर दिया है। शेख को सर्वदा इस बात की आशका रहती है कि अन्य लोग अपवित्र होते हैं। ईश्वर हमें इससे सुरक्षित रक्खे। वे किसी से न तो हाथ मिलाते हैं और न किसी के निकट जाते हैं। जैसे ही उनके वस्त्र किसी से छू जाते हैं वे उन्हें धो डालते हैं। मै उनकी खानकाह में पहुच कर उनकी सेवा में उपस्थित हुआ। मैंने शेख

१ अजोधन से २० मील दूर (अबू बक्हर)।

२ शेख फरीदुद्दीन गजशकर की मृत्यु १२६५ ई० में हो गई थी। इब्ने बत्तूता का अभिप्राय शेख फरीद के पोते शेख अलाउद्दीन मौजे दरिया से होगा। इनकी मृत्यु ७३४ हि० (१३३५ ई०) में हुई। शेख फरीदुद्दीन गंजशकर को इब्ने बत्तूता ने शेख फरीदुद्दीन बदायूनी लिखा है।

बुरहानुद्दीन का अभिवादन उनको पहुँचाया। इससे उन्हें बडा आश्चर्य हुआ और उन्होने (१३६) उत्तर दिया कि "मैं इसके योग्य नही हू।" मैंने उनके दोनो योग्य पुत्रो से भी भेंट की। उनके ज्येष्ठ पुत्र का नाम मुइज्जुद्दीन था। अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त वे उनके उत्तराधिकारी बने। उनके दूसरे पुत्र का नाम अलमुद्दीन था। मैं उनके दादा के मकबरे के दर्शन के लिये भी गया। उनका नाम शेख फरीदुद्दीन बदायूनी था। बदायून सम्बल प्रदेश में एक नगर है। जब मै इस नगर से चलने लगा तो मुझसे अलमुद्दीन ने कहा कि "मैं उनके पिता से मिल कर जाऊँ।" मै उनकी सेवा में उपस्थित हुआ। वे सबसे ऊँची छत पर थे और श्वेत वस्त्र धारण किये थे। वे एक बडी पगडी बांधे हुये थे। उसका एक सिरा एक ओर लटका हुआ था। उन्होने मेरे लिये ईश्वर से शुभ कामना की और मुझे कुछ मिश्री तथा शकर दी।

हिन्दुस्तानी जो आग मे जल कर आत्म-हत्या कर लेते हैं (सती)—

जब मैं शेख (मौजे दरिया) के पास से लौटा तो मैंने देखा कि लोग हमारे शिविर की ओर से भागे हुये चले आते हैं और उनमें हमारे कुछ साथी भी हैं। मैंने पूछा कि क्या बात है? उन्होने उत्तर दिया कि "एक हिन्दू काफिर की मृत्यु हो गई है और उसको जलाने (१३७) के लिये अग्नि तैयार की गई है। उसकी (पत्नी) भी अपने आप को जला देगी।" जब वे जलाये जा चुके तो मेरे साथी लौट आये। उन्होने मुझ से कहा कि "स्त्री मृतक शरीर से लिपट गई थी और उसी के साथ जल गई।" इसके अतिरिक्त मैं देखा करता था कि एक हिन्दू स्त्री बहुमूल्य वस्त्र धारण किये हुये घोडे पर जाया करती थी। उसके पीछे हिन्दू और मुसलमान होते थे और आगे आगे नक्कारे तथा नौबत बजती जाती थी। ब्राह्मण, जोकि हिन्दुओ के नेता होते हैं, उनके साथ होते थे। सुल्तान के राज्य में विधवा को जलाने के लिये सुल्तान से आज्ञा लेनी पडती है। सुल्तान की आज्ञा के उपरान्त ही उसे जलाया जा सकता है।

कुछ समय उपरान्त मै एक नगर मैं था जिसके अधिकतर निवासी हिन्दू थे। वह नगर अम्जेरी[१] कहलाता था। वहाँ के अधिकतर निवासी काफिर थे किन्तु वहाँ का अमीर (अधिकारी) सामिरा जाति का मुसलमान था। नगर के निकट कुछ विद्रोही काफिर रहते थे। उन्होंने एक दिन सडक पर डाका मारा। मुसलमान अमीर उनसे युद्ध करने के लिये गया। (१३८) उसके साथ उसकी हिन्दू तथा मुस्लिम प्रजा भी थी। उन लोगो के मध्य में बडा घोर युद्ध हुआ। युद्ध में ७ काफिर मारे गये। इनमें से तीन के पत्नियाँ थी। तीनो विधवाओ ने अपने आपको जला डालना निश्चय कर लिया। पति की मृत्यु के उपरान्त पत्नी का अपने आपको जला डालना बडा ही प्रशसनीय कार्य समझा जाता है किन्तु यह अनिवार्य नही। जब कोई विधवा अपने आपको जला डालती है तो उसके घर वालो का सम्मान बढ जाता है और वह पति-भक्ति के लिये प्रसिद्ध हो जाती है। जो विधवा अपने आपको नही जलाती उसे मोटे वस्त्र धारण करने पडते हैं और वह बडा दुखी जीवन व्यतीत करती है। पति भक्ति के अभाव के कारण लोग उससे घृणा करते हैं, किन्तु वह जलने के लिए विवश नही की जाती।

जब उन तीनों स्त्रियो ने जिनका उल्लेख ऊपर हो चुका है अपने आपको जलाना निश्चय कर लिया तो वे गाती बजाती रहीं और नाना प्रकार के खाने पीने तथा समारोह

१ धार (मालवे) के निकट अमझेरा। यह दृश्य इब्ने बत्तूता ने मालवा से दौलताबाद जाते समय १३४२ ई० में देखा होगा।

में व्यस्त रही। ऐसा ज्ञात होता था कि वे ससार से विदा हो रही हैं। प्रत्येक स्थान की (१३९) स्त्रियाँ उनके साथ समारोह में सम्मिलित थी। चौथे दिन प्रात काल प्रत्येक की सवारी के लिये घोडे लाये गये। उन्होने बहुमूल्य वस्त्र धारण किये और सुगधि लगाई। उनके दाहिने हाथ में एक नारियल था जिससे वे खेलती जाती थी, और बाय हाथ में एक दर्पण था जिसमें वे अपना मुख देखती जाती थी। उन्हें ब्राह्मण तथा उनके सम्बन्धी घेरे हुये थे। उनके आगे आगे लोग नक्कारे, तुरही तथा बिगुल बजाते जाते थे। काफिरो में से प्रत्येक उनसे कहता था कि "मेरी दण्डवत मेरे पिता, भाई, माता अथवा मित्र को पहुचा देना।" वह उनसे हाँ कहती थी और मुसकराती जाती थी। मै अपने मित्रो के साथ उन लोगो के जलाये जाने का दृश्य देखने के लिए चल दिया। तीन मील यात्रा करके हम एक अंधेरे स्थान पर पहुचे, जहाँ अधिक जल तथा वृक्षो की छाया थी। बीच में चार गुम्बद थे। प्रत्येक गुम्बद में एक-एक पत्थर की मूर्ति थी। गुम्बद के बीच में जल का एक सरोवर था। वृक्षो की छाया के (१४०) कारण उस पर धूप न पडती थी। तिमिर में यह स्थान मानो नरक का एक टुकडा था (ईश्वर हमें इससे बचाये)। जब स्त्रियाँ उन गुम्बदो के निकट पहुची तो हौज में उतर कर उन्होने स्नान किया और डुबकियाँ लगाईं। अपने वस्त्र तथा आभूषण उतार कर दान कर दिये और उनके स्थान पर एक मोटी साडी धारण की। सरोवर के नीचे एक स्थान पर अग्नि प्रज्वलित की गई। जब उस पर सरसो का तेल डाला गया तो उसमें से लपट उठने लगी। लगभग १५ (पन्द्रह) आदमियो के हाथ में लकडी के गट्ठे बधे हुये थे। दस आदमी बडे-बडे बाँस लिये हुये थे। ढोल तथा तुरही बजाने वाले विधवाओ के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। आदमियो ने आग के सामने एक रजाई लगा दी थी जिससे स्त्रियाँ अग्नि से भयभीत न (१४१) हो जायें। मैने देखा कि एक स्त्री रजाई तक आई और उसे जोर से आदमियो के हाथ से खीच लिया और मुस्करा कर उनसे फारसी भाषा में कहा कि "मुझे[१] आग से डराते हो। मै जानती हूँ कि वह आग है, मुझे जाने दो।" इसके उपरान्त उसने अग्नि के सामने हाथ जोडे और अपने आपको उसमें गिरा दिया। तुरन्त नक्कारे तुरही तथा बिगुल बजने लगे। आदमियो ने उसके ऊपर लकडियाँ फेक दी। कुछ लोगो ने लकडी के बडे-बडे कुन्दे उस पर डाल दिए जिससे वह हिल न सके। लोगो ने चिल्लाना प्रारम्भ कर दिया और उच्च स्वर से कोलाहल करने लगे। मै यह दृश्य देख कर मूर्छित हो गया और घोडे से गिरने को था कि मुझे मेरे मित्रो ने सभाल लिया और मेरा मुख जल से प्रक्षालित करवाया। मै वहाँ से लौट आया।

हिन्दुस्तानी इसी प्रकार अपने आपको जल में डुबा देते हैं। अधिकतर लोग गगा नदी में (१४२) डूब जाते हैं। इस नदी की यह लोग यात्रा करते हैं और शव की राख इसी नदी में डालते हैं। उनका कथन है कि यह स्वर्ग की नदी है। जब कोई डूबने के लिये आता है तब वह उपस्थित जनो से कह देता है कि "मै किसी सासारिक कष्ट अथवा निर्धनता के कारण ऐसा नही करता वरन् अपने कुसाई (गुसाई) की प्रसन्नता के लिये करता हू। गुसाईं इनकी भाषा में अल्लाह का नाम है। जब वह डूब कर मर जाता है तो उसको निकाल कर जलाते हैं और उसकी राख गगा नदी में डाल देते हैं।

सरसुती—

अब मै पुन यात्रा का वर्णन करता हू। अजोधन से चल कर चार दिन की यात्रा के उपरान्त हम सरसती (सरसुती अथवा सिरसा) पहुँचे। यह नगर बहुत बडा है। वहाँ का

१ "मा रा मी तरसानी अज़ आतिश। मन मी दानम कि आतिश अस्त, रिहा कुनी मारा।"

चावल बड़ा अच्छा होता है और अधिक संख्या में होता है। वहाँ से वह देहली भेजा जाता है। (१४३) नगर का कर बहुत अधिक है। हाजिब शम्सुद्दीन बूशन्जी ने मुझे इसका कर बताया था, किन्तु मुझे याद नहीं।

हांसी—

वहाँ से हम हांसी गये। यह एक बड़ा ही सुन्दर नगर है और बड़ी अच्छी तरह से बसा है। यहाँ की आबादी भी अधिक है। इसके चारो ओर एक बहुत ऊंची वहार दीवारी है। कहा जाता है कि एक काफिर राजा तूरा न इसे बनवाया था। उसके विषय में नाना प्रकार की कथायें प्रसिद्ध हैं। क़ाज़ी कमालुद्दीन सद्रे जहाँ, क़ाज़ी-उल-कुज़्ज़ात उसका भाई कतलू खाँ (कुतलुग खाँ) सुल्तान का गुरु और उनके भाई निज़ामुद्दीन तथा शम्सुद्दीन जो मक्के चला गया था और जिसकी मृत्यु वहीं हो गई थी, इसी नगर के मूल निवासी थे।

मसऊदाबाद—

हम हांसी से चल कर दो दिन उपरान्त मसऊदाबाद पहुँचे। यह राजधानी देहली से १० मील की दूरी पर स्थित है। हम लोगो ने ३ दिन वहाँ विश्राम किया। हाँसी तथा मसऊदाबाद मलिक कमाल गुर्ग के पुत्र मलिकुल मुअज्जम होशग के अधीन था। गुर्ग का अर्थ भेड़िया है। उसका उल्लेख बाद में होगा।

(१४४) जब हम पहुँचे तो हिन्दुस्तान का सुल्तान राजधानी में न था। वह क़न्नौज की ओर गया हुआ था। कन्नौज देहली से १० दिन की यात्रा की दूरी पर स्थित है। देहली में बादशाह की माता मख्दूमये जहाँ तथा उसका वजीर ख्वाजये जहाँ जिसका नाम अहमद बिन (पुत्र) अयाज रूमी था, राजधानी ही में थे। जहाँ का अर्थ संसार है। वजीर का मूल वंश तुर्क था। वजीर ने हम में से प्रत्येक के स्वागतार्थ उसी की श्रेणी के अनुसार मनुष्य भेजे। मेरे स्वागत को शेख बुस्तामी तथा शरीफ माज़िन्दरानी परदेशियो का हाजिब और फ़क़ीह अलाउद्दीन (१४५) कुन्नरा मुल्तानी आये। वजीर ने हमारे आने की सूचना सुल्तान को दी। यह सूचना पत्र-द्वारा भेजी गई थी, जिसे पैदल बरीद, जिन्हे दावा कहते थे, ले गये थे। यह सुल्तान को प्राप्त हो गई और तीन ही दिन में उत्तर भी आ गया। तीन दिन हमें मसऊदाबाद ठहरना पड़ा। तीन दिन उपरान्त हम से मिलने क़ाज़ी, फ़क़ीह, मशायख (सूफ़ी) तथा कुछ अमीर आये। हिन्दुस्तान में अमीरों को मलिक कहा जाता है, अर्थात् मिस्र एवं अन्य देशो में जो लोग अमीर कहलाते है वे इस देश में मलिक कहलाते हैं। हम से मिलने शेख ज़हीरुद्दीन ज़न्जानी, जो सुल्तान का एक उच्च पदाधिकारी था, आया।

पालम—

इसके उपरान्त हम मसऊदाबाद से चल कर एक गाँव के निकट ठहरे जिसको पालम कहते हैं। यह गाँव सैयिद शरीफ नासिरुद्दीन मुतहर औहरी का है। वे सुल्तान के नदीम हैं। सुल्तान के विश्वासपात्र होने के कारण उन्हे विशेष लाभ प्राप्त हुआ है।

देहली—

दूसरे दिन प्रात काल हम हिन्दुस्तान की राजधानी देहली पहुँचे। यह एक भव्य तथा (१४६) शानदार नगर है। इसके भवन बड़े ही सुन्दर तथा दृढ है। यह चारो ओर से एक दीवार से घिरा हुआ है जिसकी तुलना संसार की किसी अन्य दीवार से नहीं हो सकती। यह केवल हिन्दुस्तान का ही सब से बड़ा नगर नहीं अपितु पूर्व के इस्लामी नगरों में भी यह सब से बड़ा है।

देहली का वर्णन—

देहली नगर बडा लम्बा चौडा है और पूर्णतया आबाद है। वास्तव में यह चार नगरों से मिल कर बना है जो एक दूसरे के निकट स्थित हैं। प्रथम जो देहली के नाम से प्रसिद्ध है, प्राचीन हिन्दुओं के समय का नगर है। वह ५८४ हि०[1] (११८८ ई०) में विजय हुआ। दूसरा नगर सीरी है। यह दारुल खिलफा (खलीफा के रहने का स्थान) के नाम से प्रसिद्ध है। यह नगर सुल्तान ने अब्बासी खलीफा मुस्तन्सिर के पोते गयासुद्दीन को उस समय प्रदान कर दिया था जब वह सुल्तान के दरबार में उपस्थित हुआ था। सुल्तान अलाउद्दीन तथा सुल्तान कुतुबुद्दीन इसी नगर में रहते थे। इनका उल्लेख इसके बाद होगा। तीसरा (१४७) नगर तुगलुकाबाद के नाम से प्रसिद्ध है। इसको सुल्तान, जिसके दरबार में हम उपस्थित हुये, के पिता सुल्तान तुगलुक ने बसाया था। इस नगर के बसाने का यह कारण था कि वह एक दिन सुल्तान कुतुबुद्दीन के सामने खडा था। उसने सुल्तान से निवेदन किया कि 'खुन्दे आलम ! इस स्थान पर एक नगर बसाना उचित होगा।' सुल्तान ने व्यगपूर्ण भाषा मे कहा "जब तुम सुल्तान हो जाना तो यहाँ नगर बसाना।" ईश्वर की कृपा से जब वह सुल्तान हो गया तो उसने यह नगर बसाया और उसका नाम अपने नाम पर रक्खा। चौथा नगर जहाँपनाह कहलाता है। इसमें इस समय का बादशाह सुल्तान मुहम्मद शाह जिसके दरबार में हम उपस्थित हुये, रहता है। उसने इस नगर को बसाया है। बादशाह का विचार था कि चारो नगरों को मिला कर एक दीवार उनके चारो ओर बनवा दें। उसने दीवार बनवाना प्रारम्भ किया किन्तु अधिक व्यय की आवश्यकता होने के कारण उसने दीवार अधूरी छोड दी।[2]

देहली के द्वारों तथा दीवार का वर्णन—

(१४८) नगर की चहारदीवारी समस्त ससार में अद्वितीय है। इसकी दीवारो की चौडाई ११ जरा (गज) है। इसमें कोठरियाँ तथा घर बने हुये हैं जिनमें चौकीदार तथा द्वारपाल रहते हैं। अनाज की खत्तियाँ जो अम्बार कहलाती हैं, चहार दीवारी में बनी हुई हैं। मन्जनीक, युद्ध की सामग्रियाँ तथा रआदा (अरादा) भी इन्ही गोदामो में रक्खे जाते हैं। अनाज भी इनमें ही एकत्र किया जाता है। इस अनाज को बहुत दिनो तक कोई हानि नही पहुचती और इसका रग भी नही बदलता। मेरे सामने इन गोदामो में से चावल निकाले गये। उनका रग ऊपर से काला हो गया था किन्तु स्वाद में अन्तर न हुआ था। मक्की तथा ज्वार भी उसमे निकाली जा रही थीं। कहते हैं कि सुल्तान बल्बन[3] के समय जिसको ९० वर्ष हो चुके हैं, यह अनाज भरा गया था। चहार दीवारी के ऊपर कई सवार तथा प्यादे समस्त नगर के चारों ओर घूम सकते हैं। शहर के अन्दर की ओर गोदामो में रोशनदान हैं जिससे रोशनी पहुचती है। इस चहार दीवारी के नीचे का भाग पत्थर का बना हुआ है। ऊपरी भाग पक्की ईंटो का बना हुआ है। इसमें कई बुर्ज एक दूसरे के निकट हैं। इस नगर में २८ (१४९) द्वार हैं जो दरवाज़ा कहलाते हैं। उनमें से निम्नाकित यह हैं :

---

१ इस ५८७ हि० (११९१ ई०) अथवा ५८९ हि० (११९३ ई०) होना चाहिये। (आदि तुर्क कालीन भारत)

२ शाहजहानाबाद अथवा देहली शाहजहाँ (१६२७ ई०—१६५८ ई०) द्वारा बसाई गई थी। मुहम्मद बिन तुगलुक के समय की देहली शाहजहानाबाद मे दस मील दूर दक्षिण में है। सुल्तान फ़ीरोज़ ने फ़ीरोज़ाबाद इन्द्रप्रस्थ के निकट बसाया। इस प्रकार वह दक्षिण से उत्तर की ओर बढ़ा।

३ बल्बन ने १२६६ ई० से १२८६ ई० तक राज्य किया। ९० वर्ष पूर्व १२४४ ई० में अलाउद्दीन मसऊद बादशाह था। (तबक़ाते नासिरी पृ० १९७-२०१, आदि तुर्क कालीन भारत पृ० ४१-४३।

बदायू दरवाज़ा—यह सबसे बड़ा दरवाजा है। मडवी दरवाज़ा—यहाँ अनाज का बाज़ार है। जुल (गुल) दरवाजा जहाँ उद्यान हैं, शाह दरवाजा, किसी व्यक्ति के नाम पर है। पालम दरवाज़ा पालम गाँव के नाम पर है। नजीब दरवाजा तथा कमाल दरवाजा किसी व्यक्ति के नाम से प्रसिद्ध हैं। गजनी दरवाज़ा, जिसका नाम गजनी नगर के नाम पर रक्खा गया है, गजनी खुरासान की सीमा पर है। ईदगाह तथा कुछ कब्रस्तान इसके बाहर हैं। बजालसा दरवाजा—इसके बाहर देहली के मकबरे हैं।[1] यह एक सुन्दर कब्रस्तान है। प्रत्येक कब्र पर यदि गुम्बद नही तो मिहराब अवश्य होती है। बीच में गुलशब्बो, रायबेल, चमेली (१५०) के फूल तथा अन्य फूल लगे हुये हैं। ये फूल सर्वदा खिले रहते हैं।

देहली की जामा मस्जिद–

देहली की जामा मस्जिद बहुत बड़ी है। उसकी दीवार, छतें तथा फर्श प्रत्येक सुन्दर तराशे हुये सफेद पत्थर के बने हुये हैं। इन्हे सीसा लगा कर बडी सुन्दरता से जोडा गया है। लकडी का इसमें नाम नही। इसमें पत्थर के १३ गुम्बद हैं। मिम्बर[2] भी पत्थर का बना है। ४ प्राँगण हैं। मस्जिद के बीचो बीच मे एक बहुत बडी लाट है। यह किसी को ज्ञात नही कि यह किस धातु की बनी है। मुझे कुछ हिन्दुस्तानी विद्वानो ने बताया कि यह सात धातुओं को मिला कर बनाई गई है। इस लाट का अगुल भर हिस्सा पालिश किया हुआ है और वह खूब (१५१) चमकता है। लोहे का इस पर कोई प्रभाव नही होता। यह लाट ३० ज़रा (गज) लम्बी है। मैं ने इसका घेरा अपनी पगडी से नापा था। वह ८ ज़रा (गज) है। मस्जिद के पूर्वी द्वार के निकट दो ताँबे की बहुत बडी बडी मूर्त्तियाँ पडी हुई हैं। वे पाषाण से जुडी हुई हैं। मस्जिद में आने जाने वाले उन पर पैर रख कर आते जाते हैं। इस मस्जिद के स्थान पर पहले बुतखाना (मन्दिर) था। जब देहली पर विजय प्राप्त हुई तो उसके स्थान पर यह मस्जिद बनवाई गई। मस्जिद के उत्तरी प्रागण में एक मीनार[3] है। इसके समान मीनार किसी देश में नही पाया जाता। यह लाल पत्थर का बना हुआ है यद्यपि मस्जिद सफेद पत्थर की बनी है। मीनार के पत्थरों पर खुदाई का काम है। यह बहुत ऊँचा है। इसके ऊपर का छत्र शुद्ध (१५२) सगमरमर का है और लट्टू शुद्ध सोने के हैं। उसका ज़ीना भीतर से इतना चौडा है कि उस पर हाथी चढ सकता है। एक विश्वासपात्र मनुष्य ने मुझे बताया कि जब इस मीनार का निर्माण हो रहा था तो मैने हाथियो को इसके ऊपर पत्थर ले जाते हुये देखा था। इसे सुल्तान मुइज्जुद्दीन बिन (पुत्र) नासिरुद्दीन बिन (पुत्र) सुल्तान गयासुद्दीन बल्बन ने बनवाया था। सुल्तान कुतुबुद्दीन[4] मस्जिद के पश्चिमी प्रागण में एक और मीनार इससे भी बडा और ऊँचा बनवाना चाहता था।[5] एक तिहाई के निकट उसने बनवा भी लिया था किन्तु वह इसे अधूरा ही छोड कर मर गया। सुल्तान मुहम्मद ने उसे पूरा करने का विचार किया था किन्तु इसे अशुभ समझ कर उसने अपना विचार त्याग दिया। जहाँ तक इसकी मोटाई तथा ज़ीने

१ तारीखे फीरोज़शाही मे कैकुबाद के राज्यकाल के अन्त में १२ द्वारों का उल्लेख है। (बरनी पृ० १७२, आदि तुर्क कालीन भारत पृ० २४४) अमीर खुसरो के केरानुस्सादैन में देहली के १३ द्वार लिखे हैं (केरानुस्सादैन पृ० २६, आदि तुर्क कालीन भारत पृ० १८६)

२ मस्जिद का मच।

३ कुतुब मीनार जो कूवतुल इस्लाम मस्जिद का माज़ना अथवा अज़ान देने का स्थान था।

४ कुतुबुद्दीन मुबारक शाह खलजी (१३१६-१३२० ई०)

५ यह मीनार सुल्तान अलाउद्दीन खलजी (१२१०-१२१६ ई०) ने ७११ हि० (१३११-१२ ई०) में बनवाना प्रारम्भ किया था। (खज़ाइनुल फ़ुतूह (अलीगढ़) पृ० २५-२८, खलजी कालीन भारत पृ० १५७)

की चौडाई का प्रश्न है यह मीनार संसार की एक अद्भुत वस्तु है। इसका जीना इतना चौडा है कि ३ हाथी एक दूसरे के बराबर खडे होकर उस पर चढ सकते हैं। यह तिहाई मीनार ऊँचाई में उत्तरी प्रागण के पूरे मीनार के बराबर है। मैं एक बार उस पर चढा था तो मैं ने देखा कि शहर के ऊँचे ऊँचे घर तथा चहार दीवारी इतनी ऊँचाई होने पर छोटी-छोटी ज्ञात होती थी। उसकी जड में खडे हुये आदमी छोटे छोटे बालक दीख पडते थे। नीचे से खडे होकर देखने से यह मीनार जो पूरा नही हो सका है इतना बडा और चौडा होने के कारण (१५३) कम ऊचा मालूम होता है।

सुल्तान कुतुबुद्दीन खलजी का विचार था कि वह सीरी में जो दारुल खलीफा कहलाता है, एक जामा मस्जिद का निर्माण कराये किन्तु वह किबले[1] की ओर एक दीवार तथा मेहराब के अतिरिक्त कुछ न बनवा सका। जो भाग उसने बनवाया था वह सफेद, काले, हरे, तथा लाल पत्थरो का था। यदि यह बन जाती तो इसकी तुलना ससार की किसी भी मस्जिद से न हो सकती थी। सुल्तान मुहम्मद (बिन तुगलुक) ने इसको पूरा करने का विचार किया था। मेमारो तथा कारीगरो से जब व्यय का अनुमान लगवाया तो ज्ञात हुआ कि उसमें ३५ लाख व्यय होगा। इतना अधिक व्यय देख कर उसने अपना विचार त्याग दिया। सुल्तान का एक विशेष पदाधिकारी कहता था कि 'उसने इसे अशुभ समझ कर नही बनवाया क्योकि उसके प्रारम्भ होते ही सुल्तान कुतुबुद्दीन का बध हो गया था।"

देहली के बाहर के दो बड़े सरोवर—

(१५४) देहली के बाहर एक बडा सरोवर है जिसका नाम सुल्तान शम्सुद्दीन लालमिश (इल्तुतमिश) के नाम पर है। देहली नगर के निवासी अपने पीने का जल यही से प्राप्त करते हैं। यह देहली के मुसल्ले (ईदगाह) के निकट है। इसमें वर्षा का जल एकत्र होता रहता है। वह दो मील लम्बा तथा एक मील चौडा है। उसके पश्चिम में ईदगाह के समान पत्थर के घाट बने हुये हैं और जीने के समान पत्थर का एक चबूतरा दूसरे चबूतरे के ऊपर बना हुआ है। इन जीनो द्वारा जल तक पहुचने में सुगमता होती है। प्रत्येक चबूतरे के कोने पर पत्थर के गुम्बद बने हुये हैं, जिनमें दर्शक बैठ कर सैर तथा आनन्द करते हैं हौज के मध्य में एक बहुत बडा गुम्बद है, जो दो मजिला है और तराशे हुए पत्थर का बना है। जब सरोवर में जल अधिक हो जाता है तब गुम्बदो तक नौका मे बैठ कर ही जा सकते हैं। जब जल कम हो जाता है तो प्राय लोग वैसे ही चले जाते हैं। गुम्बद के भीतर एक मस्जिद है जहाँ धार्मिक (फकीर) लोग तथा ससार को त्याग देने वाले साधु सत रहते हैं। वे लोग केवल ईश्वर का ही भरोसा करते हैं। जब सरोवर के किनारे (१५५) सूख जाते है तो उनमें गन्ना, ककडी कचरी तरबूज तथा खरबूजे बो दिये जाते हैं। खरबूजा उसमें छोटा किन्तु बडा मीठा होता है।

देहली तथा दारुल खिलाफा के मध्य में हौजे खास स्थित है। यह हौज सुल्तान शम्सुद्दीन के हौज से भी बडा है। इसके किनारे पर लगभग ४० गुम्बद हैं। उसके चारो ओर अहिलेतरब (गायक) रहते हैं इन्ही के कारण यह स्थान तरबाबाद (सगीत नगर) कहलाता है। यहाँ इन लोगो का एक बाजार है जो ससार का एक बहुत बडा बाजार कहा जा सकता है। यहाँ एक जामा मस्जिद तथा अन्य मस्जिदें हैं। मुझे बताया गया कि गाने बजाने वाली स्त्रियाँ जो इस मुहल्ले में रहती हैं, रमजान के महीने में तरावीह[2] की नमाज जमाअत से

१ मक्के में काबा जो हिन्दुस्तान से पश्चिम मे है।

२ रमजान के महीने की रात्रि की अनिवार्य नमाज (एशा की नमाज) के बाद की नमाज। नमाज के मध्य मे चार बार थोड़ा थोड़ा विश्राम किया जाता है। अत यह नमाज तरावीह की नमाज कहलाती है।

पढती हैं। उन्हे इमाम नमाज पढाते हैं। स्त्रियो की बहुत बडी सख्या नमाज पढती है। यह हाल पुरुष गायको का भी है। मैंने अमीर सैफुद्दीन गद्दा इब्ने मुहन्नी के विवाह में देखा कि प्रत्येक गायक अज़ान होते ही मुसल्ला बिछा कर वज़ू[1] करके नमाज के लिये खडा हो गया।

देहली के मज़ार (कब्रें)—

यहाँ के मज़ारो में सब से प्रसिद्ध कब्र पवित्र शेख कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की है। इनकी कब्र के चमत्कार बडे प्रसिद्ध हैं और लोग उसका बडा सम्मान करते हैं। शेख का नाम काकी इस कारण प्रसिद्ध हो गया कि उनके पास जो ऋणी अथवा दरिद्र आता और ऋण तथा दीनता की शिकायत करता या कोई ऐसा व्यक्ति आता जिसकी पुत्री युवावस्था को प्राप्त हो चुकी होती और वह विवाह का प्रबन्ध न कर सकता हो तो शेख उसको सोने या चादी की काक (टिकिया) दे दिया करते थे। इसी कारण वे काकी प्रसिद्ध हो गये (ईश्वर उन पर कृपा रक्खे)।

दूसरा मज़ार फकीह नूरुद्दीन कुरलानी का है। इसके अतिरिक्त एक मजार फकीह अलाउद्दीन किर्मानी का है। वे किर्मान के निवासी थे। इस मजार के अनेक आशीर्वाद (१५७) प्रसिद्ध हैं और इस पर दैवी प्रकाश की वर्षा हुआ करती है। यह ईदगाह के पश्चिम में स्थित है। इसके निकट सूफियो के और भी मजार हैं। ईश्वर हमें उनके द्वारा लाभ प्रदान करे।

देहली के आलिम तथा सूफी—

इस समय जो आलिम जीवित हैं उनमें शेख महमूदुल कुब्बा हैं। वे बडे बुजुर्ग सम्मानित तथा धर्मनिष्ठ हैं। लोगो का विचार है कि उन्हें धन प्राप्त करने के अदभुत साधन ज्ञात हैं। उनके पास देखने में कोई धन-सम्पत्ति नही किन्तु वे प्रत्येक यात्री को भोजन, सोना चाँदी तथा वस्त्र प्रदान करते हैं। उन्होने अपने चमत्कारों के अनेक प्रदर्शन किये हैं जिनके फलस्वरूप वे बडे प्रसिद्ध हो गये हैं। मै अनेक बार उनकी सेवा में उपस्थित हुआ और आशीर्वाद प्राप्त किया।

(१५८) दूसरे शेख अलाउद्दीन नीली हैं। वे भी बडे विद्वान तथा सदाचारी हैं। उनका नाम मिस्र की नील नदी के नाम पर है किन्तु भगवान् ही ठीक बात जानता है। वे योग्य तथा सदाचारी शेख निज़ामुद्दीन बदायूनी के शिष्य हैं। वे प्रत्येक जुमे को धार्मिक प्रवचन करते हैं। लोग उनके हाथ पर तोबा[2] करते हैं और सिर मुडवा कर वज्द[3] करने वाले बन जाते हैं। कुछ लोग तो मूर्च्छित हो जाते हैं।

एक कहानी—

एक बार वे धार्मिक प्रवचन कर रहे थे। मै भी उपस्थित था। कारी[4] ने कुरान की यह आयत[5] पढी। 'ह लोगो! ईश्वर का भय करो। अवश्य ही कयामत में भूमि का हिलना बडा भयानक होगा। उस दिन तू देखेगा कि प्रत्येक दूध पिलाने वाली माता अपने बालक को दूध पिलाना भूल जायगी और प्रत्येक गर्भवती स्त्री का गर्भ गिर जायगा। ऐसा ज्ञात होगा कि लोगो ने मदिरा पान किया है, यद्यपि उन्होने ऐसा न किया होगा। ईश्वर लोगो को बडे कठोर दण्ड देगा।"[6] जब कारी ने यह आयत पढ ली तो फकीह अलाउद्दीन

---

१ नमाज़ के लिये क्रमश हाथ मुंह आदि धोना।
२ पाप अथवा कुकर्म न करने का संकल्प।
३ उन्माद। ईश्वर के ध्यान में सब कुछ भूल कर मस्त हो जाना।
४ कुरान को अच्छे स्वर मे पढने वाला।
५ कुरान का एक पूरा वाक्य।
६ कुरान भाग १७, सूरा २२, आयत १।

ने उसे स्वयं पढा। एक फकीर ने मस्जिद के एक कोने से चीख मारी। शेख ने पुनः आयत (१५९) पढी। फकीर ने एक और चीख मारी और गिर कर मर गया। मैंने भी उसके जनाजे की नमाज पढी।

एक और योग्य आलिम सद्रुद्दीन कुहरानी (कुहरामी) हैं। वे सर्वदा रोजा रखते हैं और रात भर नमाज पढते हैं। उन्होंने ससार को पूर्णतया त्याग दिया है। वे केवल एक कम्बल ओढते हैं। सुल्तान तथा प्रतिष्ठित लोग उनके दर्शन को जाते हैं किन्तु वे उनसे छिपते फिरते हैं। सुल्तान ने उन्हें कुछ ग्राम प्रदान करने चाहे जिससे वे फकीरो तथा यात्रियो के भोजन का प्रबन्ध कर सकें किन्तु उन्होंने स्वीकार न किया। एक दिन सुल्तान उनके दर्शनार्थ गया और १० हजार दीनार उनकी भेंट किये किन्तु उन्होंने स्वीकार न किया। कहा जाता है कि वे तीन दिन तक निरतर रोज़ा रखते हैं और इसके पूर्व भोजन नही करते। जब उनसे इसका कारण पूछा गया तो उन्होंने उत्तर दिया कि मै जब तक विवश नही हो जाता उस समय तक रोजा नही खोलता। विवश हो जाने के उपरान्त मृतक शरीर भी खाया जा सकता है।

(१६०) एक अन्य व्यक्ति कमालुद्दीन अब्दुल्ला अलगारी हैं जो इमाम, विद्वान, पवित्र जीवन व्यतीत करने वाले, भगवान् का भय करने वाले तथा अपने काल एव युग के अद्वितीय पुरुष हैं। उनका यह नाम इस कारण पडा कि वे देहली के बाहर शेख निजामुद्दीन बदायूनी की खानकाह के निकट एक गार (गुफा) में रहते हैं। मैने गुफा में तीन बार उनके दर्शन किये।

उनका एक चमत्कार—

मेरा एक दास मेरे पास से भाग गया। मैंने उसको एक तुर्क के पास पहिचाना और उसे वापस लेना चाहा। शेख ने मुझे मना किया 'कि यह तेरे योग्य नहीं, जाने दे।' वह तुर्क मुझ से मामला तय करना चाहता था। मैंने १०० दीनार लेकर दास उसके पास छोड दिया। छ महीने के उपरान्त मैंने सुना कि उसने अपने स्वामी की हत्या करदी है। वह बन्दी बना कर सुल्तान के सम्मुख उपस्थित किया गया। सुल्तान ने आदेश दिया कि उसे उसके स्वामी के पुत्रो को सौंप दिया जाय। उन्होंने उसकी हत्या करदी।

मै शेख का यह चमत्कार देख कर उनका भक्त हो गया और उनके आदेशो का पालन करने लगा। ससार त्याग कर मैं उनकी सेवा में उपस्थित रहने लगा। मैंने देखा कि वे (१६१) दस-दस दिन और बीस-बीस दिन का रोज़ा रखते थे और रात के अधिकतर भाग में नमाज पढा करते थे। मैं उस समय तक जब तक कि बादशाह ने मुझे पुनः न बुला लिया और मै ससार से फिर न लिपट गया, उनकी सेवा में ही उपस्थित रहा। भगवान् मेरा अन्त शान्ति-पूर्वक करे। मैं इसका उल्लेख यदि ईश्वर ने चाहा तो फिर करूँगा और यह वर्णन करूँगा कि किस प्रकार मै ससार के कार्यों मे लग गया।[1]

सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ शाह—

(२०१) मुझसे पवित्र विद्वान् तथा सर्वदा एबादत करने वाले इमाम रुक्नुद्दीन ने, जो पवित्र शेख शम्सुद्दीन अबू अब्दुल्लाह के पुत्र थे और अब्दुल्लाह इमाम धर्मनिष्ठ तथा विद्वान् बहाउद्दीन ज़करिया कुरेशी मुल्तानी के पुत्र थे और जिनकी खानकाह मुल्तान में है, मुझे बताया कि सुल्तान तुगलुक उन तुर्कों में था जिनका नाम करौना है और जो सिन्ध तथा

[1] इसके उपरान्त देहली के सुल्तानों का हाल है जिसका संक्षिप्त अनुवाद आदि तुर्क कालीन भारत (पृ० १०९-३१४) तथा खलजी कालीन भारत (पृ० २१३-२१६) में दिया गया है। इस पुस्तक में सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ शाह के वृत्तान्त से अनुवाद प्रारम्भ किया गया है।

तुर्कों के देश के मध्य के पर्वतों में निवास करते हैं। तुगलुक बड़ा ही दरिद्र था। वह सिन्ध के किसी व्यापारी का सेवक होकर आया। वह उसकी 'गुलवानी" करता था अर्थात् उसके घोडो की देख भाल करता था। इस समय मुल्तान अलाउद्दीन का राज्य था और सिन्ध का अमीर (अधिकारी) उसका भाई उलुग खाँ था। तुगलुक उसका नौकर हो गया। उसने उसे ब्यादह (पदातियो) में भर्ती कर दिया। इसके उपरान्त वह अपनी वीरता के लिये प्रसिद्ध हो गया और वह सवारो में भर्ती हो गया। इसके उपरान्त वह निम्न श्रेणी का अफसर हो (२०२) गया। उलुग खाँ ने उसे अमीरुल खैल[1] नियुक्त कर दिया। इसके उपरान्त वह बहुत बड़ा अमीर हो गया और मलिक गाज़ी के नाम से प्रसिद्ध हो गया। मैंने मुल्तान की जामा मस्जिद के मकसूरा[2] पर, जो उसके आदेश से बनवाई गई थी, यह खुदा हुआ देखा कि "मैंने ततारियों (मगोलो) से २६ बार युद्ध किया और उन्हे पराजित किया। इसी कारण मेरी उपाधि मलिकुल गाज़ी निश्चित हुई।"

जब कुतुबुद्दीन राज-सिंहासन पर आरूढ हुआ तो उसने उसे दीपालपुर तथा उसके अधीन स्थानो का वाली (हाकिम) नियुक्त किया। उसने उसके पुत्र को जो इस समय हिन्दुस्तान (२०३) का सुल्तान है, अमीरुल खैल नियुक्त किया। उसका नाम जौनह है। राज सिंहासन पर आरूढ होने के उपरान्त जौनह ने मुहम्मद शाह की पदवी धारण कर ली। जब कुतुबुद्दीन की हत्या हो गई और खुसरो खाँ सिंहासनारूढ हुआ तो उसने जौनह को अमीरुल खैल के पद पर रहने दिया। जब तुगलुक ने विद्रोह करना निश्चय कर लिया तो उसके साथ ३०० आदमी थे जिन पर वह युद्ध में विश्वास कर सकता था। उसने किशलू खाँ को, जो इस समय मुल्तान में था, पत्र भेज कर सहायता देन की उससे प्रार्थना की। मुल्तान तथा दीपालपुर में ३ दिन की यात्रा की दूरी है। उसने किशलू खाँ को कुतुबुद्दीन के विशेष आश्रय की स्मृति दिला कर उसके रक्त का बदला लेने के लिये उससे आग्रह किया। किशलू खाँ का पुत्र देहली में था अत उसने तुगलुक को लिखा कि "यदि मेरा पुत्र मेरे साथ होता तो मैं अवश्य तुम्हारी सहायता करता।" इस पर तुगलुक ने अपने पुत्र को, जो कुछ उसने निश्चय कर लिया था, लिखा और उसे आदेश दिया कि जिस प्रकार हो सके वह किशलू खाँ के पुत्र को लेकर भाग आये। मलिक जौनह ने एक योजना बनाई जो उसकी इच्छानुसार सफल हो गई।

उसने खुसरो खाँ से कहा कि 'घोडे बडे मोटे हो गये हैं और उन्हे यराक अथवा ऐसी कसरतो की आवश्यकता है जिससे वह दुबले हो जाय।" सुल्तान ने उन्हे बाहर ले जाने की (२०४) अनुमति दे दी। अत वह घोडे पर सवार होकर अपने आदमियो के साथ बाहर जाने लगा और एक-एक घटा, दो-दो घटे तथा तीन-तीन घटे बाहर रहने लगा, यहाँ तक कि वह चार-चार घटे तक बाहर रहने लगा। एक दिन वह मध्याह्नोत्तर की नमाज के समय तक न लौटा, भोजन का समय आ गया। सुल्तान ने आदेश दिया कि सवार होकर उसका पता लगाया जाय किन्तु उसका पता न चला। वह अपने पिता के पास पहुच गया और अपने साथ किशलू खाँ के पुत्र को भी ले गया।

इसके उपरान्त तुगलुक ने खुल्लम खुल्ला विद्रोह कर दिया और सेना भर्ती करने लगा। किशलू खाँ भी अपने सैनिकों को लेकर उससे मिल गया। सुल्तान ने अपने भाई खानेखानाँ को उन दोनों स युद्ध करने के लिये भेजा, किन्तु उन लोगो ने उसे बुरी तरह पराजित कर दिया। उसकी सेना विजयी सेना से मिल गई। खानेखानाँ अपन भाई के पास वापस हो गया। उसके पदाधिकारी मारे गये और उसका खज़ाना तुगलुक के अधिकार में आ गया।

---

१ घोड़ों की देख भाल करने वाला सबसे बड़ा अधिकारी।

२ मस्जिद का वह भाग जहाँ इमाम (नमाज पढ़ाने वाला) खड़ा होता है।

इसके उपरान्त तुगलुक ने देहली पर आक्रमण किया। खुसरो खाँ अपने सवारों को (२०५) लेकर उससे युद्ध करने के लिये निकला और आसियाबाद में जिसका अर्थ हवा की चक्की है, शिविर लगा दिये। उसने आदेश दिया कि खजाना लुटा दिया जाय। लोगों को थैलियाँ बिना गिने अथवा तोले हुए प्रदान कर दी गई। जब उसका तुगलुक से युद्ध हुआ तो हिन्दू बड़ी वीरता से लड़े। तुगलुक के सैनिक परास्त हो गये। उसका शिविर लूटा जाने लगा और वह अपने ३०० प्राचीन सैनिकों के साथ अकेला रह गया। उसने उनसे कहा कि अब भागने के लिये कोई स्थान नहीं है। जहाँ भी हम पकड़े जायेंगे हमारी हत्या कर दी जायगी। इस बीच में खुसरो के सैनिक लूटने में लगे हुये थे और छिन्न-भिन्न हो गये थे। उसके साथ केवल थोड़े से मनुष्य रह गये। तुगलुक अपने साथियों को लेकर उस पर टूट पड़ा। इस देश में सुल्तान की उपस्थिति चत्र से पहचानी जाती है जो उसके सिर पर लगा रहता है। मिस्र में इसे तैर (चिड़िया) अथवा कुब्बा (गुम्बद) कहते हैं और वह केवल ईद के दिन सुल्तान ही के ऊपर लगाया जाता है, किन्तु हिन्दुस्तान तथा चीन में, चाहे सुल्तान यात्रा कर रहा हो और चाहे अपने महल में हो, चत्र सर्वदा बादशाह के सिर पर रहता है।

जब तुगलुक तथा उसके साथी खुसरो खाँ पर टूट पड़े तो उनके एवं हिन्दुओं के मध्य (२०६) में घोर युद्ध हुआ और सुल्तान[1] के सैनिक परास्त हुये। जब कोई भी उसके साथ न रहा तो वह भाग खड़ा हुआ। वह अपने घोड़े पर से भी उतर पड़ा। वस्त्र तथा अस्त्र शस्त्र उतार कर फेंक दिये। केवल एक कमीज पहने रहा। सिर के बाल पीछे लटका लिये जैसे कि हिन्दुस्तान के फकीर लटकाये रहते हैं और निकट के एक उद्यान में घुस गया। समस्त सेना तुगलुक के अधीन हो गई और वह नगर की ओर चल खड़ा हुआ। कोतवाल ने नगर की कुञ्जियाँ उसे दे दी। महल में प्रविष्ट होकर उसने एक कोने में डेरा लगा दिया। उसने किशलू खाँ से कहा कि "तू सुल्तान बन जा"। किशलू खाँ ने उत्तर दिया कि "नहीं तू ही सुल्तान बनेगा।" कुछ वाद-विवाद के उपरान्त उसने कहा कि "यदि तू सुल्तान बनना स्वीकार न करेगा तो हम तेरे पुत्र को सुल्तान बना देंगे।" उसे यह बात स्वीकार न थी, अतः उसने सुल्तान बनना स्वीकार कर लिया। राज-सिंहासन पर आरूढ़ होकर लोगों की बैअत लेनी प्रारम्भ कर दी। समस्त विशेष तथा साधारण व्यक्तियों ने उसकी बैअत कर ली।

खुसरो खाँ तीन दिन तक निरंतर उद्यान में छिपा रहा। तीसरे दिन भूख से विवश होकर बाहर निकला, और इधर उधर टहलने लगा। वह माली से मिला। उसने माली से भोजन माँगा किन्तु माली के पास भोजन की कोई वस्तु न थी। खुसरो खाँ ने उसे अँगूठी (२०७) देकर कहा कि "इसे गिरवी रख कर भोजन सामग्री ले आओ।" जब वह अँगूठी लेकर बाजार पहुँचा तो व्यापारियों को सदेह हुआ और वे उसे शहना के पास, जो पुलिस का सबसे बड़ा अधिकारी था, ले गये। वह उसे सुल्तान तुगलुक के पास ले गया। उसने सुल्तान को अँगूठी देने वाले का पता बतला दिया। तुगलुक ने अपने पुत्र मुहम्मद को खुसरो खाँ को लाने के लिये भेजा। उसने खुसरो खाँ को बन्दी बना लिया और उसको टट्टू पर बैठा कर सुल्तान के समक्ष लाया। जब खुसरो खाँ सुल्तान के सामने उपस्थित हुआ तो उसने कहा कि "मैं क्षुधित हूँ, मुझे कुछ भोजन दो।" तुगलुक ने उसके लिये भोजन तथा शर्बत मँगवाया। उसके उपरान्त कुछ फुक्का पीने को दी और अन्त में ताम्बूल खिलाया। जब वह भोजन कर चुका तो उसने तुगलुक से कहा कि "हे तुगलुक! मेरे साथ वही व्यवहार कर जो बादशाहों के लिये उचित हो और मुझे अपमानित न कर।" तुगलुक ने उसकी प्रार्थना स्वीकार करली और आदेश दिया कि उसकी हत्या उसी स्थान पर की जाय जहाँ उसने

१ खुसरो खाँ।

कुतुबुद्दीन की हत्या की थी, उसका सिर तथा शरीर छत से उसी प्रकार फेंक दिया जाय जिस प्रकार उसने कुतुबुद्दीन का सिर फिंकवाया था। इसके उपरान्त उसका मृतक शरीर (२०८) नहलाया गया और कफन देकर उसे उसके बनवाये हुए मकबरे में दफन कर दिया गया। तुगलुक ४ वर्ष तक भली भाँति राज्य करता रहा। वह बड़ा ही न्यायी तथा योग्य सुल्तान था।

उसके पुत्र का विद्रोह जो सफल न हो सका—

जब तुगलुक अपनी राजधानी में स्थायी रूप से बादशाह हो गया तो उसने अपने पुत्र मुहम्मद को तिलग प्रदेश पर विजय प्राप्त करने के लिये भेजा। तिलग देहली नगर से ३ मास की यात्रा की दूरी पर है। उसने उसके साथ एक बहुत बड़ी सेना जिसमें मुख्य अमीर उदाहरणार्थ मलिक तमूर (तिमुर), मलिक तिगीन, मलिक काफूर मुहरदार तथा मलिक बैरम आदि थे। तिलग प्रदेश पहुँच कर उसने विद्रोह करना निश्चय कर लिया। उसका एक (२०९) नदीम था जो फकीह तथा कवि था। उसका नाम उबैद था। उसने उसके द्वारा सेना में यह प्रसिद्ध करा दिया कि सुल्तान तुगलुक की मृत्यु हो चुकी है। उसका विचार था कि सैनिक यह समाचार पाते ही उससे बैअत कर लेंगे। जब सेना को यह समाचार प्राप्त हुआ तो प्रत्येक अमीर ने तबल बजवा कर विद्रोह कर दिया और समस्त सेना ने उसका साथ छोड़ दिया। वे उसकी हत्या कर देना चाहते थे किन्तु मलिक तमूर ने उन्हें रोक दिया और वह उसकी रक्षा करता रहा। वह किसी प्रकार भाग कर अपने पिता के पास पहुँचा। उसके साथ १० अश्वारोही थे जिन्हें वह यारान मुआफिक अर्थात् दृढ मित्र कहता था। उसके पिता ने उसे धन-सम्पत्ति तथा सेना दी और उसे तिलग वापस जाने का आदेश दिया; किन्तु उसके पिता को यह ज्ञात हो चुका था कि उसने क्या षड्यन्त्र रचा था। उसने उबैद फकीह की हत्या करा दी। उसने मलिक काफूर मुहरदार की हत्या का भी आदेश दे दिया। एक नोकदार सीधी लकड़ी भूमि में गड़वा दी गई। उनका सिर नीचे की ओर करके वह लकड़ी उनकी गर्दन मे चिभो कर, लकड़ी के नोकदार सिरे को दूसरी ओर से निकलवा दिया। (२१०) शेष विद्रोही अमीर सुल्तान शम्सुद्दीन बिन सुल्तान नासिरुद्दीन बिन सुल्तान गयासुद्दीन बल्बन के पास[1] भाग गये और उसके दरबार में नौकर हो गये।

तुगलुक का लखनौती पर आक्रमण तथा उस समय से लेकर उसकी मृत्यु तक का हाल—

भागे हुये अमीर सुल्तान शम्सुद्दीन की सेवा में प्रविष्ट हो गये। कुछ समय उपरान्त शम्सुद्दीन की मृत्यु हो गई। उसका पुत्र शिहाबुद्दीन उसका उत्तराधिकारी हुआ। वह उसके स्थान पर राज सिंहासन पर आरूढ हुआ, किन्तु उसके छोटे भाई गयासुद्दीन बहादुर बूरा (भूरा) ने राज्य पर अपना अधिकार जमा लिया। बूरा का हिन्दी में अर्थ काला है। उसने अपने भाई क़तलू खाँ तथा अन्य भाइयों की हत्या कर दी। उसके दो भाई शिहाबुद्दीन तथा नासिरुद्दीन भाग कर तुगलुक के पास पहुँचे। वह उन्हें साथ लेकर उनके भाइयों से युद्ध करने के लिये चल खड़ा हुआ और राजधानी में अपने पुत्र मुहम्मद को अपना (नायब) नियुक्त (२११) कर दिया। वह शीघ्रातिशीघ्र लखनौती पहुँचा और उस पर विजय प्राप्त करली। उसने गयासुद्दीन बहादुर को बन्दी बना लिया और उसे साथ लेकर देहली की ओर चल खड़ा हुआ।

देहली में निज़ामुद्दीन बदायूनी नामक एक सूफी निवास करते थे। सुल्तान का

---
1 बंगाल।

पुत्र मुहम्मद शाह उनके दर्शन को बराबर जाया करता था और उनके चेलों का बड़ा आदर-सम्मान करता था। वह उनसे सर्वदा अपने लिये ईश्वर से शुभ कामनायें करने का आग्रह किया करता था। कभी कभी शेख ईश्वर के ध्यान में मूर्च्छित हो जाया करते थे। सुल्तान के पुत्र ने उनके सेवकों से कहा कि जब शेख इस दशा में हो तो मुझे इसकी सूचना देना। जब शेख इस प्रकार ईश्वर के ध्यान में मूर्च्छित हो गये तो उन्होंने मुहम्मद को इसकी सूचना देदी। वह तुरन्त शेख की सेवा में उपस्थित हुआ। जब शेख ने उसे देखा तो उन्होंने कहा कि "हमने तुम्हें यह राज्य दे दिया।" कुछ समय पश्चात् सुल्तान की अनुपस्थिति में शेख की मृत्यु हो गई। सुल्तान का पुत्र मुहम्मद शेख का जनाजा अपने कन्धों पर ले गया। यह समाचार उसके पिता को पहुचाये गये। वह इस पर बड़ा खिन्न हुआ और उसने कई कठोर सदेशे उसके पास भेजे। इससे पूर्व भी उसे कई बार मुहम्मद के कार्यों से उस पर सदेह हो चुका था। वह उसके दान-पुण्य तथा प्रजा को प्रसन्न करने का प्रयत्न करने और अधिक सख्या में दास मोल लेने पर बड़ा रुष्ट हो गया था। जब उसने यह सुना कि ज्योतिषियो ने यह कह दिया है कि इस युद्ध के उपरान्त देहली न लौट सकेगा तो उसने (२१२) उन्हें भी धमकी के पत्र लिखे।

जब वह इस युद्ध से लौट कर देहली के निकट पहुचा तो उसने अपने पुत्र को यह आदेश भेजा कि अफगानपुर नामक मैदान में उसके लिये एक नये महल का, जो कूश्क कहलाता है, निर्माण कराये। पुत्र ने पिता के आदेशानुसार तीन दिन में महल बनवाया जो अधिकतर लकड़ी का बना हुआ था। उसकी नींव लकड़ी के स्तम्भो पर रक्खी गई। इसकी तैयारी बड़ी होशियारी से मलिकज़ादा ने करवाई थी। उसका नाम अहमद बिन अयाज था और उसे बाद में ख्वाजये जहां की पदवी प्राप्त हो गई थी। वह सुल्तान मुहम्मद का मुख्य वज़ीर हो गया। उस समय वह शहनये एमारत[1] था। उसने महल इस युक्ति से बनवाया कि यदि उसके एक ओर हाथी चले तो समस्त महल गिर पड़े। सुल्तान इस महल में उतरा और उसने अपने आदमियो को भोजन कराया। भोजन के उपरान्त वे लोग चले गये। उसके पुत्र ने उससे प्रार्थना की कि उसे हाथियों को समारोह के साथ (२१३) उपस्थित करने की अनुमति प्रदान की जाय। सुल्तान ने उसे अनुमति प्रदान करदी।

शेख रुक्नुद्दीन ने मुझे बताया कि वह उस दिन सुल्तान के साथ उपस्थित थे। सुल्तान का प्रिय पुत्र महमूद भी उसके साथ था। सुल्तान के पुत्र मुहम्मद ने उपस्थित होकर शेख से कहा कि "हे खुन्द (स्वामी)! असकी नमाज का समय आ गया है। आप जाकर नमाज पढ़लें।" शेख ने मुझे बताया कि 'मैं उसके कहने पर चला गया।" हाथी, जैसा कि निश्चित हो चुका था, एक दिशा से लाये गये। जब वे उस ओर से गुजरे तो महल सुल्तान तथा उसके पुत्र महमूद पर गिर पड़ा। शोर सुन कर मैं बिना नमाज समाप्त किये हुये वहाँ पहुँचा और देखा कि महल गिर चुका है। उसका पुत्र फावड़े तथा कस्सियाँ लाने का आदेश दे रहा था जिससे सुल्तान को खोद कर निकाला जाय किन्तु उसने ऐसा सकेत कर दिया कि ये वस्तुयें देर में आयें। इस प्रकार वे सूर्यास्त के पूर्व न लाई जा सकी। जब सुल्तान को खोद कर निकाला गया तो लोगो ने देखा कि सुल्तान अपने पुत्र के ऊपर उसको मौत से बचाने के (२१४) लिए झुका था। कुछ लोगो का अनुमान है कि उसका मृतक शरीर निकाला गया। कुछ लोगो का अनुमान है कि वह जीवित था और उसकी हत्या कर दी गई। रात्रि में ही

[1] भवन निर्माण विभाग का मुख्य अधिकारी।

उसे उस मकबरे में, जो उसने तुग़लुक़ाबाद में अपने लिए बनवाया था, पहुँचा दिया गया और वहीं दफन कर दिया गया।

तुग़लुक़ाबाद के बनाने का कारण इससे पूर्व बताया जा चुका है। इसमें तुगलुक के महल तथा राज कोष थे। वहाँ किले में बादशाह ने एक ऐसा महल बनवाया था जिसकी ईंटों पर सोने का पत्तर चढा हुआ था। जिस समय सूर्य उदय होता तो उसकी चमक दमक से कोई व्यक्ति महल की ओर देर तक दृष्टिपात न कर सकता था। सुल्तान ने इसमें अत्यधिक धन-सम्पत्ति व्यय की थी। कहा जाता है कि इसमें सुल्तान ने एक हौज बनवाया था और उस हौज में सोना पिघला कर भरवा दिया था। वह सोना जम कर एक डला बन गया। उसके पुत्र सुल्तान मुहम्मद शाह ने सिंहासनारूढ होने के उपरान्त वह समस्त सोना व्यय किया क्योंकि ख्वाजये जहाँ ने उस महल के बनवाने में जिसके गिरने के कारण सुल्तान की मृत्यु हुई, विशेष कुशलता दिखाई थी, अत ख्वाजये जहाँ से अधिक कोई भी वज़ीर तथा अन्य (२१५) व्यक्ति सुल्तान का विश्वास-पात्र न था और न कोई उसकी बराबरी कर सकता था।

सुल्तान अबुल मुजाहिद मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) सुल्तान गयासुद्दीन तुग़लुक शाह हिन्द तथा सिन्ध का बादशाह जिसके दरबार मे हम आये—

सुल्तान तुग़लुक के निधन के उपरान्त उसका पुत्र मुहम्मद बिना किसी विरोध तथा प्रतिस्पर्धी न होने के कारण राज्य का स्वामी हो गया। हम इसका उल्लेख कर चुके हैं कि उसका नाम जौनह था। बादशाह होने पर उसने अपना नाम मुहम्मद और कुन्नियत अबुल मुजाहिद रक्खी। हिन्दुस्तान के पिछले बादशाहों का जो हाल मैं लिख चुका हू, उसका अधिक भाग मुझे शेख कमालुद्दीन बिन (पुत्र) बुरहान गजनी निवासी, क़ाज़ी-उल-कुज़्ज़ात द्वारा ज्ञात हुआ तथा कुछ भाग मैंने अन्य लोगो से सुना। इस बादशाह का जो कुछ हाल मै लिख रहा हू, वह इस देश के मेरे (२१६) अपन निरीक्षण पर अवलम्बित है।

उसका चरित्र—

यह बादशाह अत्यधिक दान तथा रक्तपात के लिये प्रसिद्ध है। कोई दिन ऐसा व्यतीत नही होता जिस दिन उसके द्वार के समक्ष कोई न कोई दरिद्र धनी न हो जाता हो अथवा किसी न किसी जीवित की हत्या न कर दी जाती हो। लोगों में उसकी वीरता तथा दान एव अपराधियों के प्रति कठोरता और अत्याचार की कहानियाँ बडी प्रसिद्ध हो चुकी हैं। इस पर भी उससे अधिक कोई भी नम्र तथा न्यायकारी एव सत्य का पालन करन वाला नही। उसके दरबार में धर्म (इस्लाम) के आदेशों का पूर्ण रूपेण पालन होता है। वह नमाज पढने को बडा महत्व प्रदान करता है और जो लोग नमाज़ नही पढते उन्हे कठोर दड देता है। वह उन बादशाहों में है जो बहुत बडे सौभाग्यशाली हैं और उसे विशेष सफलता प्राप्त हुई है किन्तु उसका सब से बडा गुण उसकी दानशीलता है। मैं उसकी दानशीलता की ऐसी विचित्र कहानियाँ सुनाऊँगा जिनके समान किसी ने किसी पिछले बादशाह के विषय में कोई बात न सुनी होगी (२१७) किन्तु ईश्वर उसके फरिश्ते तथा उसके रसूल इस बात के साक्षी हैं कि मैं जो कुछ भी उसकी अद्भुत दानशीलता के विषय में लिख रहा हू वह पूर्णतया सत्य है और ईश्वर ही सब से बडा साक्षी है। मैं समझता हूँ कि कुछ घटनाओं जिनका मैं उल्लेख कर रहा हूँ उनके विषय में बहुत से लोग अनुमान भी न लगा सकेंगे और उन्हे वे साधारणतया असम्भव समझेंगे, किन्तु जो घटनायें मेरे सामने घटी हैं और जिनकी सत्यता के विषय में मुझे पूर्ण विश्वास है और जिनमें से बहुत सी घटनाओं में मेरा भी कुछ न कुछ भाग रहा है, उनका उल्लेख मैं अवश्य

हाथी दाहिने श्रोर तथा श्राधे बाईं श्रोर खडे होते हैं। हाथी मनुष्यों के पीछे खडे किये जाते हैं।

जब कोई दाहिनी श्रथवा बाईं श्रोर श्रपना स्थान लेने के लिये उपस्थित होता है तो सर्व प्रथम हाजिबो के स्थान के पास पहुच कर श्रभिवादन करता है श्रौर हाजिब श्रभिवादन करने वाले की श्रेणी के श्रनुसार स्वर को नीचा श्रथवा ऊँचा करके एक साथ "बिस्मिल्लाह" कहते है। तत्पश्चात् वह श्रपने निर्धारित स्थान पर दाहिनी श्रथवा बाईं श्रोर खडा हो जाता है। उसके श्रागे वह कदापि नही बढ सकता। यदि श्रभिवादन करने वाला हिन्दू होता है तो हाजिब तथा नकीब "हदकल्लाह" (श्रल्लाह तुझे मार्ग दर्शाये) का नारा लगाते हैं। सुल्तान के दास लोगो के पीछे हाथों में ढाल तलवार लिये खडे रहते हैं। कोई भी उनके मध्य से होकर प्रविष्ट नही हो सकता। जो भी श्राता है, उसे नकीबो तथा हाजिबों के, जो सुल्तान के सम्मुख खडे होते है, खडे होने के स्थान से होकर श्राना होता है।

परदेशियों का प्रवेश तथा दरबार में उपहार प्रस्तुत करना—

(२२५) यदि द्वार पर कोई ऐसा व्यक्ति उपस्थित होता है, जो सुल्तान के सम्मुख उपहार प्रस्तुत करना चाहता है तो हाजिब उसकी सूचना देने के लिये इस क्रम से सुल्तान के समक्ष जाते हैं। सब के श्रागे-श्रागे श्रमीरे हाजिब, उसके पीछे उसका नायब, फिर खास हाजिब श्रौर उसका नायब, उसके पीछे वकीलदर श्रौर उसका नायब, उनके पीछे सैयिदुल हुज्जाब तथा शरफुल हुज्जाब होते हैं। वे तीन स्थानो पर श्रभिवादन करते हैं श्रौर द्वार पर श्राने वाले की सूचना सुल्तान को देते हैं। जब श्रनुमति प्राप्त हो जाती है तो उसके उपहार लोगो के हाथों पर रक्खे हुये इस प्रकार प्रस्तुत किये जाते हैं कि सुल्तान उनको देख सके। फिर उपहार लाने वाले को बुलाने का श्रादेश होता है। वह सुल्तान तक पहुँचने के पूर्व तीन बार श्रभि-वादन करता है। हाजिबो के स्थान पर पहुँच कर वह पुन श्रभिवादन प्रकट करता है। यदि वह कोई उच्च श्रेणी का व्यक्ति होता है तो वह श्रमीरे हाजिब की पंक्ति में खडा होता है श्रन्यथा वह उसके पीछे खडा होता है। सुल्तान फिर उससे स्वय नम्रता-पूर्वक वार्त्तालाप (२२६) करता है श्रौर उसका स्वागत करता है। यदि वह सम्मान के योग्य होता है तो सुल्तान उससे हाथ मिलाता है तथा श्रालिंगन करता है श्रौर उसके कुछ उपहारो के विषय में प्रश्न करता है। तत्पश्चात् उपहार उसके सम्मुख रक्खे जाते हैं। यदि कोई वस्त्र श्रथवा शस्त्र होता है तो वह उसे उलट पलट कर देखता है श्रौर लाने वाले का उत्साह बढाने के लिये उनकी प्रशसा करता है। फिर सुल्तान उसे खिलग्रत प्रदान करता है श्रौर 'सर शोई' (सिर धुलवाने) के नाम से कुछ धन उसकी श्रेणी के श्रनुसार उसके लिये निश्चित कर दिया जाता है।

उसके श्रामिलों (श्रधिकारियो) के उपहार का हाल—

जब कोई श्रामिल (श्रधिकारी) दरबार मे श्रपने उपहार लेकर श्राता है श्रथवा किसी प्रान्त का कर लाता है तो उनके सोने तथा चाँदी के बर्तन उदाहरणार्थ तश्त, लोटे श्रादि बनवा (२२७) लिये जाते हैं। सोने तथा चाँदी की ईंटें भी बनवा ली जाती हैं जो 'खिश्त' कहलाती हैं। फर्राशून (फर्राश) जो बादशाह के दास होते हैं, उनमें से एक एक वस्तु श्रपने हाथो पर लेकर बादशाह के सामने खडे होते हैं। यदि उपहार में कोई हाथी हो तो वह भी लाया जाता है। तत्पश्चात् घोडे, जीन श्रादि सामानो सहित, लाये जाते हैं। फिर खच्चर तथा ऊँट लाये जाते हैं। इन सब पर माल लदा होता है। जब बादशाह दौलताबाद से श्राया, तो वजीर ख्वाजये जहां ने श्रपने उपहार प्रस्तुत किये। मैं भी उस समय उपस्थित था। ख्वाजये जहां ने

ब्याना नगर से बाहर निकल कर अपने उपहार प्रस्तुत किये। उसके उपहार उसी क्रम से प्रस्तुत हुये जिसका उल्लेख मैं ने अभी किया। उसने जो वस्तुयें प्रस्तुत की उनमें एक थाल लाल मणि का, एक थाल पन्ने का तथा एक थाल बहुमूल्य मोतियो का था। इस समय एराक के बादशाह सुल्तान अबू सईद का चचेरा भाई हाजी काऊन भी उपस्थित था। सुल्तान ने उन उपहारो का एक भाग उसे प्रदान कर दिया। यदि ईश्वर ने चाहा तो इसका उल्लेख फिर किया जायगा।

दोनों ईदों के जुलूस तथा उनसे सम्बन्धित बातों का उल्लेख—

(२२८) ईद से पूर्व रात्रि में सुल्तान, मलिको, मुख्य अधिकारियो, कर्मचारियों, परदेशियो अर्थात् अजीजो, कुत्ताब (सचिवो), हाजिबो, नकीबो, सेना के अधिकारियो, समाचार सम्बन्धी अधिकारियो, दासो आदि को एक एक खिलअत, उनकी श्रेणी के अनुसार भेजता है। ईद के दिन प्रात काल समस्त हाथी रेशमी वस्त्रो, सोने तथा जवाहरात से सजाये जाते हैं। सोलह ऐसे हाथी हैं जिन पर कोई सवार नही होता। उन पर केवल सुल्तान ही सवार होता है। प्रत्येक पर रेशम का बना हुआ एक छत्र होता है जिसमें जवाहरात जडे होते हैं। प्रत्येक छत्र की मुठिया शुद्ध सोने की होती है। प्रत्येक हाथी पर जवाहरात से जडी हुई एक रेशमी गद्दी होती है। सुल्तान उनमें से एक हाथी पर सवार होता है। उसके आगे आगे जीन-पोश अर्थात् गाशिया होता है जिस पर बहुमूल्य जवाहरात जडे होते हैं। शाही हाथियो के सामने दास तथा सेवक होते हैं। (२२९) प्रत्येक अपने सिर पर सोने की रोयेंदार एक टोपी पहने रहता है कमर मे सोने की पेटी होती है जिस पर जवाहरात जडे होते हैं। बादशाह के आगे आगे नकीब भी होते हैं। उनकी सख्या लगभग ३०० होती है। प्रत्येक अपने सिर पर एक सुनहरी उकरूफ (ऊँची शख के समान टोपी) पहने रहता है और एक सुनहरी पेटी बाँधे तथा सोने की मुठिया का छोटा डडा लिये रहता है। काज़ी-उल-कुज़्ज़ात सद्रे जहाँ कमालुद्दीन गजनवी, काज़ी-उल-कुज़्ज़ात सद्रे जहाँ *नासिरुद्दीन ख्वारज़्मी, तथा समस्त मुख्य अजीज़ (परदेशी), खुरासानी, एराकी, शामी* मिस्री तथा मगरबी (उत्तर पश्चिमी अफरीका निवासी) हाथियो पर सवार होकर चलते हैं। विदेशी इस देश में खुरासानी कहलाते हैं। अज़ान देने वाले भी हाथियो पर सवार होते है। वे "अल्लाहो अक्बर" (अल्लाह सर्वश्रेष्ठ है) का नारा लगाते रहते हैं।

सुल्तान उपर्युक्त नियम से राजभवन के द्वार से अपने सेवको के साथ निकलता है। (२३०) इसी बीच में सैनिक उसके निकलने की प्रतीक्षा करते रहते हैं। प्रत्येक अमीर अपनी अपनी टोली लिए पताकाओ तथा तुरही सहित खडा रहता है। सर्व प्रथम सुल्तान की सवारी अग्रसर होती है। बादशाह के आगे-आगे वे लोग जिनका मैं उल्लेख कर चुका हूँ, पैदल होते हैं। उनके पीछे काज़ी तथा मुअज्जिन होते हैं जो अल्लाह के नाम का जाप किया करते हैं। सुल्तान के पीछे उसके 'मरातिब' अर्थात् पताकायें, ढोल, तुरही, बिगुल तथा शहनाई होती हैं। उनके पीछे बादशाह के खास सेवक होते हैं। उनके पीछे-पीछे सुल्तान का भाई मुबारक खाँ अपने मरातिब तथा सैनिको सहित होता है। उसके पीछे बादशाह के भतीजे बहराम खाँ की सवारी तथा उसके मरातिब एव सैनिक होते हैं। उनके पीछे सुल्तान के चचेरे भाई मलिक फीरोज की सवारी तथा 'मरातिब' एव सैनिक होते हैं। फिर वज़ीर तथा उसके मरातिब एव सैनिक होते हैं। फिर मलिक मुजीर इब्न (पुत्र) जिर्‌रिजा तथा उसके "मरातिब" एव सैनिक होते हैं। फिर मलिक कबीर कबूला तथा उसके मरातिब एव सैनिक होते हैं। सुल्तान मलिक कबूला का बडा सम्मान करता है। उसे बडा उत्कर्ष तथा अत्यधिक धन-सम्पत्ति प्राप्त है। उसके एक साहिबे दीवान[२] सिकतुलमुल्क अलाउद्दीन अली अलमिस्री ने जो इब्नुश्

१ ईदुल फित्र तथा ईदुज्जुहा।

२ दीवान उस समय किसी मुहकमे अथवा विभाग को कहते थे। यहाँ बहुत बड़े अधिकारी (मुख्य सचिव) से अभिप्राय है।

(२३१) शराबिशी कहलाता है मुझे बताया कि इसका तथा उसके दासो का व्यय तथा वृत्ति ३६ लाख (तन्के) वार्षिक है। उसके पीछे मलिक नुवब्रिया, उसके मरातिब' तथा सैनिक होते है। उसके पीछे मलिक बुगरा, उसके 'मरातिब' तथा सैनिक होते हैं। उसके पीछे मलिक मुखलिस, उसके 'मरातिब' तथा सैनिक होते हैं। उसके पीछे मलिक कुतुबुल मुल्क उसके मरातिब तथा सैनिक होते हैं।

उपर्युक्त अमीरो को बडा उत्कर्ष प्राप्त है। वे सुल्तान से कभी पृथक् नही होते। वे लोग ईद में अपने 'मरातिब' सहित जाते हैं। अन्य अमीरो की सवारियाँ बिना मरातिब के होती हैं। जो लोग ईद के जुलूस की सवारी में जाते हैं, वे सशस्त्र होते हैं। उनके घोडे भी इसी दशा में होते हैं। इनमें से अधिकतर सुल्तान के ममलूक (दास) होते हैं। जब सुल्तान मुसल्ला (ईदगाह) के द्वार पर पहुच जाता है, वह द्वार पर रुक जाता है और (२३२) काजियो, बडे-बडे अमीरों, मुख्य अजीजो (परदेशियो) को प्रविष्ट होने का आदेश देता है। फिर वह स्वय उतरता है और इमाम नमाज प्रारम्भ करता है और खुत्बा पढता है। इदुज्जुहा मे सुल्तान एक भाले से ऊँट की गर्दन छेद कर उसकी हत्या करता है। सर्व प्रथम वह अपने वस्त्र पर एक रेशम की चादर डाल लेता है जिससे उसके वस्त्र पर रक्त की छीटें न गिर सकें। फिर वह हाथी पर सवार होकर महल को वापस चला जाता है।

ईद का दरबार, विशाल सिंहासन तथा बृहत् धूप पात्र—

ईद के दिन महल मे फर्श बिछाये जाते हैं और उन्हे बडे सुन्दर ढग से सजाया जाता है। दरबार के बडे कक्ष के बाहर बारगाह खडी की जाती है। यह एक बहुत बडे मडप के समान होती है। इसमें बडे मोटे मोटे स्तम्भ लगाये जाते हैं। उसके चारो ओर भी खेमे लगे होते हैं। भिन्न भिन्न रगो के रेशम के वृक्ष बनाये जाते हैं और उनमें फूल लगाये जाते हैं। (२३३) बडे कक्ष में उनकी तीन पक्तियाँ सजाई जाती हैं। प्रत्येक दो वृक्षो के मध्य में एक सोने की कुर्सी रक्खी जाती है। उस पर एक गद्दी रक्खी जाती है। विशाल सिंहासन, कक्ष के मध्य में रक्खा जाता है। यह शुद्ध सोने का होता है। इसके पायो में जवाहरात जडे रहते हैं। इसकी लम्बाई २३ बालिश्त होती है। उसकी चौडाई इसकी आधी होती है। इसके भिन्न-भिन्न भाग होते हैं। इन सब को मिला कर जब आवश्यकता होती है तो सिंहासन बना लिया जाता है। सोने के भार के कारण प्रत्येक भाग कई-कई मनुष्य मिल कर उठाते हैं। उस पर तकिया रक्खा जाता है। सुल्तान के सिर पर जवाहरात से जडा हुआ चत्र लगाया जाता है। जैसे ही वह सिंहासन पर चढता है, हाजिब तथा नकीब उच्च स्वर में "बिस्मिल्लाह" का नारा लगाते हैं। फिर जो लोग उपस्थित होते हैं, वे अभिवादन करते है। सर्व प्रथम काजी, फिर खतीब आलिम शरीफ (सैयिद) मशायख (सूफी), सुल्तान के भाई, सम्बन्धी, मुख्य अजीज (परदेशी), वजीर, सेना के अमीर (अधिकारी) ममलूक (दासो) के शेख (सरदार) बडे-बडे सैनिक बारी बारी अभिवादन करते है और किसी (२३४) प्रकार की गडबडी नही होने पाती।

यहाँ यह भी प्रथा है कि ईद के दिन वे लोग, जिनको ग्राम प्रदान किये गये हैं, सोने के सिक्के (दीनार) एक पटखण्ड में बाँध कर लाते हैं, जिस पर उनका नाम अङ्कित होता है और उसे वे एक सोने के थाल मे डाल देते हैं। इस प्रकार अत्यधिक धन एकत्र हो जाता है और इसमें से सुल्तान जिसे उसकी जो इच्छा होती है दे देता है।

जब लोग अभिवादन कर चुकते है तो सब लोगों के लिये उनकी श्रेणी के अनुसार भोजन लाया जाता है। उस दिन भी बृहत् धूपपात्र निकाला जाता है जो मीनार के समान

तथा शुद्ध सोने का होता है। इसके भी भिन्न भिन्न भाग होते हैं। जब आवश्यकता होती है तो इन टुकडो को जोड कर धूप पात्र बना लिया जाता है। प्रत्येक भाग कई कई मनुष्य मिल कर उठाते हैं। इसके भीतरी भाग में तीन खाने होते हैं। उनमें लोग प्रविष्ट होकर ऊद, अम्बर आदि वस्तुयें जलाते हैं। इनके धुयें से कमरा सुगन्धित हो जाता है। तरुण दासो के हाथों में (२३५) सोने तथा चांदी के गुलाब छिडकन के पात्र होते हैं। वे उनसे उपस्थित सज्जनो पर गुलाब-जल छिडक्ते हैं।

दोनो ईदो के अतिरिक्त यह सिंहासन तथा धूपपात्र कभी नही निकाले जाते। अन्य दिनो में सुल्तान सोने के दूसरे सिंहासन पर आसीन होता है। इससे कुछ दूर बारगह, जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है लगाई जाती है। इसमें तीन द्वार होते हैं। सुल्तान इसके भीतर विराजमान होता है। प्रथम द्वार पर एमादुलमुल्क सरतज खडा होता है। द्वितीय पर मलिक नुकबिया और तीसरे द्वार पर यूसुफ बुगरा खडे होते हैं। दाहिनी ओर सशस्त्र ममलूको (दासों) के दल का अमीर (सरदार) खडा होता है। इसी प्रकार वे बाईं ओर भी खडे होते हैं। अन्य लोग उन स्थानो पर, जो उनकी श्रेणी के अनुसार निश्चित रहते हैं, खडे होते हैं। शहनये बारगाह मलिक तगी अपने हाथ में सोने का डडा लिये रहता है। उसके नायब के हाथ में चांदी का डडा होता है। उनके द्वारा वे दरबार में सब लोगो को अपने अपने स्थानो पर खडे होने में सहायता देते रहते हैं, तथा पक्तियां ठीक रखते हैं। वजीर अपने स्थान पर खडा होता है और उसके कुत्ताब (सचिव) नायब के पीछे खडे होते हैं। हाजिब तथा नकीब अपने अपने स्थानो पर खडे होते हैं। तत्पश्चात् गायक तथा नर्तकियाँ प्रविष्ट होती (२३६) हैं। सर्व प्रथम काफिर (हिन्दू) राजाओं की पुत्रियाँ जो उस वर्ष युद्ध में बन्दी बनाई जाती हैं, आकर गाती नाचती हैं। तत्पश्चात् वे अमीरों तथा मुख्य परदेशियो को प्रदान करदी जाती हैं। इसके उपरान्त अन्य काफिरो की पुत्रियां आकर नाचती गाती हैं। जब वे नाच गा चुकती हैं, तो सुल्तान उन्हे अपने भाइयो, सम्बन्धियो, मलिको के पुत्रो आदि को दे देता है। सुल्तान यह दरबार अस्र की नमाज के पश्चात् करता है। दूसरे दिन पुन इसी प्रकार अस्र के उपरान्त दरबार होता है। इसमें गायकायें लाई जाती हैं। जब वे नाच गा चुकती है तो सुल्तान उन्हे ममलूक के अमीरो (मुख्य दासो) को दे देता है। तीसरे दिन सुल्तान के सम्बन्धियों के विवाह होते हैं और उन्हे उपहार दिये जाते हैं। चौथे दिन दास मुक्त किये जाते हैं। पांचवे दिन दासियां मुक्त की जाती हैं। छठे दिन दास तथा दासियो का विवाह होता है। सातवें दिन वह बडी उदारता से दान करता है।

यात्रा से वापसी के समारोह—

(२३७) जब सुल्तान यात्रा से लौटता है तो हाथी सजाये जाते हैं। उनमें से सोलह पर सोलह सुनहरे तथा जडाऊ छत्र लगाये जाते हैं। आगे आगे गाशिया अर्थात् जीन-पोश उठा कर ले जाते हैं। उसमें भी जवाहरात जडे होते हैं। लकडी के कुब्बे बनाये जाते हैं। उनमें कई कई मंजिल होती है। वे रेशमी कपडो से ढके रहते हैं। उनमें से प्रत्येक मे गायिकायें सुन्दर वस्त्र तथा आभूषणो द्वारा श्रृङ्गार किये बैठी रहती हैं। प्रत्येक कुब्बे के मध्य में एक बहुत बडा चमडे का होज तैयार कराया जाता है। उसमें शर्बत भरा जाता है। शर्बत में गुलाब जल पडता है। उसमें से सभी को, चाहे वे नगर निवासी हो अथवा (परदेशी) दिया जाता है। शर्बत के उपरान्त उन्हे ताम्बूल, शर्बत और पुगीफल दिये जाते हैं। कुब्बो के मध्य, के स्थान पर रेशम का फर्श बिछाया जाता है। इसी पर सुल्तान की सवारी (हाथी) आती है। नगर के द्वार से महल के द्वार तक जिस मार्ग से सुल्तान जाता है, उसके (२३८) दोनों ओर के घरो की दीवारों को रेशमी वस्त्रों से मढवर सुसज्जित किया

जाता है। सुल्तान के आगे आगे हजारो दास पैदल होते हैं। उनके पीछे पीछे सेना होती हैं। एक बार जब वह राजधानी में प्रविष्ट हुआ तो मैंने यह भी देखा कि तीन चार छोटे रवादे (अरादे) हाथियो पर रक्खे थे। उन से लोगो पर दीनार तथा दिरहम की वर्षा की जाती थी। लोग उन्हे चुनने के लिये टूटे पडते थे। यह वर्षा नगर में प्रविष्ट होने से लेकर महल तक होती रही।

सुल्तान के भोजन का प्रबन्ध—

सुल्तान के महल में दो प्रकार का भोजन होता है। एक खासा, सुल्तान का विशेष भोजन, दूसरा सर्वसाधारण का भोजन। खासा सुल्तान स्वय खाता है। वह सुल्तान के खास कमरे में खाया जाता है। जो लोग उस समय उपस्थित होते हैं, उसमें सम्मिलित होते हैं। उस समय खास खास अमीर, अमीर हाजिब जो सुल्तान का चचेरा भाई है, एमादुलमुल्क सरतेज (२३९) तथा अमीर मजलिस उपस्थित होते हैं। यदि सुल्तान किसी उत्कृष्ट परदेशी को सम्मानित करना चाहता है तो वह उसे अपने साथ भोजन करने के लिये बुला लेता है और वह उसके साथ भोजन करता है। कभी कभी उपर्युक्त उपस्थित जनो को सम्मानित करने के लिये वह स्वय रिकाबी अपने हाथ मे लेकर उसमें रोटी का टुकडा रख कर उसे दे देता है। पाने वाला उसे लेकर अपनी बाईं हथेली पर रखता है और दाहिने हाथ से भूमि छूकर अभिवादन करता है। कभी कभी वह भोजन में से कुछ किसी अनुपस्थित अमीर को भी भेज देता है। पाने वाला उसी प्रकार अभिवादन करता है, जिस प्रकार उपस्थित लोग करते हैं। तत्पश्चात् वह उसे अपने साथियों के साथ खाता है। मै कई बार उसके खास भोजन में सम्मिलित हो चुका हू और उपस्थित लोगो की सख्या लगभग बीस होती थी।

आम भोजन का प्रबन्ध—

भोजन में चपातियाँ, भुना माँस, मीठे समोसे, चावल, मुर्गा तथा समोसे होते हैं। इनका सविस्तार उल्लेख हो चुका है और उनके तैयार करने की विधि भी बताई जा चुकी है। दस्तरख्वान के मध्य में काजी, खतीब, फकीह, शरीफ (सैयिद) तथा शेख (सूफी) होते हैं। उनके पश्चात् सुल्तान के सम्बन्धी, मुख्य अमीर तथा अन्य लोग होते हैं। प्रत्येक मनुष्य का स्थान निर्धारित रहता है। कोई अपने निर्धारित स्थान के अतिरिक्त किसी स्थान पर नहीं बैठ सकता। इस विषय पर कभी कोई गड़बड़ी नहीं हो पाती।

जब सब लोग बैठ जाते हैं तो शुर्बदारिया अर्थात् जल पिलाने वाले सोने चाँदी ताँबे (२४२) तथा काँच के बर्तन लाते हैं। इनमें शर्बत होता है। भोजन के पूर्व लोग शर्बत पीते हैं। जब लोग शर्बत पी चुकते हैं तो हाजिब "बिस्मिल्लाह" कहता है। फिर वे भोजन आरम्भ करते हैं। प्रत्येक मनुष्य के पास सब प्रकार का भोजन उसके लिये पृथक् होता है। कोई अन्य उसमें से नहीं ले सकता। जब भोजन समाप्त हो जाता है तो लोग फुक्का पीते हैं। वह क़लई के प्यालों में लाई जाती है। तत्पश्चात् हाजिब 'बिस्मिल्लाह' कहता है। फिर पान तथा मसाले के थाल लाये जाते हैं। प्रत्येक मनुष्य को कुटे हुये मसाले का एक चम्मच तथा १५ पान के बीड़े दिये जाते हैं। बीड़े लाल रेशम के धागे से बँधे रहते हैं। जब लोग पान ले लेते हैं तो हाजिब तुरन्त बिस्मिल्लाह कहता है। सब लोग उठ खड़े होते हैं। जो अमीर भोजन का प्रबन्ध करने के लिए नियुक्त होता है वह अभिवादन करता है। उसके साथ सब लोग अभिवादन करते हैं और फिर वहाँ से चले जाते हैं। इस प्रकार दिन में दो बार भोजन होता है। (१) दोपहर से पूर्व (२) अस्र की नमाज़ के पश्चात्।

बादशाह के दान तथा उदारता की कहानियाँ—

(२४३) इस विषय पर केवल मैं उन्हीं घटनाओं का उल्लेख करूँगा जिनको मैंने स्वयं अपनी आँखों से देखा है। ईश्वर ही को मेरे सत्य के विषय में पूर्ण ज्ञान है और यही प्रमाण पर्याप्त है। इसके अतिरिक्त यह चर्चा सुप्रसिद्ध है और अनेक साथियों द्वारा, जो हिन्दुस्तान तथा हिन्दुस्तान के पड़ोसी देशों के अर्थात् यमन, खुरासान एवं फार्स के निवासी हैं प्रमाणित हो चुकी है। यह घटनायें इन देशों में बड़ी प्रसिद्ध हैं, और यहाँ के निवासी उन्हें सत्य समझते हैं। विदेशियों को उसके दान के विषय में पूर्ण ज्ञान है क्योंकि वह उन पर हिन्दुस्तानियों की अपेक्षा अधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित करता है। उन पर अपने उपकारों की वर्षा करता है। उनसे अत्यधिक उदारतापूर्वक व्यवहार करता है। उन्हें राज्य के उच्च पदों पर नियुक्त करता है और उन्हें बड़े बहुमूल्य उपहार प्रदान करता है। उसकी उदारता का एक उदाहरण यह है कि उसने विदेशियों को "अज़ीज़" की पदवी प्रदान करदी है और उन्हें विदेशी कहने से लोगों को रोक दिया है। उसका विचार है कि जब किसी को विदेशी कहा जाता है तो इससे वह अपने आपको अपमानित तथा तिरस्कृत समझता है। यदि ईश्वर ने (२४४) चाहा तो मैं अब उसके कुछ मुक्त-हस्त उपहारों तथा दानों की चर्चा करूँगा।

व्यापारी शिहाबुद्दीन गाज़रूनी[१] को दान—

यह शिहाबुद्दीन, मलिकुत्तुज्जार (व्यापारियों का बादशाह, बहुत बड़ा व्यापारी) गाज़रूनी, जो परवेज़ कहलाता है, का मित्र है। सुल्तान ने मलिकुत्तुज्जार को खम्बायत नगर अक्ता में प्रदान कर दिया था और उसे वज़ीर नियुक्त करने का वचन दिया था। इस पर उसने अपने मित्र शिहाबुद्दीन को बुला भेजा। जब वह आया तो उसने उसे बादशाह के लिये भेंट तैयार करने का आदेश दिया। उसने जो भेंट तैयार की। उसमें एक सराचा अर्थात् डेरा था जो

१ ईरान में फ़ार्स प्रान्त के शीराज़ तथा बूशहर नगर के बीच में एक स्थान।

रेशमी वृत्तखड कपडे का बना था। इस पर सुनहरे फूल लगे थे। इसका सीवान (सायबान) भी उसी प्रकार के कपडे का बना था। एक खिबा (खेमा) और उससे सम्बन्धित दूसरा खेमा तथा कनात आदि था। एक अन्य खेमा विश्राम करने के लिये था। सभी रेशमी कपडो तथा बेल बूटो से सजे थे। बहुत से खच्चर भी थे।

जब शिहाबुद्दीन यह सब वस्तुयें लेकर अपने मित्र मलिकुत्तुज्जार के पास लाया तो (२४५) वह भी चलने के लिये तैयार था। उसने भी अपना खराज तथा उपहार तैयार कर लिये थे। वजीर ख्वाजये जहाँ को इस बात की सूचना थी कि सुल्तान ने मलिकुत्तुज्जार को वजीर बनाने का वचन दे दिया है। उसे बडी ईर्ष्या तथा त्रास था। इससे पूर्व खम्बायत तथा जुजरात (गुजरात) प्रदेश का प्रबन्ध वजीर द्वारा होता था। वहाँ के निवासियो को उससे बडा प्रेम तथा उसके प्रति बडी निष्ठा थी और वे उसकी सेवा को उद्यत रहते थे। उनमें अधिकतर काफिर थे। उनमें से कुछ विद्रोही भी थे जो दुर्गम पर्वतों में निवास किया करते थे। वजीर ने उनके पास गुप्त सदेश भेज दिया कि जब मलिकुत्तुज्जार उस मार्ग से राजधानी जाते हुये गुजरे तो वे उसकी हत्या कर दें। जब मलिकुत्तुज्जार शिहाबुद्दीन के साथ खराज तथा उपहार लेकर मार्ग में पहुँचा तो वे दोपहर मे पूर्व जैसा कि उनकी आदत थी कही पडाव डाले थे। समस्त सैनिक अपने अपने कार्य में तल्लीन हो गये और कुछ सो गये। उसी समय बहुत से काफिर उन पर टूट पडे और मलिकुत्तुज्जार की हत्या करके समस्त धन सम्पत्ति तथा उपहार एव खराज लूट लिया। शिहाबुद्दीन के उपहार भी लूट लिये गये। केवल शिहाबुद्दीन (२४६) ही के प्राण बच सके।

सुल्तान को समाचारवाहको द्वारा सूचना मिल गई। उसने आदेश दिया कि शिहाबुद्दीन को नहरवाला प्रदेश के कर से ३०,००० दीनार देदिये जायें और वह अपने देश को लौट जायें। जब उससे कहा गया तो उसने इसे स्वीकार न किया और उसने कहा कि वह अपने देश से सुल्तान के दर्शनार्थ तथा उसके सम्मुख भूमि चुम्बन करने आया था। सुल्तान को इस बात की सूचना दी गई। वह बडा प्रभावित हुआ और उसने आदेश दिया कि शिहाबुद्दीन को पूर्ण सम्मान से देहली लाया जाय।

सयोग से जिस दिन वह दरबार में उपस्थित होने वाला था वही दिन हमारे उपस्थित होने का भी निश्चय हुआ था। उसने (सुल्तान ने) हम सबको खिलअत प्रदान किये और हमारे ठहराये जाने का आदेश दिया। शिहाबुद्दीन को अत्यधिक धन-सम्पत्ति भी दी। कुछ दिन पश्चात् सुल्तान ने आदेश दिया कि मुझे ६ हजार तन्के दिये जाय। इसकी चर्चा में फिर करूँगा। इसी दिन उसने शिहाबुद्दीन की अनुपस्थिति का कारण पूछा। बहाउद्दीन इब्नुल फलकी ने उत्तर दिया, अखुन्द आलम (ससार के स्वामी) मैं नही जानता[1]।" फिर उसने कहा 'सुना है वह अस्वस्थ है।"[2] (२४७) सुल्तान ने उससे कहा "तुरन्त राजकोष से एक लाख सोने के तन्के लेजा कर उसे दे दो जिससे वह प्रसन्न हो जाय।'[3] बहाउद्दीन ने सुल्तान के आदेशानुसार उसके पास धन पहुँचा दिया। सुल्तान ने आदेश दे दिया कि वह उस धन से जो भी हिन्दुस्तानी सामान चाहे क्रय करले। जब तक शिहाबुद्दीन समस्त वस्तुयें क्रय न करले उस समय तक कोई भी कोई वस्तु मोल न ले। इसके अतिरिक्त सुल्तान ने आदेश दिया कि उसकी यात्रा के लिये तीन जहाज तैयार कराये जाय। उसके समस्त सामान की व्यवस्था की जाय और जहाज के सेवकों का वेतन भी खजाने से प्रदान किया जाय।

---

१ न मी दानम।

२ शनीदम जहमत दारद।

३ बिरौं, हमीं जमाँ दर खजाना यक लक तन्क्ये जर बेगीरी व पेशे ऊ बे बरी ता दिले ऊ खुश शवद।

इस प्रकार शिहाबुद्दीन वहाँ से चल कर हुरमुज[1] पहुँचा। वहाँ उसने अपने लिये एक विशाल भवन बनवाया। मैंने बाद में यह भवन देखा था। मैं शिहाबुद्दीन से भी मिला। उसकी धन-सम्पत्ति समाप्त हो चुकी थी। वह शीराज में वहाँ के सुल्तान अबू इसहाक से दान की (२४८) आशा कर रहा था। हिन्दुस्तान में एकत्र किये हुये धन की यही दशा होती है। यहाँ से धन-सम्पत्ति लेकर बहुत कम लोग जा पाते हैं। यदि कोई चला भी जाता है तो भगवान् उस पर कोई ऐसा सकट डाल देता है कि जो कुछ उसके पास होता है, वह नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार शिहाबुद्दीन का धन भी नष्ट हो गया। हुरमुज के बादशाह तथा उसके भतीजों के झगड़ो में उसकी धन-सम्पत्ति नष्ट हो गई और उसने (निर्धन) होकर वह देश त्याग दिया।

शैखुश् श्यूख (बहुत बड़े सूफ़ी) रुक्नुद्दीन को उपहार—

सुल्तान ने मिस्र में खलीफा अबुल अब्बास के पास उपहार भेज कर यह प्रार्थना की कि उसे सिन्ध तथा हिन्द पर राज्य करने का अधिकार-पत्र प्रदान किया जाय। इसका कारण यह था कि उसका विश्वास था कि खलीफा ही को इस प्रकार का अधिकार प्राप्त है। खलीफा अबुल अब्बास ने उसकी इच्छानुसार मिस्र के मुख्य शेख रुक्नुद्दीन के हाथ यह अधिकार-पत्र (२४६) भेजा। जब वह राजधानी में पहुँचा तो उसने उसे बहुत सम्मानित किया और उसे अत्यधिक धन-सम्पत्ति प्रदान की। जब कभी वह उससे भेंट करने जाता तो वह खड़े होकर उसका स्वागत करता था और उसका विशेष सम्मान करता था। अत में उसने उसे वापस जाने की अनुमति दी और उसे बहुमूल्य उपहार प्रदान किये। इस बार उसने जो उपहार उसे दिये उसमें शुद्ध सोने की बनी हुई नालें तथा कीलें थी। उसने उससे निवेदन किया कि जब वह जहाज से उतरे तो अपने घोड़े के खुरो में यही नालें लगवा ले। रुक्नुद्दीन खम्बायत की ओर चल दिया। वहाँ से वह जहाज पर यमन जाने वाला था। इसी समय काजी जलालुद्दीन ने विद्रोह कर दिया और इब्नुल कौलमी की धन-सम्पत्ति लूट ली। शेख की भी धन-सम्पत्ति लूट ली गई। वह स्वय इब्नुल कौलमी के साथ भाग कर सुल्तान के पास पहुचा। सुल्तान ने जब उसे देखा तो उसने उपहास से कहा, "तुम धन-सम्पत्ति इस आशय से लेने आये कि उसके द्वारा रमणियाँ प्राप्त कर सको किन्तु तुम धन सम्पत्ति तो ले न जा सके और अपना (२५०) सिर छोड़े जाते हो।"[2] उसने यह उपहास में कहा और फिर उससे बोला "चिन्ता मत करो। मैं विद्रोही से युद्ध करने जा रहा हूँ और मैं तुम्हे जितना उन लोगों ने तुमसे छीन लिया है उससे कई गुना अधिक दूगा।" मैंने सुना है कि मेरे हिन्दुस्तान से चले आने के उपरान्त सुल्तान ने अपने वचन के अनुसार उसकी हानि की पूर्ति कर दी और वह उस धन से मिस्र पहुच गया।

वाइज़ तिर्मिज़ी नासिरुद्दीन को उपहार—

यह फक़ीह तथा वाइज सुल्तान के दरबार में आया था। एक वर्ष तक वह सुल्तान की उदारता द्वारा लाभ प्राप्त करता रहा। तत्पश्चात् उसने अपने देश को वापस होने की इच्छा प्रकट की। सुल्तान ने उसे जाने की अनुमति दे दी किन्तु उसने अभी तक उसका वाज (प्रवचन) तथा भाषण न सुना था। जब सुल्तान युद्ध के लिये माबर जाने की तैयारी करने लगा तो उसने प्रस्थान करने के पूर्व नासिरुद्दीन का भाषण सुनने की इच्छा की। उसने

१ फ़ारस की खाड़ी के द्वार पर एक टापू।

२ यह वाक्य फ़ारसी में इस प्रकार लिखा है "आमदी के जर बरी, बा दिगरे सनम खुरी, जर न बरी व सर निही।"

(२५७) को अभिवादन करने के लिए उपस्थित होने में कुछ विलम्ब हो गया। जब वे अभिवादन करने आये तो उसने उनसे पूछा "तुम लोगो को तुरन्त अभिवादन करने के लिये उपस्थित होने में क्या बात बाधक थी ?" उन्होने क्षमा-याचना की किन्तु उसने उनकी बात स्वीकार न की और अपने सशस्त्र सैनिको को आदेश दिया कि अपनी तलवारें निकाल लें। उन लोगों ने तलवार निकाल ली और उनमें से बहुत से लोगो की हत्या करदी।

जब उस नगर के आस पास के अमीरो ने यह हाल सुना तो उन्हे बडा क्रोध आया और उन्होंने शम्सुद्दीन सिमनानी को, जो एक बहुत बडा फकीह तथा अमीर था, शवनकारा के मनुष्यो का हाल लिख भेजा और उससे हाजी काउन के विरुद्ध सहायता चाही। शम्सुद्दीन अपनी सेना लेकर युद्ध करने के लिये चल खडा हुआ। उस स्थान के आस पास के निवासी उन शेखो (सम्मानित व्यक्तियो) का बदला लेने के लिये तैयार हो गये। उन लोगो ने रात्रि में उसकी सेना पर छापा मार कर उनको परास्त कर दिया। हाजी काउन नगर के किले (२५८) में था। उन लोगो ने किला घेर लिया। वह शौच गृह में छिप गया। उन लोगो ने उसे ढूढ कर उसका सिर काट कर सुलेमान खाँ के पास भेज दिया और लोगो के क्रोध को शान्त करने के लिए उसके शव के टुकडे राज्य के भिन्न भिन्न स्थानो पर भेज दिये।

इब्नुल खलीफा (खलीफ़ा के पुत्र) का आना तथा उसका हाल—

उसका नाम अमीर गयासुद्दीन मुहम्मद इब्न (पुत्र) अब्दुल काहिर इब्न (पुत्र) यूसुफ इब्न (पुत्र) अब्दुल अजीज इब्न (पुत्र) अल मुस्तन्सिर बिल्लाह, जो बगदाद के खलीफा थे, वह सुल्तान अलाउद्दीन तुर्माशीरीन से जो मावराउन्नहर का बादशाह था, भेंट कर चुका था। उसने उसका बडा सम्मान किया और उसे कसम (पुत्र) अब्बास की कब्र से सम्बन्धित खानकाह का प्रबन्धक बना दिया। वह कुछ वर्षो तक वहाँ निवास करता रहा किन्तु बाद में सुल्तान के अब्बास के वश से प्रेम तथा निष्ठा का वृत्तान्त सुन कर उसकी इच्छा उसके पास जाने की हुई। उसने सुल्तान के पास दो दूत भेजे। उनमें से एक उसका बडा पुराना मित्र मुहम्मद (२५९) इब्न (पुत्र) अबू अल शरफी अल हरबावी और दूसरा मुहम्मद हमदानी सूफी था। वे दोनो सुल्तान के समक्ष उपस्थित हुये। नासिरुद्दीन तिर्मिजी, जिसकी चर्चा इससे पूर्व हो चुकी हैं, गयासुद्दीन से बगदाद में भेट कर चुका था। बगदाद निवासियो ने उसके समक्ष गयासुद्दीन क वश की सत्यता को प्रमाणित किया था। अत उसने उस सुल्तान के सम्मुख प्रमाणित किया। तत्पश्चात् जब उसके दोनो दूत सुल्तान के पास पहुँचे तो उसने उन्हे ५००० दीनार प्रदान किये और उनके द्वारा गयासुद्दीन के मार्ग व्यय के लिए ३०,००० दीनार भेजे। इसके साथ उसन एक पत्र अपने हाथ से लिख कर भेजा जिसमें उसके सम्मान का उल्लेख करते हुये उसे दरबार में आने के लिये निमन्त्रित किया।

पत्र पाकर गयासुद्दीन उसके पास आने के लिये चल पडा। जब वह सिन्ध प्रदेश में पहुँचा और समाचार प्रेषित करने वाले अधिकारियो ने उसके आगमन की सूचना सुल्तान को भेजी तो सुल्तान ने अपनी प्रथा के अनुसार अधिकारियों को उसके स्वागतार्थ भेजा। जब (२६०) गयासुद्दीन सरसुती पहुच गया तो सुल्तान ने सद्रे जहाँ काजी-उल-कुज्जात कमालुद्दीन गजनवी तथा कुछ अन्य फकीहो को उसके स्वागत के लिये भेजा। तत्पश्चात् उसने अमीरो को भी इसी कार्य हेतु भेजा। जब वह राजधानी के बाहर मसऊदाबाद पहुँचा, तो सुल्तान स्वय उसके स्वागतार्थ गया। जब उनकी भेंट हुई तो गयासुद्दीन सुल्तान के सम्मान के लिये घोडे से उतर पडा और झुका। सुल्तान ने भी घोडे से उतर कर उसके सम्मुख अभिवादन किया।

वह अपने साथ कुछ उपहार भी लाया था जिसमें कुछ वस्त्र भी थे। सुल्तान ने उसमें से एक वस्त्र लेकर उसके सम्मुख उसी प्रकार अभिवादन किया जिस प्रकार अन्य लोग उसके

समक्ष अभिवादन करते हैं। तत्पश्चात् घोड़े लाये गये। सुल्तान स्वयं एक घोड़ा लेकर उसके पास गया और उसे शपथ दी कि वह उस पर सवार हो जाय। जब तक वह सवार हुआ सुल्तान उस समय तक पाद धारणी पकड़े रहा। फिर सुल्तान भी सवार हुआ और दोनों साथ साथ चले। शाही छत्र दोनों की छाया के लिये लगा था। सुल्तान ने अपने हाथों में पान लेकर उसके सम्मुख प्रस्तुत किया। यह बहुत बड़ा सम्मान था क्योंकि वह स्वयं किसी को पान (२६१) छालियाँ नहीं देता। उसने यह भी कहा कि 'यदि मैं ने खलीफा अबुल अब्बास की बैअत न की होती तो आप ही की बैअत कर लेता।" इस पर गयासुद्दीन ने उत्तर दिया, "मैं भी उन्हीं की बैअत में हूँ।" गयासुद्दीन ने सुल्तान से यह भी कहा, 'अल्लाह के रसूल (मुहम्मद साहब) ने कहा है कि "जो कोई बंजर भूमि में जीवन डाल देता है, वह उसी की हो जाती है। आपने हम लोगों को जीवन प्रदान किया है।" सुल्तान ने इसका बड़ी नम्र तथा स्नेहमयी वाणी में उत्तर दिया। जब वे उस सिराचा (डेरे) में पहुँचे जो सुल्तान के लिये तैयार किया गया था तो उसने वह उसके निवास के लिये प्रदान कर दिया। सुल्तान के लिये दूसरा खेमा लगाया गया।

दोनों ने रात्रि में नगर के बाहर निवास किया। वे दूसरे दिन प्रातःकाल राजधानी में प्रविष्ट हुये। सुल्तान ने उसे सीरी नगर में, जो दारुल खिलाफा भी कहलाता है, अलाउद्दीन खलजी तथा उसके पुत्र कुतुबुद्दीन के बनवाये हुये किले में निवास स्थान प्रदान किया। सुल्तान ने समस्त अमीरों को उसे किले तक पहुँचाने का आदेश दिया। उसमें उसकी आवश्यकतानुसार समस्त सामग्री सोने, चाँदी के बर्तन आदि एकत्र किये। उसमें उसके स्नान के लिये सोने का हौज था। उसने अपनी प्रथानुसार उसके सर शोई (सिर धुलाने) के लिये चार लाख दीनार (२६२) तथा ख्वाजा सरा, दास, दासियाँ भेजे। उसके व्यय के लिये ३०० दीनार प्रति दिन के हिसाब से निश्चित किये। इसके अतिरिक्त वह अपने विशेष भोजन में से भी उसके पास भोजन भेजा करता था। तत्पश्चात् उसने उसे अक्ता में समस्त सीरी नगर और उसके समस्त घर, उद्यान तथा शाही भूमि, १०० ग्राम और देहली से सम्बन्धित पूर्व के भागों का राज्य प्रदान कर दिये। उसने उसे तीस खच्चर सुनहरी ज़ीन सहित भी प्रदान किये जिनके व्यय के सम्बन्ध में निर्णय कर दिया कि खज़ाने से प्रदान किया जाय। उसने आदेश दिया कि एक स्थान के अतिरिक्त जहाँ केवल सुल्तान घोड़े पर सवार होकर जा सकता था, वह किसी स्थान पर भी सुल्तान के महल को आते समय घोड़े से न उतरे। नगर के छोटे बड़े सब को आदेश दे दिया गया कि वे उसके सम्मुख उसी प्रकार अभिवादन करें जिस प्रकार सुल्तान के सम्मुख अभिवादन किया (२६३) करते हैं। जब गयासुद्दीन सुल्तान के सम्मुख आता तो सुल्तान उसके सम्मान हेतु राजसिंहासन पर से उतर आता था। यदि वह कुर्सी पर होता तो वह खड़ा हो जाता था। दोनों एक दूसरे के सम्मुख अभिवादन करते और वह सुल्तान के बराबर कालीन पर बैठा करता था। जब उठता तो सुल्तान भी उठ खड़ा होता और दोनों एक दूसरे के सम्मुख अभिवादन करते और जब वह दरबार से जाने लगता तो उसके लिये कालीन बिछा दिया जाता था और जब तक उसकी इच्छा होती वह वहाँ बैठा रहता और फिर अपने घर चला जाता। वह दिन में दो बार यही करता था।

सुल्तान द्वारा उसके आदर की एक कहानी—

जिस समय इब्नुल खलीफा देहली में ठहरा था, बंगाल से वज़ीर उपस्थित हुआ। सुल्तान ने समस्त मुख्य अमीरों को उसके स्वागतार्थ जाने का आदेश दिया। अन्त में वह स्वयं उसके स्वागत को गया और उसका बड़ा आदर सम्मान किया। नगर के बाहर उसी प्रकार कुब्बे सजाये गये, जिस प्रकार सुल्तान के प्रविष्ट होने के समय सजाये जाते थे। इब्नुल

खलीफा (खलीफा का पुत्र, अमीर गयासुद्दीन) भी उससे भेंट करने गया। फकीह काजी और प्रतिष्ठित लोग भी गये। जब सुल्तान अपने राजभवन में लौट आया तो उसने वजीर से कहा, (२६४) "मख्दूम जादे (गयासुद्दीन) के महल को जाओ।" वह उसे इसी नाम से पुकारा करता था। इसका अर्थ है 'स्वामी का पुत्र।" अत वजीर भी उससे भेंट करने गया और २,००० सोने के तन्के तथा वस्त्र उपहार में भेंट किये। अमीर कबूला, अन्य मुख्य अमीर तथा मैं इस अवसर पर यह दृश्य देख रहे थे।

इसी प्रकार की एक अन्य कहानी—

एक बार गज़नी का बादशाह बहराम सुल्तान से भेंट करने आया। उसमें तथा इब्नुल खलीफा (खलीफा के पुत्र) में चिरकाल से वैमनस्य चला आता था। सुल्तान ने आदेश दिया कि उसे सीरी के एक भवन में ठहरा दिया जाय। वह स्थान इब्नुल खलीफा (खलीफा के पुत्र) के अधीन था। सुल्तान ने यह भी आदेश दिया कि वहीं बहराम के लिये एक भवन निर्माण कराया जाय। इब्नुल खलीफा (खलीफा का पुत्र) यह सुन कर आग बबूला हो गया। वह सुल्तान के महल में पहुँचा और उस कालीन पर जहाँ वह बैठा करता था बैठ गया और वजीर को बुलवा कर, उससे कहा 'खुन्द आलम को मेरा अभिवादन पहुँचा कर कह दो कि "जो कुछ उसने मुझे प्रदान किया है वह सब मेरे महल में वर्तमान (२६५) है। मैंने उसमें से कोई वस्तु कम नहीं की है अपितु उसमें कुछ न कुछ वृद्धि हो गई है। अब मैं उसके पास नहीं ठहर सकता।" यह कह कर वह वहाँ से उठा और चल दिया। वजीर ने उसके आदमियों में से एक से इसका कारण पूछा। उसने उत्तर दिया कि वह सुल्तान द्वारा सीरी में गज़नी के बादशाह के लिए भवन निर्माण का आदेश देने पर रुष्ट है।

वजीर ने सुल्तान के पास जाकर उसे इस बात की सूचना दी। सुल्तान तुरन्त अपने दस विशेष सेवकों को लेकर इब्नुल खलीफा (खलीफा के पुत्र) के प्रासाद पर पहुंचा, और उसे सूचना कराई। महल के बाहर घोडे पर से उस स्थान पर उतर पडा जहाँ साधारण लोग उतरा करते थे। उसके पास पहुँच कर सुल्तान ने क्षमा-याचना की। इब्नुल खलीफा (खलीफा के पुत्र) ने उसकी क्षमा स्वीकार करली, किन्तु सुल्तान ने कहा "ईश्वर की शपथ है मैं उस समय तक आपको सन्तुष्ट न समझूंगा जब तक आप अपने चरण मेरी ग्रीवा पर न रख देंगे।" उसने उत्तर दिया कि 'चाहे मेरी हत्या ही क्यो न करदी जाय किन्तु मैं यह कदापि न करूँगा।" सुल्तान ने फिर कहा 'मैं आपको अपने शीश की शपथ देता हू कि आप यह अवश्य करें।" इस पर उसने अपने चरण भूमि पर रख दिये। मलिक कबीर (२६६) कबूला ने इब्नुल खलीफा के चरण अपने हाथ से उठाकर सुल्तान की गर्दन पर रख दिये। इसके उपरान्त सुल्तान उठ खडा हुआ और उसने कहा "अब मैं समझता हू कि आप मुझसे सन्तुष्ट हो गये और मेरा हृदय शान्त है।" यह एक बडी अद्भुत कहानी है। इस प्रकार की कहानी किसी बादशाह के विषय में न सुनी गई होगी।

मैं उसके पास ईद के उस दिन उपस्थित था जब मलिकुल कबीर (कबूला) उसके लिये सुल्तान के पास से तीन खिलअतें लाया। इनमें रेशम के बन्द के स्थान पर बेर से बडे मोतियों के बटन लगे थे। मलिक कबीर उसके द्वार पर खडा उसकी प्रतीक्षा करता रहा। जब वह बाहर निकला तो मलिक कबीर ने उसे खिलअत पहनाया। सुल्तान ने उसको अपार धन सम्पत्ति प्रदान की थी किन्तु इब्नुल खलीफा (खलीफा का पुत्र) पृथ्वी पर सब से अधिक कृपण था। उसकी कृपणता के विषय में बडी विचित्र कहानियों की चर्चा की जाती है। कृपणता में उसका वही स्थान था जो सुल्तान का दान में। हम अब इस विषय में कुछ कहानियों की चर्चा करेंगे।

इब्नुल ख़लीफा (खलीफ़ा के पुत्र) के लोभ की कुछ कहानियां—

(२६७) मैं और वह मित्र थे। मैं उससे कभी-कभी भेंट करने उसके घर जाया करता था। मैंने उसके पास अपना एक पुत्र जिसका नाम अहमद था, हिन्दुस्तान से चलते समय छोड़ दिया था। ईश्वर जाने उन दोनों का क्या हुआ। मैंने उससे एक दिन कहा, "आप नित्य अकेले ही भोजन क्यों करते हैं और अपने मित्रों को अपने साथ भोजन करने के लिये क्यों नहीं बुलवा लेते ?" उसने उत्तर दिया 'मैं उन सब को अपने साथ भोजन करते नहीं देख सकता।" अतः वह अकेला ही भोजन किया करता था और केवल अपने मित्र मुहम्मद इब्न (पुत्र) अबी अबूश् शरफी को कुछ भोजन दिया करता था और शेष भोजन स्वयं खा जाता था।

जब मैं उसके घर जाता तो उसकी चौखट पर अन्धेरा पाता और कोई प्रकाश न होता था। मैंने उसे कभी कभी जलाने के लिये बाग में टहनियां चुनते हुये भी देखा था। उसने अपने गोदाम इन टहनियों से भर लिये थे। जब मैंने उससे उनके विषय में प्रश्न किया तो उसने उत्तर दिया, "कि इनकी भी आवश्यकता पड़ सकती है।" वह अपने सेवकों, ममलूक (दासों) ख्वाजा सराओं को अपने बाग के कार्य में लगाये रखता था और कहा करता (२६८) था, 'मैं नहीं चाहता कि वे बिना कुछ कार्य किये ही भोजन किया करें।" एक बार मुझ पर कुछ ऋण हो गया। मुझे वह ऋण चुकाना था। उसने मुझ से कहा कि "वास्तव में मैं तेरा ऋण चुका देना चाहता हूँ किन्तु मुझे इस बात का साहस नहीं होता।"

कहानी—

उसने एक बार मुझे यह कहानी सुनाई। उसने कहा, "मैं एक बार अपने तीन साथियों के साथ बगदाद से चला। मेरे साथ मेरा मित्र मुहम्मद इब्न (पुत्र) अबूश् शरफी भी था। हम लोग पैदल यात्रा कर रहे थे। हमारे साथ कोई भोजन सामग्री भी न थी। हम लोग एक ग्राम में एक झरने के किनारे रुके। हम में से एक को झरने में एक दिरहम मिला। हम लोगों ने विचार किया कि हमें एक दिरहम से क्या करना चाहिये। अन्त में हमने रोटी मोल लेना निश्चय किया। हम में से एक व्यक्ति रोटी लेने गया। रोटी बेचने वाले ने केवल रोटी बेचना स्वीकार न किया और कहा कि वह आधी भूसी और आधी रोटी बेचेगा (२६९) अतः वह रोटी और भूसी दोनों लाया। हम लोगों ने भूसी फेंक दी क्योंकि हमारे साथ कोई पशु न था। रोटी के टुकड़े हमने आपस में बाँट लिये। अब तुम स्वयं देख रहे हो कि सौभाग्य से मुझे कौनसा स्थान प्राप्त हो गया है ?" मैंने उससे कहा "आपका यह कर्त्तव्य है कि आप ईश्वर के कृतज्ञ हों और बड़ी उदारता से दरिद्रों को दान किया करें और इस प्रकार अपनी धन-सम्पत्ति को उपयोगी सिद्ध करें।" उसने उत्तर दिया, "मुझ से यह नहीं हो सकता।" वास्तव में मैंने कभी उसे उदार अथवा दान करते नहीं देखा। ईश्वर हमें कृपणता से सुरक्षित रखे।

कहानी—

एक दिन मैं हिन्दुस्तान से लौट कर बगदाद में मुसतनसरिया विद्यालय में बैठा था। इसे उसके दादा अमीरुल मोमिनीन खलीफा मुसतनसिर[१] ने बनवाया था। मैंने वहाँ एक युवक बड़ी दरिद्र अवस्था में देखा। वह एक आदमी के पीछे जो मदरसे से निकला था दौड़ रहा था। (२७०) मुझे एक विद्यार्थी ने बताया कि यह युवक जिसे तुमने अभी देखा खलीफा मुसतनसिर के पोते का, अमीर मुहम्मद का जो हिन्दुस्तान में है (गयासुद्दीन मुहम्मद इब्नुल खलीफा)

१ मिस्र के फ़ातमी वंश का पाँचवाँ खलीफ़ा। उसकी मृत्यु १०९४ ई० में हुई।

का पुत्र है।" इस पर मैंने उसे बुलाया और उससे कहा, "मैं हिन्दुस्तान से आया हू और तुम्हें तुम्हारे पिता के समाचार बता सकता हू।" उसने उत्तर दिया "मुझे उसके समाचार अभी कुछ दिन हुये मिल चुके हैं।" यह कह कर वह फिर उस आदमी के पीछे भागा। मैंने लोगो से पूछा कि वह कौन आदमी था ? 'लोगो ने मुझे बताया कि वह किसी वक्फ़ का नाजिर (प्रबन्धक) था। युवक एक दिरहम रोज पर किसी मस्जिद का इमाम था और वह उस आदमी से अपना दैनिक वेतन माँग रहा था। मेरे आश्चर्य की कोई सीमा न रही। मैं ईश्वर की शपथ खा कर कहता हू कि यदि उसका पिता सुल्तान द्वारा प्रदान किये हुये खिलअतो में से एक मोती भी उसके पास भेज देता तो उसका जीवन-निर्वाह हो जाता। ईश्वर हम लोगों को ऐसी स्थिति से सुरक्षित रखें।

अमीर सैफ़ुद्दीन ग़द्दा इब्न (पुत्र) हिबत उल्लाह इब्न (पुत्र) मुहन्ना, अरब तथा शाम के अमीर को सुल्तान का दान--

(२७१) जब यह अमीर सुल्तान से भेंट करने आया तो उसने उसका बडी उदारता से स्वागत किया और उसे देहली नगर के भीतर सुल्तान जलालुद्दीन के महल में ठहराया। यह महल "कूश्के लाल" कहलाता है। इसका अर्थ है "लाल महल"। यह एक विशाल भवन है और इसका प्रागरण अत्यन्त विशाल है। इसके दालान भी बहुत बडे बडे हैं। दालान के सिरे पर एक गुम्बद है जो प्रागण तथा एक अन्य प्रागण के सामने है। इसी से होकर प्रासाद में प्रविष्ट होते हैं। जब लोग दूसरे प्रागण में गेंद खेलते थे, तो सुल्तान जलालुद्दीन इसी गुम्बद में बैठ कर देखा करता था। जब अमीर सैफुद्दीन उस महल में निवास करने लगा तो मैं वहाँ गया। मैंने देखा कि वहाँ बैठने के सामान, बिछौने, कालीन, फर्श आदि भरे पडे थे किन्तु सब सामान फट चुका था और नष्ट हो गया था क्योंकि हिन्दुस्तान की यह प्रथा है कि सुल्तान की मृत्यु के उपरान्त उसके प्रासाद को छोड देते हैं। वह उसमें जो कुछ छोड जाता (२७२) है उसे कोई नही छूता और सभी वस्तुयें वैसी ही पडी रहती हैं। उसके उत्तराधिकारी अपने लिये दूसरा भवन बनवा लेते हैं। मैंने उसमें पहुँच कर उसका भली भाँति निरीक्षण किया और महल के ऊपर तक चढ़ गया। वह बडी ही शिक्षाप्रद दशा में था और मेरे नेत्रों में अश्रु आ गये। उस समय फकीह तथा चिकित्सक जमालुद्दीन मग़रिबी गरनाता निवासी जिसका जन्म बिजाया[1] में हुआ था और जो हिन्दुस्तान में अपने पिता के साथ आकर निवास करने लगा था और जिसके इस देश में सन्तान भी हो गई थी, मेरे साथ था। जब हमने यह दृश्य देखा तो उसने यह छन्द पढा :

> "उनके सुल्तानो की दशा मिट्टी से पूछ
> कि बडे-बडे सिरो की हड्डियाँ ही रह गई होंगी।"

इसी महल में अमीर सैफुद्दीन के विवाह का भोजन हुआ। इसकी चर्चा शीघ्र ही होगी। सुल्तान को अरबो से बडा प्रेम था। वह उनको विशेष रूप से सम्मानित करता था और उनकी बडी प्रशसा करता था। जब इस अमीर ने उससे भेंट की तो उसने इसे अत्यधिक (२७३) उपहार प्रदान किये और इससे उदारता-पूर्वक व्यवहार किया। जब एक बार मानिकपुर विलाद (प्रान्त) से आज़म मलिक बायज़ीदी के उपहार प्रस्तुत किये गये तो उसने उसमें से अमार सैफुद्दीन को अच्छी नस्ल के ११ घोडे प्रदान कर दिये। एक अन्य बार उसने उसे दस घोडे सुनहरी जीन तथा लगाम सहित प्रदान किये। इन सबसे बढ कर उसने अपनी बहिन फीरोज खुन्दा का विवाह भी उससे कर दिया।

---

१ अल्जीरिया तट पर एक नगर।

सुल्तान की बहिन से अमीर सैफुद्दीन का विवाह—

जब सुल्तान ने अमीर ग़द्दा से अपनी बहिन के विवाह का आदेश दिया तो उसने मलिक फतहुल्लाह को जो शू नवीस[1] कहलाता था विवाह के समस्त प्रबन्ध तथा भोजन के प्रबन्ध के लिये नियुक्त किया। उसने मुझे आदेश दिया कि मैं भी उन दिनों में अमीर ग़द्दा के साथ रहूँ। मलिक फतहुल्लाह ने शूरके साल के उपर्युक्त दोनों बड़े प्रागणों में बड़े-बड़े पड़ाल लगवाये। (२७४) प्रत्येक में उसन बड़े-बड़े क़ुब्बे भी तैयार कराये। उनमें उत्तम प्रकार के फर्श तथा तकिये लगवाये। शम्सुद्दीन तबरेज़ी अमीरुल मुतरिबीन (गायकों का मुख्य अधिकारी) गायकों तथा गायिकाओं एव नर्तकियो को लाया। वे सब सुल्तान के दास तथा दासियाँ हैं। बावर्ची, नान-बाई, मास भूनने वाले, हलवाई, सक्के तथा पान वाले उपस्थित हो गये। पशु तथा पक्षी मारे गये और १५ दिन तक लोगों को भोजन बाँटा जाता रहा। बड़े बड़े अमीर तथा मुख्य परदेशी रात दिन उपस्थित रहते थे।

विवाह की रात्रि से दो रात्रि पूर्व ख़ातूनें (स्त्रियाँ) सुल्तान के राज भवन से इस भवन में आईं। उन्होंने उसमें सुन्दर फर्श बिछवाये तथा सामान लगवाये और उसे बड़े उत्तम प्रकार से सजाया। तत्पश्चात् उन्होंने अमीर सैफुद्दीन को बुलवाया। वह अरब, तथा परदेशी था। उसका कोई सम्बन्धी यहाँ न था। उन्होने उसे अपने मध्य में करके एक गद्दे पर बैठाया जो उस स्थान पर उसी के लिये रक्खा गया था। सुल्तान ने आदेश दिया कि उसकी सौतेली माँ अर्थात् उसके भाई मुबारक ख़ाँ की माता अमीर गद्दा की माता बने। ख़ातूनों में अन्य स्त्रियाँ उसकी (२७५) बहिनें, चाचियाँ, ख़ालायें आदि बनें जिससे वह अपने आपको अपने सम्बन्धियो के ही मध्य में समझे। जब वे भी गद्दों पर बैठ गईं तो उन्होंने उसके हाथो पैरो में मेंहदी लगाई। शेष स्त्रियाँ उसके चारों ओर खड़ी हुई नाचती गाती रहीं। तत्पश्चात् वे उस भवन में चली गईं जहाँ विवाह होने वाला था और अमीर अपने भवन में अपने मित्रों के साथ रह गया।

सुल्तान ने अपने कुछ अधिकारियों को दुलहे की टोली में और कुछ को दुलहिन की टोली में नियुक्त किया। यहाँ यह प्रथा है कि दुलहिन की टोली अपने उस घर के द्वार पर खड़ी हो जाती है जहाँ दुलहिन दुलहे को अपना मुँह दिखाती है। दुलहा अपनी टोली के साथ आता है किन्तु वे उस समय तक भीतर प्रविष्ट नहीं हो सकते जब तक वह दुलहिन की टोली पर विजय प्राप्त न कर लें। यदि वे विजय नही प्राप्त कर पाते तो उन्हें कई हज़ार दीनार देने पड़ते हैं। विवाह की साथ में अमीर के लिये एक ख़िलअत लाई गई। वह नीले रेशम की थी। उसमें इतने जवाहरात जड़े थे कि उसका रग दिखाई न देता था। यही दशा पगड़ी की भी थी। (२७६) मैं ने इससे सुन्दर ख़िलअत कही नही देखी है। मैं ने उन ख़िलअतो को भी देखा है जो सुल्तान ने विवाह के समय अपने अन्य सालों को प्रदान की थी, उदाहरणार्थ मलिकुल मुलूक (सब से बड़े मलिक) एमादुद्दीन सिमनानी के पुत्र को, मलिकुल उलमा (सब से बड़े आलिम) के पुत्र को, शेखुल इस्लाम के पुत्र को तथा सद्रे जहाँ बुख़ारी के पुत्र को जो ख़िलअतें प्रदान की गई, इससे उनकी तुलना हो ही नही सकती थी।

तत्पश्चात् अमीर सैफुद्दीन घोड़े पर सवार हुआ। उसके साथ उसके मित्र, दास आदि थे। प्रत्येक के हाथ में एक डंडा था, जिसे उसने इस अवसर के लिये तैयार कराया था। उसके लिये चमेली, नसरीन, तथा रायबेल का एक मुकुट लाया गया। उसमें इन्ही फूलो का एक परदा (सेहरा) था जिससे मुख तथा सीना ढक जाता था। अमीर से उसे अपने सिर पर पहनने के लिये कहा गया किन्तु उसने स्वीकार न किया। वह अरब का बद्दू था और वह राजसी

---

१ विवाहों का प्रबन्ध करने वाला अधिकारी।

प्रथाम्रो तथा नागरिक जीवन से अपरिचित था। मैं ने उसे बहुत समझाया। अंत में उसने (२७७) उसे धारण करना स्वीकार कर लिया। वहाँ से वह बाबुस्सर्फ, जो बाबुल हरम[1] भी कहलाता है, पहुंचा। वहाँ दुलहिन की टोली उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। अमीर ने उनके सिरों पर अपने साथियों सहित एक अरबी आक्रमण कर दिया और उन लोगों को परास्त करके उन्हें घोड़ों से उतरवा दिया। दुलहिन का दल उनका सामना न कर सका। जब सुल्तान को इसकी सूचना मिली तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ।

अमीर प्रांगण में प्रविष्ट हुआ। दुलहिन एक ऊंचे मिम्बर (मंच) पर बैठाई गई थी। वह किमखाब तथा जवाहरात से सजा था। प्रांगण में स्त्रियाँ भरी थीं। गायिकायें भिन्न-भिन्न प्रकार के बाजे लाई थी। सभी उसके सम्मान में खड़े थे। वह घोड़े पर बैठे ही बैठे मिम्बर तक चला गया। वहाँ उसने उतर कर मिम्बर की पहली सीढ़ी पर अभिवादन किया। दुलहिन खड़ी हो गई। दुलहा मिम्बर (मंच) पर पहुंच गया। दुलहिन ने उसे अपने हाथ से पान दिया। पान लेकर वह, जहाँ दुलहिन खड़ी थी, उससे एक सीढ़ी नीचे बैठ गया। अमीर के (२७८) उन साथियों पर, जो उपस्थित थे, सोने के दीनारों की वर्षा की गई। स्त्रियाँ उन्हें लूटने लगी और गायिकायें गाने लगी। द्वार के बाहर नौबत, तुरही तथा नक्कारे बज रहे थे। अमीर अपनी पत्नी का हाथ पकड़ कर मिम्बर से उतरा। वह भी उसके पीछे-पीछे चली। वह अपने घोड़े पर सवार होकर कालीन तथा फर्श पर से चला। उसके तथा उसके साथियों पर दीनार न्योछावर किये गये। दुलहिन एक डोले में बैठाई गई जिसे दास अपने कन्धों पर उठाये थे। वह महल में लाई गई। शाहजादियाँ उसके आगे आगे घोड़ों पर सवार थीं और अन्य स्त्रियाँ पैदल थीं। जब वे लोग किसी अमीर अथवा बड़े आदमी के घर के सामने से गुजरते तो वह उन पर अपनी श्रेणी के अनुसार दीनार तथा दिरहम न्योछावर करता था। इस प्रकार वे लोग अमीर के प्रासाद तक पहुंचे।

दूसरे दिन दुलहिन की ओर से उसके पति के मित्रों के पास वस्त्र तथा दीनार और दिरहम भेजे गये। सुल्तान ने प्रत्येक को एक घोड़ा जीन तथा लगाम सहित तथा सिक्कों की (२७९) थैलियाँ भेजी जिनमें से प्रत्येक में २०० दीनार से १००० दीनार तक थे। मलिक फुतहुल्लाह ने खातूनों (सम्मानित स्त्रियों) के पास विभिन्न रंगों के वस्त्र, थैलियाँ भिजवाई तथा इसी प्रकार के उपहार गायिकाओं को भी भिजवाये। हिन्दुस्तान में यह प्रथा है कि विवाह के प्रबन्धकों के अतिरिक्त गायकों को कोई कुछ नहीं देता। उस दिन एक अन्य दावत हुई और विवाह संस्कार समाप्त हो गया।

सुल्तान ने आदेश दिया कि अमीर गद्दा को मालवा, गुजरात, खम्बायत तथा नहरवाले का राज्य प्रदान कर दिया जाय। फुतहुल्लाह जिसका उल्लेख अभी हुआ है उसके राज्य में उसका नायब नियुक्त हुआ। वास्तव में सुल्तान ने उसे बहुत सम्मानित किया किन्तु वह वहशी बद्दू था और उसके महत्त्व को न समझता था। उसके स्वभाव में अरब की जो असभ्यता थी, उसके कारण विवाह के बीस दिन उपरान्त ही उसका पतन हो गया।

अमीर गद्दा का बन्दी होना—

विवाह के २० दिन पश्चात् वह सुल्तान के महल पर पहुँचा और महल में प्रविष्ट (२८०) होना चाहा। अमीरुल पर्दादारिया ने, जो द्वारपालों का मुख्य अधिकारी होता है, उसे रोक दिया किन्तु उसने उसके निषेध की ओर ध्यान न दिया और बल-पूर्वक प्रविष्ट होना चाहा। मुख्य द्वारपाल ने उसके सिर के बाल पकड़ कर उसे पीछे ढकेल दिया। उसने

[1] अन्तःपुर का द्वार।

अमीरुल पर्दादरिया के वहीं पड़ा हुआ एक डंडा इतने जोर से मारा कि उसके रक्त प्रवाहित होने लगा। जिस व्यक्ति पर प्रहार किया गया था, वह बहुत बड़ा अमीर था। उसका पिता गजनी का काजी कहलाता था और सुल्तान महमूद इब्न (पुत्र) सुबुक्तिगीन के वंश से था। सुल्तान, गजनी के क़ाजी को पिता कह कर पुकारता था और उसके पुत्र को भाई कहता था। उसने सुल्तान के पास पहुंच कर अपने वस्त्र पर रक्त दिखा कर अमीर गद्दा की शिकायत की। सुल्तान कुछ समय तक सोचता रहा और फिर कहा, "तुम्हारे अभियोग का निर्णय काजी करेगा। सुल्तान अपने किसी सेवक के अपराध को क्षमा नहीं कर सकता और वह मृत्यु-दंड का पात्र है किन्तु में धैर्य से कार्य करूंगा क्योंकि वह परदेशी है।" काजी कमालुद्दीन दरबार कक्ष में उपस्थित था। सुल्तान ने मलिक ततर को आदेश दिया (२८१) कि वह उन लोगों को काजी के पास ले जाय। ततर हाजी था और मक्के में कुछ समय तक निवास कर चुका था। उसे अरबी की अच्छी योग्यता प्राप्त थी और जब वह दोनों को लेकर काजी के पास गया तो उसने अमीर से कहा, "तुमने इसको मारा है? कहदे नहीं।" इस प्रकार उसे संकेत कर दिया कि वह अपना अपराध स्वीकार न करे किन्तु अमीर सैफुद्दीन अनभिज्ञ तथा हठी मनुष्य था। उसने कहा 'हाँ मैंने इसे मारा है।" जब उस आदमी के पिता ने, जिस पर प्रहार हुआ था, आकर समझौता कराना चाहा तो सैफुद्दीन ने स्वीकार न किया।

काजी ने आदेश दिया कि उस रात्रि में अमीर गद्दा को बन्दीगृह में डाल दिया जाय। मैं ईश्वर की शपथ खाकर कहता हूँ कि पत्नी ने न तो उसके सोने के लिये कोई बिछौना भेजा और न सुल्तान के भय से उसके कुशल समाचार मंगाये। उसके मित्र भी भयभीत हो गये और वह अपनी धन-सम्पत्ति इधर उधर करने लगे। मैंने उससे बन्दीगृह में भेंट करनी चाही किन्तु एक अमीर ने, जो मुझे मार्ग में मिला, मुझ से कहा, "तुम अवश्य न भूले होगे" और इस प्रकार मुझे उस घटना की स्मृति दिलाई जो शैख शिहाबुद्दीन इब्न (२८२) (पुत्र) शैखुल जाम से मेरे मिलने पर घटी थी और सुल्तान ने उस अपराध में मेरी हत्या करनी चाही थी। इसकी चर्चा बाद में होगी। इस पर मैं लौट आया और मैंने उससे भेंट न की। मध्याह्न के निकट अमीर गद्दा बन्दीगृह से मुक्त हुआ किन्तु सुल्तान ने उसकी ओर से मुख मोड लिया और उसे राज्य प्रदान करने का जो विचार किया था उसे उसने त्याग दिया और उसको देश से निकाल देना निश्चय कर लिया।

सुल्तान का एक बहनोई मुगीस इब्न (पुत्र) मलिकुल मुलूक नामक था। सुल्तान की बहिन उससे उसकी शिकायत किया करती थीं। अन्त में उसकी मृत्यु हो गई। उसकी दासियों ने कहा कि उसकी मृत्यु उसके पति के अत्याचार के कारण हुई है। उसके वंश में भी सन्देह था। सुल्तान ने अपने हाथ से लिखा कि पितृहीन देश से निकाल दिया जाय। उसका तात्पर्य अपने बहनोई से था। तत्पश्चात् उसने लिखा 'मूश ख्वार (चूहा खाने वाले) को देश से निकाल दो।" मूश ख्वार अर्थात् चूहा खाने वाले का तात्पर्य अमीर गद्दा से था क्योंकि मरुस्थल के अरब यरबू खाते हैं जो चूहों के समान होता है।

जब सुल्तान ने उसको देश से निकाल देने का आदेश दिया तो नकीब निरन्तर उसे निकालने के लिये आने लगे। वह अपने महल में प्रविष्ट होकर अपनी पत्नी से विदा होना (२८३) चाहता था किन्तु उन्होंने इसका अवसर भी न दिया और वह रोता हुआ उठ खड़ा हुआ। इस पर मैं सुल्तान के महल में गया और रात भर वहीं रहा। मुझ से एक अमीर ने पूछा कि "मै यहाँ रात से क्यों हू?" मैंने उससे कहा, 'मैं अमीर सैफुद्दीन की सिफारिश करने आया हूँ कि उसे बुला लिया जाय और निकाला न जाय।" उसने उत्तर दिया,

"यह हो ही नही सकता।" मैंने उत्तर दिया, 'मैं ईश्वर की शपथ खाकर कहता हू यदि मुझे सैंकडो रातो तक इसी प्रकार रहना पडा, तो भी मैं सिफारिश किये बिना सुल्तान के महल से न जाऊँगा।" सुल्तान को जब इसकी सूचना मिली तो उसने अमीर गद्दा को वापस बुलाने का आदेश दे दिया। उसे अमीर मलिक कबूला लाहौरी के साथ कर दिया। वह चार वर्ष तक उसके अधीन रहा। वह उसी के साथ सवार होता और उसी के साथ यात्रा करता था। इस बीच में वह सभ्य हो गया और उसने बहुत कुछ सीख लिया। इसके उपरान्त सुल्तान ने उसे उसका पुराना स्थान प्रदान कर दिया। उसे कुछ स्थानो की अक्ता प्रदान करदी और सेना के कुछ भाग का अधिकारी नियुक्त कर दिया। उसे उच्च स्थान प्राप्त हो गया।

सुल्तान का अपने वज़ीर की दो पुत्रियों का खुदावन्द ज़ादा क़िवामुद्दीन के दोनों पुत्रो से जो हमारे साथ दरबार में आये थे, विवाह करना—

(२८४) खुदावन्द ज़ादा के पहुचने पर सुल्तान ने उसे अत्यधिक धन-सम्पत्ति उदारतापूर्वक प्रदान की और उसे विशेष रूप से सम्मानित किया। तत्पश्चात् उसने उसके दो पुत्रो का विवाह वज़ीर ख्वाजये जहाँ की पुत्रियों से करना निश्चय कर लिया। वज़ीर उस समय बाहर गया था अत सुल्तान स्वय उसके घर पहुँचा और विवाह के समारोहो में सम्मिलित हुआ मानो वह वज़ीर की ओर से प्रबन्ध कर रहा हो। वह उस समय तक खडा रहा जब तक काज़ी-उल-कुज़्ज़ात ने सिदाक़[१] का उल्लेख न कर लिया। काज़ी, अमीर तथा शेख बैठे रहे। सुल्तान ने अपने हाथों में वस्त्र तथा थैलियाँ ले कर काज़ी तथा खुदावन्द ज़ादा के दोनों पुत्रो के सम्मुख प्रस्तुत की। अमीरो ने सुल्तान को उनके सम्मुख इस प्रकार के व्यवहार करने से रोका किन्तु उसने उन्हे बैठे रहने का आदेश दिया और अन्त में अपने स्थान पर एक बहुत बडे अमीर को नियुक्त करके वह चला गया।

सुल्तान की नम्रता तथा न्यायप्रियता की कहानी—

(२८५) एक प्रमुख हिन्दू ने इस बात का अभियोग (दावा) किया कि सुल्तान ने उसके भाई की अकारण हत्या करादी है। काज़ी के सम्मुख अभियोग पेश हुआ। सुल्तान क़ाज़ी के न्यायालय में निशस्त्र पैदल ही चला गया। उसने काज़ी के सम्मुख अभिवादन किया। उसन काज़ी को पूर्व ही से सूचना भेज दी थी कि जब वह न्यायालय में आये तो वह खडा न हो और अपना स्थान न छोडे। वह, जिस स्थान पर काज़ी बैठा था, वही पहुँच कर उसके सम्मुख खडा हो गया। काज़ी ने सुल्तान के विरुद्ध निर्णय दे दिया और कहा कि वह वादी को उसके भाई के रक्तपात के कारण सन्तुष्ट करे। सुल्तान ने उसके निर्णय का पालन किया।

इसी प्रकार की एक अन्य कहानी—

एक बार किसी मुसलमान ने सुल्तान पर कुछ धन का अभियोग किया। अभियोग काज़ी के सम्मुख पेश हुआ। काज़ी ने सुल्तान के विरुद्ध निर्णय किया। सुल्तान ने उसे धन दे दिया।

ऐसी ही एक अन्य कहानी—

(२८६) किसी मलिक के एक बालक ने सुल्तान के विरुद्ध दावा किया कि सुल्तान ने

१ महर, वह धन जिसे दुलहा, दुलहिन को अदा करने का वचन देता है अथवा तुरन्त अदा करता है। इसकी घोषणा सभी उपस्थित जनों के समक्ष की जाती है और जब तक महर का धन निश्चय नहीं हो जाता उस समय तक निकाह नहीं हो सकता।

उसे अकारण पीटा है। अभियोग काज़ी के सम्मुख पेश हुआ। काज़ी का निर्णय हुआ कि सुल्तान बालक को धन देकर सन्तुष्ट करे। यदि वह स्वीकार न करे तो बालक सुल्तान को पीटे। मैं उस दिन उपस्थित था। जब सुल्तान दरबार में वापस आया तो उस बालक को बुलवा कर उसके हाथ मे एक छडी दी और उससे कहा "मैं तुझे अपने सिर की शपथ देता हूं कि तू मुझे उसी प्रकार पीट, जिस प्रकार मैं ने तुझे पीटा था।" बालक ने छडी लेकर सुल्तान के २१ छड़ियां मारी, यहां तक कि एक बार उसके सिर से कुलाह (टोपी) भी गिर गई।

नमाज़ के विषय में उसके कड़े आदेश—

सुल्तान नमाज़ के विषय में बडी चेतावनी दिया करता था। उसने इस विषय में कडे आदेश दे रक्खे थे कि लोग जमाअत की नमाज़ (सामूहिक नमाज़) में कदापि अनुपस्थित न हो। जो लोग नमाज़ न पढते उन्हें वह कठोर दंड देता था। उसने नमाज़ न पढने पर एक दिन में (२८७) नौ मनुष्यो की हत्या करा दी। उनमें से एक गायक भी था। वह लोगों को बाज़ार में इसी बात की छान बीन करने के लिये भेजा करता था। नमाज़ के समय जो कोई भी (मुसलमान) बाज़ार में मिल जाता उसे दंड दिया जाता, यहां तक कि साईस जो, दरबार कक्ष के द्वार के सामने घोडे लिये खडे रहते थे, नमाज छोड देने पर दण्ड के भागी हो जाते थे। सुल्तान ने आदेश दे दिया था कि लोग (मुसलमान) नमाज़, वज़ू तथा इस्लाम के अन्य नियम रट लें। उनसे इस विषय पर प्रश्न किये जाते थे और जो संतोषजनक उत्तर न दे पाते थे उन्हें दण्ड भोगना पडता था। लोग एक दूसरे को यह नियम सभा भवन तथा बाज़ारों में सिखाया तथा लिखाया करते थे।

शरा (इस्लामी नियमों) के पालन करने के विषय में कठोरता—

वह इस्लामी नियमो का बडी कठोरता से पालन करता था। इसका एक उदाहरण यह है कि उसने अपने भाई मुबारक खा को आदेश दे दिया था कि वह काज़ी-उल-कुज़्ज़ात (२८८) कमालुद्दीन के साथ सभा कक्ष में एक ऊंचे गुम्मट के नीचे बैठ कर न्याय कराये। यह गुम्मट फर्श आदि से सजा रहता था। इसमें क़ाज़ी की गद्दी उसी प्रकार तकिये लगा कर तैयार कराई गई थी, जिस प्रकार सुल्तान की गद्दी थी। सुल्तान का भाई उसके दाहिने ओर बैठता था। यदि किसी बडे आदमी पर कोई दावा करता तो सुल्तान का भाई उस अमीर को बुलवा कर उसका दावा पूरा कराता।

करों तथा अन्य अनुचित कार्यों का निषेध, तथा जिन पर अत्याचार किया गया हो उनका न्याय—

७४१ हि० (१३४०-४१ ई०) में सुल्तान ने आदेश दिया कि उसके राज्य में कोई मुकूस (चुगी, व्यापार के सामान पर कर) न लिया जाय। उसने आदेश दिया कि ज़कात तथा उश्र (इस्लामी करों) के अतिरिक्त कोई कर उसकी प्रजा से वसूल न किया जाय। वह स्वय दरबार कक्ष के सामने खुले स्थान में प्रत्येक सोमवार तथा वृहस्पतिवार को अन्-नज़र फिल मज़ालिम (अन्याय तथा अत्याचारों) के विषय में छान बीन करने के लिये बैठा करता (२८९) था। उन दिनो में "अमीर हाजिब", "खास हाजिब," सैयिदुल हुज्जाब तथा शरफुल हुज्जाब के अतिरिक्त कोई भी अधिकारी उसके समक्ष न खडा होता था। जो कोई भी उसके सम्मुख कोई शिकायत पेश करना चाहता उसे कोई रोक न सकता था। सुल्तान दरबार कक्ष के चारो द्वारों पर चार अमीरो (अधिकारियों) को बैठा देता था जो लिखित शिकायत प्राप्त किया करते थे। चौथा अमीर (अधिकारी) उसके चाचा का पुत्र मलिक फीरोज़ था।

यदि पहले द्वार का अमीर (अधिकारी) शिकायत का प्रार्थना पत्र ले लेता तो कोई बात न थी। यदि वह न लेता तो प्रार्थना पत्र देने वाला दूसरे द्वार पर जाता और यदि वहाँ भी वह प्रार्थना-पत्र न लिया जाता तो वह तीसरे और चौथे द्वार पर क्रम से अपना प्रार्थना-पत्र ले जाता। यदि चारों द्वारों पर उसके प्रार्थना-पत्र न लिये जाते तो वह सद्रे जहाँ काजी-उल-ममालीक (राज्य का मुख्य न्यायधीश) के पास अपना प्रार्थना-पत्र ले जाता। यदि वह भी न लेता तो प्रार्थी सीधे सुल्तान के पास चला जाता। यदि सुल्तान को इस बात का प्रमाण मिल जाता कि वह किसी अधिकारी के पास गया और उस अधिकारी ने उसका प्रार्थना पत्र नही लिया तो वह उसको दड देता था। अन्य दिनों में जो प्रार्थना-पत्र प्राप्त होते सुल्तान उन्हे रात्रि में एशा[1] की नमाज के उपरान्त पढा करता था।

अकाल के समय भोजन का वितरण—

जब हिन्द तथा सिन्ध में अकाल पडा हुआ था और मूल्य इतना चढ गया कि एक मन[2] गेहू ६ दीनार में बिकने लगा तो सुल्तान ने आदेश दे दिया कि देहली के प्रत्येक व्यक्ति को राजकीय गोदामों से छः मास के लिये अनाज दे दिया जाय। प्रत्येक मनुष्य के लिये डेढ रतल[3] मगरिबी प्रतिदिन के हिसाब से निश्चित हुआ। इसमें छोटे बडे, स्वतन्त्र तथा दास किसी में कोई भेद भाव नही किया गया। फकीहो तथा काजियो ने प्रत्येक मुहल्ले की जन गणना की पजिकाय तैयार कराईं। वे प्रत्येक मनुष्य की उपस्थिति लिखते थे और उसे छः महीने का अनाज दिया जाता था।

सुल्तान द्वारा घोर रक्तपात तथा उसके घृणित कार्य—

इतनी नम्रता, न्यायप्रियता, दया, अत्यधिक दान के बावजूद, जिसका उल्लेख किया गया, सुल्तान रक्तपात में बडा निष्ठुर था। उसके महल के द्वार पर कोई समय ऐसा बहुत (२९१) कम होता था जब किसी ऐसे मनुष्य का शव पडा हुआ न मिले, जिसकी हत्या की गई थी। मैं देखा करता था कि उसके महल के द्वार पर बहुत से लोगो की हत्या होती रहती थी और उनका शव पडा रहता था। एक दिन मैं घोडे से आ रहा था। मेरा घोडा भडक गया। मैंने भूमि पर एक सफेद ढेर देखा। मैंने लोगो से पूछा, "यह क्या है ?" मेरे एक साथी ने बताया "यह एक आदमी का धड है जिसे काटकर तीन टुकडे कर दिया गया है" वह छोटे बडे अपराधो पर बिना किसी बात पर ध्यान दिये दड देता रहता था। वह किसी के ज्ञान, पवित्रता तथा श्रेणी पर कोई ध्यान न देता था। नित्य सैंकडो लोग जजीरो में जकड, कर उसके सभा कक्ष में लाये जाते थे। जिन लोगों को मृत्यु दड का आदेश होता था उन्हे मृत्यु-दड मिलता। जिन्हे दारुण कष्ट पहुँचाने का आदेश होता उन्हें वह दड मिलता और जिनके लिये पीटे जाने का आदेश होता उन्हे पीटा जाता। उसने यह नियम बना दिया था कि सभी बन्दियों को नित्य बन्दीगृह से लाया जाय। केवल वे शुक्रवार को नही लाये जाते थे। उस दिन वे विश्राम तथा स्नान आदि करते थे। ईश्वर कष्टों से हमारी रक्षा करे।

अपने भाई की हत्या—

(२९२) सुल्तान का एक सौतेला भाई मसऊद खाँ था। उसकी माता सुल्तान अलाउद्दीन

---

१ सोने से पूर्व की रात्रि की नमाज।

२ उस समय आधुनिक १४ सेर के लगभग होता है।

३ आधुनिक तोल के हिसाब से लगभग १२ छटाँक।

की पुत्री थी। मसऊद के समान रूपवान व्यक्ति मैंने ससार भर में कही नही देखा। सुल्तान को सदेह हो गया कि वह विद्रोह करना चाहता है। उससे इस विषय पर पूछताछ की गई। मसऊद ने दारुण कष्ट भोगने के भय से यह अपराध स्वीकार कर लिया क्योंकि जो कोई भी इस प्रकार के अपराध, जो सुल्तान उसके विरुद्ध लगाता है, स्वीकार नही करता तो उसे दारुण कष्ट पहुँचा कर अपराध स्वीकार कराया जाता है। लोग मृत्यु को इस कष्ट से कही अधिक अच्छा समझते हैं। सुल्तान ने आदेश दिया कि बाजार के मध्य में उसका सिर काट डाला जाय। नियमानुसार उसका शव तीन दिन तक वहीं पडा रहा। दो वर्ष पूर्व उसकी माता की भी उसी स्थान पर पत्थर मार मार कर हत्या कराई गई थी। उसने व्यभिचार का अपराध स्वीकार कर लिया था। क़ाज़ी कमालुद्दीन ने पत्थर मार मार कर उसकी हत्या करने का आदेश दिया था।

उसके आदेशानुसार ३५० मनुष्यों की एक साथ हत्या—

(२६३) एक बार सुल्तान ने मलिक यूसुफ बुग़रा के अधीन एक सेना देहली की सीमा पर स्थित एक पहाडी के कुछ हिन्दुओं के विरुद्ध युद्ध करने के लिये भेजी। यूसुफ ने सेना के बहुत बडे भाग के साथ प्रस्थान किया, किन्तु कुछ सैनिक उसके साथ न गये। यूसुफ ने उनके विषय में सुल्तान को लिख दिया। सुल्तान ने आदेश दिया कि नगर में तलाशी ली जाय और उन सैनिको में से जो भी मिल जाय उसे बन्दी बना लिया जाय। उनमें से ३५० सैनिक बन्दी बना लिये गये। उसने आदेश दिया कि सब की हत्या कर दी जाय। तदनुसार सब की हत्या कर दी गई।

शेख शिहाबुद्दीन को दारुण कष्ट पहुँचाया जाना तथा उसकी हत्या—

शेख शिहाबुद्दीन इब्न (पुत्र) शेखुल जाम खुरासानी, जिसके पूर्वजों के नाम पर खुरासान के जाम[1] नगर का नाम है और जिसकी चर्चा हो चुकी है, बहुत बडा शेख और बडा ही (२६४) प्रतिष्ठित तथा पवित्र जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति था। वह चौदह-चौदह दिन तक निरंतर रोज़ा रक्खा करता था। दोनो पिछले सुल्तान अर्थात् कुतुबुद्दीन एव तुगलुक उसका बडा आदर सम्मान किया करते थे और उसका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये उसके दर्शनार्थ जाया करते थे। सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक ने सिंहासनारूढ होने के पश्चात् उसे राज सेवा प्रदान करनी चाही। उसका यह नियम था कि वह फक़ीहो, शेखों (सूफियों) तथा अन्य पूज्य व्यक्तियो को राज सेवाओ पर नियुक्त किया करता था। इसका यह कारण था कि इस्लाम के आलिमो तथा पूज्य व्यक्तियों के अतिरिक्त कोई भी सरकारी पद न प्राप्त कर सकता था किन्तु शेख शिहाबुद्दीन ने कोई भी पद ग्रहण करना स्वीकार न किया। सुल्तान ने स्वय दरबार में उससे पद स्वीकार करने के लिये आग्रह किया किन्तु शेख निरन्तर निषेध करता रहा और आपत्तियाँ प्रकट करता रहा। सुल्तान को बडा क्रोध आया। उसने पूज्य फक़ीह शेख ज़ियाउद्दीन सिमनानी को आदेश दिया कि इसकी दाढी नोच लो।" ज़ियाउद्दीन ने यह बात स्वीकार न की और कहा, "मैं यह नहीं कर सकता।" इस पर सुल्तान ने आदेश दिया कि "दोनों की दाढियाँ नोची जाय।" उसके आदेश का पालन किया गया। ज़ियाउद्दीन को तिलग निर्वासित कर दिया गया। कुछ समय उपरान्त वह वारगल का क़ाज़ी (२६५) नियुक्त कर दिया गया। वही उसका निधन हो गया। शिहाबुद्दीन को दौलताबाद निर्वासित कर दिया गया। वह वहाँ सात वर्ष तक निवास करता रहा। सात वर्ष उपरान्त सुल्तान ने उसे बुलवाया और बडे आदर भाव से उसका स्वागत किया और उसे दीवाने

[1] हिरात तथा मशहद के मध्य में एक नगर।

मुसतखरज—दीवाने बक़ाया उल उम्माल—का अधिकारी नियुक्त किया अर्थात् उसे उस विभाग का अधिकारी नियुक्त किया जो आमिलो के बकाये को वसूल करता था और उनसे कठोरता तथा दारुण कष्ट द्वारा जो कुछ उन पर शेष होता वह प्राप्त किया करता था। वह उसका अत्यधिक आदर सम्मान किया करता था और अमीरो को आदेश दे रक्खा था कि वे उसके सम्मुख अभिवादन किया करें और उसके परामर्श से कार्य किया करें। सुल्तान की व्यक्तिगत सेवाओं से सम्बन्धित उससे बडा कोई अन्य अधिकारी न था। जब सुल्तान ने अपनी राजधानी गगा तट पर बनवा ली और वहाँ सुर्ग द्वार (स्वर्ग द्वारी) नामक राजप्रासाद का निर्माण कराया (स्वर्ग द्वारी का अर्थ था 'स्वर्ग के समान'[1]) तो शेख शिहाबुद्दीन ने राजधानी ही में रुक जाने की अनुमति चाही। सुल्तान ने उसे अनुमति प्रदान कर दी और उसे देहली से छ मील दूर पर एक ऊसर स्थान प्रदान कर दिया। वहाँ उसने एक विशाल गुहा तैयार कराई। उसके भीतर उसने कमरे, अनाज की कोठरियाँ, रसोई घर, स्नान आदि के स्थान बनवाये। उसने यमुना नदी से एक नहर निकाली और वहाँ (२९६) कृषि करवाने लगा। अकाल के कारण उसने अपार धन-सम्पत्ति एकत्र करली। वह वहाँ ढाई वर्ष तक सुल्तान की अनुपस्थिति में निवास करता रहा। उसके दास दिन में कृषि करते थे और रात्रि में गुहा में घुस जाते थे और काफिर डाकुओं के भय से गुहा बन्द कर लेते थे, क्योंकि वह स्थान उस ओर के अगम्य पर्वतो के मध्य में स्थित था।

जब सुल्तान वापस हुआ तो शेख ने वहाँ से निकल कर सात मील आगे बढ कर उसका स्वागत किया। सुल्तान ने उसको सम्मानित किया और उससे मिल कर उसे आलिंगन किया। शेख अपनी गुहा को लौट गया। कुछ दिन पश्चात् सुल्तान ने उसे बुलवाया किन्तु वह न आया। सुल्तान ने एक शाही दूत मुखलिसुलमुल्क नजरबारी (नन्द्रबारी[2]) को भेजा जो बहुत बडा मलिक था। उसने पहले तो उसे समझाया और फिर उसे सुल्तान की कठोरता याद दिला कर चेतावनी दी किन्तु उसने उत्तर दिया कि "मैं अत्याचारी की सेवा नहीं कर (२९७) सकता।" मुखलिसुलमुल्क ने लौट कर सुल्तान को यह सूचना पहुचा दी। सुल्तान ने शिहाबुद्दीन को बुलाने का आदेश दिया और जब वह उसे लाया तो सुल्तान ने उससे कहा "क्या तुम्ही ने मुझे अत्याचारी कहा है ?" उसने उत्तर दिया "हाँ, तुम अत्याचारी हो और अमुक कार्य तुम्हारे अत्याचार के उदाहरण हैं।" उसने बहुत से कार्य गिनाये जिनमें देहली नगर का नष्ट किया जाना, वहाँ के निवासियो का निर्वास आदि सम्मिलित थे। सुल्तान ने इस पर अपनी तलवार निकाल ली और उसे सद्रे जहाँ को देकर कहा, "मुझे अत्याचारी सिद्ध करदो और इस तलवार द्वारा मेरा सिर काट डालो।" शिहाबुद्दीन ने उत्तर दिया, 'जो कोई भी साक्षी होगा उसकी हत्या कर दी जायगी किन्तु तेरा हृदय भली भाँति जानता है कि तू अत्याचारी है।"

सुल्तान ने आदेश दिया कि शेख को मलिक नुकबिया को सौंप दिया जाय जो दावेदारिया[3] का अध्यक्ष था। उसने उसके पैरो में चार शृङ्खलायें डाल दी और हाथो में हथकडियाँ डाल दी। वह इसी दशा में १४ दिन तक पडा रहा और अन्न जल त्याग दिया। (२९८) वह इस बीच में नित सभा कक्ष में लाया जाता और फकीह तथा शेख एकत्र होकर

१ यह अर्थ इब्ने बत्तूता ने ही लिखा है। सम्भव है उसके समकालीन इस शब्द का यही अर्थ समझते हों।

२ तापती पर खानदेश का एक बड़ा कस्बा।

३ शाही लेखन सामग्री का मुख्य प्रबन्धक

उसे समझाते कि अपना अभियोग वापस ले लो। वह उत्तर देता, "मैं वापस न लूगा और मैं शहीदों में सम्मिलित होना चाहता हूँ।" चौदहवें दिन सुल्तान ने मुखलिसुलमुल्क के हाथ उसे भोजन भिजवाया। उसने भोजन करना स्वीकार न किया और कहा "मेरा इस पृथ्वी का भोजन समाप्त हो चुका है। अपना भोजन सुल्तान के पास लौटा ले जाओ।" जब सुल्तान को इसकी सूचना मिली तो उसने आदेश दिया कि शेख को ५ इस्तार[1] मनुष्य का मल खिलाया जाय, अर्थात् २½ रत्ल मग़रिब (मराको) के। इस कार्य के लिये काफिर हिन्दू नियुक्त होते थे। सुल्तान के आदेशानुसार उन्होंने शेख को चित लिटा दिया और उसका मुह सडसी से खोल कर, मल को पानी में मिला कर उसे पिलाया। दूसरे दिन उसे काज़ी सद्रे जहाँ के भवन पर भेजा गया। वहाँ फ़क़ीह, शेख तथा मुख्य परदेशी एकत्र किये गये। उन्होंने उसे बहुत बुरा भला कहा और उससे अपना दावा लौटा लेने के विषय में बड़ा आग्रह किया। जब उसने स्वीकार न किया तो उसकी हत्या करा दी गई (परमेश्वर उस पर दया करे)।

फ़क़ीह मुदर्रिस[2] अफीफुद्दीन काशानी[3] तथा दो अन्य फ़क़ीहों की हत्या—

(२९९) अकाल के समय सुल्तान ने राजधानी के बाहर कुए खोदने तथा अनाज बोने का आदेश दिया था। उसने इस कार्य के लिये लोगो को अपनी ओर से बीज तथा व्यय हेतु धन प्रदान किया। उसका आदेश था कि कृषि अनाज के शाही भडार को सम्पन्न बनाने के लिये की जाय। जब फकीह अफीफुद्दीन को यह ज्ञात हुआ तो उसने कहा "इस प्रकार की कृषि से कोई लाभ न होगा। किसी ने सुल्तान तक यह बात पहुचा दी। सुल्तान ने उसे बन्दी करके कहा "तुम राज्य के कार्य में क्यो हस्तक्षेप करते हो।" कुछ समय पश्चात् उसने उस मुक्त कर दिया। जब वह अपने घर जा रहा था तो मार्ग में उसे दो फ़क़ीह मिले जो उसके मित्र थे। उन्होंने कहा, "ईश्वर को धन्य है कि तू मुक्त हो गया।" फकीह ने उत्तर दिया, "ईश्वर को धन्य है कि उसने अत्याचारी से मुझे छुड़ा दिया।"[4] तत्पश्चात् वे अपने अपने घरों को चल दिये। वे तीनों अपने घर पहुँच भी न पाये थे कि सुल्तान तक सब हाल (१००) पहुच गया। सुल्तान ने आदेश दिया कि वे तुरन्त बुलाये जाय और वे तीनों सुल्तान के सम्मुख लाये गए। उसने कहा, 'इस आदमी (अफीफुद्दीन) को ले जाओ और इसके शरीर के सिर के बीच से दो भाग करदो। दोनों अन्य (फकीहो) के सिर काट डालो।" उन दोनों ने कहा, "जहाँ तक इसका (अफ़ीफुद्दीन का) सम्बन्ध है वह अपने शब्दो के लिये दड का पात्र है, किन्तु हम लोगो की हत्या किस अपराध में की जा रही है?" सुल्तान ने उत्तर दिया, "तुमने उसकी बात सुन कर कोई आपत्ति प्रकट नही की अत तुम लोग भी उसके सहयोगी हो।" अत उन दोनों की भी हत्या करदी गई। भगवान् उन पर दया करे।

सिन्ध के दो अन्य फकीहों की हत्या जो उसकी सेवा में थे—

सिन्ध के इन दो फकीहों को सुल्तान ने एक अमीर के साथ, जो किसी प्रान्त का आमिल नियुक्त हुआ था, जाने का आदेश दिया और उनसे कहा, "मैंने उस प्रान्त तथा वहाँ की प्रजा के कार्य का उत्तरदायी तुम्हें बनाया है। यह अमीर तुम्हारे साथ रहेगा और तुम्हारे आदेशों

---

१ एक इस्तार लगभग आधुनिक १ तोले १० माशे अथवा दो तोले के बराबर होता था।

२ गुरू।

३ ट्रान्सऑक्सियाना में एक नगर।

४ वास्तव में फकीह ने कुरान के एक वाक्य का उल्लेख किया था।

ताजुल आरेफ़ीन के पुत्रों का बन्दी बनाया जाना तथा उसकी संतान का वध—

पूज्य शेख शम्सुद्दीन इब्न (पुत्र) ताजुल आरेफीन कोवेल[१] में निवास करते थे। वे केवल ईश्वर की उपासना में तल्लीन रहते थे और बडा उत्कृष्ट जीवन व्यतीत करते थे। जब सुल्तान कोवेल पहुचा तो उसने शेख को बुलवाया किन्तु शेख उससे भेंट करने नहीं आये। सुल्तान उनके दर्शनार्थ गया किन्तु जब वह उनके घर के निकट पहुँचा तो उसने अपने विचार बदल दिये और शेख के दर्शन न किये।

इसके पश्चात् किसी प्रान्त के अमीर ने विद्रोह कर दिया। वहाँ की प्रजा ने उसकी बैग्रत[२] करली। सुल्तान को यह सूचना मिली कि शेख शम्सुद्दीन की सभा में उस अमीर की चर्चा हुई थी। शेख ने उसकी प्रशसा भी की थी और उसे बादशाही के योग्य भी (३०८) बताया था। इस पर सुल्तान ने एक अमीर को शेख के पास भेजा। उसने उनको तथा उनके पुत्रों को जजीर में बाध लिया। कोवेल के काजी तथा मुहतसिब को भी बन्दी बना लिया गया, क्योंकि कहा जाता था कि वे लोग भी उस सभा में उपस्थित थे, जिसमें विद्रोही अमीर की प्रशसा की गई थी। काजी तथा मुहतसिब अन्धे बना दिये गये और सभी बन्दीगृह में डाल दिये गये। शेख का बन्दीगृह में ही निधन हो गया। काजी तथा मुहतसिब एक द्वारपाल के साथ निकल कर भिक्षा मांगते थे और फिर बन्दीगृह में पहुँचा दिये जाते थे।

सुल्तान को सूचना मिली थी कि शेख के पुत्रो की हिन्दू काफिरों तथा विद्रोहियों से बडी घनिष्ठता थी। उनके पिता के निधन के पश्चात् सुल्तान ने उन्हें बन्दीगृह से मुक्त कर दिया और कहा, "फिर ऐसा न करना।" उन्होने कहा, "हमने किया क्या था?" सुल्तान को इस बात पर इतना क्रोध आया कि उसने आदेश दिया कि "इन सब की हत्या कर दी जाय।" और उन सब की हत्या करदी गई। फिर उस काजी को जिसका उल्लेख हो चुका है, बुलवाया और उससे कहा, "उन लोगों के नाम बताओ जो इन लोगो से जिनकी हत्या करादी (३०९) गई है, सहमत थे और जो उनके सहायक थे। क़ाज़ी ने बहुत से लोगो के नाम बताये जो कस्बे के बडे बड़े आदमी थे। जब उसकी बताई हुई सूची सुल्तान के सम्मुख प्रस्तुत की गई तो उसने कहा, 'यह आदमी तो पूरे कस्बे को उजाडना चाहता है। इसका सिर काट डाला जाय।" इस प्रकार उसकी हत्या करदी गई। भगवान् उस पर दया करे।

शेख हैदरी की हत्या—

शेख अली हैदरी हिन्दुस्तान के समुद्र तट पर खम्बायत में निवास करता था। वह बडा ही गुणवान् व्यक्ति था और उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैली थी। समुद्र के व्यापारी उसके नाम की मनौती माना करते थे और वहाँ पहुच कर सबसे पहले उसके सम्मुख अभिवादन करते थे। वह गोप्य भेदों को भी बता दिया करता था। जब कभी कोई मनौती मानता और फिर वह उसे पूरी न करना चाहता तो जब कभी वह शेख के सम्मुख अभिवादन करने आता वह उसकी मनौती के विषय में तुरन्त बता देता और उसको आदेश देता कि (३१०) वह अपनी मनौती पूरी करे। यह बात अनेक बार हुई और वह उसके लिये प्रसिद्ध हो गया।

जब उस प्रदेश में काजी जलालुद्दीन अफगानी तथा उसके कबीले वालो ने विद्रोह कर

---

१ कोल, अलीगढ।

२ अधीनता स्वीकार करली।

दिया तो सुल्तान को ज्ञात हुआ कि शेख हैदरी ने काजी जलाल के लिये शुभ कामना की थी और उसे अपने सिर की टोपी प्रदान की थी। यह भी ज्ञात हुआ कि काजी जलाल के हाथ पर शेख ने बैग्रत की थी। जब सुल्तान स्वयं उससे युद्ध करने गया और काजी जलाल परास्त हुआ तो उसने शरफुलमुल्क अमीर बख्त को, जो हमारे साथ सुल्तान के दरबार में उपस्थित हुआ था, खम्बायत में छोडा और आदेश दिया कि कुल विद्रोहियो की खोज की जाय। उसके साथ कुछ फकीह भी नियुक्त किये और उनको आदेश दिया कि वह उनके फतवो के अनुसार आचरण करता रहे। शेख हैदरी भी उसके सम्मुख लाया गया और यह प्रमाणित हो गया कि उसने विद्रोही को अपने सिर की टोपी दी थी और उसके लिये शुभ कामना भी की थी। उन्होने उसकी हत्या का निर्णय दे दिया किन्तु जब जल्लाद ने उसके तलवार मारी तो उसका कुछ प्रभाव न हुआ। जो लोग वहाँ उपस्थित थे, उन्हे बडा आश्चर्य हुआ (३११) और उन्होने सोचा कि उसे अब क्षमा कर दिया जायगा, किन्तु अमीर ने दूसरे जल्लाद को उसका सिर काटने का आदेश दिया और उसने सिर काट डाला। ईश्वर उस पर दया करे।

तुगान तथा उसके भाई की हत्या—

तुगान अल फर्गानी तथा उसका भाई फर्गाना नगर के निवासी थे। वे जब सुल्तान के दरबार में पहुँचे तो उनका बडी उदारता से स्वागत हुआ और उन्हे अत्यधिक (उपहार) प्रदान किये गये। वे बहुत समय तक दरबार मे रहे किन्तु जब बहुत दिन हो गये तो उन्होने अपने देश को वापस जाना चाहा और भाग जाने की योजनायें बनाने लगे। उनके एक साथी ने सुल्तान को इसकी सूचना देदी। सुल्तान ने उनके दो टुकडे करने का आदेश दे दिया और उसके आदेशो का पालन किया गया। जिस व्यक्ति ने सूचना पहुँचाई थी उसे उन लोगो की धन-सम्पत्ति प्रदान कर दी गई। इस देश की यही प्रथा है कि जब कोई किसी व्यक्ति पर किसी प्रकार का आरोप लगाता है और वह सिद्ध हो जाता है और उस मनुष्य की हत्या हो जाती है तो उस व्यक्ति की धन-सम्पत्ति उसे ही मिल जाती है।

मलेकुत्तुज्जार के पुत्रों की हत्या—

(३१२) मलेकुत्तुज्जार का पुत्र तरुण था। अभी उसके कपोलो पर रोम भी न जमे थे। जब ऐनुलमुल्क ने विद्रोह कर दिया जिसका सविस्तार उल्लेख आगे किया जायगा, तो मलेकुत्तुज्जार का पुत्र उसके अधिकार में था। उसने उसे भी अपने साथ ले लिया। जब ऐनुलमुल्क पराजित हुआ और वह तथा उसके मित्र बन्दी बना कर लाये गये तो उनमें मलेकुत्तुज्जार का पुत्र तथा उसका बहनोई कुतुबुलमुल्क का पुत्र भी थे। सुल्तान ने आदेश दिया कि उनके हाथ लकडी पर बांध कर उनको लटका दिया जाय। मलिको के पुत्रो को आदेश दिया कि वे उन पर वाणो की वर्षा करें। इस प्रकार उनकी मृत्यु हो गई।

उनकी मृत्यु के उपरान्त ख्वाजा अमीर अली तबरेजी हाजिब ने काजी-उल-कुज्जात कमालुद्दीन से कहा कि "इस तरुण की हत्या न करानी चाहिये थी।" जब सुल्तान को इस बात की सूचना मिली तो उसने उसे बुला कर कहा, "तूने उसकी मृत्यु के पूर्व यह बात क्यो न कही थी?" उसने आदेश दिया कि उसके २०० कोडे लगवाये जायें और उस बन्दीगृह में डाल दिया जाय। उसकी समस्त धन-सम्पत्ति जल्लादो के अमीर को दे दी गई। मैंने दूसरे दिन देखा (३१३) कि वह अमीर अली तबरेजी के वस्त्र धारण किये और उसकी कुलाह अपने शीश पर पहने उसके घोडे पर सवार होकर कहीं जा रहा था। मैं दूर से समझा कि वह अमीर अली तबरेजी है।

उसने बहाउद्दीन से कहा "इस समय जो दशा है वह तुम स्वय देख रहे हो। मैंने अपने तथा अपने परिवार एव अपने अन्य साथियो सहित नष्ट हो जाने का सकल्प कर लिया है। तुम अमुक राजा के पास चले जाओ। वह तुम्हारी रक्षा करेगा।" उसने उसे अपने एक अधिकारी के साथ उस राजा के पास भेज दिया। तत्पश्चात् राय कम्पिला ने एक विराट अग्नि प्रज्वलित कराई और अपनी समस्त धन सम्पत्ति उसमें डाल दी और अपनी स्त्रियो तथा पुत्रियो से कहा, 'मैंने अपने आपको नष्ट कर देने का सकल्प कर लिया है। जो मेरा साथ देना चाहे वह दे सकता है।" उनमें से प्रत्येक स्त्री स्नान करके चन्दन मल-मल कर आती थी और उस (३२०) के सम्मुख भूमि चुम्बन करती और अपने आपको अग्नि में डाल देती थी। इस प्रकार उनमें से प्रत्येक जल कर मर गई। उसके अमीरो वजीरो तथा अन्य अधिकारियो की स्त्रियो ने भी यही किया। अन्य स्त्रियाँ भी इसी प्रकार जल कर मर गईं। तत्पश्चात् राजा ने भी स्नान किया चन्दन मला और ढाल के अतिरिक्त सभी हथियार लगाये। इसी प्रकार अन्य लोगो ने भी, जो उसके साथ प्राण त्यागना चाहते थे, हथियार लगाये। वे सबके सब सुल्तान की सेना पर टूट पडे और सभी युद्ध के उपरान्त मृत्यु को प्राप्त हो गये। सुल्तान की सेना नगर में प्रविष्ट हो गई। वहाँ के निवासी बन्दी बना लिये गये। राय कम्पिला के ग्यारह पुत्र भी पकडे गये। वे सुल्तान के सम्मुख प्रस्तुत किये गये। सबने इस्लाम स्वीकार कर लिया। सुल्तान ने उनके पिता की वीरता तथा उच्च वश के कारण उन्हे अमीर नियुक्त कर दिया। मैंने उनमें से तीन को देखा है। एक नस्र, दूसरा बख्तियार और तीसरा मुहरदार कहलाता था। उसके पास सुल्तान की मुहर रहती थी और सुल्तान के प्रत्येक खाने पीने की चीज पर लगाई जाती थी। उसकी कुन्नियत (पुत्र अथवा पिता के नाम पर नाम) अबू मुस्लिम थी। हम दोनो एक दूसरे के घनिष्ठ मित्र हो गये थे[1]।

(३२१) राय कम्पिला की हत्या के उपरान्त शाही सेना उस काफिर के राज्य की ओर चल पडी जहाँ बहाउद्दीन ने शरण ली थी और उसे घेर लिया। इस राजा ने कहा, "जो राय कम्पिला ने किया, वह मैं नही कर सकता। उसने बहाउद्दीन को बन्दी बना कर शाही सेना को दे दिया। उन्होने उसके बेडियाँ और हथकडियाँ डाल कर सुल्तान के पास भेज दिया। जब वह सुल्तान के सम्मुख प्रस्तुत हुआ तो उसने आदेश दिया कि उसे अत पुर में उसकी सम्बन्धी स्त्रियो के पास भेज दिया जाय। वहाँ उन लोगो ने उसे गालियाँ दी और उसके मुह पर थूका। फिर सुल्तान ने आदेश दिया कि जीवित ही उसकी खाल खीच ली जाय। जब उसकी खाल खीच ली गई तो उसका मांस चावल में पकवा कर उसकी पत्नियो तथा पुत्रो के पास भिजवाया गया। शेष को एक थाल में रख कर एक हथिनी के सम्मुख खाने के लिये रक्खा गया किन्तु उसने न खाया। सुल्तान के आदेशानुसार उसकी खाल में भूसा भरवाया गया और उस राज्य के भिन्न भिन्न भागो में बहादुर बूरा की खाल के साथ साथ घुमाया गया।

जब खालें सिन्ध में पहुची, तो उस समय वहाँ का मुख्य अमीर किशलू खाँ सुल्तान (३२२) तुगलुक का सहचर था। उसने सुल्तान तुगलुक को राज्य प्राप्त करने में सहायता दी थी। सुल्तान मुहम्मद उसका बडा आदर सम्मान करता था और उसे चाचा कहा करता था। जब वह अपने राज्य से देहली आता तो वह उसके स्वागतार्थ उससे मिलने देहली के बाहर जाया करता था। किशलू खाँ ने आदेश दिया कि दोनों खालें दफन कर दी जायें। जब सुल्तान

१ इस विद्रोह को शान्त करने में जिस प्रकार सुल्तान ने युद्ध किया उसका उल्लेख फिरिश्ता ने सविस्तार किया है। बरनी ने इसकी चर्चा नहीं की है। तारीखे मुबारक शाही के अनुसार यह विद्रोह ७२७ हि० (१३२७ ई०) में हुआ।

को यह ज्ञात हुआ तो वह बडा खिन्न हुआ और उसने उसकी हत्या करने का सकल्प कर लिया।

किशलू खाँ का विद्रोह तथा उसकी हत्या—

जब किशलू खाँ के दोनो खालों के दफन करा देने का समाचार सुल्तान को ज्ञात हुआ तो उसने उसे बुलवाया। किशलू खाँ समझ गया कि सुल्तान उसको दड देना चाहता है। उसने जाने से मना किया और विद्रोह कर दिया। लोगो को धन प्रदान करना तथा सेनायें एकत्र करना प्रारम्भ कर दिया। तुर्क, अफगान तथा खुरासानी भर्ती किये। उसने इतनी बडी सेना एकत्र करली कि उसकी सेना बादशाही सेना के समान अपितु उससे बढ कर हो गई। सुल्तान ने स्वय उससे युद्ध करने के लिये प्रस्थान किया। मुल्तान से दो दिन की यात्रा की दूरी पर (३२३) अबूहर के मैदान मे युद्ध हुआ। युद्ध के समय सुल्तान ने एक चाल चली। उसने चत्र के नीचे मुल्तान के शेख रुक्नुद्दीन के भाई शेख एमादुद्दीन को रख दिया। मुझे यह हाल शेख रुक्नुद्दीन ने स्वय बताया था। इसका यह कारण था कि एमादुद्दीन तथा सुल्तान का रूप बहुत मिलता जुलता था। जब युद्ध प्रचण्ड हुआ तो सुल्तान ४००० सैनिकों को लेकर पृथक् हो गया। किशलू खाँ के सैनिक यह समझ कर कि छत्र के नीचे सुल्तान है, छत्र पर टूट पडे और उन्होने एमादुद्दीन की हत्या करदी। सेना में यह समाचार फैल गया कि सुल्तान की हत्या हो गई। इस पर किशलू खाँ के सैनिक लूट मार में लग गये और उससे पृथक् हो गये। जब उसके साथ केवल थोडे से ही सैनिक रह गये, तो सुल्तान ने अपने सैनिकों को लेकर उस पर आक्रमण कर दिया। उसकी हत्या करके उसका सिर काट डाला। जब उसकी सेना को यह बात ज्ञात हुई तो वह भाग खडी हुई। सुल्तान मुल्तान में प्रविष्ट हो गया। वहाँ के काजी करीमुद्दीन को पकडवा कर उसकी खाल खिचवा डाली। किशलू खाँ का सिर मुल्तान के द्वार पर लटकवा दिया। जब मैं मुल्तान पहुँचा था, तो वह सिर मुझे वहाँ लटका हुआ मिला था।

(३२४) सुल्तान ने एमादुद्दीन के भाई शेख रुक्नुद्दीन तथा उसके पुत्र सद्रुद्दीन को सौ गाँव इनाम में प्रदान किये जिससे वे अपना जीवन निर्वाह करें और अपने दादा शेख बहाउद्दीन जकरिया की खानकाह में यात्रियों के भोजन का प्रबन्ध कर सकें। सुल्तान ने अपने वजीर ख्वाजये जहाँ को आदेश दिया कि वह कमालपुर[१] नगर की ओर जाय। यह नगर बहुत बड़ा है और समुद्र तट पर स्थित है। यहाँ के निवासियों ने भी विद्रोह कर दिया था। एक फकीह ने मुझे बताया कि जब वजीर नगर में प्रविष्ट हुआ तो वह वहाँ उपस्थित था। शहर का काजी तथा खतीब वजीर के समक्ष लाये गये और उसने आदेश दिया कि दोनो की खाल खिचवा डाली जाय। उन्होंने कहा कि "हमारी हत्या किसी अन्य प्रकार क्यो नही करा दी जाती।" वजीर ने पूछा, "तुम्हारी हत्या क्यों कराई जाती है?" उन्होंने उत्तर दिया कि 'सुल्तान की आज्ञा के उल्लघन के कारण।" इस पर वजीर ने उनसे कहा, "फिर मैं उसकी आज्ञाओ का उल्लघन क्यों करूँ जब कि उसने आदेश दिया है कि तुम्हारी हत्या इसी प्रकार कराई जाय।" तत्पश्चात् उसने खाल खींचने वालों को आदेश दिया कि "इनके मुह के नीचे दो गड्ढे खोद दो जिससे यह सांस ले सकें।" ऐसा करने का यह कारण है कि जब लोगों (३२५) की खाल खीची जाती है (भगवान् हमारी रक्षा करे) तो लोगों को इसी प्रकार लिटाया जाता है। तत्पश्चात् सिन्ध में शान्ति हो गई और सुल्तान राजधानी को लौट गया।

१ कदाचित कराची के निकट एक ग्राम।

अमीर हलाजून ने लाहौर में विद्रोह कर दिया और स्वयं बादशाह बन बैठा। इस विद्रोह में अमीर कुलजन्द (गुलचन्द) ने जिसे उसने अपना वजीर बना लिया उसकी सहायता की। यह समाचार वजीर ख्वाजये जहाँ को प्राप्त हुये। वह उस समय देहली में था। वजीर समस्त खुरासानियो तथा उस सेना को जो उस समय देहली मे थी, एव अन्य अधिकारियो को लेकर लाहौर की ओर चल पडा। मेरे साथी भी उसके साथ गये। सुल्तान ने उसकी सहायतार्थ दो वडे अमीर भेजे। एक क़ीरान मलिक सफदार अर्थात् पक्तियो को सुव्यवस्थित रखने वाले को और दूसरे मलिक तमूर शुर्बदार अर्थात् पीने की वस्तुओं का प्रबन्ध करने वाले को। हलाजून अपनी सेना लेकर युद्ध करने के लिये निकला। एक वडी नदी के किनारे युद्ध हुआ। हलाजून पराजित हुआ। वह भाग गया। उसकी सेना का बहुत बडा भाग नदी में डूब कर नष्ट हो गया। वजीर नगर में प्रविष्ट हुआ। उसने कुछ नगरवासियों की खाल खिचवा डाली। कुछ लोगो (३३३) की अन्य प्रकार से हत्या करा दी। लोगो की हत्या कराने का कार्य मुहम्मद बिन (पुत्र) नजीब नायब वजीर ने कराया। उसको लोग अजदर मलिक (अजगर मलिक) कहते थे। वह 'सगे सुल्तान' अर्थात् 'सुल्तान का कुत्ता' के नाम से भी प्रसिद्ध था। वह बडा ही निष्ठुर तथा निर्दयी था। सुल्तान उसे असदुल असवाक (बाजार का सिंह) कहा करता था। वह प्राय: अपराधियो को अपने रक्तपायी एव निष्ठुर स्वभाव के कारण अपने दाँतो से काटा करता था। वजीर ने विद्रोहियो की लगभग तीन सौ सम्बन्धी स्त्रियाँ ग्वालियर के किले में भेज दी। उनमें से कुछ स्त्रियो को मैने वहाँ देखा था। एक फकीह की पत्नी भी इन्ही स्त्रियो के साथ ग्वालियर भेजी गई थी। वह अपनी पत्नी के पास आया जाया करता था। बन्दीगृह में उसके एक शिशु भी उत्पन्न हुआ।

शाही सेना में महामारी—

(३३४) शरीफ से युद्ध के लिये माबर जाते समय जब सुल्तान तिलग प्रदेश में पहुचा तो उसने तिलग की राजधानी बद्रकोट नगर में पडाव किया। यह स्थान माबर से तीन मास की यात्रा की दूरी पर है। इस समय सुल्तान की सेना में महामारी फैल गई। सेना का बहुत बडा भाग नष्ट हो गया। दास तथा ममलूक, सैनिक एवं अमीर मर गये। उनमें से एक मलिक दौलत शाह था जिसे सुल्तान चाचा कहा करता था। अमीर अब्दुल्लाह हरवी भी मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसका हाल प्रथम यात्रा में लिखा जा चुका है। यह वही व्यक्ति है जिसे सुल्तान ने यह आदेश दिया था कि 'राजकोष से जितना धन उठा कर ले जा सकते हो ले जाओ।' इस प्रकार वह तेरह थैलियाँ अपनी भुजाओ में बाँध कर एक बार में उठा ले गया था। जब सेना में महामारी का प्रकोप हो गया तो वह दौलताबाद लौट आया। बहुत से प्रान्तो में अराजकता फैल गई थी और दूर के भाग वाले पृथक् हो गये थे। यदि सुल्तान के (३३५) भाग्य में अन्य प्रकार से लिखा होता तो राज्य उसके हाथ से निकल जाता।

सुल्तान की मृत्यु की अफ़वाह तथा मलिक होशंज (होशंग) का भागना—

दौलताबाद लौटते समय सुल्तान रुग्ण हो गया और उसकी मृत्यु का जन-प्रवाद लोगो में दूर दूर तक प्रसारित हो गया। फलत अनेक स्थानों पर विद्रोह होने लगे। मलिक कमा-लुद्दीन गुर्ग का पुत्र मलिक होशज (होशग) दौलताबाद का अधिकारी था। उसने सुल्तान के सम्मुख प्रतिज्ञा की थी कि न तो वह उसके जीवन-काल में और न उसकी मृत्यु के उपरान्त किसी से बैअत करेगा। जब उसने सुल्तान की मृत्यु का जन-प्रवाद सुना तो वह एक काफिर राजा के पास, जिसका नाम बरबरा था, चला गया। उसका राज्य दौलताबाद तथा कूकान

(कौकन) थाना के मध्य में दुर्गम पर्वतों में था। उसके भागने का समाचार सुन कर विद्रोह के भय से सुल्तान शीघ्रातिशीघ्र दौलताबाद पहुँचा। तत्पश्चात् तुरन्त होशज (होशग) (३३६) का पीछा करके उस राज्य के नगर को घेर लिया। सुल्तान ने राजा को पत्र लिखा कि मलिक होशज (होशग) को उसके पास भेज दिया जाय। उसने स्वीकार न किया और कहला भेजा "मैने जिसे आश्रय प्रदान कर दिया है उसे कदापि नही दे सकता चाहे मेरी भी वही दशा क्यों न हो जाय जो राय कम्पिला की हुई।" होशज (होशग) ने भयभीत होकर सुल्तान से पत्र व्यवहार प्रारम्भ कर दिया और यह निश्चय हुआ कि 'सुल्तान दौलताबाद को लौट जाय और अपने गुरु कुतलू खाँ (कुतलुग खाँ) को वहाँ छोड जाय। वह कुतलू खाँ के वचन पर उसके पास चला जायगा और उसकी रक्षा का उत्तरदायित्व कुतलू पर होगा।' सुल्तान लौट गया। होशज (होशग) ने कुतलू के पास पहुच कर वचन ले लिया कि सुल्तान न तो उसकी हत्या करेगा और न उसे अपमानित करेगा। होशज (होशग) अपनी धन-सम्पत्ति, परिवार तथा सहायकों को लेकर सुल्तान के पास चला गया। सुल्तान उसके आने पर बड़ा प्रसन्न हुआ और खिलअत देकर उसने उसे सन्तुष्ट कर लिया। कुतलू खाँ (कुतलुग खाँ) अपनी बात का बडा पक्का था। लोग उस पर विश्वास करते थे और उनको उसकी बात पर बडा भरोसा था। सुल्तान उसका बडा आदर सम्मान करता था। जब कभी वह सुल्तान के पास आता तो सुल्तान स्वागतार्थ खडा हो जाता था। इसी कारण वह सुल्तान के पास बिना (३३७) बुलाये न जाता था ताकि सुल्तान को खड़े होने का कष्ट न उठाना पड़े। वह बहुत बड़ा दानी था और दरिद्रों तथा दीनों को अत्यधिक दान किया करता था।

शरीफ़ इबराहीम का विद्रोह[1] तथा इसका अन्त--

शरीफ (सैयिद) इबराहीम खरीतादार कहलाता था अर्थात् सुल्तान की लेखनी तथा कागज़ उसके पास रहते थे। वह हाँसी तथा सरसुती का वाली था। जब सुल्तान माबर की ओर गया और इस सैयिद इबराहीम के पिता शरीफ एहसन शाह ने माबर में विद्रोह कर दिया था और सुल्तान की मृत्यु की किंवदन्ती फैल गई थी तो इबराहीम को भी राज्य का लोभ हो गया। वह बडा ही रूपवान, वीर तथा दानी था। उसकी बहिन हूर नसब से मेरा (३३८) विवाह हो गया था। वह बडी पवित्र स्त्री थी। वह रात्रि में तहज्जुद[2] की नमाज तथा अल्लाह का ज़िक्र (जाप) किया करती थी। मेरी एक पुत्री उसी के गर्भ से थी। अब मुझे नहीं ज्ञात कि इन दोनो का क्या हुआ। वह पढना जानती थी किन्तु लिख न सकती थी।

जब इबराहीम ने विद्रोह करना निश्चय कर लिया तो सिन्ध का एक अमीर, जो खजाना लिये हुये देहली की ओर जा रहा था, उसके राज्य से गुज़रा। इबराहीम ने उससे कहा 'मार्ग सुरक्षित नही है और इसमें डाकुओं का भय है। कुछ दिन यहीं रुको। जब मार्ग में शान्ति हो जायगी तो मैं तुम्हे पहुचवा दूगा।" वास्तव में वह चाहता था कि सुल्तान की मृत्यु के समाचार प्रमाणित हो जाय तो वह उस धन पर अधिकार जमा ले। जब उसे ज्ञात हो गया कि सुल्तान जीवित है तो उसने अमीर को चले जाने की अनुमति देदी। उस अमीर का नाम ज़ियाउलमुल्क इब्न (पुत्र) शम्सुलमुल्क था।

राजधानी से ढाई वर्ष तक अनुपस्थित रहने के उपरान्त सुल्तान के राजधानी मे लौटने पर शरीफ़ इबराहीम दरबार में आया। उसके एक दास ने सुल्तान से उसकी चुगली

१ यह विद्रोह ७३७ हि० (१३३६ ई०) में हुआ।

२ आधी रात्रि के बाद की विशेष नमाजें।

करदी और उसकी योजना का हाल उसे बता दिया। सुल्तान उसकी तुरन्त हत्या कराना चाहता था किन्तु इबराहीम से स्नेहवश उसने उस समय उस विचार को त्याग दिया एक (३३९) बार जिबह[1] किया हुआ हिरन का एक बच्चा सुल्तान के सम्मुख लाया गया। सुल्तान उसको जिबह होते हुये देख रहा था। उसने कहा कि जिबह ठीक नहीं हुआ है। इसे फेंक दो।" इबराहीम ने उस हिरन के बच्चे को देख कर कहा "जिबह ठीक हुआ है। मैं इसे खालूगा।" सुल्तान को यह समाचार सुन कर बड़ा क्रोध आया और इस बहाने से उसने उसे बन्दी बना लिया। उसके हाथ उसकी गर्दन में बँधवा दिये गये। फिर उस पर यह दोषारोपण किया कि वह उस धन को, जो ज़ियाउलमुल्क ला रहा था, अपने अधिकार में करना चाहता था। इबराहीम समझ गया कि सुल्तान उसके पिता के विद्रोह के कारण उसकी हत्या कराना चाहता है अतः अब किसी बात से कोई लाभ नहीं हो सकता और उसे नाना प्रकार के कष्ट पहुँचाये जायगे। अतः उसने दारुण कष्ट से मृत्यु को अच्छा समझ कर अपना अपराध स्वीकार कर लिया। सुल्तान के आदेशानुसार उसके दो टुकड़े कर दिये गये।

इस देश में यह प्रथा है कि सुल्तान जिसकी हत्या कराता है उसका शव तीन दिन तक उसी स्थान पर पड़ा रहता है। तीन दिन के उपरान्त जो काफ़िर इस कार्य के लिये नियुक्त हैं, वे शव को उठा कर नगर के बाहर खाई में डाल देते हैं। वे लोग भी खाई के निकट ही निवास करते हैं जिसमें उन लोगों के, जिनकी हत्या हुई है, सम्बन्धी शव को उठा ले जायें। वे लोग घूस लेकर शव को उठा ले जाने देते हैं और उसे दफ़न कर दिया जाता है। शरीफ इबराहीम भी इसी प्रकार दफ़न हुआ। ईश्वर उस पर दया करे।

सुल्तान के नायब का तिलंग में विद्रोह—

जब सुल्तान तिलंग से लौटा और उसकी मृत्यु के समाचार फैल गये तो यह हाल ताजुलमुल्क नुसरत खाँ को भी ज्ञात हुआ। सुल्तान ने उसे तिलंग में अपना नायब नियुक्त कर दिया था। सुल्तान में और उससे बहुत समय से घनिष्ठता थी। उसने सुल्तान की मृत्यु के समाचार सुन कर शोक सम्बन्धी क्रियायें पूरी करने के पश्चात् अपने आपको बादशाह घोषित कर दिया। लोगों ने राजधानी बद्रकोट में उससे बैअत[2] करली। जब सुल्तान को इसकी सूचना मिली तो उसने अपने गुरु कुतलू खाँ (कुतलुग खाँ) को एक बहुत बड़ी सेना देकर भेजा। उसने घोर युद्ध के पश्चात्, जिसमें बहुत से लोग मारे गये, बद्रकोट को घेर लिया। इससे बद्रकोट वालों को बड़ी हानि हुई यद्यपि वहाँ तक पहुँचना बड़ा कठिन था। कुतलू खाँ (कुतलुग खाँ) ने उसमें सुरंग लगानी आरम्भ करदी किन्तु नुसरत खाँ ने उससे अपने प्राणों की रक्षा करने की याचना की। कुतलु खाँ (कुतलुग खाँ) ने रक्षा का वचन दे दिया। वह नगर के बाहर चला गया और उसने नुसरत खाँ को सुल्तान के पास भेज दिया। इस प्रकार नगर निवासी तथा नुसरत खाँ की सेना बच गई।

सुल्तान का गंगा नदी की ओर प्रस्थान तथा ऐनुल मुल्क का विद्रोह—

जब देश में दुर्भिक्ष फैल गया, सुल्तान अपनी सेना लेकर गंगा तट पर चला गया। यहाँ हिन्दू लोग यात्रा करने के लिए जाते हैं। यह देहली से दस दिन की यात्रा की दूरी पर है। सुल्तान ने लोगों को आदेश दिया कि वे लोग वहाँ अपने लिए घर बनालें। इससे पूर्व

---

१ अल्लाह का नाम लेकर जानवरों का गला काटना। यदि इसमें कुछ भूल हो जाय तो जिबह ठीक नहीं माना जाता और उसे कोई मुसलमान खा नहीं सकता।

२ अधीनता स्वीकार करली।

लोग फूंस के छप्पर बनाते थे जिनमें प्राय आग लग जाती थी और इस प्रकार लोगों को बडी हानि पहुँचती थी। इससे बचने के लिये लोगो ने भूमि के नीचे गुफायें बनानी प्रारम्भ करदी। जब कभी आग लग जाती थी तो वे उसमें अपना सामान डाल कर मिट्टी से उसे बन्द (३४२) कर देते थे। मैं भी उन्हीं दिनों में सुल्तान के शिविर में पहुचा। गगा के पश्चिमी भाग के स्थानो में घोर अकाल पडा था किन्तु पूर्व की ओर के स्थानो में अनाज की कमी न थी। पूर्वी तट के भाग का अमीर (अधिकारी) ऐनुलमुल्क इब्न (पुत्र) माहिरू था। अवध जफ़राबाद तथा मलकनो (लखनऊ) एव अन्य स्थान उसके अधिकार में थे। वह प्रत्येक दिन पचास हज़ार मन गेहू, चावल तथा चने पशुओं के चारे के लिए भेजा करता था। फिर सुल्तान ने आदेश दिया कि शिविर के हाथी, घोडे, खच्चर आदि पूर्व की ओर, जहाँ चारे की अधिकता थी, चराई क लिये भेज दिये जायें। ऐनुल मुल्क को उनकी रक्षा के लिए नियुक्त किया गया।

ऐनुलमुल्क के चार भाई थे। इनमें से तीन का नाम शहरुल्लाह, नसरुल्लाह तथा फज़लुल्लाह था। चौथे के नाम का मुझे स्मरण नही। उन्होंने अपने भाई ऐनुलमुल्क से मिल कर यह षड्यन्त्र रचा कि वे शाही हाथी तथा पशु भगा ले जायें और ऐनुलमुल्क से बैअत करके उसे बादशाह बना दें और विद्रोह कर दें। ऐनुलमुल्क रात्रि में उनके पास भाग गया, (३४३) और उनकी योजना लगभग पूर्ण हो गई।

हिन्दुस्तान के बादशाहो का यह नियम है कि प्रत्येक छोटे बडे अमीर के पास उनका कोई न कोई ममलूक (दास) होता है जो गुप्तचर का कार्य करता है और बादशाहो तक प्रत्येक बात पहुचाया करता है। इसी प्रकार बादशाहों द्वारा नियुक्त दासियाँ भी अमीरो के घरों में गुप्तचर का कार्य किया करती हैं। इस प्रकार भगिनें भी जासूसी करती हैं क्योकि वे अनुमति के बिना लोगो के घरों में आती जाती हैं। दासियाँ समस्त समाचार भगिनों को दे देती हैं। भगिनें समाचार (मलिकुल मुखबिरीन) गुप्तचरों के अधिकारियो के पास पहुँचा देती हैं और वे समस्त समाचार सुल्तान तक पहुँचा देते हैं। कहा जाता है कि एक अमीर अपनी स्त्री के पास सोया था। उसने रति-क्रिया करनी चाही। उस स्त्री ने उसे सुल्तान के सिर की शपथ देकर ऐसा करने से रोका। उस अमीर ने उसकी बात स्वीकार न की। प्रात काल सुल्तान ने उसे बुलवा कर उसको सब हाल बताया, और इस कारण उसकी हत्या करादी।

(३४४) सुल्तान का एक ममलूक (दास) इब्ने मलिक शाह था। वह ऐनुलमुल्क पर गुप्तचर नियुक्त था। जब उसने सुल्तान को ऐनुलमुल्क के भागने तथा नदी पार कर लेने की सूचना दी तो सुल्तान ने अपने किये पर घोर पश्चाताप किया और समझा कि यह उस पर बडा घातक आक्रमण हुआ, क्योकि उसके हाथी, घोडे अनाज आदि सभी ऐनुलमुल्क के पास थे और उसकी सेना इधर उधर फैली हुई थी। उसने राजधानी वापस जाना तथा सवार एकत्र करके वापस होना और युद्ध करना निश्चय किया। इस योजना के विषय में उसने अपने राज्य के मुख्य अधिकारियों से परामर्श किया। खुरासानी अमीर तथा खुरासानियों एव विदेशियो को इस विद्रोही का बडा भय था, क्योकि वह हिन्दुस्तानी था और हिन्दुस्तानी विदेशियो से इस लिये घृणा करते थे कि सुल्तान उन्हें विशेष रूप से सम्मानित किया करता था। इसी कारण से उन्होंने इस योजना का विरोध किया और कहा 'हे अखुन्द आलम! यदि आपने ऐसा किया तो उसे यह बात ज्ञात हो जायगी और वह अपनी शक्ति और भी बढ़ा लेगा। वह अन्य सेना भी एकत्र कर लेगा। उसके पास समस्त विद्रोही (३४५) तथा दुर्भावना वाले अन्य लोग इकट्ठे हो जायेंगे। अत उसकी शक्ति बढ़ने से पूर्व ही उसका विनाश कर दिया जाय तो उचित है।" 'सर्व प्रथम नासिरुद्दीन मुतहर अवहरी

ने यह बात प्रस्तुत की और सभी अमीरो ने उसका समर्थन किया।

सुल्तान ने उनकी बात स्वीकार कर ली। उसी रात्रि में निकट की सेनाओं तथा अमीरो को उपस्थित होने के लिये पत्र लिखे। वे तुरन्त चले आये। सुल्तान ने इस अवसर पर एक अन्य युक्ति का प्रदर्शन किया। यदि सौ मनुष्य आते तो सुल्तान अपने हज़ारों मनुष्यों को उनके स्वागतार्थ भेजता था और वे सब मिल कर बहुत बडी सख्या में सुल्तान के शिविर में प्रविष्ट होते थे। इस प्रकार शत्रुओ को सहायतार्थ आने वालो की सख्या बहुत ज्ञात होती थी। सुल्तान नदी के किनारे किनारे अग्रसर हुआ। उनका विचार था कि कन्नौज नगर अपने पीछे की ओर कर ले। वहाँ के कोट के अत्यन्त दृढ होने के कारण वह वहाँ शरण लेना चाहता था। कन्नौज उस स्थान से तीन दिन की यात्रा की दूरी पर था। प्रथम पडाव पर पहुचने के उपरान्त उसने अपनी सेना को युद्ध के लिये तैयार किया और उन्हे एक पंक्ति में खडा किया। प्रत्येक अपने हथियार अपने सामने किये हुये था और उसका घोड़ा उसके बराबर था। प्रत्येक के पास (३४६) एक छोटा खेमा था जहाँ वह भोजन तथा वजू आदि किया करता था। मुख्य मुहल्ला (शिविर) वहाँ से दूर होता था। तीन दिन तक सुल्तान ने न तो अपने शिविर में प्रवेश किया और न कभी छाया में बैठा।

एक दिन मै अपने शिविर में था। मेरे एक ख्वाजा सरा ने जिसका नाम सुम्बुल था, मुझे पुकारा और शीघ्र आने के लिये मुझ से कहा। मेरे साथ मेरी दासियाँ भी थी। जब मैं बाहर निकला तो उसने मुझ से कहा कि "सुल्तान ने इस समय आदेश दिया है कि जिसके पास भी उसकी स्त्री तथा दासियां होंगी उसकी हत्या कर दी जायगी।" अमीरो के आग्रह पर उसने आदेश दिया कि मुहल्ले (शिविर) में कोई स्त्री भी न रहे और सब को कम्बील[१] नामक एक किले में, जो तीन मील की दूरी पर था भेज दिया जाय। तत्पश्चात् मुहल्ले (शिविर) में कोई स्त्री न रही यहाँ तक कि सुल्तान के साथ भी कोई स्त्री न रही।

उस रात्रि में हम लोग युद्ध की तैयारी करते रहे। दूसरे दिन सुल्तान ने अपनी सेना के (३४७) दस्ते युद्ध के लिये तैयार किये। प्रत्येक दस्ते के साथ हाथी थे जिन्हे कवच पहना दिया गया था। उन पर हौदे कसे थे। उनमें सैनिक बैठे थे। समस्त सेना को कवच पहनने का आदेश दे दिया गया था और सभी युद्ध के लिये तैयार थे। दूसरी रात्रि में भी युद्ध की तैयारियाँ होती रही। तीसरे दिन यह समाचार प्राप्त हुये कि विद्रोही ऐनुलमुल्क ने नदी पार कर ली है। सुल्तान यह समाचार पाकर बडा भयभीत हो गया। उसे सन्देह हुआ कि अन्य अमीरो से जो उसकी ओर थे पत्र व्यवहार किये बिना उसने (ऐनुलमुल्क ने) यह कार्यवाही नहीं की होगी। उसने आदेश दिया कि उसके मुसाहिबो को उसके अस्तबल से अच्छी नसल के घोडे तुरत बाँट दिये जायें। मेरे पास भी कुछ घोडे भेजे गये। मेरे साथ अमीरे अमीरान किर्मानी नामक एक व्यक्ति था। वह बडा ही शूर वीर था। मैं ने उसे उसमें से सब्ज़े रग का एक घोडा दे दिया। जब वह उस पर सवार हुआ तो घोडा भाग खडा हुआ और उससे न रुका। घोडे ने उसे नीचे गिरा दिया और तत्काल ही उसकी मृत्यु हो गई। ईश्वर उस पर दया करे।

सुल्तान उस दिन अतिशीघ्र प्रस्थान करके अस्र[२] पश्चात् कन्नौज नगर पहुच गया (३४८) क्योकि उसे भय था कि कहीं विद्रोही उससे पूर्व ही वहाँ न पहुच जाय। उस रात्रि में सुल्तान स्वय सेना को सुव्यवस्थित करता रहा। वह हमारा भी निरीक्षण करने आया। हम लोग सेना के अग्रिम भाग में थे। उसके चाचा का पुत्र मलिक फीरोज़ हमारे साथ था।

१ कम्बील अथवा कम्पिला फतेहगढ से २८ मील उत्तर पश्चिम में।

२ दोपहर पश्चात्।

अमीर गद्दा इब्ने मुहन्ना, सैयिद नसीरुद्दीन मुतहर तथा खुरासान के अमीर भी हमारे साथ थे। उसने हमें अपने व्यक्तिगत विशेष साथियो में सम्मिलित कर लिया और हमसे कहा कि "तुम लोग मुझे बड़े प्रिय हो और मेरा साथ कभी मत छोडो।" इसमें कुशल ही रही क्योंकि विद्रोही ने रात्रि के अन्तिम भाग में सेना के अग्रिम भाग पर छापा मारा। वजीर ख्वाजये जहाँ भी उसी भाग में था। सेना में बडा कोलाहल मच गया। सुल्तान ने आदेश दिया कि 'कोई भी अपने स्थान को न छोडे और शत्रु से तलवार के अतिरिक्त किसी वस्तु से युद्ध न करे।' समस्त सेना ने तलवारें खीच ली और वह शत्रु की ओर अग्रसर हुई। युद्ध प्रचड हो गया। सुल्तान ने उस रात्रि में अपना चिह्न देहली तथा गजनी निश्चित किया था। जब हमारी सेना का कोई सवार दूसरे को मिलता था तो देहली शब्द कहता था। यदि वह उत्तर में गजनी कहता तो समझ लिया जाता कि वह हमारी सेना का है अन्यथा उसके विषय में आदेश था कि उसकी हत्या कर दी जाय। विद्रोही का विचार सुल्तान के शिविर पर छापा मारने का (३४६) था किन्तु उसके मार्ग दर्शाने वाले ने उससे विश्वास-घात किया और वह वजीर के स्थान पर पहुँच गया। उसने मार्ग दर्शाने वाले की हत्या करदी। वजीर की सेना में ईरानी, तुर्क तथा खुरासानी बडी सख्या में थे। वे हिन्दुओ (हिन्दुस्तानियों) के शत्रु होने के कारण जी तोड कर लडे। यद्यपि शत्रु की सेना में लगभग पचास हजार सैनिक थे किन्तु दिन निकलते निकलते वे भाग खडे हुये।

मलिक इब्राहीम, जो बन्जी तातार के नाम से प्रसिद्ध था और जिसे सुल्तान की ओर से सन्दीले[१] की, जो ऐनुलमुल्क के प्रात का एक ग्राम था, अक्ता प्राप्त थी, विद्रोह में उसका सहायक बन गया था और उसने उसे अपना नायब नियुक्त कर दिया था। कुतुबुल मुल्क का पुत्र दाऊद तथा मलिकुत्तुज्जार का पुत्र, जो सुल्तान के हाथियों तथा घोडो की देख रेख के लिये नियुक्त हुये थे, उससे (ऐनुलमुल्क से) मिल गये। दाऊद को ऐनुलमुल्क ने अपना हाजिब नियुक्त कर दिया था। जब ऐनुलमुल्क ने वजीर की सेना पर छापा मारा तो दाऊद (३५०) चिल्ला-चिल्ला कर सुल्तान को गन्दी-गन्दी गालियाँ देता था। सुल्तान ने स्वय उसकी गालियाँ सुनीं और उसकी आवाज पहचानी।

जब लोग भागने लगे तो ऐनुलमुल्क ने अपने नायब इबराहीम तातार से कहा "हे मलिक इबराहीम! अब तेरी क्या राय है? सेना के बहुत से लोग भाग रहे हैं। अच्छे-अच्छे योद्धा भाग खडे हुये हैं। हम लोग भी भागने का प्रयत्न क्यों न करें?" इबराहीम ने अपने साथियों से अपनी भाषा में कहा "जब ऐनुलमुल्क भागने लगेगा तो मैं उसके दब्बूका (केश) पकड लूगा। तुम उसी समय उसके घोडे को मार देना। इस प्रकार वह भूमि पर गिर पडेगा। फिर हम लोग उसे पकड कर सुल्तान के पास ले जायेंगे। सम्भव है कि इस प्रकार विद्रोह में उसका साथ देने का हमारा अपराध सुल्तान क्षमा कर दे।" जब ऐनुलमुल्क भागने लगा तो इबराहीम ने कहा, "हे सुल्तान अलाउद्दीन! कहाँ जाते हो?" ऐनुलमुल्क ने अपनी उपाधि सुल्तान अलाउद्दीन रक्खी थी। उसने ऐनुलमुल्क के दब्बूका (केश) जोर से पकड लिये। उसके साथियो ने उसके घोडे को मार दिया। वह भूमि पर गिर पडा। इबराहीम भी उसी पर फाँद पडा और उसे पकड लिया। जब वजीर के अधिकारी उसे पकडने को आये तो उसने उन्हे रोका और कहा कि, "मैं इसे स्वय वजीर के पास ले जाऊंगा (३५१) अन्यथा युद्ध करके प्राण त्याग दूगा, किन्तु इसे जाने न दूगा।" उन लोगो ने उसे छोड दिया और वह उसे वजीर के पास ले गया।

१ उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले का एक कस्बा।

उस दिन प्रातःकाल मैं देख रहा था कि सुल्तान के सम्मुख हाथी तथा पताकाएँ लाई जा रही थीं। उसी समय एक एराकी ने आकर मुझसे कहा, "ऐनुलमुल्क बन्दी बना लिया गया है और वज़ीर के पास पहुँचा दिया गया है।" मुझे विश्वास न हुआ। कुछ समय पश्चात् मलिक तमूर शुर्बदार आया और उसने मेरा हाथ पकड़ कर बधाई देते हुये कहा, "वास्तव में ऐनुलमुल्क बन्दी बना लिया गया और इस समय वज़ीर के पास है।" उसी समय सुल्तान चल खड़ा हुआ और हम भी ऐनुलमुल्क के मुहल्ले (शिविर) की ओर गंगा की तरफ बढ़े। सैनिकों ने उसका शिविर लूट लिया था। ऐनुलमुल्क के बहुत से सैनिक नदी में घुस गये थे और डूब कर मर गये थे। कुतुबुलमुल्क का पुत्र दाऊद तथा मलिकुत्तुज्जार का पुत्र दोनों ही अन्य लोगों के साथ बन्दी बना लिये गये थे। धन सम्पत्ति तथा घोड़े लूट लिये गये थे। सुल्तान घाट के निकट उतरा और वज़ीर ऐनुलमुल्क को लाया। वह पूर्णतया नग्न था, केवल एक लंगोट बंधा था और उसका एक सिरा उसकी गर्दन में लपेट दिया (३५२) गया था और वह बैल पर सवार था।

वज़ीर ने उसे शिविर के द्वार पर खड़ा कर दिया। वज़ीर सुल्तान के पास गया। सुल्तान ने उसके सम्मान के लिये उसे शुर्बा (पीने की कोई वस्तु) दी। मलिकों के पुत्र ऐनुलमुल्क के पास आते थे, उसे गालियाँ देते थे और उसके मुख पर थूकते तथा उसके साथियों को मारते थे। सुल्तान ने मलिक कबीर को उसके पास भेज कर कहलाया कि "तू ने यह क्या किया?" किन्तु उसे कोई उत्तर न मिला। सुल्तान के आदेशानुसार उसे फटे पुराने वस्त्र पहनाये गये और उसके पैरों में चार बेड़ियाँ डाली गई। उसके हाथ गर्दन पर बाँध दिये गये और उसे वज़ीर को सौंप दिया गया कि वह उसकी रक्षा करता रहे।

उसके भाई नदी पार करके भाग गये और अवध पहुँच कर वहाँ से अपने परिवार तथा जो कुछ धन सम्पत्ति उठा कर ले जा सके लेकर भाग गये। उन्होंने अपने भाई ऐनुलमुल्क की पत्नी से कहा कि, 'तू भी अपने बाल बच्चों को लेकर हमारे साथ प्राणों की रक्षा हेतु भाग चल।' उसने उत्तर दिया कि "क्या मैं काफिर स्त्री से भी कम हूँ जो अपने पति के साथ जल (३५३) जाती है? यदि मेरा पति जीवित रहेगा तो मैं भी जीवित रहूँगी और यदि वह मरेगा तो मैं भी मर जाऊँगी' इस पर वे लोग उसे छोड़ गये। सुल्तान को जब इस बात की सूचना मिली तो यह बात उसके सौभाग्य का कारण बन गई क्योंकि सुल्तान को उस पर दया आ गई। उन भाइयों में से नसरुल्लाह नामक, सुहैल ख्वाजा सरा के हाथ लग गया। उसने नसरुल्लाह की हत्या कर दी और उसका कटा शीश सुल्तान के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया। वह ऐनुलमुल्क की माता, पत्नी तथा बहिन को भी लाया। वे वज़ीर को सौंप दी गई। उन्हें ऐनुलमुल्क के पास एक खेमे में रक्खा गया। ऐनुलमुल्क उनसे भेंट करने जाया करता था और कुछ समय तक उनके पास बैठ कर अपने बन्दीगृह को लौट जाता था।

विजय के दिन अस्र के समय सुल्तान ने आदेश दिया कि बाज़ारी, साधारण लोग, दास तथा इस प्रकार के जो भी लोग बन्दी बनाये गये हैं, उन्हें मुक्त कर दिया जाय। मलिक इबराहीम बंजी, जिसका उल्लेख हो चुका है, प्रस्तुत किया गया। मलिकुल असकर (सेनापति) (३५४) मलिक नुवा ने कहा कि, 'अखुन्द आलम! इसने भी विद्रोह किया था, अतः इसकी भी हत्या कर दी जाय।" वज़ीर ने कहा, "ऐनुलमुल्क को बन्दी बनाने के कारण इसका अपराध क्षमा कर दिया गया।" सुल्तान ने भी उसको क्षमा कर दिया। वह मुक्त कर दिया गया और उसे अपने प्रान्त में जाने की अनुमति दे दी गई। मग़रिब के उपरान्त (सायंकाल के पश्चात्) सुल्तान काष्ठ के बुर्ज में बैठा। विद्रोही के ६२ मुख्य सहायक उसके सम्मुख प्रस्तुत किये गये। तत्पश्चात् हाथी लाये गये और उन लोगों को हाथियों के समक्ष डाल दिया गया। उन्होंने

अपने दाँतो में लगे हुये फल से उन्हें चीरना फाड़ना आरम्भ कर दिया। कुछ को तो उन्होने ऊपर उछाल उछाल कर हत्या कर दी। उस समय नौबत, नक्कारे तथा नफीरी बजाई जाती थी। ऐनैलमुल्क खड़ा देख रहा था और उनके टुकड़े उसकी ओर फेंके जाते थे। तत्पश्चात् उसे बन्दीगृह में भेज दिया गया।

सुल्तान ने नदी के घाट पर मनुष्यो की अधिकता तथा नौकाओ की कमी के कारण कुछ दिनो तक पड़ाव किया। सुल्तान का सामान तथा राजकोष हाथियो द्वारा पार किया गया। सुल्तान ने कुछ हाथी अपने खास खास अमीरो को अपनी अपनी सम्पत्ति नदी के पार (३५५) ले जाने के लिये प्रदान किये। उसने मुझे भी एक हाथी भेजा जिस पर मैंने अपना माल लाद कर नदी को पार किया।

तत्पश्चात् सुल्तान हम लोगो को साथ लेकर बहराइच की ओर चल खड़ा हुआ। यह नगर सरयू नदी के तट पर बसा है और बड़ा ही सुन्दर है। सरयू बहुत बड़ी नदी है और बड़ी तीव्र गति से बहती है। सुल्तान ने पवित्र शेख सालार मसऊद[1] की कब्र की ज़ियारत[2] करने के लिये नदी पार की। उसी ने इस ओर के बहुत से भागो पर विजय प्राप्त की थी। उसके तथा उसके युद्धो के विषय में बड़ी विचित्र कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। लोगों के नदी पार करने के समय बड़ी भीड़ थी। एक बड़ी नाव, जिसमें ३०० मनुष्य थे, डूब गई और केवल एक अरब जो अमीर ग़द्दा का साथी था बच सका। हम एक छोटी नौका में थे, और ईश्वर ने हमें बचा लिया। जो अरब डूबने से बच गया उसका नाम सालिम (सुरक्षित) था और यह एक विचित्र अनुरूपता थी। वह हमारे साथ नौका पर बैठना चाहता था किन्तु उसने जब यह देखा कि हमारी नौका आगे बढ़ गई तो वह बड़ी नाव पर, जो डूब गई थी, बैठ गया। (३५६) जब वह नदी से निकला तो लोगो को सन्देह हुआ कि वह हमारे साथ था। इस पर हमारे साथियो में चीत्कार मच गया कि हम डूब गये, किन्तु जब लोगो ने हमें सुरक्षित देखा तो सब बड़े प्रसन्न हो गये।

तत्पश्चात् हम लोगो ने उपर्युक्त शेख की कब्र की ज़ियारत की। उनकी कब्र एक गुम्बद में है किन्तु मैं अत्यधिक भीड़ के कारण उसमें प्रविष्ट न हो सका। उसी प्रदेश में हम एक बाँस के जगल में प्रविष्ट हुये तो हम ने एक गेंडा देखा। जब लोग उसकी हत्या करके उसका सिर लाये तो वह हाथी के सिर से कई गुना बड़ा था, किन्तु उसका शरीर हाथी से छोटा था। इस पशु का उल्लेख इसके पूर्व हो चुका है।

सुल्तान का अपनी राजधानी को लौटना तथा अली शाह कर (बहरा) का विद्रोह—

ऐनुलमुल्क पर विजय प्राप्त करने के उपरान्त, जिसका उल्लेख हो चुका है, सुल्तान २½ वर्ष के पश्चात् अपनी राजधानी को लौटा। उसने ऐनुलमुल्क तथा नुसरत खाँ को, जिसने (३५७) तिलग प्रान्त में विद्रोह किया था, क्षमा कर दिया और दोनों को अपने उद्यानों का नाज़िर (प्रबन्धक) नियुक्त कर दिया। उन्हें खिलअत तथा घोड़े प्रदान किये गये और उनके लिये आटे तथा मांस के प्रदान किये जाने का प्रबन्ध राज्य की ओर से कर दिया गया।

---

१ एक प्रसिद्ध मुसलमान संत। कहा जाता है कि वे बहराइच में निवास करने लगे थे और महमूद ग़ज़नवी के बहुत बड़े सहायक थे। कहा जाता है कि बहराइच में हिन्दुओं से युद्ध करते हुये १८ वर्ष की अवस्था में १०३३ ई० में मारे गये। वे बहराइच में दफ्न हुये और उनका मज़ार बड़ा प्रसिद्ध है।

२ दर्शन।

तत्पश्चात् यह समाचार मिला कि कुतलू खाँ (कुतलुग खाँ) के एक साथी अली शाह कर (बहिरा) ने सुल्तान के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। वह बड़ा ही वीर, रूपवान तथा चरित्रवान व्यक्ति था। उसने बद्रकोट पर अधिकार जमा कर उसे अपनी राजधानी बना लिया और वहाँ की सेना को निकाल दिया। सुल्तान के आदेशानुसार उसका गुरु (कुतलुग खाँ) एक बहुत बड़ी सेना लेकर उससे युद्ध करने गया। वहाँ पहुच कर उसने उसे घेर लिया और बुर्जो को सुरग से उड़ा दिया। जब अली शाह की दशा शोचनीय हो गई तो उसने आश्रय की प्रार्थना की। कुतलू खाँ ने वचन देकर उसे सुल्तान के पास बन्दी बना कर भेज दिया। (३५८) सुल्तान ने उसे क्षमा कर के खुरासान की सीमा पर स्थित गज़नी नगर में भेज दिया। वह वहाँ कुछ समय तक रहा, किन्तु देश प्रेम से विवश होकर उसने लौट आना निश्चय कर लिया। इस प्रकार मानो उसका अन्तिम समय आ गया था। सिन्ध में वह बन्दी बना लिया गया और सुल्तान के पास भेज दिया गया। सुल्तान ने उससे कहा, "तुम पुन उपद्रव मचाने आ गये" और उसकी हत्या करादी।

अमीर बख्त का भागना और फिर पकड़ा जाना–

सुल्तान अमीर बख्त से कुपित था। उसकी उपाधि शरफुलमुल्क थी। वह उन लोगो मे से था जो हमारे साथ सुल्तान के पास आये थे। सुल्तान ने उसका वेतन चालीस हज़ार (तन्के) से घटा कर एक हजार कर दिया और उसे वजीर की सेवा में देहली भेज दिया। सयोग से अमीर अब्दुल्लाह हरवी तिलग मे सक्रामक रोग मे मर गया। उसकी सम्पत्ति उसके साथियो के पास देहली में थी। उन लोगों ने अमीर बख्त से मिल कर भाग निकलने की योजना बनाली। जब वज़ीर देहली से सुल्तान से मिलने गया तो वे अमीर बख्त तथा (३५९) उसके साथियो के साथ भाग गये और सात दिन में सिन्ध पहुँच गये यद्यपि यह मार्ग चालीस दिन का है। उनके साथ कोतल घोड़े थे। उनका विचार था कि वे सिन्ध नदी तैर कर पार करलें। अमीर बख्त, उसके पुत्र तथा उन लोगो ने, जो तैरना न जानते थे, नरकट के बेड़ो पर जो इसी उद्देश्य से तैयार किये जाते हैं नदी पार करना निश्चय किया। इस कार्य के लिये उन्होने रेशम की डोरियाँ तैयार करली थी। जब वे नदी पर पहुँचे तो तैर कर पार करने से डर गये। उन्होने अपने दो आदमी उच्च के साहिब (हाकिम) जलालुद्दीन के पास भेजे। उन दोनो ने जाकर उससे कहा कि "कुछ व्यापारी नदी को पार करना चाहते हैं और उन्होने यह ज़ीन उपहार में भेज कर प्रार्थना की है कि उन्हें नदी पार करने की अनुमति प्रदान करदी जाय।" अमीर को सन्देह हुआ कि व्यापारी किस प्रकार ऐसी जीन भेंट कर रहे हैं। उसने दोनो को बन्दी बनाये जाने का आदेश दे दिया। उनमें से एक भाग कर शरफुल *मुल्क तथा उसके साथियों के पास पहुँच गया। वे जागरण तथा निरंतर यात्रा करने के कारण* (३६०) थक कर सो गये थे। उसने उनको सब हाल बताया। वे घबड़ा कर सवार होकर भाग खड़े हुये। जलालुद्दीन ने आदेश दिया कि जो आदमी बन्दी बना लिया गया है उसे खूब पीटा जाय। उसने शरफुलमुल्क का हाल बता दिया। जलालुद्दीन के आदेशानुसार उसका नायब सेना लेकर उन लोगों का पीछा करने के लिये चल पड़ा। जब वह वहाँ पहुँचा तो उसे ज्ञात हुआ कि वे भयभीत होकर भाग चुके हैं किन्तु वह अनुमान से उनके पीछे चल दिया और उन तक पहुँच गया। सेना ने बाणो की वर्षा प्रारम्भ करदी। शरफुलमुल्क के पुत्र ताहिर का बाण अमीर जलालुद्दीन के नायब के बाज़ू पर लगा किन्तु उन पर अधिकार जमा लिया गया। वे सब जलालुद्दीन के सम्मुख प्रस्तुत किये गये। उसने उनके पैरो में बेड़ियाँ तथा हाथो में हथकड़ियाँ डलवा कर वजीर के पास उनके सम्बन्ध में सूचना भेज दी। वज़ीर ने आदेश दिया

कि उन्हें राजधानी मे भेज दिया जाय, अत वे राजधानी को भेज दिये गये। वहाँ वे बन्दीगृह मे डाल दिये गये। ताहिर बन्दीगृह मे मर गया। तत्पश्चात् सुल्तान ने आदेश दिया कि शरफुलमुल्क के प्रतिदिन सौ कोडे लगाये जाय। उसे कुछ समय तक यह दड मिलता रहा (३६१) किन्तु अन्त में सुल्तान ने उसको क्षमा कर दिया और उसे अमीर निज़ामुद्दीन मीर नजला के साथ चन्देरी प्रान्त मे भेज दिया। वहाँ वह इतनी दीन अवस्था को प्राप्त हो गया कि उसके पास घोडा भी न रह गया था और वह बैल पर सवार हुआ करता था। बहुत समय तक उसकी यही दशा रही किन्तु कुछ समय उपरान्त वह अमीर (नजला) शरफुलमुल्क को अपने साथ लेकर सुल्तान से मिला और सुल्तान ने उसे चाशनीगीर नियुक्त कर दिया। उसका कार्य यह था कि वह मास के टुकडे कर-कर के सुल्तान के समक्ष रखता था और भोजन लेकर सुल्तान के सम्मुख जाता था। कुछ समय पश्चात् सुल्तान ने उसके सम्मान में और भी वृद्धि करदी। उसका सम्मान इतना बढ गया कि जब वह रुग्ण हुआ तो सुल्तान उसकी दशा पूछने गया। उसने आदेश दिया कि उसके बराबर सोना तोल कर उसे दे दिया जाय। पहली यात्रा के उल्लेख में इस कहानी की चर्चा हो चुकी है। कुछ समय पश्चात् सुल्तान ने उसका विवाह अपनी बहिन से कर दिया और उसे चन्देरी प्रान्त प्रदान कर दिया जहाँ वह अमीर निजामुद्दीन के सेवक के रूप में बैल पर सवार हुआ करता था। ईश्वर को धन्य है जो इस प्रकार हृदय परिवर्तित कर देता है और कुछ का कुछ कर देता है।

सिन्ध में शाह अफ़ग़ान[1] का विद्रोह—

(३६२) शाह अफगान (शाह अफग़ान) ने सुल्तान के विरुद्ध मुल्तान में, जो सिन्ध प्रान्त में है, विद्रोह कर दिया। वहाँ के अमीर बहज़ाद की हत्या कर दी और स्वय सुल्तान बन बैठा। जब सुल्तान ने उस पर चढाई करने की तैयारी प्रारम्भ करदी तो, यह समझ कर कि सुल्तान से युद्ध करना असम्भव है, वह अपनी जाति के अफगानो में चला गया जो कठिन तथा अगम्य पर्वतो में निवास करते हैं। सुल्तान को इस पर बडा क्रोध आया। उसने अपने अधिकारियो को लिखा कि उन्हे जहाँ कही भी अफगान मिलें, उनको बन्दी बना लिया जाय। काज़ी जलाल के विद्रोह का कारण यही था।

क़ाज़ी जलाल का विद्रोह—

काज़ी जलाल तथा कुछ अफगान किम्बाया नगर[2] तथा बुलूजरा[3] नगर के निकट निवास करते थे। जब सुल्तान ने अपने अधिकारियों को अफग़ानो के बन्दी बनाये जाने के सम्बन्ध में आदेश दिया तो उसने गुजरात तथा नहरवाले के वज़ीर के नायब मलिक मुकबिल (३६३) को यह आदेश भेजा कि किसी युक्ति से काज़ी जलाल तथा उसके साथियों को बन्दी बना लिया जाय। बुलूजरा प्रदेश मलिकुल हुकमा की अक्ता में था। मलिकुल हुकमा का विवाह सुल्तान की सौतेली माता अर्थात् उसके पिता सुल्तान तुग़लुक की पत्नी से हुआ था। तुगलुक द्वारा उसके एक पुत्री हुई थी जिसका विवाह अमीर गद्दा से हुआ था। मलिकुल हुकमा उस समय मुक़बिल के साथ था क्योंकि उसका प्रदेश उसी की देख रेख में था। जब वे गुजरात में पहुचे तो मुक़बिल ने मलिकुल हुकमा को आदेश दिया कि वह काज़ी जलाल तथा उसके साथियों को उसके पास ले आये। जब मलिकुल हुकमा उनके राज्य में पहुचा तो गुप्त रूप से उन्हें सचेत कर दिया क्योंकि वे भी उसी के देश के निवासी थे और उन्हें यह भी सूचना भेज दी कि मुक़बिल उन लोगो को बन्दी

---

१ यह विद्रोह ७४२ हि० (१३४१ ई०) में हुआ।

२ खम्भायत।

३ भड़ौच अथवा बड़ौदा।

बनाने के लिये बुलवा रहा है। अतः वे लोग बिना अस्त्र शस्त्र के उसके पास न जायें। वे लोग अस्त्र शस्त्र लगा कर ३०० की संख्या में घोड़ो पर सवार होकर मुकबिल के पास पहुँचे और कहा 'हम लोग एक साथ ही प्रविष्ट होंगे।" मुकबिल समझ गया कि उन्हें इकट्ठा बन्दी बनाना बड़ा कठिन (३६४) है। उसने उनके भय के कारण उन्हे आदेश दिया कि वे अपने घरो को लौट जायें और उन्हे आश्वासन दिलाया कि उन्हें कोई भय नही किन्तु उन लोगों ने विद्रोह कर दिया। किम्बाया (खम्बायत) नगर में प्रविष्ट हो गये और वहाँ सुल्तान का खजाना तथा प्रजा की धन सम्पत्ति लूट ली। इब्नुल कौलमी व्यापारी की भी धन-सम्पत्ति लूट ली। उसने सिकन्दरया में एक सुन्दर विद्यालय का निर्माण कराया था। इसका उल्लेख इसके पश्चात् होगा। मलिक मुकबिल उन से युद्ध करने को गया किन्तु उन लोगो ने उसे बुरी तरह पराजित कर दिया। तत्पश्चात् मलिक अजीज खम्मार तथा मलिक जहाँ बम्बल ७००० अश्वारोहियो को लेकर उनसे युद्ध करने गये किन्तु उन लोगों ने उन्हे भी परास्त कर दिया। कलहकारी तथा अपराधी इन घटनाओं का हाल सुन सुन कर उनके पास एकत्र होने लगे। काजी जलाल स्वयं सुल्तान बन बैठा और उसके साथियों ने उसकी बैअत करली। जब सुल्तान ने उनसे युद्ध करने के लिये सेनायें भेजी तो काजी जलाल ने उन सेनाओ को भी हरा दिया। दौलताबाद में भी अफगानो का एक समूह रहता था। उन लोगों ने भी विद्रोह कर दिया।

मलिक मल के पुत्र का विद्रोह—

(३६५) मलिक मल का पुत्र (सुल्तान नासिरुद्दीन अफगान) दौलताबाद में कुछ अफगानो के साथ निवास करता था। सुल्तान ने अपने नायब निजामुद्दीन को जो उसके गुरु कुतुलू खाँ (कुतलुग खाँ) का भाई था, उन्हे बन्दी बनाने के लिए लिखा। उसे जजीरो तथा हथकड़ियो के गट्ठर और शिशिर-कालीन खिलअत भी भेजी। हिन्दुस्तान के सुल्तान की यह प्रथा है कि वे प्रत्येक नगर के अमीर (शासक, तथा अपनी सेना के मुख्य अधिकारियों को साल मे दो खिलअतें भेजते है—एक शीत तथा दूसरी ग्रीष्म ऋतु में। खिलअतो के पहुचने पर अमीर तथा सेना वाले उसके स्वागतार्थ जाते हैं। जब वे खिलअत लाने वाले के निकट पहुचते है तो अपनी सवारियो से उतर पडते हैं। उनमें से प्रत्येक अपनी अपनी खिलअत ले कर कन्धे पर रख लेता है और जिस दिशा में सुल्तान की उपस्थित ज्ञात होती है उस ओर मुख करके अभिवादन करता था। सुल्तान ने निजामुद्दीन को यह लिख दिया था कि जब अफगान नगर के बाहर आयें और खिलअत लेने के लिए सवारियो से उतर पडे तो उसी समय उन्हे बन्दी बना दिया जाय। खिलअत लाने वालो में से एक ने अफगानो को उस षड्यत्र (३६६) की सूचना दे दी। इसके कारण निजामुद्दीन ने जो योजना बनाई वह उल्टी पड गई। जब वह तथा अफगान सवार होकर नगर मे बाहर निकले और खिलअत लाने वालो के निकट पहुचे तो निजामुद्दीन अपने घोडे से उतर पडा। अफगानो ने उस पर तथा उसके साथियो पर आक्रमण कर दिया। उसे बन्दी बना लिया और उसके बहुत से साथियो की हत्या कर दी। वे नगर में प्रविष्ट हो गये और उन्होने खजाने पर अधिकार जमा लिया। उन्होने मलिक मल के पुत्र नासिरुद्दीन को अपना सरदार नियुक्त कर लिया। उपद्रव कारी उनके पास एकत्र होने लगे और वे बडे शक्तिशाली बन गये।

सुल्तान का स्वयं किम्बाया (खम्बायत) पर आक्रमण करना—

सुल्तान खम्भायत तथा दौलताबाद के अफगानो के विद्रोह की सूचना पाकर स्वय युद्ध के लिये निकल खडा हुआ और सर्व प्रथम उसने खम्बायत पर आक्रमण करना निश्चय किया। तत्पश्चात् वह दौलताबाद को वापस होना चाहता था। उसने विवाह के सम्बन्ध के अपने एक रिश्तेदार आजमुल मलिक बायजीदी को ४,००० सैनिक देकर अपने आगे युद्ध करने के

(३६७) लिये भेजा किन्तु काज़ी जलाल के सैनिको ने उन्हे पराजित कर दिया । वे बुलूज़रा (भडोच) में घेर लिये गये और उनसे वही युद्ध हुआ । काज़ी जलाल की सेना में एक व्यक्ति शेख जलूल नामक था । वह बडा ही शूरवीर था और वह (शाही) सेना पर निरतर आक्रमण तथा उनका सहार करता रहा किन्तु कोई भी उससे पृथक् युद्ध न कर सका । सयोग से एक दिन उसने अपने घोडे को दौडाया और वह उसे लेकर एक खाई में जा पडा । जलूल घोडे से गिर पडा और किसी ने उसकी हत्या करदी । वह दो कवच धारण किये था । उसका सिर सुल्तान के पास भेज दिया गया और उसका शरीर बुलूज़रा (भडौंच) नगर की शहर पनाह पर लटका दिया गया । उसके हाथ पाँव अन्य प्रदेशों में भेज दिये गये । तत्पश्चात् सुल्तान अपनी सेना लेकर पहुँचा । क़ाज़ी जलाल को सुल्तान का सामना करना असम्भव हो गया और वह अपने साथियो सहित अपना परिवार तथा धन सम्पत्ति छोड कर भाग गया । सेना ने वह सब लूट लिया और वे नगर में प्रविष्ट हो गये । सुल्तान कुछ दिनों तक वहाँ ठहरा रहा और फिर वहाँ से प्रस्थान करके अपने बहनोई शरफुलमुल्क अमीर बख्त को (३६८) वहाँ छोड गया । इसका उल्लेख हो चुका है कि वह किस प्रकार भागा, सिन्ध में पकडा गया, किस प्रकार वह अपमानित अवस्था में रहा और किस प्रकार उसे पुन आदर सम्मान प्रदान किया गया । सुल्तान ने आदेश दिया कि जिन-जिन लोगों ने जलालुद्दीन की बैग्रत की थी उन्हें वह ढुढवाये और उसकी सहायता के लिये कुछ फकीह भी छोड दिये जिससे वह उनके निर्णय के अनुसार व्यवहार करे । इस प्रकार शेख हैदरी की, जिसका उल्लेख हो चुका है, हत्या हुई ।

काज़ी जलाल भाग कर मलिक मल के पुत्र नासिरुद्दीन के पास दौलताबाद पहुँचा और उसके साथियो में सम्मिलित हो गया । सुल्तान स्वय वहाँ पहुँचा । विद्रोहियों ने ४०,००० सेना एकत्र की जिसमें अफग़ान, तुर्क, हिन्दू तथा (हबशी) दास सम्मिलित थे । सब ने प्रतिज्ञा की थी कि वे भागेंगे नही अपितु सुल्तान से युद्ध करते रहेंगे । जब सुल्तान ने सर्व प्रथम उनसे युद्ध प्रारम्भ किया तो अपने ऊपर चत्र न लगाया । जब युद्ध प्रचण्ड हो गया तो अचानक चत्र लगा दिया गया । विद्रोही देख कर विस्मित हो गये और बुरी तरह परास्त हो (३६९) गये । मलिक मल का पुत्र तथा काज़ी जलाल अपने ४०० मुख्य अधिकारियो को लेकर द्वाकीर (देवगिरि) के किले में शरण के लिये घुस गये । इस क़िले का उल्लेख बाद में होगा । यह ससार का अत्यन्त दृढ क़िला समझा जाता है । सुल्तान ने दौलताबाद नगर में निवास किया । द्वाक़ीर (देवगिरि) उसी का किला है । उसने उन लोगों (विद्रोहियों) के पास सूचना भेजी कि वे किले के बाहर निकल आयें किन्तु उन्होंने कहा "जब तक हमारे प्राणों की रक्षा का आश्वासन न दिया जायगा हम लोग बाहर न आयेंगे ।" सुल्तान ने उन्हें किसी प्रकार का आश्वासन देना स्वीकार न किया किन्तु उन पर दया के प्रदर्शन हेतु उनके पास भोजन सामग्री भेज दी और स्वय वहीं ठहरा रहा । मुझे उन लोगो के विषय में इतना ही ज्ञात है ।

मुकबिल तथा इब्नुल कौलमी का युद्ध—

यह युद्ध क़ाज़ी जलाल के विद्रोह के पूर्व हुआ । ताजुद्दीन इब्नुल कौलमी एक बहुत बडा व्यापारी था । वह सुल्तान के पास तुर्कों के देश[1] से बडे बहुमूल्य उपहार लेकर (३७०) आया था । उपहार में दास, ऊँट, व्यापारिक माल, हथियार तथा वस्त्र सम्मिलित थे । सुल्तान इससे बडा प्रसन्न हुआ और उसे बारह लाख (तन्के) प्रदान किये, यद्यपि वहा

१ ट्रान्स्ग्रा क्सियाना ।

सुल्तान मुहम्मद का दरबार

सुल्तान की अनुपस्थिति में हमारा शाही महल में पहुँचना—

जब हम राजधानी, देहली, में प्रविष्ट हुये तो हम सीधे सुल्तान के दरबार में पहुचे। सर्व प्रथम हम पहले द्वार में प्रविष्ट हुये, फिर दूसरे और फिर तीसरे। प्रत्येक द्वार पर नकीब वर्त्तमान थे। उनका उल्लेख इसके पूर्व हो चुका है। जब हम नकीबो के सरदार के पास पहुँचे तो हमें एक नकीब एक बहुत लम्बे चौडे कक्ष में ले गया। वहाँ हमने वज़ीर ख्वाजये जहाँ को प्रतीक्षा करते देखा। सबसे आगे आगे ज़ियाउद्दीन खुदावन्द जादा था। उसके पीछे उसका भाई क़िवामुद्दीन, उसके पीछे उसका भाई एमादुद्दीन था। फिर मैं और मेरे पीछे उनका (३७५) भाई बुहरानुद्दीन था। फिर अमीर मुबारक समरकन्दी और उसके पीछे तुर्क अरुन बुग़, फिर मलिक जादा, खुदावन्द जादा का भागिनेय और सबके अंत में बद्रुद्दीन फस्साल थे।

हम लोग इसी क्रम से प्रविष्ट हुये। जब हम तीसरे द्वार से प्रवष्टि हुये तो हम बहुत बडे दरबार कक्ष में जिसका नाम हज़ार सुतून था पहुँचे। यहाँ सुल्तान दरबारे आम करता है। यहाँ पहुँच कर वज़ीर ने अभिवादन प्रकट किया और इस सीमा तक झुक गया कि उसका सिर भूमि के निकट पहुँच गया। हमने भी अभिवादन प्रकट किया किन्तु रुकू'[१] के समान झुके यद्यपि हमारी अगुलियाँ भूमि तक पहुँच गईं। यह अभिवादन सुल्तान के सिंहासन की ओर किया गया था। जो लोग हमारे साथ थे उन्होंने भी अभिवादन किया। अभिवादन के उपरान्त नकीबो ने उच्च स्वर में "बिस्मिल्लाह्[२]" कहा और हम बाहर निकल आये।

सुल्तान की माता के महल में पहुँचना तथा उसके गुण—

(३७६) सुल्तान की माता "मख़दूमये जहाँ" कहलाती है। वह बडी ही गुणवती स्त्री है और अत्यधिक दान पुण्य करती रहती है। उसने बहुत सी खानक़ाहो का निर्माण कराया है। वहाँ समस्त यात्रियो को भोजन मिलता है। वह नेत्रहीन है। इसका यह कारण बताया जाता है कि जब उसका पुत्र सिंहासनारूढ हुआ तो समस्त शाहज़ादियाँ, मलिको तथा अमीरो की पुत्रियाँ अत्युत्तम वस्त्र तथा आभूषण से शृ गार करके उसकी सेवा में उपस्थित हुई। वह एक सोने के सिंहासन पर, जिसमे जवाहरात जडे थे, आसीन थी। उन सब ने उसके सम्मुख अभिवादन किया। चमक की चका चौध से उसके नेत्रो का प्रकाश जाता रहा। यद्यपि उसका नाना प्रकार से उपचार हुआ किन्तु कोई लाभ न हो सका। उसका पुत्र सबसे अधिक उसका आदर सम्मान करता है। उसका एक उदाहरण यह है।

एक बार वह यात्रा में सुल्तान के साथ गई और सुल्तान उससे कुछ दिन पूर्व ही लौट आया। उसके पहुचने पर वह उसके स्वागतार्थ गया और घोडे से उतर पडा। जब वह पालकी में थी तो उसने उसके पैरो का चुम्बन किया। सब लोग यह दृश्य देखते रहे।

(३७७) अब मैं अपना असली वृत्तात आरम्भ करता हू। जब हम सुल्तान के महल से लौटे तो वज़ीर हम लोगो को साथ लेकर बाबुस्सर्फ़ (मुडने वाले द्वार) तक जो बाबुल हरम (पवित्र

---

१ घुटनों के बल।

२ अल्लाह के नाम से।

द्वार) के नाम से भी प्रसिद्ध है, ले गया। यह मखदूमये जहाँ का निवास स्थान है। जब हम उसके द्वार पर पहुँचे तो अपने घोडो से उतर पड़े। हममें से प्रत्येक मखदूमये जहाँ के लिये अपनी सामर्थ्य के अनुसार उपहार लाया था। काज़ी-उल-कुज़्ज़ात[1] कमालुद्दीन इब्न (पुत्र) बुरहानुद्दीन हमारे साथ भीतर गया। वज़ीर तथा क़ाज़ी ने उसके द्वार के सम्मुख अभिवादन किया। हमने भी उसी प्रकार अभिवादन किया। उसके द्वार के कातिब (सचिव) ने हमारे उपहारों की सूची तैयार की। तत्पश्चात् कुछ ख्वाजा सरा निकले। उनका सरदार वज़ीर के सम्मुख उपस्थित हुआ और उसने उससे चुपके से कुछ वार्तालाप किया। वे फिर महल को लौट गये। वे वज़ीर के पास फिर आये और फिर लौट गये। हम लोग खडे हुये प्रतीक्षा करते रहे। फिर हमे एक दालान में बैठने का आदेश हुआ।

वहाँ हमारे लिये भोजन लाया गया। तत्पश्चात् सोने के बर्तन लाये गये जिनको (३७८) "सुयून" कहते हैं। यह घडे के समान थे। उनकी घडोंचियाँ, जिन्हें सुबुक कहते हैं, सोने की थी। तत्पश्चात् प्याले रकाबियाँ तथा लोटे लाये गये। ये सब भी सोने के बने थे, दो दस्तरख्वान बिछाये गये। प्रत्येक दस्तरख्वान पर दो दो पंक्तियाँ थी। प्रत्येक में सर्व-प्रथम जो मेहमानो मे सबसे उच्च श्रेणी का होता है वह आसीन होता है। जब हम भोजन के लिये अग्रसर हुये तो हाजिबो तथा नक़ीबों ने अभिवादन किया और हमने भी अभिवादन किया। पहले शर्बत लाया गया। जब हम शर्बत पी चुके तो हाजिबों ने "बिस्मिल्लाह" कहा। उस समय हमने भोजन प्रारम्भ किया। जब भोजन हो चुका तो फुक्का, तत्पश्चात् पान लाये गये। फिर हाजिबो ने "बिस्मिल्लाह" कहा। हम सबने अभिवादन किया। तत्पश्चात् हम लोगों को एक निर्धारित स्थान पर ले जाया गया। वहाँ हमें रेशम के बने खिलअत दिये गये जिन पर (३७९) सोने का काम था। फिर हम महल के द्वार पर आये वहाँ पहुँच कर सबने अभिवादन किया और हाजिबो ने "बिस्मल्लाह" कहा। वज़ीर वही रुक गया। हम सब भी रुक गये। तत्पश्चात् महल से रेशमी सूती तथा सन के कपडो के थान लाये गये। उसमें से हम सब को प्रदान हुआ। तत्पश्चात् एक सोने का थाल आया। उसमें सूखे मेवे थे। दूसरे थाल में गुलाब तथा तीसरे में पान थे।

इस देश में यह प्रथा है कि जिसके लिये यह वस्तुयें लाई जाती हैं वह थाल को हाथ में लेता है और उसे अपने कंधे पर रख कर दूसरे हाथ से भूमि छूता है। वज़ीर ने थाल अपने हाथ में लेकर हमें बतलाया कि हमें क्या करना चाहिये। उसने यह कार्य हमारे ऊपर दया करके एवं अतिथि सत्कार हेतु किया। ईश्वर उस पर दया करे। मैंने भी उसी प्रकार किया। तत्पश्चात् हम लोग उस घर को चले गये जो हमारे निवास के लिये देहली में तैयार किया गया था। यह घर पालम द्वार के निकट था। वहीं हमारे आतिथ्य के लिये सामग्री भेज दी गई।

अतिथि सत्कार—

जब मैं उस घर में पहुचा तो मैंने अपनी आवश्यकता की समस्त वस्तुयें, अर्थात् फर्श, (३८०) चटाई, बर्तन, चारपाई, बिछौना आदि, वहाँ पाई। हिन्दुस्तान में चारपाइयाँ हलकी होती हैं। एक चारपाई एक ही मनुष्य उठा कर ले जा सकता है। यात्रा में प्रत्येक व्यक्ति चारपाई अपने साथ ही रखता है। उसे उसके सेवक अपने सिर पर रख कर ले जाते हैं। इसमें चार मूच्याकार पाये होते हैं। इनमें लम्बाई तथा चौडाई में चार लकडियाँ ठुकी होती हैं। उन्हें रेशम अथवा सूत की रस्सियो से बुनते हैं। जब कोई उन पर सोता है तो

१ मुख्य क़ाज़ी।

उसे चारपाई को लचीला बनाने की आवश्यकता नही होती क्योंकि वह स्वयं ही लचीली होती हैं।

चारपाई के साथ दो गद्दे, दो तकिये तथा एक लहाफ लाये गये। ये सब रेशम के थे। इस देश में यह प्रथा है कि गद्दा तथा लिहाफ पर सूती अथवा सन के कपडो के गिलाफ चढा दिये जाते हैं। जब वह मैला हो जाता है तो उसे धो डालते हैं। इस प्रकार गद्दे तथा लिहाफ सुरक्षित रहते हैं। उसी रात्रि में दो आदमी लाये गये। एक आटे वाला था जिसे 'खर्रास" कहते हैं और दूसरा माँस वाला था जिसे "कस्साब" कहते हैं। हम लोगो से कह दिया गया कि हम उनसे इतना माँस तथा इतना आटा ले लिया कर। मुझे तोल ठीक याद (३८१) नही। इस देश की यह प्रथा है कि आटा तथा माँस तोल में बराबर बराबर दिया जाता है। यह अतिथि सत्कार सुल्तान की माता की ओर से था। तत्पश्चात् सुल्तान की ओर से अतिथि सत्कार हेतु उपहार आने लगे। इसका उल्लेख बाद में होगा।

दूसरे दिन हम सुल्तान के महल मे गये और वजीर के समक्ष हमने अभिवादन किया। उसने मुझे दो थैलियाँ हजार-हजार चाँदी के दीनार दराहिम (तन्को) की दी और कहा 'यह सर धुस्ती अर्थात तुम्हार सिर धोने के लिये है।" इसके अतिरिक्त उसने मुझे उत्तम ऊन का एक खिलअत दिया। मेरे समस्त साथियो, सेवकों तथा दासो की एक सूची तैयार की गई और उन्हें चार श्रेणियो में विभाजित किया गया। प्रथम श्रणी वालो में से प्रत्येक को २०० दीनार, दूसरी श्रेणी वालो में से प्रत्येक को १५० दीनार, तीसरी श्रेणी में से प्रत्येक को १०० दीनार तथा चौथी श्रेणी में से प्रत्येक को ७५-७५ दीनार प्रदान किये गये। मेरे साथ कुल चालीस (३८२) आदमी थे और उन सब को लगभग ४,००० दीनार प्रदान किये गये।

तत्पश्चात् सुल्तान की ओर से अतिथि सत्कार का प्रबन्ध निश्चित हुआ। इसमें एक हजार हिन्दी रतल आटा जिसमें एक तिहाई मैदा तथा शेष दो तिहाई बिना छना आटा, एक हजार हिन्दुस्तानी रतल मास था। चीनी, घी, मधु, छालियाँ भी कई कई रतल आई। मुझ वह याद नही। हिन्दुस्तानी रतल मगरिब (मराको) के बोस रतल तथा मिस्र के पच्चीस रतल के बराबर होता है। खुदावन्द जादा के आतिथ्य उपहार में ४००० रतल आटा तथा ४००० रतल माँस तथा अन्य वस्तुए जिनका ऊपर उल्लेख हो चुका है थी।

मेरी पुत्री का निधन तथा मृतक-क्रिया—

हमारे पहुँचन के १½ मास पश्चात् मेरी एक पुत्री की, जिसकी अवस्था एक वर्ष से कम (३८३) थी, मृत्यु हो गई। जब उसकी मृत्यु की सूचना वजीर को प्राप्त हुई तो उसने आदेश दिया कि उसे उस खानकाह में जो उसने पालम द्वार के बाहर हमारे शेख इबराहीम कूनवी के मकबरे के पास बनाई थी, दफन किया जाय। उसके वहाँ दफन हो जाने के उपरान्त वजीर ने उसके विषय में सुल्तान को लिखा। दूसरे दिन साय में उत्तर प्राप्त हो गया, यद्यपि सुल्तान वहाँ से दस दिन की दूरी पर था।

यहाँ यह प्रथा है कि मृतक की कब्र पर दफन होने के तीसरे दिन प्रात काल लोग जाते हैं। वे कब्र के चारों ओर रेशमी कपडे, कालीन आदि बिछाते हैं। कब्र फूलो से ढक दी जाती है। यह फूल प्रत्येक ऋतु में मिल जाते हैं उदाहरणार्थ, चम्पा, गुल शब्बो जिसमे पीले फूल होते है, रायबेल, जो सफेद होती है, दो प्रकार की चमेली, सफेद तथा पीली। नारगी तथा नीबू की डालियाँ फलों सहित भी रक्खी जाती हैं। यदि उनमें फल नहीं होते तो कुछ फल तागे से बाँध दिये जाते हैं। कब्र पर सूखे फल तथा नारियल के ढेर कर दिये जाते हैं। जो लोग वहाँ एकत्र होते हैं, वे अपने अपने कुरान लाकर वहाँ पढते हैं। जब पूरा कुरान पढ लिया

(३८४) जाता है तो उन्हें शर्बत पिलाया जाता है। तत्पश्चात् उन पर अत्यधिक गुलाब जल छिड़का जाता है। उन्हें पान भी दिया जाता है और फिर वे चले जाते हैं।

इस पुत्री के दफन होने के तीसरे दिन, प्रातःकाल में रीति के अनुसार बाहर निकला और जो कुछ मुझसे सम्भव हो सका मैंने प्रबन्ध किया, किन्तु ज्ञात हुआ कि वज़ीर ने सब कुछ तैयार करा रक्खा है और कब्र के ऊपर एक सिराचा (मंडप) लगा हुआ है। हाजिब शम्सुद्दीन फूशजी जिसने सिन्ध में हमारा स्वागत किया था, काज़ी निज़ामुद्दीन करवानी तथा नगर के अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे। मेरे आने के पूर्व यह लोग वहाँ बैठे थे। हाजिब उनके सम्मुख खड़ा था। वे क़ुरान पढ़ रहे थे। मैं भी अपने साथियों के साथ क़ब्र पर बैठ गया। जब वे पढ़ चुके तो कारियों (क़ुरान पढ़ने वाला) ने बड़ी सुन्दर ध्वनि में (३८५) क़ुरान पढ़ा। तत्पश्चात् काज़ी खड़ा हुआ और उसने मरसिया[१] पढ़ा तथा सुल्तान के गुणों के विषय में कविता पढ़ी। जब सुल्तान का नाम लिया गया तो सब खड़े हो गये और उन्होंने सुल्तान के प्रति अभिवादन किया। तत्पश्चात् सब बैठ गये। उसके उपरान्त क़ाज़ी ने बड़े सुन्दर ढंग से प्रार्थना की। हाजिब तथा उसके साथियों ने गुलाब के पात्रों को लेकर लोगों पर गुलाब जल छिड़का। तत्पश्चात् सब को प्यालों में मिश्री का शर्बत पिलाया गया और पान बाँटे गये। इसके उपरान्त मुझे तथा मेरे साथियों के लिये ११ खिलअतें लाई गईं।

फिर हाजिब सवार हुआ और हम उसके साथ सवार होकर सुल्तान के महल में गये। राजसिंहासन की ओर मुख करके नियमानुसार हमने अभिवादन किया। फिर मैं अपने घर चला आया। मैं अपने घर में पहुँचा ही था कि मख़दूमये जहाँ के महल से इतना भोजन आया कि मेरा तथा मेरे साथियों के घर भर गये। हम लोगों के भोजन करने तथा दरिद्रों को बाँटने के उपरान्त भी बहुत सी रोटियाँ, हलवा, शक्कर तथा मिश्री बची रही और बहुत दिनों तक पड़ी रही। यह सब सुल्तान के आदेशानुसार हुआ था।

(३८६) कुछ दिन पश्चात् सुल्तान की माता मख़दूमये जहाँ के यहाँ से 'डोला' आया। यह पालकी (के समान) होता है। इसमें स्त्रियाँ यात्रा करती हैं, यद्यपि पुरुष भी कभी कभी इसमें बैठते हैं। यह चारपाई के समान होती है और रेशम अथवा सूत की रस्सियों से बुनी जाती है। इसके ऊपर एक लकड़ी होती है जो एक ठोस बाँस को टेढ़ा करके बनाई जाती है। वह उस लकड़ी के समान होती है जो हमारे यहाँ छत्रों में लगती है। इसे आठ आदमी दो दो भाग में विभाजित होकर उठाते हैं। पहले चार मनुष्य उठाते हैं और चार आराम करते हैं। हिन्दुस्तान में डोलों से वही कार्य लिया जाता है जो मिस्र में गधों से। प्रायः लोगों की जीविका इन्हीं पर निर्भर है। जिन लोगों के पास दास होते हैं उनके डोले दास उठाते हैं। यदि दास न हों तो किराये के मनुष्य मिल जाते हैं। नगर में इस कार्य के लिये, बाज़ारों में, सुल्तान तथा बड़े बड़े आदमियों के द्वार पर इस प्रकार के मनुष्य पर्याप्त संख्या में मिल जाते हैं। लोग उन्हीं को किराये पर कर लेते हैं। स्त्रियों के डोले पर रेशम के पर्दे पड़े होते हैं। इसी प्रकार जो डोला सुल्तान की माता के घर से ख्वाजा सरा लाये थे, उस पर रेशमी पर्दा पड़ा (३८७) था। उसमें मेरी कनीज़[२], को जो मृतक पुत्री की माता थी, बैठाया गया। मैंने उसके साथ एक तुर्की दासी सुल्तान की माता के पास उपहार में भेजी। रात्रि में उस पुत्री की माता वहीं रही। दूसरे दिन वह लौटी। उसे एक हज़ार दीनार दराहिम[३], सोने के जड़ाऊ कड़े, सोने का जड़ाऊ हार, रेशमी सोने के काम का एक कुर्ता, रेशम की एक खिलअत और कपड़ों

१ एक प्रकार की कविता जिसमें मृतक के गुणों तथा शोक का उल्लेख होता है।
२ रखेली स्त्री।
३ चाँदी के टके।

के कई थान प्रदान किये गये। जब वह इन वस्तुओं को लाई तो मैंने उन्हें अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिये अपने साथियों तथा उन व्यापारियों को दे दिया जिनसे मैंने उधार लिया था क्योंकि गुप्तचर मेरे विषय में साधारण से साधारण सूचना को प्रेषित किया करते थे।

सुल्तान तथा वज़ीर की सुल्तान की राजधानी से अनुपस्थिति में मेरे प्रति दानशीलता—

(३८८) जिस समय मैं सुल्तान की प्रतीक्षा कर रहा था, सुल्तान का आदेश प्राप्त हुआ कि मुझे कुछ ग्राम प्रदान कर दिये जायें जिनका वार्षिक कर ५००० दीनार हो। तदनुसार वज़ीर तथा दीवान के अधिकारियों ने मुझे ग्राम प्रदान कर दिये और मैं उन्हे देखने गया। एक ग्राम बदली[1] दूसरा बसही और एक आधा ग्राम बलरह[2] था। यह ग्राम राजधानी से १६ कुरोह अर्थात मील पर स्थित थे। वे सब हिन्दपत (इन्द्रप्रस्थ) की सदी में सम्मिलित थे।

सदी इस देश में सौ ग्रामों के समूह को कहते हैं। नगरों के अधीन स्थान सदियों में विभाजित हैं। प्रत्येक सदी पर एक जौतरी (चौधरी) होता है। वह उस स्थान के काफ़िरों का अधिकारी होता है जो कर एकत्रित करने के लिए एक मुतसर्रिफ होता है।

उसी समय देहली में कुछ काफिर बन्दी स्त्रियाँ प्राप्त हुईं और वज़ीर ने उनमें से दस (३८९) दासियाँ मेरे पास भेज दीं। मैंने उनमें से एक लाने वाले को दे दी। वह उससे सतुष्ट न हुआ। मेरे साथियों ने उनमें से तीन युवतियाँ ले लीं। मुझे शेष के विषय में कोई स्मृति नहीं। लूट द्वारा प्राप्त दासियाँ इस देश में बड़ी सस्ती होती हैं। वे गन्दी होती हैं और नागरिक सभ्यता से परिचित नहीं होतीं। सीखी सिखाई लौंडियाँ भी यहाँ बड़ी सस्ती हैं अत. बन्दी लौंडियों को मोल लेने की किसी को आवश्यकता नहीं होती।

हिन्दुस्तान में काफिर समस्त देश में मुसलमानों के साथ मिले जुले रहते हैं और मुसलमान उन पर विजयी रहते हैं। बहुत से काफिर दुर्गम पर्वतों ऊबड़ खाबड़ स्थानों तथा बाँस के घने जगलों में अपनी रक्षा हेतु निवास करते हैं।

यहाँ के बाँस खोखले नहीं होते और बहुत लम्बे हो जाते हैं। इनकी डालियाँ इस प्रकार एक दूसरे से उलझी रहती हैं कि इन पर अग्नि का भी प्रभाव नहीं होता और वे बड़े ही दृढ होते हैं। काफिर इन्हीं जगलों में निवास करने लगते हैं और यह जगल उनके लिये मानो दीवार बन जाते हैं। इसी में इनके पशु तथा खेत होते हैं। वे वर्षा का जल एकत्र कर लेते हैं। इस प्रकार वे एक बड़ी सेना के बिना पराजित नहीं होते। सेनायें जगलों (३९०) में घुस कर बाँसों को उन यत्रों से काट डालती हैं जो इसी कार्य के लिये बनाये जाते हैं।

सुल्तान की अनुपस्थिति में ईद—

ईदुल-फित्र (रमज़ान के महीने के बाद की ईद) आई और सुल्तान अभी तक राजधानी में वापस न हुआ था। जब ईद का दिन आया तो खतीब हाथी पर सवार हुआ। उस हाथी की पीठ पर एक चीज़ सिंहासन के समान रक्खी गई। उसके चारों कोनों पर चार पताकायें लगाई गईं। खतीब काले वस्त्र धारण किये था। मुअज़्ज़िन (अज़ान देने वाले) भी हाथियों पर सवार हुये। वे खतीब के आगे आगे "अल्लाहो अकबर" का नारा लगाते जाते थे। नगर के काज़ी तथा फकीह भी घोड़ों पर सवार थे। उनमें से प्रत्येक के पास भिक्षा के

---

१ देहली के उत्तर पश्चिम की ओर एक ग्राम।

२ बसही तथा बलरह देहली के उत्तर पूर्व की ओर एक ग्राम।

निमित्त वस्तुयें थी जो वे ईदगाह के मार्ग में लुटाते जाते थे। ईदगाह पर सूती कपडे का शामियाना लगाया गया था और भूमि पर फर्श बिछाये गये थे। जब लोग ईश्वर की उपासना (३९१) हेतु एकत्र हुये तो खतीब ने नमाज पढाई और खुत्बा पढा। तत्पश्चात् लोग अपने अपने घरो को चले गये। हम लोग सुल्तान के महल की ओर चल दिये। वहाँ मलिको, अमीरो तथा अजीजों (परदेशियो) को भोजन के उपरान्त लोग अपने-अपने घरो को चले गये।

सुल्तान का राजधानी मे आगमन तथा हमारी भेंट—

४ शव्वाल [८ जून, १३३४ ई०] को सुल्तान तिलपट के महल में जो राजधानी से सात मील की दूरी पर है, ठहरा। वजीर ने हमें उसके स्वागतार्थ बाहर जाने के लिये आदेश दिया। हम सब स्वागतार्थ बाहर गये। प्रत्येक के पास उपहार के लिये घोडे ऊट, खुरासानी मेवे मिस्री तलवारें, दास तथा तुर्कों के प्रदेश¹ के दुम्बे थे। जब हम महल के (३९२) द्वार के पास पहुचे और सब आने वाले एकत्रित हो गये तो सब अपनी अपनी श्रेणी के अनुसार प्रविष्ट हुये और सुल्तान के सम्मुख प्रस्तुत किये जाने लगे। सब को रेशमी सोने के काम की खिलअतें प्रदान की गईं। जब में प्रविष्ट हुआ तो मैंने सुल्तान को एक कुर्सी पर आसीन पाया। मै समझा कि वह कोई हाजिब है किन्तु जब मैंने उसके पास मलिकुन्नुदमा (मुख्य नदीम) नासिरुद्दीन काफी हरवी (हेरात निवासी) को देखा, जिसे मै पहचानता था, तो मुझे ज्ञात हुआ कि सुल्तान यही है। हाजिब ने अभिवादन किया। मैंने भी अभिवादन किया। अमीर हाजिब ने जो सुल्तान के चाचा का पुत्र फीरोज था, मेरा स्वागत किया। मैने उसके साथ पुन अभिवादन किया। फिर मलिकुन्नुदमा ने कहा "बिस्मिल्लाह्" (पधारो) मौलाना बद्रुद्दीन।" हिन्दुस्तान में मुझे बद्रुद्दीन कहते थे। (हिन्दुस्तान में) मौलाना (हमारे स्वामी) सभी विद्वानों की पदवी होती है। मैं सुल्तान के निकट पहुँचा। सुल्तान ने मेरा हाथ पकड कर मुझ से हाथ मिलाया और मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर बडी सुशीलता से फारसी में कहा 'तुम्हारा आना शुभ हो। तुम सतुष्ट रहो। मैं तुम्हारे ऊपर अत्यधिक कृपा-दृष्टि रक्खूगा (३९३) और तुम्हे इतने पुरस्कार दूगा कि तुम्हारे अन्य देशवासी भी सुन सुन कर तुम्हारे पास आयेंगे।" फिर पूछा कि "तुम किस देश से आ रहे हो?" मैंने कहा 'मगरिब'। उसने पूछा 'अब्दुल मोमिन (अमीरुल मोमिनीन) के देश से?" मैंने कहा, 'हाँ।" जब भी वह मेरे प्रोत्साहन हेतु कोई बात कहता था तो मैं उसके हाथों का चुम्बन करता था यहाँ तक कि मैंने सात बार उसके हाथ चूमे। मुझे खिलअत दिया गया और मै वापस आ गया।

समस्त आगन्तुक एकत्रित हो गये थे। उनके लिए दस्तरख्वान बिछाया गया, सबके आगे काजी-उल-कुज्जात (मुख्य काजी) सद्रे जहाँ नासिरुद्दीन ख्वारजमी जो एक बहुत बडा फकीह था, काजी-उल-कुज्जाते ममालीक (राज्य का मुख्य काजी) सद्रे जहाँ कमालुद्दीन गजनवी, एमादुलमुल्क अर्जे ममालीक, मलिक जलालुद्दीन कीजी और बहुत से हाजिब तथा अमीर खडे हुये थे। उस दस्तरख्वान पर खुदावन्द जादा गयासुद्दीन भी उपस्थित था। वह खुदावन्द जादा किवामुद्दीन तिरमिज के काजी के चाचा का पुत्र था। वह हमारे साथ आया था। सुल्तान उसका बडा आदर सम्मान करता था। वह उसे 'भाई' कह कर सम्बोधित करता था। वह अपने देश से प्राय सुल्तान के पास आया जाया करता था।

(३९४) उस अवसर पर निम्नाकित यात्रियो को खिलअत प्रदान किये गये। खुदावन्दजादा केवामुद्दीन, उसके भाई जियाउद्दीन, एमादुद्दीन तथा बुरहानुद्दीन, उनके भागिनेय अमीर बख्त बिन (पुत्र) सैयिद ताजुद्दीन जिसका दादा वजीहुद्दीन खुरासान का वजीर था और जिसका मामा अलाउद्दीन हिन्दुस्तान में अमीर तथा वजीर था, अमीर हैबतुल्लाह बिन (पुत्र)

(४०१) था एक घोडा भी प्रदान हुआ। इस देश मे घोडे चार श्रेणियो में विभाजित किये जाते है। उनकी जीनें मिस्री जीनो के समान होती है। उसके बहुत बड़े भाग पर चाँदी मढी रहती है और चाँदी पर सोने का मुलम्मा होता है।

तत्पश्चात् अमीर बख्त प्रविष्ट हुआ और सुल्तान ने आदेश दिया कि वह वज़ीर के साथ मसनद पर आसीन हुआ करे और दीवानो (सरकारी विभागो) के हिसाब किताब की जाँच किया करे। उसने उसके लिये ४०,००० वार्षिक वेतन निश्चित किया और उसे ४०,००० वार्षिक कर की मजाशीर (जागीर) प्रदान की गई। ४०,००० दीनार उसे नकद दिये गये। एक घोडा तथा खिलअत जैसा कि उल्लेख हो चुका है। उसे भी प्रदान किये गये। उसे शरफुलमुल्क की उपाधि भी प्रदान हुई। फिर हैबतुल्लाह बिन (पुत्र) फलकी प्रविष्ट हुआ। सुल्तान ने उसे रसूलदार नियुक्त किया अर्थात् हाजिबुल इरसाल[1]। उसका २४००० दीनार वार्षिक वेतन निश्चित हुआ और इस मूल्य की जागीर उसे प्रदान हुई। २४००० दीनार उसे (४०२) नकद दिये गये। एक घोडा ज़ीन आदि सहित तथा एक खिलअत भी उसे प्रदान हुआ और उसकी उपाधि बहाउलमुल्क रक्खी गई।

तत्पश्चात् मैं प्रविष्ट हुआ। सुल्तान महल की छत पर सिंहासन से टेक लगाये बैठा था। वज़ीर ख्वाजा जहाँ सामने था और मलिक कबीर कुबूला उसके समक्ष खडा था। जब मैं ने अभिवादन किया तो मलिक कबीर ने कहा, "अभिवादन करो, क्योंकि अख़ुन्द आलम ने तुम्हे राजधानी देहली का क़ाज़ी नियुक्त किया है। तुम्हारा वेतन १२००० दीनार वार्षिक निश्चित किया है और इस मूल्य की जागीर प्रदान कर दी है। तुम्हे १२००० दीनार नकद देने का भी आदेश हो गया है जो ईश्वर ने चाहा तो तुम्हे कल मिल जायेंगे। उसने तुम्हे एक घोडा ज़ीन तथा लगाम सहित प्रदान किया है और तुम्हें एक मेहराबी खिलअत भी मिलेगा।" इस खिलअत के सामने तथा पीछे मेहराब का चित्र बना था। मैने अभिवादन किया। जब वह मेरा हाथ पकड कर सुल्तान के सम्मुख ले गया तो सुल्तान ने कहा, "देहली के क़ाज़ी का पद कोई छोटा पद नही है। हम इसे बहुत बडा पद (४०३) समझते हैं।" मै उसकी बात समझता था किन्तु (फारसी में) ठीक से उत्तर न दे सकता था। सुल्तान भी अरबी समझता था किन्तु तेज़ी से बोल न सकता था अत. मै ने कहा 'ऐ मौलाना (स्वामी) मैं (इमाम) मालिक[2] के धर्म का अनुयायी हूं और यहाँ के लोग हनफी[3] हैं। इसके अतिरिक्त मै यहाँ वालों की भाषा से भी अनभिज्ञ हूँ।" उसने उत्तर दिया "मैंने बहाउद्दीन मुल्तानी तथा कमालुद्दीन बिजनौरी को तुम्हारा सहायक नियुक्त कर दिया है। वे तुम्हें परामर्श देते रहेगे। तुम्हे केवल समस्त कागज़ों पर अपनी मुहर लगानी होगी। तुम हमारे लिये पुत्र के समान हो।" मैं ने उत्तर दिया "मै आपका दास तथा सेवक हूँ।" फिर सुल्तान ने मेरे सम्मान के लिये बडी नम्रता से दयापूर्वक कहा, "नहीं तुम हमारे स्वामी तथा मालिक हो।" फिर उसने शरफुलमुल्क अमीर बख्त से कहा 'मैने इसके लिये जो वेतन निश्चित किया है यदि वह पर्याप्त न हो, क्योंकि यह बहुत व्यय करता है और अगर यह फकीरो की (४०४) देख भाल कर सके तो मैं इसे एक खानकाह भी प्रदान कर दूं।" शरफुलमुल्क से उसने

---

१ हाजिबुल इरसाल अथवा रसूलदार देश के राज्य तथा देश के बाहर के राज्यों से सम्पर्क स्थापित रखता था। वह एक प्रकार से राजदूतों का अधिकारी होता था।

२ मालिक बिन (पुत्र) अनस (मृत्यु ७९५ ई०) मदीने के बहुत बड़े फेकहवेत्ता थे। उनके द्वारा इस्लामी नियमों के मानने वाले मालकी कहलाते हैं और मिस्र तथा उत्तरी-पश्चिमी अफरीका मे बहुत बडी संख्या में पाये जाते हैं।

३ इमाम अबू हनीफा के मानने वाले हनफी कहलाते हैं। वे कूफे के निवासी थे और उनकी मृत्यु ७६७ ई० में हुई। वे बहुत बड़े विद्वान थे। हिन्दुस्तान के अधिकतर सुन्नी उन्हीं के अनुयायी हैं।

हा "यह बात इसमे अरबी में कहो।" उसका विचार था कि शरफुलमुल्क अरबी अच्छी ोलता है किन्तु यह बात न थी। जब सुल्तान ने यह देखा तो उसने कहा 'आज रात्रि में जा र एक स्थान पर सोओ और यह बात उससे कह कर भली भांति इसका अर्थ उसे समझा ो। कल इन्शा अल्लाह (ईश्वर ने चाहा) मेरे पास उपस्थित होकर मुझे बताओ कि वह या उत्तर देता है।"

हम लोग चले आये। एक तिहाई रात व्यतीत हो चुकी थी और नौबत बज चुकी थी। हाँ की यह प्रथा है कि नौबत बज जाने के उपरान्त कोई बाहर नहीं निकल सकता। हमने जीर के आने की प्रतीक्षा की। जब वह आ गया तो हम भी उसके साथ बाहर आये। देहली के द्वार बन्द हो चुके थे। इस लिये हम रात्रि में सैयिद अबुल हसन एबादी एराकी के घर में सरापुर ख़ाँ की गली में सो गये। यह शेख शाही धन से व्यापार करता था और (४०५) सुल्तान के लिये एराक तथा खुरासान में अस्त्र शस्त्र तथा अन्य सामग्री मोल लिया करता था। दूसरे दिन सुल्तान ने हमें बुलवाया और हमने धन, घोड़े तथा खिलअत प्राप्त किये। हम में से प्रत्येक ने धन के थैले अपने कन्धों पर रख लिये और हमने सुल्तान के सम्मुख उपस्थित होकर उसी प्रकार अभिवादन किया।[1] घोड़ो के खुरो पर कपडा डाल दिया गया था। हमने उनका चुम्बन किया और फिर लगाम पकड़ कर हम स्वय उनको सुल्तान के महल के द्वार पर ले गये और वहाँ उन पर सवार हुये और अपने घरों को चले गये। यह सब बातें यहाँ की प्रथा के अनुसार करनी होती हैं। सुल्तान ने मेरे साथियो को भी दो हज़ार दीनार और दस खिलअतें प्रदान किये किन्तु उसने किसी अन्य के साथी को कुछ न दिया क्योंकि मेरे साथियो ने अपने रूप से सुल्तान को बड़ा प्रभावित किया था और वह बड़ा प्रसन्न हुआ था। उन लोगो ने अभिवादन किया और सुल्तान ने आभार प्रकट किया।

सुल्तान का दूसरा उपहार और कुछ समय तक उसका प्राप्त न होना—

(४०६) काज़ी नियुक्त होने तथा उपहार प्राप्त करने के कुछ समय उपरान्त मे एक दिन सभा-कक्ष के प्रागण में एक वृक्ष के नीचे बैठा था। मेरे पास मौलाना नासिरुद्दीन तिरमिज़ी वाइज़[2], जो बड़े विद्वान् थे, बैठे थे। एक हाजिब आकर मौलाना नासिरुद्दीन को बुला ले गया। वह सुल्तान के सम्मुख उपस्थित हुआ। सुल्तान ने उसे एक खिलअत तथा एक कुरान प्रदान किया जिस पर जवाहरात जड़े थे। तत्पश्चात् एक हाजिब मेरे पास आया और उसने कहा, "अखुन्द आलम ने तेरे लिये १२००० दीनार का आदेश दिया है। यदि मुझे कुछ दिलवाओ तो मैं खत्ते खुर्द ले आता हूँ।" मुझे विश्वास न हुआ। मैं समझा वह मुझे छल कर कुछ प्राप्त करना चाहता है किन्तु जब उसने अपनी बात पर विशेष ज़ोर दिया तो मेरे एक साथी ने कहा, 'मैं उस कुछ दूगा।" उसने उसे दो तीन दीनार दिये और वह एक 'खत्ते खुद' अर्थात् छोटा आदश-पत्र ले आया। उस पर लिखा होता है "अखुन्द आलम का आदेश है कि अपरिमित राजकोष से अमुक व्यक्ति (४०७) को अमुक व्यक्ति के प्रमाण पर इतना धन दिया जायगा।" पहले उस पत्र पर प्रमाणित करने वाले अधिकारी के हस्ताक्षर होते हैं। तत्पश्चात् तीन अमीर उस पर हस्ताक्षर करते हैं अर्थात् खाने आज़म कुतलू (कुतलुग) खाँ, सुल्तान का गुरु, खरीतादार जो सुल्तान की लेखन सामग्री रखता है तथा अमीर नुकबिया दवादार अर्थात् सुल्तान की दावात रखने वाला। जब इनमें से प्रत्येक हस्ताक्षर कर लेता है तो वह पत्र वज़ीर के दीवान में भेजा जाता है। वहाँ दीवान के सचिव उसकी एक प्रति तैयार करके अपने कार्यालय में रखते हैं। इसके उपरान्त उसे दीवाने इशराफ तथा दीवाने नज़र में लिखा जाता है। तत्पश्चात् पर्वाना

१ अभिवादन के नियम का उल्लेख हो चुका है।
२ धार्मिक प्रवचन करने वाले।

जाय" किन्तु उसने घूस के लोभ में खत्ते खुर्द लिखने में विलम्ब किया। मैं ने उसे २०० तन्के भेजे किन्तु उसने स्वीकार न किये और उन्हे वापस करा दिये। उसके एक सेवक ने उसकी (४१४) ओर से मुझ से कहा कि वह ५०० तन्के मांगता है। मै ने देना स्वीकार न किया और एमादुद्दीन सिमनानी के पुत्र अमीदुलमुल्क को इस बात की सूचना कर दी। उसने अपने पिता से यह बात कही और उसके पिता ने वजीर से। वजीर तथा खुदावन्द जादा में न बनती थी। उसने सुल्तान से निवेदन कर दिया और उसके साथ अन्य शिकायतें भी की। सुल्तान उससे रुष्ट हो गया और उसको नगर में बन्द करा दिया। सुल्तान ने कहा 'अमुक व्यक्ति उसे क्यो घूस देता था। इस आदेश को उस समय तक स्थगित कर दो जब तक यह पता न चल जाय कि खुदावन्द जादा जिसके विषय में मै मना करता हूँ उसे कुछ दे देता है अथवा मेरे आदेश पर देने से मना कर देता है।" इस प्रकार मेरे ऋण की अदायगी स्थगित हो गई।

शिकार के लिए सुल्तान का बाहर जाना, मेरा उसके साथ जाना, तथा उस अवसर पर जो कुछ मैंने किया—

जब सुल्तान शिकार के लिये बाहर गया तो मै भी उसके साथ हो लिया। मैंने सब कुछ तैयारी पहले ही करली थी। हिन्दुस्तानियो की प्रथा के अनुसार मैंने एक सिराचा अर्थात् (४१५) अफराज (मडप) मोल ले लिया था। वहा प्रत्येक मनुष्य सिराचा लगा सकता है और बडे बडे अधिकारियो के लिये तो यह अत्यावश्यक है। सुल्तान का सिराचा लाल रग का होता है। अन्य श्वेत रग के होते हैं और उन पर नीले रग का काम होता है। मैंने सीवान भी मोल ले लिया। यह एक प्रकार का शामियाना होता है, जिसे सिराचे (डेरे) में छाये के लिये लगाया जाता है। यह दो बडे बाँसो पर खडा किया जाता है। सब सामान कवानी अपने कन्धो पर ले जाते हैं। यहाँ यह प्रथा है कि यात्री केवानी किराये पर रख लेते हैं। इनका उल्लेख पहले हो चुका है। इसी प्रकार पशुओ के लिये हरा चारा लाने के लिये लोग नौकर रख लिये लिए जाते हैं क्योकि हिन्दुस्तानी पशुओं को सूखी घास नही खिलाते। कहार भी किराये पर रक्खे जाते हैं। ये लोग भोजन पकाने के बर्तन ले जाते हैं। इसके अतिरिक्त डोला अर्थात् पालकी ले जाने के लिये भी यही लोग नौकर रक्खे जाते हैं। वे खाली पालकी भी ले जाते हैं। फर्राश भी नौकर रख लिये जाते हैं। वे सिराचा खडा करते हैं और उसमें फर्श बिछाते हैं और सामान को ऊँटों पर लादते हैं। दवादवी भी नौकर रक्खे जाते हैं जो आगे (४१६) आगे दौडते हैं और रात्रि में मशाल लेकर चलते हैं। मैंने सभी प्रकार के नौकर किराये पर रख लिये और इतनी तेजी का प्रदर्शन किया कि मैं भी उसी दिन, जिस दिन सुल्तान ने नगर छोडा, नगर से चल दिया। अन्य लोग दो-दो, तीन-तीन दिन पश्चात् आये।

प्रस्थान करने के दिन अस्र की नमाज के उपरान्त सुल्तान अपने अधिकारियों के विषय में पता लगाने के लिए, कि कौन कौन तैयार है, किस किस ने शीघ्र तैयारी की और किस किस ने देर की, हाथी पर सवार होकर जाने वाला था। सर्व प्रथम वह सिराचा के बाहर एक कुर्सी पर आसीन हुआ। मैंने पहुच कर अभिवादन किया और दाहिनी ओर अपने निश्चित स्थान पर खडा हो गया। उसने मलिक कबीर कुबूला सरजामादार[1] को भेजा उसका कार्य सुल्तान पर से मक्खियां उड़ाना है। उसने कहा कि 'सुल्तान का आदेश है कि बैठ जाओ।' यह सुल्तान की विशेष कृपा थी अन्यथा उस दिन मेरे अतिरिक्त किसी को भी बैठने की अनुमति न प्राप्त हुई थी। इतने में हाथी भी आ पहुँचा। सीढी लगाई गई और (४१७) सुल्तान उस पर सवार हुआ। उसके सिर पर चत्र लगाया गया। सुल्तान के मुख्य

१ शाही वस्त्रों का मुख्य प्रबन्धक। सरजानदार अधिक उपयुक्त है।

अधिकारी भी सवार हुये। थोडी देर निरीक्षण के उपरान्त सुल्तान सिराचा (शिविर) में लौट आया।

यहाँ यह प्रथा है कि जब सुल्तान सवार होता है तो प्रत्येक अमीर अपनी अपनी सेना लेकर सवार होता है। सेना के साथ पताका, ढोल, नफीरी तथा सरना भी होती हैं। यह सब वस्तुयें मरातिब कहलाती हैं। सुल्तान के सामने हाजिबो, अहले तरब (नाचने गाने वालो), तबलचियों (गले में तबले लटकाये हुये) तथा सरना बजाने वालो के अतिरिक्त कोई भी सवार होकर नही चलता। सुल्तान के दाहिनी ओर १५ व्यक्ति होने हैं और इतने ही मनुष्य बाईं ओर होते हैं। इनमें काजी-उल-कुज्जात, (मुख्य काजी) वजीर, बडे बडे अमीर तथा अजीज (परदेशी) होते हैं। मै भी दाहिनी ओर वालो में से था। सुल्तान के सामने पदाती तथा मार्ग प्रदर्शन करने वाले होते हैं। उनके पीछे पताकायें होती हैं। वे रेशम की होती हैं और उन पर सोने का काम होता है। ढोल ऊँट पर होते हैं। उनके पीछे शाही दास तथा (४१८) सेवक होते है। उनके पीछे अमीर तथा अन्य सैनिक होते हैं। किसी को यह बात ज्ञात नही होती कि उसे कहाँ ठहरना है। जब सुल्तान किसी ऐसे स्थान पर पहुँचता है जहाँ वह अपना शिविर लगाना चाहता है तो वह रुक जाने का आदेश दे देता है। उसके सिराचे (शिविर) के पूर्व कोई सिराचा नही लगाया जा सकता। तत्पश्चात् शिविर के प्रबन्ध करने वाले अधिकारी प्रत्येक के लिए स्थान निश्चित करते हैं। सुल्तान किसी नदी तट पर अथवा वृक्षो के मध्य में ठहर जाता है। उसके समक्ष भेड का माँस, मोटे ताजे पक्षी, सारस तथा अन्य प्रकार के शिकार लाये जाते हैं। मलिको के पुत्र उपस्थित होते हैं। प्रत्येक के हाथ में मास भूनने की एक शलाका होती है। वे आग जलाते तथा मास भूनते हैं। तत्पश्चात् सुल्तान के लिये एक छोटा सा सिराचा (डेरा) लगता है। वह उसके बाहर आसीन होता है। उसके मुख्य अधिकारी उसके पास बैठ जाते हैं। जब भोजन का प्रबन्ध होता है तो वह जिसे चाहता है भोजन के लिये बुला लेता है।

एक दिन जब सुल्तान सिराचे (शिविर) के भीतर था, उसने पुछवाया कि बाहर कौन-(४१९) कौन लोग हैं। सैयिद नासिरुद्दीन मुतहर अवहरी ने, जो उसका एक नदीम (मुसाहिब) था, कहा कि अमुक मगरबी खडा है और बडे कष्ट में है। सुल्तान ने पूछा 'क्यो?' उसने उत्तर दिया "अपने ऋण के कारण, क्योकि उसके ऋणदाता अपना ऋण मागते हैं। अखुन्द आलम[1] ने वजीर को आदेश दिया था कि ऋण अदा कर दिया जाय किन्तु वह अदा करने के पूर्व ही चला गया। या तो अखुन्द आलम ऋण दाताओ को आदेश दे दें कि वे वजीर के आने तक प्रतीक्षा करें और उसे कष्ट न दें या उनका ऋण चुका द।" उस समय मलिक दौलत शाह भी उपस्थित था। सुल्तान उसे चाचा कहा करता था। उसने कहा "अखुन्द आलम यह रोज हमसे कुछ न कुछ अरबी में कहा करता है किन्तु मै इसकी बात नही समझता है। सैयिदी (मेरे स्वामी) नासिरुद्दीन तुम्हें कुछ ज्ञात है?" उसने यह बात इस आशय से कही थी कि नासिरुद्दीन अपनी बात फिर दुहरा दे। नासिरुद्दीन ने कहा, 'वह अपने ऋण के विषय में, जो उसने ले रखा है, निवेदन किया करता है। सुल्तान ने कहा "जब हम लाग राजधानी को वापस हो तो 'हे चाचा, तुम स्वय जाकर राजकोष से यह धन दिलवा (४२०) देना।' खुदावन्द जादा भी इस समय उपस्थित था। उसने कहा, 'अखुन्द आलम[1] यह बडा अपव्ययी है। में इसे अपने देश में इसके पूर्व मुल्तान तुर्माशीरीन[1] के दरबार में देख चुका हूँ।

१ तुर्माशीरीन—ट्रान्साक्सियाना का चगताई बादशाह। १३२६ ई० में मंगोल सुल्तान अबू सईद (१३१६ ३५ ई०) के बहनोई अमीर चोबा ने अपने पुत्र हसन को काबुल तथा काबुल पर आक्रमण करने के लिये भेजा। तुर्माशीरीन उस समय खुरासान पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा था किन्तु हसन द्वारा पराजित होकर वह भाग खडा हुआ और हिन्दुस्तान पहुँचा।

इस वार्तालाप के उपरान्त सुल्तान ने मुझे भोजन के ,लिए बुलवाया। मुझे ज्ञात न था कि मेरे विषय में क्या वार्त्ता हुई है। जब मैं बाहर आया तो सैयिद नासिरुद्दीन ने कहा कि, "मलिक दौलत शाह का कृतज्ञ हो" और दौलत शाह ने मुझ से कहा, "खुदावन्द जादा का आभारी हो।"

इन्हीं दिनों में जब हम सुल्तान के साथ शिकार में थे तो वह घोड़े पर सवार होकर शिविर से जाया करता था। वह एक दिन मेरे डेरे की ओर निकल खड़ा हुआ। मैं दाहिनी ओर था और मेरे साथी पीछे पीछे थे। मेरे सिराचा के निकट मेरा एक खेमा था। मेरे सिराचे के पास मेरे कुछ साथी खड़े थे। मेरे साथियों ने वहाँ ठहर कर सुल्तान के समक्ष अभिवादन किया। उसने एमादुलमुल्क तथा मलिक दौलत शाह को भेज कर पुछवाया कि वे किसके शिविर हैं। उन्हें बताया गया कि वे अमुक व्यक्ति के हैं। जब उन्होंने सुल्तान को इसकी सूचना दी तो वह मुसकराया। दूसरे दिन उसने आदेश दिया कि मैं नासिरुद्दीन मुतहर अवहरी, मिस्र के (४२१) क़ाज़ी का पुत्र तथा मलिक सबीह के साथ वापस चला जाऊँ। हमें खिलअत प्रदान किये गये। इस प्रकार हम लोग राजधानी को लौट आये।

मैं ने सुल्तान को उपहार में ऊँट दिया—

शिकार की यात्रा में सुल्तान ने मुझ से पूछा था कि "मलिकुन्नासिर ऊँट पर सवार होता है अथवा नहीं।" मैं ने उत्तर दिया "वह हज के समय महारी ऊटों पर सवार होकर दस दिन में मिस्र से मक्का पहुँच जाता है किन्तु वह ऊँट इस देश के ऊँटों के समान नहीं होते।" मैं ने कहा 'मेरे पास एक महारी ऊँट है " जब मैं राजधानी को वापस हुआ तो मैं ने एक मिस्री अरब को बुलवाया। उसने महारी ऊँटों पर प्रयोग में आने वाली काठी का मोम का एक नमूना तैयार किया। मैं ने उसे एक बढ़ई को दिखलाया। उसने बड़ी कुशलता से उसी नमूने की एक काठी तैयार की। मैं ने उसे बानात से मढ़वाया और उसमें रिकाब लगवाये। मैं ने ऊँट पर एक बड़ा सुन्दर पट्टीदार झूल डलवाया और उसकी नाक के लिये रेशम की डोरी तैयार कराई। मेरे पास यमन का एक निवासी था। वह हलवा बनाने में बड़ा दक्ष था। (४२२) उसने कुछ ऐसे हलवे तैयार कराये जो खजूर के समान थे और कुछ अन्य वस्तुओं के।

मैने ऊँट तथा हलवा सुल्तान की सेवा में भेज दिये। ले जाने वाले से कहा, "यह वस्तुयें मलिक दौलत शाह को देना।" मैने उसे भी एक घोड़ा तथा दो ऊँट भेजे। जब यह वस्तुयें उसको प्राप्त हुईं तो वह सुल्तान के पास पहुँचा और उसने कहा, "अखुन्द आलम! मैने एक विचित्र वस्तु देखी हैं।" सुल्तान के पूछने पर उसने कहा, "अमुक व्यक्ति ने एक ऊँट भेजा है जिस पर काठी है।" सुल्तान ने कहा "उसे मेरे समक्ष लाओ।" ऊँट सिराचा (शिविर) के भीतर ले जाया गया। सुल्तान उसे देख कर प्रसन्न हुआ और उसने मेरे आदमी से कहा "इस पर सवार हो।" वह सवार हुआ और उसने ऊट को सुल्तान के सम्मुख चलाया। सुल्तान ने उसे चाँदी के २०० दीनार दराहिम (तन्के) तथा एक खिलअत प्रदान किया। जब आदमी ने लौट कर सब हाल बताया तो मैं बड़ा प्रसन्न हुआ। मैं ने सुल्तान को राजधानी में वापस आने पर दो ऊँट और भेंट किये।

सुल्तान को दो ऊँट तथा हलवा फिर भेंट करना, ऋण के अदा करने का आदेश—

(४२३) जब मेरा आदमी ऊँट भेंट करके लौट आया और उसके विषय में सब हाल बताया तो मैंने दो ऊँटों की काठियाँ और तैयार कराईं। उनके अग्रिम और पृष्ठ भागों को रजत पत्रों से मढ़वाया और उन पर सोने का मुलम्मा कराया और दोनों को बानात से मढ़वाया

और उस पर रजत-पत्र चढवाये। दोनो ऊँटो के लिए झूल, जिनमें किम्खाब का अस्तर था, तैयार कराया। दोनो ऊँटों के पैरो में चाँदी के मुलम्मे की झाँझे पहनाईं। हलवे के ११ थाल तैयार कराये। प्रत्येक थाल को रेशम के रूमाल से ढकवा दिया।

सुल्तान ने शिकार से लौट कर दूसरे दिन जब दरबारे आम किया तो मैं शीघ्र उपस्थित होकर ऊँटो को उसके समक्ष ले गया। उसके आदेशानुसार वे उसके सम्मुख चलाये गये। जब वे दौड रहे थे तो एक के पाँव की झाँझ गिर गई। उसने बहाउद्दीन बिन (पुत्र) (४२४) फलकी को आदेश दिया कि "पायल बरदारी[1]"। उसने झाँझ उठाली। फिर सुल्तान ने थालो की ओर देखा और पूछा "चे दारी दरआँ तबकहा ? हलवा अस्त[2]" मैंने कहा, 'हाँ"। तत्पश्चात् उसने फकीह नासिरुद्दीन तिर्मिज़ी वाइज़ से कहा 'मैंने इस प्रकार का हलवा जैसा इसने शिविर में भेजा था, न तो खाया और न देखा है।" फिर उसने आदेश दिया कि "थाल उसके विशेष बैठने के स्थान पर पहुचा दिये जायें।" सुल्तान दरबार से उठ कर उस स्थान पर पहुचा और मुझे भी बुलवाया। भोजन लाया गया और मैंने भी भोजन किया।

सुल्तान ने एक हलवे के विषय में जो मैंने इसमे पूर्व उसके पास भेजा था पूछा कि "उसका क्या नाम था ?" मैंने कहा, "अखुन्द आलम ! हलवे नाना प्रकार के थे। मुझे ज्ञात नही कि आपका तात्पर्य किस हलवे से है।" सुल्तान ने कहा "वह तबाक़ (थाल) लाओ।" ये (४२५) लोग तँफर को तबाक (थाल) कहते हैं। जब वह थाल लाया गया और रूमाल हटाया गया तो उसने कहा, "मैं इस हलवे के विषय में पूछ रहा था।" और थाल अपने हाथ में ले लिया। मैंने निवेदन किया कि "इसे मुकर्रसा कहते हैं।" फिर उसने दूसरे प्रकार का हलवा हाथ में लेकर पूछा, 'इसका क्या नाम है ?" मैंने उत्तर दिया "इसको लुकेमातुल क़ाज़ी कहते हैं।" उस समय एक व्यापारी जो बगदाद का शेख था सुल्तान के समक्ष बैठा था। वह सामिरी के नाम से प्रसिद्ध था। वह अपने आपको अब्बास की संतान बताता था और बडा धनी था। सुल्तान उसे पिता कहा करता था। वह मुझसे ईर्ष्या रखता था। उसने मुझे लज्जित करने के लिए कहा 'यह लुकेमातुल काज़ी नही।" उसने एक अन्य हलवे को उठा कर, जिसका नाम जल्दुलफरस था, कहा "लुकेमातुल क़ाज़ी इसे कहते हैं।" उसके सम्मुख मलिकुन्नुदमा नासिरुद्दीन काफी हरवी जो शेख से सुल्तान के सम्मुख परिहास की वार्त्ता किया करता था आसीन था। उसने कहा "ख्वाजा आप झूठ बोलते हैं और काज़ी सत्य कहता है।" सुल्तान ने उससे पूछा, 'किस प्रकार ?" उसने उत्तर दिया "अखुन्द आलम ! यह काज़ी है और (४२६) अपने लुकमो (ग्रास) को अन्य लोगो की अपेक्षा अधिक जानता है।" सुल्तान ने हँस कर कहा "ठीक है।"

भोजन के पश्चात् हलवा खाया गया और फिर फुक्का पिया गया। अन्त में पान खा कर हम बाहर चले आये। थोडी देर में कोषाध्यक्ष ने आकर कहा "अपने आदमियो को भेज दो ताकि वे धन ले आये।" मैंने अपने आदमी उसके साथ कर दिये। जब मैं सन्ध्या समय अपने आवास पर लौटा तो तीन थैलों में ६२३३ (सोने के) तन्के थे। जो ५५००० तन्के (चाँदी) के बराबर थे, जो मुझे ऋण के अदा करने थे। इसके अतिरिक्त १२००० तन्को के पुरस्कार का सुल्तान द्वारा पहले ही आदेश हो चुका था। यह धन प्रथा के अनुसार 1/१० काटने के पश्चात् प्रदान हुआ। तन्का मग़रिब के ढाई सोने के दीनार के बराबर होता है।

सुल्तान का प्रस्थान और मेरे लिये राजधानी में रहने का आदेश होना–

(४२७) ९ जमादी-उल-अव्वल (२१ अक्तूबर, १३४१ ई०) को सुल्तान माबर की

१ झाँझ उठा।

२ इन थालों में क्या है ? हलवा है।

व्यय ३५ मन आटा, ३५ मन माँस तथा उसी के अनुसार शकर, मिश्री, घी और पान (४३४) निश्चित कर दिया। केवल वेतन पाने वालो ही को भोजन न मिलता था, अपितु यात्रियो तथा आगन्तुको को भी भोजन प्रदान होता था। उस समय अकाल बडा प्रचड था, किन्तु लोगो को मेरे इस (प्रबन्ध) के कारण बडी सुविधा हो गई और यह समाचार दूर दूर तक प्रसारित हो गये। जब मलिक सबीह सुल्तान के पास दौलताबाद पहुँचा और सुल्तान ने देहली के लोगो का हाल पूछा तो उसने उत्तर दिया कि, "यदि देहली में अमुक व्यक्ति के समान दो आदमी और भी होते तो अकाल से किसी को कोई कष्ट न होता।" सुल्तान इस पर बडा प्रसन्न हुआ और उसने अपने निजी प्रयोग का खिलअत मेरे लिये भेजा।

मैं दोनो ईदो,[1] मुहम्मद साहब के जन्म के दिन,[2] आशूरे (१० मुहर्रम) के दिन[3], शबरात, तथा सुल्तान कुतुबुद्दीन के मृत्यु के दिन १०० मन आटा और उतना ही मास पकवाता था और दरिद्रो तथा दीनो को भोजन कराता था। बडे बडे आदमियो के लिये (४३५) भोजन का पृथक् प्रबन्ध होता था। इस प्रथा का अब उल्लेख किया जाता है।

वलीमा (विशिष्ट भोजनों) में खाने के प्रबन्ध का उल्लेख—

हिन्दुस्तान तथा सरा[4] में प्रथा है कि जब वलीमा (विशिष्ट भोजन) हो चुकता है तो प्रत्येक शरीफ सैयिद, फकीह, सूफी तथा काज़ी के सम्मुख एक ख्वान (थाल) लाकर रक्खा जाता है। वह झूले के समान होता है। उसके नीचे चार पाये होते हैं और वह खजूर के तन्तु से बुना होता है। सर्व प्रथम उसमें चपातियाँ रखते हैं। उसके ऊपर एक भुना हुआ भेड का सिर और चार टिकियाँ जिनके भीतर साबूनिया मिठाई भरी होती है और उन पर चार हलवे के टुकडे रक्खे जाते हैं। चमडे की दो छोटी थालियो में हलवे तथा समोसे होते हैं। इन सब वस्तुओ को रख कर एक सूती रूमाल से ढाक दिया जाता है। जो लोग इनसे नीची श्रेणी के होते हैं उन्हें भेड का आधा सिर दिया जाता है और इसे ज़ल्ला कहते हैं। (४३६) इसी प्रकार इन्हें समस्त सामग्री केवल आधी दी जाती है। जो इनसे भी कम श्रेणी के होते हैं उनको इसके चतुर्थांश के बराबर मिलता है। प्रत्येक व्यक्ति के, जिसके सम्मुख ख्वान रक्खा जाता है सेवक इसे उठा कर ले जाते हैं। सर्व प्रथम मैंने यह प्रथा सरा नगर में देखी जो सुल्तान ऊज़बक की राजधानी है। मैंने इस प्रथा से अनभिज्ञ होने के कारण अपने सेवको को इसे उठाने से रोक दिया था। इसी प्रकार अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों के घर वलीमे (विशिष्ट भोज) का भोजन भेजा जाता है।

हज़ार अमरोहा की यात्रा—

सुल्तान के आदेशानुसार वज़ीर ने खानकाह के लिये निर्धारित अनाज में से १०,००० मन अनाज दे दिया और शेष के लिये लिख दिया कि हज़ार[5] अमरोहा के एलाके से दिया जाय। वहाँ का वालिये खराज (कर का प्रबन्धक) अज़ीज खम्मार था और वहाँ का अमीर (अधिकारी) शम्सुद्दीन बदख्शानी था। मैंने अपने कुछ आदमी भेजे। उन्होने कुछ तो बताये

१ ईद तथा बकरईद।

२ १२ रबी-उल-अव्वल साधारणतया मुहम्मद साहब का जन्म दिन माना जाता है। उस दिन मुसलमानों के यहाँ बड़ा समारोह होता है।

३ मुहम्मद साहब के नाती इमाम हुसेन के शहीद होने का दिन अर्थात् १० मुहर्रम।

४ ख्वारिज़्म से हिन्दुस्तान के मार्ग में क़िपचाक़ के खानों की राजधानी।

५ १००० ग्रामों अथवा उससे कुछ कम या अधिक का एक समूह जो प्रबन्ध की सुविधा के लिये बनाया जाता था। ऐसा ज्ञात होता है कि अमरोहा इन ग्रामों का केन्द्र था। अमरोहा उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद ज़िले में है।

हुए अनाज में से प्राप्त कर लिया, किन्तु अज़ीज़ ख़म्मार की धूर्तता की शिकायत की। अत (४३७) शेष अनाज प्राप्त करने के लिये मैं स्वय गया। देहली से इस स्थान तक पहुँचने में तीन दिन यात्रा करनी पडती है। वर्षा ऋतु थी। मैंने अपने साथ अपने ३० आदमी लिये। दो गायक भी अपने साथ ले लिये। वे दोनो भाई थे। वे मार्ग में मुझे गाना गा गाकर सुनाते थे। जब हम बिजनौर पहुँचे तो तीन अन्य गायक मिले। वे तीनों भी भाई थे। मैंने उन लोगो को भी साथ ले लिया। वे और पहले वाले दोनो गायक मुझे बारी बारी गाना गा गा कर सुनाते थे।

फिर हम अमरोहा पहुचे। यह छोटा सा सुन्दर नगर है। वहाँ के अधिकारी मेरे स्वागतार्थ आये। नगर का काज़ी शरीफ (सैयिद) अमीर अली तथा खानकाह के शेख[1] भी आये। इन लोगों ने मिल कर मेरे लिये एक बडे अच्छे भोज का प्रबन्ध किया। अज़ीज़ ख़म्मार सरयू नदी के तट पर स्थित अफ़गानपुर नामक स्थान पर था। यह नदी हमारे तथा अफ़गानपुर के बीच में थी। कोई नाव वहाँ उपलब्ध न थी। हमने लकडी के तख़्तों (४३८) तथा घास फूस से बेडा तैयार कराया और उसमें अपना सामान रक्खा और दूसरे दिन नदी के पार हुये। अज़ीज़ का भाई नजीब अपने कुछ साथियो को लेकर हमारे स्वागतार्थ आया और हमारे लिये एक सिराचा (शिविर) लगवाया। तत्पश्चात् उसका भाई वाली आया। वह अपने अत्याचार के कारण बडा कुप्रसिद्ध था। उसके अधीन १५०० ग्राम थे और उनका वार्षिक कर ६० लाख (चाँदी के तन्के) था। इसका बीसवाँ भाग उसे प्राप्त होता था।

जिस नदी के किनारे हमारे शिविर लगे उसकी एक विचित्र विशेषता यह थी कि कोई भी वर्षा में उसका जल न पीता था और न किसी पशु को पिलाता था। हम उस नदी तट पर तीन दिन तक ठहरे रहे और हममें से किसी ने भी उसमें से एक घूट जल न पिया और न उसके निकट ही गये। इसका कारण यह है कि इसका उद्गम कराचिल पर्वत (हिमालय) में है जहाँ सोने की खानें हैं और यह विषैली घासों में से होकर बहती है, अत. जो (४३९) कोई भी इसका जल पीता है उसकी मृत्यु हो जाती है। यह पर्वत तीन मास की यात्रा के विस्तार में फैला है और उसके दूसरी ओर तिब्बत है जहाँ कस्तूरी वाले मृग पाये जाते हैं। हम उस दुर्घटना का उल्लेख कर चुके हैं जो इस पर्वत में मुसलमानो की सेना के साथ घटित हुई थी। इस स्थान पर मेरे पास हैदरी फकीरो का एक समूह आया। उन्होने सर्व प्रथम समा[2] सुना और फिर आग जलवाई और आग में घुस गये और उन्हे कोई हानि न हुई। इसका भी उल्लेख मैं इससे पूर्व कर चुका हूँ।

इस नगर के अमीर (मुख्य सैनिक अधिकारी) शम्सुद्दीन बदख़शानी तथा वाली अज़ीज़ ख़म्मार में विरोध उत्पन्न हो गया था। शम्सुद्दीन उससे युद्ध करने के लिये सेना लेकर निकला। वह (अज़ीज़) रक्षा के लिये अपने घर में घुस गया। जब उनमें से एक की शिकायत वज़ीर के पास देहली पहुँची तो वज़ीर ने मुझे, मलिक शाह अमीर ममालिक[3] जो अमरोहे में था और जिसके अधीन ४,००० शाही दास थे तथा शिहाबुद्दीन रूमी को लिखा कि "इन दोनों (४४०) के झगडे की पूछताछ करलो और जिसका अपराध हो, उसे बन्दी बना कर देहली भेज दो।" वे सब मेरे घर में एकत्र हुये। अज़ीज़ ने शम्सुद्दीन पर अनेक दोषारोपण किये। उनमें से एक यह था कि उसके एक सेवक रज़ी मुल्तानी ने उपर्युक्त अज़ीज़ के कोषाध्यक्ष के

१ मुख्य प्रबन्धक।

२ सूफ़ियों का सगीत तथा नृत्य।

३ दासों के अधिकारी।

व्यय ३५ मन आटा, ३५ मन मांस तथा उसी के अनुसार शकर, मिश्री, घी और पान (४३४) निश्चित कर दिया। केवल वेतन पाने वालो ही को भोजन न मिलता था, अपितु यात्रियो तथा आगन्तुको को भी भोजन प्रदान होता था। उस समय अकाल बडा प्रचड था, किन्तु लोगो को मेरे इस (प्रबन्ध) के कारण बडी सुविधा हो गई और यह समाचार दूर दूर तक प्रसारित हो गये। जब मलिक सबीह सुल्तान के पास दौलताबाद पहुँचा और सुल्तान ने देहली के लोगो का हाल पूछा तो उसने उत्तर दिया कि, "यदि देहली में अमुक व्यक्ति के समान दो आदमी और भी होते तो अकाल से किसी को कोई कष्ट न होता।" सुल्तान इस पर बडा प्रसन्न हुआ और उसने अपने निजी प्रयोग का खिलअत मेरे लिये भेजा।

मै दोनो ईदो,[1] मुहम्मद साहब के जन्म के दिन,[2] आशूरे (१० मुहर्रम) के दिन[3], शबरात, तथा सुल्तान कुतुबुद्दीन के मृत्यु के दिन १०० मन आटा और उतना ही मास पकवाता था और दरिद्रो तथा दीनों को भोजन कराता था। बडे बडे आदमियो के लिये (४३५) भोजन का पृथक् प्रबन्ध होता था। इस प्रथा का अब उल्लेख किया जाता है।

वलीमा (विशिष्ट भोजनों) मे खाने के प्रबन्ध का उल्लेख—

हिन्दुस्तान तथा सरा[4] मे प्रथा है कि जब वलीमा (विशिष्ट भोजन) हो चुकता है तो प्रत्येक शरीफ सैयिद, फकीह, सूफी तथा काजी के सम्मुख एक स्वान (थाल) लाकर रक्खा जाता है। वह झूले के समान होता है। उसके नीचे चार पाये होते हैं और वह खजूर के तन्तु से बुना होता है। सर्व प्रथम उसमें चपातियाँ रखते हैं। उसके ऊपर एक भुना हुआ भेड का सिर और चार टिकियां जिनके भीतर साबूनिया मिठाई भरी होती है और उन पर चार हलवे के टुकडे रक्खे जाते हैं। चमडे की दो छोटी थालियो में हलवे तथा समोसे होते हैं। इन सब वस्तुओ को रख कर एक सूती रूमाल से ढाक दिया जाता है। जो लोग इनसे नीची श्रेणी के होते हैं, उन्हें भेड का आधा सिर दिया जाता है और इसे जल्ला कहते हैं। (४३६) इसी प्रकार इन्हें समस्त सामग्री केवल आधी दी जाती है। जो इनसे भी कम श्रेणी के होते हैं उनको इसके चतुर्थांश के बराबर मिलता है। प्रत्येक व्यक्ति के, जिसके सम्मुख स्वान रक्खा जाता है सेवक इसे उठा कर ले जाते हैं। सर्व प्रथम मैने यह प्रथा सरा नगर में देखी जो सुल्तान ऊजबक की राजधानी है। मैंने इस प्रथा से अनभिज्ञ होने के कारण अपने सेवको को इसे उठाने से रोक दिया था। इसी प्रकार अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियो के घर वलीमे (विशिष्ट भोज) का भोजन भेजा जाता है।

हज़ार अमरोहा की यात्रा—

सुल्तान के आदेशानुसार वज़ीर ने खानकाह् के लिये निर्धारित अनाज में से १०,००० मन अनाज दे दिया और शेष के लिये लिख दिया कि हज़ार[5] अमरोहा के एलाके से दिया जाय। वहाँ का वालिये खराज (कर का प्रबन्धक) अज़ीज़ खम्मार था और वहाँ का अमीर (अधिकारी) शम्सुद्दीन बदखशानी था। मैंने अपने कुछ आदमी भेजे। उन्होने कुछ तो वताये

१ ईद तथा बकरईद।

२ १२ रबी-उल अव्वल साधारणतया मुहम्मद साहब का जन्म दिन माना जाता है। उस दिन मुसलमानों के यहाँ बड़ा समारोह होता है।

३ मुहम्मद साहब के नाती इमाम हुसैन के शहीद होने का दिन अर्थात् १० मुहर्रम।

४ ख्वारिज़्म से हिन्दुस्तान के मार्ग में क़िपचाक़ के खानों की राजधानी।

५ १००० ग्रामों अथवा उससे कुछ कम या अधिक का एक समूह जो प्रबन्ध की सुविधा के लिये बनाया जाता था। ऐसा ज्ञात होता है कि अमरोहा इन ग्रामों का केन्द्र था। अमरोहा उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले में है।

हुए अनाज मे से प्राप्त कर लिया, किन्तु अजीज खम्मार की धूर्तता की शिकायत की। अत (४३७) शेष अनाज प्राप्त करने के लिये मैं स्वय गया। देहली से इस स्थान तक पहुँचने में तीन दिन यात्रा करनी पडती है। वर्षा ऋतु थी। मैंने अपने साथ अपने ३० आदमी लिये। दो गायक भी अपने साथ ले लिये। वे दोनो भाई थे। वे मार्ग में मुझे गाना गा गाकर सुनाते थे। जब हम बिजनौर पहुँचे तो तीन अन्य गायक मिले। वे तीनो भी भाई थे। मैंने उन लोगो को भी साथ ले लिया। वे और पहले वाले दोनो गायक मुझे बारी बारी गाना गा गा कर सुनाते थे।

फिर हम अमरोहा पहुचे। यह छोटा सा सुन्दर नगर है। वहाँ के अधिकारी मेरे स्वागतार्थ आये। नगर का काजी शरीफ (सैयिद) अमीर अली तथा खानकाह के शेख[1] भी आये। इन लोगों ने मिल कर मेरे लिये एक बडे अच्छे भोज का प्रबन्ध किया। अजीज खम्मार सरयू नदी के तट पर स्थित अफगानपुर नामक स्थान पर था। यह नदी हमारे तथा अफगानपुर के बीच में थी। कोई नाव वहाँ उपलब्ध न थी। हमने लकडी के तख्तो (४३८) तथा घास फूस से बेडा तैयार कराया और उसमें अपना सामान रक्खा और दूसरे दिन नदी के पार हुये। अजीज का भाई नजीब अपने कुछ साथियो को लेकर हमारे स्वागतार्थ आया और हमारे लिये एक सिराचा (शिविर) लगवाया। तत्पश्चात् उसका भाई वाली आया। वह अपने अत्याचार के कारण बडा कुप्रसिद्ध था। उसके अधीन १५०० ग्राम थे और उनका वार्षिक कर ६० लाख (चाँदी के तन्के) था। इसका बीसवाँ भाग उसे प्राप्त होता था।

जिस नदी के किनारे हमारे शिविर लगे उसकी एक विचित्र विशेषता यह थी कि कोई भी वर्षा में उसका जल न पीता था और न किसी पशु को पिलाता था। हम उस नदी तट पर तीन दिन तक ठहरे रहे और हममें से किसी ने भी उसमें से एक घूंट जल न पिया और न उसके निकट ही गये। इसका कारण यह है कि इसका उद्गम कराचिल पर्वत (हिमालय) में है जहाँ सोने की खानें हैं और यह विषैली घासों में से होकर बहती है, अत जो (४३९) कोई भी इसका जल पीता है उसकी मृत्यु हो जाती है। यह पर्वत तीन मास की यात्रा के विस्तार में फैला है और उसके दूसरी ओर तिब्बत है जहाँ कस्तूरी वाले मृग पाये जाते हैं। हम उस दुर्घटना का उल्लेख कर चुके हैं जो इस पर्वत में मुसलमानो की सेना के साथ घटित हुई थी। इस स्थान पर मेरे पास हैदरी फकीरो का एक समूह आया। उन्होने सर्व प्रथम समा[2] सुना और फिर आग जलवाई और आग में घुस गये और उन्हें कोई हानि न हुई। इसका भी उल्लेख मैं इससे पूर्व कर चुका हूँ।

इस नगर के अमीर (मुख्य सैनिक अधिकारी) शम्सुद्दीन बदख्शानी तथा वाली अजीज खम्मार में विरोध उत्पन्न हो गया था। शम्सुद्दीन उससे युद्ध करने के लिये सेना लेकर निकला। वह (अजीज) रक्षा के लिये अपने घर में घुस गया। जब उनमें से एक की शिकायत वजीर के पास देहली पहुँची तो वजीर ने मुझे, मलिक शाह अमीर ममालिक[3] जो अमरोहे में था और जिसके अधीन ४,००० शाही दास थे तथा शिहाबुद्दीन रूमी को लिखा कि "इन दोनों (४४०) के झगडे की पूछताछ करलो और जिसका अपराध हो, उसे बन्दी बना कर देहली भेज दो।" वे सब मेरे घर में एकत्र हुये। अजीज ने शम्सुद्दीन पर अनेक दोषारोपण किये। उनमें से एक यह था कि उसके एक सेवक रजी मुल्तानी ने उपर्युक्त अजीज के [illegible] के

१ मुख्य प्रबन्धक।

२ सूफियों का संगीत तथा नृत्य।

३ दासों के अधिकारी।

घर जाकर मदिरापान किया और कोषाध्यक्ष के धन में से ५००० दीनारों की चोरी करली। मैं ने रज़ी से इस विषय में प्रश्न किया तो उसने मुझ से कहा, "मैं जब से, आठ वर्ष हुये, मुल्तान से आया हू, मैं ने कभी मदिरापान नही किया।" मैंने उससे प्रश्न किया कि "तुमने मुल्तान में मदिरापान किया था?" उसने उत्तर दिया कि "हाँ"। मैंने उसके ८० कोड़े लगवाये और उसे उस अपराध पर, जिसे उसने स्वीकार कर लिया था, बन्दी बना दिया।

देहली से दो मास तक अनुपस्थित रहने के उपरान्त मैं अमरोहे से लौटा। मैं अपने साथियो के लिये प्रति दिन एक बैल ज़िबह किया करता था। मैं अपने साथियो को वही छोड आया ताकि वे अज़ीज़ से वह अनाज, जो उसके जिम्मे था और जिसके भिजवाने का दायित्व उस पर था, प्राप्त करके ले आयें। उसने ग्रामवासियों को आदेश दिया कि वे ३०,००० मन अनाज ३००० बैलो पर लाद कर पहुचा आयें। हिन्दुस्तानी लोग बोझ लादने के लिये बैलों के (४४१) अतिरिक्त किसी अन्य पशु से काम नही लेते। यात्रा में भी बैलो ही पर बोझ लादते हैं। गधो की सवारी करना वे बडा ही घृणित अपमान समझते हैं। उनके गधे छोटे होते हैं और लाशा (मृतक शरीर) कहलाते हैं। यदि किसी को अपमानित करना हो तो वे उसे पिटवा कर गधे पर सवार करते हैं।

मेरे एक मित्र की उदारता—

सैयिद नासिरुद्दीन अवहरी ने जाने के समय मेरे पास १०६० तन्के छोड दिये थे। मैने उन्हे व्यय कर दिया था। जब मैं देहली लौटा तो मुझे ज्ञात हुआ कि उसने इस धन को खुदावन्द ज़ादा किवामुद्दीन को ऋण में दे दिया था और वह वज़ीर का सहायक (नायब) होकर आगया था। मुझे इस बात के कहने में लज्जा होती थी कि मैने वह धन व्यय कर दिया है। उसे एक तिहाई दे देने के उपरान्त मै घर से बाहर न निकला और यह प्रसिद्ध हो गया कि मैं (४४२) रुग्ण हू। नासिरुद्दीन ख्वारिज्मी सद्रे जहा मुझे देखने आया और उसने मुझे देख कर कहा, 'तुम मुझे अस्वस्थ नही ज्ञात होते।" मैंने कहा "मेरा हृदय रोगी है।" जब उसने कहा कि मैं अपना तात्पर्य समझाऊँ तो मैंने उससे कहा, "अपने नायब शेखुल इस्लाम को भेज देना। मैं उसे सब बात समझा दूँगा।" जब शेखुल इस्लाम मेरे पास आया तो मैंने शेख को सब हाल बताया और उसने लौट कर सद्रे जहाँ को सब हाल बता दिया। उसने मेरे पास १००० दीनार दराहिम (तन्के) भेजे, यद्यपि मुझे उसे १००० दीनार पहले ही अदा करने थे। जब मुझसे शेष धन माँगा गया तो मैंने सोचा कि मुझे सद्रे जहाँ के अतिरिक्त कोई इस अवसर पर सहायता प्रदान नही कर सकता क्योकि वह बडा धनी है। मैंने एक अश्व जीन सहित, जिसका तथा जीन का मूल्य १,६०० दीनार था, एक दूसरा तुरग जिसका तथा जीन का मूल्य ८०० दीनार, दो खच्चर जिनका मूल्य १२०० दीनार, रजत का एक तूणीर, दो तलवारें जिन के म्यानो पर चाँदी मढी थी उसके पास भेजे और उसे कहला भेजा कि "इसका मूल्य निश्चित करके धन मेरे पास भेजदो।" उसने सब चीजें ले लो और उनका मूल्य ३००० दीनार (४४३) निश्चित किया और अपने २००० दीनार काट कर मेरे पास १००० दीनार भिजवा दिये। मैं इतना निराश हुआ कि मुझे ज्वर चढ आया। मैं ने सोचा कि यदि मैं वज़ीर से इसकी शिकायत करूँगा तो और भी अपमानित होऊँगा। अत मैंने ५ घोडे, दो दासियाँ तथा दो दास मलिक मुग़ीसुद्दीन मुहम्मद बिन (पुत्र) मलिकुल मलूक एमादुद्दीन सिमनानी के पास भेजे। उस युवक ने उन्हे मुझ को लौटा दिया और मुझे बडी उदारता से २०० तन्के (सम्भवतया सोने के) भिजवा दिये। मैंने उस ऋण को अदा कर दिया। दोनों मुहम्मदो के आचरण में कितना अन्तर था।

सुल्तान के मुहल्ले (शिविर) की ओर मेरा प्रस्थान—

जब सुल्तान माबर पर आक्रमण करने हेतु प्रस्थान कर के तिलग पहुच गया तो वहाँ उसकी सेना में सक्रामक रोग फैल गया। इस कारण वह दौलताबाद लौट आया और वहाँ से चल कर गगा नदी के तट पर उसने शिविर लगाये। अपने सैनिकों को भी उसने आदेश दिया कि वे वहीं घर बना लें। मैं भी उस समय उसके मुहल्ले (शिविर) में पहुचा। इसी समय ऐनुल-(४४४) मुल्क का विद्रोह, जिसकी चर्चा हो चुकी है, हुआ। मैं इस समय निरन्तर सुल्तान के साथ रहा। सुल्तान ने उत्तम प्रकार के कुछ तुरग अपने सभासदो को वितरण किये और मुझे भी उन्ही लोगों में सम्मिलित करके कुछ उत्तम घोडे दिये। ऐनुलमुल्क से युद्ध तथा उसके बन्दी बनाये जाने के समय मैं सुल्तान के साथ था। मैं ने उसके साथ गगा नदी पार की। तत्पश्चात् सरयू को पार करके सालार मसऊद की कब्र के दर्शनार्थ गया। जब सुल्तान देहली की ओर वापस लौटा तो मैं भी उसके साथ था।

सुल्तान के मुझे दण्ड देने के विचार तथा भगवान् की दया से मेरा बच जाना—

इस का यह कारण था कि मै एक दिन शेख शिहाबुद्दीन बिन (पुत्र) शेख जाम से भेंट करने उस गुहा में, जो उसने देहली से बाहर बनायी थी, गया। मेरा उद्देश्य गुहा देखना था। जब सुल्तान ने उस बन्दी बनाया और उसके पुत्रों से प्रश्न किया कि 'तुम्हारे पिता से भेंट करने कौन-कौन आता था?' तो उन्होने अन्य लोगो के साथ मेरा नाम भी ले लिया। इस पर सुल्तान ने आदेश दिया कि सभा-कक्ष में मेरे ऊपर उसके चार दासो का निरन्तर पहरा रहे। (४४५) जब इस प्रकार का आदेश किसी के विषय में होता है तो उसका बचना बड़ा कठिन हो जाता है। मरे ऊपर शुक्रवार के दिन से पहरा लगा और मुझे दैवी प्रेरणा प्राप्त हुई कि मै कुरान के इस वाक्य का जप किया करूँ "हमारे लिये भगवान् यथेष्ठ है और वह ही महान रक्षक है।" मैं ने उस दिन इस वाक्य का ३३,००० बार जप किया। रात्रि में मैं सभा-कक्ष में रहा। मैं ने पाँच दिन का एक रोज़ा रक्खा। प्रत्येक दिन पूरा कुरान पढ डालता था और सायकाल केवल जल पी कर रोज़ा तोड़ता था। पाँच दिन के उपरान्त मैं ने कुछ भोजन किया और पुन चार दिन का रोज़ा रखा। शेख की हत्या के पश्चात् मैं मुक्त कर दिया गया। ईश्वर प्रशसनीय है।

सुल्तान की सेवा से मेरा पृथक् होना तथा संसार त्यागना—

कुछ समय उपरान्त मैं सुल्तान की सेवा से पृथक् हो गया और शेख, इमाम, आबिद (उपासक), जाहिद (त्यागी), नम्र, ससार त्यागी, विद्वान, अद्वितीय, कमालुद्दीन अब्दुल्लाह गाज़ी (४४६) की सेवा में रहने लगा। वे बहुत बडे वली (सत) थे और उनके चमत्कार बड़े प्रसिद्ध हैं। इनमें से कुछ मैं ने स्वय देखे हैं और इसके पूर्व उसके हाल में उनकी चर्चा कर चुका हूँ। मैं ने अपनी समस्त धन सम्पत्ति दीनो तथा दरिद्रियों को वितरण कर दी और शेख की सेवा में प्रविष्ट हो गया। शेख दस-दस दिन और कभी कभी बीस बीस दिन का रोज़ा (उपवास) रक्खा करते थे। मेरा हृदय भी चाहता था कि मै भी उसी प्रकार रोज़ा रक्खू किन्तु मुझे शेख रोक देते थे और मुझ से कहते थे कि "उपासना में अपने प्राणो को अधिक कष्ट न दिया करो। जो कोई औरों से आगे बढ़ जाने के लिये तेज भागता है और शीघ्र इच्छित स्थान तक पहुचना चाहता है, वह अपनी यात्रा में उन्नति नही करता और अपने ऊपर दया नही करता।" मेरे पास अभी तक कुछ धन था, अत मेरे हृदय में व्याकुलता रहती थी। अस्तु मैंने पास जो कुछ थोड़ा बहुत था वह भी मैं ने दान कर दिया। अपने वस्त्र भी एक फकीर को दे डाले

श्रौर उसके वस्त्र स्वयं धारण कर लिये। मैं ५ मास तक शेख का शिष्य रहा। सुल्तान उस समय सिन्ध में था।

सुल्तान का मुझे बुलाना, मेरा उसकी सेवा स्वीकार न करना तथा एबादत (उपासना)—

(४४७) जब सुल्तान को मेरे ससार त्यागने का समाचार मिला तो उसने मुझे बुलवाया। वह उस समय सिविस्तान में था। मैं उसकी सेवा में फकीरों के वस्त्र धारण किये उपस्थित हुआ। उसने मुझ से बडी नम्रता से तथा दया-पूर्वक वार्ता की श्रौर पुन अपनी सेवा में सम्मिलित होने के लिये कहा। मैं ने स्वीकार न किया श्रौर उससे हेजाज जाने की श्राज्ञा मांगी। उसने मुझे श्राज्ञा प्रदान कर दी। मैं सुल्तान के पास से बाहर चला श्राया श्रौर एक खानकाह में, जो मलिक बशीर के नाम से प्रसिद्ध थी, ठहर गया। यह जमादी उस्सानी ७४२ हि० (जून १३४१ ई०) का अन्त था। मैं ने रजब मास में तथा शाबान[1] के पहले दस दिनो में एक चिल्ला[2] खीचा। धीरे-धीरे ५-५ दिन का रोजा रखने लगा। पाँचवे दिन बिना सालन के थोडे से चावल खाता था। दिन भर कुरान पढता श्रौर रात्रि में, जितनी ईश्वर शक्ति देता, तहज्जुद[3] पढता। जब मैं भोजन करता तो कष्ट अनुभव होता श्रौर जब भोजन न करता तो श्राराम हो जाता। (४४८) मैं ने इस अवस्था में चालीस दिन व्यतीत किये। इसके उपरान्त सुल्तान ने मुझे पुनः बुलवाया।

---

१ इस्लामी कैलेन्डर का जमादी उस्सानी छठा मास, रजब सातवाँ मास तथा शाबान श्राठवां मास होता है।

२ एक निर्धारित समय तक एकान्तवास करके कुछ विशेष एबादतें।

३ श्राधी रात के बाद की नमाजें।

अस-सीन (चीन) में दूत बनाकर भेजा जाना

चालीस दिन पूरे हो जाने के उपरान्त सुल्तान ने मेरे पास जीन सहित घोडे, दासिया, दास, वस्त्र तथा कुछ धन भेजा। मैंने वस्त्र धारण कर लिये और उसकी सेवा में उपस्थित हुआ। मेरे पास एक सूती अस्तरदार नीले रग का वस्त्र था जिसे मैं चिल्ले के दिनो में पहिना करता था। जब मैंने उसे उतारा और सुल्तान का भेजा हुआ वस्त्र धारण किया तो अपनी घोर निन्दा की। जब कभी मैं उस वस्त्र की ओर दृष्टिपात करता तो मुझे अपने हृदय में एक प्रकाश का अनुभव होता। वह मेरे पास काफिरो द्वारा समुद्र में मेरे वस्त्र छिन जाने तक रहा। जब उन्होंने मुझे लूट लिया तो वह भी जाता रहा।

जब मैं सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुआ तो पहले की अपेक्षा उसने मेरे ऊपर कही अधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित की और मुझसे कहा, "मैंने तुम्हें इस लिये बुलाया है कि तुम्हें अपनी ओर से दूत बनाकर अस-सीन (चीन) के बादशाह के पास भेजूं, क्योकि तुम्हें यात्रा तथा भ्रमण से बडी रुचि है।" फिर उसने मेरी आवश्यक्ता की सभी वस्तुओं का (४४६) प्रबन्ध करा दिया और कुछ अन्य लोग मेरे साथ जाने के लिये नियुक्त किये। इसकी चर्चा मैं अब प्रारम्भ करता हूँ।

अस-चीन (चीन)[१] मे उपहार भेजने के कारण, जो लोग साथ भेजे गये उनका उल्लेख, एवं उपहारों का विवरण—

(१) चीन के बादशाह ने सुल्तान के पास सौ ममलूक (दास) तथा दासियाँ, ५०० मखमल के थान, जिनमें से सौ जैतून[२] में तथा सौ खन्सा[३] में बने थे, ५ मन कस्तूरी, रत्नो से जडी हुई ५ खिलअत, ५ जडाऊ निषग तथा ५ तलवारें भेज कर यह प्रार्थना की थी कि सुल्तान उसे क़राजिल (हिमालय) पर्वत के आचल में समहल[४] नामक स्थान पर मन्दिरो को पुन निर्मित कराने की अनुमति प्रदान कर दे। समहल में चीनी लोग धर्म-यात्रा करने के (२) लिये जाते थे। हिन्दुस्तान की इस्लामी सेना ने इस पर अधिकार प्राप्त कर लिया था, और उसे लूट कर ध्वस कर दिया था।

सुल्तान ने उपहार की प्राप्ति के उपरान्त चीन के बादशाह को लिखा कि "इस्लामी नियमानुसार मुसलमानो के राज्य में मन्दिर बनाने की अनुमति केवल उन्ही लोगो को प्रदान की जा सकती है जो जिजया अदा करना स्वीकार कर लें। यदि तू जिजया अदा करना स्वीकार कर ले तो तुझे मन्दिर के निर्माण की अनुमति प्रदान की जा सकती है। जो लोग उचित मार्ग पर चलते हो ईश्वर उनका कल्याण करे।" उसने उन उपहारो से भी अधिक बहुमूल्य उपहार तैयार कराये। उत्तम प्रकार के सौ जीन तथा अन्य सामग्रियो सहित घोडे, सौ हिन्दू दास तथा दासियाँ जो सगीत तथा नृत्य में दक्ष थी, बैरमी कपडे के सौ थान जो एक प्रकार का सूती कपडा होता है किन्तु सुन्दरता में अद्वितीय होता है और एक एक थान का मूल्य सौ सौ दीनार होता है, खज नामक रेशमी कपडे के सौ थान जिसमें पाँच पाँच रगो के

१ यहाँ से डेफ़रेमरी सस्करण का चौथा भाग प्रारम्भ होता है।
२ चीन का स्थान चूफू नगर।
३ चीन का हगचूफू नगर।
४ इस स्थान का कोई पता नहीं। सम्भल भी यह किसी प्रकार नहीं हो सकता।

(३) रेशम का प्रयोग होता है, चार सौ थान सलाहिया[1] के, सौ थान शीरीन बाफ[2] के, सौ थान शान बाफ के, पांच सौ थान कशमीरी ऊनी कपडो के जिनमें सौ काले रग के, सौ सफेद रग के, सौ लाल रग के, सौ हरे रग के, सौ नीले रग के थे, सौ रूमी कतान[3] के थान, सौ टुकडे कम्बल के कपडे के, एक सिराचा (डेरा), छ (छोटे) खेमे, सोने के चार शमादान (मोम बत्ती रखने का एक प्रकार का पात्र) चार चादी के जिन पर मीनाकारी की गई थी, सोने के चार तश्त[4] लोटो सहित, चाँदी के छ तश्त, दस जडाऊ खिलग्रतें विशेष रूप से सुल्तान के प्रयोग की, दस शाशिया टोपियाँ सुल्तान के प्रयोग की जिनमें से एक पर जवाहरात जडे हुये थे, दस जडाऊ निषग जिनमें से एक पर मोती जडे थे, दस तलवारें जिनमें से एक के म्यान पर मोती जडे थे, दस्ताने जिन पर मोती जडे थे, और पद्रह ख्वाजा सरा, सुल्तान द्वारा भेजे गये ।

(४) उपहारो को मेरे साथ लेकर जाने के लिये सुल्तान ने अमीर जहीरुद्दीन जजानी[5] को आदेश दिया । वह बहुत बडा विद्वान् था । उपहार काफूर नामक ख्वाजा-सरा शुरबदार के अधीन किये गये । हमें समुद्र-तट तक पहुँचाने के लिये हमारे साथ अमीर मुहम्मद हरवी तथा हज़ार सवार भेजे गये । चीन के बादशाह के पद्रह दूत भी, जिनके सरदार का नाम तुरसी था और जिनके साथ सौ सैनिक थे, हमारे साथ भेजे गये । इस प्रकार हमारे साथ मनुष्यो की बहुत बडी सख्या हो गई, और हमारे साथ बडे शानदार सैनिक भी थे । सुल्तान ने आदेश दे दिया कि हम लोग जिस स्थान पर भी पहुँचें, वहाँ हमारे भोजन आदि का प्रबन्ध राज्य की ओर से किया जाय ।

हम लोगो ने १७ सफर ७४३ हि० (२२ जुलाई १३४२ ई०) को प्रस्थान किया क्योकि इस देश में प्राय लोग महीने की २, ७, १२, १७, २२, अथवा २७ तिथि को यात्रा के लिये (५) प्रस्थान करते हैं । प्रथम पडाव हमने तिलपट में किया । यह देहली से २½ फरसख[6] की दूरी पर स्थित है । वहाँ से हम लोग आऊ[7] की ओर रवाना हुये । वहाँ से हीलू[8] और फिर वहाँ से बयाना पहुँचे ।

यह एक बहुत बडा नगर है और बडा सुन्दर बना हुआ है । यहाँ की जामा मस्जिद भी बडी भव्य है । इसकी दीवारें तथा छतें पाषाण की बनी हुई हैं । यहाँ का अमीर (मुख्य अधिकारी) मुजफ्फ़र इब्नुल दाया, सुल्तान की दाई का पुत्र है । उससे पूर्व मलिक मुजीर बिन (पुत्र) अबिल रिजा (अबू रिजा) वहाँ का (मुख्य अधिकारी) था । वह एक बहुत बडा मलिक था । उसका उल्लेख इससे पूर्व हो चुका है । वह अपने आप को कुरैश वश का बताता था किन्तु वह बडा ही निरकुश तथा अत्याचारी था । उसने इस नगर के बहुत से निवासियो की हत्या करदी थी और बहुत से लोगो के हाथ पैर कटवा डाले थे । इस नगर में मैंने एक मनुष्य देखा जो बडा ही रूपवान था और अपने घर की चौखट पर बैठा था किन्तु उसके (६) हाथ पाँव कटे हुये थे । एक बार सुल्तान यात्रा करते हुये उस नगर में पहुचा । वहाँ के निवासियो ने मलिक मुजीर की उससे शिकायत की । बादशाह ने उसके बन्दी बनाये जाने

१ एक प्रकार का कपड़ा ।
२ एक प्रकार का कपड़ा ।
३ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा । लिनेन
४ एक प्रकार का गहरा थाल जिसमें हाथ मुह धोते हैं ।
५ ईरान में तेहरान तथा तबरेज के मध्य में जजान स्थित है ।
६ एक फ़रसख में लगभग १८,००० फीट होते हैं ।
७ भरतपुर में एक ग्राम ।
८ कदाचित भरतपुर से २० मील दक्षिण पश्चिम ।

का आदेश दे दिया। उसकी गर्दन में तौक (लोहे की हसुली) डलवा दिया गया और उसे वज़ीर के सामने दीवान (सभा कक्ष) में बैठा दिया गया। नगर निवासी आ आ कर उसके अत्याचारों के विषय में लिखित शिकायतें प्रस्तुत करते थे। सुल्तान ने आदेश दिया कि वह उन सब को सन्तुष्ट करे। जब वह सब को धन देकर संतुष्ट कर चुका तो उसकी हत्या करादी गई।

इस नगर के प्रतिष्ठित निवासियों में आलिम इमाम इज़्ज़ुद्दीन ज़ुबेरी थे, जो ज़ुबेर इब्नुल अव्वाम के वंशज थे। वे बहुत बड़े फ़क़ीह थे और बड़ा पवित्र जीवन व्यतीत करते थे। उनसे भेंट गालियूर (ग्वालियर) में मलिक इज़्ज़ुद्दीन अल् बनतानी, जो आज़म मलिक कहलाते थे, की सेवा में हुई।

फिर हम ब्याना से चल कर कोल (अलीगढ) नगर पहुँचे। यह एक सुन्दर नगर है जिसमें अत्यधिक उद्यान पाये जाते हैं और आम के वृक्ष बहुत बड़ी संख्या में हैं। हम लोग नगर के बाहर एक बहुत बड़े मैदान में ठहरे। वहाँ हम ने शेख सालेह (पवित्र) आबिद (उपासक) शम्सुद्दीन के, जो ताजुल आरेफ़ीन कहलाते हैं, दर्शन किये। वे अन्धे थे और बड़े (७) वृद्ध हो गये थे। बाद में सुल्तान ने उनको बन्दीगृह में डलवा दिया था और वहीं उनकी मृत्यु हो गई। उनके विषय में इससे पूर्व उल्लेख हो चुका है।

कोल के आस पास में एक युद्ध जिसमें हम ने भाग लिया—

कोल नगर में पहुँच कर हमें सूचना मिली कि कुछ हिन्दू काफ़िरों ने जलाली[1] के क़स्बे को घेर लिया है। यह कस्बा कोल से सात मील दूर है। अत हम लोग उस दिशा में चल खड़े हुये। इसी बीच में काफ़िरों ने कस्बे के निवासियों से युद्ध प्रारम्भ कर दिया था और क़स्बे वालों का विनाश होने ही वाला था। काफ़िरों पर हमारे आक्रमण कर देने के पूर्व तक उन्हें हमारे पहुँचने की सूचना न हो सकी। यद्यपि वे एक सहस्र अश्वारोही तथा तीन सहस्र पदातियों की संख्या में थे, किन्तु हम ने सब की हत्या कर दी और उनके घोड़ों तथा उनके अस्त्र शस्त्र पर अधिकार जमा लिया। हमारे २३ अश्वारोही तथा ५५ पदाती शहीद हुये (८) (मारे गये)। इनमें ख़्वाजा सरा काफ़ूर साक़ी[2] भी था, जिसको उपहार सौंपे गये थे। हम ने पत्र द्वारा सुल्तान को उसकी मृत्यु की सूचना दी और उसके उत्तर की प्रतीक्षा करते रहे। काफ़िर पहाड़ियों से निकल निकल कर जलाली पर आक्रमण करते रहे और हम लोग सवार होकर उस क़स्बे के अमीर (मुख्य अधिकारी) के साथ उन लोगों से युद्ध करने के लिये जाया करते थे।

दुर्भाग्य से मेरा बन्दी होना, एक वली अल्लाह (संत) द्वारा कष्टों से मेरी मुक्ति—

एक दिन मैं अपने कुछ साथियों के साथ सवार होकर बाहर गया। ग्रीष्म के कारण हम लोग एक उद्यान में मध्याह्न की अल्प-निद्रा हेतु गये। हम ने कुछ शोर की आवाज सुनी। हम सवार होकर जलाली के उस ग्राम की ओर गये जिस पर हिन्दुओं ने आक्रमण कर दिया था। हम ने उनका पीछा किया। वे भिन्न भिन्न टोलियों में विभाजित होकर भाग गये। हम लोग भी टोलियाँ बना कर उनके पीछे हो लिये। मेरे साथ कुल पाँच आदमी थे। अचानक एक झाड़ी में से कुछ अश्वारोही तथा पदाती निकले और उन्होंने हम पर आक्रमण कर दिया। (६) उनकी संख्या अधिक थी, अत हम भाग खड़े हुये। लगभग दस आदमियों ने मेरा पीछा किया किन्तु बाद में तीन आदमियों के अतिरिक्त सब ने पीछा करना छोड़ दिया। मेरे सामने

१ अलीगढ़ से दक्षिण पूर्व की ओर एक ग्राम जो अलीगढ़ से लगभग ११ मील दूर है।

२ पीने की वस्तुओं का प्रबन्ध करने वाला।

पहुँचा। उनके मध्य में एक जलाशय था। वृक्षो के बीच के स्थान मे एक घर (कमरा) सा बन गया था। जलाशय के चारो ग्रोर खजूर के प्रकार के वृक्ष खडे थे। मैंने सोचा कि मैं वहाँ रुक जाऊँ। सम्भवतया ईश्वर कोई मनुष्य वहाँ भेज दे जो मुझे ग्राबादी का मार्ग (१६) बता सके। किन्तु मुझ में कुछ शक्ति ग्रा गई, ग्रत मैं उठ कर एक मार्ग पर चल खडा हुग्रा जिस पर बैलों के खुरो के चिह्न थे। मार्ग में एक बैल दृष्टिगत हुग्रा जिस पर झूल पडी थी ग्रौर एक हँसिया रक्खी थी, किन्तु यह मार्ग भी काफिरों के ग्राम की ग्रोर जाता था। फिर मैं दूसरे मार्ग पर चल खडा हुग्रा। इस मार्ग से मैं एक उजाड ग्राम में पहुंचा। वहाँ मुझे दो काले काले ग्रादमी नगे धडगे दृष्टिगोचर हुये। भय के कारण मैं वही कुछ वृक्षों में छिप गया। रात्रि में, मैं ग्राम में प्रविष्ट हुग्रा। एक उजडे हुये घर में मैंने मिट्टी की एक कोठी देखी जिसमें ग्रनाज भरा जाता था। उसके नीचे एक इतना चौडा छेद था, जिसमें एक मनुष्य प्रविष्ट हो सकता था। मैं उसके भीतर घुस गया। वहाँ कटी हुई घास का बिछौना सा बिछा था ग्रौर वही एक पत्थर रक्खा था। मैं उसी पत्थर पर सिर रख कर सो गया। उसके ऊपर रात भर एक पक्षी के फडफडाने की ग्रावाज सुनाई देती रही। ऐसा ज्ञात होता था कि वह पक्षी मुझसे डरता था। इस प्रकार डरे हुये जीवों का एक जोडा वहाँ एकत्रित (१७) हो गया था। मैं शनिवार को पकडा गया था। उस दिन से ग्राज तक सात दिन व्यतीत हो चुके थे। सातवें दिन मैं काफिरो के एक ग्राम में पहुचा। उसमें एक जलाशय भी था ग्रौर कुछ तरकारी भी बोई हुई थी। मैंने वहाँ के निवासियो से भोजन के लिये कुछ माँगा किन्तु उन्होंने कुछ न दिया। वहाँ कूप के समीप मूली के कुछ पत्ते पडे थे। मैंने वही पत्ते खा लिये। जब मैं ग्राम में प्रविष्ट हुग्रा तो वहाँ मुझे कुछ काफिर सैनिक मिले। कुछ लोग उनके ऊपर पहरा देने के लिये नियुक्त थे। पहरेदारो न मुझे टोका किन्तु मैंने उत्तर न दिया ग्रौर भूमि पर बैठ गया। एक ग्रादमी तलवार खीच कर मेरे समीप ग्राया ग्रौर मेरी हत्या करनी चाही किन्तु मैंने कोई ध्यान न दिया क्योंकि मैं बहुत थक गया था। तत्पश्चात् उसने मेरी तलाशी ली किन्तु उसे कुछ भी न मिला। जब उसे कुछ न मिला तो उसने वही कुर्ता ले लिया जिसकी ग्रासतीनें मैंने वृद्ध को दी थी।

ग्राठवें दिन मैं प्यास से व्याकुल हो गया। मेरे पास जल की बूद भी न थी। मैं एक उजडे हुये ग्राम में पहुँचा किन्तु वहाँ कोई जलाशय न था। उन ग्रामो में यह प्रथा है कि वे लोग जलाशय बनवा कर उन्ही में वर्षा का जल एकत्र कर लेते हैं। इस प्रकार उन्हें पूरे वर्ष जल मिलता (१८) रहता है। मै एक मार्ग पर हो लिया ग्रौर एक कच्चे कूप पर पहुँचा। उस पर मूज की रस्सी पडी हुई थी किन्तु जल खींचने के लिये कोई पात्र न था। मेरे सिर पर कपडे का एक टुकडा लिपटा हुग्रा था। मैं ने रस्सी में वह कपडा बाँधा ग्रौर जो कुछ जल उसमें लग गया वह मैंने चूस लिया किन्तु इससे मेरी प्यास न बुझी। फिर मैं ने रस्सी में ग्रपना जूता बाँधा ग्रौर उसके द्वारा कुछ जल खीचा किन्तु मेरी प्यास फिर भी न बुझी। मैं ने जूता पुन कुयें में डाला किन्तु इस बार रस्सी टूट गई ग्रौर जूता कुयें में गिर गया। फिर मैं ने दूसरा जूता बांधा ग्रौर जी भर कर जल पिया। तत्पश्चात् मैं न जूता काट कर उसका ऊपरी भाग कुयें की रस्सी तथा कपडे की कुछ चिटो द्वारा ग्रपने पैरो पर बाँध लिया। जब मै इस प्रकार जूता पैरों में बाँध रहा था ग्रौर मेरी समझ में कुछ न ग्राता था कि ग्रब मैं क्या करूँ तो एक मनुष्य मुझे दृष्टिगोचर हुग्रा। मैं उसकी ग्रोर देखने लगा। वह काले रग का एक व्यक्ति था। उसके हाथ में एक लोटा कधे पर डडा तथा झोला था। उसने मुझसे (१९) "सलामुनग्रलैकुम" (तुम पर मेरा सलाम) कहा। मैंने "ग्रलैकुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहे" (तुम्हारे ऊपर सलाम तथा ईश्वर की दया हो) कहा। उसने मुझसे फारसी में पूछा कि

"चे कसी ?"[१] मैने कहा कि "मैं मार्ग भूल गया हूँ।" उसने कहा कि "मैं भी मार्ग भूल गया हू।" उसने फिर अपनी रस्सी में लोटा बांधा और जल निकाला। मैंने जल पीना चाहा किन्तु उसने मुझसे ठहर जाने को कहा। फिर अपने झोले से भुने हुये चने तथा मुरमुरे निकाले। मैंने खा कर जल पीया। उसने वजू करके दो रकात नमाज पढी। मैंने भी वजू किया और नमाज पढी। मुझसे उसने मेरा नाम पूछा। मैने उत्तर दिया कि 'मेरा नाम मुहम्मद है।" तत्पश्चात् मैंने उससे उसका नाम पूछा। उसने उत्तर दिया "कल्बुल फारेह (प्रसन्न हृदय)।" मैंने इसे एक उत्तम शकुन समझा और प्रसन्न हो गया। तत्पश्चात् उसने मुझसे कहा कि "अल्लाह का नाम लेकर मेरे साथ चल।" मैंने कहा 'अच्छा" और कुछ दूर तक उसके साथ चला। कुछ दूर चल कर मुझ में चलने की शक्ति न रह गई और मैं खडा न रह सका, अत मैं बैठ गया। उसने पूछा "तुझे क्या हो गया ?" मैंने उत्तर दिया "मैं तुमसे मिलने के पूर्व चल सकता (२०) था किन्तु तुमसे मिलने के उपरान्त अब मुझमें चलने की कोई शक्ति नही।" उसने कहा 'सुब्हानल्लाह (ईश्वर उत्कृष्ट हो)' मेरे कन्धो पर बैठ जाओ।" मैंने उससे कहा कि 'तुम दुर्बल हो और तुम मुझे नही उठा सकते।" उसने उत्तर दिया कि "ईश्वर मुझे शक्ति प्रदान करेगा। तुम अवश्य बैठ जाओ।" मै उसके कधों पर बैठ गया। उसने मुझसे कहा कि "ईश्वर ही पर्याप्त है और वह बडा ही उत्तम रक्षक है"[२] वाक्य का जप करते रहो। मैं उपर्युक्त वाक्य का जप करता रहा किन्तु मैं अपनी आँखें खुली न रख सका और मैं उसी समय सावधान हुआ जब ऐसा ज्ञात हुआ कि मै भूमि पर गिर रहा हूँ। मैं जाग उठा किन्तु उस मनुष्य का कही कोई चिह्न न था। मैंने अपने आपको एक आबाद गाँव में पाया। वहाँ के निवासी हिन्दू थे किन्तु वे सुल्तान की प्रजा थे। उनका मुख्य हाकिम मुसलमान था। जब उसको सूचना हुई तो वह मेरे पास आया। मैंने उस ग्राम का नाम पूछा। उसने उत्तर दिया "ताजपुरा"। वहाँ से कोल की दूरी जहाँ हमारे अन्य साथी थे दो फरसख थी। हाकिम मुझे एक घोडे पर बैठा कर अपने घर ले गया और मुझे गरम गरम भोजन कराया। मैंने स्नान किया। हाकिम (२१) ने कहा कि "मेरे पास एक वस्त्र तथा एक पगडी है जिसे मेरे पास मिस्र का एक अरब छोड गया था। वह उस सेना का एक सैनिक था जो कोल में टिकी हुई है।" मैंने कहा "उसे मुझे देदो। मैं उसे पहन कर शिविर तक चला जाऊँगा।" जब वह उन्हें मेरे निकट लाया तो मैंने देखा कि वे मेरे ही दोनो वस्त्र थे जिन्हे मै कोल आते समय उसी अरब को दे गया था। मैं यह देखकर आश्चर्यचकित हो गया। फिर मुझे उस मनुष्य का ध्यान आया जो मुझे अपने कन्धों पर लाया था और मुझे अबू अब्दुल्लाह मुर्शिदी की बात याद आ गई जिसका उल्लेख मैं पहली यात्रा में कर चुका हू। उन्होने मुझसे कहा था "तुम्हें हिन्दुस्तान में मेरा भाई दिलशाद मिलेगा और तुम्हें वह एक बहुत बडे कष्ट से मुक्त करायेगा।" मुझे यह भी याद आ गया कि जब मैंने उससे उसका नाम पूछा तो उसने क़ल्बुल फ़ारेह बताया था जिसका फारसी में अर्थ दिलशाद (प्रसन्न हृदय) होता है। मैं समझ गया कि उस दरवेश ने उसके विषय में मुझसे कहा था कि मैं उससे मिलूँगा और वह भी एक दरवेश था किन्तु मैं उसके साथ इससे अधिक न रह सका जितना मैं इससे पूर्व लिख चुका हू।

(२२) मैं ने उसी रात्रि में अपने साथियों के पास कोल में अपनी कुशलता के समाचार लिख भेजे। वे मेरी कुशलता के समाचार पाकर बडे प्रसन्न हुये और मेरे लिये वस्त्र तथा घोडा लाये। मुझे ज्ञात हुआ कि सुल्तान का उत्तर प्राप्त हो चुका है। उसने एक अन्य दास को

१ तू कौन है।

२ हस्बुनल्लाहो व नेमल वकील।

जिसका नाम सुम्बुल था और जो जामादार[1] था, शहीद काफूर के स्थान पर भेज दिया था और यह आदेश दे दिया था कि यात्रा जारी रहे। मुझे यह भी पता चला कि उन्होंने मेरे विषय में भी लिख दिया था और वे इस यात्रा को अशुभ समझते थे, क्योंकि प्रारम्भ ही में काफूर की हत्या हो चुकी थी और मैं बन्दी बना लिया गया था। इस प्रकार वे लोग लौट जाना चाहते थे, किन्तु जब मैं ने यह देखा कि सुल्तान यात्रा के लिये आग्रह कर रहा है तो मैं ने बडे दृढ सकल्प से अपने साथियों से यात्रा के लिये कहा। उन्होंने उत्तर दिया कि "तुम नहीं देखते कि यात्रा के प्रारम्भ ही में हमें कितने कष्ट भोगने पडे। सुल्तान तुम को क्षमा कर देगा, अत हमें वापस हो जाना चाहिये अथवा उसके उत्तर की प्रतीक्षा करनी चाहिये।" किन्तु मैं ने उत्तर दिया कि "हमें रुकना न चाहिये। हम लोग जहाँ कहीं भी होंगे, सुल्तान का उत्तर हमें प्राप्त हो जायगा।"

(२३) हम कोल से निकल कर अजपुर[2] पहुचे। वहाँ एक बडी उत्तम खानकाह थी। वहाँ एक रूपवान तथा सदाचारी शेख निवास करते थे। उनका नाम मुहम्मद उरयाँ (नग्न) था क्योंकि वे एक तहबंद के अतिरिक्त कोई वस्त्र धारण नही करते थे। वे शेख सालेह वली अल्लाह (सत) मुहम्मद उरयाँ, कराफा निवासी के, जो मिस्र में है, शिष्य थे। ईश्वर हमें उनके द्वारा लाभ प्रदान करे।

शेख के विषय में एक कहानी—

शेख अवलिया अल्लाह थे और सर्वस्व त्याग कर केवल एक तम्बूरा (तहबद) अर्थात् नाभि से पैर तक एक कपडा बाधते थे। कहा जाता है कि वे एशा (रात्रि की नमाज) के पश्चात् खानकाह में जो कुछ भोजन, जल, अन्न इत्यादि होता, वह सब फकीरों को बाँट देते थे, यहाँ तक कि वे दीपक की बत्ती तक फेंक देते थे और दूसरा दिन पुन ईश्वर पर आश्रित हो कर प्रारम्भ करते थे। वे नित्य प्रात काल अपने शिष्यों को रोटी और सेम खिलाते थे। प्रात काल (२४) रोटी तथा सेम बेचने वाले शीघ्रातिशीघ्र खानकाह पहुँचने का प्रयास किया करते थे। वे उनसे खानकाह वालो की आवश्यकतानुसार वस्तुयें मोल ले लेते थे और विक्रेताओं से कह देते थे कि बैठ जाओ। जो कोई जो कुछ फुतूह (उपहार) लाता वह चाहे कम हो अथवा अधिक विक्रेताओं को दे देते थे।

कहा जाता है कि जब काजान (गाजान) तातारियों का बादशाह (१२९५-१३०४ ई०) अपनी सेना लेकर शाम पर चढ आया और उसने दमिश्क पर अधिकार जमा लिया और किला उसके हाथ न आया तो मलिक नासिर उससे युद्ध के लिये निकला। युद्ध दमिश्क से दो दिन की यात्रा की दूरी पर कशहब नामक स्थान पर हुआ। मलिक नासिर उस समय युवक था और उसे युद्ध का कोई अनुभव न था। शेख मुहम्मद उरयाँ भी उसकी सेना में थे। उसने मलिक नासिर के घोडे के पाँव में जजीर डाल दी जिससे मलिक नासिर युद्ध के समय अपनी युवावस्था के कारण भाग न जाय और मुसलमान पराजित न हो जाय। इस प्रकार मलिक नासिर अपने (२५) स्थान पर डटा रहा और तातारी बुरी तरह पराजित हो गये। बहुत से तातारी मारे गये और बहुत से नदी में, जिसके बाँध खोल दिये गये थे, डूब गये। तातारियो न तत्पश्चात् मुसलमानो के देश पर फिर कभी कोई आक्रमण न किया। शेख मुहम्मद उरयाँ ने, जिनका उल्लेख इससे पूर्व किया गया, और जो मिस्र के शेख के शिष्य थे, मुझे बताया कि वे उस युद्ध में उपस्थित थे और उस समय नवयुवक थे।

---

१ शाही वस्त्रों की देख रेख करने वाला अधिकारी, जामादार।

२ कन्नौज मे भोजपुर।

हम ने बजपुर से प्रस्थान करके आबे सियाह (काली नदी)[1] पर शिविर लगाये। वहाँ से हम लोग कन्नौज नगर की ओर चल दिये। यह बहुत बडा नगर है और बडा ही दृढ है। यहाँ का किला भी बडा दृढ है। यहाँ वस्तुओं का मूल्य बडा सस्ता तथा कम है और शक्कर बडी अधिक मात्रा में होती है। शकर यहाँ से देहली भेजी जाती है। इस नगर की शहर-पनाह बडी ऊची है। इस नगर का उल्लेख इससे पूर्व हो चुका है। इस नगर में शेख मुईनुद्दीन बाखरजी निवास करते थे। उन्होंने हमारी दावत की। वहाँ का अमीर (मुख्य अधिकारी) (२६) फीरोज बदख्शानी था। वह किसरा के एक मुसाहिब बहराम चूर का वशज था। इस नगर में बहुत से सदाचारी तथा योग्य व्यक्ति निवास करते हैं। वे शरफ जहाँ की सतान हैं। उनके दादा (शरफ जहाँ) दौलताबाद के काज़ी-उल-कुज्जात (मुख्य काज़ी) थे। वे अपने दान-पुण्य के लिये बडा प्रसिद्ध थे। उन्हें समस्त हिन्दुस्तान में अपनी धर्म-निष्ठता के कारण मान्यता प्राप्त हो गयी थी।

उनके विषय में एक कहानी—

कहा जाता है कि शरफ जहाँ एक बार अपने पद स हटा दिये गये। उनके शत्रुओं की संख्या अधिक थी। उनमें से एक ने उस काज़ी के सामने, जो उनके स्थान पर नियुक्त हुआ था, उन पर यह अभियोग चलाया कि 'मेरे दस हज़ार दीनार उन (शरफ जहाँ) के पास हैं किन्तु मेरे पास कोई लिखित प्रमाण नही और मैं चाहता हूँ कि शरफ जहाँ हलफ उठालें।" काज़ी ने शरफ जहाँ को बुलवाया। उसन (शरफ जहाँ) पूछा कि "इसका क्या दावा है।" काज़ी ने उत्तर दिया कि दस हज़ार दीनार का दावा है। काज़ी शरफ जहाँ ने दस हज़ार दीनार भेज दिये और कहला दिया कि मुद्दई को दस हज़ार दीनार दे दिये जायें। अलाउद्दीन को इस घटना (२७) की सूचना मिल गई। उसे ज्ञात था कि अभियोग मिथ्या है। उसने शरफ जहाँ को पुन काज़ी नियुक्त कर दिया और दस हज़ार दीनार वापस करा दिये।

हम लोग कन्नौज में तीन दिन तक ठहरे रहे। इसी बीच में सुल्तान का उत्तर प्राप्त हो गया। उसने मेरे विषय में यह लिखा था कि यदि मेरा पता कही नही चलता है तो दौलताबाद के काज़ी, वजीहुल मुल्क को मेरे स्थान पर ले लिया जाय।

फिर हम लोग इस नगर से चल कर हनौल[2] पहुंचे। वहाँ से वज़ीरपुर[3] फिर बजालसा[4] फिर मौरी पहुँचे। यह छोटा सा कस्बा है, किन्तु बाज़ार अच्छे हैं। वहाँ मैंने शेख कुतुबुद्दीन के जो हैदर फरगानी के नाम से प्रसिद्ध थे दर्शन किये। वे उस समय रुग्ण थे। उन्होंने मेरे लिए ईश्वर से शुभ कामना की और मुझे जौ की एक रोटी प्रदान की। वे कहते थे कि उनकी अवस्था १५० वर्ष से अधिक थी। उनके मित्र कहते थे कि वे सर्वदा रोज़ा (२८) रक्खा करते थे और कभी-कभी कई-कई दिन तक रोज़ा न खोलते थे। वे प्राय एकान्त-वास किया करते थे और चिल्ले (एक निश्चित अवधि तक एकान्त में सिद्धि हेतु बैठना) में बैठते थे। इस बीच में वे नित्य केवल एक खजूर और कुल चालीस खजूरें खाया करते थे। मैंने स्वय देहली में रजब अल बुरकई को देखा था। वे चालीस खजूरें लेकर चिल्ले में बैठते थे। जब चालीस दिन पश्चात् वे निकलते तो उनके पास १३ खजूर शेष रह जाती थी।

---

१ यह उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले मे निकल कर खतौली फिर मेरठ, बुलन्दशहर, अलीगढ़, एटा, फर्रुखाबाद होती हुई कन्नौज से चार मील पर गंगा में गिरती है।

२ आगरा सरकार में एक महाल (हिन्दाउन)

३ आगरा सरकार में एक महाल।

४ कदाचित बजनगर जिसका बाद में मुहम्मदाबाद नाम हुआ।

लिया था, किन्तु उसका मांस न खाया था। कहा जाता है कि सिंह यही किया करता था। एक आश्चर्यजनक बात यह है कि एक आदमी ने मुझे बताया कि यह कार्य सिंह का नहीं अपितु एक मनुष्य का था। वह एक जादूगर था और जोगी (योगी) कहलाता था। वह सिंह बन कर निकलता था। जब मैंने यह बात सुनी तो मुझे उस पर विश्वास न हुआ किन्तु कई लोगों ने मुझ से यही बात कही, अत में इस स्थान पर इन जादूगरों के विषय में प्रसिद्ध कुछ कहानियों का उल्लेख करता हूँ।

उन जादूगरों का हाल जो जोगी (योगी) कहलाते थे—

(३५) जोगी (योगी) बड़े अद्भुत कार्य करते हैं। कुछ जोगी (योगी) महीनों तक न कुछ खाते हैं और न कुछ पीते हैं। कुछ भूमि में गुहा बना लेते हैं। उसमें केवल हवा आने के लिये छेद होता है। वे इसमें महीनों तक पड़े रहते हैं। कुछ लोगों का कथन है कि वे एक वर्ष तक इसी प्रकार रह सकते हैं। मजरौर (मंगलोर) नगर में मैंने एक मुसलमान को देखा जो इन लोगों का शिष्य था। वह एक ऊँचे ढोल पर बैठा था और कुछ खाता पीता न था। इस प्रकार २५ दिन व्यतीत हो चुके थे। मुझे यह नहीं ज्ञात कि वह मेरे चले आने के पश्चात् इस प्रकार कितने दिन और बैठा रहा। लोग कहते हैं कि यह लोग एक प्रकार की गोली बनाते हैं। एक गोली के सेवन के उपरान्त उन्हें कुछ समय तक अन्न जल की आवश्यकता नहीं पड़ती। वे गुप्त रहस्यों को भी बता सकते हैं। सुल्तान उनका बड़ा (३६) सम्मान करता है और उन्हें अपने साथ रखता है। कुछ लोग तरकारी के अतिरिक्त कुछ नहीं खाते और अन्य लोग भी, जो बहुत बड़ी संख्या में हैं, मांस नहीं खाते। यह स्पष्ट है कि वे योग-सिद्धि द्वारा इस प्रकार के हो जाते हैं कि न तो उन्हें किसी वस्तु की आवश्यकता होती है और न उन्हें सांसारिक आडम्बरों की चिन्ता ही रहती है। कुछ लोग तो ऐसे होते हैं कि यदि वे किसी मनुष्य की ओर दृष्टिपात करदें तो उसकी तुरन्त मृत्यु हो जाती है। जन साधारण का कथन है कि इस प्रकार जिस मनुष्य की हत्या हो गई हो यदि उसका सीना चीरा जाय तो उसमें हृदय न मिलेगा। उनका कथन है कि उसका हृदय खा लिया जाता है। यह कार्य प्राय स्त्रियाँ करती हैं और ऐसी स्त्रियाँ कफ्तार कहलाती हैं।

एक कहानी—

जब हिन्दुस्तान में अनावृष्टि के कारण विकराल दुर्भिक्ष का प्रकोप हुआ तो सुल्तान उस (३७) समय तिलग में था। उसने आदेश भेज दिया था कि देहली निवासियों को १½ रतल (तीन पाव) प्रति मनुष्य के हिसाब से भोजन दिया जाय। वजीर ने अकाल पीड़ितों को एकत्र करके उनकी एक-एक टोली अमीरों तथा काज़ियों को सौंप दी और उनके भोजन का प्रबन्ध भी उन्हीं लोगों के सिपुर्द कर दिया। ५०० व्यक्तियों का प्रबन्ध मुझको भी करना था। मैंने दो घरों में दालानें बनवा कर उन लोगों को उसमें बसा दिया। मैं उन्हें ५ दिन की भोजन सामग्री दे दिया करता था। एक दिन वे एक स्त्री लाये और कहा "यह कफ्तार (जोगिन) है। इसने अपने बराबर के घर वाले के बालक का हृदय खा लिया है।" वे लोग बालक का शव भी लाये। मैंने आदेश दिया कि "इसे सुल्तान के नायब (वज़ीर ख्वाजये जहाँ) के पास ले जाओ।" उसने आदेश दिया कि उसकी परीक्षा ली जाय। चार घड़ों में जल भरा गया और उन घड़ों को उसके हाथ पैर में बाँध दिया गया और उसे यमुना नदी में डाल दिया गया। वह न डूबी। इस प्रकार यह सिद्ध हो गया कि वह कफ्तार थी। यदि वह डूब जाती तो फिर यह सिद्ध हो जाता कि वह कफ्तार नहीं है। तत्पश्चात् उसने उसे अग्नि में जला डालने का आदेश दे दिया। नगर के लोगों ने उसकी राख एकत्र करली। इसमें (३८) स्त्री-पुरुष सभी सम्मिलित थे। लोगों का यह विश्वास है कि जो कोई उसकी राख की धूनी ले लेता है, उस पर एक वर्ष तक कफ्तार के जादू का कोई प्रभाव नहीं होता।

कहानी—

जब मैं देहली में सुल्तान के साथ था तो उसने एक बार मुझे बुलवाया। सुल्तान उस समय एकांत में अपने कुछ विशेष व्यक्तियों सहित बैठा था। दो जोगी (योगी) भी उसके पास बैठे थे। जोगी (योगी) रजाई ओढ़े रहते हैं और सिर को भी ढके रहते हैं। जिस प्रकार लोग बग़ल के बाल उखाड़ डालते हैं, उसी प्रकार ये लोग राख से अपने सिरों के बाल नोच डालते हैं। सुल्तान ने मुझे बैठ जाने का आदेश दिया। जब मैं बैठ गया, तो उसने उन लोगों से कहा कि "यह अजीज (परदेसी) यहाँ से एक बहुत दूर के देश से आया है। अतः इसे कुछ ऐसी चीज़ें दिखाओ जो इसने कभी न देखी हों।" उन्होंने उत्तर दिया "अच्छा।" उनमें से एक भूमि पर पालथी मार कर बैठ गया। तत्पश्चात् वह उसी प्रकार बैठे-बैठे वायु में बहुत ऊँचे स्थान तक पहुँच गया। मैं विस्मित होकर भूमि पर मूर्छित अवस्था में (३६) गिर पड़ा। बादशाह ने मुझे एक औषधि, जो उस समय उसके पास थी, पिलाने का आदेश दिया। मै सावधान होकर बैठ गया। वह उसी प्रकार वायु में आसीन रहा। उसके साथी ने एक बोरिये में से, जो उसके पास थी, खड़ावें निकाली और उन्हें भूमि पर पटका मानो उसे क्रोध आ गया हो। खड़ावें वायु में चढ़ गई और उस आदमी की ग्रीवा तक पहुँच कर उसकी ग्रीवा को पीटने लगीं। वह शनैः शनैः भूमि पर उतरने लगा और अन्त में उतर कर भूमि पर बैठ गया। तत्पश्चात् सुल्तान ने बताया कि वायु में बैठने वाला खड़ाऊँ वाले का शिष्य है। उसने कहा कि "यदि तेरे डर जाने का भय न होता तो मैं इन लोगों को इस से भी अधिक आश्चर्य-जनक चीज़ें दिखाने का आदेश देता। मैंने विदा ली किन्तु मुझे ख़फ़क़ान (धड़का) हो गयी और मै रुग्ण हो गया। सुल्तान ने मेरे लिये एक औषधि भेजी और मैं उसके द्वारा स्वस्थ हो गया।

अब हम फिर अपनी यात्रा का उल्लेख प्रारम्भ करते हैं। हम लोग परौन से अगवारी नामक पड़ाव पर पहुँचे। वहाँ से कजर्रा (खजुराहो) के पड़ाव पर पहुँचे। यहाँ एक बहुत बड़ा (४०) जलाशय है जिसकी लम्बाई एक मील है। इसके चारों ओर मन्दिर हैं जिनकी मूर्तियों के अंग मुसलमानों द्वारा भंग कर दिये गये हैं। जलाशय के मध्य में लाल पत्थर के तीन गुम्बद हैं उनमें से प्रत्येक में तीन-तीन मंजिलें हैं और चारों कोनों पर भी एक एक गुम्बद है। उन गुम्बदों में जोगी निवास करते थे। वे अपने बालों पर भभूत मले रहते थे। उनके बाल उनके पैरों तक पहुँचते थे। उनका रंग तपस्या के कारण पीला पड गया था। बहुत से मुसलमान भी उनके रहस्य के ज्ञान हेतु उनके शिष्य हो जाते हैं। कहा जाता है कि यदि कोई किसी शारीरिक रोग में ग्रस्त व्यक्ति अर्थात् कुष्ठ अथवा श्लीपद से पीड़ित मनुष्य उनकी संगति में कुछ समय तक रहता है तो वह ईश्वर की कृपा से स्वस्थ हो जाता है।

सर्व प्रथम मै ने इस प्रकार के लोगों को तुर्किस्तान के सुल्तान तूर्माशीरीन के मुहल्ला (शिविर) में देखा था। उनकी संख्या लगभग पचास थी और उनके लिये भूमि में एक गुहा खोद दी गई थी। वे उससे शौच के अतिरिक्त किसी अन्य कार्य से न निकलते थे। उनके पास सींग के प्रकार की एक वस्तु होती थी जिसे वे प्रातः तथा सायंकाल, एवं तिहाई रात्रि (४१) व्यतीत हो जाने पर बजाते थे। उनके सब ही कार्य अद्भुत होते थे। एक जोगी ने मावर के सुल्तान ग़यासुद्दीन दामग़ानी के लिये कुछ गोलियाँ बना दी थी। वह कामोद्दीपक औषधि थी। उस में फौलाद का बुरादा पड़ा था। वह उन गोलियों के प्रभाव से इतना प्रसन्न हुआ कि वह निर्धारित मात्रा से अधिक खा गया और उसकी मृत्यु हो गई। उसका भतीजा नासिरुद्दीन उसका उत्तराधिकारी बना। वह उस जोगी (योगी) का बड़ा आदर करता था और उसने उसे विशेष रूप से सम्मानित किया।

(४८) बडी कठिनाई से अपनी रक्षा कर पाता था। मैंने एक स्वप्न देखा जिसमें मुझे किसी ने बताया कि एक हजार बार इखलास का सूरा[1] पढो तो तुम मुक्त हो जाओगे। मैंने यह सूरा पढा और जब मैं एक हजार बार यह सूरा पढ चुका तो मुझे मुक्त कर दिया गया। मेरी मुक्ति का यह कारण था. मलिक मल मेरी कोठरी के समीप वाली कोठरी में बन्दी बना दिया गया था। वह रुग्ण हो गया। चूहे उसकी अँगुलियाँ और आँखें खा गये और उसका देहान्त हो गया। जब सुल्तान को यह सूचना मिली तो उसने आदेश दिया कि "सुलाब को निकाल ला" कहीं उसकी भी वही दशा न हो जाय।" इसी किले में इसी मलिक मल के पुत्र नासिरुद्दीन तथा काज़ी जलाल ने सुल्तान से पराजित होकर शरण ली थी।

दौलताबाद के निवासी मरहठे हैं। ईश्वर ने उनकी स्त्रियों को विशेष रूप से सुन्दरता प्रदान की है। उनकी नाकें तथा भृकुटियाँ बडी ही सुन्दर होती हैं। उनसे सभोग में विशेष (४९) आनन्द प्राप्त होना है। उन्हें अन्य स्त्रियो की अपेक्षा प्रेम सम्बन्धी बातो का अधिक ज्ञान होता है। यहाँ के काफिर अधिकतर व्यापारी हैं और रत्नो का व्यापार करते हैं। उनके पास अपार धन सम्पत्ति है। जिस प्रकार मिस्र के व्यापारी अकारिम कहलाते हैं, उसी प्रकार वे साहू के नाम से प्रसिद्ध हैं।

दौलताबाद में अनार तथा अंगूर बहुत होते हैं। दोनों, वर्ष में दो बार फलते हैं। इस प्रदेश का कर घनी आबादी तथा अधिक विस्तार के कारण अन्य प्रान्तो की अपेक्षा बहुत अधिक है। मुझे लोगो ने बताया कि किसी हिन्दू ने नगर तथा प्रान्त के कर का ठेका १७ करोड में लिया। करोड में १०० लाख और एक लाख में १०० हज़ार दीनार होते हैं। यह लिखा जा चुका है कि प्रान्त की यात्रा में तीन महीने लगते हैं। वह अपने वचन का पालन न कर सका और पूरी रकम अदा न कर सका। उसकी धन सम्पत्ति छीन ली गई और उस की खाल खिचवा ली गई।

बाज़ार तथा गायिकायें--

(५०) दौलताबाद नगर में गायको तथा गायिकाओ का अत्यन्त सुन्दर तथा बडा बाज़ार है जो तरबाबाद कहलाता है। इसमें बहुत सी दूकानें हैं। प्रत्येक का एक द्वार दुकान के स्वामी के घर में खुलता है। प्रत्येक घर में एक अन्य द्वार भी होता है। दूकानें कालीनो से सजी रहती हैं। इसके मध्य में एक बडा झूला सा होता है जिसमें कोई गायिका बैठी अथवा लेटी रहती है। वह नाना प्रकार के आभूषणो से शृंगार किये रहती है। उसकी दासियाँ झूला झुलाया करती हैं। बाज़ार के मध्य में कालीनो तथा फर्शों से सुसज्जित एक बहुत बडा गुम्बद है। इसमें बृहस्पतिवार को (अमीरुल मुतरिबीन) गायको का सरदार अस्र की नमाज़ के पश्चात् बैठता है। उसके सेवक तथा दास भी इसके साथ रहते हैं। गायिकाये बारी-बारी आकर उसके समक्ष सायकाल की नमाज के समय तक गायन तथा नृत्य करती रहती हैं। (५१) तत्पश्चात् वे चली जाती हैं। उसी बाज़ार में नमाज़ के लिये मस्जिदें हैं। उनमें रमज़ान के महीने में इमाम तरावीह[2] पढाता है। हिन्दुस्तान के कुछ हिन्दू राजा जब इस बाज़ार मे से गुज़रते तो वह गुम्बद में रुक कर गायिकाओ का गायन सुना करते थे। कुछ मुसलमान बादशाह भी ऐसा ही करते हैं।

दौलताबाद से चल कर हम नज़रबार (नन्दुबार)[3] पहुचे। यह एक छोटा सा नगर है जिसक अधिकतर निवासी मरहठे हैं। वे बडे अच्छे शिल्पकार होते हैं। तबीब (चिकित्सक)

---

१ क़ुरान का एक अध्याय जिसमे एकेश्वरवाद का बड़ा विशद उल्लेख है।

२ रमज़ान के महीने की विशेष नमाज़ें, जिनमे पूरा क़ुरान समाप्त किया जाता है।

३ ताप्ती नदी के दक्षिणी तट पर।

ज्योतिषी तथा मरहठों के मध्यमा य व्यक्ति ब्राह्मण तथा कतरी (क्षत्री) होते हैं। वे चावल, भाजी, तथा सरसो का तेल खाते हैं। वे मास नही खाते और न तो किसी पशु को कष्ट पहुँचाते हैं और वे भोजन के पूर्व उसी प्रकार अनिवार्य रूप में स्नान करते हैं जिस प्रकार हम लोग वीर्य्य /निकल जाने के पश्चात् अनिवार्य रूप से स्नान करते हैं। अपने सम्बन्धियो से जब तक सात दादाओ (पीढियो) का अन्तर न हो विवाह नही करते। वे मदिरापान (५२) नही करते और इसे बहुत बडा पाप समझते हैं। हिन्दुस्तान में मुसलमानो का भी यही विचार है। यदि कोई मुसलमान मदिरापान करता है तो उसके ८० कोडे लगाये जाते हैं और तीन मास तक उसे एक काल कोठरी में बन्द कर दिया जाता है और केवल भोजन देने के लिये उसे खोला जाता है।

यहाँ से चलकर हम सागर[1] (सगर) पहुँचे। यह नगर सागर[2] नदी के किनारे बसा है और बहुत बडा नगर है। नदी पर बहुत बडे बडे रहट चलते हैं। यहाँ आम, केले और गन्ने के उद्यान हैं। यहाँ के निवासी सदाचारी धर्मनिष्ठ तथा विश्वास के योग्य होते हैं। उनके समस्त कार्य प्रशसनीय होते हैं। उद्यानो में उन्होने यात्रियो के लिये खानकाहे निर्मित करा दी हैं। जो कोई खानकाह बनवाता है, वह उसके साथ उद्यान भी वक्फ कर देता है और अपने पुत्रो को उसका मुतवल्ली (प्रबन्धक) नियुक्त कर देता है। यदि उसके सतान न हो तो काज़ी मुतवल्ली नियुक्त हो जाता है। यहाँ की आबादी बहुत घनी है। लोग, यहाँ के निवासियो के दान पुण्य से लाभ उठाने के लिये बहुत बडी सख्या मे पहुँचते रहते हैं। नगर से कोई कर नही लिया जाता, इस लिये भीड और भी अधिक हो जाती है।

(५३) सागर से चल कर हम लोग किम्बाया (खम्बायत) पहुँचे। यह नगर समुद्र की एक भुजा पर, जो नदी के समान है[3], बसा है। यहाँ जहाज़ भली भाति आ जा सकते हैं और जल में ज्वार भाटे का उठना दृष्टिगत होता रहता है। जल उतर जाने के समय मैंने वहाँ बहुत से जहाज़ कीचड में धसे हुये देखे। जब समुद्र का जल चढ जाता था तो वे पुन तैरने लगते थे। यह नगर अत्यन्त सुन्दर बना है। यहाँ के भवन तथा मस्जिदें बडी ही सुन्दर बनी हैं। इसका यह कारण है कि यहाँ के अधिकतर निवासी बाहरी व्यापारी हैं। वे बडे शोभायमान भवन तथा मस्जिद निर्मित कराते हैं और इस विषय में वे परस्पर स्पर्धा किया करते हैं। नगर के भव्य भवनो में उस शरीफ सामरी का भी भवन समझा जाता है, जिसने मुझे हलब के मामले में फासना चाहा था किन्तु मलिकुत्तुदमा[4] ने उसे झूठा बता दिया था उसके घर में जो लकडी लगी थी उससे अधिक दृढ तथा मोटी लकडी मैने किसी घर में नही देखी। इस घर का द्वार इतना बडा है मानो वह नगर का द्वार हो। उसके घर के बराबर (५४) एक बहुत बडी मस्जिद है जो उसी के नाम पर प्रसिद्ध है। मलिकुत्तुज्जार[5] गाज़रूनी का भी घर बहुत बडा है। उसके बराबर भी एक भव्य मस्जिद है। शम्सुद्दीन कुलाहदोज़ (टोपी सीने वाले) का भवन भी बहुत बडा है। वह भी व्यापारी है।

कहानी—

काज़ी जलाल अफगान के विद्रोह के समय, जिसका उल्लेख इससे पूर्व हो चुका है,

---

१ बड़ौदा राज्य में मिनोर, नन्दबार तथा खम्बायत के मार्ग के मध्य में।

२ नर्मदा होना चाहिये।

३ इब्ने बत्तूता का तात्पर्य खाडी से है।

४ मुख्य मुसाहिब। यह पदवी सुल्तान अपने बडे बडे अमीरों को उनके अन्य कार्यों के साथ प्रदान कर दिया करता था।

५ बहुत बड़ा व्यापारी। यह भी एक पदवी थी जो बडे बडे व्यापारियों को प्रदान की जाती थी।

समुद्री यात्रा

जहाज में सवार होना—

(५९) इस नगर से हम इबराहीम के 'जाकर' नामक एक जहाज पर सवार हुये। उपहार के घोडो में से ७० घोडे हमने इसी जहाज पर सवार कराये। शेष घोडे तथा कर्मचारी इबराहीम के भाई के जहाज 'मनूरत' में सवार कराये। राय जालन्सी ने हमें एक जहाज दिया। इस पर हमने जहीरुद्दीन, सुम्बुल तथा उसकी टोली के लोगो के घोडो को सवार कराया। राय जालन्सी ने हमारे लिये भोजन, जल तथा घोडो के लिये चारे की व्यवस्था कर दी और एक जहाज में जिसका नाम उकैरी था, उसने अपने पुत्र को हमारे साथ कर दिया। यह जहाज "गुराब"[1] के समान था किन्तु वह उससे कुछ बडा था। इस जहाज में ६० डाँडे थे। युद्ध के समय इस पर छत डाल दी जाती थी जिससे खेने वालो को वाण तथा पत्थर न लग सकें। मैं स्वय 'जाकर' जहाज में सवार था जिसमें पचास धनुर्धारी तथा पचास हब्शी योद्धा थे। ये लोग इस समुद्र (अरब सागर) की रक्षा के स्वामी हैं। यदि इनमे से एक भी (६०) किसी जहाज में विद्यमान होता है तो समुद्री डाकू तथा काफिर किसी को कोई हानि नही पहुचा सकते।

दो दिन की यात्रा के उपरान्त हम बैरम (पेरिम) द्वीप में पहुचे। इस द्वीप में कोई आबादी नही और यह स्थल भाग से चार मील की दूरी पर स्थित है। हम इस स्थान पर जहाज से उतरे और हमने एक जलाशय से जल लिया। इसके आबाद न होने का कारण यह है कि मुसलमानो ने काफिरो को परास्त कर इस पर अधिकार जमा लिया किन्तु वे इसे आबाद न कर सके। मलिकुत्तुज्जार ने, जिसका उल्लेख हो चुका है, उसे आबाद करना निश्चय किया था और इसके लिये चहार दीवारी बनवा कर इस पर मन्जनीक लगवायी और कुछ मुसलमानो को यहाँ बसाया।

वहाँ से चल कर हम दूसरे दिन कूका[2] (गोगो) पहुँचे। यह एक बहुत बडा नगर है और यहाँ के बाजार भी बहुत बडे-बडे हैं। हमने नगर से चार मील पर लगर डाला क्योंकि वह भाटे का समय था। मैं भाटे के समय अपने कुछ साथियो सहित नगर मे जाने के लिये एक छोटी हलकी तरणी में चला गया। किन्तु जब हम नगर से एक मील की दूरी पर थे, (६१) तो नौका कीचड में फँस गई। जब हम कीचड में फँस गये तो मैं अपने दो आदमियो के सहारे से चल पडा। क्योंकि लोगो ने बताया कि यदि पानी चढ गया तो बडी कठिनाई होगी, और इसलिये भी कि मैं तैरना न जानता था। मैंने नगर में पहुच कर बाजारों में भ्रमण किया। मैंने वहाँ एक मस्जिद देखी जिसके विषय में प्रसिद्ध था कि वह खिज्र तथा इलयास[3] की मस्जिद है। उसमें मैंने सध्या समय की नमाज पढी। इस मस्जिद मे हैदरी फकीरों का एक समूह रहता था। उनका शेख भी उन्ही के साथ था। फिर मैं जहाज में वापस आ गया।

१ लम्बा नुकीला जहाज।

२ बम्बई से १०३ मील उत्तर पश्चिम।

३ मुसलमानों के अनुसार दो पैगम्बर (ईश्वर के दूत), जिनके विषय में उनका विश्वास है कि वे सर्वदा जीवित रहेंगे।

राजा का हाल—

कूका का राजा काफिर है। उसका नाम दुनकूल है। वह दिखाने को तो हिन्दुस्तान के सुल्तान के अधीन था किन्तु वास्तव में वह विद्रोही था।

इस नगर से चल कर तीन दिन पश्चात् हम सन्दापुर द्वीप (गुम्रा) में पहुँचे। इस द्वीप (६२) में ३६ ग्राम हैं। इसके चारो ओर एक खाडी है जिसका जल भाटा के समय मीठा और स्वादिष्ट होता है तथा ज्वार के समय खारी और कडवा होता है। द्वीप के मध्य में दो नगर हैं। प्राचीन नगर काफिरो का बसाया हुआ है और दूसरा मुसलमानो ने उस समय बसाया था जब सर्व प्रथम उन्होने इस द्वीप पर विजय प्राप्त की थी। इसमें एक बहुत बडी जामा मस्जिद है जो बग़दाद की मस्जिदो के समान है। जहाजो के स्वामी हसन ने, जो सुल्तान जमालुद्दीन हिनौरी का पिता था, इसे बनवाया था। दूसरी बार इस द्वीप की विजय के समय उसके साथ मैं भी था। इसका उल्लेख आगे चल कर होगा। [इस बार] हम लोग इस द्वीप में न रुके अपितु हम ने एक छोटे द्वीप में स्थल भाग के निकट लगर डाला। यहाँ एक मन्दिर, एक उद्यान, तथा एक जलाशय था, जहाँ हमें एक जोगी मिला।

इस जोगी (योगी) की कहानी—

जब हम इस छोटे द्वीप में पहुँचे तो हमें वहाँ एक जोगी (योगी) मिला जो एक बुतखाने (६३) (मन्दिर) की दीवार के सहारे झुका हुआ था। वह दो मूर्तियो के बीच में खडा था और ऐसा ज्ञात होता था कि वह बहुत समय से तपस्या कर रहा है। जब हमने उससे वार्त्ता की तो उसने कोई उत्तर न दिया। हमने यह देखने का प्रयत्न किया कि उसके पास कोई भोजन सामग्री भी है तो हमे कुछ न दिखाई दिया। उसने तत्काल एक चीख मारी और तुरन्त एक नारियल वृक्ष से टूट कर हमारे पास आ गिरा। उसने वह हमें दे दिया। हमें बडा ही आश्चर्य हुआ। हमने उसे कुछ दीनार तथा दिरहम दिये किन्तु उसने स्वीकार न किये। जब हम उसके लिये कुछ भोजन सामग्री लाये तो उसने उसे भी स्वीकार न किया। उसके सामने ऊँट के बाला का बना हुआ एक चुगा पडा था। मैं ने उसे देखने के लिये उठाया। उसने वह मुझे दे दिया। मेरे हाथ में जेले[1] की एक तस्बीह (जप करने की सुमिरनी) थी। उसने उसके दाने उलट पलट कर देखे। मैं ने वह उसे दे दी। उसने उसे अपनी अगुलियो से मला। उसे सूँघा, चूमा और सर्व प्रथम आकाश की ओर और फिर मक्के की ओर सकेत किया। मेरे साथी उसके सकेतो को न समझ सके किन्तु मै समझ गया कि वह अपने विषय में बता रहा है कि, (६४) "मैं मुसलमान हूँ और अपने इस्लाम को इस द्वीप के निवासियो से छिपाता हूँ और इस प्रकार का जीवन व्यतीत कर रहा हूँ।" जब हम उससे विदा हुये तो मैंने उसके हाथ चूमे। मेरे साथी इस बात स असन्तुष्ट हुये और वह उनके भाव समझ गया। उसने मेरा हाथ अपने हाथ में लिया, मुसकुराया और हमसे चले जाने का सकेत किया। हम लोग चल दिये। मैं सब के अन्त में था। उसने मेरा वस्त्र खीचा। मैं ने मुड कर देखा तो उसने मुझे दस दीनार दिये। जब हम बाहर आ गये तो मेरे साथियो ने मुझसे पूछा कि "उस जोगी (योगी) ने तुम्हारा वस्त्र पकड कर क्यो खीचा था ?" मैं ने उत्तर दिया 'उसने मुझे दस दीनार दिये हैं।' उनमें से मैं ने तीन दीनार तो जहीरुद्दीन को दे दिये और तीन सुम्बुल को और उस समय मैं ने उन लोगो को बताया कि वह मुसलमान है क्योकि जब उसने आकाश की ओर सकेत किया था तो इसका अर्थ यह था कि वह अल्लाह पर विश्वास रखता है। जब मक्के की ओर सकेत किया तो इसका अर्थ यह था कि वह पैगम्बर (मुहम्मद साहब) पर विश्वास रखता है। उसका तस्बीह स्वीकार कर

१ अदन के सामने अफरीका तट पर एक नगर।

लेना इस बात की पुष्टि करता है। जब मै ने उन लोगो को बताया तो वे वहाँ पुन गये किन्तु उन्हें उस स्थान पर कोई न मिला।

(६५) वहाँ से शीघ्र ही दूसरे दिन चल कर हम लोग हिनौर[1] पहुँचे। यह नगर एक बडी खाडी पर स्थित है जहाँ जहाज आ जा सकते हैं। नगर समुद्र से आधे मील की दूरी पर है। वर्षा में समुद्र बहुत चढ जाता है और उसमे तूफान आते रहते हैं अत चार मास तक कोई भी मछली मारने के अतिरिक्त, समुद्र में किसी कार्य से नही जा सकता।

जब हम हिनौर पहुँचे तो एक जोगी (योगी) हमारे पास आया और मुझे छ दीनार दे गया और मुझ से कहा कि "ब्राह्मण ने यह तुम्हारे लिये भेजे हैं" अर्थात् उस जोगी (योगी) ने जिसे मैं ने तस्बीह दी थी। जब उसने मुझे दीनार दिये तो मैं ने एक दीनार उसे देना चाहा किन्तु उसने स्वीकार न किया और चला गया। मैं ने अपने साथियो को सब हाल बताया और उनसे कहा "यदि तुम चाहो तो अपना भाग इसमें से ले लो।" उन्होंने न लिया और उत्तर दिया कि "पहले जो छ दीनार तुमने हम को दिये थे उनमें हमने छ दीनार और मिला कर दोनो मूर्तियो के बीच में उसी स्थान पर जहाँ जोगी बैठा था, रख दिये थे। (६६) मुझे इस घटना पर और भी आश्चर्य हुआ और दीनार मैं ने सावधानी से अपने पास रख लिये।

हिनौर नगर के निवासी शाफई[2] मजहब के अनुयायी हैं। वे बडे ही सदाचारी, सरल तथा धार्मिक होते हैं। वे अपनी समुद्री शक्ति के लिये बडे प्रसिद्ध हैं और समुद्री युद्ध खूब लडते हैं। सन्दापुर विजय के उपरान्त दुर्भाग्य ने उनका मान कम करा दिया। इसका उल्लेख शीघ्र ही किया जायगा। इस नगर के धर्मनिष्ठ व्यक्तियो में शेख मुहम्मद नाकौरी (नागौरी) हैं। उन्होंने अपनी खानकाह में मेरा अतिथि सत्कार किया। वे अपना भोजन स्वय बनाते थे जिससे दास तथा दासियो के अशुद्ध हाथ उसमें न लग सकें। मैं ने इस नगर में फकीह इस्माईल के, जो लोगो को कुरान पढाते हैं, दर्शन किये। वे बडे सयमी उत्तम स्वभाव वाले तथा दानी प्रकृति के व्यक्ति हैं। मै उस नगर के काजी नूरुद्दीन अली से मिला। मैं ने वहाँ के खतीब के भी दर्शन किये। उसका नाम मैं भूल गया।

(६७) इस नगर की स्त्रियाँ तथा इस पूरे समुद्रतट की स्त्रियाँ सिला हुआ वस्त्र नही पहनती अपितु बिना सिला ढीला ढाला वस्त्र धारण करती हैं। उसका एक छोर वे अपनी कमर में बाँध लेती हैं और शेष भाग अपने कन्धो तथा सीने पर ओढ लेती हैं।[3] वे बडी सुन्दर तथा पवित्र होती हैं। प्रत्येक अपनी नाक में एक सोने की नथ पहने रहती है। इनमें एक विशेषता यह है कि उन्हें कुरान शरीफ कठस्थ होता है। मैं ने नगर में बालिकाओ के १३ और बालको के २३ मकतब देखे। इस नगर के अतिरिक्त मैं ने यह बात कही न पाई। यहाँ के निवासी समुद्री व्यापार से जीवकोपार्जन करते हैं। इनके यहाँ कृषि-योग्य भूमि नही। मलाबार निवासी सुल्तान जमालुद्दीन की समुद्री शक्ति के भय से उसे वार्षिक निर्धारित धन दिया करते हैं। उसकी सेना में ६०० अश्वारोही तथा पदाती हैं।

हिनौर के सुल्तान का हाल——

(६८) उसका नाम सुल्तान जमालुद्दीन मुहम्मद इब्न (पुत्र) हसन है। वह बडा ही

१ सन्दापुर के दक्षिण में एक प्राचीन बन्दरगाह।

२ इमाम अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन (पुत्र) इदरीस शाफई (मृत्यु ८२० ई०) के अनुयायी। वे अफ्रीका के कुछ भागों में बड़ी संख्या में हैं।

३ साड़ी पहनती हैं।

उत्कृष्ट तथा शक्तिशाली सुल्तान है। वह काफिर सुल्तान हरयब[1] के अधीन है। हरयब का उल्लेख बाद में किया जायगा। सुल्तान जमालुद्दीन सर्वदा जमाअत की नमाज (मुसलमानो की सामूहिक नमाज) पढा करता था। उसका यह नियम था कि वह मस्जिद में सूर्योदय के पूर्व ही पहुँच जाता था। प्रात काल तक कुरान पढा करता था। तत्पश्चात् वह उचित समय पर नमाज पढता था। फिर नगर के आसपास के स्थानो को चला जाता था। प्रात काल तथा मध्याह्न के मध्य में वह लौट कर सर्व प्रथम मस्जिद में नमाज पढता था। फिर महल में जाता था। अय्यामिल बीज[2] में रोजे रखता था। जिन दिनो मैं उसके पास ठहरा था, उन दिनो में वह मुझे अपने साथ रोज़ा खोलने के लिये बुलाया करता था। मैं, फकीह अली, तथा फकीह इस्माईल उपस्थित हुआ करते थे। चार छोटी कुरसियाँ भूमि पर रख दी जाती थी। उनमें से एक पर वह स्वय बैठता था और शेष पर हम तीनो।

उसकी दावत के नियम—

(६६) निम्नाकित नियमों का दावत में पालन किया जाता है। सर्व प्रथम एक ताँबे का दस्तरख्वान जो ख्वाञ्चा (थाल) कहलाता है, लाया जाता है। उस पर ताम्र की एक बडी रिकाबी होती है। उसे तालम कहते हैं। तत्पश्चात् एक रूपवती रेशमी सौब (साडी) धारण किये आती है और भोजन के पात्र उसके समक्ष रखती है। वह ताँबे का एक बडा चम्मच भी लाती है। चावलो का एक चम्मच भर कर रिकाबी में डालती है। उसके ऊपर घी डालती है। उसी थाल में दूसरी ओर मिर्चों का अचार, हरी अदरक, नीबू तथा आम का अचार रख देती है। एक एक ग्रास के उपरान्त अचार खाते हैं। जब यह चावल खा लिये जाते हैं, तो वह दूसरा चम्मच भर कर रिकाबी में डालती है। पका हुआ एक पक्षी भी एक रिकाबी में रख देती है और वह भी चावल के साथ खाया जाता है। जब वह चम्मच भर चावल भी खा लिया जाता है तो वह चावल का तीसरा चम्मच डालती है और दूसरे प्रकार का पका हुआ पक्षी भी रख देती है। जब भिन्न भिन्न प्रकार के पक्षी समाप्त हो जाते हैं, (७०) तो विभिन्न प्रकार की मछलियाँ लाई जाती हैं और उनसे चावल खाया जाता है। जब समस्त प्रकार की मछलियाँ भी खा ली जाती हैं तो भिन्न भिन्न प्रकार की घी में पकी हुई तरकारियाँ, तथा दूध से बनी हुई चीजें लाई जाती हैं। इन्हें भी चावल से खाते हैं। इन भोजनो के समाप्त हो जाने के पश्चात् कुशान, अर्थात् दही की लस्सी लाई जाती है। तत्पश्चात् भोजन समाप्त हो जाता है। जब दही लाया जाय तो फिर यह समझ लेना चाहिये कि अब भोजनार्थ कोई वस्तु शेष नही। अन्त में वे लोग उष्ण जल पीते हैं, क्योकि वर्षा में ठडा जल हानिकारक होता है।

मै इस सुल्तान के दरबार में दूसरी बार ११ मास ठहरा किन्तु मुझे रोटी खाने को कभी न मिली। वे केवल चावल खाते हैं। इसी प्रकार जब तक मैं महाल (द्वीप) सीलान (सीलोन) माबर तथा मलाबार में तीन वर्ष तक रहा तो चावल के अतिरिक्त मुझे कुछ भी खाने को न मिला। मैं चावल केवल पानी की सहायता से ही निगल सकता था।

वहाँ का सुल्तान रेशम तथा सन के बने हुये बारीक वस्त्र धारण करता है। वह कमर में एक चादर लपेटता है और दो जुब्बे एक दूसरे के ऊपर पहनता है। वह अपने सिर (७१) के बालों को गूँधता है और एक छोटी सी पगडी बाँधता है। जब सवार होता है तो वह एक कबा भी पहन लेता है और उसके ऊपर से दो अन्य जुब्बे धारण कर लेता है। उसके

१ सम्भवत हरिहर।

२ इस्लामी महीनों की १३ तारीख से १५ तारीख।

आगे आगे ढोल तथा बिगुल बजाते जाते हैं। इस बार हम उसके साथ तीन दिन ठहरे। उसने हमे यात्रा हेतु भोजन सामग्री भी दी।

वहाँ से चल कर हम तीन दिन उपरान्त मुलेबार (मलाबार) तट पर पहुँचे। यह काली मिर्चों का देश है। इसकी लम्बाई सन्दापुर (गुग्रा) मे क्वालम (कुईलुन) तक फैली है और इसकी यात्रा में दो मास लगते हैं। मार्ग के दोनो ओर छायामय वृक्ष हैं। आधे-आधे मील पर लकडी के घर बने हैं। उसमें लकडी के चबूतरे (बेंचें) बने हैं। उन पर सभी यात्री चाहे वे काफिर हो अथवा मुसलमान बैठ सकते हैं। प्रत्येक घर के पास कुआँ होता है जिस पर काफिर जल पिलाते हैं। काफिर-यात्रियो को वह बर्तन में पानी पिलाता है, किन्तु मुसलमानों को चुल्लू से जल पिलाता है। पिलाने वाला पीने वाले के हाथ पर, जिसे वह अपने (७२) मुह के निकट कर लेता है, जल डालता रहता है। जब वह सकेत से निषेध कर देता है, तो वह जल डालना बन्द कर देता है। मालाबार के काफिरो का यह नियम है कि कोई मुसलमान उनके घरों में प्रविष्ट नही हो सकता और न उनके पात्रों में भोजन कर सकता है। यदि कोई मुसलमान उनके पात्रों में भोजन कर लेता है तो वे या तो उसे तोड डालते हैं अथवा उसी को दे देते हैं। यदि कोई मुसलमान किसी ऐसे स्थान पर पहुच जाता है जहाँ कोई मुसलमान नही होता तो वे मुसलमान के लिये भोजन बना देते हैं और केले के पत्ते पर रख देते हैं। उसी पर तरकारी आदि डाल देते हैं। जो बच जाता है उसे पक्षी तथा कुक्कुर खा लेते हैं। इस मार्ग के समस्त पडावों पर मुसलमानो के भी घर हैं, जहाँ मुसलमान यात्री उतरते हैं और अपनी आवश्यकता की वस्तुयें मोल ले सकते हैं। वहाँ उनके लिये भोजन भी बन जाता है। यदि ये मुसलमान न होते तो फिर कोई मुसलमान इस देश में यात्रा नही कर सकता था।

(७३) इस दो महीने के मार्ग में भूमि का एक अल्प भाग भी ऐसा नही है, जिस पर कृषि न होती हो। प्रत्येक मनुष्य का अपना घर होता है। उसके चारो ओर एक उद्यान होता है। उसके चारों ओर लकडी का एक कटघरा होता है। मार्ग उद्यान के बीच से होकर जाता है। जब एक उद्यान समाप्त हो जाता है तो उसके कटघरे में लकडी की सीढियाँ मिलती हैं। उस पर चढ कर दूसरे उद्यान में पहुँच जाते हैं। इसी प्रकार दो मास की यात्रा की जाती है। इस देश में कोई भी किसी पशु पर बोझ लाद कर नही लेजा सकता और न घोडे पर जा सकता है। केवल सुल्तान के पास ही घोडे होते हैं। प्रायः लोग डोले पर यात्रा करते हैं। इसे किराये के मजदूर अथवा दास उठाते हैं। जो लोग डोले पर यात्रा नही करते वे चाहे जो कोई भी हो पैदल यात्रा करते हैं। यदि किसी के पास कोई भारी सामान अथवा व्यापारिक सामग्री होती है तो वह किराये पर मजदूर रख लेता है। वे अपनी पीठ पर सामान लाद कर ले जाते हैं। किसी किसी व्यापारी के साथ सामान ले जाने के लिये १००, १००, कुली तक होते हैं। प्रत्येक मजदूर अपने हाथ में एक मजबूत डडा लिये रहता है। उसके नीचे लोहे की एक कील लगी रहती है और ऊपर लोहे का एक काँटा लगा रहता है। जब वह थक जाता है और उसे आराम के लिये कोई चबूतरा नही मिलता तो (७४) वह भूमि पर अपना डडा गाड देता है और उस पर सामान की गठरी लटका देता है। जब वह आराम कर चुकता है तो किसी से सहायता माँगे बिना अपना सामान उठा कर चल देता है।

मैं ने इतना सुरक्षित कोई अन्य मार्ग नही देखा। यदि कोई एक नारियल भी चुरा लेता है तो उसकी हत्या करदी जाती है। जब कोई फल गिर पडता है तो उसे कोई नही

उठाता। जब उसका स्वामी आता है तो वही से उसे उठाता है। कहते हैं कि किसी ने कोई नारियल उठा लिया। जब हाकिम को सूचना मिली तो उसने आदेश दिया कि भूमि पर एक लकडी गाड दी जाय। उसके सिरे पर लोहे की नोक थी। उस पर एक तख्ता लगा था। उस चोर को तख्ते पर लिटाया गया। लोहे की नोक उसके पेट से होकर सीने के पार हो गई। वह लोगो की शिक्षा हेतु वही लटका रहा। इस प्रकार की लकडियाँ मार्ग में बहुत से स्थानों पर लगी हैं। इससे लोग भय करते रहते हैं। हमने इस मार्ग में रात्रि के समय भी बहुत से काफिर देखे। वे एक ओर खडे हो जाते थे और जब हम लोग निकल जाते थे, (७५) तब वे अपनी यात्रा प्रारम्भ करते थे। यहाँ मुसलमानो का बडा आदर सम्मान होता है। जैसा इससे पूर्व उल्लेख हो चुका है, केवल भोजन उनके साथ नही किया जाता और न उन्हें अपने घरो में प्रविष्ट होने की अनुमति दी जाती है।

मालाबार में १२ काफिर राजा हैं। कुछ इतने बडे हैं कि उनकी सेना में ५०,००० सैनिक हैं। जो इतने शक्तिशाली नही उनके पास ३,००० सैनिक हैं, किन्तु इनमें इस पर कोई वैमनस्य नहीं। शक्तिशाली राजा शक्तिहीन राज्यों के अपहरण की आकांक्षा नही रखता। जब एक राजा के राज्य की सीमा समाप्त हो जाती है और दूसरे राजा की सीमा प्रारम्भ होती है तो एक लकडी का द्वार मिलता है। उस पर आगे आने वाले राज्य के राजा का नाम खुदा होता है। उसे "उस राजा की रक्षा का द्वार" कहा जाता है। यदि कोई काफिर अथवा मुसलमान किसी राज्य में कोई अपराध करके किसी दूसरे राजा के रक्षा द्वार में प्रविष्ट हो जाता है तो उसे कुछ भय नही रहता। कोई राजा कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो किन्तु वह शक्तिहीन राजा को अपराधी को देने पर विवश नही करता।

(७६) इन राजाओं के पुत्र राज्य के उत्तराधिकारी नही होते किन्तु उनके भागिनेय उनके उपरान्त राज्य के स्वामी बनाये जाते हैं। मैंने यह प्रथा मसूफा[1] के अतिरिक्त किसी में भी नही देखी। वे बुर्का पहनते हैं। इनका उल्लेख बाद में होगा। यदि कोई राजा किसी व्यापारी का, व्यापार बन्द करा देना चाहता है तो वह अपने दासो को भेज कर उसकी दुकान पर वृक्षो की डालियाँ तथा पत्तियाँ लटकवा देता है। जब तक डालियाँ लटकी रहती हैं, उस समय तक उस दुकान से कोई क्रय विक्रय नही कर सकता।

काली मिर्चों का वर्णन—

काली मिर्चों की झाडियाँ अंगूर की बेल के समान होती हैं। वह नारियल के समीप बोयी जाती हैं और उनकी बेलें नारियल के वृक्ष पर अंगूर की बेलो के समान चढ जाती हैं। मिर्च की बेलों में अंगूर की बेलो के समान तन्तु नहीं होते। उसके पत्र हीग के पत्तों के (७७) समान होते हैं। कुछ पत्र अलीक (एक प्रकार की घास जिसे खाकर घोडे मोटे हो जाते हैं) के पत्तो के समान होते हैं। उसका फल छोटे छोटे गुच्छो में लगता है और जब वे हरे होते हैं तो अबू क्निनीना[2] के समान होते हैं। खरीफ में उन्हें तोड कर नरकट की चटाई पर उसी प्रकार सुखा देते हैं जिस प्रकार किशमिश बनाते समय अंगूर सुखाये जाते हैं। उनको उलटते पलटते रहते हैं। जब वे सूख जाते हैं और उनका रंग काला हो जाता है तो उन्हें व्यापारियों के हाथ बेच दिया जाता है। हमारे देश में लोगों का यह विचार है कि उनको आग में भूनते हैं, इसी कारण उनमें करारापन आ जाता है, किन्तु यह बात ठीक नहीं। यह करारापन धूप से पैदा होता है। हमने कालकूत (कालीकट) नगर में इसको उसी प्रकार नाप नाप कर भरते देखा है जिस प्रकार हमारे देश में ज्वार भरते हैं।

---

१ सूडान में अफरीका की एक जाति जो बुर्का पहनती है।

२ एक प्रकार की खजूर।

(८४) जुरफत्तन से हम दहफत्तन[1] पहुँचे। यह एक बहुत बडा नगर है और एक खाडी के किनारे बसा है। यहाँ नारियल, काली मिर्च तथा पुगीफल बहुत अधिक मात्रा में होते हैं। यहाँ अरवी भी बहुत पैदा होती है जो माँस के साथ पकाई जाती है। इतने सस्ते तथा अधिक केले मैने कही भी नही देखे। इस नगर में एक बहुत बडी बाईं है। वह ५०० पग लम्बी तथा ३०० पग चौडी है। यह लाल कटे हुये पत्थर की बनी है। इसके चारो ओर २८ बडे-बडे गुम्बद हैं। प्रत्येक में चार बडे-बडे पत्थर के बैठने के स्थान हैं। उनकी छत तक पहुँचने के लिये पत्थर की सीढियाँ बनी हुई हैं। जलाशय के मध्य में तीन मन्जिलो का एक बहुत बड़ा गुम्बद है। प्रत्येक मजिल में चार बैठने के स्थान हैं। मुझे बताया गया कि यह बाईं वर्त्तमान राजा कुएल के पिता ने वनवाई थी। इसके समक्ष मुसलमानों की एक जामा मस्जिद है। इसमें जीने बने हैं जिनसे उत्तर कर जलाशय तक जा सक्ते हैं। लोग वहाँ वजू (८५) तथा स्नान करते हैं। फकीह हुसेन ने मुझे बताया कि इस मस्जिद तथा बाईं को राजा कुएल के किसी पूर्वज ने, जो मुसलमान हो गया था, बनवाया था। वह बडी ही विचित्र परिस्थिति में मुसलमान हुआ था। इसका उल्लेख आगे आयेगा।

मस्जिद के सामने के विचित्र वृक्ष का उल्लेख—

मैने मस्जिद के निकट एक बडा ही सुन्दर वृक्ष हरा भरा देखा। उसकी पत्तियाँ अन्जीर की पत्तियो के समान थी किन्तु वे कुछ अधिक नरम थी। इस वृक्ष के चारो ओर दीवार बनी है। वहाँ एक मेहराब[2] भी है जहाँ मैं ने दो रकात[3] नमाज़ पढी। यह वृक्ष "दरख्ते शहादत" कहलाता है। कहा जाता है कि प्रत्येक शरद ऋतु में इस वृक्ष का एक पत्ता पहले पीला हो जाता है, फिर लाल हो जाता है और तत्पश्चात् गिर पडता है। उस पर दैवी लेखनी से 'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर् रसूलुल्लाह[4]' लिखा होता है। फकीह हुसेन (८६) तथा कुछ अन्य विश्वसनीय लोगो ने मुझे बताया कि उन्होंने स्वय अपनी आँखों से वह पत्ता देखा था और उस पर "कलमा" लिखा हुआ पढा था। मुझे लोगों ने यह भी बताया कि पत्ते के गिरने के समय विश्वस्त मुसलमान तथा काफिर वृक्ष के नीचे जाकर बैठ जाते हैं। जब यह पत्ता गिर पडता है तो उसका आधा भाग तो मुसलमान ले लेते हैं और आधा काफिर राजा के कोष में रख दिया जाता है। इसके द्वारा बहुत से रोगी स्वस्थ हो जाते हैं। राजा कुएल का पूर्वज जिसने जलाशय तथा मस्जिद का निर्माण कराया इसी पत्ते को देख कर मुसलमान हुआ था। वह अरबी पढ सकता था। जब उसने वह पत्ता पढा और उसके अर्थ पर मनन किया तो वह पक्का मुसलमान हो गया। वह बडा पक्का मुसलमान रहा। यह कहानी मुझे बहुत से लोगो ने बताई और यह यहाँ के लोगो में बडी प्रचलित है। फकीह हुसेन ने मुझे बताया कि उसकी कोई सतान अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त पुन काफिर हो गई और उसने बडा अत्याचार प्रारम्भ कर दिया। उसने आदेश दिया कि वृक्ष का समूल उच्छेदन कर दिया जाय। उसके आदेशानुसार वृक्ष का कोई चिह्न न छोडा (८७) गया किन्तु वह पुन हरा हो गया और पूर्व की अपेक्षा कही अधिक बढा। उस राजा का शीघ्र ही अन्त हो गया।

---

१ कदाचित धर्मपट्टम।

२ मस्जिद का वह स्थान जहाँ इमाम नमाज़ पढाता है।

३ नमाज़ में 'घुटनों के बल झुकना तथा सिजदा करना और फिर खड़े हो जाना' यह पूरी क्रिया एक रकात कहलाती है।

४ मुसलमानों का कलमा "अल्लाह के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं तथा मुहम्मद उसके रसूल (दूत) हैं।"

वहाँ से चल कर हम बुदफत्तन[1] पहुचे। यह एक बडी खाडी के किनारे स्थित है और एक बडा नगर है। समुद्र तट पर नगर के बाहर एक मस्जिद है जहाँ मुसलमान यात्री आकर ठहरते हैं क्योकि इस नगर में कोई मुसलमान नही है। इस नगर का बन्दरगाह बडा ही सुन्दर है और यहाँ का जल बडा मीठा होता है। यहाँ छालिया बहुत अधिक होती है और चीन तथा हिन्दुस्तान में बहुत अधिक मात्रा में भेजी जाती है। यहाँ के अधिकतर निवासी ब्राह्मण हैं। हिन्दू उनको बडा ही पूज्य समझते हैं। वे मुसलमानो से घृणा करते हैं। इसी कारण यहाँ कोई मुसलमान निवास नहीं करता।

कहानी—

इस मस्जिद के नष्ट न होने का यह कारण बताया जाता है कि एक ब्राह्मण ने (८८) इसकी छत तोड डाली और उसका सामान अपने घर की छत में लगा लिया। कुछ समय पश्चात् उसके घर में आग लग गई और वह, उसके कुटुम्ब वाले तथा उसकी धन-सम्पत्ति सब कुछ जल गया। इस कारण अब लोग इस मस्जिद का बडा आदर करते हैं और कोई इसको किसी प्रकार की हानि नही पहुचाता। उन्होने इसके बाहर एक हौज बनवा दिया है जिससे यात्री पानी पी सकें और इसके द्वार पर लकडी की जाली लगादी है जिसमे पक्षी इसमें प्रविष्ट न हो सकें।

बुदफत्तन से चल कर हम फनदरैना (पन्देरानी) पहुँचे। यह भी एक बहुत बडा नगर है। इसमें उद्यान तथा बाजार बहुत बडी सख्या में हैं। इसमें मुसलमानों के तीन मुहल्ले हैं। प्रत्येक मुहल्ले में एक मस्जिद है। जामा मस्जिद समुद्र तट पर है। इसमें समुद्र की ओर बैठने के लिये स्थान बने हैं और एक अद्भुत दृश्य प्रस्तुत रहता है। नगर का काजी तथा खतीब उमान के निवासी हैं। काजी का भाई भी, जो बडा ही योग्य है, यही रहता है। चीनी जहाज शरद ऋतु में यहीं ठहरते हैं।

वहाँ से चल कर हम कालीकूत (कालीकट) पहुचे। यह मालाबार का मुख्य बन्दरगाह है और ससार के बडे बडे बन्दरगाहो में सम्मिलित है। चीन, सुमात्रा, सीलोन, मालदीव (८९) (मालद्वीप), यमन तथा फार्स के यात्री यहाँ आते जाते हैं और ससार के समस्त भागो के यात्री यहाँ एकत्र होते हैं।

यहाँ के राजा का हाल—

कालीकूत (कालीकट) का राजा काफिर है। वह सामरी (जमुरिन) कहलाता है। वह वृद्ध पुरुष है और अपनी दाढी उसी प्रकार मुडवाता है जिस प्रकार यूनान निवासी मुडवाते हैं। मैंने उससे वहाँ भेंट की। यदि ईश्वर ने चाहा तो इसका उल्लेख इसके पश्चात् होगा। अमीरुत्तुज्जार (व्यापारियों का नेता) का नाम इबराहीम शाह बन्दर[2] है। वह बहरैन का निवासी है, और बडा ही योग्य तथा दानी पुरुष है। प्रत्येक दिशा के यात्री एकत्र होकर उसके यहाँ भोजन करते हैं। इस नगर के काजी का नाम फखरुद्दीन उसमान है। वह बडा ही योग्य और दानी है। खानकाह का शेख शिहाबुद्दीन गाजरूनी है। जो लोग चीन तथा हिन्दुस्तान में शेख अबू इसहाक गाजरूनी की मनौती मानते हैं, वे उन्ही के समक्ष अपनी भेंट रखते हैं। (९०) इसी नगर में जहाजों का स्वामी मिस्काल भी रहता है। वह बडा प्रसिद्ध तथा धनी है। उसके जहाज हिन्दुस्तान, चीन, यमन तथा फार्स से व्यापार करते हैं। जब हम इस नगर में पहुँचे, तो शाह बन्दर इबराहीम, काजी, शेख शिहाबुद्दीन, नगर के मुख्य व्यापारी तथा

---

१ माही के दक्षिण पूर्व मालाबार का एक बडा प्राचीन बन्दरगाह।

२ समुद्री कर वसूल करने वाला मुख्य अधिकारी।

मलिक सुम्बुल के कान में लोहे की कील घुस गई थी और दूसरी ओर निकल गई थी। हमने उसके जनाज़े की नमाज पढ कर उन्हें दफन कर दिया।

कालीकट का राजा धोती बांधे हुये तथा सिर पर एक छोटी सी पगडी रक्खे हुये आया। उसका दास छत्र लगाये था। उसके सामने आग जलती हुई आती थी। उसके सिपाही लोगो को पीटते जाते थे ताकि जो कुछ समुद्र के किनारे पडा हो उसे कोई उठा न ले जाय। मालाबार में यह प्रथा है कि ऐसा धन राजकोष में सम्मिलित कर लिया जाता है किन्तु कालीकट की यह प्रथा है कि वह सामान जहाज वालो का ही रहता है और उसके कानूनी उत्तराधिकारियो को प्राप्त हो जाता है। इसी कारण यह नगर बडी उन्नति पर है और इसमे अत्यधिक जहाज आते जाते रहते हैं।

(९८) ककम के मल्लाहो ने जब यह हाल देखा तो उन्होने अपने जहाज के पाल उठा दिये और चल दिये। उसमें मेरे सभी साथी, धन सम्पत्ति तथा दास दासिया थी। मैं समुद्र तट पर अकेला रह गया। मेरे साथ केवल एक दास रह गया था और उसे भी मैं मुक्त कर चुका था। वह भी मुझे छोड कर चला गया। मेरे पास केवल दस दीनार, जो जोगी ने दिये थे, रह गये और एक बिछौना शेष था।

मुझे लोगो ने बताया कि ककम कौलम (कुईलून) के बन्दरगाह पर अवश्य रुकेगा। मैने वहाँ जाना निश्चय किया। कौलम (कुईलून) जल तथा स्थल दोनो ही मार्गों से दस दिन की यात्रा की दूरी पर स्थित है। मै जल के मार्ग से चल दिया और एक मुसलमान को बिछौना उठाने के लिये मजदूरी पर रख लिया। नदी द्वारा यात्रा करने वाले रात्रि में स्थल भाग पर किसी ग्राम मे ठहर जाते हैं और दूसरे दिन पुन जहाज पर आ जाते हैं। हमने (९९) भी यही किया। जहाज पर उस मुसलमान के अतिरिक्त जिसे हमने किराये पर लिया था कोई अन्य मुसलमान न था। यह आदमी किनारे पर पहुच कर काफिरो के साथ मदिरापान करता था और मुझसे झगडा किया करता था। इस कारण मैं और भी दुखी रहता था।

पाँच दिन यात्रा करके हम कुजाकरी मे पहुँचे। यह एक पहाडी की चोटी पर स्थित है। यहाँ यहूदी रहते हैं। उनका अमीर (मुख्य अधिकारी) भी यहूदी है। वे कौलम (कुईलून) के राजा को जिजया देते हैं।

दालचीनी तथा बकम[१] के वृक्षो का हाल---

इस नदी के किनारे किनारे दालचीनी तथा बकम (ब्राजील) के वृक्ष हैं। उस ओर इन्ही वृक्षो की लकडियाँ ईंधन के काम आती हैं।

दसवें दिन हम कौलम (कुईलून) पहुँचे। मालाबार का यह सब से अधिक सुन्दर नगर है। यहाँ के बाजार बडे शानदार हैं और यहाँ के व्यापारी सूली कहलाते हैं। व बडे धनी (१००) होते हैं। अकेला व्यापारी पूरा जहाज मोल ले लेता है और उसमें अपने गोदाम का समस्त सामान लाद देता है। यहाँ मुसलमान व्यापारियो की भी आबादी है। उनका नेता अलाउद्दीन आवजी (आवचो) एराक के आवा नामक स्थान का रहने वाला था। वह राफ़ज़ी[२] है और उसके साथी भी खुल्लम खुल्ला इसी धर्म के अनुयायी है। नगर का काजी कज़वीन[३] का एक विद्वान है। वहाँ के मुसलमानो का नेता मुहम्मद शाह बन्दर है। उसका भाई बडा

१ एक प्रकार की लाल लकड़ी, ब्राज़ील।

२ शीआ, मुहम्मद साहब के बाद अली को प्रथम खलीफा मानने वाले। सुन्नी अबूबक्र को प्रथम खलीफा मानते हैं।

३ तेहरान (ईरान) के उत्तर पश्चिम में एक नगर।

योग्य तथा दानी है। उसका नाम तकीउद्दीन है। यहाँ की जामा मस्जिद बडी ही भव्य है। उसे व्यापारी ख्वाजा मुहज्जब ने निर्मित कराया था। यह नगर मालाबार के नगरो में चीन से सब से अधिक निकट है। इसी कारण बहुत से चीनी यहाँ यात्रा करने आते रहते हैं। मुसलमानो का इस नगर में बडा आदर सत्कार होता है।

यहाँ के राजा का हाल—

(१०१) यहाँ का राजा काफिर है। उसका नाम तीरावरी है। वह मुसलमानों का आदर करता है और चोरों तथा दुराचारियो को कठोर दण्ड देता है।

कहानी—

कौलम में मैं ने जो बातें देखी उनमें से एक यह है एक एराकी धनुर्धारी ने दूसरे की हत्या कर दी और आवजी के घर में शरण ले ली। वह बडा धनी था। जब मुसलमानो ने उसे दफन करना चाहा तो राजा के कर्मचारियों ने उसे रोक दिया और कहा, "इसे उस समय तक दफन नही किया जा सकता जब तक हत्यारा हमारे सिपुर्द न कर दिया जायगा।" उसका शव आवजी के घर के द्वार के सामने रख दिया गया, यहाँ तक कि उसमें से दुर्गन्ध आने लगी। आवजी ने यह देख कर हत्यारे को राजा के कर्मचारियो के सिपुर्द कर दिया और निवेदन किया कि "उसकी हत्या न की जाय और उसके स्थान पर उसकी धन सम्पत्ति ले ली जाय" किन्तु अधिकारियो ने इसे स्वीकार न किया और उसकी हत्या करा दी। तत्पश्चात् मृतक शरीर (१०२) दफन कर दिया गया।

कहानी—

कहते हैं कि कौलम (कुईलून) का राजा एक दिन नगर के उपान्त में सवार होकर जा रहा था। उसका मार्ग उद्यानो के मध्य में से होकर जाता था। उसका जामाता उसके साथ था। वह भी किसी राजा का पुत्र था। उसने एक आम, जो किसी वृक्ष से गिर पडा था, उठा लिया। राजा उसे देख रहा था। उसने आदेश दिया कि उसी स्थान पर उसके दो टुकडे कर दिये जायँ। उसके शरीर के दोनो भाग मार्ग के दाहिनी तथा बाईं ओर रखवा दिये गये। इसी प्रकार आम के भी दो टुकडे कर दिये गये और उन्हे भी मार्ग के दोनो ओर रखवा दिया गया, जिससे दर्शक गण शिक्षा ग्रहण कर सकें।

कहानी—

कालीकट में भी इसी प्रकार की एक घटना घट चुकी थी। एक बार राजा के नायब के भतीजे ने एक मुसलमान व्यापारी की तलवार छीन ली। व्यापारी ने उसके चाचा से अपनी तलवार का अभियोग कर दिया। उसने घटना की पूछताछ करने का वचन दे दिया। वह (१०३) अपने घर के द्वार पर बैठ गया। कुछ समय पश्चात् उसका भतीजा तलवार बाँधे आया। नायब ने उसे बुला कर उससे प्रश्न किया, "यह तलवार मुसलमान की है ?" उसने उत्तर दिया, "हाँ।" नायब ने उससे पूछा कि "क्या तुम ने इस उससे क्रय किया है ?" उसके भतीजे ने उत्तर दिया, "नही"। नायब ने अपने कर्मचारियों को आदेश दिया कि उसकी हत्या उसी तलवार से कर दी जाय।

मैं कौलम (कुईलून) में कुछ समय तक शेख फखरुद्दीन की खानकाह में ठहरा रहा। वह शेख शिहाबुद्दीन गाजरूनी, जो कालीकट की खानकाह के शेख हैं, का पुत्र है। मुझे ककम के विषय में कुछ ज्ञात न हो सका। इसी बीच में चीन के बादशाह के दूत, जो हमारे साथ देहली से आये थे और दूसरे जुन्क में सवार थे, पहुँच गये। उनका जुन्क भी टूट गया था। चीनी व्यापारियों ने उन्हें वस्त्र दिये और वे चीन लौट गये। मैं ने उनसे चीन में भी भेंट की।

मावर

मावर की ओर प्रस्थान--

(१८५) फिर हम लोग मावर की ओर चले। हमारी यात्रा के समय वायु बड़ी तीव्र हो गई और जल बहुत ऊँचा उठने लगा और जहाज में प्रविष्ट होने वाला था। हमारे साथ कोई योग्य रईस (कप्तान) न था। फिर हम एक चट्टान के निकट पहुच गये और (१८६) जहाज टकरा कर टूट जाने वाला ही था कि हम कम जल वाले भाग में पहुँच गये और जहाज डूबने लगा। मृत्यु हमारी आँखों के समक्ष घूमने लगी। लोगो के पास जो कुछ था, वह उन्होंने फेंक दिया और विदा होने लगे। हमने जहाज के मस्तूल काट कर फेंक दिये और मल्लाहो ने लकडी की एक नौका बनाई। भूमि वहाँ से दो फरसग थी। मैंने भी नौका में उतरने का विचार किया। मेरे साथ दो दासियाँ तथा दो अन्य साथी थे। उन लोगो ने कहा, "क्या तुम हम लोगो को छोड कर नौका में उतरना चाहते हो ?" मैंने उन लोगो की रक्षा को अपनी रक्षा पर प्रधानता दी और कहा, "तुम दोनो मेरी प्रिय दासी के साथ नीचे चले जाओ।" दासी ने कहा कि, "मैं खूब तैरना जानती हूँ। मैं नौका की एक रस्सी पकड कर लटक जाऊँगी और तैरती चली आऊँगी।" इस पर मेरे दोनो साथी नौका में उतर गये। उनमें से एक मुहम्मद बिन (पुत्र) फरहान अत्तूजरी था और दूसरा एक मिस्री था। वे दोनो तथा एक दासी नौका में बैठ गये और दूसरी दासी तैरने लगी। मल्लाहों ने भी नौका की (१८७) रस्सियाँ बाँध ली और तैरने लगे। मैंने अपना बहुमूल्य सामान, रत्न तथा अम्बर आदि उन्हें दे दिये। वह सब सामान मुझे बडा प्रिय था और समस्त वस्तुयें वायु के अनुकूल होने के कारण सुरक्षित समुद्र तट पर पहुँच गईं।

मैं जहाज ही में ठहरा रहा। रईस (कप्तान) भी एक लकडी के तख्ते के सहारे किनारे पहुँच गया। मल्लाह चार नौकायें बनाने लगे किन्तु उनके पूर्ण होने के पूर्व ही रात्रि हो गई और जहाज में जल आ गया। मैं जहाज के पिछले भाग पर चढ गया और रात्रि में वही रहा। प्रातःकाल कुछ काफ़िर (हिन्दू) एक नौका लेकर हमारे पास आये और हम लोग उनके साथ मावर के तट पर पहुँचे।

हमने उन्हें बताया कि मैं उनके सुल्तान का, जिसके वे जिम्मी (प्रजा) हैं, सम्बन्धी हूँ। उन्होंने उसे इस बात की सूचना भेजी। सुल्तान उस समय एक युद्ध के लिये आया हुआ था और वहाँ से दो दिन की यात्रा की दूरी पर था। मैं ने भी उसे एक पत्र लिखा जिसमे इस दुर्घटना का उल्लेख किया। काफिर हमें एक घने जगल में ले गये और हमारे लिये खरबूजे के समान एक फल लाये। यह एक प्रकार के खजूर का फल था। इसमें रुई के समान कोई चीज (१८८) थी और इसका रस बडा मीठा था। इस रस की एक मिठाई (हलवा) बनती है जो "ताल" कहलाती है। इसका स्वाद शक्कर के समान होता है। तत्पश्चात् काफिर हमारे लिये कुछ उत्तम प्रकार की मछली लाये। हम लोग वहाँ तीन दिन तक ठहरे रहे।

इसके उपरान्त सुल्तान की ओर से कमरुद्दीन नामक एक अमीर कुछ अश्वारोहियों तथा पदातियो को लेकर आया। वे एक 'डोला' तथा दस घोडे लाये। मैं, मेरे साथी, जहाज का 'रईस' (कप्तान) तथा एक दासी घोडे पर सवार हुये और दूसरी दासी 'डोले' पर सवार हुई। इस प्रकार हम लोग 'हरकातू' किले में पहुँचे। रात्रि में हम लोगो ने वहीं विश्राम किया।

मैंने दासियों, कुछ दासों तथा साथियों को वहीं छोड़ दिया और दूसरे दिन हम सुल्तान के शिविर में पहुँच गये।

माबर प्रदेश का सुल्तान—

माबर प्रदेश का सुल्तान गयासुद्दीन दामगानी था। प्रारम्भ में वह मलिक मुजीर बिन (पुत्र) अबु रिजा के अश्वारोहियों की सेना का एक अश्वारोही था। मलिक मुजीर सुल्तान मुहम्मद का एक सेवक था। फिर वह अमीर हाजी बिन (पुत्र) सैयिद सुल्तान जलालु- (१८६) द्दीन की सेवा में प्रविष्ट हो गया। इसके उपरान्त वह बादशाह हो गया। बादशाह होने के पूर्व वह सिराजुद्दीन कहलाता था किन्तु सिंहासनारूढ होने के पश्चात् उसने गयासुद्दीन की उपाधि धारण कर ली।

माबर प्रदेश देहली के बादशाह सुल्तान मुहम्मद के अधीन था किन्तु मेरे श्वसुर शरीफ जलालुद्दीन एहसन शाह ने उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया और माबर पर पाँच वर्ष तक राज्य करता रहा। तत्पश्चात् उसकी हत्या कर दी गई और उसका एक अमीर अलाउद्दीन उदैजी बादशाह हुआ और वह एक वर्ष तक राज्य करता रहा। तत्पश्चात् वह काफिरों से युद्ध करने के लिये निकला और अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त करके अपने राज्य को लौट आया। दूसरे वर्ष उसने उन पर पुनः चढ़ाई की और उन्हें पराजित करके बहुतों की हत्या कर डाली। जिस दिन हत्या की जा रही थी उसने जल पीने के लिये अपना सिरत्राण हटाया। उसी समय किसी अज्ञात दिशा से एक बाण आकर उसके लगा और उसकी तुरन्त मृत्यु हो गई।

इसके उपरान्त उसका जामाता क़ुतुबुद्दीन सिंहासनारूढ किया गया किन्तु लोगों को उसका चरित्र अच्छा न लगा और चालीस दिन पश्चात् उसकी हत्या कर दी गई। तत्पश्चात् (१९०) सुल्तान गयासुद्दीन सिंहासनारूढ किया गया। उसने सुल्तान शरीफ जलालुद्दीन की एक पुत्री से विवाह किया। उसकी बहिन से देहली में मेरा विवाह हुआ था।

सुल्तान गयासुद्दीन के शिविर मे हमारा पहुंचना—

जब हम लोग उसके शिविर के निकट पहुँचे तो उसने हमारे स्वागतार्थ अपने हाजिब भेजे और वह स्वय लकडी के गुम्बद पर बैठा रहा। समस्त हिन्दुस्तान में यह प्रथा है कि कोई भी सुल्तान की सेवा में मोज़े पहने बिना नही जा सकता किन्तु मेरे पास मोज़े न थे। एक काफिर ने मुझे मोज़े दिये यद्यपि वहाँ बहुत से मुसलमान उपस्थित थे। मुझे उन मुसलमानों की अपेक्षा काफिर को उदार देख कर आश्चर्य हुआ।

मैं सुल्तान की सेवा में उपस्थित हुआ। उसने मुझे बैठने का आदेश दिया। तत्पश्चात् उसने काज़ी, हाजी सद्रुज़्ज़माँ बहाउद्दीन को बुलवाया और उसके निवास स्थान के निकट उसने मुझे तीन डेरे, जिन्हें हिन्दुस्तान में ख्याम कहते हैं, प्रदान किये। उसने मेरे लिये क़ालीन (१९१) तथा भोजन भेजा। भोजन में चावल तथा माँस था। हिन्दुस्तान में भी हमारे देश की भाँति भोजन के उपरान्त लस्सी पीते हैं। तत्पश्चात् मैं ने सुल्तान से भेंट की और उसे मालद्वीप की घटना की सूचना देकर उससे वहाँ सेना भेजने के लिये कहा। उसने सेना भेजने का सकल्प कर लिया और इस कार्य हेतु जहाज़ भी निश्चित कर दिये। मालद्वीप की मलिका के लिये उपहार तथा वज़ीरों एव अमीरों के लिये भी उपहार और खिलअतें तैयार कराई। उसने मुझे मलिका की बहिन के साथ उसका विवाह निश्चय करने के लिये नियुक्त किया। मालद्वीप के दरिद्रियों के लिये तीन नावें दान की सामग्री से भरवाई। इसके उपरान्त उसने मुझको ५ दिन पश्चात् वहाँ जाने के लिये कहा किन्तु क़ाएदुलबहर (समुद्रीय सेनानायक) ख्वाजा सरलक ने सुल्तान से कहा कि 'उस द्वीप को तीन मास तक यात्रा करना सम्भव नहीं।'

इस प्रकार तैयार होकर वे मध्याह्न के भोजन के पश्चात् की निद्रा के समय शत्रु के शिविर पर टूट पडे। उस समय उनकी सेना असावधान थी और घोडे चरने के लिये गये थे। जैसे ही उन लोगो ने उनके शिविर पर आक्रमण किया तो काफिरो ने समझा कि वे चोर हैं (१६८) अत वे बिना किसी तैयारी के बाहर निकल आये और युद्ध करने लगे। इतने में सुल्तान गयासुद्दीन भी पहुँच गया और काफिर बुरी तरह पराजित हो गये। यद्यपि राजा की अवस्था अस्सी वर्ष की थी किन्तु उसने घोडे पर सवार होने का प्रयत्न किया, परन्तु सुल्तान गयासुद्दीन के भतीजे नासिरुद्दीन ने, जो बाद में उसका उत्तराधिकारी हुआ, उसे पकड लिया। *नासिरुद्दीन राजा को न पहचानता था, अत वह उसकी हत्या करने वाला ही था कि उसके* एक सेवक ने कहा, "यह राजा है।" नासिरुद्दीन उसे बन्दी बना कर अपने चाचा के पास ले गया। वह उससे उस समय तक उचित व्यवहार करता रहा तथा मुक्त कर दने का आश्वासन देता रहा जब तक कि उसने उसकी धन-सम्पत्ति, हाथी, घोडे आदि न प्राप्त कर लिये। जब उसने उसकी समस्त धन-सम्पत्ति छीन ली तो उसने उसकी हत्या करवा दी और उसकी खाल खिचवा डाली। उसकी खाल में भूसा भरवा कर उसे मुतरा (मदुरा) नगर की दीवार पर लटकवा दिया। मैं ने भी उसे वहाँ लटके हुये देखा था।

अब मैं अपना विषय प्रारम्भ करता हूँ। मैं शिविर छोड कर फत्तन (पट्टन) पहुचा। यह समुद्र तट पर एक भव्य तथा सुन्दर नगर है। इसका बन्दरगाह बडा विचित्र है। इसके बन्दरगाह में एक बहुत बडा लकडी का गुम्बद है जो मोटी-मोटी लकडियो (शहतीरों) पर (१६९) बनाया गया है। यहाँ तक पहुचने के लिये लकडी के जीन पर होकर जाना पडता है। शत्रु के आक्रमण के समय जो जहाज बन्दरगाह में हाते हैं, वे उसके निकट लगा दिये जाते हैं। पदाती तथा धनुर्धारी गुम्बद पर चढ जाते हैं और शत्रु उन्हे कोई हानि नही पहुँचा पाते।

इस नगर में एक पत्थर की बनी हुई सुन्दर मस्जिद है। उसमें अगूर तथा अनार बहुत बडी सख्या में होते हैं। वहाँ मैं शेख मुहम्मद सालेह नीशापुरी म मिला। वे उन ध्यान मग्न फकीरो (सन्तों) में हैं जो अपने बाल अपने कन्धों पर डाले रखते हैं। उनके पास एक सिंह था जो फकीरो के साथ भोजन करता था और उनके साथ बैठा रहता था। शेख के साथ लगभग तीस फकीर रहते थे। उनमें से एक के पास एक सुन्दर मृग था। वह सिंह के साथ ही एक ही स्थान पर रहता था किन्तु सिंह उसे कोई हानि न पहुचाता था।

मैं फत्तन (पट्टन) नगर में ठहरा। एक जोगी (योगी) ने सुल्तान ग़यासुद्दीन की मैथुन शक्ति बढान के लिये गोलियाँ तैयार करदी थी। कहा जाता है कि उनमें कुछ अश लाहे के चूर्ण का भी था और सुल्तान उन्ह निर्धारित मात्रा से अधिक खा गया, अत रुग्ण हो (२००) गया। वह उसी अवस्था में फत्तन (पट्टन) पहुचा। मैं उससे भेंट करने गया और एक उपहार उसे समर्पित किया। उसने काएदुलबहर (समुद्रीय सेनानायक) ख्वाजा सरवर को बुला कर कहा कि "जो जहाज द्वीप में भेजे जाने वाले हैं उनकी तैयारी क अतिरिक्त कोई अन्य कार्य न करना।" उसने मुझे भर उपहार का मूल्य चुकाना चाहा किन्तु मैंने स्वीकार न किया। इसका मुझे पश्चाताप ही रहा क्योंकि ग़यासुद्दीन की मृत्यु हो गई और मुझे कुछ न प्राप्त हो सका।

सुल्तान ग़यासुद्दीन फत्तन (पट्टन) में आधे मास तक ठहरा और फिर अपनी राजधानी को चला गया, किन्तु मैं उसक जाने क उपरान्त भी १५ दिन तक ठहरा रहा। फिर मैं भी उसकी राजधानी अर्थात् मुतरा (मदुरा) गया।

यह एक बहुत बडा नगर है और इसके मार्ग बडे चोडे हैं। सर्व प्रथम मेरे श्वसुर सुल्तान शरीफ जलालुद्दीन एहसन शाह ने इसे राजधानी बनाया था। उसने इसे देहली के ढग पर बनाया था और इसको बडे ही उत्तम रूप से निर्मित कराया था। जब मैं वहां पहुँचा तो (२०१) वहाँ सक्रामक रोग का प्रकोप था। जो कोई भी रुग्ण होता वह दूसरे अथवा तीसरे दिन मृत्यु को प्राप्त हो जाता। यदि ऐसा न होता तो चौथे दिन तो वह अवश्य ही मर जाता। जब मैं बाहर निकलता तो कोई न कोई रोगी अथवा मृतक शरीर दिखाई पडता। मैंने एक दासी यह समझ कर मोल ली कि वह पूर्णतया स्वस्थ है किन्तु वह दूसरे ही दिन मृत्यु को प्राप्त हो गई।

एक दिन मेरे पास एक स्त्री आई। उसका पति सुल्तान एहसन शाह का एक वजीर था। उसके साथ उसका आठ वर्ष का पुत्र भी था। लडका बडा सभ्य समझदार तथा गुणवान ज्ञात हुआ। स्त्री ने अपनी दरिद्रता की चर्चा की। मैंने उसे तथा उसके पुत्र को कुछ दे दिया। दोनों ही स्वस्थ थे। दूसरे दिन वह आकर अपने पुत्र के कफन के लिये कुछ माँगने लगी। पता चला कि उसके पुत्र की मृत्यु हो गई। जिस समय सुल्तान के मरने के दिन निकट आ गये थे, मैं देखता था कि सुल्तान के महल में सैकडों स्त्रियाँ नित्य मृत्यु को प्राप्त होती थी। यह स्त्रियाँ उन चावलों के कूटने के लिये लाई जाती थी जो सुल्तान के भोजन हेतु नही अपितु अन्य लोगों के भोजन के प्रयोग में आता था। जब वे रुग्ण हो जाती थी तो धूप में पड जाती थीं और मर जाती थी।

(२०२) जब सुल्तान मुतरा (मदुरा) में प्रविष्ट हुआ तो उसने अपनी माता, पत्नी तथा पुत्र को रुग्ण पाया। वह नगर में केवल तीन दिन तक ठहरा और फिर नगर से एक फरसग दूर एक नदी तट पर चला गया। वहाँ काफिरों (हिन्दुओं) का एक मन्दिर था। मैं सुल्तान के पास वृहस्पतिवार को पहुचा। मुझे काजी के समीप के खेमे में ठहरा दिया गया। जब मेरे लिये खेमा लग गया उस समय मैंने सुना कि लोग दौडे जा रहे हैं। कोई कहता था कि सुल्तान की मृत्यु हो गई और कोई कहता था कि उसके पुत्र की। अन्त में पता चला कि उसके पुत्र की मृत्यु हो गई। यह उसका इकलौता पुत्र था। उसकी मृत्यु के कारण सुल्तान का रोग और भी बढ गया और दूसरे वृहस्पतिवार को सुल्तान की माता की मृत्यु हो गई।

सुल्तान की मृत्यु, उसके भतीजे का सिंहासनारोहण तथा मेरा उससे विदा होना—

तृतीय वृहस्पतिवार को सुल्तान गयासुद्दीन की मृत्यु हो गई। यह सूचना पाकर उपद्रव (२०३) के भय से मैं नगर में चला आया। मैं उसके भतीजे तथा उत्तराधिकारी नासिरुद्दीन से मिला। वह शिविर की ओर, जहां उसे बुलाया गया था, जा रहा था क्योकि सुल्तान के कोई पुत्र न था। उसने मुझसे अपने साथ शिविर की ओर लौट चलने के लिये कहा किन्तु मैंने स्वीकार न किया। उसे यह बात बडी बुरी लगी। अपने चाचा के सिंहासनारूढ होने के पूर्व नासिरुद्दीन देहली में नौकर था। जब गयासुद्दीन बादशाह हो गया तो उसका भतीजा फकीरो का वेश बना कर भाग आया। उसके भाग्य में उसके उपरान्त बादशाह होना लिखा था।

जब उसकी बैअत हो गई[1] तो कवियों ने उस की प्रशसा में कवितायें पढी। उन्हे अत्यधिक पुरस्कार प्राप्त हुये। सर्व प्रथम काजी सद्रुज्जमाँ प्रशसा पढने के लिये खडा हुआ।

१ जब लोगों ने उसे बादशाह स्वीकार कर लिया।

वजीर ने मुझे बुलवाया और मैं वजीर के पास गया। उस समय दो रेशमी वस्त्र, जो मुझ से ले लिये गये थे, लाये गये। मैंने अभिवादन के समय प्रथा के अनुसार उन वस्त्रों को भेंट किया। वजीर ने मुझे अपने पास बैठाया और मेरे विषय में पूछताछ करता रहा। मैंने उसके साथ भोजन किया और उसके साथ उसी पात्र में हाथ धोये। यह सम्मान वह किसी को नहीं प्रदान करता। तत्पश्चात् पान लाया गया और मैं विदा हुआ। फिर उसने मेरे पास कुछ वस्त्र तथा कौड़ियाँ भेजी। उसने मेरे साथ बड़ा ही सुन्दर व्यवहार किया।

(२१० फिर मैं यात्रा के लिये चल दिया और समुद्र में ४३ दिन तक यात्रा करता रहा। अन्त में हम बंजाल (बंगाल) पहुँचे।

बंगाला (बंगाल)

(२१०) बगाल एक बडा विशाल देश है और यहाँ चावल बडी अधिक मात्रा में होता है। मैं ने ससार के किसी देश में इतनी सस्ती चीजें नही देखी किन्तु इस देश में कुहरा बहुत होता है और खुरासानी (विदेशी) इसे 'दोजखें पुर नेमत' (उत्तम वस्तुओं से परिपूर्ण नरक) कहते हैं। मैं ने बगाल की गलियो में एक चादी के दीनार[1] का २५ देहली के रतल[2] के बराबर चावल बिकते हुये देखा। एक चाँदी का दीनार ८ दिरहम के बराबर होता है। एक हिन्दुस्तानी दिरहम[3] एक चाँदी के दिरहम के बराबर होता है। देहली का एक रतल, मगरिब (मराको) के ४० रतल के बराबर होता है। मैं ने बगाल वालों को यह कहते सुना था कि उस वर्ष उनके यहाँ महगाई थी। मुहम्मद मसमूदी मग़रिबी (मराको निवासी) ने जो एक बहुत बडे सत थे और देहली में मेरे घर के निकट रहा करते थे, और जो इस स्थान (बगाल) के प्राचीन निवासी थे, तथा जिनकी मृत्यु देहली में हुई, मुझे बताया था, कि (२११) वे अपनी पत्नी तथा अपने एक सेवक के लिये पूरे वर्ष के वास्ते ८ दिरहम (१ दीनार) में भोजन सामग्री मोल ले लेते थे। वे कहते थे कि उन दिनो में ८ दिरहम में ८० देहली के रतल के बराबर धान मिलते थे। कूटने के उपरान्त उसमें से पचास रतल चावल निकलते थे और यह दस क़िन्तार[4] हुये। दूध देने वाली भैंसे तीन चाँदी के दीनार की मिलती थी। वहाँ भैंसें ही गाय का काम देती हैं। मैं ने वहाँ एक दिरहम की ८ अच्छी तथा मोटी मुर्गियाँ बिकती हुई देखी और कबूतर के बच्चे एक दिरहम के १५ बिकते थे। मोटी भेंड दो दिरहम की और एक रतल शकर ४ दिरहम की मिलती थी। रतल, से देहली का रतल समझना चाहिये। एक रतल गुलाब जल ८ दिरहम में मिलता था। एक रतल घी चार दिरहम में और एक रतल मीठा तेल २ दिरहम में, ३० गज बारीक सूती कपडा २ दीनार (चाँदी के तन्के) में मिल जाता था। एक रूपवती कनीज (दासी) एक सोने के दीनार[5] में, जो मगरिब (मराको) के २½ सोने के दीनार के बराबर होता था, मिल जाती थी। इस मूल्य पर मैं ने आशूरा (२१२) नामक एक बडी ही रूपवती कनीज (दासी) मोल ली। मेरे एक साथी ने लूलू नामक एक तरुण दास दो सोने के दीनार में मोल लिया।

बगाल का पहला नगर जिसमें हम प्रविष्ट हुये सुदकावाँ (चिटागाग) था। विशाल समुद्र तट पर यह एक बडा भव्य नगर है। इस स्थान पर गगा, जहाँ हिन्दू तीर्थ यात्रा करते हैं तथा जून[6] एक दूसरे से मिलती हैं और फिर एक साथ बहती हुई समुद्र में गिरती हैं। गगा नदी पर बहुत अधिक सख्या में जहाज़ थे। इन्ही जहाजों से व लखनौती वालो से युद्ध करते हैं।

---

१ चाँदी के तन्के के बराबर।

२ देहली का रतल—देहली के एक मन के बराबर होता था जो आधुनिक १४ सेर के बराबर होता था।

३ इसे आधुनिक लगभग दो आने के बराबर समझना चाहिये।

४ इसके वजन के विषय में कुछ ज्ञान नहीं।

५ दस चाँदी के तन्के के बराबर।

६ ब्रह्मपुत्र होना चाहिये।

बंगाल का सुल्तान—

(२१३) उसका नाम सुल्तान फखरुद्दीन[1] है। वह फखरा कहलाता है। वह बड़ा ही योग्य शासक है। उसे परदेशियों से बड़ा प्रेम है और वह फक़ीरों तथा सूफ़ियों (संतों) का बड़ा आदर करता है। बंगाल का राज्य सर्व प्रथम सुल्तान गयासुद्दीन बल्बन के पुत्र सुल्तान नासिरुद्दीन के अधीन था। उसका (नासिरुद्दीन का) पुत्र, मुइज्जुद्दीन देहली का बादशाह हुआ। इस पर नासिरुद्दीन अपने पुत्र से युद्ध करने के लिये निकला। दोनों की गंगा नदी पर भेंट हुई। उनकी भेंट को लिकाउस्सादैन[2] 'दो शुभ नक्षत्रों का मिलाप' कहा गया। हम इसका उल्लेख कर चुके हैं और इस बात की चर्चा हो चुकी है कि किस प्रकार नासिरुद्दीन ने अपने पुत्र के लिये देहली का राज्य छोड़ दिया और बंगाल लौट आया और वहीं अपनी मृत्यु के समय तक निवास करता रहा।

तत्पश्चात् उसका पुत्र शम्सुद्दीन सिंहासनारूढ़ हुआ। जब उसकी भी मृत्यु हो गई तो उसके स्थान पर उसका पुत्र शिहाबुद्दीन सुल्तान हुआ। कुछ समय उपरान्त उसके भाई गयासुद्दीन बहादुर बूर (भूरा) ने उस पर अधिकार जमा लिया। शिहाबुद्दीन ने सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ से सहायता की याचना की। उसने उसकी सहायता की और बहादुर बूर को बन्दी बना लिया। सुल्तान गयासुद्दीन के पुत्र सुल्तान मुहम्मद ने सिंहासनारूढ होने के उपरान्त उसे मुक्त कर दिया और उसने सुल्तान मुहम्मद से राज्य को परस्पर बाँट लेने की प्रतिज्ञा की थी, किन्तु जब उसने अपने वचन का पालन न किया तो सुल्तान मुहम्मद ने उस (२१४) पर चढ़ाई की और उसकी हत्या करदी और अपने साले[3] को इस प्रान्त का राज्य प्रदान कर दिया, किन्तु उसकी सेना ने उसकी भी हत्या कर दी। अब अली शाह ने जो लखनौती में था बंगाल का राज्य अपने अधिकार में कर लिया। जब फखरुद्दीन ने देखा कि राज्य सुल्तान नासिरुद्दीन के वंश से निकल गया तो उसने सुदकावाँ (चिटागाँग) तथा बंगाल के अन्य भागों में विद्रोह कर दिया, क्योंकि वह उस वंश का हितैषी था। उसने वहाँ अपना राज्य दृढ कर लिया किन्तु उसमें तथा अली शाह में भीषण युद्ध छिड़ गया। जाड़े में जबकि वर्षा के कारण कीचड़ भरी हुई थी, फखरुद्दीन ने जल मार्ग से जिस पर उसे बड़ा दृढ अधिकार प्राप्त था, आक्रमण कर दिया, किन्तु सूखे मौसम में अली शाह ने स्थल मार्ग से बंगाल पर आक्रमण किया क्योंकि इस क्षेत्र में उसकी शक्ति बहुत बढ़ी हुई थी।

कहानी—

सुल्तान फखरुद्दीन फक़ीरों (संतों) से इतना प्रेम करता था कि उसने एक फकीर शैदा (२१५) को सुदकावाँ (चिटागाँग) में अपना नायब नियुक्त कर दिया। सुल्तान फ़ख़रुद्दीन फिर अपने एक शत्रु पर आक्रमण करने के लिये गया किन्तु शैदा ने स्वतन्त्र हो जाने के विचार से विद्रोह कर दिया। उसने सुल्तान फखरुद्दीन के पुत्र की हत्या करदी। सुल्तान के उसके अतिरिक्त कोई अन्य पुत्र न था। यह सुन कर सुल्तान तुरन्त अपनी राजधानी की ओर लौटा। शैदा तथा उसके सहायक भाग कर सुनुरकावाँ (सुनार गाँव) पहुचे। वह बड़ा ही दृढ नगर था। सुल्तान ने एक सेना उसका घेरा डालने के लिए भेजी। वहाँ के निवासियों ने अपने प्राणों के भय से शैदा को बन्दी बना कर सुल्तान की सेना में भेज दिया। सुल्तान को इसकी सूचना भेजी गई तो उसने आदेश दिया कि विद्रोही का सिर भेज दिया जाय

---

१ सुल्तान फ़खरुद्दीन मुबारक शाह (१३३७ १३४९ ई०)

२ अमीर ख़ुसरो ने किरानुस्सादैन नामक मसनवी में इसी घटना का उल्लेख किया है।

३ तातार खाँ। वह सुल्तान का साला न था।

अस्तु उसका सिर काट कर भेज दिया गया और उसके कारण बहुत से फकीरो की हत्या करादी गई। जब मैं सुदकावाँ (चिटागाँग) में प्रविष्ट हुआ तो मैंने वहाँ के सुल्तान से भेंट नही की क्योकि उसने हिन्दुस्तान के बादशाह से विद्रोह कर दिया था और मैंने सोच लिया था कि इस भेंट का परिणाम अच्छा न निकलेगा।

कामरू (कामरूप)—

सुदकावा (चिटागाग) से मैं कामरू (कामरूप) के पर्वत की ओर, जो वहाँ से एक मास (२१६) की यात्रा की दूरी पर स्थित थे, चल दिया। कामरू (कामरूप) पर्वत बड़े ही विशाल हैं और चीन से तिब्बत तक, जहाँ कस्तूरी वाले मृग पाये जाते हैं, फैले हैं। यहाँ के निवासी तुर्कों के समान हैं और वे बड़े ही परिश्रमी होते हैं। वहाँ का एक दास अन्य देशो के कई दासों से अधिक कार्य करता है। वे लोग जादू टोने के लिये भी बड़े प्रसिद्ध हैं। मैं उन पर्वतो[1] में शेख जलालुद्दीन तबरेजी[2] नामक एक वली (संत) से, जो वहाँ निवास करते थे, भेंट करने के उद्देश्य से जाना चाहता था।

शेख जलालुद्दीन—

शेख बहुत बड़े वली (संत) और बड़े ही अद्भुत व्यक्ति थे। उनकी करामातें (सूफियो के चमत्कार) लोगो में बड़ी प्रसिद्ध थी। उन्होंने बहुत बड़े बड़े कार्य किये थे। वे बड़े वृद्ध थे। उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने खलीफा मुस्तासिम बिल्लाह अब्बासी[3] के बगदाद में दर्शन किये थे और वे उसकी हत्या के समय वही थे। उनके साथियो ने बाद में मुझे बताया कि उनकी (२१७) मृत्यु १५० वर्ष की अवस्था में हुई। उन्होने लगभग चालीस वर्ष तक रोजा रखा और वे दस दस दिन तक उस रोजे को न तोड़ते थे। उनके पास एक गौ थी जिसके दूध से वे रोजा तोड़ते थे। वे रात रात भर नमाज पढा करते थे। वे दुबले पतले लम्बे डील के व्यक्ति थे और उनकी दाढी बहुत छोटी थी। इन पर्वतो के मुसलमानो ने इन्ही के हाथो से इस्लाम स्वीकार किया था, अत वे इन्ही लोगों के साथ निवास करते थे।

उनकी एक करामात (चमत्कार)—

उनके कुछ शिष्यों ने मुझे बताया कि उन्होने अपनी मृत्यु से एक दिन पूर्व अपने समस्त शिष्यो को बुलवाया और उनसे कहा "ईश्वर ने चाहा तो मैं कल तुम से विदा हो जाऊगा। मैं तुम्हे अल्लाह के जिसके अतिरिक्त कोई अन्य ईश्वर नही सिपुर्द करता हू।" जुहर की नमाज के उपरान्त अन्तिम सिजदे में उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये। उनकी गुहा के निकट एक खुदी

---

१ कदाचित इब्ने बत्तूता ने सिलहट की, जो खासी, जैनतिया तथा टिपरा की पहाड़ियों से घिरा है, सैर की (रेहला पृ० २३८)।

२ शेख जलालुद्दीन तबरेजी, शेख अबू सईद तबरेजी के चेले थे। उनकी मृत्यु के उपरान्त शेख शिहाबुद्दीन सुहरवर्दी (मृ० १२३४ ई०) की सेवा की। ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी (मृ० १२३६ ई०) तथा शेख बहाउद्दीन जकरिया (मृ० १२६७ ई०) के साथ इनकी मित्रता थी। देहली में उनका वहाँ के एक आलिम शेखुल इस्लाम नजमुद्दीन सुगरा से विरोध हो गया। वहाँ से वे बदायूं होते हुये बंगाल चले गये (अखबारुल अखयार, मुजतबाई मुद्रणालय देहली, १३३२ हि० पृ० ४४ ४८)। कहा जाता है कि वे १५० वर्ष तक जीवित रहे और उनकी मृत्यु ७४७ हि० (१३४६ ई०) में हुई। पंडुआ में इनकी खानकाह सुल्तान अलाउद्दीन अली शाह ने बनवाई और वहीं कदाचित इनकी मृत्यु भी हुई।

३ मुस्तासिम बिल्लाह अन्तिम अब्बासी खलीफा था। हलाकू ने १२५८ ई० में उसकी हत्या की।

(२१८) हुई कब्र मिली जिसमें कफन तथा हुनूत (सुगन्धित वस्तुयें) विद्यमान थी। अस्तु, शेख के मृतक शरीर को स्नान कराया गया तथा कफन (शव वस्त्र) धारण कराया गया और नमाज पढ कर उन्हे दफन कर दिया गया (ईश्वर उन पर दया करे)।

शेख की एक अन्य करामात (चमत्कार)—

जब मैं शेख के दर्शन को गया तो शेख के निवास स्थान मे दो दिन की यात्रा की दूरी पर मुझे उनके चार शिष्य मिले और उन्होंने मुझे बताया कि शेख ने उन लोगो से कहा है कि "एक व्यक्ति मगरिब से तुम्हारे पास आ रहा है। तुम जा कर उसका स्वागत करो।" उन्होने मुझ से कहा कि शेख के आदेशानुसार वे मेरा स्वागत करने आय हैं। शेख को मेरे विषय में इससे पूर्व कुछ ज्ञात न था। उनको सब कुछ कश्फ (दैवी प्रेरणा) द्वारा ज्ञात हुआ था। मैं उनके साथ शेख की सेवा में उपस्थित हुआ और उनकी खानकाह में पहुँचा जो गुहा के बाहर थी। उसके निकट कोई आबादी न थी। उस स्थान के निकट के सभी लोग हिन्दू तथा मुसलमान शेख के दर्शनार्थ आते थे और उनके लिये उपहार लाते थे। उसमें से फकीर तथा यात्री खाते थे किन्तु (२१९) शेख केवल अपनी गाय के दूध पर जीवन निर्वाह करते थे और उसी दूध से जैसा कि उल्लेख हो चुका है, अपना दस दिन लगातार का रोज़ा तोडते थे।

जब मैं उनकी सेवा में उपस्थित हुआ तो खडे होकर उन्होने मुझसे आलिंगन किया। मेरे देश के तथा मेरी यात्रा के विषय में मुझसे पूछते रहे और मैं ने उन्हे सब कुछ बताया। शेख ने मुझसे कहा, "तू अरब का यात्री है।" उनके एक शिष्य ने, जो उस समय उपस्थित था, कहा 'सैयिदना (हे स्वामी) यह अरब तथा अजम (अरब के अतिरिक्त) का यात्री है।" शेख ने कहा "अजम का भी, अत इसका आदर सत्कार करो।" इस पर वे लोग मुझे खानकाह मे ले गये और तीन दिन तक मेरा अथिति सत्कार करते रहे।

उनके करामात (चमत्कार) की एक अद्भुत कहानी——

जिस दिन मेरी शेख से भेट हुई, मैं ने उनको एक बकरे के बाल का मुरक्का (चुगा) पहिने देखा। मुझे वह चुगा बडा अच्छा लगा। मैं ने अपने हृदय मे सोचा कि यदि शेख मुझ अपना चुगा दे दें, तो कितनी अच्छी बात हो। जब मैं उनसे बिदा होने लगा तो वे गुहा के एक कोने में गये और उन्होने अपना चुगा उतार कर मुझ पहिना दिया। उन्होने मुझे अपनी टोपी भी प्रदान की और स्वय पेवन्द लगा हुआ एक वस्त्र धारण कर लिया। फकीरो ने मुझे बताया कि शेख साधारणतया यह चुगा नही पहिना करते थे। यह उन्होने मेरे (२२०) आने के समय ही पहिना था और कहा था कि 'मगरिबी (मराको निवासी) इस चुगे की इच्छा करेगा। एक काफिर बादशाह उससे यह छीन लेगा और हमारे भाई बुरहानुद्दीन सागरजी (समरकन्द में सागर्ज नामक स्थान का निवासी) को दे देगा जिसके लिये यह तैयार कराया गया है।" जब फकीरो ने मुझे यह बताया तो मैंने दृढ सकल्प कर लिया कि शेख का यह वस्त्र मेरे लिये एक बहुत बडी देन हैं। मैं इसे पहिन कर किसी मुसलमान अथवा काफिर बादशाह के पास कदापि न जाऊँगा।' फिर मैं शेख के पास से चला आया।

बहुत समय उपरान्त जब मैं चीन गया और खसा नगर (हाँग चौफू) पहुँचा तो अत्यधिक भीड के कारण मेरे साथी मुझसे पृथक् हो गये। उस समय मैं वही चुगा पहिने था। जब मैं एक मार्ग पर था तो मुझे वज़ीर मिला। उसके साथ उसके परिजन भी थे। उसने मुझे देखा और मुझको बुलाया। मेरा हाथ पकड कर मेरे आने के विषय में पूछता (२२१) रहा। बातें करते करते हम राजभवन के द्वार पर पहुँच गये। मैं ने उससे विदा

होना चाहा किन्तु उसने मुझे अनुमति न दी। उसने बादशाह से मेरी भेंट कराई। बादशाह मुझसे मुसलमान सुल्तानो के विषय मे पूछता रहा। मैंने उसके प्रश्नो के उत्तर दिये। इसी समय उसकी दृष्टि मेरे चुगे पर पड गई। उसने उसकी बडी प्रशसा की। वजीर ने उसे उतार देने के लिये कहा और मुझे स्वीकार करना पडा। बादशाह ने चुगा ले लिया और आदेश दिया कि मुझे दस खिलग्रतें, एक घोडा साज व सामान सहित तथा व्यय हेतु धन प्रदान किया जाय। मुझे इसका बडा दुख हुआ और शेख के शब्दो का स्मरण हुआ और मैं बडे आश्चर्य में पड गया।

दूसरे वर्ष मैं चीन के शहशाह के राज भवन खान बालिक (पेकिंग) गया। फिर मैं सागरज के शेख बुरहानुद्दीन की खानकाह मे गया। मै ने देखा कि वे वही चुगा पहिने हुये एक पुस्तक पढ रहे थे। मुझे बडा आश्चर्य हुआ। मै ने चुगे को अपने हाथ से उलट पलट कर देखा। शेख ने मुझसे कहा, "तू इस को क्यो उलटता पलटता है? क्या तू इसे पहचानता है।" मैं ने कहा, "हाँ यह वही चुगा है जो खसा (हाँग चौफू) के बादशाह ने मुझसे ले लिया था।" शेख ने कहा "यह चुगा मेरे लिये मेरे भाई जलालुद्दीन ने तैयार कराया था, और मुझे पत्र लिखा था कि वह मुझे अमुक व्यक्ति द्वारा प्राप्त होगा।" शेख ने मुझे वह पत्र दिखाया। मैंने उसे पढा और मुझे शेख की आध्यात्मिक शक्ति पर बडा (२२२) आश्चर्य हुआ। इस पर मैंने कुल हाल शेख बुरहानुद्दीन को सुनाया। उन्होने कहा "मेरे भाई जलालुद्दीन इससे भी बडी बडी बातें कर सकते थे। वे ससार में अनेक परिवर्तन कर सकते थे किन्तु अब उनकी मृत्यु हो गई है। ईश्वर उन पर दया करे।" बुरहानुद्दीन ने फिर मुझसे कहा, "मुझे ज्ञात है कि वे प्रात काल की नमाज मक्के में पढते थे और प्रतिवर्ष हज किया करते थे। अर्फे[1] तथा ईद के दिन वे अदृश्य हो जाते थे और किसी को कोई सूचना न होती थी।"

अब मैं अपने विषय को पुन प्रारम्भ करता हूँ। जब मैं शेख जलालुद्दीन से विदा हुआ तो मैं हबक[2] की ओर रवाना हुआ। यह एक बडा तथा सुन्दर नगर है। एक नदी इसके मध्य में बहती है। यह कामरू (कामरूप) के पर्वतो से निकलती है। इसका नाम नहरुल अजरक (नीली नदी) है। इस नदी के मार्ग से लोग बगाल तथा लखनौती पहुँच जाते हैं। (२२३) इस नदी के दाईं तथा बाईं ओर जल की चर्खियाँ, उद्यान तथा ग्राम उसी प्रकार दृष्टिगत होते हैं जिस प्रकार मिस्र में नील नदी के तट पर। हबक के निवासी काफिर जिम्मी हैं। उनसे उत्पादन का आधा भाग ले लिया जाता है और इन्हे कुछ अन्य सेवायें भी करनी पड़ती हैं। हमने इस नदी में बहाओ की ओर १५ दिन तक यात्रा की। मार्ग में ग्रामो तथा उद्यानो की अधिकता से ऐसा ज्ञात होता था कि मानो हम बाजार में यात्रा कर रहे हो। इसमें असख्य नावें चलती हैं। प्रत्येक नाव में एक नक्कारा होता है। जब दो नावें एक दूसरे के समक्ष आती हैं तो नक्कारा बजाया जाता है। इस प्रकार मल्लाह एक दूसरे के प्रति अभिवादन करते हैं। सुल्तान फखरुद्दीन का आदेश है कि इस नदी में फकीरो से कोई कर न लिया जाय और जिसके पास भोजन सामग्री न हो, उसे भोजन दिया जाय। जब कोई फकीर इस नगर में आता है तो उसे आधा दीनार प्रदान किया जाता है।

१ जिलहिज्जा मास का नवाँ दिन।

२ यह अब हबग टीला कहलाता है और उजड़ चुका है। यह हबीगज के दस मील दक्षिण में है। (रेहला पृ० २४१)

१५ दिन की यात्रा के उपरान्त हम सुनरखावाँ (सोनार गाँव) पहुँचे। यहाँ के (२२४) निवासियों ने शैदा फक़ीर को जब उसने यहाँ शरण ली थी, बन्दी बना लिया था। वहाँ पहुँचते ही हमें एक जुन्क (चीनी जहाज) जावा (सुमात्रा) के लिये तैयार मिला। वह यहाँ से चालीस दिन की यात्रा की दूरी पर स्थित है। हम जुन्क पर बैठ गये और १५ दिन की यात्रा के पश्चात् बरहनागार (बारह नगर) पहुँचे।

मसालिकुल अबसार फ़ी ममालिकुल अमसार

[लेखक—शिहाबुद्दीन अल उमरी]

हिन्दुस्तान तथा सिन्ध

देश तथा उसके निवासी—

यह एक बडा ही महत्त्वपूर्ण देश है। इसकी तुलना ससार के किसी अन्य देश से उसके विस्तृत क्षेत्र, अपार धन-सम्पत्ति, अगणित सेनाओ तथा सुल्तान के वैभव के कारण, चाहे वह कूच करता हो अथवा राज प्रासाद में निवास करता हो, तथा उसके राज्य की शक्ति के कारण नही की जा सक्ती। इस देश की ख्याति तथा प्रसिद्धि सर्वत्र व्यापक है।

प्रचलित समाचारो तथा लिखित पुस्तको द्वारा, मै जो कुछ सुन अथवा देख पाता था, उसके विषय में ज्ञान प्राप्त किया करता था परन्तु उस विवरण की सत्यता से मै अपने को परिचित नही करा सकता था क्योंकि यह प्रदेश हमसे बहुत दूर थे। जब मैं इस पुस्तक की रचना करने लगा और विश्वस्नीय वर्णन देने वालो म मैंने पूछताछ की तो, जो कुछ मैंने सुन रखा था, उससे अधिक ज्ञात किया और आशा से भी अधिक बडी-बडी बातें पाईं।

अधिक कहने की आवश्यकता नही। यह ऐसा देश है जिसके समुद्रो में मोती हैं, जिसकी भूमि में सोना है, जिसके पर्वतो में याकूत तथा हीरे हैं। घाटियो में अगर की लकडा तथा कपूर है[1], और इसके नगरो में बादशाहों के सिंहासन हैं। यहाँ के जानवरों में हाथी तथा गेंडे हैं। यहाँ के लोहे से हिन्दुस्तानी तलवारें बनाई जाती हैं। इसमें लोहे, पारे तथा सीसे की खानें हैं। इसके कुछ स्थानों में केसर मिलती है। इसकी कुछ घाटियो में स्फटिक व बिल्लौर मिलता है। इस देश में जीवन की सुन्दर वस्तुयें अधिक मात्रा में उपलब्ध हैं। वस्तुओं के मूल्य यहाँ कम है, यहाँ की सेनायें अगणित हैं और यहाँ के प्रदेश सीमा रहित हैं। यहाँ के लोग बडे बुद्धिमान तथा प्रतिभाशाली हैं। अन्य देश वालों की अपेक्षा यह लोग बडे सयमी हैं। अधिकाशत यह लोग ईश्वर तक पहुँचने के लिये प्रयत्नशील रहते हैं।

मुहम्मद बिन (पुत्र) अब्दुर रहीम की तुहफतुल अल्बाब[2]—

मुहम्मद इब्न (पुत्र) अब्दुर रहीम उक़लीशी अल गमती अपनी पुस्तक तुहफतुल अल्बाब में वर्णन करता है विशाल देश, अत्यधिक न्याय, पर्याप्त धन, सुशासन जीवन की निरन्तर सुविधायें व सुरक्षा जिसके कारण हिन्दुस्तान एव चीन[3] के देशो में कोई भय नही है। दर्शनशास्त्र, चिकित्सा, गणित में हिन्दुस्तानी सर्वाधिक विद्वान हैं और ये समस्त आश्चर्यजनक हस्त कलाओ में इतने (सुदक्ष) हैं कि उनका अनुकरण करना असम्भव है। इनके पर्वतो एव द्वीपों में अगर की लकडी तथा कपूर के वृक्ष एव समस्त प्रकार के सुगधित

१ 'सुबहुल आशा' लेखक क़लक़शन्दी, भाग ५, (काहिरा १९१५ ई०) पृ० ६१।

२ 'तुहफतुल अल्बाब व नुख़बतुल अजब', लेखक अबू हामिद अथवा अब्दुल्लाह बिन अब्दुर रहीम बिन सुलेमान अल कैसी अल ग़रनाती (मृत्यु ५६५ हि०, ११६९ ई०)। यह ससार के भूगोल एवं तत्सम्बन्धी अन्य विवरणों का संग्रह है।

३ सुबहुल आशा में चीन का उल्लेख नहीं। (पृ० ६२)

पौधे जैसे लौंग, जायफल, बालछड, दालचीनी, इलायची, कबाबचीनी, जावित्री और वनस्पति जगत की अन्य बहुत सी औषधियों एवं बूटियों के पौधे होते हैं। इन लोगो के यहाँ कस्तूरी-मृग तथा सिन्नौरुज्जबाद[1] भी होते हैं। इन लोगो के देश से विभिन्न प्रकार के मणियों का निर्यात होता है, अधिकाशत. लका से।[2]'

इब्न अब्दुर रब्बेह की 'अल-इक्नद'—

इब्न अब्दुर रब्बेह ने अपने ग्रन्थ अल-इक्द[3] में नुऐम बिन (पुत्र) हम्माद को अपना सूत्र बताते हुये वर्णन किया है, "हिन्दुस्तान के बादशाह ने एक पत्र उमर बिन (पुत्र) अब्दुल अजीज के पास प्रेषित किया जिसमें (लिखा था) 'बादशाहो का बादशाह जो सहस्रो बादशाहो का पुत्र है, जिसके अधीन सहस्रो बादशाहो की कन्यायें हैं, जिसके अस्तबलो में सहस्रो हाथी हैं और जिसके (देश में) दो नदियाँ हैं जिनके कारण अगर की लकड़ी, अन्य सुगन्धित लकडियाँ, आखरोट तथा कपूर, जिसकी सुगधि १२-१२ मील तक फैल जाती है, अरबों के बादशाह के पास, जो किसी भी वस्तु को ईश्वर से मिश्रित नही करता। आरम्भ में मै एक उपहार भेजता हू और यह एक उपहार नही है अभिवादन है। मेरी अभिलाषा है कि आप मेरे पास कोई ऐसा व्यक्ति भेजें जो मुझे इस्लाम की शिक्षा दे और इस्लाम समझाये और सलाम। उपहार से अर्थ है 'पत्र'।"

मुबारक इब्न (पुत्र) महमूद अल खम्बाती[4]—

विद्वान तथा आशीश प्राप्त शेख, कुलीन पूर्वजो के वंशज, मुबारक इब्न (पुत्र) महमूद अल खम्बाती जो मुहम्मद शाजान हाजिबे खास के वशजो से सम्बन्ध रखने वाले हैं और जो विश्वास के योग्य और ईमानदार हैं और अपने विषय तथा इस देश के बादशाहो के पूर्वजों से अपने सम्बन्ध के विषय में सुविज्ञ हैं, कहते हैं कि यह देश अत्यधिक विशाल है। साधारण रूप से यात्रा करने में उसकी लम्बाई ३ वर्ष में व चौडाई भी ३ वर्ष में समाप्त होगी।[5] इसका अक्षाश वह है जो सोमनाथ तथा सरनदीब[6] के बीच में गजनी तक है और देशान्तर अदन के सम्मुख वाली खाडी से लेकर सिकन्दर की दीवार[7] तक है जहाँ हिन्द महासागर, अतलान्टिक महासागर से मिलता है। इस देश में नगर पास ही पास स्थित हैं जिनमें मिम्बर[8], सिंहासन, आमाल[9], ग्राम एवं बाजार तथा पैठ हैं। इन (नगरो) के बीच में कोई भी उजाड स्थान नही है।[10]

---

१ एक प्रकार की बिल्ली।

२ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ६२।

३ इक्दुल फरीद, लेखक अबू उमर अहमद बिन मुहम्मद बिन अब्दुर रब्बेह (जन्म २४६ हि० । ८६० ई० कारडोवा, मृत्यु ३२८ हि० । ९४० ई०)। इतिहास एवं जीवन-वृत्तान्त सम्बन्धी एक वृहत् ग्रन्थ।

४ खम्बायत निवासी। सुबहुल आशा में अम्बानी है (पृ० ६२)।

५ शेख मुबारक का परिचय तथा हिन्दुस्तान के विस्तृत क्षेत्र का यह उल्लेख सुबहुल आशा में नहीं (पृ० ६२)।

६ लका।

७ चीन की वृहत् दीवार।

८ सम्भवतया जामा मस्जिदों के मिम्बर से अभिप्राय है।

९ जिले।

१० सुबहुल आशा, भाग ५ पृ० ६२।

मै ने कहा कि देशान्तर व अक्षाश के विचार से जो दूरी उसने बताई है उसका परीक्षण करना आवश्यक है, क्योंकि समस्त बसा हुआ समार भी इस दूरी के बराबर नही है, केवल यह कि यदि इस कथन से उसका आशय यह हो कि यह दूरी उन लोगों के लिये है जो एक स्थान से दूसरे स्थान तक के मध्य मे स्थित समस्त वस्तुओं के विषय में पूर्ण परिचय प्राप्त करते हुये यात्रा करते हैं। वह कहता है, 'कराजिल प्रदेश के लोग इस सुल्तान की प्रजा हैं। कर देने के कारण, जो उन लोगो स लिये जाते हैं और जो सुल्तान के लिये धन का साधन हैं, यह लोग सुल्तान द्वारा सुरक्षित रहते हैं।'[1] कराजिल पर्वत में सोने की सात खाने हैं जिनमे अपार धन प्राप्त होता है। समुद्रो के मध्य में इधर उधर स्थित द्वीपो के अतिरिक्त पूरा देश जिसमें भूमि तथा समुद्र सम्मिलित हैं इस सुल्तान के अधिकार में है। जहाँ तक समुद्रीय तट का सम्बन्ध है एक बित्त भर भी कोई स्थान ऐसा नही है जिसकी कुञ्जियाँ तथा जहाँ के दृढ स्थान उसके अधिकार में न हो। वत्तमान समय में खुत्बा पढवाने तथा सिक्का ढलवाने का अधिकार इस पूरे देश मे उसी को है।[2] इस देश में उसके अतिरिक्त किसी को कोई अधिकार नही।"

वह कहता है, "बडी-बडी विजयो का, जिनमें मैं उसके साथ था, उल्लेख स्वय आँख से देखने के कारण सारांश में करूँगा विस्तृत रूप से नही, क्योंकि व्याख्या लम्बी होने का भय है।"

सुल्तान की विजय–

पहला स्थान जो विजय किया गया, तिलग प्रदेश था। यह एक विशाल प्रान्त है जिसमें बहुत से ग्राम हैं और जिनकी सख्या नौ लाख नौ सौ है। तत्पश्चात् जाजनगर प्रान्त विजित हुआ। इसमें ७० सुन्दर नगर हैं जो समुद्र तट पर बन्दरगाह हैं और जिनका कर मोतियो, हाथियो, विभिन्न प्रकार के वस्त्रों तथा सुगन्धियों के रूप में प्राप्त होता है। तत्पश्चात् लखनौती का प्रान्त, जो ९ बादशाहों की राजधानी रह चुकी है, विजित हुआ। इसके उपरान्त देवगीर (देवगिरि) का प्रान्त विजय किया गया। इसमे ८४ दृढ पर्वतीय किले हैं। शेख बुरहानुद्दीन अबू बक्र बिन (पुत्र) अल खल्लाल अल बज्जी का कथन है कि इसमें १ करोड दो लाख ग्राम हैं। इसके पश्चात् द्वार समुद्र का प्रान्त विजित हुआ, जहाँ सुल्तान बलाल देव तथा पाँच काफिर राजा शासन करते थे। तत्पश्चात् माबर के प्रान्त पर विजय प्राप्त हुई।[3] यह एक विशाल इकलीम है। इसके समुद्रीय तटो पर ९० बन्दरगाह स्थित हैं। इनका कर सुगन्धियों, रेशमी वस्त्रो, विभिन्न प्रकार के कपडो तथा अन्य सुन्दर वस्तुओं के रूप में प्राप्त होता है।

देश के प्रान्त–

विद्वान, फकीह, सिराजुद्दीन अबू सफा उमर बिन (पुत्र) इसहाक बिन (पुत्र) अहमद अल शिबली अल अवधी ने, जो हिन्दुस्तान के अवध प्रान्त के हैं और जो इस समय देहली के सुल्तान के दरबार के बहुत बडे फकीह हैं, मुझे बताया कि इस बादशाह के राज्य में २३ मुख्य प्रान्त हैं। इनके नाम यह हैं: (१) देहली (२) देवगीर (देवगिरि) (३) मुल्तान (४) कुहरान (कुहराम) (५) सामाना, (६) सवूस्तान (सिविस्तान) (७) वज्जा (उच्छ) (८) हासी (हाँसी) (९) सरसुती (सिरसा) (१०) माबर (११) तिलग (तिलगाना) (१२) गुजरात (१३) बदायूँ (१४) अवज (अवध) (१५) कन्नौज (१६) लखनौती (१७) बिहार (१८) कडा

[1] जिजया अदा करने के कारण जिम्मी हैं।

[2] वह पूर्ण रूप से स्वतंत्र बादशाह है।

[3] सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ८६।

इसका प्रयोग वर्जित कर दिया। उसने बताया, इसमें फल हैं . अंजीर, अंगूर, मीठे खट्टे तथा तीखे अनार, केले, आडू, चकोतरे, नीबू, जभीरी नीबू, नारगी, अंजीर का वृक्ष, काले शहतूत, जो फिरसाद कहलाते हैं,[१] तरबूज, पीली व हरी ककड़ियाँ तथा खरबूजे। अंजीर, तथा अंगूर अन्य फलो की अपेक्षा कम सख्या में होते हैं। बिही भी पाई जाती है और इस देश में इसका आयात भी होता है। नाशपाती व सेब बिही से भी कम होते हैं। यहाँ और भी बहुत से फल होते हैं जैसे आम, महुआ, लाहा, नगजक तथा अन्य उत्तम एव स्वादिष्ट फल, जो मिस्र शाम, तथा एराक में नही होते। नारियल से किसी अन्य वस्तु की तुलना नही की जा सकती। यह ताजा तथा तेल से भरा हुआ होता है। हम्मार को हिन्दुस्तानी इमली कहते हैं। यह एक जगली वृक्ष होता है जो पर्वतो में बहुतायत से उगता है। नारियल तथा केले समीप के प्रान्तो की अपेक्षा, जहाँ यह बहुत बडी मात्रा में पाये जाते हैं, देहली से कुछ कम होते हैं।

समस्त देश में गन्ना अधिक मात्रा मे पाया जाता है। एक गन्ना तो काली जाति का होता है, जो गन्ने के विचार मे खराब होता है। चूसने के विचार से यह (जाति) सबसे उत्तम है परन्तु पेलने के विचार से नही। यह कही और नही पाया जाता। अन्य प्रकार के गन्नो से बहुत बडी मात्रा में शकर तैयार की जाती है और मिश्री एव साधारण शकर के रूप में सस्ती होती है परन्तु इसके रवे नही बन पाते और सफेद आटे की भाँति होती है।[२]

शेख मुबारक बिन (पुत्र) मुहम्मद शाजन के वर्णन के अनुसार इस देश में २१ प्रकार के चावल होते हैं।[३] यह लोग शलजम, गाजर, लौकी कद्दू, बैंगन, अदरक भी उगाते हैं। जब यह साग हरे ही होते हैं तो यह लोग उनको उसी प्रकार से पकाते हैं जैसे गाजर पकाई जाती है। इसका स्वाद इतना उत्तम होता है कि किसी की तुलना इससे नही की जा सकती। चुकन्दर, प्याज, सोया, पोदीना सुगन्धित पौधे जैसे गुलाब, कवल, बनफशा, जायफल, जिसे खल्लाफ भी कहते हैं, मिस्री सरई, नरगिस, जिसे अब्बार कहते हैं, नरगिस, चमेली, मेंहदी, जिसे फगिया कहते हैं, यहाँ होते हैं। इसी प्रकार यहाँ तिल का तेल भी होता है जिसे यह लोग प्रकाश करने के लिये प्रयोग करते हैं।

जैतून को यह लोग आयात करते हैं। मधु तो अत्यधिक प्राप्त होता है। मोम केवल सुल्तान के महलो में ही मिलता है और अन्य लोगो को उसका प्रयोग करने की अनुमति नही है[४]। पशु, पालतू जानवर जैसे भैंस, गाय, भेड व बकरियाँ भी अगणित हैं और पक्षी जैसे मुर्गी जगली तथा पालतू कबूतर, कलहस, जो दूसरो की अपेक्षा कम होती है, पाये जाते हैं। पेरु पक्षी आकार में लगभग कलहस के बराबर होता है। यह सब जानवर बहुत ही सस्ते मूल्य तथा कम दामो में बिकते हैं।[५]

मक्खन तथा विभिन्न प्रकार का दूध तो इतना होता है कि इनको तो कोई पूछता ही नही और न इनको कोई महत्त्व ही दिया जाता है। बाजारो मे विभिन्न प्रकार के भोजन जैसे भुना हुआ माँस, चावल, पकी तथा तली हुई वस्तुयें, ६५ प्रकार की मिठाइयाँ, फलो के रस तथा शरबत बिकते हैं जो (ससार के) अन्य किसी नगर में कठिनाई से ही प्राप्त होगे।

---

१ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ८२।
२ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ८-८३।
३ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ८२।
४ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ८२, ८३।
५ सुबहुल आशा भाग ५, पृ० ८२।

शिल्पकार--

इसमें शिल्पकार तथा कारीगर भी हैं जैसे तलवार, धनुष, भाले तथा विभिन्न प्रकार के अस्त्र शस्त्र, कवच आदि बनाने वाले, सुनार, कढ़ाई का काम करने वाले, काठी बनाने वाले, तथा हर प्रकार की हस्तकला के दक्ष लोग, जो पुरुषों तथा स्त्रियों, तथा तलवार चलाने वालों, सुदक्ष लेखकों एवं साधारण लोगों के, जो असंख्य हैं, प्रयोग हेतु विशेष वस्तुयें बनाते हैं।

ऊँट--

ऊँट बहुत कम हैं। । यह केवल सुल्तान तथा खानों, अमीरों, वज़ीरों एवं अन्य उच्च अधिकारियों के लिये, जो उसके (सुल्तान के) साथ रहते हैं, होते हैं।[1]

घोड़े--

घोड़े बहुत हैं। इनकी दो जातियाँ हैं अरब के तथा लद्दू घोड़े और अधिकांशतः इनका कार्य प्रशंसनीय है, अल इन घोड़ों को हिन्दुस्तान के तुर्कों से समीप के देशों से लाया जाता है। अरबी घोड़े, बहरैन, यमन, तथा एराक से लाये जाते हैं। यद्यपि हिन्दुस्तान के आन्तरिक भागों में अच्छी नसल के अरबी घोड़े मिल जाते हैं जिनका मूल्य भी कम होता है, परन्तु वे संख्या में अधिक नहीं हैं। हिन्दुस्तान में जब घोड़े अधिक दिनों तक ठहर जाते हैं तो इनके पैर दुर्बल हो जाते हैं।[2]

गधे तथा खच्चर--

यहाँ के लोगों के मतानुसार खच्चरों तथा गधों पर सवारी करना उनके लिये अत्यन्त अपमानजनक तथा लज्जाप्रद है। कोई भी फ़क़ीह तथा आलिम खच्चर पर सवार होना उचित नहीं समझेगा। इन लोगों के अनुसार गधे पर सवार होना अत्यन्त लज्जाप्रद तथा अपमानजनक है परन्तु प्रत्येक व्यक्ति घोड़े पर सवार होता है। धनी लोगों का सामान घोड़ों पर ले जाया जाता है और साधारण लोग बैलों पर लाद कर ले जाते हैं। यह बड़े तेज़ चलने वाले होते हैं और लम्बे लम्बे पग रखते हैं।[3]

देहली का नगर--

मैंने शेख मुबारक से देहली नगर, उसकी दशा, एवं सुल्तान के मामलों के प्रबन्ध के विषय में पूछा। उसने मुझे बताया कि देहली में बहुत से नगर सम्मिलित हैं जिनको मिला कर एक कर दिया गया है। उनमें से प्रत्येक के भिन्न भिन्न नाम हैं। देहली उनमें से केवल एक का नाम है और उसी के नाम पर सबका नाम पड़ गया। यह लम्बाई तथा चौड़ाई में बहुत ही विस्तृत है और ४० मील के क्षेत्रफल में फैला हुआ है। यहाँ के भवन पत्थर तथा ईंट के बने हैं। छतें लकड़ी की होती हैं। इनके फ़र्श संगमरमर के समान श्वेत पत्थर से बनाये जाते हैं। इस नगर में भवन दो मंज़िल से अधिक ऊँचे नहीं बनाये जाते। इनमें से कुछ तो एक मंज़िल के होते हैं। सुल्तान के अतिरिक्त कोई भी अपने (घर का) फ़र्श संगमरमर से नहीं बनवाता है।[4]

शेख अबू बक्र बिन (पुत्र) अल खल्लाल का कथन है कि यह बात देहली के प्राचीन भवनों से सम्बन्धित है। जिन भवनों का मैं उल्लेख करता हूँ वे वैसे नहीं हैं। वह कहता है

१ सुब्हुल आशा, भाग ५, पृ० ८२।
२ सुब्हुल आशा, भाग ५, पृ० ८१।
३ सुब्हुल आशा, भाग ५, पृ० ८२।
४ सुब्हुल आशा, भाग ५, पृ० ६६।

इसका प्रयोग वर्जित कर दिया। उसने बताया, इसमें फल हैं : अजीरें, अगूर, मीठे खट्टे तथा तीखे अनार, केले, आडू, चकोतरे, नीबू, जभीरी नीबू, नारगी, अजीर का वृक्ष, काले शहतूत, जो फिरसाद कहलाते हैं,[१] तरबूज, पीली व हरी ककड़ियाँ तथा खरबूजे। अजीर, तथा अगूर अन्य फलो की अपेक्षा कम सख्या में होते हैं। बिही भी पाई जाती है और इस देश में इसका आयात भी होता है। नाशपाती व सेब बिही से भी कम होते हैं। यहाँ और भी बहुत से फल होते हैं जैसे आम, महुआ, लाहा, नगजक तथा अन्य उत्तम एवं स्वादिष्ट फल, जो मिस्र शाम, तथा एराक में नही होते। नारियल से किसी अन्य वस्तु की तुलना नही की जा सकती। यह ताजा तथा तेल से भरा हुआ होता है। हम्मार को हिन्दुस्तानी इमली कहते हैं। यह एक जगली वृक्ष होता है जो पर्वतो मे बहुतायत से उगता है। नारियल तथा केले समीप के प्रान्तो की अपेक्षा, जहाँ यह बहुत बडी मात्रा में पाये जाते हैं, देहली से कुछ कम होते हैं।

समस्त देश मे गन्ना अधिक मात्रा में पाया जाता है। एक गन्ना तो काली जाति का होता है, जो गन्ने के विचार से खराब होता है। चूसने के विचार मे यह (जाति) सबसे उत्तम है परन्तु पेलने के विचार से नही। यह कही और नही पाया जाता। अन्य प्रकार के गन्नो से बहुत बडी मात्रा मे शकर तैयार की जाती है और मिश्री एव साधारण शकर के रूप मे सस्ती होती है परन्तु इसके रवे नही बन पाते और सफेद आटे की भाँति होती है।[२]

शेख मुबारक बिन (पुत्र) मुहम्मद शाजन के वर्णन के अनुसार इस देश में २१ प्रकार के चावल होते हैं।[३] यह लोग शलजम, गाजर, लौकी कद्दू, बैंगन, अदरक भी उगाते हैं। जब यह साग हरे ही होते हैं तो यह लोग उनको उसी प्रकार से पकाते हैं जैसे गाजर पकाई जाती है। इसका स्वाद इतना उत्तम होता है कि किसी की तुलना इसम नही की जा सकती। चुकन्दर, प्याज, सोया, पोदीना सुगन्धित पौधे जैसे गुलाब कवल, बनफशा, जायफल, जिसे खल्लाफ भी कहते हैं, मिस्री सरई, नरगिस, जिसे अब्बार कहते हैं, नरगिस चमेली, मेंहदी, जिसे फगिया कहते हैं, यहाँ होते हैं। इसी प्रकार यहाँ तिल का तेल भी होता है जिसे यह लोग प्रकाश करने के लिये प्रयोग करते हैं।

जैतून को यह लोग आयात करते हैं। मधु तो अत्यधिक प्राप्त होता है। मोम केवल मुल्तान के महलो मे ही मिलता है और अन्य लोगो को उसका प्रयोग करने की अनुमति नही है[४]। पशु, पालतू जानवर जैसे भैंस, गाय, भेड व बकरिया भी अगणित हैं और पक्षी जैसे मुर्गी जगली तथा पालतू कबूतर, कलहस, जो दूसरो की अपेक्षा कम होती है, पाये जाते हैं। पेह पक्षी आकार में लगभग कलहस के बराबर होता है। यह सब जानवर बहुत ही सस्ते मूल्य तथा कम दामो में बिकते हैं।[५]

मक्खन तथा विभिन्न प्रकार का दूध तो इतना होता है कि इनको तो कोई पूछता ही नही और न इनको कोई महत्त्व ही दिया जाता है। बाजारो में विभिन्न प्रकार के भोजन जैसे भुना हुआ माँस, चावल, पकी तथा तली हुई वस्तुयें, ६५ प्रकार की मिठाइयाँ, फलो के रस तथा शरबत बिकते हैं जो (ससार के) अन्य किसी नगर में कठिनाई से ही प्राप्त होगे।

---

१ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ८२।
२ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ८२-८३।
३ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ८२।
४ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ८२, ८३।
५ सुबहुल आशा भाग ५, पृ० ८२।

शिल्पकार--

इसमे शिल्पकार तथा कारीगर भी हैं जैसे तलवार, धनुष, भाले तथा विभिन्न प्रकार के अस्त्र शस्त्र, कवच आदि बनाने वाले, सुनार, कढ़ाई का काम करने वाले, काठी बनाने वाले, तथा हर प्रकार की हस्तकला के दक्ष लोग, जो पुरुषो तथा स्त्रियो, तथा तलवार चलाने वालो, सुदक्ष लेखको एव साधारण लोगो के, जो असंख्य हैं, प्रयोग हेतु विशेष वस्तुयें बनाते हैं।

ऊँट—

ऊँट बहुत कम हैं। । यह केवल सुल्तान तथा खानो, अमीरो, वजीरो एव अन्य उच्च अधिकारियो के लिये, जो उसके (सुल्तान के) साथ रहते हैं, होते हैं।[1]

घोड़े—

घोडे बहुत हैं। इनकी दो जातियाँ हैं अरब के तथा लद्दू घोडे और अधिकाशत इनका कार्य प्रशसनीय है, अत इन घोडो को हिन्दुस्तान के तुर्को मे समीप के देशो से लाया जाता है। अरबी घोडे, बहरैन, यमन, तथा एराक से लाये जाते हैं। यद्यपि हिन्दुस्तान के आन्तरिक भागो में अच्छी नसल के अरबी घोडे मिल जाते हैं जिनका मूल्य भी कम होता है, परन्तु वे सख्या में अधिक नही हैं। हिन्दुस्तान में जब घोडे अधिक दिनो तक ठहर जाते हैं तो इनके पैर दुर्बल हो जाते हैं।[2]

गधे तथा खच्चर--

यहाँ के लोगो के मतानुसार खच्चरो तथा गधो पर सवारी करना उनके लिये अत्यन्त अपमानजनक तथा लज्जाप्रद है। कोई भी फकीह तथा आलिम खच्चर पर सवार होना उचित नही समझेगा। इन लोगो के अनुसार गधे पर सवार होना अत्यन्त लज्जाप्रद तथा अपमानजनक है परन्तु प्रत्येक व्यक्ति घोडे पर सवार होता है। धनी लोगो का सामान घोडो पर ले जाया जाता है और साधारण लोग बैलो पर लाद कर ले जाते हैं। यह बडे तेज चलने वाले होते हैं और लम्बे लम्बे पग रखते हैं।[3]

देहली का नगर—

मैने शेख मुबारक से देहली नगर, उसकी दशा, एव सुल्तान के मामलो के प्रबन्ध के विषय में पूछा। उसने मुझे बताया कि देहली में बहुत से नगर सम्मिलित हैं जिनको मिला कर एक कर दिया गया है। उनमें से प्रत्येक के भिन्न भिन्न नाम हैं। देहली उनमें से केवल एक का नाम है और उसी के नाम पर सबका नाम पड गया। यह लम्बाई तथा चौडाई में बहुत ही विस्तृत है और ४० मील के क्षेत्रफल में फैला हुआ है। यहाँ के भवन पत्थर तथा ईंट के बने हैं। छतें लकडी की होती हैं। इनके फर्श सगमरमर के समान श्वेत पत्थर से बनाये जाते हैं। इस नगर में भवन दो मजिल से अधिक ऊँचे नही बनाये जाते। इनमें से कुछ तो एक मजिल के होते हैं। सुल्तान के अतिरिक्त कोई भी अपने (घर का) फ़र्श सगमरमर के नही बनवाता है।[4]

शेख अबू बक्र बिन (पुत्र) अल खल्लाल का कथन है कि यह बात देहली के प्राचीन भवनो से सम्बन्धित है। जिन भवनो का मैं उल्लेख करता हूँ वे वैसे नही हैं। वह कहता है

१ मुरव्वुल जाहब, भाग ५, पृ० ८२।
२ मुरव्वुल जाहब, भाग ५, पृ० ८१।
३ मुरव्वुल जाहब भाग ५, पृ० ८२।
४ मुरव्वुल जाहब, भाग ५, पृ० ६६।

उन सब नगरो की सख्या जिनको वर्त्तमान समय में देहली कहा जाता है २१ है। तीन ओर तो सीधी पक्तियों में उद्यान हैं। प्रत्येक पक्ति १२ मील लम्बी है। पश्चिम दिशा में पहाडियो के कारण उद्यान नही हैं।

मदरसे, चिकित्सालय, खानकाहें, सराय, बाजार, स्नानागार–

देहली में १००० मदरसे हैं जिनमें से केवल १ शाफई[1] लोगो का और शेष हनफी[2] लोगों के हैं। लगभग ७० बीमारिस्तान (चिकित्सालय) हैं जो दारुश्शफा कहलाते हैं। देहली तथा उसके चारो ओर खानकाहे तथा सरायें हैं जिनकी सख्या २००० है। बडी बडी खानकाहे तथा विस्तृत बाजार एव अगणित स्नानागार हैं।

जल का प्रबन्ध–

जल कुओं से, जो पानी वाले स्थानों के निकट खोदे जाते हैं और जिनकी गहराई ७ हाथ से अधिक नहीं होती, जिन पर जल निकालने वाली चर्खियाँ लगी होती हैं, प्राप्त होता है। ये लोग वर्षा का जल भी पीते हैं जिसे बडे बडे जलकुण्डो में एकत्र कर लिया जाता है और प्रत्येक जलकुण्ड का व्यास १ बाण के निशाने की दूरी या उससे कुछ अधिक होता है।[3]

मस्जिद एवं मीनार––

देहली में एक मस्जिद है जो अपने मीनार के कारण बडी प्रसिद्ध है। ऊँचाई तथा कुर्सी को देखते हुये संसार में कोई अन्य इमारत नही है। शेख बुरहानुद्दीन अल खल्लाल उल बज्जी अल सूफी[4] का कथन है कि उसकी ऊँचाई ६०० गज है।[5]

सुल्तान तथा अमीरों आदि के भवन–––

शेख मुबारक का कथन है कि जहाँ तक देहली में स्थित सुल्तान के महलो एव भवनो का सम्बन्ध है, वे केवल उसके निवास तथा उसकी स्त्रियो, कनीजो, ख्वाजा सराओ के निवास के लिये हैं। नौकरो तथा दासो के भी घर हैं। कोई अमीर अथवा खान उसके (सुल्तान के) साथ निवास नही करता। न उनमें से कोई राज्य के किसी कार्य के बिना वहाँ ठहर सकता है। कार्य के पश्चात् प्रत्येक अपने अपने घर को चला जाता है। यह लोग दिन में २ बार प्रात तथा तीसरे पहर राज्य के कार्य के सचालन हेतु उपस्थित होते हैं।[6]

अमीर–

अमीरो की निम्नलिखित श्रेणियाँ होती हैं . सबसे बडों को खान का पद होता है, फिर मलिक, अमीर, सिपहसालार, तत्पश्चात् अन्य अधिकारी वर्ग होते हैं। सुल्तान की सेवा में ८० या इससे कुछ अधिक खान हैं। उसकी सेवा में ९०० ००० अश्वारोही हैं जिनमें से कुछ उसके दरबार में हैं और शेष प्रान्तों में। सुल्तान का दीवान उनकी जीविका के साधन का प्रबन्ध

१ शाफई—अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इदरीस, शाफई का जन्म ७६७ ई० में तथा निधन मिस्र में ८२० ई० में हुआ। उन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की। उनके द्वारा बताय हुये सुन्नी मुसलमानों के धर्म विधान को मानने वाले शाफई कहलाते हैं।

२ हनफी—इमामे आज़म अबू हनीफा के बताये हुये सुन्नी मुसलमानों के धर्म विधान के अनुयायी हनफी कहलाते हैं। हिन्दुस्तान के अधिकाश सुन्नी मुसलमान इसी धर्म विधान को मानते हैं। इनका निधन ७६७ ई० मे हुआ।

३ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ६६।

४ ,, ,, 'कूफी' पृ० ६६।

५ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ६८। इस स्थान पर लेखक का अभिप्राय कुतुब मीनार तथा मस्जिद कुव्वतुल इस्लाम से है।

६ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ६९।

करता है। वह सभी को इनाम प्रदान करता है। सेना में तुर्की, खिताई, ईरानी तथा हिन्दुस्तानी होते हैं। उनमें पहलवान, दरबारी तथा विभिन्न कौमों एवं श्रेणी के लोग हैं।[1]

सब के ही पास दागे हुये घोड़े, अत्युत्तम अस्त्र शस्त्र होते हैं। वे लोग उत्कृष्ट आकृति के होते हैं। अधिकाश अमीर तथा अधिकारी फिकह (के ज्ञान प्राप्त करने) में सलग्न रहते हैं और विभिन्न मजहबो[2] के अनुयायी होते हैं। हिन्दुस्तान के लोग सामान्यतया अबू हनीफा के अनुयायी है।

हाथी—

सुल्तान के पास ३००० हाथी हैं जिन्हे युद्ध के समय सोने के काम की लोहे की झूलें पहिनाई जाती हैं। शान्ति के समय उन पर रेशमी किमरवाब अथवा विभिन्न प्रकार के रेशमी वस्त्र, जिन पर बेलबूट बने हुये होते हैं, से ढक हुये हौदज रख जाते है। हाथियों पर छत तथा हौदज होते हैं। बैठने के स्थान पर पत्तर लगे होते हैं। उनमें लकडी की गुमटियां लगी रहती हैं जो कीलो द्वारा जकडी जाती हैं। हिन्दुस्तानी लोग युद्ध के लिये अपने बैठने का स्थान इन्ही में बनाते हैं। हाथी की शक्ति के अनुसार एक हाथी पर ६ से १० मनुष्य तक बैठते हैं।

दास तथा सेना—

सुल्तान के पास २०,००० तुर्क दास हैं।[3] अल बज्जी का कथन है कि १०००० ख्वाजा सरा (हीजडे) १००० खजन्दार[4], १००० बशमकदार[5], २००००० रिकाबिया[6] (रक्षक) जो अस्त्र शस्त्र धारण करके सुल्तान के साथ उसकी सवारी के आगे आगे चलते हैं। कोई भी खान, मलिक, अमीर, अथवा सरदार अपनी सेवार्थ सैनिक एकत्र नही कर सकता। इन लोगो को अक्तायें दे दी जाती हैं जैसा कि पहले (वर्णन) किया जा चुका है और जिस प्रकार से मिस्र तथा शाम में होता है। यो कहना चाहिये कि प्रत्येक का अपने से ही सम्बन्ध रहता है। सुल्तान सैनिकों को सेना के लिये भर्ती करता है। उनको वेतन उसके दीवानो द्वारा प्रदान होता है। जो कुछ भी खान, मलिक, अमीर तथा सिलहदार को दिया जाता है वह उसके व्यक्तिगत प्रयोग के लिए होता है[7]।

हाजिब, वजीफा पाने वाले तथा राज्य के पदाधिकारी जो सेना से सम्बन्ध रखते हैं जैसे खान, मलिक, अमीर, अपने पद के अनुसार श्रेणी पाते हैं।

सिपहसालारो में से किसी को भी सुल्तान के निकट रहने के योग्य नही समझा जाता। उन लोगो में से केवल वाली अथवा इसी प्रकार के अन्य पदाधिकारी नियुक्त किये जाते हैं।

---

१ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ६१ ६२।

२ मजहब। शाफई, हनफी, मालिकी, हम्बली।

३ सुबहुल आशा, १०,००० पृ०, ६२।

४ कोषाध्यक्ष।

५ सुल्तान के जूतों की देख रेख करने वाला अधिकारी अथवा निम्न वर्ग के कर्मचारी।

६ रक्षक, साथ यात्रा करने वाले।

७ सुबहुल आशा भाग ५, पृ० ६२ (समस्त सेना केवल सुल्तान से सम्बन्धित होती है और उसके दीवान द्वारा उनके वेतन का भुगतान होता है, यहां तक कि उनके वेतन का भी, जो खानों मलिकों तथा अमीरों की सेवा में होते हैं। उनके स्वामी उन्हें भत्ता प्रदान नहीं कर सकते जैसा कि मिस्र तथा शाम में प्रथा है।)

खान के अधीन १०,००० सवार, मलिक के अधीन १०००, अमीर के अधीन १०० और सिपहसालार के अधीन इससे कम सवार होते हैं[१]।

अधिकारियों का वेतन—

वेतन के लिये खानों मलिकों, अमीरों तथा सिपहसालारों के पास भूमि के भाग अक्ता के रूप में होते हैं जो उन्हें दीवान द्वारा दिये जाते हैं। यदि इनमें वृद्धि नहीं की जाती तो इन्हें घटाया भी नहीं जाता। सामान्यतया जितने धन का उनसे अनुमान किया जाता है उसमे अधिक प्राप्त होता है।

प्रत्येक खान को लाखों मिलते हैं[२], एक-एक लाख में १००००० तन्के होते हैं और प्रत्येक तन्के में ८ दिरहम होते हैं। यह धन उन्हें उनके व्यक्तिगत व्यय हेतु प्राप्त होना है। उसको इसमें से सैनिकों पर कुछ व्यय नहीं करना पड़ता।

प्रत्येक मलिक को ६०,००० से ५०,००० तन्के तक, प्रत्येक अमीर को ४०,००० से ३०,००० तन्के तक तथा सिपहसालार को २०,००० तन्के के लगभग दिये जाते हैं। अन्य अधिकारियों को १०,००० से १००० तन्के तक प्राप्त होते हैं। सुल्तान के दासों में से प्रत्येक को ५००० से १००० तन्के तथा भोजन और वस्त्र एवं उनके जानवरों के लिये चारा मिलता है[३]।

सैनिकों तथा दासों के पास भूमि नहीं होती। वे लोग नकद वेतन खजाने से पाते हैं। जिन लोगों के पास भूमि है, जिसकी आय उसके कथनानुसार इस प्रकार है—जो अक्ता उन्हें प्रदान की जाती है, यदि उसकी आय निर्धारित वेतन से अधिक नहीं होती तो उससे कम भी नहीं होती। इनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो अपनी अनुमानित आय से दुगुना अथवा उससे भी अधिक वसूल करते हैं।

प्रत्येक दास को प्रति मास २ मन गेहूं तथा चावल भोजन हेतु मिलता है और ३ सेर माँस उसकी अन्य आवश्यकताओं सहित दिया जाता है। प्रति मास चाँदी के १० तन्के तथा प्रतिवर्ष ४ जोड़े वस्त्र के प्रदान किये जाते हैं[४]।

कारखाने—

सुल्तान का कढ़ाई का एक कारखाना है जिसमें ४००० रेशम का कार्य करने वाले कार्य करते हैं। खिलअतों तथा उपहार के लिए विभिन्न प्रकार के वस्त्र तैयार करते हैं। इनके अतिरिक्त चीन, एराक सिकन्दरिया से भी आयात होता है। सुल्तान प्रतिवर्ष २ लाख पूरे वस्त्र वितरित करता है अर्थात् १००००० वसन्त ऋतु में तथा १००००० शरद ऋतु में। वसन्त ऋतु की खिलअतें सिकन्दरिया के ही माल से सिकन्दरिया में ही बनी हुई होती हैं। ग्रीष्म कालीन खिलअतें रेशम की होती हैं जो देहली के कारखाने में चीन तथा एराक़ से लाये हुये सामान की बनती हैं। वह उन्हें खानकाहों में वितरित करता है।

सुल्तान के पास ४००० जरदोज़ी का कार्य करने वाले हैं जो अन्तःपुर के लिये किमख्वाब तथा उसके (सुल्तान के) उपयोग के लिए वस्त्र तैयार करते हैं जिनको वह राज्य के पदाधिकारियों तथा उनकी पत्नियों को प्रदान करता है।

घोड़ों के उपहार तथा घोड़ों का मूल्य—

प्रतिवर्ष वह १०,००० दागे हुये अरबी घोड़े वितरित करता है। उनमें से कुछ पर

१ बरनी पृ०, १४८। आदि तुर्क कालीन भारत पृ०, २२५।
२ सुबहुल आशा, भाग ५ पृ०, ६४। (प्रत्येक खान को दो लाख तन्के मिलते हैं)
३ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ६४।
४ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ६४।

जीन तथा लगाम होती हैं और अन्य अरबी नस्ल के घोडो पर न तो जीन ही होती है और न लगाम। जीन तथा लगाम वाले घोडे विभिन्न प्रकार के होते हैं। कुछ पर झूल होती हैं और कुछ अन्य प्रकार से सजे होते हैं। कुछ घोडो की झूल या सजावट की सामग्री सोने के काम की होती है और कुछ रुपहले चाँदी के काम की। जहा तक लद्दू घोडो का सम्बन्ध है, जिन्हे वह भेंट करता है, उनकी कोई सख्या नही। वह झुन्ड के झुन्ड प्रदान कर देता है और सैकडो की सख्या में वितरित करता है। यद्यपि इस देश में घोडे बहुत बडी सख्या मे होते हैं और बाहर से भी बहुत बडी सख्या में आयात किये जाते हैं फिर भी उनको वह (सुल्तान) प्रत्येक दिशा से प्राप्त करता रहता है और बडी उदारता से उनका अधिकतम मूल्य देता है। वह उपहार तथा भेंट में जितने घोडे देता है उनकी सख्या अधिक होने के कारण उनका मूल्य भी अधिक है और जो लोग इनका व्यापार करते हैं उनको बहुत लाभ होता है।

बहरैन के अरबी अमीरो में स अली बिन (पुत्र) मन्सूर अल उकैली ने, जो इस सुल्तान के यहाँ घोडो का आयात करता है, मुझसे कहा कि इस देश के लोग घोडो के विषय में एक पहचान, जो केवल इन्ही को ज्ञात है, जानते हैं। जब उस लक्षण को वे किसी घोडे में देखते हैं तब वे चाहे जितना अधिक मूल्य क्यो न देना पडे उस मोल ले लेते हैं।

नायब अथवा अमरिया तथा अन्य अधिकारी—

खानो में से ही एक सुल्तान का नायब होता है जो अमरिया कहलाता है। उसकी अक्ता में एराक के समान बडा प्रान्त होता है और वज़ीर की अक्ता भी एराक के समान होती है। सुल्तान के ४ नायब होते हैं जिनमें से प्रत्येक शक कहलाता है। इनमें से प्रत्येक को ४०,००० से २०,००० तन्के तक दिये जाते हैं। उसके ४ दबीर, निजी सचिव[1] होते हैं और इनमें से प्रत्येक के पास समुद्र तट पर स्थित भारी आय का एक नगर हैं। प्रत्येक के अधीन ३०० कातिब[2] होते हैं[3] जिनमें से सबसे नीचा तथा कम वेतन वाला भी १०००० तन्के तक वेतन के रूप मे पा लेता है। इनमे से बडे बडे कातिबो के पास ग्राम तथा भूमि के बडे बडे भाग होते हैं और कुछ के पास ५०-५० ग्राम तक होते हैं। सद्रे जहाँ के पास, जो काज़ी-उल-कुज़्ज़ात की उपाधि है, और जो हमारे समय में कमालुद्दीन इब्ने (पुत्र) बुरहान है, १० ग्राम हैं। इनकी आय लगभग ६०,००० तन्के है। इसे सद्रुल इस्लाम भी कहते हैं। न्याय सम्बन्धी विषयो में यह सब नायबो से श्रेष्ठ है। शेखुल इस्लाम अर्थात् शेखुश्शयूख की भी (आय) इतनी ही है। मुहतसिब के पास एक ग्राम होता है। इसकी आय ८,००० तन्के से भी ऊपर है।

सुल्तान के पास १२०० चिकित्सक हैं। उसके पास १०,००० बाज़ पालने वाले तथा सिखाने वाले हैं जो घोडो पर सवार होकर शिकार पकडने के लिये इन पक्षियों को ले जाते हैं, ३००० हक्के जो शिकार खेलने के लिये शिकार को हाक कर लाते हैं, ५०० दरबारी, १२०० सगीतज्ञ, उन दास गवय्यो के अतिरिक्त हैं जिनकी सख्या १००० है और जो विशेष रूप से गान विद्या सिखाने के ही उद्देश्य से नियुक्त हैं, ३ भाषाओं अरबी, फारसी, हिन्दी के १००० कवि भी हैं जो उच्च स्तर के लोग थे। शाही दीवान द्वारा इन सब को वेतन प्राप्त होता है और इनको उपहार भी भेंट किये जाते हैं।[4] जब सुल्तान को यह पता लग जाता है कि उसके किसी गवय्ये ने किसी अन्य के यहाँ गाया है तो वह उसकी हत्या करवा डालता

---

१ मूल पुस्तक में कातिबुस् सिर।

२ सचिव के अधीन अधिकारी।

३ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ६२।

४ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ६२।

है। मैंने उससे उन लोगों के वेतन के विषय में पूछा। उसने उत्तर दिया, "मैं इन लोगों के वेतन के विषय में कुछ नहीं जानता। केवल इतना ही ज्ञात है कि कुछ दरबारियों के पास दो ग्राम, कुछ के पास एक ग्राम है, और खिलअतों, वस्त्रों तथा जीविका-वृत्ति के अतिरिक्त इनमें से प्रत्येक को ४०,०० , ३०,००० से २०,००० तन्के तक प्राप्त हो जाते हैं।

शेख मुबारक का कथन है : इस सुल्तान के लिये प्रातःकाल तथा सायंकाल के दरबार के समय दो बार दस्तरख्वान लगाया जाता है और खानों मलिकों, अमीरों सिपहसालारों तथा सेना के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से २०,००० व्यक्ति भोजन करते हैं। मध्याह्न तथा रात्रि के उसके निजी भोजन के समय २०० फ़क़ीह उसके साथ उपस्थित रहते हैं और उसके समक्ष वाद विवाद करते हैं।[1]

शेख मुबारक ने बताया कि इन लोगों की अधिक संख्या होने के कारण सेना के प्रसिद्ध व्यक्ति ही अथवा वे लोग जिनको आवश्यक कार्यवश उसके समक्ष बुलाया जाता है, इस सुल्तान की मजलिस में प्रविष्ट हो पाते हैं। इसी प्रकार दरबारियों तथा सवय्यों में से समस्त निजी सेवक इन निजी सभाओं में उपस्थित नहीं होते, केवल बारी आने पर ही आते हैं। यही बात राज्य के पदाधिकारियों जैसे दबीरों, चिकित्सकों तथा अन्य लोगों के साथ है जो अपनी बारी पर ही उपस्थित होते हैं। कवि लोग वर्ष के विशेष अवसरों पर जैसे ईद, अन्य समारोहों पर, रमजान मास के आने पर और सुल्तान को बधाई देने के अवसरों पर या जब वे अपने कसीदे प्रस्तुत करते हैं, उपस्थित होते हैं।

सेना—

सामान्य रूप से प्रजा के मामलों की अपेक्षा सेना के मामले विशेष रूप से अमरिया से सम्बन्ध रखते हैं। देश में बसे हुये और बाहर से आने वाले फ़कीहों तथा आलिमों के मामले सद्र जहाँ के अधिकार क्षेत्र में होते हैं। देशवासित तथा बाहर से आये हुये फकीरों के मामले शेखुल इस्लाम के अधिकार क्षेत्र में होते हैं। साधारण यात्रियों, दूतों, विद्वानों तथा कवियों के मामले जो इस देश में बसे हुये हैं या बाहर से आये हुये हैं दबीरों अथवा सचिवों के हाथ में होते हैं।

बिगदान द्वारा धन भिजवाना—

काज़ी-उल-कुज़्ज़ात अबू मुहम्मद अल हसन बिन (पुत्र) मुहम्मद अल गोरी अल हनफी ने मुझ से वर्णन किया कि सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक शाह ने अपने एक दबीर (सचिव) बिगदान को दूत के रूप में सुल्तान अबू सईद[2] के पास भेजा और १ करोड़ तन्के उसके साथ इस आशय से भेजे कि वह उनको कूफ, एराक तथा अन्य स्थानों के पवित्र नगरों में दान कर दे। इस बिगदान के विचार कुत्सित थे। उसने इस धन को अपने बादशाह के पास, जिसने उसे भेजा था, लौटाने के विचार से लिया। जब वह वहाँ पहुँचा तो अबू सईद की मृत्यु हो चुकी थी। तब इसका (पता लगाना) सम्भव हो सका कि उसके विचार क्या थे। फिर वह बगदाद में दिखाई दिया और उसके साथ उसके तथा उसके साथियों के लिये ५०० घोड़े थे। तत्पश्चात् वह दमिश्क पहुँचा। वह कहता है "तब मुझे पता लगा कि वह वहाँ से एराक वापस लौटा और बगदाद में ठहरा और वहीं बस गया।" मैं कहता हूँ निज़ामुद्दीन अबुल फ़ज़ल यहया बिन (पुत्र) अल हाकिम ने इस मनुष्य के विषय में यह बताया कि उसने उस आदमी को दमिश्क में देखा था परन्तु उसने दान के धन के विषय में कोई उल्लेख नहीं किया। शिबली मुल्तानी तथा अल

---

१ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ६५।

२ ईरान का मंगोल बादशाह जिसने १३१६ ई० से १३३५ ई० तक राज्य किया।

बज्जी ने भी उसके विषय में मुझे बताया। यद्यपि उनके शब्दों में अन्तर है किन्तु अर्थ दोनों का एक ही है। उनमें से प्रत्येक का यही कथन था कि वह बिग़दान प्रसिद्ध आलिम तथा उत्कृष्ट चरित्र का व्यक्ति था।

सुल्तान के आदेशों का पालन—

शेख अबू बक्र अल बज्जी कहता है, इस सुल्तान के आदेशों का सम्मान उसके आतंक के कारण, जो लोगों में आरूढ़ है, होता है, और विश्व उसकी सेना के कारण कम्पित रहता है। वह अपने राज्य एवं देश के कार्यों में अपने को अधिक संलग्न रखता है और स्वयं बैठकर अपनी प्रजा के प्रति न्याय करता है।

सुल्तान का सर्वदा सशस्त्र रहना—

ख़ोजा अहमद बिन (पुत्र) ख़ोजा उमर बिन (पुत्र) मुसाफ़िर उसके विषय में कहता है कि वह (सुल्तान) अपनी प्रजा के प्रार्थना पत्रों को एक सामान्य सभा में पढ़ने के लिये बैठता है और शस्त्र, यहाँ तक कि चाकू भी, धारण किये हुये कोई व्यक्ति वहाँ उसके निजी सचिव के अतिरिक्त, प्रविष्ट नहीं हो सकता, और अन्य कोई भी नहीं घुस सकता[1] परन्तु सुल्तान धनुष बाण तथा निषंग इत्यादि द्वारा पूर्ण रूपेण सशस्त्र रहता है। जहाँ कहीं भी वह आसीन होता है, वह अपने अस्त्र शस्त्र नहीं छोड़ता। वह कहता है, "यह सदैव ही उसकी आदत है।"

सुल्तान की गतिविधि—

सुल्तान की गतिविधियाँ विभिन्न प्रकार की हैं। कभी तो युद्ध के लिये, कभी देहली में ही एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिये और कभी अपने प्रासाद में भ्रमण के लिये। जब वह युद्ध के लिये सवार होकर जाता है तो ऐसा प्रतीत होता है मानो पर्वत चल रहे हों, रेत उड़ रही हो, समुद्र उमड़ रहे हों, विद्युत चमक रही हो और ऐसी वस्तुयें होती हैं जिसका झूठ आँखें विश्वास कर लेती हैं और जो जिह्वा को उनका वर्णन करने से रोकती हैं। हाथियों पर ऐसे बुर्ज होते हैं जैसे कोई नगर या दुर्ग किला हो, और आँखों को इन जानवरों द्वारा उड़ाई हुई एवं दिन पर छाये हुये रात्रि के अँधेरे के अतिरिक्त और कुछ नहीं दिखाई देता।

सुल्तान की पताकायें—

सुल्तान की पताकायें काले रंग की होती हैं जिनके मध्य में सुनहरे काम का एक अजगर बना होता है। उसके अतिरिक्त किसी अन्य को काली पताकायें ले जाने की अनुमति नहीं है। उसके सीधे अंग की ओर काली पताकायें तथा बायें अंग को ओर लाल पताकायें रहती हैं जिनके ऊपर सोने के काम में अजगर बने हुये होते हैं।

वाद्य यन्त्र—

अन्य अमीरों में प्रत्येक अपनी श्रेणी के अनुसार पताका ले चलता है। जिस समय सुल्तान महल में या यात्रा में होता है उस समय वाद्य यंत्र सुल्तान के लिये इसी प्रकार बजाये जाते हैं जैसे सिकन्दर महान के लिये (बजाये जाते थे)। २०० नक्क़ारे, ४० बड़े तम्बूर, २० बड़ी दुन्दुभी तथा १० बड़े मजीरे होते हैं।[2] उसके लिये ५ बार नक्क़ारे बजाये जाते हैं। अगणित ख़ज़ाना तथा उसी के समान वस्तुयें, अतुलनीय घोड़े उसके साथ निकाले जाते हैं।

शिकार—

शिकार में वह एक छोटे से रक्षक दल के साथ जाता है जिसमें उसके साथ १०,००० सवार तथा २०० हाथी से अधिक नहीं होते। वह अपने साथ लकड़ी के चार मंडप, २००

---

१ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ६६।
२ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ६६-६७।

ऊँटो पर लदवा कर ले जाता है। प्रत्येक मडप २०० ऊँटो पर, जो सुनहरे काम के काले रेशमी कपडो की झालरो से ढके होते हैं, रखा जाता है। प्रत्येक मडप में २ मजिलें होती हैं। खेमें, डेरे (खरगाह) इनके अतिरिक्त होते हैं।

मनोरंजनार्थ यात्रायें—

जब वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर मनोरजनार्थ या इसी प्रकार के किसी अन्य उद्देश्य से जाता है तो लगभग ३०,००० सवार उसके साथ होते हैं और हाथियो के विषय में भी यही रीति है। १००० घोडे, जीन एव लगाम सहित हाथ मे पकड कर ले जाये जाते हैं। इनमें से कुछ सुनहरे काम के कपडो की झालरो से सुसज्जित होते हैं और उनके गलो में हसुलियें पडी होती हैं। अन्य हीरो तथा नीलम से सजाये जाते हैं।[1]

महल में सवारी--

सुल्तान के महल में सवारी के विषय में शेख मुहम्मद अल खुजन्दी ने, जो देहली में निवास कर चुका है, और जिसने वहाँ की सेना में नौकरी कर ली थी मुझसे कहा कि उसने उसे (सुल्तान को) एक महल से दूसरे महल तक जाते हुये देखा है। वह सवार होकर जा रहा था। उसके सिर क ऊपर एक छत्र था और सिलहदार अस्त्र शस्त्र लिये हुये उसके पीछे-पीछे चल रहे थे और उसके चारो ओर १२००० दास थे जो सब पैदल थे। उनमें छत्र ले जाने वालो सिलहदारो तथा जामादारों (वस्त्र ले जाने वालों) के अतिरिक्त कोई भी सवार नही था[2]।

चत्र---

शेख मुबारक ने मुझे बताया कि यह सुल्तान अपने सिर के ऊपर, सवार होकर जाने के समय, एक छत्र रखता है, परन्तु जब वह युद्ध के लिये अथवा लम्बी यात्रा के लिये जाता है तो उसके सिर पर ७ चत्र रहते हैं, जिनमें से २ पर जवाहरात जडे होते हैं। इन दोनो चत्रो का मूल्याकन नही किया जा सकता।[3]

सिंहासन का वैभव-—

उसके सिंहासन के लिये वैभव, आडम्बर एव शाही नियम तथा अन्य नियम होते हैं, जिनके समान नियम सिकन्दर महान अथवा मलिक शाह बिन (पुत्र) अलप अरसलान के अतिरिक्त और किसी ने नही बनाये थे।

खानों, मलिको आदि के अधिकार—

खानो, मलिको तथा अमीरो में से प्रत्येक अपने निवास स्थान पर अथवा यात्रा में पताका सहित सवारी करता है। खान अधिक से अधिक ९ पताकायें ले जा सकता है और अमीर कम से कम ३ पताकायें ले जा सकता है। अपने निवास स्थान पर रहते समय खान अधिक से अधिक १० कोतल घोडे रख सकता है और अमीर अपने निवास पर रहते समय अधिक से अधिक २ कोतल घोडे तक रख सकता है। जिस समय वे यात्रा में हों तब इनमें से प्रत्येक अपनी उदारता तथा दानशीलता के अनुसार जितने चाहे उतने रख सकता है।[4] इस सब के होते हुये भी, जब वे सुल्तान के प्रासाद के पास पहुँचते हैं तो वे नम्रता प्रदर्शित करते

१ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ९७।
२ ,, ,, ,, पृ० ९६।
३ ,, ,, ,, पृ० ९७।
४ ,, ,, ,, पृ० ९८।

हैं, क्योंकि उसका सूर्य उनके सितारों को नष्ट कर देता है और उसका समुद्र उनके वर्षा-वाहक बादलों को भक्षण कर लेता है। यह सुल्तान इस सब के होते हुये भी उदार, दानशील तथा शक्तिशाली ईश्वर के प्रति विनीत है।

सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ शाह के गुण—

अबू असफ़ा उमर बिन (पुत्र) इशाक़ अश् शिबली ने मुझे बताया कि उसने सुल्तान को एक पवित्र फ़क़ीर[1] के, जिसका निधन हो गया था, क्रिया कर्म के लिये तथा उसके जनाज़े को अपने कन्धो पर ले जाते हुये देखा था। बातो में वह अत्यधिक निपुण है। दैवी पुस्तक (क़ुरान) तथा अबू हनीफ़ा के मज़हब पर हिदाया उसे कण्ठस्थ है। वह तर्क बुद्धि में बड़ा प्रसिद्ध है। वह बड़ा उत्तम सुलेख लिखता है, धार्मिक कर्त्तव्यो का पालन करने में एवं सयम तथा अल्पाहार तथा उत्कृष्ट चरित्र में स्थिर तथा दृढ है। वह कविता गान तथा उनकी रचना भी करता है और अन्य लोगों का इनका गान करना उसे रुचिकर है और वह उनके अर्थ समझता है। वह विद्वान लोगों स वाद विवाद में सलग्न होता है, प्रसिद्ध विद्वानो से बहस करता है और फारसी भाषा के कवियों की विशेष रूप से आलोचना करता है क्योकि वह इस भाषा के अलकारों की जटिलता को समझता है, और कविता सम्बन्धी उत्तम बातों का उसे ज्ञान है।

वह कहता है 'मैंने उसे प्रत्येक दृष्टिकोण से वर्त्तमान काल पर, भूतकाल की श्रेष्ठता के महत्व पर विवाद करते देखा है, क्योकि वे लोग कहते थे कि श्रेष्ठता या तो समय या अश (मात्रा) या तत्व के विचार से होती है और यह सम्भव नही है कि वह इनमें से किसी एक श्रेणी में हो। उसने उन्हें स्वीकार करने पर विवश कर दिया कि उनका तर्क निरर्थक था क्योंकि भूतकाल, इनमें से किसी अकेले के विचार से नही श्रेष्ठ है।" उसने कहा: "मैंने उसे विभिन्न विषयो पर उन सब विद्वानो से जो वहाँ उपस्थित रहते थे विवाद करते देखा है, यद्यपि उनकी सख्या बड़ी अधिक है।" उसने कहा, "उसकी मजलिस (गोष्ठी) में आलिम (विद्वान) उपस्थित रहते हैं और रमज़ान के मास में उसके साथ इफ्तार[2] करते हैं। सद्रे जहाँ प्रत्येक रात्रि को उपस्थित जनों में से किसी को कोई से विषय विवाद हेतु उठाने के लिये आमत्रित करता है। तब सभी सुल्तान की उपस्थिति में उस समस्या पर विभिन्न दृष्टिकोण से वाद-विवाद करते हैं और वह भी उनमें से ही एक की भाँति वाद विवाद करता है और उनके तर्क का खडन करता है।"

'वह उन लागो में से है जो वर्जित कार्यो को करने की अनुमति नही देते, न वर्जित वस्तुओ ही का किसी को सवन करन देता है और न कोई (खुल्लम खुल्ला) देश के भीतर नियमो के प्रतिकूल अपराध करने का साहस करता है। बडी कठोरता से वह मदिरापान का निषेध करता है और उसके लिए वैधानिक दण्ड देता है और अपने दरबारियों तक को, जो मदिरापान करने के आदी हैं, दण्ड देन पर उतर आता है।" सैयिद अस् शरीफ़ ताजुद्दीन अबुल मुजाहिद अल हसन अस् समरकन्दी ने मुझे बताया है कि देहली में एक उच्च पदस्थ खान मदिरापान करता था और उसका आदी था और उसे निरन्तर पीता ही रहता था जबकि सुल्तान ने उसका निषेध कर दिया था परन्तु उसने यह आदत न छोडी। सुल्तान उसमे इस पर अत्यन्त क्रोधित हुआ। उसे ब दी बना दिया और उसकी सम्पत्ति छीन ली। उसके पास से ४३,७००,००० मिस्काल[3] सोना प्राप्त हुआ। इस कथा द्वारा सुल्तान की कुकृत्य के प्रति घोर निन्दा तथा देश

१ सुल्तानुल मशायख़ निज़ामुद्दीन औलिया जिनका निधन देहली में १३२५ ई० में हुआ।

२ दिन भर के रोज़े के उपरान्त सायकाल का भोजन।

३ १ मिस्क़ाल = १३ दूम।

के धन बाहुल्य के विषय में पर्याप्त उदाहरण मिलता है। इस धन की मिस्री कन्तारो में गणना की जाय तो ४३७०० सोने के कन्तार होते हैं।

वही शरीफ हसन अस् समरकन्दी उन व्यक्तियों में से है जिसने इस देश के धन तथा इसी प्रकार की अन्य वस्तुओं के विषय मे, जो बुद्धि को उलझन में डाल देती हैं, मुझे बताया है।

सुल्तान की उदारता

सुल्तान की उदारता तथा दानशीलता के ऐसे कृत्य हैं कि ससार को उन्हे अपने उत्कृष्ट कार्यो के आलेख्य के पृष्ठों के ऊपर लिखना पडेगा। मैने वह सब वर्णन उससे सुन कर सकलित किया है। मैं उनका विस्तृत विवरण शेख मुबारक के बताने के पूर्व नही जानता था। उसने मुझे बताया कि यह सुल्तान प्रति दिन २ लाख (तन्के) दान में दिया करता है और इससे कम नही। मिस्री सिक्को के अनुसार यह धन १६०,००० दिरहम प्रतिदिन के बराबर होगा। किन्ही-किन्ही दिनो में तो यह धन ५० लाख (तन्के) तक पहुच जाता है और प्रति मास नया चन्द्रमा दिखाई देने के समय २ लाख तन्के दान में दे देना उसका सदैव का अभिन्न रूप से नियम है। उसने ४०,००० दीनो तथा दरिद्रियो की जीविका प्रदान करने का दायित्व अपने ऊपर ले रक्खा है। उनमें से प्रत्येक प्रतिदिन एक दिरहम तथा रोटी के लिए ५ रतल गेहूँ अथवा चावल पाता है। मक्तबो में सहस्रो फकीह नियुक्त किये जाते हैं जिनकी जीविकावृत्ति दीवान (वित्त विभाग) द्वारा प्रदान की जाती है। वे लोग अनाथो तथा प्रजा के बालको को किरअत[1] तथा लिखना सिखाते हैं। वह किसी भी भिखारी को देहली के भीतर लोगों से भिक्षा मांगने की आज्ञा नही देता। इसके विपरीत प्रत्येक व्यक्ति को भिक्षा मांगने मे रोका जाता है और उसे उतना ही धन सुल्तान की ओर से प्राप्त होता है जितना कि एक फकीर को मिल जाता है।

अपरिचित लोगो तथा उन लोगों के प्रति जो उसकी ओर सहायता हेतु दृष्टि लगाये रहते हैं उसकी परोपकारिता का उल्लेख अविश्वसनीय बन जाता है। आलिम (विद्वान) निजामुद्दीन अबुल फज़्ल यहया बिन (पुत्र) अल हाकिम अल तय्यारी ने निम्नलिखित बातें बताई: सुल्तान अबू सईद की सेना में हमारे साथ अजद बिन (पुत्र) काजी यज्द नामक एक व्यक्ति था। वह वजीर बनने के अनुकूल योग्यता न रखते हुये भी इस पद का आकांक्षी था। फिर भी प्रतिस्पर्धी गिने जाने के कारण उसने वज़ीरो के मध्य में विरोध उत्पन्न करा दिया और सेना में विद्रोह खडा कर दिया। इस कारण उन लोगो ने उसे हटा देने का तथा देहली दूत बना कर एक पत्र, जिसमें बधाई, प्रेम, प्रश्नो तथा जिज्ञासा का ही विषय था, देकर भेजने का निश्चय किया। स्पष्टतया, यह सबने उसे वहाँ से हटाने के विचार से ही किया-परन्तु उनकी इच्छा यह थी कि वह वहाँ से न लौटे। जब वह देहली पहुँचा और इस सुल्तान के समक्ष उपस्थित हुआ और उस पत्र को दिया तो सुल्तान ने उसका स्वागत किया और उसे एक खिलअत तथा उपहार भेंट किये और अपने समीप एक विशाल भवन में ठहराया और उसे अपार धन-सम्पत्ति प्रदान की। तत्पश्चात् जब वह अपने भेजने वाले के पास लौटने की इच्छा करने लगा तो सुल्तान ने उससे कहा, "मेरे खजाने में प्रविष्ट होकर जो चाहो ले जाओ।" यह अजद बडा चतुर व्यक्ति था। जब वह खज़ाने में प्रविष्ट हुआ तो उसने कुरान शरीफ के अतिरिक्त कोई अन्य वस्तु न ली। सुल्तान को यह सुन कर बडा आश्चर्य हुआ और उसने उससे पूछा, "तुमने कुरान शरीफ के अतिरिक्त कोई अन्य वस्तु क्यों न ली?" उसने उत्तर दिया, "सुल्तान ने मुझे अपने परोपकार द्वारा अत्यन्त धनी बना दिया

१ कुरान का नियमानुसार पाठ।

है और मुझे कुरान शरीफ के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु का कोई मूल्य न दीख पड़ा।" सुल्तान का आश्चर्य उसके इस कृत्य एवं इन शब्दों से और भी बढ़ गया और उसने उसे पर्याप्त धन दिया जिसमें से कुछ तो स्वयं उसके लिये था और कुछ उपहार स्वरूप अबू सईद के लिये था। अबू सईद के उपहारों तथा उसके उपहारों का कुल मूल्य ८०० तुमन था जबकि एक तुमन प्रचलित १०००० दीनार तथा १ दीनार ६ दिरहम के बराबर होता है। इस प्रकार यह धन ८० लाख प्रचलित दीनारों अथवा ४ (चार) करोड़ ८० लाख दिरहम के बराबर हुआ। जब अजम इस अपार धन राशि को लेकर लौटा तो उसे भय हुआ कि कहीं उससे यह सब सेना ले न ले। अतः उसने उसके कई भाग कर दिये और सैनिकों की दृष्टि से इसे छिपा दिया। अमीर अहमद बिन (पुत्र) ख्वाजा रशीद,[1] जो वजीर का भाई था, एक मामले में फँसा हुआ था जिसके परिणाम स्वरूप वह सेना से निकाल दिया गया; परन्तु उसके भाई गयासुद्दीन मुहम्मद के उत्कृष्ट सम्मान के कारण उस पर दया की गई और उसे यह लिख दिया गया कि उसे अमीर अल इलकह की उपाधि दी गई। उसका अर्थ यह है कि वह उन प्रान्तों के शासकों से, जहाँ वह पहुँचा, श्रेष्ठ है। मार्ग में वह सैयिद अजद से मिला और उसने उसे बहुत धन दिया। यह सम्भव है कि उसने उस धन से कई गट्ठर सोने चाँदी के बर्तनों के अबू सईद तथा उसकी बेगमों को भेंट करने के लिये बनवा लिये और उसे यह आशा थी कि उसे सेना में लौटने की पुनः अनुमति प्राप्त हो जायगी; परन्तु मृत्यु ने उसे शीघ्र ही आघेरा। तत्पश्चात् अबू सईद का भी देहान्त हो गया और अजद की भी मृत्यु हो गई। समय बीत गया, सोना गायब हो गया और जो कुछ उसने प्राप्त किया था उससे कोई भी धनवान नहीं हुआ।

इब्ने हकम कहता है, 'देहली के शासक, इस सुल्तान की उदारता असाधारण है और विदेशियों के प्रति उसकी परोपकारिता महान है। ईरान का एक विद्वान् उसके पास आया और उसे दर्शन शास्त्र सम्बन्धी पुस्तकें भेंट की जिनमें इब्ने सीना[2] की लिखित पुस्तक शिफा भी थी। ऐसा हुआ कि जब वह सुल्तान के सम्मुख खड़ा था तो बहुमूल्य जवाहिरात का एक बड़ा बोझ लाया गया और उसे भेंट किया गया। उसने उसमें से १ मुट्ठी भर उसे भेंट करने हेतु निकाल लिया। उनका मूल्य बीस हजार मिस्काल सोने के बराबर था। अन्य वस्तुओं के साथ साथ उसने उसे यह भी प्रदान कर दिया। शरीफ असमरकन्दी ने मुझे बताया है कि बुखारा के लोग उसके पास पके हुये खरबूजे, जो जाड़ों भर उनके पास रहे थे, लाये और उसने (सुल्तान ने) उन्हें बहुत इनाम दिये।" वह आगे कहता है—एक निवासी, जिसे मैं जानता था, उसके पास खरबूजों के दो बोझ ले गया। उनमें से अधिकांश खराब हो गये थे जिसके कारण वह केवल २२ खरबूजे ही भेंट कर सका। सुल्तान ने उसे ३००० मिस्काल सोना दिया।

शेख अबू बक्र बिन (पुत्र) अबुल हसन अल मुल्तानी ने जो इब्नुत्ताज अल हाफिज के नाम से प्रसिद्ध था, वर्णन किया "हम को यह सब मुल्तान में ज्ञात हुआ और यह समाचार

---

१ रशीदुद्दीन फजलुल्लाह बिन इमादुद्दौला अबुल खैर अल हमदानी का जन्म ६४५ हि० (१२४७ ४८ ई०) के लगभग हुआ। वह मंगोल सुल्तान गाजान खाँ का ६९७ हि० (१२९८ ई०) में वजीर नियुक्त हुआ। अबू सईद के राज्य में १३१७ ई० में सर्व प्रथम वह पदच्युत हुआ और तत्पश्चात् ७१८ हि० (१३१८ ई०) में तबरेज में उसकी हत्या करा दी गई। उसने जामे उत् तवारीख नामक प्रसिद्ध इतिहास की रचना की जिसे उसने १३००-२ ई० में प्रारम्भ किया और १३१०-११ ई० में समाप्त किया। यह विश्व का इतिहास है जिसमें मंगोलों का विशेष रूप से वर्णन है।

२ अबू अली सीना प्रसिद्ध दार्शनिक एवं चिकित्सक था। उसका जन्म बुखारा में ९८३ ई० में तथा निधन १०३७ ई० में हमादान में हुआ। वह इब्ने सीना के नाम से भी प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि उसने लगभग १०० पुस्तकों की रचना की। उसकी शिफा नामक पुस्तक को बड़ी ख्याति प्राप्त है।

म लोगों में प्रचलित थे। मैं ने देहली तक यात्रा की और वहाँ ठहरा। इस बात को वहाँ भी चलित पाया कि इस सुल्तान ने यह बात अपने लिये आवश्यक बना ली है कि वह ३००० मस्काल से कम इनाम देने के लिये अपना हाथ नहीं खोलेगा" अल खुजन्दी ने मुझे यह तलाया 'मैं उसके पास गया और उसकी सेवा में प्रविष्ट हो गया। उसने मुझे १००० मिस्काल सोना प्रदान किया। तब उसने मुझ से पूछा कि, 'तुम ठहरना चाहते हो अथवा घर लौट जाना चाहते हो ?' मैं ने कहा "मैं यहीं पर ठहरना चाहता हूं।" तब उसने मुझे सेना में नियुक्त कर दिया।

शेख अबू बक्र बिन (पुत्र) अल खल्लाल अल बज़्ज़ी अस्सूफी ने मुझे यह बताया "इस सुल्तान ने एक दल को जिसमें मैं भी था ३ लाख के मूल्य का सोना देकर मावराउन्नहर इस आशय से भेजा कि १ लाख विद्वानों में वितरित कर दिया जाय, १ लाख निर्धनों को दान के रूप में दे दिया जाय तथा तीसरे लाख की उसके लिये वस्तुयें मोल ले ली जायें।" वर्णन करने वाला कहता है कि सुल्तान ने कहा "मैंने सुना है कि शेख बुरहानुद्दीन अस्सागरजी (समरकन्द के शेख) जो पाण्डित्य तथा तपस्वी जीवन के लिये प्रसिद्ध हैं और धन संचित नहीं करते, उन्हें ४०,००० तन्के दे दिये जायें जिससे वे मुल्तान की यात्रा कर सकें। तत्पश्चात् जब वे हमारे देश में प्रविष्ट होंगे तब हम उन्हें अपार धन प्रदान करेंगे। यदि तुम उनसे भेंट न कर पाओ तो यह धन उनके परिवार को दे देना ताकि वे उनके लौटने पर उन्हें दे दें। वे (परिवार वाले) उन्हें इस बात की सूचना दे दें कि हम उन्हें मुलतान आने के लिये आमन्त्रित करते हैं।" शेख बुरहानुद्दीन कहता है, "जब हम समरकन्द पहुंचे तो पता चला कि वे चीन चले गये, अत. हम न धन उनकी कनीज (दासी) को दे दिया और उसे सूचित कर दिया कि सुल्तान की इच्छा उनसे मिलने की थी और वह उन्हें आमन्त्रित करने का अभिलाषी है।

फकीह अबुल फज़ल उमर बिन (पुत्र) इसहाक अश् शिबली ने मुझे बताया कि यह सुल्तान चाहे यात्रा में हो अथवा अपने महल में, विद्वानों की संगति के बिना नहीं रहता। वह कहता है 'हम लोग उसकी एक विजय के अवसर पर उसके साथ थे। जब हम लोग मार्ग में थे तो अग्रिम रक्षक दल के पास से विजय के समाचार प्राप्त हुये। उस समय हम लोग उसकी सेवा में थे।" उसे अत्यन्त प्रसन्नता हुई और उसने कहा 'यह उन आलिमों के आशीश के ही कारण है।' तब उसने उन लोगों को शाही खजाने में प्रविष्ट होने का आदेश दिया और वे लोग जितना धन ले जा सकते थे ले गये। उनमें से जो लोग निर्बल थे उन्होंने अपने प्रतिनिधि नियुक्त कर दिये जो उनकी ओर से धन उठा कर ले गये। वर्णन करने वाला कहता है 'वे लोग खजाने में प्रविष्ट हुये किन्तु मैं नहीं प्रविष्ट हुआ और न मेरे बहुत से साथी क्योंकि हम (४४) लोग उस टोली से सम्बन्धित न थे। उनमें से प्रत्येक दो थैलियाँ जिनमें से प्रत्येक में १०००० दिरहम थे, ले गया परन्तु उनमें से एक तो तीन थैलियाँ ले गया, दो अपनी बगल में और एक सिर पर। जब सुल्तान ने उनको देखा तो वह आश्चर्य-चकित होकर तीन थैलियाँ ले जाने वाले की लिप्सा पर हँसा। उसने लोगों के विषय में, जो प्रविष्ट न हुये थे, पूछा। उसे बताया गया कि यह लोग उन लोगों से निम्न श्रेणी के थे क्योंकि वे लोग बहुत बड़े बड़े विद्वान थे और यह लोग उनके सहायक थे। तब उसने उनमें से प्रत्येक को १०,००० दिरहम प्रदान करने का आदेश दिया और वह धन हम लोगों में वितरित कर दिया गया। वर्णनकर्त्ता कहता है 'शरीअत का दीपक उसके कारण ज्वलित है और विद्वानों के प्रति उसमें स्नेह पाया जाता है। उनके प्रति सम्मान एवं सत्कार प्रदर्शित होता है। वे लोग (विद्वान) अपने मस्तिष्क तथा आकृति को उन्नति देकर अध्ययन तथा विद्या-दान में सहनशील बन कर एवं समस्त विषयों में उचित वितर्क उपस्थित करके तथा समस्त मामलों में संयम प्रदर्शित

करके उन सब बातो को सुरक्षित रखने का भरसक प्रयत्न रखते हैं।

उसके जेहाद—

जेहाद में सुल्तान शिथिल नही है। थल मार्ग अथवा जल मार्ग द्वारा जेहाद छेड़ने में उसका भाला अथवा उसकी लगाम उससे छूटती नही है। यह उसका मुख्य लक्ष्य है जो उसके आँख तथा कान को सलग्न रखता है। उसने इन प्रदेशो में तथा ईमान के उत्थान एव इस्लाम के प्रचार हेतु बडा धन व्यय किया है जिसके कारण इस्लाम का प्रकाश यहाँ के निवासियो में फैला और सत्य मार्ग (इस्लाम) की विद्युत इन लोगो में चमकी। अग्नि मन्दिर नष्ट कर दिये और बुद्ध की प्रतिमायें तथा मूर्तियाँ खडित कर दी गईं और देश को उन लोगो से मुक्त कर दिया गया जो सुरक्षित प्रदेश में सम्मिलित नही थे अर्थात् उन लोगों से जिन्होने जिम्मी होना स्वीकार नही किया था। उसके (सुल्तान) द्वारा सुदूर पूर्व में इस्लाम का प्रचार हुआ और सूर्योदय के स्थान तक पहुँच गया। अबू नस्र अल आईनी के कथनानुसार वह इस्लाम के अनुयाइयो की पताकायें उन स्थानों पर ले गया जहाँ कोई पताका कभी नही पहुँची थी और जहाँ (कुरान) का कोई सूरा अथवा कोई आयत नही पढी गई थी। तत्पश्चात् उसने मस्जिदें तथा एबादत के स्थानों का निर्माण कराया और अजान को सगीत के स्थान पर प्रचलित कर दिया तथा कुरान के उच्चारण द्वारा अग्नि पूजको के मत्र पाठ को बन्द करा दिया और उसने इस धर्म (इस्लाम) के लोगो को काफिरो के गढो की ओर निर्देशित किया और उसने ईश्वर की कृपा से उन लोगों को इनकी (काफिरो की) सम्पत्ति, भूमि तथा उस देश का, जिसे उन्होने कभी पददलित नही किया[1] था, उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया है। प्रदेश के बाद प्रदेश इस सुल्तान की पताका के अधीन होते गये। भूमि पर उसकी पताकायें चीलो के समान एव समुद्र पर यह पताकायें चलते हुये जहाजो के कौवे मालूम पडती हैं, यहाँ तक कि कोई भी दिन ऐसा व्यतीत नही होता जबकि सहस्रो दास बन्दियो की अगणित सख्या के कारण बडे अल्प मूल्य पर न बेचे जाते हो।

दास—

इन वर्णनकर्त्ताओ में से प्रत्येक ने मुझे बताया है कि देहली में एक कनीज का मूल्य ८ तन्के से अधिक नही था और जो सेवा तथा रखेली स्त्रियाँ बनाने के योग्य हैं उनका मूल्य १५ तन्के है परन्तु देहली के बाहर यह और भी अधिक सस्ती हैं।

अबुल फर्जल उमर बिन (पुत्र) इस्हाक अश् शिबली ने मुझे बताया कि उसने चचल स्वभाव का एक वयस्क तरुण ४ दिरहम में, दास के रूप में क्रय किया और अन्य दासो के मूल्य का अनुमान इसी के अनुसार कर लिया जाय। उसने फिर कहा, "इन दासो के इतने कम दाम लगने के बावजूद भी हमको (ऐसी) हिन्दुस्तानी कनीजें भी मिल जाती हैं जिनका मूल्य २० हजार तन्के या इससे अधिक होता है।"

इब्नुताज अल हाफिज अल मुल्तानी ने मुझसे कहा, "मैने पूछा कि एक कनीज का मूल्य (देश में) इतनी मन्दी होने पर भी इतना कैसे पहुँच जाता है। उनमें से प्रत्येक ने व्यक्तिगत रूप से भेंट के अवसर पर मुझे बताया कि मूल्य में यह अन्तर व्यवहार की कुशलता अथवा उसके शिष्टाचार के उत्कृष्ट होने के कारण हो जाता है और इनमें बहुत सी कनीजो को कुरान कठस्थ होता है। वे लिख सकती हैं, पद्योचारण एव कथायें कह सकती हैं। गान विद्या में पारगत होती हैं। सारगी बजाती, शतरज व चौपड इत्यादि खेलती हैं। कनीजें इस प्रकार की बातो पर गर्व करती हैं उनमें से एक कहती है कि 'मैं अपने स्वामी के हृदय

[1] सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ८५।

को ३ दिन में जीत लूंगी।' दूसरी कहती है 'मैं उसका हृदय एक दिन में मोह लूंगी' और तीसरी कहती है कि '१ घंटे में ही उसके हृदय पर अधिकार जमा लूंगी' और अन्य कहती हैं कि 'मैं पलक मारते ही उसके हृदय पर विजय प्राप्त कर लूंगी।'' उन लोगों का कथन है कि सौन्दर्य की दृष्टि से हिन्दुस्तानी युवती तुर्की अथवा किपचाक की युवतियों से कहीं बढ़ कर होती हैं और उत्तम नस्ल, विभिन्न योग्यताओं से सम्पन्न होने के कारण भी वे प्रसिद्ध होती हैं। उनमें से अधिकांश सुनहरे रंग की होती हैं, कुछ लाल मिश्रित चमकदार श्वेत रंग की होती हैं। यद्यपि वहाँ तुर्की, किपचाकी, रूमी तथा अन्य राष्ट्रों की युवतियाँ बहुत बड़ी संख्या में मिलती हैं फिर भी प्रत्येक व्यक्ति उनकी पूर्ण सुन्दरता, मधुरता तथा अन्य बातों के कारण जिनका वर्णन शब्दों द्वारा नहीं हो सकता, हिन्दुस्तानी रूपवती के अतिरिक्त अन्य किसी को पसन्द नहीं करता।''

सुल्तान के उपहार—

सिराजुद्दीन उमर अश् शिबली ने मुझे बताया कि उन लोगों के अतिरिक्त जिनको सुल्तान वस्त्र प्रदान करता है कोई भी रूस तथा सिकन्दरिया से आयात किया हुआ सूती वस्त्र धारण नहीं करता। उनकी कबा तथा वस्त्र बारीक सूत के बने होते हैं। उसने मुझे बताया कि उससे ऐसे वस्त्र बनाये जाते हैं जो बगदाद के वस्त्रों के समान होते हैं परन्तु बग़दाद तथा नसफी वस्त्र बारीक होने तथा बाह्य सौन्दर्य की दृष्टि से भिन्न होते हैं। उनमें से कुछ तो बारीक होने, शुद्धता तथा उच्च स्तर के होने के कारण रेशम जैसे प्रतीत होते हैं।

शेख मुबारक ने मुझे बताया कि उन लोगों के अतिरिक्त जिन्हें सुल्तान ने ऐसे वस्त्र प्रदान न किये हों तथा सोने से मढ़ी हुई अथवा सोने के काम की जीन न दी हो कोई अन्य इन वस्तुओं का प्रयोग नहीं कर सकता[१]। जब वह किसी को सुनहरे काम की कोई वस्तु प्रदान कर देता है तब उसे अपनी इच्छानुसार उन्हें प्रयोग करने की अनुमति होती है। सामान्य सवारी के लिए जीन या तो रेशमी कपड़े से ढकी होती है या रेशम से उस पर कशीदाकारी होती है।

उसने बताया "सुल्तान अपनी सेवा में रहने वाले लोगों में से तलवार चलाने में दक्ष लोगों सुदक्ष लेखकों तथा विद्वानों में से उनकी श्रेणी के अनुसार हाथियों के अतिरिक्त हर प्रकार की उत्तम वस्तुयें, बहुमूल्य अक्तायें, धन जवाहरात, घोड़े, सुनहरे काम की जीनें, सुनहरी पेटियाँ तथा विभिन्न प्रकार की सामग्री प्रदान करता है। वे (हाथी) केवल उसी के व्यक्तिगत प्रयोग के लिए हैं और उसकी प्रजा में कोई अन्य उसका प्रयोग नहीं कर सकता। हाथियों के चारे के लिये अत्यधिक धन व्यय किया जाता है। सम्भवतया इन हाथियों के लिये एक बड़े प्रान्त के कर से कम धन राशि पर्याप्त नहीं होगी। जब मैंने उससे (सुल्तान से) चारे की मात्रा के विषय में पूछा तो उसने उत्तर दिया, 'जाति तथा आकृति के अनुसार हाथी विभिन्न प्रकार के होते हैं और इसी प्रकार उनका चारा भी विभिन्न होता है। मैं अधिकतम तथा न्यूनतम मात्रा के विषय में जो एक हाथी के लिए प्रतिदिन आवश्यक है बता सकता हूँ। उसके लिये अधिकतम मात्रा ४० रतल चावल ६० रतल जौ तथा २० रतल चर्बी और आधा गट्ठर घास का है। उनके ऊपर रखवालों तथा सेवकों की संख्या बहुत है और उनके पास बड़ा काम होता है। हाथियों का मुख्य अधिकारी राज्य के उच्च अधिकारियों में से एक प्रभाव शाली व्यक्ति होता है। शिबली ने बताया "उसकी अक्ता एराक जैसे एक बड़े प्रान्त के बराबर की होती है।

---

१ सुब्हुल आशा, भाग ५, पृ० ९३।

युद्धस्थल मे सेना का व्यवहार—

इस देश में बादशाह जब युद्ध के लिए जाते हैं तो क्रम इस प्रकार रहता है, सुल्तान तो केन्द्र में खडा होता है और उसके चारो ओर इमाम[1] तथा आलिम लोग खडे होते हैं। धनुर्धारी लोग सामने तथा पीछे होते हैं। दाहिने एवं बायें अङ्ग को दोनो ओर फैला दिये जाता है जिससे सेना के दोनों अङ्ग मिल जाते हैं। उसके सामने लोहे के साज से ढके हुये तथा हौद सहित, जिसमें सैनिक छिपे होते हैं जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है, हाथी होते हैं। हौदे के इन स्तम्भो में वाण छोडने तथा ज्वलनशील पदार्थों से भरी हुई सामग्री फेंकने के लिए छिद्र होते हैं। हाथियो के सामने दास होते हैं जो हल्के कवच धारण किये हुए तलवार तथा अन्य अस्त्र शस्त्र लेकर चलते है।[2] वे हाथियो के लिये मार्ग बनाते जाते है। वे तलवारो से घोडो के पैरो की नसें काट डालते हैं और धनुर्धारी बुर्जों में बैठे हुये उनको पीछे तथा ऊपर से देखते रहते हैं, जबकि घुड सवार लोग (सेना के) दायें व बायें अङ्ग में होते हैं। सेना के बगली अङ्ग शत्रु को घेरते है और हाथियो के चारों ओर तथा उनके पीछे युद्ध करते हैं। भागने वाले आदमी को कोई गुहा अथवा प्रवेश द्वार नही मिल पाता और कठिनाई से ही कोई उनके बीच में से निकल कर भाग सकता है क्योंकि चहुँ ओर स्थित सेनायें उनको घेरे रहती हैं और वाण तथा ज्वलनशील पदार्थ ऊपर से फेंका जाता है और पदाती उनको नीचे से खीचते रहते हैं। अत प्रत्येक स्थान से ही मृत्यु इनके सामने आती है और दुर्भाग्य उनको हर ओर से घेरे रहता है।

सुल्तान की विजय—

इस सुल्तान ने, जो इस समय शासन कर रहा है, वह प्राप्त कर लिया है, जो इस देश के किसी भी बादशाह ने अभी तक प्राप्त नहीं किया था। विजय, श्रेष्ठता, देशों को विजित करना, काफिरों के गढो का विनाश, जादूगरों की गाँठ खोलना और प्रतिमाओं तथा मूर्त्तियों को जिनसे व्यर्थ में हिन्दुस्तानी ठगे जाते थे, नष्ट कर दिया है। उन थोडे से लोगो के अतिरिक्त जो समुद्र पार बिखरे हुये हैं और कोई शक्ति नही रखते, कठिनाई से ही, कोई मुक्त होगा। यह सुल्तान उस समय तक नही थकता जब तक कि वह विजय कार्य पूरा नही कर लेता और जो कुछ शेष रह जाता है उसे तलवार से साफ नहीं कर देता। उसके हाथ हिन्दुस्तान भर में उसकी प्रसिद्धि की सुगन्धि बखेर रहे हैं जो इस देश की अन्य सुगन्धियो से कही अधिक मधुर है और इस देश के बहुमूल्य पत्थरो से कही अधिक मूल्य की वस्तुओ से उसके हाथ उसके काल को सुशोभित करते हैं। वही है जो आज इन क्षेत्रो के सिरो को मिलाता है और मरुभूमि तथा समुद्रो के कटि सूत्रो को पकडे रहता है। आजकल जब कभी हिन्दुस्तान के सुल्तान का उल्लेख होता है तो वही है जिससे उस (उल्लेख) का अर्थ होता है और यह शुभ नाम[3] केवल उसी के लिये प्रयुक्त होता है।

शिबली ने कहा "प्रत्येक मुसलमान का यह कर्त्तव्य है कि वह इस सुल्तान के लिये धर्म युद्ध में (विजय की कामना हेतु) हृदय से प्रार्थना किया करे। उसकी परोपकारिता तथा उसका प्राकृतिक स्वभाव ऐसा ही है।"

दरबारे आम—

मुहम्मद बिन खुजन्दी ने मुझे बताया कि इस सुल्तान ने प्रति सप्ताह एक दिन प्रजा

१ धार्मिक नेता, नमाज पढाते समय जो सबके आगे खडे होकर नमाज पढाता है।
२ सुबहुल आशा, भाग ५ पृ० ९७।
३ मुहम्मद।

के लिये निर्धारित कर दिया है जब वह आम दरबार करता है। यह मगलवार का दिन है। वह एक विशाल प्रागण में, जिसमें एक बडा राजसी शामियाना उसके लिये लगाया जाता है, बैठता है। वह एक उच्च सिंहासन पर प्रागण के मध्य में आसीन होता है। इस पर सोने के पत्तर जडे होते हैं और जवाहरात से सुशोभित होता है। राज्य के अधिकारी उसके चारों ओर दायें तथा बायें हाथ पर खडे होते हैं। उसके पीछे सिलाहदार, जामादर तथा वे लोग होते हैं जो सुल्तान के व्यक्तिगत अधिकारियो से सम्बन्धित कोई पद रखते हैं और अन्य पदाधिकारी अपने-अपने पद के अनुसार खडे होते हैं। खानो, सद्रे जहां तथा दबीरो के अतिरिक्त उसके सामने कोई भी नही बैठता। हाजिब लोग खडे ही रहते हैं। एक नकीब चिल्लाता है, "जिस किसी को कोई शिकायत हो आगे बढे।" तत्पश्चात् प्रत्येक व्यक्ति जिसे कोई शिकायत करनी होती है अथवा सुल्तान से कुछ निवेदन करना होता है आगे आता है। जब वह आगे आता है या सुल्तान के सम्मुख खडा होता है तब उसे उस समय तक रोका या झकझोरा नही जाता है जब तक वह अपनी शिकायत समाप्त नही कर लेता और सुल्तान उसके विषय में अपने आदेश नही दे देता है।[1]

अन्य दरबार, तथा सुल्तान तक पहुंचने के नियम—

अन्य दिनो में वह अपना दरबार प्रात.काल तथा सायकाल करता है और अपने समस्त खानो, मलिकों, तथा अमीरो के साथ महल की ओर सवार होकर जाता है। उसके यहां यह प्रथा है कि कोई भी उसके सम्मुख किसी भी शस्त्र यहां तक कि छोटा सा चाकू भी लेकर नही जा सकता। जो कोई भी उसके सम्मुख आता है सर्व प्रथम उसकी तलाशी प्रविष्ट होने तथा सुल्तान के बैठने के स्थान तक पहुचने से पूर्व ही ली जाती है। प्रत्येक को एक के बाद एक करके सात द्वार पार करने पडते हैं। बाहर वाले द्वार पर तुरही लिये हुए एक आदमी रहता है। जब कोई खान, अथवा मलिक या कोई बडा अमीर आता है तो वह उस तुरही को, सुल्तान को इस बात की सूचना देने हेतु कि कोई बडा आदमी आ रहा है, बजाता है ताकि वह सदैव सतर्क तथा तैयार रहे। जिन लोगों को वह बुलवाता है, वे चाहे जो भी हों, उन्हे प्रथम बाहरी द्वार पर उतर जाना पडता है और (वहां से) सुल्तान के सामने उपस्थित होने के लिए सातवें द्वार में प्रविष्ट होने तक पैदल चलना पडता है। फिर कुछ ऐसे भी व्यक्ति हैं जिन को छठे द्वार तक घोडे पर सवार होकर जाने का सम्मान प्राप्त होता है। तुरही उस समय तक निरन्तर बजती रहती है जब तक आगन्तुक सातवे द्वार के निकट नही पहुँच जाता। इस द्वार पर प्रवेश पाये हुए सब लोग बैठ जाते हैं। जब सब लोग एकत्र हो जाते हैं तो समस्त आगन्तुको को प्रविष्ट होने की अनुमति दी जाती है। जब वे प्रविष्ट हो जाते हैं तो जो बैठने के अधिकारी होते है वे उसके चारों ओर स्थान ग्रहण कर लेते हैं और अन्य लोग खडे रहते हैं। काजी, वजीर तथा दबीर[1] ऐसे स्थान पर बैठते हैं जहां सुल्तान की दृष्टि उन पर नही पडती।

मामलों का निर्णय—

स्थान बिछाये जाते हैं और हाजिब लोग प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करते हैं। प्रत्येक श्रेणी के लोगों से सम्बन्धित एक हाजिब होता है। वह उनके मामले तथा उनकी प्रार्थनायें (सुल्तान) के हाथ में प्रस्तुत करता है। समस्त हाजिब अपने-अपने मामले हाजिबे खास के पास ले जाते हैं। यह मुख्य हाजिब होता है और उन सब से श्रेष्ठ होता है और वह उन

१ सुबहुल आशा, भाग ५; पृ० ६५।

१ कातिबुस्सिर (निजी मन्त्रि)

मामलो को सुल्तान के सम्मुख प्रस्तुत करता है। जब सुल्तान चला जाता है तब हाजिये खास दबीर के साथ बैठता है और उसे वह सब प्रार्थना पत्र जिनके विषय में सुल्तान का निर्णय हो चुकता है, देता है और वह (दबीर) उनको कार्यान्वित कराता है।

सुल्तान की गोष्ठी—

तत्पश्चात् जब सुल्तान दरबार से चला जाता है तो वह एक निजी गोष्ठी में बैठता है। वह आलिमो को आमन्त्रित करता है और वहाँ वे लोग उपस्थित होते हैं, जो प्रथानुसार उपस्थित रहा करते हैं। तत्पश्चात् वह उनके साथ बैठता है, मित्रता-पूर्वक व्यवहार करता है, भोजन तथा वार्तालाप करता[१] है और ये लोग उसके विश्वासपात्र होते हैं। तत्पश्चात् वह उन्हें जाने की अनुमति दे देता है और नदीमो तथा गवय्या के साथ एकात मे बैठता है। कभी वे कहानियाँ सुनाते हैं, कभी उसके लिये गायन करत हैं, परन्तु प्रत्येक दशा मे आम दरबार में तथा एकान्त वास में वह अत्यधिक शुद्ध तथा शिष्ट रहता है। क्रियाशीलता में एव विश्राम में वह अपने आप को नियन्त्रण मे रखता है। गुप्त स्थिति में तथा सब लोगो के सामन वह ईश्वर का भय करता रहता है। वह (शरा द्वारा) वर्जित कार्य नही करता और न उसकी ओर प्रवृत्त होता है।

मदिरापान का निषेध : पान—

शिबली ने मुझे बताया कि न तो खुले आम और न गुप्त रूप से मदिरा देहली में मिलती है क्योकि यह बादशाह इसके बहुत ही विरुद्ध है और उन लोगो से जो इसके आदी होते हैं घृणा करता है। वर्णनकर्त्ता इसके आगे कहता है हिन्दुस्तानी लोग मदिरा तथा अन्य मादक पेय पदार्थों की ओर प्रवृत्त नही हैं और पान खाकर ही सन्तुष्ट रहते हैं और इसकी अनुमति है। नि सन्देह पान स्वभावानुकूल होता है इसमें कुछ ऐसे गुण होते हैं जो मदिरा में नही पाये जाते। यह श्वाँस को सुगन्धित कर देता है, पाचन शक्ति को बढाता है, आत्मा को अत्यन्त प्रफुल्लित करता है और बुद्धि को शक्ति प्रदान करने तथा स्मरण शक्ति को शुद्ध करने के साथ साथ असाधारण आनन्द प्रदान करता है और स्वाद में हर्षजनक है। उसके अवयवो में पान का पत्ता, सुपारी तथा चूना है जो विशेष रूप से तैयार किया जाता है। उसने बताया, "इस देश के लोग इससे बढ कर काई सत्कार नही समझते। जब कोई आदमी किसी का अतिथि होता है और वह उसका (अतिथि का) हर प्रकार का भोजन, भुने हुये माँस, मिठाई, पेय पदार्थों, इत्रा तथा सुगन्धियो से सत्कार करता है किन्तु उसके साथ पान नही देता तब उसके (अतिथि के) प्रति यह सम्मान नही समझा जायेगा और अपने *अतिथि का उसने सत्कार किया है यह कोई नही मानेगा। इसी प्रकार से यदि कोई* उच्च पदस्थ आदमी किसी अन्य के प्रति सम्मान प्रदर्शित करना चाहता है तो वह उसे पान प्रस्तुत करता है। मै कहता हूँ, यह चगेज खाँ की सन्तानो के देशो की मुख्ये अलियाक के समान है। अलियाक मदिरा अथवा ताडी का एक एक गिलास होता है जिसे महान व्यक्ति के लिये जिसका वह आदर करना चाहता है हाथ में पकडता है या उस व्यक्ति के लिये जिसे वह भक्ति भाव प्रदर्शित करना चाहता है, और इनके विचार मे भक्ति भाव प्रदर्शन का यह सर्वोत्कृष्ट साधन है। ईश्वर ने चाहा तो इसका उल्लेख उसके स्थान पर किया जायगा।

जासूसों तथा डाक का प्रबंध—

आलिम (विद्वान) सिराजुद्दीन अबुस् सफा उमर अश शिबली ने मुझे बताया कि यह सुल्तान अपने प्रान्तो के तथा देश की घटनाओ, अपनी सेना एव प्रजा से सम्बन्धी मामलो से

१ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ९६।

पूर्ण रूप से परिचित रहता है। उसके पास ऐसे व्यक्ति होते हैं जो उसे सूचना देते रहते हैं। ये कई श्रेणियों में विभाजित होते हैं। कुछ तो इनमें सेना से तथा कुछ जन साधारण से मेल जोल रखते हैं। जब इनमें से किसी को कोई ऐसी बात ज्ञात होती है जिसकी सूचना सुल्तान को देनी आवश्यक हो तो वह शीघ्र ही उस अपने से उच्च अधिकारी को सूचित कर देता है तब वह अपने से उच्च अधिकारी तक सूचना पहुँचाता है। इसी क्रम से सर्वोच्च अधिकारी उसे सुल्तान तक पहुँचा देता है।

दूरस्थ स्थानो से सूचना प्राप्त करने के लिये सुल्तान तथा उसके मुख्य प्रान्तो के बीच में एक दूसरे के निकट ऐसे स्थान हैं जो मिस्र तथा शाम के थानों से मिलते जुलते हैं, परन्तु दूरी के विचार से ये स्थान एक दूसरे के बहुत निकट हैं। एक स्थान से दूसरे स्थान के बीच मे ४ तीरो की पहुँच की दूरी के बराबर फासला है या इससे कम होगा। प्रत्येक स्थान पर दस हरकारे, जो बडी तीव्र गति से दौडते हैं, इस स्थान मे अगले स्थान तक पत्र ले जाते हैं। जब इनमें से एक को पत्र प्राप्त हो जाता है तो वह एक स्थान से दूसरे स्थान तक तीव्र से तीव्र गति से दौडता है। जब वह दूसरे स्थान पर पहुँच जाता है तो दूसरा अगले स्थान तक दौडता है जैसे प्रथम दौडने वाला और प्रथम हरकारा सुविधापूर्वक अपने स्थान को लौट आता है। इस प्रकार एक दूरस्थ स्थान से दूसरे दूरस्थ स्थान तक पत्र अल्प समय में उत्तम नस्ल के घोडो की डाक से भी शीघ्र पहुँच जाता है।

वह कहता है प्रत्येक मुख्य स्थान मे मस्जिदें हैं जहाँ नमाज़ पढी जा सकती है और यात्री विश्राम कर सकते हैं। इनमें पीने के जल हौज तथा मनुष्यो एव पशुओ के लिये भोजन सामग्री खरीदने के बाजार हैं। इस प्रकार किसी को यात्रा करते समय अथवा पडाव पर किसी वस्तु अथवा जल ले जाने की बडी कठिनाई से आवश्यकता होती है।

वह पुन कहता है सुल्तान की कृपा से उसके देश की दो राजधानियो देहली तथा देवगिरि के मध्य के उन स्थानो पर जो सूचना प्रेषित करने के लिये निश्चित हैं, नक्कारे रख दिये गये हैं। जब कभी वह एक नगर में होता है और दूसरे नगर के द्वार बन्द किये जाते अथवा खोले जाते हैं तो नक्कारे बजाये जाते हैं। जब पास वाला उनको सुनता है तो वह भी नक्कारा बजाता है। इसी क्रम से उस नगर के द्वार के जहाँ से वह अनुपस्थित है, खुलने तथा बन्द होने की सूचना, जहाँ वह उपस्थित होता है, प्रतिदिन नक्कारे की आवाज मे पहुँचा दी जाती है।[1]

सुल्तान तक पहुँच—

सुल्तान का बहुत आदर सत्कार होता है जिसके कारण लोग हृदय मे उसके प्रति विनीत हैं, यद्यपि वह उनसे बहुत घनिष्ठ है। उसकी बात चीत तथा वार्त्तालाप में मधुरता है। जो कोई भी उसके पास पहुँचना चाहता है वह पहुँच सकता है। न तो हाजिबो का आतक और न उनके प्रतिबन्ध उसे रोक सकते हैं। ईश्वर ने उसके काल में धन की वृद्धि प्रदान की है और सामारिक अधिकार क्षेत्रो और समृद्धि को बढाया है, क्योकि हिन्दुस्तान सदैव ही जीवन की समृद्धि के लिये प्रसिद्ध तथा उदारता एव दानशीलता के लिये प्रख्यात रहा है।

मूल्यों का सस्ता होना——

खुजन्दी ने मुझे निम्नलिखित बात बताई "देहली के किसी जिले में मैंने तथा मेरे तीन मित्रो ने एक जीतल मे गो माम, रोटी तथा मक्खन (घी) का तृप्त होकर भोजन किया, और यह सब चार फलूस में ही[2]।

१ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ६८।
२ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ८६।

सिक्के, नाप तथा तोल—

मैं अब सिक्को, नाप तथा तोल के विषय में बताऊँगा, तत्पश्चात् मूल्यों के विषयो में क्योकि मूल्य इन्ही पर आधारित हैं और इन्ही के अनुसार सर्व प्रसिद्ध हैं। शेख मुबारक ने मुझे बताया कि लाल तन्का तीन मिस्काल के बराबर होता है और सफेद तन्का अर्थात् चाँदी के तन्के में ८ हश्तगानी दिरहम होते हैं। यह हश्तगानी दिरहम चाँदी के दिरहम के वजन के बराबर है जोकि मिस्र तथा शाम में प्रचलित है। इसका मूल्य पूर्णतया उसके ही समान होता है और दोनो में कठिनाई से ही कोई अन्तर है। इस हश्तगानी दिरहम में चार सुल्तानी दिरहम होते हैं और उसे 'दोगानी' कहते हैं। यह सुल्तानी दिरहम शश्तगानी दिरहम के एक तिहाई के बराबर होता है और यह एक प्रकार का सिक्का है जो हिन्दुस्तान में चलता है। इसका मूल्य हश्तगानी दिरहम के तीन चौथाई के बराबर होता है। इस सुल्तानी दिरहम का आधा 'यगानी' कहलाता है और एक जीतल होता है। एक दूसरा दिरहम 'द्वाजदेहगानी' कहलाता है जिसका मूल्य हश्तगानी के ड्योढ़े के बराबर होता है। एक अन्य दिरहम 'शान्जदेहगानी' कहलाता है, जिसका मूल्य दो दिरहम के बराबर होता है। इस समय हिन्दुस्तान में छः प्रकार के दिरहम हैं, शान्जदेहगानी, द्वाजदेहगानी, हश्तगानी, शश्तगानी, सुल्तानी तथा यगानी। इनमें सबसे छोटा सुल्तानी दिरहम होता है। यह तीनो दिरहम प्रचलित हैं और इनमें (हिन्दुस्तानियो में) व्यापारिक लेन देन इन्ही से होता है परन्तु अधिकाश (कारोबार) सुल्तानी दिरहम में होता है जोकि मिस्र तथा शाम के दिरहम के चौथाई के बराबर होता है। इस सुल्तानी दिरहम में आठ फुलूस अथवा दो जीतल होते हैं। प्रत्येक जीतल ४ फुलूस के बराबर होता है। इस प्रकार हश्तगानी दिरहम में जो मिस्र तथा शाम में प्रचलित चाँदी के दिरहम के चौथाई के बराबर होता है ३२ फुलूस होते हैं।[1]

इन लोगों का रतल सेर कहलाता है जिसका वजन ७० मिस्काल होता है जो १०२$\frac{२}{३}$ मिस्री दिरहम के बराबर होता है। प्रत्येक मन ४० सेर का होता है। यह लोग नाप का प्रयोग नही जानते हैं।

मूल्य——

रहा मूल्यो के विषय में तो औसत रूप से एक मन गेहूं डेढ हश्तगानी दिरहम में बिकता है। एक मन जौ एक दिरहम में, एक मन चावल १$\frac{३}{४}$ दिरहम (हश्तगानी) में

१ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ८४।

प्रथम—मिस्र के सिक्के दिरहम के तोल के बराबर हश्तगानी दिरहम होता है। इसका प्रचलित मूल्य वही है जो मिस्र के दिरहम का। दोनों में कठिनाई से ही कोई अन्तर है। हश्तगानी में ८ जीतल (चाँदी के तन्के का $\frac{१}{६४}$) होते हैं और प्रत्येक जीतल में चार फुलूस (छोटे ताँबे के सिक्के) होते हैं। इस प्रकार हश्तगानी में ३२ ताँबे के सिक्के होते हैं।

द्वितीय—सुल्तानी दिरहम दोगानी कहलाता है। यह मिस्री दिरहम के चौथाई के बराबर होता है। प्रत्येक सुल्तानी दिरहम में २ जीतल होते हैं; सुल्तानी दिरहम का आधा एक जीतल के बराबर होता है।

तृतीय—शश्तगानी दिरहम, हश्तगानी का तीन चौथाई होता है। इसका मूल्य ३ सुल्तानी दिरहम के बराबर होता है।

चतुर्थ—द्वाजदेहगानी दिरहम। इसका प्रचलित मूल्य हश्तगानी दिरहम के तीन चौथाई के बराबर होता है। इस प्रकार यह शश्तगानी के समान होता है। ८ हश्तगानी दिरहम तन्के के बराबर होते हैं जहाँ तक सोने का संबन्ध है, वह यहाँ मिस्कालों में तोला जाता है। प्रत्येक तीन मिस्काल तन्का कहलाते हैं। सोने का तन्का "लाल तन्का" और चाँदी का तन्का "सफेद तन्का" कहलाता है।

बिकता है, परन्तु चावलों की कुछ प्रसिद्ध किस्में इससे महगी हैं। २ मन मटर का मूल्य एक हश्तगानी दिरहम है। गोमांस तथा बकरे के मांस का एक ही मूल्य है और एक सुल्तानी दिरहम से, जो हश्तगानी दिरहम का चौथाई होता है, ६ अस्तार (सेर) मिलता है। भेड का मांस एक सुल्तानी दिरहम में ४ सेर, एक हंस (बत्तख) २ हश्तगानी दिरहम में तथा ४ पक्षी एक हश्तगानी दिरहम में[1] ५ सेर शक्कर एक हश्तगानी दिरहम में, ४ सेर कन्द (मिश्री) एक हश्तगानी दिरहम में, अच्छी तथा मोटी भेड १ तन्के की जो ८ हश्तगानी दिरहम के बराबर होता है। एक उत्तम गाय २ तन्के की आती है और कभी कभी इससे भी सस्ती। भैंस भी इसी मूल्य पर बिकती है।

अधिकांशतः हिन्दुस्तानी गौ मांस तथा बकरे का मांस खाते हैं। मैंने शेख मुबारक से पूछा, "क्या यह भेडों के कम प्राप्त होने के कारण है?" इस पर उसने उत्तर दिया "नहीं केवल आदत के कारण ही ऐसा है क्योंकि हिन्दुस्तान के प्रत्येक ग्राम में इनकी गणना सैकड़ों तथा हजारों की सख्या के अतिरिक्त नहीं की जा सकती।" चार उत्तम मुर्गियाँ १ मिस्री दिरहम में बिकती हैं। गोरय्ये तथा अन्य प्रकार के पक्षी और भी सस्ते बिकते हैं। शिकार खेलने के लिये पशु तथा पक्षी अगणित हैं[2]। यहां हाथी तथा गैंडे भी होते हैं। परन्तु जज के हाथी सब से उत्तम होते हैं।

पोशाक—

रहा इनकी पोशाक की विशेषता के विषय में तो इनके वस्त्र श्वेत सामग्री तथा जूख[3] के बनते हैं। ऊनी कपड़ा जब बाहर से मगाया जाता है तो बहुत ऊँचे मूल्य पर बिकता है। केवल आलिम तथा फकीर ही ऊनी वस्त्र धारण करते हैं। सुल्तान, खान, मलिक तथा सैनिक, श्रेणी के अन्य लोग तातारी कबाये[4], तकलावात[5], ख्वारज्म की इस्लामी कबायें जो शरीर के मध्य में बाँधी जाती हैं, पहनते हैं। पगडी ५ अथवा ६ हाथ से अधिक बडी नहीं होती और अच्छे मलमल की बनी होती है।

शरीफ नासिरुद्दीन मुहम्मद अल हुसैन अल करीमी[6] ने, जो जमुर्रदी के नाम से प्रसिद्ध है और जिसने हिन्दुस्तान की दो बार यात्रा की है और सुल्तान कुतुबुद्दीन के साथ देहली में ठहर चुका है, मुझे बताया कि अधिकांशत इन लोगों के वस्त्र श्वेत होते हैं और उनकी तातारी कबाओं पर सोने की कसीदाकारी होती है। इनमें से कुछ किमखाब जो बाहुओं पर कढ़ी होती है, पहिनते हैं। अन्य लोग कधों के बीच के भाग को मुगलों की भाँति कढवाते हैं। उनके सिर का वस्त्र आकार में वर्गाकार होता है जो जवाहरात से सुसज्जित होता है और अधिकांशत उसमें मणी तथा हीरे जडे होते है। वे लोग अपने बालों को लटकते हुये गुच्छों में गूथते हैं जिस प्रकार से मिस्र तथा शाम के लोग किया करते थे और ये लोग रेशमी फीते उन गुच्छों में डालते हैं। यह लोग सोने तथा चाँदी की पेटियाँ अपनी कमर में बाँधते हैं और जूते तथा एडियाँ पहिनते हैं। यात्रा के अतिरिक्त यह लोग अपनी तलवार कमर में नहीं बाँधते। जब घर पर होते हैं तो तलवार नहीं बाँधते।

१ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ८५।
२ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ८६।
३ एक प्रकार का कपडा।
४ तातारी कबायें; एक प्रकार का लबादा।
५ एक प्रकार का वस्त्र जो हिन्दुस्तान के अमीर लोग पहनते हैं।
६ सुबहुल आशा, अदमी पृ० ६३।

वजीरों तथा कातिबों (सचिवों) की पोशाक सैनिकों की भाँति होती है, परन्तु ये लोग पेटियाँ नहीं बाँधते हैं। अन्य लोग सूफियों की भाँति अपने साफे के सिरे को अपने सामने लटका रहने देते हैं। काजी तथा आलिम लोग फरजिया पहिनते हैं जो जदियत तथा अरबी लोगों से मिलती जुलती है।[1]

विद्वानों को आश्रय–

अश् शिबली ने मुझे बताया कि देहली वाले बुद्धिमान, प्रतिभा-सम्पन्न तथा फारसी एवं हिन्दी में अच्छे वाक्पटु होते हैं। उनमें से अधिकांश फारसी तथा हिन्दी में काव्य रचना करते हैं। कुछ लोग अरबी में कविता करते हैं और अच्छी लिखते हैं। सुल्तान की प्रशंसा में कसीदों की रचना करने वालों की संख्या बड़ी अधिक है। उनके नाम 'दीवान' में नहीं लिखे हुए हैं। वह उनको स्वीकार करता है और उन्हें पुरस्कार देता है। शिबली ने मुझे बताया, सुल्तान का एक दबीर किसी विजय या किसी महान घटना के घटित होने पर कसीदों की रचना किया करता है। सुल्तान की आदत है कि वह कसीदे के छन्दों को गिनवा कर प्रत्येक छन्द के लिए १०,००० तन्के प्रदान करता है। प्रायः जब सुल्तान किसी व्यक्ति के कृति का अनुमोदन कर देता है या उसे यह ज्ञात हो जाता है कि उसे कोई हानि पहुँचाई गई है तो वह किसी निश्चित धन राशि को क्षति पूर्ति के रूप में देने का आदेश नहीं देता अपितु उस व्यक्ति को खजाने में प्रविष्ट हो कर अपनी इच्छानुसार (धन) ले जाने का आदेश दे देता है। जब वर्णन करने वाले ने व्ययाधिक्य इनामों एवं उपहारों की सीमा के वर्णन पर मुझे आश्चर्य-चकित देखा तो उसने कहा "इस दान को प्रदान करने में इस अत्यधिक उदारता के बावजूद भी वह अपने देश की आय का केवल आधा ही व्यय करता है।

हमारे शेख ने जो इस काल में एक अद्वितीय पुरुष है (और जिनका नाम) शम्सुद्दीन अल इस्फहानी है निम्नलिखित बात मुझे बताई कुतुबुद्दीन अश्शीराजी ने यह बात सिद्ध कर दी है कि कीमिया एक यथार्थ विज्ञान है। उसने कहा: एक बार मैं ने उससे कीमिया की असत्यता पर विवाद किया जिस पर उसने मुझ से कहा, 'तुम जानते हो कि कितना सोना भवनों तथा निर्मित वस्तुओं पर व्यर्थ जाता है जब कि खानें, जितना नष्ट हो जाता है उसके बराबर पैदा नहीं कर सकतीं। हिन्दुस्तान के विषय में मैं ने हिसाब लगाया है कि ३ हज़ार वर्ष से इन लोगों ने विदेशों को सोने का निर्यात नहीं किया है और जो कुछ यहाँ आ गया है वह बाहर नहीं जा सका है। अन्य क्षेत्रों में व्यापारी शुद्ध सोना हिन्दुस्तान में लाते हैं और उसके बदले में जड़ी बूटियाँ तथा अरबी गोंद ले जाते हैं। यदि सोना एक कृत्रिम उत्पादित वस्तु न होता तो वह पूर्णरूप से मिट जाता। 'हमारे शेख शिहाबुद्दीन ने कहा, उसके वाद विवाद के अनुसार यह तर्क सत्य है कि सोना हिन्दुस्तान में लाया जाता है और यहाँ से बाहर नहीं भेजा जाता किन्तु कीमिया की यथार्थता के विषय में उसका तर्क असत्य है और प्रमाणित नहीं।" मैं ने कहा: मैं ने सुना है कि इस सुल्तान के पूर्व एक सुल्तान ने एक महान विजय प्राप्त की और वहाँ से १३,००० बैलों पर सोना लदवा कर लाया। मैं ने कहा यह प्रसिद्ध है कि इस देश के लोग धन संचय करते हैं यहाँ तक कि जब उनमें से एक से पूछा गया कि उसके पास कितना धन है तो उसने उत्तर दिया, 'मैं नहीं जानता परन्तु मैं दूसरी या तीसरी संतान हूँ जो इस छिद्र अथवा इस कुएँ में अपने दादा के धन को एकत्र कर रहा हूँ। मैं नहीं जानता हूँ कि यह कितना है।' हिन्दुस्तानी लोग अपने धन को संचित करने के लिए कुएँ खोदते हैं। इनमें से कुछ तो घरों में छेद बना लेते हैं और उसे हौज के रूप में बना कर

१ सुबहुल आशा, भाग ५, पृ० ६१।

ऊपर से बन्द कर देते हैं और उसमें केवल एक छेद छोड देते हैं। इस छेद में वे सोना एकत्र करने के लिए धन डाल देते हैं। यह लोग नक्काशी किया हुआ अथवा टूटा हुआ या ईंट के टुकडो के रूप में धोखे के भय से सोना नही लेते। ये लोग केवल सोने के सिक्के ही लेते हैं। इनके समुद्रो के कुछ द्वीपो में कुछ ऐसे लोग हैं जो अपने घर की छत पर कुछ चिह्न बना देते हैं। जब एक घडा सोने से भर जाता है तो वह चिह्न बना देते हैं। इस प्रकार लोगों के दस अथवा इस से अधिक चिह्न होते है।

सूफी शेख बुरहानुद्दीन अबूबक्र बिन (पुत्र) अल ख़ल्लाह मुहम्मद अल बज्जी ने मुझे निम्नलिखित बात बताई, इस सुल्तान ने अपनी सेना एक प्रान्त[१] में भेजी और यह (प्रान्त) देवगीर (देवगिरि) के निकट में उसकी सीमा के छोर पर है। यहाँ के लोग काफिर थे और यहाँ का प्रत्येक राजा 'राय' कहलाता था। जब सुल्तान के सैनिको ने उसके विरुद्ध अपने पाँव युद्धस्थल में जमाये, तो उसने एक दूत भेज कर यह कहलाया कि "सुल्तान से कहो कि वह हम से युद्ध न करे और धन के रूप में उसे जो कुछ भी चाहिये वह उसे दे दिया जायेगा। वह केवल उतने बोझा ढोने वाले जानवर भेज दे जितना धन वह ले जाना चाहता है।' सेनापति ने जो कुछ राय ने कहा था उसकी सूचना सुल्तान को दे दी। उसका उत्तर आया कि वह उनसे युद्ध न करे और राय को शरण दे दे। जब वह सुल्तान के समक्ष उपस्थित हुआ तो उसने (सुल्तान ने) उसका बडा सम्मान किया और उस से कहा "मैंने ऐसी बात कभी नही सुनी जो तुमने कही है। तुम्हारे पास कितना धन है कि तुमने मुझे कहला भेजा कि जितना धन मैं ले जाना चाहूँ उसी के अनुसार बोझा ढोने वाले जानवर भेज दूँ।" राय ने उत्तर दिया "मुझ से पूर्व सात राय इस देश में हो चुके हैं। उनमें से प्रत्येक ने धन की ७०,००० बाई संचित की और वह सब मेरे पास अब भी है।" उसने बताया, बाई एक बहुत विस्तृत हौज़ होता है जिसमें उतरने के लिए चारो ओर सीढियाँ होती हैं। सुल्तान उसकी बात सुन कर आश्चर्यचकित हो गया और उसने (उनको सुरक्षित रखने के लिए) बाइयो पर अपने नाम की मुहर लगा देने का आदेश दे दिया। अत वे सुल्तान के नाम से मुहरबन्द कर दी गईं। तब उसने राय को आदेश दिया कि वह अपने प्रदेश में अपना प्रतिनिधि शासक नियुक्त कर दे और स्वय देहली में निवास करता रहे तथा मुसलमान हो जाय, किन्तु उसने इस्लाम स्वीकार न किया अत उसने (सुल्तान ने) उसे धर्म के विषय में पूर्ण स्वतन्त्रता दे दी और वह (राय) उसके दरबार में निवास करने लगा। उसने अपने देश में अपना एक प्रतिनिधि शासक नियुक्त कर दिया। सुल्तान ने उसे ऐसे सेवक दे दिये जो उस जैसे राय के लिए उचित थे और उसके देश को बहुत सा धन दान के रूप में उसकी प्रजा में वितरण हेतु यह कहला कर भेजा कि वे लोग भी उसकी प्रजा में सम्मिलित हो गये हैं। सुल्तान ने बाइयों को किसी प्रकार से हाथ नही लगाया। उन पर केवल अपनी मुहर लगा कर उनको मुहर सहित उसी दशा में रहने दिया। मैंने यह वर्णन अल बज्जी के वर्णन के आधार पर दिया है और वह अपनी सत्यता के लिए प्रसिद्ध है। इसका उत्तरदायित्व उसी पर है। जो कोई इसके विषय में अधिक सूचना प्राप्त करना चाहता है वह सूचना प्राप्त करे।

अली बिन (पुत्र) मन्सूर अल उर्दली ने जो बहरैन का एक अमीर था मुझे निम्नलिखित बात बताई हमारे यात्री हिन्दुस्तान से निकट सम्पर्क रखते हैं और हम वहाँ की घटनाओ से पूर्ण रूप से परिचित रहते है और हम लोगों को सूचना मिली है कि इस सुल्तान मुहम्मद तुगलुक शाह ने बडी बडी विजयें प्राप्त की हैं। उसने एक ऐसा नगर विजय किया

१ इस प्रान्त का नाम न पढा जा सका। सम्भवतया तिलंगाना होगा।

था जिसमें एक छोटी सी झील थी जिसके मध्य मे उन लोगों का एक प्रख्यात मंदिर था। वे लोग अपनी भेंट वहाँ लेकर जाते थे और जो कोई भी भट वहाँ ले जाता वह झील में फेंक दी जाती थी। जब उसने उसे विजय किया तो उसे इस बात की सूचना दी गई। उसने उस झील में से एक नदी (नहर) निकलवादी और उसका जल निकलवा दिया और वह पूर्णतया सूख गयी। तत्पश्चात् वह, उसमें जो कुछ सोना था, २०० हाथियो तथा हजारो बैलो पर लदवा कर ले गया। वर्णन करने वाले ने बताया कि सुल्तान दानशील तथा उत्कृष्ट स्वभाव का व्यक्ति है जो परदेशियो का उपकार करता है। हममें से दो व्यक्ति उसके पास यात्रा करते हुये पहुच गये और उससे परिचित कराये जाने का उनको सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसने उन पर कृपा-दृष्टि की और खिलअतो द्वारा सम्मानित किया और उन्हे अपार धन दिया, यद्यपि वे साधारण स्थिति के अरब लोग थे। तब उसने (सुल्तान ने) उनके सामने ठहरने अथवा वापस लौटने का प्रस्ताव रखा। उनमें से एक ने तो ठहरना स्वीकार किया और सुल्तान ने उसे एक बहुत बडा प्रान्त, पर्याप्त उपहार तथा मवेशियो, भेडों एव गायो में से बहुत सी वस्तुयें दी। इस समय भी वह धनी एव परिवर्तित व्यक्ति के रूप में वहाँ रह रहा है। दूसरे न घर जान की अनुमति चाही और सुल्तान ने उसे ३००० सोने के तन्के प्रदान किये, अत वह भी अपने घर उपहारों से लदा हुआ प्रसन्नतापूर्वक लौट आया।

भाग स

बाद के कुछ मुख्य इतिहासकार

यह्या बिन अहमद

(क) तारीखे मुबारक शाही

मुहम्मद बिहामद खानी

(ख) तारीखे मुहम्मदी

निज़ामुद्दीन अहमद

(ग) तबकाते अकबरी

अब्दुल कादिर बदायूनी

(घ) मुन्तखबुत्तवारीख

अली बिन अज़ीज़ुल्लाह् तबातबा

(च) बुरहाने मआसिर

मीर मुहम्मद मासूम नामी

(छ) तारीखे सिन्ध

फ़िरिश्ता

(ज) तारीखे फ़िरिश्ता

तारीखे मुबारक शाही

[लेखक—यह्या बिन अहमद बिन अब्दुल्लाह सिहरिन्दी]

(प्रकाशन—कलकत्ता १६३१ ई०)

सुल्तान गयासुद्दीन तुग़लुक शाह—

(६२) सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह दयालु तथा न्यायकारी बादशाह था। उसमें सुव्यवस्थित रखने, निर्माण कराने, ग्राबाद करने, बुद्धिमत्ता, कौशल, पवित्रता, सदाचरण तथा शुद्धता स्वाभाविक रूप से पाई जाती थी। समझ, सूझ बूझ, योग्यता, बुद्धिमत्ता तथा कौशल में वह अद्वितीय था। सर्वदा पाँचों समय की नमाज जमाग्रत[1] के साथ पढता था। सोने के समय की नमाज पढ़े[2] बिना वह अन्त पुर में न प्रविष्ट होता था।

नासिरुद्दीन की पराजय के उपरान्त सुल्तान गयासुद्दीन शनिवार पहली शाबान (७२१ हि०) [२६ अगस्त १३२१ ई०] को राजधानी में अमीरों, मलिकों, इमामों, सैयिदों, काजियों तथा सर्व साधारण की सहमति से सिंहासनारूढ हुआ। अलाई अमीरो तथा मलिकों को सम्मानित किया और उन्हें पद, सम्मान तथा अक्तायें प्रदान कीं। जिन वंशों का विनाश हो चुका था, उन्हें पुन जीवन दान किया और अपने कुछ सम्बन्धियो को उपाधि एवं पद प्रदान किये।

तिलंग पर आक्रमण—

(६३) जब राज्य सुव्यवस्थित हो गया तो उसने उपर्युक्त सन् में उलुग खाँ को बहुत बडी सेना के साथ तिलग तथा मावर प्रदेश की ओर भेजा। उलुग खाँ राजसी ठाठ बाट तथा बडे वैभव से बाहर निकला। चन्देरी, बदायूँ, अवध, कडा, दलमऊ, बाँगरमऊ तथा अन्य अक्ताओ की सेनायें उससे मिलीं। मार्ग में देवगीर (देवगिरि) से होता हुआ तिलग प्रदेश में प्रविष्ट हो गया। देवगीर की सेना भी साथ हो गई। उलुग खाँ ने अरगल को राय *करण महादेव (प्रताप रुद्रदेव द्वितीय) तथा उसके पूर्वजों की ७०० वर्ष से राजधानी था,* पहुँच कर घेर लिया।

(६४) देहली से समाचार न पहुँचने के कारण उबैद कवि ने प्रसिद्ध कर दिया कि सुल्तान ग़यासुद्दीन का निधन हो गया। अमीरो एव मलिकों जैसे मलिक तिगीन तथा अन्य अमीरो को भडका दिया कि वे उलुग खाँ की हत्या कर डालें और विद्रोह कर दें। उलुग खाँ को इस बात की सूचना मिल गई। वह वहाँ से ५० सवारों को लेकर बाहर निकल गया। सभी हरामखोर अमीर वहाँ से अपनी-अपनी अक्ताओं को चले गये। जब उलुग खाँ निरन्तर कूच करता हुआ राजधानी पहुचा और उसने समस्त हाल बताया तो सुल्तान ने आदेश दिया कि वे लोग जहाँ कही भी मिलें उनकी हत्या करदी जाय। उपर्युक्त अमीर अपनी-अपनी विलायतो (प्रदेशो) में पहुँच भी न पाये थे कि सुल्तान का फर्मान निकल गया और वे जगलों में नष्ट कर दिये गये। मलिक हुसामुद्दीन अबू रिजा मुस्तोफिये ममालिक को आदेश हुआ कि वह अवध जाकर मलिक तिगीन के परिवार एव सहायकों को ले आये। उसने वहाँ

१ प्रात काल, मध्याह्नोत्तर, तीसरे पहर, सायंकाल तथा रात्रि की अनिवार्य सामूहिक नमाजें।

२ यह नमाज अनिवार्य नहीं।

पहुच कर सभी को बन्दी बना लिया। मलिक तिगीन का जामाता मलिक ताजुद्दीन तालक़ानी वन्दीगृह से भाग गया। उपर्युक्त मलिक ताजुद्दीन सरयू तट पर वन्दी बना लिया गया और वहीं उसकी हत्या करादी गई। मलिक तिगीन के पुत्र एव परिवार तथा सहायकों को देहली लाया गया। सुल्तान ने समस्त स्त्रियो, पुरुषों, छोटों तथा बडों को राजधानी के द्वार के समक्ष हाथी के पाँव के नीचे डलवा दिया। उबैद कवि को उलटा सूली पर लटका दिया गया।

(९५) कहा जाता है कि उबैद कवि शेखुल इस्लाम शेख निजामुद्दीन का सेवक था। वह सर्वदा अमीर खुसरो का विरोध किया करता था। इस कारण शेखुल मशायख उससे सर्वदा खिन्न रहा करते थे। इसी बीच में एक हिन्दू आकर मुसलमान हो गया। शेख निजामुद्दीन उसे शिक्षा दिया करते थे। एक दिन शेख ने उसे दो मिसवाक (दातौन) दीं। उस नव मुसलमान ने उबैद से पूछा, 'इन मिसवाको का किस प्रकार प्रयोग किया जाय ? उस दुष्ट ने कहा "एक मुह में करो और एक गुदा में।" वह नित्य इसी प्रकार किया करता था, यहाँ तक कि उसकी गुदा सूज गई। एक दिन वह शेखुल मशायख के पास बडे दुख की अवस्था में पहुचा और उसने कहा, "हे शेख ! आपने मुझे दो मिसवाकें प्रदान करने की कृपा की थी। उनमें से एक जिसे मैं मुह में करता हूँ, बडी अच्छी है और दूसरी जिसे मैं गुदा में करता हूँ बडी खराब है।" शेख बडे रुष्ट हुये। उन्होंने पूछा, "तुझे यह किसने सिखाया ?" उसने कहा, 'उबैद कवि ने।" तत्काल शेख ने कहा, "हे उबैद ! लकडी से खेल करता है" उसी समय से सभी समझने लगे कि उसे सूली पर चढाया जायगा।

तिलंग पर दूसरा आक्रमण—

७२४ हि० (१३२३ ई०) में उलुग खाँ को पुन तिलग भेजा गया। राय लुद्दर महादेव ने पुन किला बन्द कर लिया। कुछ ही दिनों में बाणो, पत्थरो तथा मगरबी द्वारा बाहरी तथा भीतरी किलो पर विजय प्राप्त कर ली गई। उपर्युक्त राय तथा समस्त (अधीन) राय एव उनके परिवार, कोष तथा हाथी अधिकार में कर लिये गये। समस्त तिलग प्रदेश पर अधिकार स्थापित हो गया। उसने अपने कारकुन (अधिकारी) तथा मुक्ते नियुक्त किये।

जाजनगर पर चढ़ाई—

(९६) तिलग से उसने जाजनगर पर चढाई की और वहाँ चालीस हाथी प्राप्त हुये। *विजय तथा सफलता प्राप्त करके वह अरंगल वापस हुआ और कुछ दिन वहाँ ठहर कर* राजधानी की ओर चल दिया।

लखनौती पर चढ़ाई—

७२४ हि० (१३२३ ई०) में सुल्तान ने लखनौती की ओर प्रस्थानकिया। उलुग खाँ को जिसे उसने अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था राजधानी तुगलुकाबाद में, जो ३ वर्ष तथा कुछ महीनो में तैयार हुई थी, अपना नायब बना कर राज्य करने के लिये नियुक्त किया। लखनौती पहुँच कर उसे विजय किया। उसी स्थान पर हैबतुल्लाह कुमूरी द्वारा लखनौती के बादशाह बहादुर शाह नौदह[१] के बन्दी बनाये जाने के समाचार प्राप्त हुये।

सुल्तान की मृत्यु—

सुल्तान उस स्थान से अपनी राजधानी को लौटा और उपर्युक्त बहादुर शाह को भी अपने साथ राजधानी मे लाया। जब वह अफगानपुर पहुँचा जहाँ एक महल में जो दरबारे आम के लिये शीघ्रातिशीघ्र बनवाया गया था और गीला था, दरबार किया और आदेश

१ एक पोथी में बौदह है।

दिया कि जो हाथी लखनौती के ध्वस द्वारा प्राप्त हुये हैं उन्हे एक साथ दौडाया जाय। महल गीला था। पर्वत रूपी डील डौल वाले हाथियो के दौडने के कारण हिल गया और गिर पडा। सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह एक अन्य मनुष्य के साथ महल के नीचे दब गया और शहीद होगया। यह घटना रबी-उल-अव्वल ७२५ हि० (फरवरी-मार्च १३२५ ई०) में घटी।

कहा जाता है कि इस स्थान पर भी शेखुल अक्ताब शेख मुहीउद्दीन निजामुल हक वश् (६७) शरा वद्दीन का आशीर्वाद था। शेख ने सुल्तान के प्रस्थान के समय अपनी मोतियो की वर्षा करने वाली जिह्वा से कहा था, "देहली तुमसे दूर है।" जब सुल्तान विजय तथा सफलता प्राप्त करके अफगानपुर लौटा तो उसने कहा, 'शत्रु के सीने को कुचल कर सुरक्षित लौट आया हूँ।' जब यह बात हजरत शेखुल अक्ताब (निजामुद्दीन) औलिया ने सुनी तो उन्होंने कहा, "देहली तुम्से दूर है।" यह घटना उसी मास में घटी।

सुल्तान गयासुद्दीन तुग़लुक़ शाह का ज्येष्ठ पुत्र
सुल्तान मुहम्मद शाह

देवगीर (देवगिरि) की ओर प्रस्थान—

(६८) ७२७ हि० (१३२६-२७ ई०) में सुल्तान मुहम्मद ने देवगीर (देवगिरि) की ओर प्रस्थान किया[१]। देहली से देवगीर (देवगिरि) तक प्रत्येक कोस पर धावे आबाद कराये। उन्हे उसी स्थान पर भूमि प्रदान की जिससे वहाँ के कर से वे अपना वेतन प्राप्त कर सकें। प्रत्येक उलाग एक धावे से दूसरे धावे तक सिर पर घटी रख कर पहुचता था।[२] उसने प्रत्येक पडाव पर एक घर तथा खानक़ाह निर्मित कराई। वहाँ एक शेख नियुक्त किया। (६९) वहाँ के लिये भोजन सामग्री का प्रबन्ध किया, जिससे जो कोई भी वहाँ पहुँचे, भोजन, शरबत, पान तथा स्थान प्राप्त कर सके। मार्ग के दोनो ओर उसने वृक्ष लगवाये। उनके चिह्न इस समय तक वर्तमान हैं। देवगीर (देवगिरि) का नाम दौलताबाद रख कर उसे अपनी राजधानी बनाया। मख्दूमये जहाँ के साथ जो उसकी (सुल्तान) माता थी, वह समस्त अमीरा, मलिको, प्रतिष्ठित तथा गण्यमान्य व्यक्तियो, विशेष लोगो, दासो के घर बार राज्य के हाथियो, घोडो, खजानो तथा गडी हुई धन सम्पत्ति भी दौलताबाद ले गया। मखदूमये जहाँ के प्रस्थान के उपरान्त, सैयिदो, शेखो (सुफियो) आलिमों, तथा देहली के बडे बडे लोगो को भी दौलताबाद बुलवाया गया। सभी वहाँ पहुँचे और जमीन बोस करके सम्मानित हुये'। (उनके) इनाम तथा इदरार एक के स्थान पर दो कर दिये गये। भवन निर्माण कराने के लिये उन्हें पृथक् धन प्रदान हुआ। सभी सतुष्ट हो गये।

मलिक बहादुर गर्शास्प का विद्रोह—

उपर्युक्त सन् (७२७ हि०) के अन्त में मलिक बहादुर गर्शास्प ने, जो आरिज लश्कर था, यात्रा में विद्रोह कर दिया। सुल्तान ने ख्वाजये जहाँ को बहुत बडी सेना देकर उसके विद्रोह के दमन हेतु भेजा। जब ख्वाजये जहाँ वहाँ पहुँचा तो बहादुर ने अपनी सेना लेकर उससे युद्ध किया। अन्त में युद्ध न कर सका और परास्त हुआ तथा हिन्दुओ द्वारा बन्दी बना लिया गया। उसे जीवित दरबार में उपस्थित किया गया। वहाँ उसकी हत्या करा दी गई।

बहराम ऐबा का विद्रोह—

तत्पश्चात् उसने अली खतती को बहराम ऐना (ऐबा) के घर बार को सुल्तान से राजधानी में लाने के लिये भेजा। वहा पहुँच कर उसने उसके घरबार के लाने में बडी कठोरता

१ इस समय के सुल्तान के सोने के सिक्के जो दौलताबाद से चलाये गये अब भी वर्तमान

२ मूल पुस्तक में यह वाक्य १९६२ नहीं।

(१००) दिखाई। दीवान (दरबार) में बैठ कर बहराम ऐना (ऐबा) को बुरा भला कहा करता था और बड़े कटुवचन कहता था। इससे उन लोगों को भय होने लगा। एक दिन बहराम ऐना (ऐबा) का जामाता लूली घर से आ रहा था। अली खतती कहने लगा "तुम अपने घर बार को क्यों नहीं भेजते ? ज्ञात होता है कि जाना नहीं चाहते। हरामजादगी करते हो।" उसने पूछा "हरामजादा किसको कहते हो ?" अली ने कहा 'जो घर में बैठा है, उसे कहता हूँ।" उसने कहा "तुझे क्या मालूम जो इस प्रकार कहता है" अली खतती ने दौड़ कर लूली के केश पकड़ लिये। उसने अली को भूमि पर पटक दिया और सिलाहदार को आदेश दिया कि उसका शीश उसके शरीर से पृथक् कर दे। अली की हत्या करके उसका सिर भाले पर चढ़ाया गया। उस समय इस कार्य पर सोच विचार किया गया।

दूसरे दिन बहराम ऐना (ऐबा) ने विद्रोह कर दिया। सुल्तान को बहराम के विद्रोह की सूचना दी गई। सुल्तान देवगीर (देवगिरि) से देहली पहुँचा। बहुत बड़ी सेना एकत्र करके बाहर निकला। मुल्तान पर चढ़ाई करने का दृढ़ सकल्प कर लिया। जब वह मुल्तान पहुँचा तो बहराम ऐना (ऐबा) ने युद्ध किया किन्तु मुल्तान की सेना पराजित हो गई। बहराम मारा गया। उसका सिर काट डाला गया और राजसिंहासन के समक्ष लाया गया। उसके बहुत से विश्वासपात्रों की हत्या करा दी गई। सुल्तान मुल्तानियों के रक्त की नदी बहाने पर तुला था। शेखुल इस्लाम शेख रुक्नुद्दीन ने मुल्तान के सर्व साधारण लोगों की सुल्तान से सिफारिश की। वह सुल्तान के दरबार में नगे सिर खड़ा रहा। जो मुल्तानी बहराम ऐना (ऐबा) (१०१) के मित्र थे, उन्हें भी शेख को प्रदान कर दिया गया। मुल्तान की अक्ता सिन्ध प्रदेश की सीमा पर है। वहाँ किवामुलमुल्क मकबूल को नियुक्त किया गया। कुछ वर्ष उपरान्त बेहजाद भेजा गया। जब शाहू लोदी ने बेहजाद की हत्या कर दी तो सुल्तान दीबालपुर (दयुपालपुर) पहुँचा। शाहू भागकर पर्वत में चला गया। उस समय शेख कुतुबुल आलम (रुक्नुद्दीन) का निधन हो चुका था। सुल्तान ने वह अक्ता मलिक एमादुलमुल्क मुल्तानी को प्रदान की। कुछ प्रतिष्ठित अमीर तथा मलिक जिनके साथ ५०,००० सवार थे, एमादुलमुल्क के देश (राज्य) में प्रविष्ट हो गये। सुल्तान देहली की ओर रवाना हो गया।

तुर्माशीरीन का आक्रमण—

७२६ हि० (१३२८-२६ ई०) में खुरासान के बादशाह कुतलुग ख्वाजा का भाई तुर्माशीरीन मुगल एक बहुत बड़ी सेना लेकर देहली की विलायतों में घुस आया और बहुत से किलों पर विजय प्राप्त कर ली। लाहौर, सामाने इन्दरी और बदायू तक की सीमा के लोगों को बन्दी बना लिया। *जब उसकी सेना नदी तट (यमुना तट) तक पहुंच गई तो वह लौट* गया। सुल्तान देहली तथा हौज़े खास के मध्य में एक बहुत बड़ी सेना एकत्र करके वहीं उतर पड़ा। जब पराजित तुर्मा ने सिन्ध नदी पार कर ली तो सुल्तान एक भारी सेना लेकर कलापुर (कलानूर) की सीमा तक उसका पीछा करता हुआ गया। सुल्तान ने कलापुर (कलानूर) का किला जो टूट फूट गया था, मलिक मुईज़्ज़ुद्दीन अबू रिजा को प्रदान किया ताकि वह उसे सुव्यवस्थित कर दे। कुछ वीर तथा पराक्रमी सरदारों को तुर्माशीरीन का पीछा करने के लिये भेज कर सुल्तान देहली लौट आया।

कर वृद्धि—

(१०२) तत्पश्चात् सुल्तान ने निश्चय किया कि विलायत (विलायतां-प्रान्तों) का खराज दस गुना तथा बीस गुना लेना चाहिये।[१] घरी तथा चराई भी लागू की। इस कारण

१ यह वाक्य उसी प्रकार है जिस प्रकार बरनी ने लिखा है।

मवेशियो के दाग लगाया गया। प्रजा के घरों की गणना की गई। खेतो की नाप की गई। उसके अनुसार आदेश दिये गये। चीजो के भाव निश्चित किये गये। इसी कारण लोग अपने मवशियो को छोड कर आबादी से जगलों में घुस गये। षड्यन्त्रकारी शक्तिशाली बन गये।

देहली के निवासियों का दौलताबाद भेजा जाना—

तत्पश्चात् शाही आदेश हुआ कि देहली तथा आस पास के कस्बा के सभी निवासी क़ाफिला बना बना कर दौलताबाद को प्रस्थान करें, नगरवासियो के घर उनसे मोल ले लिये जायें, घरों का मूल्य खज़ाने से नकद दे दिया जाय। शाही आदेशानुसार समस्त नगरवासी तथा आसपास के स्थानो के लोग दौलताबाद रवाना कर दिये गये। देहली नगर इस प्रकार रिक्त हो गया कि कुछ दिनो तक द्वार बन्द रहे। कुत्ते, बिल्ली भी नगर में न बोलते थे। साधारण लोग तथा गुडे, जो नगर में रह गये थे, नगर वालो की सम्पत्ति घरो से निकाल-निकाल कर नष्ट करते थे। तत्पश्चात् यह आदेश हुआ कि बडे-बडे कस्बो तथा देश के अन्य भागों म आलिमो, शेखो (सूफियो) तथा प्रतिष्ठित लोगो को लाकर शहर (देहली) में बसाया जाय। उन्हे इनाम तथा इदरार प्रदान किये गये। समस्त दौलताबाद शहर (देहली) के लोगों से परिपूर्ण हो गया। चूकि सुल्तान ने अत्यधिक धन सम्पत्ति दिल खोल कर प्रदान की थी और बडा ही अपव्यय किया अत खज़ाने के धन को बडी हानि पहुँची।

तांबे के सिक्के—

समस्त आय के साधन तथा अबवाब (कर) पूर्णत बन्द हो गये। उसने तांबे के सिक्के चलाने का आदेश दिया। एक बिस्त गानी (तांबे) की मुद्रा का मूल्य आधुनिक एक (चादी) के तन्के के बराबर कर दिया। जो कोई इन सिक्कों के स्वीकार करने में आना कानी करता (१०३) था, उसे कठोर दड दिये जाते थे। हिन्दुओ, मवासात[१] के फसादियो तथा विलायतों के मवासात ने प्रत्येक ग्राम में टिकसालें बना ली, और तांबे के सिक्के ढालने लगे। उन्हे वे शहर (देहली) में भेज देते थे और उससे सोना, चाँदी, घोडे अस्त्र-शस्त्र तथा बहुमूल्य वस्तुयें मोल ली जाती थी। इसी कारण षड्यन्त्रकारी शक्तिशाली बन गये। कुछ ही समय में दूर के लोग तांबे के सिक्के स्वीकार करना बन्द करने लगे। सोने के तन्के का मूल्य तांबे के ५०-६० तन्को के बराबर हो गया। जब उसने उन सिक्कों का द्वार खुलते देखा (बिना मूल्य के होते देखा) तो उसने विवश होकर उन्हे रद्द कर दिया और आदेश दिया कि जिसके घर में तांबे का सिक्का हो, वह उसे ले आये और खजाने से सोने के तन्के ले जाये। लोग अत्यधिक धन ले गये और धनी बन गये। वे खज़ाने से सोने के तन्के ले गये। तांबे के सिक्कों के चलन का अन्त हो गया। बहुत समय तक तुगलुकाबाद के महल में उनके ढेर लगे रहे।

क़राजिल पर्वत पर आक्रमण—

उसने कराजिल (हिमालय) पर्वत को जो हिन्दुस्तान तथा चीन के मध्य में है, अधिकार में करने का आदेश दिया। ८० हज़ार सवार सरदारो सहित नियुक्त किये गये। उसने आदेश दिया कि घाटी में प्रवेश करने के उपरान्त मार्ग में थाने स्थापित करदें ताकि सेना को वापसी के समय कष्ट न हो। सेना ने वहाँ पहुच कर थाने स्थापित किये। समस्त सेना कराजिल पर्वत में प्रविष्ट हो गई किन्तु मार्ग की कठिनाई तथा भोजन सामग्री की कमी से उन्हें बडा कष्ट हुआ। उन्होंने जो थाने स्थापित किये थे, उन पर पहाडी लोगो ने अधिकार (१०४) प्राप्त कर लिया। समस्त थानेदारों की हत्या कर दी। जो सेना भीतर प्रविष्ट

१ मवास, उन स्थानों को कहते थे जहाँ विद्रोही रक्षा के लिये छिप जाते थे।

हुई थी वह सब की सब मार डाली गई। सेना के कुछ सरदार बन्दी बना लिये गये और बहुत समय तक राय के पास रहे। उस प्रकार की सेना पुन एकत्र न हो सकी। यह घटना ७३८ हि० (१३३७-३८ ई०) में हुई।

फ़खरुद्दीन का सुनार गाँव मे बादशाह होना—

तत्पश्चात् सुनार गाँव में बहराम खाँ की मृत्यु हो गई। ७३९ हि० (१३३८-३९ ई०) में बहराम खाँ के सिलाहदार, मलिक फखरुद्दीन ने विद्रोह कर दिया और बादशाह बन बैठा। उसने अपनी उपाधि सुल्तान फखरुद्दीन रख ली। मलिक पिन्दार खलजी कदर खाँ लखनौती का हाकिम, मलिक हुसामुद्दीन अबू रिजा मुस्तौफीये ममालिक आज़म मलिक, इज्जुद्दीन यहया सत गाँव का मुक्ता, तथा नुसरत खाँ अमीर (हाकिम) कड़ा (निवासी) का पुत्र फीरोज़ खाँ, फखरुद्दीन के विद्रोह के दमन हेतु सुनार गाँव पहुँचे। उसने अपने सैनिकों सहित (उनका) मुकाबला किया। दोनो में युद्ध हुआ। अन्त में फखरुद्दीन पराजित हुआ और वहाँ से भाग गया। उसके हाथी घोडे भी अधिकार में आ गये। कदर खाँ उसी स्थान पर रह गया। अन्य अमीर अपनी-अपनी अक्ताओ को चले गये।

वर्षा के प्रारम्भ हो जाने पर कदर खाँ की सेना के बहुत से घोडे मर गये। चूँकि उसने अत्यधिक धन चाँदी के तन्को के रूप में एकत्र कर लिया था, अत वह इन्हें दो-तीन मास पश्चात् महल में ले जाकर एक स्थान पर ढेर करा दिया करता था और कहा करता था कि "इसी प्रकार मैं इन्हे शाही राजभवन के द्वार के समक्ष ढेर करा दूगा। जितना ही अधिक मैं एकत्र कर लूगा, उतना ही वह प्रत्येक आवश्यकता के लिये उपयोगी होगा।" मलिक हुसामुद्दीन ने उसे समझाया कि 'दूर की अक्ताओ में धन एकत्र करने से हानि होती है। (१०५) लोग लालच करने लगते हैं। मूख सोचने लगते हैं कि किस कारण (धन) राजधानी में नही भेजा जा रहा है। खजाने का जो धन एकत्र हो उसका बादशाह के खजाने में पहुँच जाना उचित होता है।' वह न सुनता था। न तो सेना वालो का हक, सेना वालो को प्रदान करता था और न खजाने में धन पहुचाता था। सेना वालो को धन का लोभ होता था। जैसे ही मलिक फखरुद्दीन वहाँ पहुँचा उसकी (कदर खाँ की) सेना फखरुद्दीन से मिल गई। उसकी (कदर खाँ) हत्या कर दी।

अली मुबारक का लखनौती पर अधिकार प्राप्त करना—

फखरुद्दीन सुनार गाँव में निवास करता था और उसने अपने दास मुखलिस को लखनौती में नियुक्त कर दिया था। कदर खाँ के लश्कर के आरिज, अली मुबारक ने उपर्युक्त दास की हत्या कर दी और लखनौती पर अधिकार जमा लिया, किन्तु बादशाही के चिह्न प्रकट न किये। सुल्तान के पास पत्र लिखे कि 'मैने लखनौती पर अधिकार प्राप्त कर लिया है। यदि कोई दास राजधानी से भेज दिया जाय और लखनौती में आरूढ हो जाय तो मैं राजधानी में उपस्थित हो जाऊँ।" सुल्तान ने निश्चय किया कि शहर (देहली) के शहना यूसुफ की खान की श्रेणी प्रदान करके भेज दिया जाय। इन्ही दिनो में मलिक यूसुफ की मृत्यु हो गई। सुल्तान ने उस ओर कोई ध्यान न दिया और किसी को लखनौती न भेजा। फखरुद्दीन के विरोध के कारण अली मुबारक ने बादशाही के चिह्न प्रकट कर दिये और अपनी उपाधि सुल्तान अलाउद्दीन निश्चित कर ली।

इलयास हाजी का सिंहासनारूढ होना—

कुछ समय उपरान्त, मलिक इलयास हाजी ने, जिसके पास बहुत सैनिक थे लखनौती के अमीरों, मलिकों तथा प्रजा से मिल कर अलाउद्दीन की हत्या करदी। मलिक इलयास हाजी

बादशाह हो गया और अपनी उपाधि सुल्तान शम्सुद्दीन निश्चित की। ७४१ हि० (१३४०-४१ ई०) में इलयास ने सुनार गाँव पर आक्रमण किया और मलिक फखरुद्दीन को जीवित बन्दी बना कर लौट आया। कुछ दिन पश्चात् उसकी भी लखनौती मे हत्या करदी गई। (१०६) तत्पश्चात् बहुत समय तक लखनौती सुल्तान शम्सुद्दीन तथा उसके पुत्रों के अधीन रही और फिर देहली के बादशाहों के अधिकार में न आई।

मलिक इबराहीम के पिता सैयिद हसन कैंथली का विद्रोह—

७४२ हि० (१३४१-४२ ई०) में मलिक इबराहीम खरीतादार के पिता सैयिद हसन कैंथली ने मावर में विद्रोह कर दिया। देहली की जो सेना माबर में शासन प्रबन्ध के लिये नियुक्त थी, उनमें से कुछ की हत्या करदी और कुछ को अपनी ओर मिला लिया। समस्त माबर प्रदेश अपने अधिकार में कर लिया। सुल्तान उस विद्रोह को शान्त करने के लिये देवगीर (देवगिरि) पहुँचा। वहाँ से वह तिलंग तक पहुँच कर रुग्ण हो गया। वहाँ से लौट आया। यह प्रसिद्ध हो गया कि पालकी में सुल्तान का शव लाया जा रहा है। मलिक होशंग जो अशान्ति के कारण बदीघन में गया था, सुल्तान के जीवित होने के विषय में जानकारी प्राप्त करके लौट कर सुल्तान से मिल गया। सुल्तान निरन्तर कूच करता हुआ देहली पहुँचा और कुतलुग खाँ को दौलताबाद में नियुक्त कर आया। माबर का विद्रोह उसी प्रकार चलता रहा।

गुलचन्द्र तथा मलिक हलाचून का विद्रोह—

७४३ हि० (१३४२-४३ ई०) में गुलचन्द्र तथा मलिक हलाचून ने विद्रोह कर दिया। मलिक ततार खुर्द (छोटा) लाहौर के मुक्ता की हत्या कर डाली और विद्रोह कर दिया। सुल्तान ने ख्वाजये जहाँ को उनका विद्रोह शान्त करने के लिए भेजा। जब वह लाहौर पहुँचा तो मलिक हलाचून तथा गुलचन्द्र खुक्खर (निवासी) ने मुकाबला किया किन्तु अन्त में पराजित हो गय। ख्वाजये जहाँ उस विद्रोह के दमन के उपरान्त लौट आया।

शाहू लोदी का विद्रोह—

७४४ हि० (१३४३-४४ ई०) में सेना के तंग आ जाने के कारण फखरुद्दीन बेहज़ाद ने मूर्खता प्रारम्भ करदी थी। शाहू लोदी अफगान ने मुल्तान में विद्रोह कर दिया और बेहज़ाद की हत्या कर दी। मलिक नुवा उसके (बेहज़ाद के) साथ था। वह वहाँ से भाग कर देहली (१०७) पहुचा। सुल्तान ने स्वयं मुल्तान की ओर प्रस्थान किया। उस समय शहर (देहली) में घोर अकाल पड़ा था। मनुष्य मनुष्य को खाये जाता था।...... सुल्तान के दीबालपुर पहुचने पर शाहू युद्ध न कर सका। वह भाग गया और पर्वतों में घुस गया। सुल्तान ने दीबालपुर से लौट कर मुल्तान की अक्ता एमादुलमुल्क सरतेज़ को प्रदान कर दी।

कैथल के सैयिदों की हत्या—

सुनाम तथा सामाने में होकर उसने कैथल के सैयिदों तथा अन्य मुसलमानों की हत्या कर दी। उस प्रदेश के सभी मुकद्दमों को वहाँ से निकाल कर देहली के निकट ले गया और वहाँ के ग्राम तथा अक्तायें प्रदान कर दी। प्रत्येक को सोने की पेटी तथा जड़ाऊ पेटियाँ प्रदान करके वहाँ बसा दिया और स्वयं शहर (देहली) में प्रविष्ट हो गया। नगर वासियों को आदेश दिया कि लोग हिन्दुस्तान चले जायें और वहाँ कुछ समय तक रहें ताकि अकाल के कष्ट से मुक्त हो जायें।

खुरासानियों का आगमन—

इसी बीच में खुरासानी, जिन्हे सुल्तान अत्यधिक दान दिया करता था, धन के लोभ

में बहुत बडी सख्या में पहुँचे हुये थे । प्रत्येक को उसकी श्रेणी के अनुसार चादी, सोना, मोती घाड, वस्त्र, पेटी, टापी, दास, उपहार तथा अन्य वस्तुयें इतनी अधिक सख्या में प्रदान होती (१०८) थी, कि उतनी किसी ने कदापि न देखी होगी । राजधानी में वही लोग दृष्टिगत होते थे । वे सभी वस्तुयें अर्थात् दास, सोना, चाँदी, कागज और किताब मोल लेकर खुरासान भेजा करते थे ।

कड़े के मुक्ता का विद्रोह—

७४५ हि० (१३४४-४५ ई०) में कडे के मुक्ता मलिक निजाम ने कुछ दासो के बहकाने से अभिमानवश विद्रोह कर दिया । ऐनुलमुल्क के भाई शहरुल्लाह ने अवध से सेना तैयार करके उस पर आक्रमण कर दिया । उसकी सेना पराजित हो गई और वह जीवित ही बन्दी बना लिया गया । वह विद्रोह शान्त हो गया ।

शिहाब सुल्तानी का बिदर मे विद्रोह—

उसी सन् म शिहाब सुल्तानी न बिदर में विद्रोह कर दिया । बिदर वालो को अपनी ओर मिला लिया । कुतलुग खाँ उसका विद्रोह शान्त करने के लिये वहाँ गया । शिहाबुद्दीन का लघु पुत्र अपनी सेना लेकर युद्ध करने के लिये निकला किन्तु युद्ध न कर सका । पराजित होकर बिदर के किले में घुस गया । पिता और पुत्र दोनो किले में बन्द हो गये । कुतलुग ने उन्ह रक्षा का वचन देकर दहली भेज दिया ।

अली शाह का विद्रोह—

७४६ हि० (१३४५-४६ ई०) में जफर खाँ अलाई का भागिनय तथा कुतलुग खाँ का अमीर सदा देवगीर से गुलबर्गा, कर वसूल करन क लिय गया । उसने वह स्थान सना, मुक्तो तथा वालिया से रिक्त पाया । अपने भाइयो को अपना सहायक बना लिया । षड्यत्र करके गुलबर्गे क मुतसर्रिफ बहरन की हत्या कर दी और अत्यधिक धन-सम्पत्ति लूट ली और वहाँ स बिदर पहुचा । बिदर के नायब की हत्या करके अत्यधिक धन-सम्पत्ति पर अधिकार जमा लिया और बिदर प्रदेश पर राज्य करने लगा ।

जब सुल्तान को इसकी सूचना मिली तो उसने कुतलुग खाँ को कुछ अमीरो, मलिको (१०६) तथा धार की सेना के साथ उस विद्रोह को शान्त करने क लिये नियुक्त किया । जब कुतलुग खाँ वहाँ पहुचा तो अली शाह अपने सैनिको को लेकर युद्ध करने के लिये निकला । अन्त में पराजित होकर किले में घुस गया । कुतलुग खाँ ने क़िले को घेर लिया । कुछ दिन उपरान्त अली शाह अपने भाइयो सहित जीवित बन्दी बना लिया गया । कुतलुग खाँ ने उन्हे सुल्तान के पास स्वर्गद्वारी भेज दिया । सुल्तान ने सभी को गजनी भिजवा दिया । उनको वहा से पुन बुलवा लिया और महल के समक्ष उनकी हत्या करा दी ।

ऐनुलमुल्क का विद्रोह—

७४७ हि० (१३४६-४७ ई०) में सुल्तान ने सेना लेकर हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान किया । जब वह स्वर्गद्वारी पहुँचा तो ऐनुल मुल्क उसके समक्ष उपस्थित हुआ । धन-सम्पत्ति तथा अन्य बहुमूल्य वस्तुयें उपहार स्वरूप भेंट कीं । सुल्तान ने यह निश्चय किया कि उसे उसके सहायकों तथा भाइयों को दौलताबाद भेज दे । कुतलुग खाँ को राजधानी में बुलवा ले । यह बात किसी प्रकार ऐनुलमुल्क के कानों तक पहुँच गई । उसने समझा कि 'इस बहाने से हमें हिन्दुस्तान से निर्वासित करके हत्या करा दी जायगी ।' इस कारण वह बडा भयभीत हुआ और रातों रात स्वर्गद्वारी से भाग गया । गगा नदी पार करके अवध चला गया । उसके विरोधी होने के पूर्व सुल्तान ने अधिकाश हाथी, घोडे सिलाहदार तथा अन्य समूह वाले, भोजन सामग्री

की अधिकता के कारण ऐनुलमुल्क के भरोसे पर गगा नदी के उस पार भेज दिये थे। बहुत थोडी सी पायगाह[1] रह गई थी। वह भी इस कारण कि मलिक फीरोज मलिक नायब बारबक ने निवेदन किया था कि 'पायगाह के समस्त घोडे नदी के उस पार जा रहे हैं। शिकार के लिये उनकी अवश्य आवश्यकता पडेगी। सभी को भेज देना उचित नही।' उस समय पायगाह (११०) में थोडे से घोडे रख लिये गये थे। ऐनुलमुल्क के भाई शहरुल्लाह ने नदी के उस पार से घोडे तथा हाथियो को अपने अधिकार में करने के उपरान्त उपर्युक्त समूह को अपनी ओर परिवृत्त करके अपने साथ ले लिया। ऐनुलमुल्क तथा हाथी-घोडे एव सेना सहित भाग कर वे निरन्तर कूच करते हुए कन्नौज के नीचे पहुचे। वहाँ से नदी पार करके पडाव डाल दिया। सुल्तान ने कुछ अमीरो तथा मलिको को, जिन्हें इससे पूर्व उनकी अक्ताओ की ओर विदा कर दिया था, उदाहरणार्थ ख्वाजये जहाँ को धार की ओर, मलिक एमादुलमुल्क को मुल्तान की ओर और जो ब्याना तक पहुँचे थे, उन्हे बुलवा लिया। अन्य अमीर भी दूसरी दिशाओ से आ गये। सुल्तान भी उस स्थान से बढ कर, कन्नौज के कोट के बराबर उतरा। ऐनुल मुल्क ने मध्याह्नोत्तर में लीदबह घाट से नदी पार की। जब सुल्तान को यह सूचना मिली तो उसने कहा "लीदबह उनके लिये अशुभ है और हम लाग तैयार हैं।" जब रात्रि के अन्त में वे शाही सेना में प्रविष्ट हुये तो उन्होंने जिस प्रकार हिन्दुस्तान में युद्ध किया जाता है, पैदल होकर युद्ध किया। सुल्तान ने इस ओर से हाथियो तथा सेना के दल बना दिये थे। वे पहले ही आक्रमण में पराजित हो गये। शहरुल्लाह घायल अवस्था में गगा में कूद पडा और डूब गया। इसी प्रकार समस्त सेना वाले घोडो तथा अस्त्र शस्त्र सहित नदी में कूद पडे और डूब गये। जो लोग बच कर बाहर निकले वे हिन्दुओ द्वारा नष्ट हो गये। ऐनुलमुल्क जीवित बना लिया गया। इबराहीम बगी उसे नग्न अवस्था में लाशह[2] पर सवार करके सुल्तान के समक्ष लाया। वह कुछ दिनो तक राजभवन में बन्द रहा। अन्त में मुक्त कर दिया गया और शाही कृपा द्वारा सम्मानित हुआ। सुल्तान वहा से देहली की ओर वापस हुआ। कुतलुग खाँ को उसके (१११) सहायको तथा अधीनों सहित राजधानी में बुलवाया। कुतलुग खाँ शाही आदेशानुसार अपने भाई आलिम मलिक को वहाँ छोड कर (राजधानी) पहुचा।

७४८ हि० (१३४७-४८ ई०) में देहुई तथा बरोदे के अमीराने सदा ने ख्वाजये जहाँ, जो गुजरात का नायब वज़ीर था, के दास मुकबिल पर, जो राजधानी जा रहा था, छापा मारा तथा विद्रोह कर दिया। माल अस्वाब, खज़ाना तथा अस्त्र-शस्त्र, सबका सब उनके हाथ आ गया। धार के अधिकारी मलिक अज़ीज ने उपर्युक्त अमीराने सदा के विरुद्ध युद्ध किया किन्तु उसकी हत्या करदी गई। सुल्तान ने इस विद्रोह के दमन के लिये एक बहुत बडी सेना लेकर प्रस्थान किया। जब वह गुजरात के निकट पहुँचा तो उसने कुछ अमीर जैसे मलिक अली सर जानदार, मलिक अहमद लाचीन तथा कुछ अन्य अमीर आलिम मलिक के पास दौलताबाद इस आशय से भेजे कि वे दौलताबाद के अमीरान सदा को उसके समक्ष ले आये। आलिम मलिक ने शाही आदेशानुसार अमीराने सदा को भेज दिया। जब दौलताबाद के अमीराने सदा, उन अमीरो के साथ मानिक गज की घाटी में पहुँचे तो उन्हे भय हुआ कि उन्हें कत्ल करने के लिये बुलवाया जा रहा है। रात्रि में उन्होने सघटित होकर विद्रोह कर दिया। प्रस्थान के समय उन्होंने उपर्युक्त अमीरो पर आक्रमण कर दिया। मलिक अहमद लाचीन मारा गया। अन्य लोग भाग गये। उपर्युक्त अमीराने सदा दौलताबाद पहुँचे। आलिम मलिक ने दौलताबाद का क़िला बन्द कर लिया। अमीराने सदा ने आलिम मलिक को इस कारण

१ शाही अश्वशाला।

२ गधे, यह अर्थ इब्ने बत्तूता ने लिखा है।

कि उसने उनके साथ अच्छा व्यवहार किया था मुक्ति प्रदान करके शहर (देहली) की ओर भेज दिया। इसमाईल मुख को बादशाह घोषित कर दिया और उसकी उपाधि सुल्तान नासिरुद्दीन निश्चित की।

(११२) सुल्तान यह समाचार सुन कर आगे बढ गया। उसने देहुई तथा बरोदा के अमीराने सदा से युद्ध करने के लिये एक सेना भेजी। अमीराने सदा ने सुल्तान की सेना से युद्ध किया किन्तु परास्त होकर दौलताबाद चले गये और दौलताबाद के अमीराने सदा से मिल गये। सुल्तान वहाँ से दौलताबाद की ओर चल दिया और उसने इसमाईल मुख से युद्ध किया। इसमाईल युद्ध न कर सका और भाग कर धारागर के किले में घुस गया। बहुत से लोग मारे गये। दौलताबाद के कुछ मुसलमान तो मारे गये और कुछ नष्ट भ्रष्ट हो गये। कुछ इसमाईल के साथ चल दिये।

मलिक तगी का गुजरात में विद्रोह—

सुल्तान उसी स्थान पर था कि गुजरात से मलिक तगी के विद्रोह की सूचना प्राप्त हुई कि उसने मलिक मुजफ्फर की हत्या करके उसकी समस्त धन-सम्पत्ति तथा घोडो पर अधिकार जमा लिया है। सुल्तान ने मलिक जौहर, खुदावन्द जादा किवामुद्दीन, शेख बुरहानुद्दीन बलारामी तथा कुछ अन्य अमीरो को धारागर में छोड दिया। मलिक एमादुद्दीन सरतेज को एक बहुत बडी सेना देकर दौलताबाद की सेना के पीछे जो परास्त होकर बिदर की ओर चलदी थी भेजा और स्वयं गुजरात की ओर तगी के पीछे चल दिया।

हसन कांगू का दौलताबाद मे बादशाह होना—

दौलताबाद की सेना ने, जिसका सरदार हसन कांगू था, घात लगा कर एमादुलमुल्क पर आक्रमण कर दिया और उसकी हत्या करदी। एमादुलमुल्क की सेना परास्त होकर दौलताबाद पहुँची। मलिक जौहर तथा अन्य अमीर जो दौलताबाद में धारागर के सामने पडाव डाले हुये थे, युद्ध न कर सके और वहाँ से भाग गये। हसन कांगू उनका पीछा करता हुआ दौलताबाद पहुँचा और इसमाईल मुख को हटा कर स्वयं बादशाह बन गया और अपनी उपाधि सुल्तान अलाउद्दीन करली। उस समय से दौलताबाद की अक्ता हसन कांगू तथा उसके पुत्रो के पास ही रही।

गुजरात की ओर सुल्तान का प्रस्थान—

(११३) सुल्तान तगी के पीछे गुजरात की ओर एक स्थान से दूसरे स्थान में फिरता रहा। उसने दो बार सुल्तान से युद्ध किया और परास्त हुआ। इसी युद्ध में मलिक फीरोज मलिक को देहली से बुलवाया गया। वह सुल्तान से मिला। कुछ समय उपरान्त मलिक कबीर जो कुबुल खलीफती का पुत्र था मर गया। ख्वाजये जहाँ तथा मलिक मक्बूल किवामुलमुल्क देहली में थे। इसी समय भूतपूर्व के सभी सुल्तानो विशेष कर सुल्तान अलाउद्दीन के परिश्रम से इस्लाम के प्रचार धर्म (इस्लाम) के प्रोत्साहन उत्तम वस्तुओ की बहुतायत, मार्गो की रक्षा, प्रजा के आराम, तथा देश एव प्रदेशो के अधिकार मे करने तथा सुव्यवस्थित बनाने के सम्बन्ध में जो कुछ प्राप्त हुआ था, वह समाप्त हो गया। इस्लाम में कमजोरी, धर्म (इस्लाम) में विघ्न, धन-सम्पत्ति में कमी, मार्ग में भय, लोगो मे परेशानी, राज्य तथा प्रदेश मे उपद्रव उठ खडा हुआ था। न्याय के स्थान पर अत्याचार तथा इस्लाम के स्थान पर कुफ्र की दृढता प्राप्त हो गई। इसके कई कारण है।

(१) तुर्माशीरीन मुगल ने बहुत से कस्बो के लोगो प्रजा तथा ग्रामो को विध्वस कर दिया। उन विलायतो को पुन आबाद न किया जा सका।

(२) विलायत (प्रदेश) का खर दसगुना तथा बीसगुना कर दिया। मवेशियो के चराई के लिये दाग लगाया गया। लोग घरो और मवेशियो को छोड कर मवासो तथा (जगलो) में घुस गये। षड्यन्त्रकारी शक्तिशाली हो गये और तत्पश्चात् विलायत नष्ट भ्रष्ट हो गई और खराबी पैदा हो गई।

(३) समस्त विलायत मे वर्षा न हुई तथा घोर अकाल पड गया। सात वर्ष में एक बूंद पानी न बरसा और हवा में बादल न दिखाई पडे।

(११४) (४) देहली की समस्त प्रजा को दौलताबाद भेज दिया गया और आसपास के कस्बो के लोग शहर (देहली) लाये गये और पुन लौटाये गये। उन्हे अपने पूर्वजों से जो धन-सम्पत्ति प्राप्त हुई थी उसे उसी प्रकार घर में छोड कर वे चले गये। तत्पश्चात न उन्हे वह धन-सम्पत्ति ही प्राप्त हुई और न वे अन्य का प्रबन्ध कर सके। न शहर (देहली) आबाद हुआ और न कस्बे।

(५) ८०,००० सवार, दासो तथा सेवकों के अतिरिक्त, कराजिल पर्वत में भेजे गये। समस्त सेना एक साथ मृत्यु के छिद्र में पहुँच गई और सभी मार डाले गये और उनमे से दो सवार भी वापस न हुये। इस प्रकार की सेना पुन एकत्र न हो सकी।

(६) जो कोई प्राणो के भय से किसी प्रदेश में विद्रोह करता था तो वहाँ के कुछ लोग तो मार डाले जाते थे और कुछ भय से इधर उधर भाग जाते थे। वह प्रदेश नष्ट हो जाता था और मुकद्दम तथा षड्यन्त्रकारी शक्तिशाली बन जाते थे और वे रक्तपात करना प्रारम्भ कर देते थे और कोई भी उन्ह रोक न सकता था। सुल्तान ने अपना समस्त लाव लश्कर इस प्रकार नष्ट तथा तबाह कर दिया था कि किसी के पास भोजन सामग्री न रही थी।

(७) शहर (देहली) तथा आसपास के अमीर, मलिक, प्रतिष्ठित व्यक्ति, दरिद्र, भिखारी शिल्पी, महाजन, कृषक, साधारण लोग तथा श्रमिक अत्याचार और आतक की तलवार से मार डाले गये। राजभवन के समक्ष मृतक शरीरो के ढेर लग जाते थे, यहा तक (११५) कि जल्लाद मरे हुये लोगो की खाल खीचते खीचते परेशान हो गये थे और राज्य के कार्य में पूर्णतया विघ्न पड गया था। जिस ओर षड्यन्त्र को दबाने का प्रयत्न किया जाता तो दूसरी ओर बहुत बडा विद्रोह उठ खडा होता। भूतकाल के सुल्तानो ने राज्य व्यवस्था को जिस प्रकार स्थापित किया था, उसका अन्त हो गया। सुल्तान विस्मित था। जिस बात का वह सकल्प कर लेता, चाहे अपने राज्य मे विघ्न पडते देखता, धर्म (इस्लाम) में हानि होते देखता और अपनी आन्तरिक तथा बाह्य परेशानियो का निरीक्षण करता, और फिर भी उससे बाज न आता। राज्य व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध का कोई साधन शेष न रह गया था। ईश्वर को धन्य है। मानो इस सबको अपने समक्ष, ससार से रवाना कर दिया था और स्वय अकेला रह गया था ताकि जब समय आ जाय तो वह भी उनसे मिल जाय।

अपराधियों को दंड देने के लिये सुल्तान के नियम—

कहा जाता है कि उसने लोगो की हत्या कराने की इस सीमा तक व्यवस्था की थी कि चार मुफ्तियो को महल में घर दे दिये गये थे। जिस किसी पर कोई आरोप लगाया जाता, सर्वप्रथम उसकी हत्या के विषय में वह उपर्युक्त मुफ्तियो से वाद विवाद किया करता था। उसने उन लोगो से कह दिया था कि यदि कोई बिना किसी अपराध के मार डाला जायगा और तुम लोग उसकी ओर से सत्य बात कहने मे कमी करोगे तो उसका रक्त तुम्हारी गर्दन पर होगा। मुफ्ती उनको निर्दोष सिद्ध करने में कोई कमी न करते। यदि वे अपराधी सिद्ध हो जाते तो उनकी, चाहे आधी रात क्यो न हो, हत्या कर दी जाती थी, किन्तु यदि सुल्तान वाद (११६) विवाद में परास्त हो जाता तो सोचता था कि उपर्युक्त मुफ्तियो की दूसरी बैठक की

जाय जिससे वह कोई ऐसा तर्क प्रस्तुत कर सके जिससे उनकी बात का खडन हो सके। यदि मुफ्ती बादशाह की बात में कोई दोष न निकाल पाते तो तत्काल अपराधी की हत्या कर दी जाती। यदि सुल्तान कोई उत्तर न दे पाता ता अपराधी को तुरन्त मुक्त कर दिया जाता था। पता नही कि वह शरा का इतना ध्यान लोगो की सुगमता के लिये करता था, अथवा किसी अन्य कारण से।

सुल्तान के अत्याचार की एक कहानी—

कहा जाता है कि वह एक बार जूते पहने हुये दीवाने कज़ा के मुहकमे में, शहर काज़ी कमालुद्दीन सद्रे जहाँ के पास चला गया और कहने लगा कि "शेखज़ादा जामी ने मुझे बिना किसी अपराध के अत्याचारी कहा है। उसे बुलवा कर मेरा अत्याचार सिद्ध कराया जाय और जो कुछ शरा का आदेश हो उसके अनुसार आचरण किया जाय।" काज़ी कमालुद्दीन ने शेखजादे को बुलवाया और उपर्युक्त दावे का उत्तर पूछा। शेखज़ादे ने स्वीकार किया। सुल्तान न कहा, "मेरे अत्याचारों का उल्लेख कर।" शेख ने उत्तर दिया कि "जिस किसी अपराधी अथवा निर्दोषी की तूने हत्या कराई वह उसका कर्त्तव्य समझा जा सकता है किन्तु उनकी स्त्रियो तथा पुत्रो को जल्लादो को बेच डालने के लिये दे डालना, ऐसा अत्याचार है जो किसी धर्म में उचित नही।" सुल्तान चुप हो रहा और उसने कोई उत्तर न दिया। मुहकमये कज़ा से निकल कर आदेश दिया कि शेखज़ादा जामी को बन्दी बना कर लाहे के पिंजडे में रखा जाय। ऐसा ही किया गया। दौलताबाद के युद्ध में पिंजडा हाथी की पीठ पर ले जाया जाता था। जब वह देहली लौटा तो मुहकमे के समक्ष पिंजडे स निकलवा कर उसकी हत्या करा दी। (११७) उसके राज्य की खराबी का हाल तथा उसके अत्याचार का इस इतिहास में उल्लेख उचित नही, इस लिये कि बुजुर्गो के अपराध को पकडना अपराध है, किन्तु ये बातें राज्य के अधिकारियो की शिक्षार्थ लिख दी गईं हैं जिससे वे सचेत होकर शिक्षा प्राप्त कर सकें।

सक्षिप्त में, जब उसके अत्यधिक अत्याचार के कारण उसके राज्य के कार्य तथा शासन प्रबन्ध में विघ्न पड गया तो सुल्तान इसी सोच में रुग्ण हा गया। वह थत्तह (थट्टा) की ओर, जहाँ तगी ने शरण ले रक्खी थी, उन लोगो को बन्दी बना कर मार डालने के लिये चल खडा हुआ। कुछ दिन पश्चात् वह स्वस्थ हो गया। खुरासान के बादशाह के नायब अमीर करगन ने, उल्तून बहादुर मुगल के साथ ५००० सवार सुल्तान को सहायतार्थ भेजे थे। सुल्तान ने उल्तून बहादुर तथा उसकी सेना को अत्यधिक इनाम प्रदान किया और उन्हे सम्मानित किया। वे सुल्तान के साथ रहे। जब सुल्तान थत्तह (थट्टा) के निकट पहुचा तो उसका वही रोग पुनः आरम्भ हो गया और २१ मुहर्रम ७५२ हि० (२० मार्च, १३५१ ई०) को सुल्तान सिन्धु नदी के तट पर मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसने २७ वर्ष तक राज्य किया।

—— ——

तारीखे मुहम्मदी

[लेखक—मुहम्मद विहामद खानी]

[ब्रिटिश म्युजियम मैनुसक्रिप्ट]

(३९५ अ) ७२० हि[1] में सुल्तानुल गाजी गयासुद्दुनिया वद्दीन तुगलुक शाह बड़े-बड़े मलिकों तथा प्रतिष्ठित अमीरों की सहमति से शुभ मुहूर्त्त में कूश्के सीरी (सीरी के राज भवन) में सिंहासनारूढ़ हुआ।.........

(३९५ ब) उसने ७२१ हि० (१३२१ ई०) में अपने ज्येष्ठ पुत्र जौना मलिक अर्थात् सुल्तान मुहम्मद को, जिसकी उपाधि उस समय उलुग खाँ थी, राजसी ठाठ बाट तथा शाही गौरव के साथ अरगल की ओर, जो तिलंग का एक बहुत बड़ा प्रदेश है, भेजा। बदायूं, चन्देरी, अवध, बाँगर मऊ तथा अन्य अक्ताओं की सेनायें उसकी शुभ सवारी के साथ भेजी। (३९६ अ) उलुग खाँ निरन्तर कूच करता हुआ देवगीर (देवगिरि) के क्षेत्र में पहुँच गया। वहाँ की समस्त सेनायें उसके साथ रवाना हुईं। जब विजयी सेनायें अरगल के क्षेत्र में जो तिलंग की राजधानी है पहुँची तो अरगल के कोट को घेर लिया गया। मजनीक तथा अरादे की तैयारियाँ होने लगीं। नित्य भीषण युद्ध तथा घोर रक्तपात होता था। कुछ दिन उपरान्त इस्लामी सेनाओं को विजय प्राप्त हुई और अरगल का बाहरी कोट युद्ध द्वारा विजय कर लिया गया। दुष्ट काफिर भीतरी कोट में घुस गये। अन्त में सन्धि का प्रयत्न करके इस्लामी सेना को धन तथा हाथी देकर लौटा देने की इच्छा करने लगे। उलुग खाँ अर्थात् सुल्तान मुहम्मद सधि करना स्वीकार न करता था और कोट का द्वार खुलवाने का अत्यधिक प्रयत्न कर रहा था और कोट पर विजय प्राप्त होने वाली ही थी कि इसी बीच में कुछ दिन तक देहली से सन्देश-वाहक न पहुंचे। उबैद कवि तथा शेख जादा दमिश्की ने, जो बहुत बड़े षड्यन्त्रकारी थे, षड्यन्त्र खड़ा कर दिया और सेना में यह किम्वदन्ती उड़ा दी कि (३९६ ब) सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह का निधन हो गया और देहली का शासन प्रबन्ध छिन्न-भिन्न हो गया है। इसी कारण सभी मार्ग पूर्णतया बन्द हो गये हैं। उन दोनों दुष्टों ने इस प्रकार के अनुचित समाचार बड़े बड़े मलिकों तथा प्रतिष्ठित अमीरों तक पहुँचाये। इस समाचार से मलिक तिमुर, मलिक तिगीन मलिक मुद (मुख) अफगान तथा मलिक काफूर मुहर दार जोकि प्रतिष्ठित अलाई मलिक थे, उलुग खाँ अर्थात् सुल्तान मुहम्मद से भयभीत हो गये और अपनी सेना तथा सहायकों सहित (शाही) सेना के शिविर से पृथक् हो गये। उलुग खाँ शाही सेना लेकर देवगीर (देवगिरि) की ओर चल दिया।

जब देहली से समाचार-वाहक निरन्तर आने लगे तो वे मार्ग ही से अरगल की ओर भाग गये। मलिक तिमुर कुछ सवारों के साथ काफिरों के मध्य में पहुंच गया। उसकी वहीं मृत्यु हो गई। मलिक तिगीन भी हिन्दुओं के हाथ पड़ गया और देवगीर (देवगिरि) भेज दिया गया। मलिक काफूर मुहर दार, उबैद कवि तथा कुछ अन्य विद्रोही बन्दी बना कर उलुग खाँ की सेवा में लाये गये। उन्हें बन्दी बना कर देहली भेज दिया गया। सुल्तान तुगलुक शाह ने उन्हें जीवित फाँसी पर चढ़ा दिया। मलिक तिगीन के सभी सहायकों को कठोर दण्ड दिये गये। उन दिनों सीरी के कूश्क में इतने कठोर दण्ड दिये गये जिससे सभी षड्यन्त्रकारियों को शिक्षा प्राप्त हो गई।

---

१ पुस्तक में ७१० हि० है जो पुस्तक नकल करने वाले की भूल है।

दूसरी बार इस्लामी सेना अरगल के किले पर पहुँची और पहुँचते ही बाहरी कोट (३९७ अ) पर विजय प्राप्त करली। कुछ दिन उपरान्त युद्ध करके दूसरा कोट भी जीत लिया। लुद्दर देव (रूद्रदेव) तथा समस्त रानाओं और उनके खजानों, बहुमूल्य वस्तुओं तथा घोड़े और हाथियों पर अधिकार जमा लिया गया। विजय-पत्र देहली भेज दिये गये। उसने समस्त तिलग में अपने वाली (अधिकारी) नियुक्त कर दिये। तिलग से उसने जाजनगर पर चढाई की। वहाँ से युद्ध के हाथी प्राप्त करके वह अरगल पहुँचा। वहाँ से वह सुल्तान तुगलुक की सेवा में पहुँचा। सुल्तान ने उसे अत्यधिक इनाम तथा खिलअतें प्रदान की।

७२४ हि० (१३२३-२४ ई०) में सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह ने सेना लेकर लखनौती की ओर प्रस्थान किया। उलुग खाँ अर्थात् सुल्तान मुहम्मद को अपना उत्तराधिकारी बना कर चत्र एव दूरबाश प्रदान किये और स्वय निरन्तर कूच करता हुआ लखनौती की ओर चल दिया। ईश्वर की कृपा से इस्लामी सेना ने कठिनाइयो को सुगमता-पूर्वक झेलते हुये मार्ग का पार कर लिया। जब सुल्तान की विजयी सेनायें तिरहुट के पास पहुची तो (३९७ ब) लखनौती का शासक सुल्तान नासिरुद्दीन सुल्तान गयासुद्दीन के दरबार में उपस्थित हुआ और राज्य के स्तम्भो (अमीरो) में प्रविष्ट हो गया। तातार जिसकी उस समय उपाधि तातार मलिक थी और सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक द्वारा पुत्र कहे जाने के कारण बडा सम्मानित था और जफराबाद का मुक्ता हो गया था मलिको और अमीरो के साथ आगे भेजा गया। वह समस्त बगाल-भूमि को ध्वस करके सुल्तान बहादुर सरीखे प्रतापी बादशाह की गर्दन में रस्सी बाँध कर सुल्तान गयासुद्दीन के द्वार के समक्ष लाया और उस प्रदेश में बडा पौरुष तथा वीरता प्रदर्शित की। थोडे समय में लखनौती, सत गाँव, तथा सुनार गाँव, जो कि पृथक् प्रदेश है, जीत लिये गये और तुगलुक शाह के अधीन हो गये। सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह ने कृपा दृष्टि दिखाते हुये सुल्तान नासिरुद्दीन को, जिसने सब प्रथम उसका स्वागत किया था, चत्र तथा दूरबाश प्रदान किये और लखनौती के राज सिंहासन पर उसे आरूढ कर दिया। सुनार गाँव के शासक बहादुर को, जो बडा ही षडयन्त्रकारी तथा उपद्रवी था, बन्दी बना कर देहली भेज दिया और विजय-पत्र देहली भेज दिये।

अपनी इच्छा की पूर्ति के उपरान्त वह वापस हुआ और निरन्तर कूच करता हुआ तुगलुकाबाद के उपान्त में पहुँचा और उस कूश्क में, जो कि नव निर्मित था, उतरा। दैवी दुर्घटना से वह कूश्क भूमि पर गिर पड़ा और उसके नीचे दब जाने के कारण सुल्तान का (३९८अ) निधन हो गया। उसका पुत्र सुल्तान मुहम्मद देहली के राजसिंहासन पर आरूढ हुआ। .. उसने चार वर्ष तथा कुछ समय तक राज्य किया।

सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह के निधन के उपरान्त उसका ज्येष्ठ पुत्र जौना मलिक अर्थात् मुहम्मद बिन तुगलुक शाह बड़े-बड़े मलिको तथा प्रतिष्ठित अमीरो की सहमति से एक शुभ मुहूर्त में ७२५ हि० में तुगलुकाबाद में राज सिंहासन पर आरूढ हुआ। सिंहासनारोहण के प्रारम्भ ही से उसने अपनी अत्यधिक दया के कारण अपत अपार राज कोष के द्वार दूर तथा निकट के लोगो पर खोल दिये और विद्रोहियो तथा उपद्रवकारियो के विरुद्ध रक्तपात (३९८ ब) तथा युद्ध के हेतु कटि बद्ध हो गया। सिंहासनारोहण के ४० दिन उपरान्त वह देहली नगर में प्रविष्ट हुआ और राज भवन में पुन प्राचीन सुल्तानो के राजसिंहासन पर आरूढ हुआ। सोने के दीनार तथा चाँदी के दिरहम हाथियो के हौदज पर रखवा कर प्रत्येक गली तथा मुहल्ले में लोगो पर न्योछावर किये गये। उस काल के प्राचीन लोग इस बात से सहमत थे कि न्योछावर की इतनी अधिकता किसी समय भी न हुई थी। देहली सोने चाँदी के तन्कों की अधिकता से उद्यान के समान लाल फूलो तथा सैकडों पखडियो वाले फूलों से

परिपूर्ण होगया। लोग माला माल हो गये। सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक शाह बड़ा ही आलिम, फाज़िल, न्यायकारी तथा दानी बादशाह था। ईश्वर की कृपा से राज्य व्यवस्था तथा शासन प्रबन्ध के उत्थान में इस प्रतापी बादशाह को जो सफलता प्राप्त हुई वह पिछले तथा भूतकाल के सुल्तानो को कम प्राप्त हो सकी मानो शासन व्यवस्था के वस्त्र तथा राज्य व्यवस्था की खिलअत उसके शुभ शरीर पर सी गई हो। वह इतना अधिक दानी था कि समस्त संसार एक तुच्छ भिखारी को दान कर देता था।······ यदि भूतकाल के सुल्तान खज़ाने से अपार धन-सम्पत्ति प्रदान करते थे तो सुल्तान मुहम्मद शाह समस्त खजाना दान (३६६ अ) कर देता था। उसने सन्जर बदख़शानी को ८० लाख तन्के तथा मौलाना नासिरुद्दीन तवील एवं मलिकुन्नुदमा को अत्यधिक सोने के सिक्के एवं रत्न प्रदान किये।

जब समस्त हिन्दुस्तान, देवगीर (देवगिरि) गुजरात, बंगाल, तिलंग, जोकि बहुत ही विशाल हैं, उस सम्मानित बादशाह के अधीन हो गये और कम्पिला, घोर सम्दा (द्वार समुद्र), माबर तथा समुद्र तट के सभी प्रदेश उसे खराज अदा करने लगे तो ७२७ हि० (१३२६-२७ ई०) में सुल्तानुल आज़म मुहम्मद बिन तुगलुक शाह ने अत्यधिक सेना लेकर देवगीर (देवगिरि) की ओर प्रस्थान किया और देवगीर का जो कुफ़्र की राजधानी था, दौलताबाद नाम रक्खा और उसे इस्लाम की राजधानी इस कारण से बनाया कि आकाश का चुम्बन करने वाली इस्लामी पताकाओं की छाया में अत्यधिक इक्लीमें आ गई थीं और राजधानी को ऐसे स्थान पर होना चाहिये जहाँ से सभी इक्लीमें समान दूरी पर हो और वह स्थान केन्द्र में हो जिससे प्रत्येक देश (प्रदेश) की उत्कृष्ट बातो तथा उपद्रव का हाल राजसिंहासन के समक्ष पहुँचता रहे। इस उद्देश्य से, जिसका उल्लेख हो चुका है, उसने देवगीर (देवगिरि) को अपनी राजधानी बनाया और उसका नाम दौलताबाद रक्खा। उसने अपनी माता मलिकये जहाँ (३६९ ब) (मख़दूमये जहाँ) को आदेश दिया कि वह मलिको तथा अमीरो के परिवार को लेकर देहली से दौलताबाद की ओर प्रस्थान करे। उस सदाचारी मलका ने देहली के अमीरों के समस्त परिवार के साथ राजधानी दौलताबाद की ओर प्रस्थान किया। इस मलका के पहुचने पर दौलताबाद सय्यदों, प्रतिष्ठित तथा गण्यमान्य व्यक्तियो से परिपूर्ण हो गया और प्रत्येक को देहली में जो इदरार तथा इनाम प्राप्त होते थे उससे अधिक प्राप्त होने लगे।

उपर्युक्त वर्ष के अन्त में किशलू खाँ अर्थात् बहराम ऐबा ने सिन्ध में विद्रोह कर दिया और चत्र धारण कर लिया। जब उसके विद्रोह के समाचार सुल्तान के कानों तक पहुँचे तो वह दौलताबाद से देहली पहुँचा और देहली से शुभ मुहूर्त्त में बहुत बड़ी सेना लेकर बाहर निकला और मुल्तान की ओर प्रस्थान किया। किशलू खाँ भी एक भारी सेना लेकर बाहर निकला और सुल्तान से युद्ध किया और पहले ही आक्रमण में पराजित हो गया। वह (४०० अ) कृतघ्न सुल्तान के दासो द्वारा मार डाला गया।········· बहराम ऐबा के समस्त सहायक तथा सम्बन्धी मार डाले गये और उसका पूरा शिविर नष्ट हो गया। सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक शाह मुल्तान के किले के द्वार के समक्ष आया और वहाँ के निवासियो के रक्त की नदी बहाना चाहता था किन्तु शेखुल इस्लाम शेख रुक्नुद्दीन की सिफारिश पर मुल्तान वालों को क्षमा कर दिया और विजय तथा सफलता प्राप्त करके देहली की ओर लौट गया।

वहाँ उसने आदेश दिया कि देहली के सभी निवासियों, साधारण तथा उच्च श्रेणी वालो और कस्बो तथा शहर (देहली) के निकट के लोगों के काफले दौलताबाद की ओर प्रस्थान करें। इस बात से शहर (देहली) इस प्रकार रिक्त हो गया कि कुछ दिनो तक कोट के द्वार बन्द रहे। तत्पश्चात् उसने आदेश दिया कि बड़े बड़े कस्बो के आलिमो, सूफियों, पवित्र लोगों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियो को इधर उधर से लाकर शहर (देहली) में बसाया जाय।

जब सुल्तान मुहम्मद शाह दो तीन वर्ष तक दौलताबाद में निवास करता रहा तो उन्ही दिनो में तुर्माशीरी की घटना घटी। वह दुष्ट बहुत भारी सेना लेकर तिरमिज से हिन्दुस्तान पहुँचा और दोआब के मध्य के बहुत से नगर विजय कर लिये तथा प्रजा की हत्या कर दी एव उन्हे बन्दी बना लिया। सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक शाह भी एक भारी सेना लेकर यमुना नदी के तट पर पहुँचा और वहाँ अपने शिविर लगा दिये। यमुना नदी दोनो सेनाओ के मध्य (४०० ब) में थी। जब दुष्ट तुर्माशीरीन ने मुसलमानो की शक्ति तथा उनका ऐश्वर्य देखा तो तुरन्त लौट गया और तिरमिज़ पहुच गया।

उसी तिथि से समय की कुदृष्टि का प्रभाव आरम्भ हो गया और राज्य के कार्यों में विघ्न पडने लगा। इसका प्रारम्भ मलिक बहाउद्दीन गर्शास्प के विद्रोह से हुआ जो सुल्तान तुगलुक की बहिन का पुत्र था। उसने भक्कर में विद्रोह कर दिया और दौलताबाद पर चढाई की तथा शाही सेना से युद्ध किया और पराजित होकर कम्पिला के राय के पास भाग गया। इस्लामी सेना ने कम्पिला में उसका पीछा किया और कम्पिला पर अधिकार जमा लिया। कम्पिला के राय तथा उसके परिवार एव खज़ाने और धन-सम्पत्ति पर भी अधिकार कर लिया। बहाउद्दीन गर्शास्प मलिक उस स्थान से अपने परिवार को नष्ट कराके धोर समुद्र (द्वार समुद्र) की ओर चला गया। वहाँ उसे बन्दी बना कर दौलताबाद भेज दिया गया। सुल्तान मुहम्मद ने उसकी हत्या करा दी और हाथी के पाँव के नीचे फिकवा दिया।

दूसरा विघ्न यह था कि ४० हज़ार सवार कराचिल पर्वत की ओर भेजे गये। जब इस्लामी सेना पर्वत के सकरे मार्ग में पहुँची तो काफिरो ने मार्ग पर अधिकार जमा लिया और उनकी वापसी रोक दी। इस प्रकार समस्त सेना का वही विनाश हो गया और कोई भी जीवित न लौट सका।

तीसरा विघ्न बहराम खाँ की मृत्यु तथा उसके साथियों के बगाल में छिन्न भिन्न होने के समाचार पहुँचने से हुआ। क़दर खाँ शाही आदेशानुसार लखनौती पहुचा। वह भी कोई सफलता प्राप्त न कर सका और वह समस्त परिवार एव धन सम्पत्ति तथा खज़ाने सहित विद्रोहियों द्वारा बन्दी बना लिया गया और वह इकलीम (राज्य) उसके हाथ से निकल गई (४०१ अ) और पुन: अधिकार में न आ सकी।

चौथा विघ्न माबर में सैयिद एहसन का विद्रोह था। वह सैयिद इबराहीम खरीतादार का पिता था। उसने वहाँ के सभी अमीरों की हत्या करके शाही खज़ाना अपने अधिकार में कर लिया तथा माबर के प्रदेश का शासक बन बैठा। यह इक़लीम भी शाही दासों के हाथ से निकल गई।

पाँचवाँ विघ्न यह था कि सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक शाह ने कम्पिला प्रदेश, कम्पिला के राय के एक सम्बन्धी को दे दिया। उस हरामखोर ने उस प्रदेश पर अधिकार जमा लिया।

चूँकि दौलताबाद की जलवायु देहली वालो के अनुकूल सिद्ध न हुई, अत अधिकांश लोग रुग्ण हो गये। यह हाल राजसिंहासन के समक्ष प्रस्तुत किया गया। सुल्तान ने आदेश दिया कि समस्त प्रजा मनिकये जहा के साथ देहली भेज दी जाय। इस समय देहली के आस पास घोर अकाल पडा था। इस कारण बहुत से लोग मरहट भूमि में रह गये और कुछ मार्ग में नष्ट हो गये। राज्य व्यवस्था में बडा विघ्न पड गया। शाही पताकाओं ने दौलताबाद से तिलग की इक़लीम के शासन प्रबन्ध की व्यवस्था के लिये प्रस्थान किया। दौलताबाद कुतलुग खाने मुअज्जम को सौंप दिया गया। तिलग की इक़लीम (राज्य) मलिक मक़बूल नायब वज़ीर को, जो सुल्तान फीरोज़ शाह के राज्य काल में वज़ीर खाने जहाँ हो गया

(४०१ ब) था, प्रदान कर दी गई और (सुल्तान) शीघ्रातिशीघ्र वहाँ से दौलताबाद की ओर लौट गया। मार्ग में वह रुग्ण हो गया। जब वह दौलताबाद, देवगीर (देवगिरि) पहुचा तो मलिक ताजुद्दीन होशग के विद्रोह के कारण, जो पर्वत में घुस गया था, उसे दौलताबाद में लगभग तीन दिन तक ठहरना पडा। तत्पश्चात् उसने होशग को कुतलुग खाँ के सिपुर्द कर दिया और शिहाबुद्दीन सुल्तान की उपाधि नुसरत खाँ रख दी। बिदर का किला तथा उसके आसपास के समस्त स्थान उसे प्रदान कर दिये और स्वय रुग्णावस्था में देहली की ओर प्रस्थान किया। यद्यपि देहली पहुँच कर बादशाह स्वस्थ हो गया था किन्तु देहली अकाल के कारण बडी दुर्दशा को प्राप्त हो गया था और शहर के आसपास के स्थान बहुत बुरी दशा में तथा परेशान थे। इसी अवस्था में शाहू अफगान ने मुलतान में विद्रोह कर दिया और नायब वजीर की हत्या कर दी। जब शाही सेनायें उस ओर पहुँची तो वह मुलतान के क़िले को त्यागकर सुलेमान पर्वत में अपने कबीले वालो—अफग़ानो के पास चला गया। यह विद्रोह ईश्वर की कृपा से शीघ्र ही शान्त हो गया और शाही पताकायें शाहू के युद्ध में विजय तथा सफलता पाकर लौट गईं। जब शाही पताकायें सुनाम के उपान्त में पहुँची, तो सुल्तान की माता मखदूमये जहाँ के निधन के समाचार प्राप्त हुये। उसके नाम पर कुरान का पाठ हुआ और अत्यधिक (४०२ अ) दान पुण्य किया गया। इस मलका के निधन से एक बहुत बडी हानि हुई। कुछ समय उपरान्त मलिक मकबूल नायब वजीर जो तिलग की इकलीम (राज्य) का वाली (अधिकारी) था, बिना किसी उद्देश्य के राजधानी में पहुँच गया और वह इकलीम हाथ से निकल गई।

सुल्तान मुहम्मद अकाल के कारण देहली से कटिहर पहुँचा और वह प्रदेश विध्वन्स कर दिया और कम्बज तथा बतयाबी के क्षेत्र में गगा तट पर एक उच्च स्थान पर ठहरा और उसी स्थान को अपने निवास के लिये चुन लिया। उस स्थान का नाम सुर्ग द्वारी (स्वर्गद्वारी) रक्खा। वहाँ हिन्दुस्तान की ओर से अत्यधिक अनाज तथा धन सामग्री आने लगी और लोग समृद्ध होने लगे। उन दिनो ऐनुलमुल्क के भाई, जिनके नाम शहरुल्लाह तथा फ़जलुल्लाह थे और जो अवध तथा जफराबाद के स्वामी थे, अत्यधिक दासता, एव निष्ठा प्रदर्शित करते थे। उन्ही के प्रयत्न से कडे में निजाम माईं का विद्रोह शान्त हो गया। जिस समय सुल्तान स्वर्गद्वारी में निवास कर रहा था, शहर (देहली तथा शहर के उपान्त के लोग अकाल के कारण हिन्दुस्तान पहुँच गये। यद्यपि उन्हे मार्ग मे रोका जाता किन्तु इसका कोई लाभ न होता और लोग हिन्दुस्तान पहुँच जाते। सर्व साधारण तथा उच्च श्रेणी के व्यक्ति इतनी बडी सख्या में ऐनुलमुल्क के भाइयो के पास एकत्र हो गये कि उन लोगो को बादशाही का लोभ होने लगा। इसी बीच में उनका बडा भाई (४०२ ब) ऐनुल मुल्क दरबार से भाग कर अपने भाइयो के पास पहुँच गया। उसके भाई स्वर्गद्वारी के तास कोस पर पहुच गये थे। जब ऐनुलमुल्क उनके पास पहुचा तो वे तुरन्त कई हजार वीर सवार लेकर गगा तट पर पहुँच गये और हाथी घोडो, जो उनको देख भाल के लिये दिये गये थे, पर उन्होन अधिकार जमा लिया और उन्हे अपने शिविर में ले गये। एक बहुत बडा उपद्रव उठ खडा हुआ। सुल्तान मुहम्मद कुछ दिन उपरान्त स्वर्गद्वारी से कन्नौज की ओर रवाना हुआ और उस नगर के उपान्त में अपने शिविर लगा दिये। ऐनुलमुल्क तथा उसके भाइयो की पहुच लेखनी तक थी और वे तलवार चलाना न जानते थे। वे बँगरतू (बाँगरमऊ) की नदी पार करके सुल्तान के लश्कर के समक्ष उतर पडे। दूसरे दिन प्रात काल के पूर्व ऐनुलमुल्क तथा उसके भाई एक बहुत बडी सेना लेकर शाही शिविर के निकट पहुंच गये और युद्ध प्रारम्भ हो गया। जैसे ही सुल्तान

उन कृतघ्नो के निकट पहुँचा, वे पराजित हो गये और उन अधर्मी विद्रोहियों की सेना छिन्न-भिन्न हो गई। ऐनुलमुल्क की गर्दन रस्सी से बाँधी गई और वह सुल्तान के समक्ष लाया गया। चूंकि वह शान्ति प्रिय एवं योग्य था, अत सुल्तान ने उसे क्षमा कर दिया और उसके भाइयों को, जो विद्रोह तथा दुराचार की जड थे, हत्या करा दी।

(४०३ अ) इसी बीच में यह समाचार प्राप्त हुये कि मरहट भूमि में पुन विद्रोह हो गया। सर्व प्रथम शिहाबुद्दीन सुल्तानी ने, जो नुसरत खाँ हो गया था, विद्रोह कर दिया। दूसरे अली शाह ने, जो जफर खाँ अलाई का भतीजा तथा कुतलुग खाँ का अमीर सदा था, विद्रोह कर दिया और गुलबर्गे के शासक तथा बिदर के किले के नायब की हत्या करदी। देवगीर (देवगिरि) के बडे बडे अमीरो तथा कुतलुग खाँ के धावो (समाचार वाहको) की दो बार हत्या करदी। कुतलुग खाँ अपार तथा असख्य सेना लेकर बिदर के किले के निकट पहुँचा और उसे घेर लिया। अन्त में शिहाबुद्दीन सुल्तानी एव अली शाह को क्षमा प्रदान करके किले के बाहर निकाला और दोनो को अपने विश्वासपात्रो के हाथ सुल्तान के पास भेज दिया और अपनी योग्यता से किला विजय कर लिया।

७४४ हि० (१३४३-४४ ई०) मे हाजी सईद सरसरी मिस्र मे देहली आया और सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक शाह के लिये खिलाफत[१] का अधिकार पत्र तथा अमीरी की खिलअत लाया। इस बादशाह ने अपनी निष्ठा के कारण समस्त सद्रो तथा राजधानी के प्रतिष्ठित लोगो को लेकर उसका स्वागत किया और उसका बडा आदर सम्मान किया और अमीरुल मोमिनीन (खलीफा) से राज्य व्यवस्था सम्बन्धी सभी प्रकार के आदेश देने की प्रार्थना की (लिखी) और बडे दीन भाव मे विस्तारपूर्वक एक प्रार्थना पत्र खलीफा को लिखा और उसे (४०३ ब) बहुमूल्य रत्नो सहित शेख हाजी रजब सरसरी के हाथ खलीफा के पास मिस्र भेजा। दो वर्ष उपरान्त पुन शेख हाजी तथा मिस्र के शेखुश शुयूख अधिकार पत्र एव उपहार लेकर देहली पहुचे। सुल्तान ने उनका अत्यधिक आदर सम्मान किया। दूसरी बार पुन मखदूम जादा अब्बासी भरौच से अधिकार-पत्र तथा खलीफा के उपहार मिस्र से लाया। इस बार भी उसने उसका बडा आदर सम्मान किया। सुल्तान मुहम्मद को अब्बासी खलीफाओं द्वारा जो कुछ प्राप्त हुआ, वह खुरासान तथा हिन्दुस्तान के सुल्तानो में किसी को कम ही प्राप्त हो सका होगा। उसने मलिक कुबूल खलीफती को, जिसकी इसके पूर्व उपाधि मलिक कबीर थी, मलिक खलीफा बना दिया। उसकी उपाधि कुबूल खलीफती रक्खी।

जिस वर्ष शाही पताकाओं की छाया गुजरात पर पडी, सुल्तान द्वारा कुतलुग खाँ को दौलताबाद बुलवाने का फरमान निकाला गया। कुतलुग खाँ अपने समस्त सहायको को लेकर सुल्तान की सेवा मे पहुचा। देवगीर (देवगिरि) की इकलीम, एमादलमुल्क सरतेज सुल्तानी को प्रदान हुई। रमजान ७४५ हि० (जनवरी, १३४५ ई०) के अन्त में परवर्दा (बरौदा) तथा दभोई (दभोई) के अमीराने सदा के विद्रोह के समाचार प्राप्त हुये जो अजीज खम्मार के कठोर दण्डो के कारण उठ खडा हुआ था। सुल्तान ने तुरन्त उन पर चढाई की। जब शाही पताकाये भरौंच के उपान्त में पहुँची तो दुष्ट लोग भाग खडे हुये और देवगीर (४०४ अ) (देवगिरि) चल दिये। मलिक मकबूल नायब वजीर न एक भारी सेना लेकर उनका पीछा किया और नर्बदा तट पर उनसे युद्ध किया। उनके समस्त परिवार को बन्दी बना लिया। परवर्दा (बरौदा) के कुछ बडे-बडे अमीराने सदा बन्दी बना लिये गये।

तत्पश्चात् सुल्तान ने दवगीर (देवगिरि) के अमीराने सदा को बुलवाने का आदेश भेजा। उन्होन भयभीत होकर विद्रोह कर दिया। कुतलुग खाँ के भाई मौलाना निजामुद्दीन

१ खलीफा नियुक्त किये जाने।

को बन्दी बना लिया और शाही खज़ाना अपने अधिकार में कर लिया। परवर्दा (बरौदा) के शेष अमीराने सदा उन विद्रोहियों से मिल गये और एक बहुत बड़ा उपद्रव उठ खड़ा हुआ। जब सुल्तान को यह समाचार प्राप्त हुये तो उसने भरौंच से देवगीर (देवगिरि) पर चढ़ाई की। उसके पहुंचते ही समस्त दुष्ट छिन्न-भिन्न तथा पराजित हो गये। सुल्तान ने वह राज्य एमादुलमुल्क सरतेज़ सुल्तानी को प्रदान कर दिया किन्तु जो प्रदेश दुर्भाग्य से छिन्न-भिन्न हो रहे थे, मनुष्य के प्रयत्न से सुव्यवस्थित न हो सके। हसन कांगू तथा अन्य विद्रोहियों ने एमादुलमुल्क पर आक्रमण करके उसकी हत्या कर दी। हसन कांगू दौलताबाद पहुँचा और उसने चत्र धारण कर लिया और अपने नाम का खुत्बा तथा सिक्का चलवा दिया। उस समय से इस समय ८३९ हि०[1] (१४३५-३६ ई०) तक जोकि इस इतिहास के सकलन की तिथि है, राजसिंहासन, मुकुट एवं दौलताबाद का राज्य उसकी संतान द्वारा सुशोभित है। सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ शाह के उपरान्त कोई भी बादशाह उस प्रदेश में सेना न भेजा (४०४ ब) सका और उस प्रदेश को अपने अधिकार में न कर सका। वह प्रदेश हसन कांगू की संतान के ही अधीन रहा।

जब सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ शाह देवगीर (देवगिरि) के राज्य से लौटा तो मार्ग में उसे तग़ी हरामखोर के, जो सफदर बेग का दास था, विद्रोह के समाचार प्राप्त हुये। वह निरन्तर कूच करता नर्बदा तट पर पहुंचा। जब तग़ी हरामखोर को विजयी सेना के पहुंचने के समाचार प्राप्त हुये तो वह भाग कर खम्बायत की ओर चल दिया। मलिक यूसुफ बुगरा कई हज़ार सवारों के साथ उस हरामखोर के विनाश हेतु भेजा गया। जब तग़ी से युद्ध होने लगा तो दुर्भाग्यवश मलिक यूसुफ बुगरा तथा कुछ बड़े बड़े अमीर युद्ध में मार डाले गये और सेना पराजित होकर पुनः भरौंच पहुंची। सुल्तान ने स्वयं एक भारी सेना लेकर नर्बदा नदी पार की और खम्बायत की ओर प्रस्थान किया। तग़ी हरामखोर खम्बायत से असावल की ओर चल दिया। शाही पताकाओं ने भी असावल की ओर प्रस्थान किया। तग़ी वहाँ से नहरवाला चल दिया। सुल्तान ने मलिक यूसुफ बुगरा के पुत्र को एक भारी सेना देकर नहरवाले की ओर भेजा। मार्ग में मलिक यूसुफ बुगरा के पुत्र ने असावधानी दिखलाई। मक्कार तग़ी नहरवाला के किले से रात्रि के अंधेरे में अपने सहायकों के साथ निकल कर थट्टा तथा दमरीला की ओर भाग गया। सुल्तान उसके पीछे पीछे नहरवाला पहुंचा और तिलग हौज़ के तट पर पड़ाव (४०५अ) किया। कुछ दिन उपरान्त वह एक शुभ मुहूर्त में अपनी पताकाओं को थट्टा की ओर ले गया। जब वह सिन्धु नदी के तट पर पहुंचा तो समस्त प्रदेशों की सेनायें उसके पास पहुँच गईं। विजयी सेनाओं ने एक शुभ मुहूर्त में नदी पार की और दूसरी ओर पड़ाव किया। सुल्तान ने उसी स्थान से उल्तून बहादुर को कई हज़ार वीर मुग़ल सवारों के साथ (आगे) भेजा। अमीर रोग़न सुल्तान की सहायतार्थ (शाही) सेना से मिला और अत्यधिक इनाम तथा असंख्य खिलअतें प्राप्त कीं। वहाँ से विजयी सेनाओं ने, सिन्धु नदी के किनारे किनारे थट्टा की ओर प्रस्थान किया। तग़ी हरामखोर थट्टा के किले में शरण लिये हुये था। विजयी सेनायें थट्टा से बीस कोस की दूरी पर पड़ाव डाल कर मन्जनीक़ तथा अरादों की तैयारियाँ करने लगीं। थट्टा का कार्य एक ही दो दिन में सम्पन्न होने वाला था कि सुल्तान रुग्ण हो गया। २१ मुहर्रम ७५२ हि० को उसका निधन हो गया।

इस उच्च स्वभाव वाले बादशाह के राज्यकाल में धारा के आलिम, सूफी, पवित्र लोग (४०५ ब) तथा कवि बहुत बड़ी संख्या में थे। तारीखे फीरोज़शाही के संकलनकर्त्ता ने उनके

---

१ वास्तव में यह इतिहास ८४२ हि० (१४३८-३९ ई०) को पूरा हुआ।

नाम विस्तार से लिखे हैं। यह किता[1] मलिक ताजुद्दीन एहतेसान दबीर ने उस बादशाह के विषय में अपनी पुस्तक बसातीन में लिखा है। उसे इस स्थान पर लिखा जा रहा है :

ये हैं, हे स्वामी ! जो तेरी चौखट पर गर्व करते हैं,
रूम तथा चीन के सैकड़ो बादशाह परदा दारी (रक्षा) की सेवा में।
मैं तेरे योग्य कण भर भी सेवा न कर सका,
मैं सूर्य के समान ससार में प्रसिद्ध हो गया।
मैं आँख की पुतली के समान प्रिय तथा प्रसिद्ध हो गया,
तू ने महती कृपा करके मुझे स्वीकार किया,
यदि मैं हज़ार वर्ष तेरी देन के प्रति कृतज्ञता प्रकट करूँ,
तो भी मेरी जिह्वा को स्वीकार करना होगा कि यह कम है।

सुल्तान मुहम्मद ने अपनी अन्तिम अवस्था में मलिक एहतेसान को उपहार देकर दूत नियुक्त करके सुल्तान अबू सईद के पास तबरेज़ भेजा। सुल्तान मुहम्मद के निधन के उपरान्त मलिक एहतेसान हिन्दुस्तान लौट आया और मार्ग में थट्टा के क्षेत्र में मृत्यु को प्राप्त हो गया।

---

१ छोटी कविता।

तबक़ाते अकबरी

[लेखक—निज़ामुद्दीन अहमद]

[प्रकाशन—कलकत्ता १९११ ई०]

(१९७) जब उलुग़ खाँ ने सुना कि उसका पिता शीघ्रातिशीघ्र पहुँच रहा है तो उसने आदेश दिया कि अफ़ग़ानपुर के निकट जो तुग़लुक़ाबाद से तीन कोस है, तीन दिन में एक महल बनवाया जाय जिससे सुल्तान वहाँ पहुँच कर उतरे और रात्रि वहीं व्यतीत करे। शहर (देहली) के लोग उसका स्वागत करके उसकी सेवा में उपस्थित हों। प्रात काल एक शुभ मुहूर्त्त में बादशाही ऐश्वर्य से शहर में प्रविष्ट हो। जब सुल्तान उस महल में पहुँचा तो तुग़लुक़ाबाद में खुशियाँ मनाई गईं और कुब्बे सजाये गये। उलुग खाँ मलिको, अमीरों तथा शहर के गण्यमान्य व्यक्तियों को लेकर स्वागतार्थ बाहर निकला और उसकी सेवा में उपस्थित हुआ। सुल्तान तुग़लुक़ शाह उन लोगों के साथ जो उसके स्वागतार्थ आये थे, उस महल में बैठा और खास दस्तरख्वान बिछाया गया। जब भोजन उठाया गया तो लोग यह समझे कि सुल्तान शीघ्रातिशीघ्र सवार होगा अत वे बिना हाथ धोये निकल आये। सुल्तान हाथ धोने के लिये वहीं रह गया। इसी बीच में महल की छत गिर गई और उसके नीचे दब कर सुल्तान की मृत्यु हो गई। उसने चार वर्ष तथा कुछ मास तक राज्य किया।

(१९८) कुछ इतिहासो में लिखा है कि चूँकि महल नया-नया बना था और ताज़ा था, सुल्तान तुग़लुक़ शाह के उन हाथियों को दौड़वाने के कारण, जो वह अपने साथ बंगाले से लाया था, महल की भूमि बैठ गई और छत गिर पड़ी। बुद्धिमान लोगो से यह छिपा न होगा कि इस महल के बनवाने से जिसकी कोई आवश्यकता न थी यह सदेह होता है कि उलुग खाँ ने अपने पिता की हत्या करना निश्चय कर लिया होगा। ऐसा ज्ञात होता है कि तारीखें फीरोज शाही के लेखक ने, चूँकि अपना इतिहास फीरोज शाह के राज्यकाल में लिखा था, और सुल्तान फ़ीरोज़, सुल्तान मुहम्मद का बड़ा भक्त था, अत उसने उसका पक्ष लेकर यह बात नहीं लिखी।

इस तुच्छ ने बहुत से विश्वास के योग्य लोगो से बार बार सुना है और यह बात प्रसिद्ध है कि चूँकि सुल्तान तुग़लुक़, शेख निज़ामुद्दीन औलिया से खिन्न था, उसने शेख के पास यह सदेश भेज दिया था कि 'जब मैं देहली पहुँचू तो शेख शहर के बाहर चले जायें।' शेख ने कहा "अभी देहली दूर है।" यह वाक्य हिन्दुस्तान में लोकोक्ति बन गया है। प्रसिद्ध है कि सुल्तान मुहम्मद तुग़लुक़ शेख का बड़ा भक्त था। उसी वर्ष शेख निज़ामुद्दीन तथा अमीर खुसरो की मृत्यु हुई।

सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ शाह

(१९९) उसके स्वभाव में दानशीलता इस सीमा तक थी कि दान करते समय पलक मारते मारते खज़ानो को रिक्त कर देता। धनी, भिखारी, पराये तथा अपने उसकी दृष्टि में समान थे। जब उसने सुल्तान बहादुर सुनारगामी को उसका राज्य देकर विदा किया तो खज़ाने में जितना नक़्द धन था, सब प्रदान कर दिया। मलिक ग़ज़नी को प्रतिवर्ष १०० लाख तन्के दिया करता था। क़ाज़ी ग़ज़नी को भी इतना देता कि कोई अनुमान न

कर सकता। मलिक सन्जर बदख्शानी को ८० लाख तन्के, मलिक एमादुद्दीन को ७० लाख तन्के, सैयिद अज़द को ४० लाख तन्के और इसी प्रकार उसका इनाम लाखों से कम न होता। यह बात स्पष्ट रूप से जान लेनी चाहिये कि इन तन्कों से अभिप्राय चाँदी का तन्का है जिसमें थोड़ा सा ताँबा भी होता था और काले ८ तन्के के बराबर होता है। ••

(२१४) सुल्तान मुहम्मद ने स्वर्गद्वारी में दूसरा कार्य जो किया, वह आमिलों तथा नये वुलात (वालियों) को नियुक्त एवं प्राचीन मुतसद्दियों को पद-च्युत करना था। जब सुल्तान के समक्ष निवेदन किया गया कि मरहट एवं देवगीर (देवगिरि) प्रदेश क़ुतलुग खाँ के कारकुनों के अत्याचार एवं अपहरण के कारण नष्ट हो रहा है और वहाँ का महसूल दस से एक पहुँच गया है, तो सुल्तान ने मरहट की विलायत को सात करोड़ निश्चित करके चार शिक़ों में विभाजित किया और चार शिक़दार, सरवरुलमुल्क मुख़्लिसुल मुल्क, यूसुफ़ बुगरा तथा अज़ीज़ हिमार (खम्मार) नियुक्त किये। देवगीर (देवगिरि) की विज़ारत एमादुल मुल्क सरीर सुल्तानी को तथा धार की नियाबत (विज़ारत) उसको सौंप दी। उसने तक़ावी तथा शाही उसलूबों का भार उठाया था। क़ुतलुग़ खाँ को उसके सहायकों तथा अधीन लोगों सहित देवगीर (देवगिरि) से बुलवाया। देवगीर (देवगिरि) निवासी क़ुतलुग खाँ के प्रान से निराश तथा परेशान हो गये क्योंकि सुल्तान के कड़े दण्डों का हाल चारों ओर प्रसिद्ध हो चुका था। देवगीर (देवगिरि) के निवासी क़ुतलुग खाँ की छत्र छाया में कठोर दण्डों से सुरक्षित थे।•• •••

———

मुन्तख़बुत्तवारीख़ भाग १

[लेखक—अब्दुल क़ादिर बिन मुलूक शाह बदायूनी]

[प्रकाशन : कलकत्ता १८६८ ई०]

सुल्तान मुहम्मद आदिल बिन तुगलुक शाह

(२२५) वह उलुग खाँ था और ७२५ हि० (१३२४-२५ ई०) मे अमीरो तथा राज्य (२२६) के पदाधिकारियो की सहमति से राजसिंहासन पर आरूढ हुआ। चालीस दिन तक शोक सम्बन्धी प्रथाओ के पूर्ण हो जाने के उपरान्त वह शहर (देहली) में पिछले सुल्तानो के महल में पहुचा और अत्यधिक न्योछावर प्रदान की। अमीरो को पद तथा उपाधि वितरित की। अपने चाचा के पुत्र मलिक फीरोज को, जो सुल्तान फीरोज हुआ, नायब नियुक्त किया। इसी प्रकार अपने विश्वासपात्रों का सम्मान बढा दिया। हमीद लोइकी, मुशरिफ नियुक्त हुआ। मलिक सरतेज एमादुलमुल्क, मलिक खुर्रम जहीरुल जुयूश, मलिक पिन्दार खलजी, कदर खाँ, तथा मलिक अजीजुद्दीन यहया को आजमुलमुल्क की उपाधियाँ प्रदान हुई। उसे सत गाँव की अक्ता प्रदान की गई।

७२७ हि०(१३२६-२७ ई०) में सुल्तान ने देवगीर (देवगिरि) का सकल्प किया। देहली से उस स्थान तक मार्ग में प्रत्येक कोस पर धावे अर्थात् समाचार पहुचाने वाले पायक (पदाती) नियुक्त किये। प्रत्येक पडाव पर कुश्क (भवन) तथा खानकाह बनवाई और वहाँ एक एक शेख नियुक्त किया। भोजन, पेय, ताबूल तथा आतिथ्य की समस्त सामग्री एकत्र की। दोनो ओर के मार्ग रक्षको को आदेश दिया कि यात्रियो को कष्ट न हो। उनके चिह्न बहुत दिनों तक शेष रहे। देवगीर (देवगिरि) का नाम दौलताबाद रक्खा और उसे अपने प्रान्तो के मध्य में समझ कर राजधानी बनाया। अपनी माता मखदूमये जहाँ को अमीरो, मलिको, प्रतिष्ठित तथा गण्यमान्य व्यक्तियो, लाव लश्कर, सेवकों के परिवार एव खजाने तथा गडी हुई धन-सम्पत्ति सहित दौलताबाद ले गया। मखदूमये जहाँ के साथ साथ, सैयिद, सूफी तथा आलिम भी सब के सब उस स्थान को प्रस्थान कर गये। सभी के इनामो तथा इदरारो में वृद्धि कर दी गई। इस लोकोक्ति (के अनुसार) कि "निर्वास बहुत बडा कष्ट, एव परदेशी होना बडा दुखदायी होता है", देहली के इस प्रकार वीरान होने एव स्थानान्तरण से लोगो को अत्यन्त कष्ट पहुँचा। बहुत सी विधवायें, अनाथ, दीन तथा दरिद्र लोग मार्ग में नष्ट हो गये। जो लोग पहुँचे, वे रुक न सके।

उपर्युक्त सन् के अन्त में मलिक बहादुर गर्शास्प ने जो (शाही) सेना का आरिज था, (२२७) देहली में विद्रोह कर दिया। मलिक अहमद अयाज ने, जिसकी उपाधि ख्वाजये जहाँ हो गई थी, बहादुर से युद्ध किया और उसे पराजित करके बन्दी बना लिया तथा सुल्तान के पास ले गया। उसकी हत्या करा दी गई।

तत्पश्चात् मलिक बहराम ऐबा ने, जिसे सुल्तान तुगलुक भाई कहा करता था, मुल्तान में विद्रोह कर दिया। अली खतती की, जो उसे बुलाने दरबार से भेजा गया था, हत्या करा दी। सुल्तान उसका विद्रोह शान्त करने के लिये दौलताबाद से देहली और वहाँ से निरन्तर कूच करता हुआ मुल्तान पहुँचा। बहराम युद्ध करने के लिये बाहर निकला और परास्त हुआ।

उसकी हत्या करा दी गई। उसका सिर सुल्तान के निकट लाया गया। सुल्तान उसके अपराध के कारण, मुल्तान निवासियों के रक्त की नदी बहा देना चाहता था। शेख रुक्नुल हक वद्दीन कुरेशी ने सुल्तान के दरबार में अपने शुभ शीश नग्न करके खडे होकर उन लोगो की सिफारिश की। सुल्तान ने उन्हें क्षमा कर दिया। सुल्तान किवामुलमुल्क मकबूल को मुल्तान प्रदान करके लौट आया। कुछ दिन उपरान्त उसे बदल कर बहज़ाद को भेज दिया। शाहू लोदी अफगान ने बहज़ाद की हत्या कर दी और विद्रोह कर दिया। सुल्तान, जब दीबालपुर पहुँचा तो शाहू भाग कर पर्वत के आँचल में घुस गया। सुल्तान लौट आया।

७२९ हि० (१३२८-२९ ई०) में तुर्माशीरीन मुगल जो खुरासान के बादशाह कुतलुग ख्वाजा मुगल का, जो पूर्व में हिन्दुस्तान आ चुका था, भाई था, बहुत बडी (२२८) सेना लेकर देहली में प्रविष्ट हो गया और बहुत से किलो पर विजय प्राप्त कर ली। लाहोर, सामाने तथा इन्दरी से बदायूँ तक लोगो की हत्या करा दी और बन्दी बना लिया। जब इस्लाम की विजयी सेनायें उसके निकट पहुँची तो वह उसी प्रकार लौट गया। सुल्तान कलानोर तक उसका पीछा करके उस किले का ध्वस मुजीरुद्दीन अबू रिजा को सौंप कर देहली की ओर लौट आया।

इन दिनों में सुल्तान ने ऐसा निश्चय किया कि "चूँकि दोआब की प्रजा विद्रोह कर रही है, अत उस विलायत (प्रान्त) का खराज दस का बीस[1] निश्चित कर दिया जाय।" गायो तथा घरो की गणना एव कुछ नई बातें भी पैदा कर दी जो उस विलायत के विनाश तथा ध्वस का कारण बन गई। बलहीन क्षीण हो गये। बलवानो ने उपद्रव प्रारम्भ कर दिया।

सुल्तान न आदेश दिया कि "देहली तथा आसपास के कस्बो के लोगो के काफिले बना कर दौलताबाद भेज दिये जायें, लोगो के घर उनके स्वामिया से मोल ले लिये जायें और उनका मूल्य खज़ाने से नकद अदा कर दिया जाय, अत्यधिक इनाम अलग से प्रदान हो।" इस प्रकार दौलताबाद तो परिपूर्ण तथा देहली ऐसा नष्ट हो गया कि वहाँ कुत्ते बिल्ली भी न रहे।

इसी कारण खज़ाने को भी क्षति पहुँची। खज़ाने की हानि के कारणो मे एक कारण यह था कि सुल्तान ने आदेश दिया कि ताँबे की मुद्राओ को चाँदी की मुद्राओ के समान व्यय किया जाय। जो कोई उसे लेने में टालमटोल करे उसे तुरन्त कठोर दड दिये जायें। इस कारण देश में बहुत से विद्रोह उठ खडे हुये। षड्यन्त्रकारियो तथा विद्रोहियो ने अपने अपने (२२९) स्थानो पर टकसाल बनवा ली। ताँबे के फुलूस (पैसो) पर मुहर लगवा कर, नगरो में ले जाकर उस चाँदी (धन) से घोडे, अस्त्र-शस्त्र एव उत्तम वस्तुयें मोल लेकर वे शक्ति-शाली तथा वैभवशाली बन गये। चूँकि दूर के स्थानो पर ताँबे के सिक्के प्रचलित न थे अत सोन के एक तन्के (का मूल्य) ताबे के ५०-६० सिक्को तक पहुँच गया। व्यापार में उनके मूल्यहीन होने का हाल सुल्तान को भी ज्ञात हो गया। उसने आदेश दिया कि जिस किसी के घर में ताँबे का तन्का हो वह उसे खज़ाने मे लाकर उसके बराबर सोन के तन्के ले जाय। प्रजा को इस कारण अत्यधिक धन प्राप्त हो गया। आखिर ताँबा-ताँबा तथा चाँदी-चाँदी होती है। तारीखे मुबारक शाही के लेखक के अनुसार इन ताँबे के तन्को के ढेर सुल्तान मुबारक शाह के समय तक लगे रहे और तुगलुकाबाद में ये पत्थर के समान रहे।

७३८ हि० (१३३७-३८ ई०) में उसने ८०,००० सवार प्रसिद्ध सरदारो के साथ,

---

१ अर्थात् दुगुना कर दिया "खराजे आँ विलायत दह बिस्त मुक़र्रर साजन्द।" यहाँ "यके ब देह व यक ब बिस्त" का उल्लेख नहीं। (तारीखे फीरोजशाही पृ० ४७३)

हिमाचल पर्वत की विजय हेतु, जो हिन्दुस्तान तथा चीन के मध्य में है और जिसे क़राचिल भी कहते हैं, नियुक्त किये। उसने आदेश दिया कि प्रत्येक स्थान पर इस आशय से रक्षक नियुक्त किये जाय कि रसद के आने-जाने का मार्ग खुला रहे और लोगों की वापसी सुगमता-पूर्वक सम्भव हो सके। इस सेना के प्रविष्ट हो जाने के उपरान्त उस पर्वत की इस विशेषता के कारण, कि मनुष्यों की आवाज़ तथा घोडो के हिनहिनाने से अत्यधिक वर्षा होने लगती है, तथा मार्ग की कठिनाई एव अनाज की कमी के कारण वे अधिक न ठहर सके। पर्वत निवासी विजयी हो गये और उन्होने उस सेना को परास्त कर दिया। सेना का पीछा करके विषैले बाणो तथा पत्थरों से उन्हें नष्ट कर दिया। अधिकाश की हत्या कर दी और शेष को बन्दी बना लिया। बहुत समय तक वे वहाँ परेशान फिरते रहे। जो लोग बडी कठिनाई से बच सके, उनकी सुल्तान ने हत्या करा दी। इस घटना के उपरान्त वैसी सेना सुल्तान के पास (२३०) एकत्र न हो सकी। वेतन का वह समस्त धन नष्ट हो गया।

७३९ हि० (१३३८-३९ ई०) में सुनार गाँव के हाकिम बहराम खाँ की मृत्यु हो गई। मलिक फखरुद्दीन सिलाहदार ने विद्रोह करके सुल्तान की उपाधि धारण कर ली। लखनौती के शासक कदर खाँ से जिसके साथ मलिक हुसामुद्दीन अबू रिजा मुस्तौफी तथा इज्जुद्दीन यहया आजमुलमुल्क थे, युद्ध किया तथा पराजित हुआ। उसके वैभव की सामग्री, खजाना तथा सेना कदर खाँ को प्राप्त हो गई। चूँकि वर्षा ऋतु आ गई थी और कदर खाँ के घोडे नष्ट हो गये थे और उसने अपने महल में सुल्तान को भेंट करने के लिये अपार धन-सम्पत्ति एकत्र करके, उसके ढेर लगा रक्खे थे, और यद्यपि हुसामुद्दीन अबू रिजा उसे, लोगो के लोभ तथा उपद्रव उठ खडा होने के कारण, धन सम्पत्ति एकत्र करने से रोका करता था और कदर खाँ न सुनता था, और अन्त में परिणाम हुसामुद्दीन के कथनानुसार ही हुआ, अत मलिक फखरुद्दीन पुन चढ आया। कदर खाँ के सैनिक उसके सहायक बन गये और उन्होंने अपने स्वामी की हत्या करदी। फखरुद्दीन को धन प्राप्त होगया और सुनार गाँव का राज्य उसे मिल गया। उसने अपने दास मुखालिस को लखनौती में नियुक्त कर दिया। कदर खाँ की सेना के आरिज अली मुबारक ने मुखलिस की हत्या करके अपना अधिकार स्थापित कर लिया। उसने नीति-युक्त पत्र सुल्तान की सेवा में लिखे। सुल्तान ने मलिक यूसुफ को नियुक्त किया। मार्ग में उसकी मृत्यु हो गई। सुल्तान ने अन्य कार्यों में व्यस्त होने के कारण किसी अन्य को उस ओर न भेजा। इस बार अली मुबारक ने फखरुद्दीन की शत्रुता के कारण बादशाही के चिह्न प्रकट कर दिये और अपनी उपाधि सुल्तान अलाउद्दीन निश्चित की। मलिक इलयास हाजी ने, जिसके पास कबीला तथा सैनिक थे, कुछ दिन उपरान्त लखनौती के कुछ अमीरो तथा मलिको से मिलकर, अलाउद्दीन की हत्या करदी और अपनी उपाधि सुल्तान शम्सुद्दीन (२३१) रखली।

७४१ हि० (१३४०-४१ ई०) में सुल्तान मुहम्मद ने सुनार गाँव की विजय के लिये प्रस्थान किया। फखरुद्दीन को बन्दी बना कर लखनौती लाया और उसकी हत्या करके लौट गया। शम्सुद्दीन उस प्रदेश में स्थायी रूप से बादशाह हो गया। उस देश का राज्य एव शासन दीर्घ काल तक उसके तथा उसकी सन्तान के अधीन रहा और पुन सुल्तान मुहम्मद के अधिकार में न आया।

६४२ हि० (१३४१-४२ ई०) में मलिक इबराहीम सुल्तान के खरीतादार के पिता सैयिद हुसेन कैथली ने, जो हसन कांगू[1] के नाम से प्रसिद्ध है और अन्त में जिसे दक्षिण

१ ये दोनों भिन्न भिन्न व्यक्ति थे। दोनों को एक कहना बदायूनी की भूल है।

का राज्य प्राप्त हुआ और जिसने अलाउद्दीन बहमन शाह की उपाधि धारण की, माबर में सुल्तान के कठोर नियमो एव उसके ईजाद किये हुये कानूनो और उसके कत्ले आम के कारण विद्रोह कर दिया और देहली की अधिकाश सेना जो उस ओर नियुक्त थी अपनी ओर मिला ली। विरोधी सरदारो की हत्या करदी। सुल्तान उस विद्रोह को शान्त करने के लिये लखनौती से देवगिरि पहुँचा। तिलग पहुँच कर वह रुग्ण हो गया। वहाँ से वह निरन्तर कूच करता हुआ देहली पहुँचा। कुतलुग खाँ को दौलताबाद में छोड दिया। माबर का विद्रोह उसी प्रकार विद्यमान रहा। हसन का कार्य उन्नति पर रहा।

७४३ हि० (१३४२-४३ ई०) में मलिक हलाजून, गुलचन्द्र खुक्खर तथा मलिक ततार खुर्द ने षड्यत्र करके लाहौर के हाकिम की हत्या कर दी। जब ख्वाजये जहाँ उनके विरुद्ध नियुक्त हुआ तो उसने युद्ध करके उन्हे कठोर दड दिये। वे दड के कारण भाग गये।

७४४ हि० (१३४३-४४ ई०) में सुल्तान ने हसन कांगू से खिन्न होने के कारण सुनाम तथा सामाने से होकर कैथल के सैयिदो तथा समस्त मुसलमानो की हत्या का आदेश (२३२) दे दिया। उनके स्थान पर उस प्रदेश के मुकद्दमो की रिआयत करके शहर (देहली) के आसपास के स्थानो पर ले जाकर, ग्राम तथा अक्तायें प्रदान की। बहुमूल्य खिलअतें तथा सोने की पेटियाँ देकर उन्हे वहाँ बसा दिया। अकाल के कारण सुल्तान ने आदेश दिया कि "जो कोई चाहे हिन्दुस्तान के पूर्व में जाकर मँहगाई तथा कठिनाई के दिन व्यतीत करे और कोई रोक टोक न की जाय। इसी प्रकार जो कोई दौलताबाद का निवास त्याग कर देहली लौट आये तो उस पर कोई आपत्ति न प्रकट की जाय। उस वर्ष मे खुरासान, एराक तथा समरकन्द से सुल्तान के दान की आशा से इतने व्यक्ति हिन्दुस्तान आये कि उनके अतिरिक्त अन्य लोग दिखाई ही न पडते थे।

इस वर्ष हाजी सईद मिस्री,[१] मिस्र से खलीफा का मनशूर, (अधिकार पत्र) लिवा (झडा) खिलअत तथा नासिरे अमीरुल मोमिनीन[२] की उपाधि खलीफा की ओर से लाया। सुल्तान ने नगर में सजावट कराई और समस्त सूफियो, सैयिदो तथा विश्वास पात्रो को लेकर उनके स्वागतार्थ गया और पैदल होकर हाजी सईद के चरणो का चुम्बन किया और उसके आगे आगे रवाना हुआ। शुक्रवार तथा ईद की नमाज़ जो इस समय तक खलीफा के आदेश (की प्रतीक्षा) में स्थगित थी, उसकी अनुमति प्राप्त होने पर पुन प्रारम्भ करा दी। खलीफा के नाम का खुत्बा पढवाया और सुल्तान महमूद के अतिरिक्त उन लोगो के नाम, जिन्हे खलीफा द्वारा अनुमति न प्राप्त हुई थी, पृथक् करा दिये। उसने अत्यधिक धन-सम्पत्ति एव बहुमूल्य वस्तुए इतनी अधिक सख्या में दान की कि खजाना रिक्त हो गया। एक अत्योत्तम *मोती, जिसके समान कोई मोती खजाने में न था,* अन्य उपहारो सहित हाजी बुरकई द्वारा मिस्र भेज दिया और अपने विचार से सच्चा खलीफा बन गया। कुरान शरीफ, मशारिक तथा (२३३) खलीफा का मनशूर सर्वदा अपने समक्ष रख कर राज्य किया करता था और कहा करता था "खलीफा इस प्रकार कहता है और खलीफा उस प्रकार कहता है।" लोगो से खलीफा की बैअत[३] कराया करता था।

वह सुर्गद्वारी (स्वर्गद्वारी), जो शम्साबाद के निकट है, पहुँचा। दो तीन बार बरौज (भडौंच) तथा खम्बायत में भी खलीफा के अधिकार पत्र प्राप्त हुये। अन्य बार मखदूम जादा बगदादी

१ अन्य स्थानों पर हाजी सईद सरसरी है। फ़िरिश्ता ने हुरमुज़ी लिखा है।

२ धर्म निष्ठ मुसलमानों के शासक का सहायक।

३ अधीनता की शपथ।

पहुँचा। सुल्तान पालम तक पैदल उसके स्वागतार्थ गया। जब कभी वह उसे दूर से देख पाता तो आगे बढ कर राजसिंहासन पर अपने पास बैठा लेता। कीली नगर, उद्यान, महल तथा समस्त घर उसके अधिकार में दे दिये।

७४५ हि० (१३४४-४५ ई०) में कड़े के हाकिम मलिक निजामुलमुल्क ने विद्रोह कर दिया। ऐनुलमुल्क के भाई शहरुल्लाह ने अवध से सेना लेकर उस पर आक्रमण किया और उसे बन्दी बना लिया। वह विद्रोह शान्त हो गया। शिहाबुद्दीन सुल्तान ने बिदर में विद्रोह किया। कुतलुग खाँ उस ओर नियुक्त हुआ। शिहाबुद्दीन ने अपने पुत्र सहित युद्ध किया और किला बन्द कर लिया। कुतलुग ने उसे क्षमा प्रदान करके बाहर निकाला और उसे राजधानी भेज दिया।

७४६ हि० (१३४५-४६ ई०) में जफर खा अलाई के भागिनेय अली शेर ने अपने समस्त सैनिकों सहित गुलबर्गा (गुलबर्गे) पर अधिकार जमा लिया। बिदर के शासक की हत्या करदी। अपार धन-सम्पत्ति अपने अधिकार मे कर ली। कुतलुग खाँ से युद्ध किया और पराजित होकर बिदर के किले में बन्द हो गया। कुतलुग खाँ ने उसे भी बन्दी बना कर सुर्गद्वारी (स्वर्गद्वारी) में, जहाँ सुल्तान का शिविर था, भेज दिया। सुल्तान ने सर्व प्रथम उन बन्दियो को गजनी की ओर निर्वासित कर दिया। तत्पश्चात् उन्हे बुला कर उन सब की हत्या करादी।

(२३४) ७४७ हि० (१३४६-४७ ई०) में जब कुछ समय के लिए सुल्तान का शिविर सुर्गद्वारी (स्वर्ग द्वारी) में था, ऐनुलमुल्क, जफराबाद तथा अवध से धन-सम्पत्ति एव बहुमूल्य वस्तुयें लेकर सुल्तान के दरबार में भेंट करने आया। सुल्तान ने यह उचित समझा कि कुतलुग खाँ को दक्षिण से बुलवा कर ऐनुलमुल्क को उसके स्थान पर भेज दे। ऐनुलमुल्क ने आशकित होकर रातो रात स्वर्गद्वारी से भाग कर, गगा नदी पार करके अवध की ओर प्रस्थान किया। उसका भाई शहरुल्लाह शाही हाथियो तथा घोडो को जो चराई के लिये छोड दिये गये थे, छापा मार कर ले गया। सुल्तान उनका पीछा करता हुआ कन्नौज तक गया। ऐनुलमुल्क ने अपने भाइयो तथा मलिक फीरोज नायब बारबक के अधीन लोगों के, जो हाथियो तथा घोडा के प्रबन्धक थे, बहकान स, गगा नदी पार की और इस ओर आकर सुल्तान की सेना पर आक्रमण कर दिया और चोरो तथा हिन्दुस्तान के गवारो के समान जगल में प्रविष्ट होकर पैदल युद्ध किया। शाही हाथियो तथा बाण चलाने वालों से युद्ध करने की शक्ति न पाकर भाग खडा हुआ। शहरुल्लाह, उसके अन्य भाई तथा ऐनुलमुल्क के अधिकाश सरदार नदी में डूब गये। कुछ सिपाहियो की तलवार का भोजन बन गये तथा कुछ भागने वाले गवारों द्वारा बन्दी बना लिये गये। ऐनुलमुल्क को जीवित गधे पर सवार करके नगे सिर दरबार में लाया गया। उसे कुछ दिन तक बेकार पडा रहने दिया गया। सुल्तान ने उसकी सुयोग्य सवाओ का ध्यान करके उसे मुक्त कर दिया और पूर्व की भाँति उसके सम्मान में वृद्धि करके विलायत प्रदान करने के पश्चात् स्वय देहली लौट आया। कुतलुग खाँ को दक्षिण से बुलवाया। चूकि कुतलुग खा न उस विलायत को सुव्यवस्थित कर रक्खा था और लोग उससे सतुष्ट थे अत उसके स्थानान्तरण से बडी खराबी तथा हानि उत्पन्न हो गई। अज़ीज खम्मार ने, जो एक कमीना व्यक्ति था मालवा पहुच कर अत्यधिक अमीर सदा लोगो की, जो यूज़बाशी के समान होंगे, सुल्तान के आदेशानुसार हत्या करा दी और विद्रोह उठ खडा हुआ।

इमाजये जहाँ के दास मुकबिल पर, जो गुजरात का नायब वजीर था और दरबार में खजाना लिये जा रहा था, रात्रि में छापा मारा और खजाना, घोडे तथा बादशाही माल असबाब अपने अधिकार में कर लिया। सुल्तान इस विद्रोह को शान्त करने के लिये गुजरात पहुँचा और कुछ विश्वस्त अमीर उदाहरणार्थ मलिक अली सर जानदार तथा अहमद लाचीन को इस आशय से दौलताबाद भेजा कि वे समस्त अमीर सदा को बन्दी बना कर दरबार में ले आयें। मलिक अहमद लाचीन जब मानिक गज दर्रे में पहुचा तो अमीर सदा लोगो ने अपने प्राणो के भय से सघठित होकर, मलिक अहमद लाचीन की हत्या कर दी।

अजीज खम्मार, जिसने देवही (दमोई) तथा बरोदा के अमीर सदा लोगों के विनाश हेतु गुजरात से प्रस्थान किया था, उनसे युद्ध करते समय होश हवास खोकर घोडे से गिर पडा और बन्दी बना लिया गया। जब यह सूचना सुल्तान को प्राप्त हुई तो उसका क्रोध और बढ गया। मुकबिल की पराजय तथा अजीज की हत्या के उपरान्त वे बडे धृष्ट बन गये। प्रत्येक स्थान में अपने कबीलो तथा सम्बन्धियों को बुला कर सुल्तान के विरोध के सम्बन्ध में एका कर लिया। दौलताबाद का किला, मलिक आलिम के अधिकारियों से छीन कर, अपने अधिकार में कर लिया। इसमाईल फतह[1] नामक को बादशाह बना कर उसकी उपाधि सुल्तान नासिरुद्दीन रख दी। तत्पश्चात् देवही (दमोई) तथा बरोदा के अमीर सदा लोग, सुल्तान द्वारा उनके विरुद्ध नियुक्त किये गये अमीरो से पराजित होकर दौलताबाद के अमीर सदा लोगों से मिल गये। जब सुल्तान दौलताबाद पहुचा तो इसमाईल फतह ने उससे युद्ध किया। वह परास्त हुआ और धारा नगर के क़िले में जो दौलताबाद का किला कहलाता है बन्द हो गया। दौलताबाद के अत्यधिक मुसलमान इस युद्ध में मारे गये और बन्दी बना लिये गये। मलिक एनायत एमादुलमुल्क सरतेज, भागे हुये अमीर सदा लोगो का पीछा करने के लिये बिदर (२३६) भेजा गया।

इसी बीच में मलिक तगी के विद्रोह की सूचना गुजरात से प्राप्त हुई कि उसने वहाँ के हाकिम, मलिक मुजफ्फर की हत्या करके, अत्यधिक घोड़े तथा अपार धन-सम्पत्ति अपने अधिकार में कर ली है। सुल्तान ने मलिक जौहर, खुदावन्द जादा किवामुद्दीन तथा शेख बुरहानुद्दीन बलारामी को धारा नगर मे छोड कर, मलिक तगी के विद्रोह को शान्त करने के लिये प्रस्थान किया।

दौलताबाद की भागी हुई सेना का सरदार हसन काँगू उस स्थान से, जहाँ वह घात लगाये था, निकल कर मलिक एमादुलमुल्क सरतेज पर टूट पडा। एमादुलमुल्क की हत्या कर दी गई। उसकी सेना ने भाग कर दौलताबाद में शरण ली। मलिक जौहर तथा खुदावन्द जादा किवामुद्दीन एव अन्य अमीर दौलताबाद में हसन का मुकाबिला न कर सके और उस स्थान को छोड कर धारा नगर की ओर चल दिये। हसन काँगू उनका पीछा करता हुआ दौलताबाद पहुचा और इसमाईल फतह को भगा कर उसने सुल्तान अलाउद्दीन की उपाधि धारण कर ली और स्वय बादशाह बन बैठा। इसके उपरान्त दौलताबाद का राज्य एव शासन उसके वश में रहा और उसके नाम पर तारीखे फुतूहुस्सलातीन[2] की रचना हुई।

विद्रोही तगी ने सुल्तान के गुजरात पहुचने के उपरान्त दो बार युद्ध किया और परास्त हुआ तथा लूट मार करता हुआ मारा मारा फिरता रहा। सुल्तान ने भी उसका पीछा करने से हाथ न खींचा। जहाँ कहीं वह जाता वहीं वह (सुल्तान) पहुँच जाता। सुल्तान ने

---

१ अन्य स्थानों पर इसमाईल मुख अथवा इसमाईल मल।

२ लेखक-एमामी।

इस युद्ध के समय मलिक फ़ीरोज़ को देहली से बुलवाया। वह उसके दरबार में उपस्थित हुआ।

इस वर्ष, मलिक ग़ीर ने जो मलिक क़ुबूल ख़लीफ़ती का पुत्र था और जिसे (मलिक क़ुबूल) ने अपने समस्त कार्य सौंप दिये थे, और जिसने उसकी ओर से पत्र लिख कर मिस्र के (२३७) अब्बासी ख़लीफ़ा के पास हाजी बुरक़ई के हाथ भेजा था, प्राण त्याग दिये। अहमद अयाज़, जो ख़्वाजये जहाँ था, तथा मलिक क़ुबूल क़िवामुलमुल्क देहली में राज्य का प्रबन्ध करते थे। सुल्तान मुहम्मद के राज्य काल के अन्तिम समय में प्रति दिन इतने विद्रोह तथा इतनी अशान्तियाँ प्रकट होने लगी कि यदि एक की रोक थाम की जाती तो दूसरा (राज्य) हाथ से निकल जाता।........................

बुरहाने मआसिर

[लेखक—अली बिन अजीजुल्लाह तबातबा]

(प्रकाशन—हैदराबाद १९३६ ई०)

(११) सुल्तान अलाउद्दीन हुसेन शाह, उम्रुनुत्तवारीख तथा अन्य हिन्दुस्तान के सुल्तानो के इतिहासकारो एव अन्य विश्वास के योग्य इतिहासकारो के अनुसार, बहमन इसफन्दियार[१] के वश से थे। इसी कारण यह वश बहमनी वश के नाम से प्रसिद्ध है। कुछ वशावलियो के अनुसार सुल्तान हसन का वश बहराम गोर[२] से मिलता है। सुल्तान अलाउद्दीन हसन (१२) शाह बहमनी समय के अत्याचार के कारण सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के राज्य काल में देहली पहुचा। उसने अपने वश का कोई परिचय न दिया और सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के सेवकों म सम्मिलित हो गया। उन्ही दिनो में सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक, शेख निजामुद्दीन औलिया की सभा में उपस्थित था।[३] सयोगवश सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक के लौटने के समय सुल्तान अलाउद्दीन हसन बहमनी भी शेख की खानकाह के द्वार पर पहुँचा। शेख ने अपने एक सेवक से कहा 'एक सुल्तान बाहर गया तथा दूसरा सुल्तान द्वार से प्रविष्ट होने के लिये आया है।" जब सवक बहमन शाह को भीतर लाया तो शेख ने उसका सम्मान करते हुये उसे राज्य की बधाई दी। वहाँ से लौट कर वह बराबर राज्य की अभिलाषा करता रहा।

चूकि उस वर्ष मुहम्मद बिन तुगलुक के राज्य मे विघ्न पड गया और प्रत्येक अमीर (१३) तथा वजीर ने विद्रोह करना प्रारम्भ कर दिया तो सुल्तान अलाउद्दीन हसन शाह कुछ वीरो तथा अफगान युवको को लेकर दकिन (दक्षिण) की ओर, जिसक लिये शेख न सकत किया था, प्रस्थान किया और दौलताबाद पहुँच कर समय की प्रतीक्षा करन लगा। इसी अशांति में गुप्तचरों ने सुल्तान को यह सूचना दी कि अमीरान सदा तथा उस सना ने, जा गुजरात के समुद्र तट के शासन प्रबन्ध के लिये नियुक्त हुई थी विद्रोह कर दिया है और मुसलमानो की धन सम्पत्ति लूट रहे हैं। गुजरात के एक अमीर को भी जो राज्य-कोष देहली ला रहा था लूट लिया। गुजरात के जो अमीर इस विद्रोह के दमन करने के लिये गये, उनमें से भी बहुत से मार डाले गये और शेष अपन प्रान्त को भाग गये।

सुल्तान यह सुन कर स्वय विद्रोह शान्त करने के लिये चल खडा हुआ। चूँकि दौलताबाद का शासक कुतलुग खाँ, जिसने अपनी योग्यता से वहाँ शान्ति स्थापित कर रखी थी, गुजरात के विद्रोह के प्रारम्भ होने के पूर्व सुल्तान द्वारा देहली बुला लिया गया था और उसने अपने भाई आलिम मलिक को अपना नायब नियुक्त कर दिया था, अत मार्ग मे सुल्तान न सोचा कि दौलताबाद में कुतलुग खाँ नही है तो सम्भव है कि वहाँ के भी अमीराने सदा गुजरात

१ अर्देशेर दराज दस्त जो बहमन कहलाता था, इसफन्दियार का पुत्र था और ईरान का प्राचीन बादशाह था। वह अपने दादा गश्तास्प के उपरान्त ४६४ ईसा पूर्व में ईरान का बादशाह हुआ। वह अपनी बुद्धिमत्ता के लिये बड़ा प्रसिद्ध था। कहा जाता है कि उसने ११२ वष तक राज्य किया।

२ ईरान के सासानी वश का १४ वाँ बादशाह। वह यज्दजर्द प्रथम का पुत्र था और उसके उपरान्त ४२० ई० में बादशाह हुआ। वह बहराम पचम कहलाता था। उसकी मृत्यु ४३८ में हुइ।

३ यह घटना यदि सत्य है तो सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह के राज्य काल से सम्बन्धित हो सकती है जब सुल्तान मुहम्मद, शाहजादा था।

तारीखे सिन्ध
अथवा
तारीखे मासूमी
[लेखक—सैयिद मुहम्मद मासूम भक्करी]

(प्रकाशन—पूना १६३८ ई०)

सुल्तान गयासुद्दीन

(४६) जिस समय सुल्तान गयासुद्दीन ने मुल्तान से देहली की ओर प्रस्थान किया तो सूमरा लोगों ने आक्रमण करके थत्तह पर अधिकार जमा लिया। सुल्तान गयासुद्दीन ने मलिक ताजुद्दीन को मुल्तान, ख्वाजा खतीर को भक्कर तथा मलिक अली शेर को सिविस्तान में नियुक्त (४७) किया। ७२३ हि० (१३२३ ई०) के अन्त में सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह ने अपने पुत्र सुल्तान मुहम्मद को अपना वलीअहद (उत्तराधिकारी) नियुक्त किया और उसके नाम की बैअत राज्य के प्रतिष्ठित लोगों से करा ली। ७२५ हि० (१३२४-२५ ई०) के प्रारम्भ में उसका निधन हो गया।

सुल्तान मुहम्मद शाह बिन तुगलुक़ शाह

सुल्तान मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) तुगलुक शाह के सिंहासनारूढ़ होने के उपरान्त उसकी प्रसिद्धि एवं ख्याति अत्यधिक प्रसारित हो गई। उसने ७२७ हि० (१३२६-२७ ई०) में किशलू खाँ को सिन्ध प्रान्त में नियुक्त किया। तत्पश्चात् दौलताबाद पहुँच कर उसे राजधानी बनाया। उसके उस स्थान पर दो वर्ष तक रहने के कारण किशलू खाँ ने भक्कर से मुल्तान पहुँच कर मुल्तान वालों तथा बिल्लोच लोगों को मिला कर विद्रोह का संकल्प कर लिया। सुल्तान मुहम्मद शाह यह समाचार सुन कर शीघ्रातिशीघ्र ७२८ हि० (१३२७-२८ ई०) में मुल्तान पहुंचा। किशलू खाँ ने कृतघ्नता प्रकट करते हुये अपने आश्रयदाता से युद्ध किया। जैसे ही दोनों सेनाओं का आमना सामना हुआ तो जो सेना तलीआ[१] के रूप में सामने थी, उसने किशलू खाँ पर आक्रमण करके विजय प्राप्त कर ली और उसका सिर काट कर सुल्तान के समक्ष लाई। उसकी सेना सुल्तान के कठोर दण्ड के भय से छिन्न-भिन्न हो गई। सुल्तान ने आदेश दिया कि मुल्तान वालों के रक्त की नदी बहा दी जाय। जब सैनिक नगी तलवारें लेकर मुल्तान वालों की हत्या के विचार से पहुँचे तो शैखुल इस्लाम शैख रुक्नुद्दीन मुल्तान वालों की सिफारिश के लिये सुल्तान मुहम्मद शाह के दरबार में उपस्थित हुये और नंगे सिर खड़े हो गये। सुल्तान ने कुछ क्षण के पश्चात् शैख की सिफारिश स्वीकार कर ली और मुल्तान वालों के अपराध क्षमा कर दिये। वह मुल्तान भक्कर एवं सिविस्तान में अपने विश्वास-पात्रों को नियुक्त करके उपर्युक्त सन् के अन्त में वहाँ से लौट गया।

७४४ हि० (१३४३-४४ ई०) में सुल्तान मुहम्मद शाह के हृदय में यह बात आई कि देहली की सुल्तानी एवं शासन अब्बासी खलीफा के आदेश बिना उचित नहीं। उसने खलीफा के परोक्ष में उससे बैअत करली। इस विषय में उसने बड़ी अधिकता प्रदर्शित की। प्रजा

१ सेना का अग्रिम भाग जो शत्रुओं का पता लगाने तथा पहरे आदि के लिये नियुक्त किया जाता है।

के पहुचने के समाचार प्राप्त हुये तो उसने सेना को शिविर में छोड़ कर अकेले ही सुल्तान की सेवा में पहुच कर क़ालीन (भूमि) चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया।

(२१) इसी समय दूतो ने सूचना पहुँचाई कि सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ ने गुजरात तथा तत्ता (थट्टा) के मार्ग में प्राण त्याग दिये। सुल्तान ने शत्रु की ओर से निश्चित हो कर दकिन (दक्षिण) विजय के लिये प्रस्थान किया। तीन दिन उपरान्त नदी पार करके सुल्तान ने निरन्तर शत्रु की ओर बढना प्रारम्भ कर दिया। मुहम्मद इब्ने आलम यह सुन कर, सुल्तान की सेवा में उपस्थित हो गया। सुल्तान ने आदेश दिया कि उसकी धन सम्पत्ति पर अधिकार जमा कर उसे बन्दी बना लिया जाय और उसके प्राण को कोई हानि न पहुचाई जाय।

तारीखे सिन्ध
अथवा
तारीखे मासूमी

[लेखक—सैयिद मुहम्मद मासूम भक्करी]

(प्रकाशन—पूना १६३८ ई०)

सुल्तान गयासुद्दीन

(४६) जिस समय सुल्तान गयासुद्दीन ने मुल्तान से देहली की ओर प्रस्थान किया तो सूमरा लोगो ने आक्रमण करके थत्तह पर अधिकार जमा लिया। सुल्तान गयासुद्दीन ने मलिक ताजुद्दीन को मुल्तान, ख्वाजा खतीर को भक्कर तथा मलिक अली शेर को सिविस्तान में नियुक्त (४७) किया। ७२३ हि० (१३२३ ई०) के अन्त में सुल्तान गयासुद्दीन तुगलुक शाह ने अपने पुत्र सुल्तान मुहम्मद को अपना वलीअहद (उत्तराधिकारी) नियुक्त किया और उसके नाम की बैअत राज्य के प्रतिष्ठित लोगों से करा ली। ७२५ हि० (१३२४-२५ ई०) के प्रारम्भ में उसका निधन हो गया।

सुल्तान मुहम्मद शाह बिन तुग़लुक शाह

सुल्तान मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) तुगलुक शाह के सिंहासनारूढ होने के उपरान्त उसकी प्रसिद्धि एवं ख्याति अत्यधिक प्रसारित हो गई। उसने ७२७ हि० (१३२६-२७ ई०) में किशलू खाँ को सिन्ध प्रान्त में नियुक्त किया। तत्पश्चात् दौलताबाद पहुँच कर उसे राजधानी बनाया। उसके उस स्थान पर दो वर्ष तक रहने के कारण किशलू खाँ ने भक्कर से मुल्तान पहुँच कर मुल्तान वालो तथा बिल्लोच लोगो को मिला कर विद्रोह का संकल्प कर लिया। सुल्तान मुहम्मद शाह यह समाचार सुन कर शीघ्रातिशीघ्र ७२८ हि० (१३२७-२८ ई०) में मुल्तान पहुचा। किशलू खाँ ने कृतघ्नता प्रकट करते हुये अपने आश्रयदाता से युद्ध किया। जैसे ही दोनो सेनाओं का आमना सामना हुआ तो जो सेना तलीआ[१] के रूप में सामने थी, उसने किशलू खाँ पर आक्रमण करके विजय प्राप्त कर ली और उसका सिर काट कर सुल्तान के समक्ष लाई। उसकी सेना सुल्तान के कठोर दण्ड के भय से छिन्न-भिन्न हो गई। सुल्तान ने आदेश दिया कि मुल्तान वालो के रक्त की नदी बहा दी जाय। जब सैनिक नगी तलवारें लेकर मुल्तान वालो की हत्या के विचार से पहुँचे तो शेखुल इस्लाम शेख रुक्नुद्दीन मुल्तान वालो की सिफारिश के लिये सुल्तान मुहम्मद शाह के दरबार में उपस्थित हुये और नंगे सिर खडे हो गये। सुल्तान ने कुछ क्षण के पश्चात् शेख की सिफारिश स्वीकार कर ली और मुल्तान वालो के अपराध क्षमा कर दिये। वह मुल्तान भक्कर एवं सिविस्तान में अपने विश्वास-पात्रो को नियुक्त करके उपर्युक्त सन् के अन्त में वहाँ से लौट गया।

७४४ हि० (१३४३-४४ ई०) में सुल्तान मुहम्मद शाह के हृदय में यह बात आई कि देहली की सुल्तानी एवं शासन अब्बासी खलीफा के आदेश बिना उचित नही। उसने खलीफा के परोक्ष में उसमे बैअत करली। इस विषय में उसने बडी अधिकता प्रदर्शित की। प्रजा

१ सेना का अग्रिम भाग जो शत्रुओं का पता लगाने तथा पहरे आदि के लिये नियुक्त किया जाता है।

को जुमे (की सामूहिक) नमाज पढने से रोक दिया। मलिक रफी को उपहार देकर मिस्र भेजा। मिस्र के खलीफा ने मलिक रफी तथा अपने आदमियों के साथ उसके लिये पताका एव खिलअत प्रेषित की। सुल्तान ने प्रसन्न होकर उन लोगो का बडा सम्मान किया और उन्हे इनाम में धन प्रदान किया। खलीफा के नाम का खुत्बा पढवा कर अपना नाम उसके पीछे रखवाया।

७५१ हि० (१३५०-५१ ई०) मे सुल्तान मुहम्मद शाह ने देहली से गुजरात की ओर प्रस्थान किया और शीघ्रातिशीघ्र कर्नाल[1] पहुचा। तगी नामक सुल्तान का दास विद्रोह करके खम्बायत के बन्दरगाह की ओर भाग गया। जब सुल्तान वहाँ पहुँचा ता वह भाग कर जारीजा पहुचा। सुल्तान ने भी नाक्नी[2] का सकल्प करके थत्तह की ओर प्रस्थान किया और तहरी[3] ग्राम में नदी तट पर सेना एकत्र करने के लिये पडाव डाला। इसी बीच में सुल्तान ज्वर से पीडित हो गया और उसे परदेश में होने का दु ख कष्ट देने लगा। सुल्तान तहरी से प्रस्थान करके कन्दल[4] पहुँचा और वही ठहर गया। वहाँ सुल्तान रोग से मुक्त होने लगा। इस पडाव पर अन्त पुर की स्त्रियाँ नदी के मार्ग से पहुँच गईं। सुल्तान उनके आने मे बडा प्रसन्न हो गया। सेना को अत्यधिक वस्तुए प्रदान की और बहुत बडी सेना लेकर थत्तह की ओर प्रस्थान किया। तगी को, जो भाग कर थत्तह पहुँचा था कोई उपाय समझ मे न आया। जब सुल्तान थत्तह के निकट १२ कोस पर पहुँच गया तो सयोग से उस दिन (४६) १० मुहर्रम थी। सुल्तान ठहर गया। उस दिन वह रोज़ा रक्खे था। दूसरे दिन सुल्तान का रोग पुन बढ गया और बहुत ज़ोर से ज्वर चढ आया। चिकित्सको के उपचार स कोई लाभ न हुआ और २१ मुहर्रम ७५२ हि० (२० मार्च १३५१ ई०) को उसका निधन हो गया।

सुमरा तथा सुमा

(६०) इससे पूर्व उल्लेख हो चुका है कि जब सुल्तान महमूद गाज़ी, गज़नी से मुल्तान पहुँचा तथा मुल्तान अपने अधिकार में कर लिया तो उसने कुछ लोगो को सिन्ध की विलायत (प्रान्त) विजय करने के लिये भेजा। सुल्तान महमूद गाज़ी के देहान्त क पश्चात् जब शासन तथा राज्य सत्ता अब्दुर्रशीद[5] बिन (पुत्र) सुल्तान मसऊद को प्राप्त हुइ तो उसने भाग विलास मे व्यस्त रहना प्रारम्भ कर दिया और राज्य-व्यवस्था की चिन्ता न की। दूर की सीमा के लोगो ने विद्रोह प्रारम्भ कर दिया।

सक्षेप मे उस समय सूमरा[6] लोगो न तहरी के आस-पास से एकत्र होकर सूमरा नामक एक व्यक्ति को शासन की गद्दी पर आरूढ कर दिया। वह बहुत समय तक उन लोगो का

१ जूना गढ।

२ सम्भवतया कच्छ में कोइ स्थान।

३ तहरो, हैदराबाद (सिन्ध) में मुहम्मत डेरे के निकट जो सूमरा लोगों की राजधानी था।

४ कन्दल अथवा गान्दल कर्नाल से उत्तर की ओर १५ कोस पर (तबकाते अकबरी भाग १, पृ० २२२) काठियावाड़ में। तारीखे फ़ीरोज़ शाही (पृ० ५२३) देखो।

५ (४४१—४४४ हि०। १०४९ ई०—१०५३ ५४ ई०)।

६ अबुल फज़ल ने लिखा है कि सूमरा लोग ३६ व्यक्ति थे और उन्होंने ५०० वर्ष राज्य किया। (आईने अकबरी, नवल किशोर १८९३, भाग २, पृ० १६७)। तोहफ़तुल किराम के लखक के अनुसार इन लोगा का राज्य ७५२ हि० (१३५१—५२ ई०) में समाप्त हुआ (तोहफतुल किराम लखक अली शेर काने थत्तवी, बम्बई, भाग ३ पृ० ३५) अत इनकी सत्ता का प्रारम्भ २५२ हि० (८६६-६७ ई०) क लगभग म समझा जा सकता है। अलीशेर क़ाने के अनुसार सूमरा लोगों में बडी विचित्र प्रथायें थीं (तोहफतुल किराम भाग ३, पृ० ४६—४७)।

सरदार रहा और उस प्रदेश के समीप के स्थानो को विद्रोहियो से मुक्त कर दिया। साद नामक जमींदार से जो उस भूभाग में बड़ा प्रभुत्वशाली हो चुका था, मेल कर लिया और उसकी पुत्री से विवाह कर लिया। उससे भुनगर नामक, एक पुत्र का जन्म हुआ। अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त वह अपने पूर्वजो के राजसिंहासन पर आरूढ हुआ। अन्त में उसकी भी मृत्यु हो गई। उसके उपरान्त उसके पुत्र दूदा नामक ने राज्य का कार्य भार सभाला। कुछ (६१) वर्ष राज्य करने के उपरान्त उसने नसरपुर को अपने अधिकार में कर लिया। युवावस्था में ही उसका देहान्त हो गया। इसका वालक सघार नामक था अत उसकी पुत्री तारी ने दीर्घकाल तक राज्य किया और प्रजा उसकी आज्ञाकारी रही। जब सघार युवावस्था को प्राप्त हुआ तो राजसिंहासन स्वय प्राप्त करके वह राज्य व्यवस्था में व्यस्त हो गया। जो लोग विद्रोह कर रहे थे एव अशान्ति फैला रहे थे उन्हे कड़ी चेतावनी देकर कच (कच्छ) की ओर इस आशय से प्रस्थान किया कि नान्कनी को अपने अधिकार में कर ले। कुछ वर्ष उपरान्त उसका देहान्त हो गया।

उसके कोई पुत्र न था। उसकी पत्नी हमून नामक, वाहका[1] के किले पर राज्य करती थी। उसने अपने भाइयो को मुहम्मद तोर[2] तथा तहरी के राज्य के लिये नियुक्त कर दिया। कुछ समय पश्चात् दूदा के भाइयो ने जो पास ही (किसी स्थान पर) छिपे थे, प्रकट होकर हमून के भाइयों को परास्त कर दिया। इसी बीच में दूदा की सतान में से पहतू नामक एक व्यक्ति ने आक्रमण कर दिया और बहुत बडी सख्या में लोग उसके सहायक बन गये। जो लोग राज्य पर अधिकार जमाने के लिये उठ खडे हुये थे, उनका उसने समूल उच्छेदन कर दिया और स्वय सिंहासनारूढ हो गया। उसने भी कई वर्ष तक राज्य किया। उसके देहान्त के पश्चात् खैरा नामक एक व्यक्ति ने राज्य का कार्य भार सभाला। उसमें बहुत से गुण थे। उसकी मृत्यु के उपरान्त उरमील नामक एक व्यक्ति सिंहासनारूढ हुआ। वह बडा ही अत्याचारी तथा निष्ठुर था। प्रजा उसके अत्याचार से घृणा के कारण उसकी हत्या के लिये सन्नद्ध हो गई। सुमा समूह वाले कच (कच्छ) के आस-पास से आकर सिन्ध के उपान्त में निवास करने लगे थे। उन लोगो तथा सिन्ध वालो में परस्पर व्यापार एव (६२) विवाह के कारण मेल हो गया था। सुमा समूह का उनर नामक व्यक्ति बडा ही योग्य था। राज्य के प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने प्रातःकाल उसके घर में गुप्त रूप से सघटन करके उरमील की हत्या करदी और उसका सिर नगर के द्वार पर लटकवा दिया। वह सभी लोगो की सहमति से सिंहासनारूढ हो गया।

जाम उनर बिन (पुत्र) बाबनया[3]—

वह अमीरो की सहमति से स्थायी शासक बन गया। बहुत बडी सख्या में लोग उसके चारों ओर एकत्र हो गये। उसने एक बहुत बडी सेना लेकर सिविस्तान पर आक्रमण करने का सकल्प किया। सिविस्तान के उपान्त मे पहुच कर, मलिक रतन से, जो तुर्क सुल्तानो

१ वगह काट अथवा वजह कोट परान नहर से पूर्व की ओर ५ मील पर अल्लाह बन्द के ऊपर था। जिस समय रन कच्छ में जहाज चल सकते थे, यह एक प्रसिद्ध बन्दरगाह था।

२ मुहम्मद तोर को सूमरा लोगों ने तहरी के उपरान्त अपनी राजधानी बनाया था। मीरपुर बतोरा तालुके में शाह कपूर के आस पास- गोंगरह वाह के किनारे।

३ तारीखे मुबारक शाही में यह शब्द बाबनदुनिया लिखा है (तारीखे मुबारक शाही पृ० १३१) तारीखे फीरोज शाही (लेखक) शम्स सिराज अफ़ीफ में बाहिबंना है (तारीखे फीरोज शाही पृ० १९९, २००, २०१, २४०, २४१-२४६ २५३, २५४, २८२)। तोहफतुल किराम में पानिया है। (तोहफतुल किराम भाग ३, पृ० ४६) दाऊद पोता के अनुसार इसे बाँभ होना चाहिये। (तारीखे सिन्ध पृ० २०५)।

का पदाधिकारी था, युद्ध छेड़ दिया। मलिक रतन भी सेना लेकर किले से निकला और रणक्षेत्र में पहुँचा और युद्ध की अग्नि प्रज्वलित कर दी। जाम उनर सर्व प्रथम युद्ध में पराजित हुआ। उसने पुनः अपने भाइयों की सहायता से सघटित होकर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। मलिक रतन घोड़ा दौड़ाते समय घोड़े से पृथक् होकर भूमि पर गिर पड़ा। जाम उनर ने उसका सिर उसके शरीर से काट कर सिविस्तान के किले पर अधिकार जमा लिया। मलिक फीरोज़ तथा अली शाह तुर्क ने, जो भक्कर के समीप थे, उसे पत्र लिखे कि 'यह वीरता उचित न थी'। अब शाही सेना से युद्ध करने की तैयारी करके पौरुष दिखा। उसने इन बातों से प्रभावित होकर तहरी का सकल्प कर लिया किन्तु उन्हीं दिनों में रुग्ण होकर मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसने तीन वर्ष और छः मास तक राज्य किया।

कुछ लोगों का यह मत है कि जब जाम उनर ने सिविस्तान विजय कर लिया तो वह एक रात्रि में भोग-विलास का प्रबन्ध करके मदिरापान में तल्लीन था। इसी बीच में समाचार प्राप्त हुये कि कुछ विद्रोही पहुँच गये। उसने अपने वकील (प्रधान मंत्री) काहा बिन (पुत्र) तमाची को विद्रोहियों से युद्ध करने के लिये भेजा। जब वह सेना लेकर धावा (६३) मारता हुआ उन लोगों के समीप पहुचा तो युद्ध ही के समय बन्दी बना लिया गया। जाम उनर उसकी ओर से उपेक्षा करके उसी प्रकार भोग विलास में तल्लीन रहा। काहा बिन (पुत्र) तमाची इसी कारण उससे ईर्ष्या रखने लगा। उसने किसी न किसी उपाय से अपने आपको शत्रुओं के हाथों से मुक्त कराया और जाम उनर का विरोधी बन कर भक्कर के किले पर पहुँचा तथा अली शाह तुर्क से भेंट की। अली शाह ने मलिक फीरोज़ के साथ सेना एकत्र कर के बहरामपुर[1] के किले में जाम उनर की हत्या कर दी और मलिक फीरोज़ को किले पर अधिकार प्रदान करके स्वयं लौट गया। तीन दिन पश्चात् जाम उनर के आदमियों ने छल एवं धूर्तता से काहा बिन (पुत्र) तमाची तथा मलिक फीरोज़ की हत्या करदी।

जाम जूना बिन (पुत्र) बाबनया—

जाम उनर की मृत्यु के उपरान्त, जाम जूना सुमा समूह में जामी की उपाधि से प्रसिद्ध हुआ। उसने समस्त सिन्ध विजय करने का सकल्प किया। उसने अपने भाइयों तथा सम्बन्धियों को प्रोत्साहन प्रदान करके (उस) विलायत (प्रान्त) की ओर नियुक्त किया। उन लोगों ने तलहती नामक स्थान पार करके भक्कर के ग्रामों तथा कस्बों में रक्तपात एवं ध्वंस प्रारम्भ कर दिया। दो तीन बार सुमा लोगों तथा भक्कर के अधिकारियों के मध्य में घोर युद्ध हुआ। तुर्क लोग युद्ध की शक्ति न पाकर, भक्कर का किला छोड़ कर उच्च की ओर चले गये। जाम जूना उस सेना के भागने का समाचार पाकर निरन्तर कूच करता हुआ भक्कर पहुचा और उसने कुछ वर्ष स्थायी रूप से सिन्ध में व्यतीत किये। जिन दिनों सुल्तान अलाउद्दीन[2] (खलजी) ने अपने भाई उलुग खाँ को मुल्तान के आसपास के स्थानों के लिये नियुक्त किया, उलुग खाँ ने मलिक ताज काफूरी तथा तातार खा को जाम जूना के विनाश हेतु सिन्ध भेजा। जाम जूना सेना के पहुँचने के पूर्व कण्ठ के एक सक्रामक रोग के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसने १३ वर्ष तक राज्य किया। सुल्तान अलाउद्दीन की सेना ने भक्कर के उपान्त में पहुँच कर भक्कर के किले पर विजय प्राप्त कर ली और सिविस्तान की ओर प्रस्थान किया।

---

१ बहरामपुर—तन्दा डिवीज़न, हैदराबाद (सिन्ध) के नीचे। बहरामपुर का क़िला सम्भवतया जूनी ताल्लुक़े में था।

२ सुल्तान अलाउद्दीन खलजी का निधन १३१५ ई० में हुआ। जाम जूना ७३४ हि० [१३३३-३४ ई०] के पश्चात् सिंहासनारूढ़ हुआ, अतः यह घटना निराधार है।

जाम तमाची बिन (पुत्र) जाम उनर (तथा उसका पुत्र खैरुद्दीन)—

(६४) (जाम तमाची) राज्य के प्रतिष्ठित व्यक्तियो की सहमति से अपने पूर्वजो के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। सुल्तान अलाउद्दीन को मना युद्ध करके जाम तमाची बिन (पुत्र) उनर को बन्दी बना कर परिवार सहित देहली ले गई।[1] वहाँ उसके पुत्रो का जन्म हुआ। सुमा समूह तहरी के उपान्त में जीवन व्यतीत करता था और जाम उनर के पदाधिकारी राज्य व्यवस्था अपने हाथ मे लेकर शासन प्रबन्ध करते थे। कुछ समय उपरान्त मलिक खैरुद्दीन वल्द जाम तमाची, जो बाल्यावस्था में अपने पिता के साथ देहली चला गया था, अपने पिता के निधन के पश्चात् सिन्ध पहुँचा और उसे अपने अधिकार में करके राज्य करने लगा।

कुछ समय उपरान्त सुल्तान मुहम्मद शाह गुजरात के मार्ग से सिन्ध पहुँचा। चूंकि जाम खैरुद्दीन बन्दीगृह के कष्ट भोग चुका था, अत सुल्तान मुहम्मद शाह के अत्यधिक बुलाने पर भी उसने उसकी सेवा स्वीकार न की, यहाँ तक कि सुल्तान मुहम्मद शाह बिन (पुत्र) तुगलुक़ शाह की थत्तह के उपान्त में मृत्यु हो गई।

———

१ इस घटना का भी कोई आधार नहीं।

तारीखे फ़िरिश्ता

[लेखक—मुहम्मद क़ासिम हिन्दू शाह फिरिश्ता]

[प्रकाशन – नवल किशोर प्रेस]

ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ शाह

(१३२) उलुग़ ख़ाँ ने यह सुन कर कि उसका पिता शीघ्रातिशीघ्र पहुँच रहा है, अफगानपुर के निकट तीन दिन में एक महल इस आशय से बनवा कर पूरा कराया कि उसका पिता वहाँ पहुच कर रात्रि में विश्राम करे और प्रातःकाल जब शहर को सजा लिया जाय और राज्य की समस्त व्यवस्था तैयार करली जाय, तो वह पूर्ण समारोह से शहर में प्रविष्ट हो। जब सुल्तान वहाँ पहुँचा तो उसने भवन के निर्माण का कारण ज्ञात करके वहीं विश्राम किया। तुगलुकाबाद में ख़ुशियां मनाई गईं और कुब्बे सजाये गये। दूसरे दिन उलुग ख़ाँ तथा समस्त अमीर बादशाह की अगुलियो को चूम कर सम्मानित हुये। सुल्तान उन लोगों के साथ जो उसके स्वागतार्थ आये थे, उस महल में बैठ कर भोजन करने लगा। जब भोजन हटाया गया तो लोगो ने समझा कि बादशाह उसी समय सवार होगा। वे बिना हाथ धोये बाहर निकल आये। उलुग ख़ाँ भी जिसकी मौत न आई थी हाथी घोडे तथा समस्त उपहार प्रस्तुत करने हेतु बाहर निकला। इसी बीच में महल की छत गिर पडी और बादशाह पाँच व्यक्तियों के साथ उस छत के नीचे मृत्यु को प्राप्त हो गया।

कुछ इतिहासो में लिखा है कि चूकि महल नवनिर्मित और ताज़ा था, अतः हाथियो के दौडाने के कारण गिर पडा। कुछ इतिहासकारो ने लिखा है कि इस प्रकार के भवन के निर्माण से जिसकी कोई आवश्यकता न थी, यह सन्देह होता है कि उलुग ख़ाँ ने अपने पिता की हत्या कराना निश्चय कर लिया था। ज़िया बरनी ने, जो फीरोज़ शाह का समकालीन था, इस कारण कि फीरोज़ बादशाह, सुल्तान मुहम्मद का बडा भक्त था, यह बात नही लिखी किन्तु बुद्धिमानो से यह बात छिपी नही रह सकती कि यह बात बुद्धि के निकट ठीक नही। क्योंकि उलुग़ ख़ाँ भोजन में अपने पिता के साथ था, उसमें यह चमत्कार कहाँ से उत्पन्न हो गया कि उसके निकलते ही छत गिर पडे। सब से बढ कर यह कि सद्रे जहाँ गुजराती ने अपने इतिहास में लिखा है कि उलुग़ ख़ाँ ने इस भवन को एक जादू पर आधारित किया था। जब वह जादू न रहा तो छत नीचे आ रही। हाजी मुहम्मद कन्धारी ने अपने इतिहास मे लिखा है कि जिस समय सुल्तान हाथ धो रहा था एक बज्र आकाश से गिरा और छत को फाडता हुआ उसके सिर पर पडा। यह बात ठीक ज्ञात होती है। उसकी मृत्यु रबी-उल अव्वल ७२५ हि० (फरवरी-मार्च १३२५ ई०) में हुई।

सुल्ताने आज़म सुल्तान मुहम्मद तुग़लुक शाह

(१३३) वह बडा ही पराक्रमी बादशाह था। सातो इकलीमो की बादशाही से वह सतुष्ट न था और उसकी इच्छा थी, कि समस्त जिन्नात तथा मनुष्य उसके आज्ञाकारी हो जायें, सभी ससार वाले उसके दास बने रहें। यदि उसे अपने पूर्वजो से इस्लाम प्राप्त न हुआ होता तो वह अपने आपको ईश्वर कहलवाता। वह इतना बडा दानी था कि पूरा खजाना भिखारी को दे देने के उपरान्त भी उसे कुछ न समझता था। हातिम का आजीवन का दान उसके एक दिन के दान के बराबर था। दान करते समय वह धनी, भिखारी, मित्र तथा अन्य लोगो को बराबर समझता था। ततार ख़ाँ को, जिसे बादशाह गयासुद्दीन तुगलुक

शाह ने सुनार गाँव का वाली नियुक्त कर दिया था और जो उसका मुह बोला भाई था, बहराम खाँ की उपाधि प्रदान की और एक दिन में १०० हाथी, १००० घोडे, एक करोड लाल तन्के, चत्र तथा दूरबाश प्रदान किये और बगाले तथा सुनार गाँव की विलायत स्थायी रूप से देकर बडे सम्मान से उसे उस ओर भेजा। मलिक सजर बदखशानी को ८० लाख तन्के, मलिकुल मुलूक एमादुद्दीन को ७० लाख तन्के तथा अपने गुरु मौलाना अजदुद्दीन को ४० लाख तन्के एक ही दिन में प्रदान कर दिये। मलिकुन्नुदमा नासिरुद्दीन कामी को प्रत्येक वर्ष लाखो तन्के देता था। मलिक ग़ाजी को जो बडा प्रतिष्ठित, बुद्धिमान तथा अच्छा कवि था, प्रत्येक वर्ष १००,००० तन्के प्रदान करता रहता था। काज़ी ग़ज़नी को भी इतना ही प्रदान करता जिसका अनुमान कोई न कर सकता था। निजामुद्दीन अहमद बख्शी[१] के अनुसधान के अनुसार तन्के का अभिप्राय चाँदी के तन्के से है जिसमे थोडा सा ताँबा भी होता था। एक तन्के में १६ ताँबे के पोल (पैस) होते थे। ˙ वह बादशाह बडा ही अद्भुत प्राणी था। उसमें विरोधाभासी गुण पाये जाते थे। उसकी आकाक्षा यह थी कि सुलेमान के समान राज्य को नबूवत से जोडे रक्खे और शरा तथा राज्य सम्बन्धी आदेश अपनी ओर से निकालता था और मुहम्मद साहब के धर्म के पालन में पाँचो समय की नमाज पढ़ता था। .....

(१३४) आरम्भ में जब उसका राज्य दृढ़ भी न हुआ था कि तुर्माशीरीन खान बिन (पुत्र) दाऊद खाँ हाकिम उलूस चुग़ताई जिसमें रुस्तम की वीरता तथा किसरा (नौशीरवाँ) का न्याय एकत्र था और जो मुसलमानों का बादशाह था, एक बहुत बडी सेना लेकर हिन्दुस्तान पर विजय प्राप्त करने के विचार से ७२७ हि० (१३२६-२७ ई०) में इस राज्य में घुस आया। लमगान तथा मुल्तान से देहली के द्वार तक कुछ प्रदेशो को विध्वंस करता और कुछ को वचन लेकर अधिकार में करता हुआ अपने शिविर उस नगर (देहली) में लगवा दिये। सुल्तान मुहम्मद तुग़लुक़ शाह ने युद्ध करना सम्भव न देख कर बडी नम्रता से व्यवहार किया और कुछ विश्वासपात्रों को मध्य में डाल कर धन-सम्पत्ति तथा जवाहरात जिससे तुर्माशीरीन सतुष्ट हो सका, देकर अपना सम्मान तथा राज्य पुन खरीद लिया। तुर्माशीरीन दिखान को तो देहली से प्रस्थान कर गया किन्तु गुजरात की ओर जाकर उसने उस विलायत को, जो मार्ग में थी, विध्वस कर दिया और एक ससार की सम्पत्ति पर अधिकार जमा कर और अत्यधिक लोगो को बन्दी बना कर सिन्ध तथा मुल्तान के मार्ग से पूर्णतया सुरक्षित लौट गया। जिया बरनी ने अपने समय का पक्ष लेकर अपने इतिहास में इस घटना का उल्लेख नही किया।

बादशाह मुहम्मद तुगलुक़ शाह इसके उपरान्त सेना की सुव्यवस्था एव राज्यो को अपने अधीन करने में तल्लीन हो गया। दूर दूर की विलायतें उदाहरणार्थ घोर समुन्द (द्वार समुद्र), मावर, कम्पिला, वारगल, लखनौती, हुबीब गाँव, सुनार गाँव तथा देहली के निकट के स्थान अपने अधिकार में कर लिये। करनाटक की विलायत (प्रदेश) को समस्त लम्बाई तथा चौडाई में समुद्र तट तक अपने अधिकार में कर लिया। वहाँ के कुछ रायो ने खराज अदा करने का वचन दे दिया और प्रत्येक वर्ष खजाने में खराज भेजा करते थे। किसी भी विद्रोही अथवा उपद्रवी को दीवानी के धन मे से आधा दिरहम भी छिपा लेने अथवा विद्रोह करके रख लेने की शक्ति न थी। राज्य के अधीन प्रदेशो के समस्त मुकद्दम, राय तथा जमीदार अधीनता एव सेवा भाव प्रकट करते हुये कर अदा करना आवश्यक समझा करते थे। उसे चारो ओर से इतना धन प्राप्त होता रहता था कि उसके अत्यधिक व्यय के बावजूद खजाने में किसी कारण कमी न हो पाती थी किन्तु मुल्तान के राज्य के मध्य एव अन्त में इतनी दृढता के

१ तबक़ाते अकबरी पृ० १९६।

तारीख़े फ़िरिश्ता

[लेखक—मुहम्मद क़ासिम हिन्दू शाह फिरिश्ता]

[प्रकाशन – नवल किशोर प्रेस]

ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ शाह

(१३२) उलुग़ ख़ाँ ने यह सुन कर कि उसका पिता शीघ्रातिशीघ्र पहुँच रहा है, अफग़ानपुर के निकट तीन दिन में एक महल इस आशय से बनवा कर पूरा कराया कि उसका पिता वहाँ पहुच कर रात्रि में विश्राम करे और प्रात काल जब शहर को सजा लिया जाय और राज्य की समस्त व्यवस्था तैयार करली जाय, तो वह पूर्ण समारोह से शहर में प्रविष्ट हो। जब सुल्तान वहाँ पहुँचा तो उसने भवन के निर्माण का कारण ज्ञात करके वहीं विश्राम किया। तुग़लुकाबाद में ख़ुशिया मनाई गई और कुब्बे सजाये गये। दूसरे दिन उलुग़ ख़ाँ तथा समस्त अमीर बादशाह की अगुलियो को चूम कर सम्मानित हुये। सुल्तान उन लोगो के साथ जो उसके स्वागतार्थ आये थे, उस महल में बैठ कर भोजन करने लगा। जब भोजन हटाया गया तो लोगो ने समझा कि बादशाह उसी समय सवार होगा। वे बिना हाथ धोये बाहर निकल आये। उलुग ख़ाँ भी जिसकी मौत न आई थी हाथी घोडे तथा समस्त उपहार प्रस्तुत करने हेतु बाहर निकला। इसी बीच में महल की छत गिर पडी और बादशाह पाँच व्यक्तियो के साथ उस छत के नीचे मृत्यु को प्राप्त हो गया।

कुछ इतिहासो में लिखा है कि चूकि महल नवनिर्मित और ताजा था, अत हाथियो के दौडाने के कारण गिर पडा। कुछ इतिहासकारो ने लिखा है कि इस प्रकार के भवन के निर्माण से जिसकी कोई आवश्यकता न थी, यह सन्देह होता है कि उलुग ख़ाँ ने अपने पिता की हत्या कराना निश्चय कर लिया था। ज़िया बरनी ने, जो फीरोज शाह का समकालीन था, इस कारण कि फीरोज बादशाह, सुल्तान मुहम्मद का बडा भक्त था, यह बात नही लिखी किन्तु बुद्धिमानो से यह बात छिपी नही रह सकती कि यह बात बुद्धि के निकट ठीक नही। क्योकि उलुग ख़ाँ भोजन में अपने पिता के साथ था, उसमें यह चमत्कार कहाँ से उत्पन्न हो गया कि उसके निकलते ही छत गिर पडे। सब से बढ़ कर यह कि सद्रे जहाँ गुजराती ने अपने इतिहास मे लिखा है कि उलुग ख़ाँ ने इस भवन को एक जादू पर आधारित किया था। जब वह जादू न रहा तो छत नीचे आ रही। हाजी मुहम्मद कन्धारी ने अपने इतिहास में लिखा है कि जिस समय सुल्तान हाथ धो रहा था एक बज्र आकाश से गिरा और छत को फाडता हुआ उसके सिर पर पडा। यह बात ठीक ज्ञात होती है। उसकी मृत्यु रबी-उल अव्वल ७२५ हि० (फरवरी-मार्च १३२५ ई०) में हुई।

सुल्ताने आज़म सुल्तान मुहम्मद तुग़लुक़ शाह

(१३३) वह बडा ही पराक्रमी बादशाह था। सातो इक़लीमों की बादशाही से वह सतुष्ट न था और उसकी इच्छा थी, कि समस्त जिन्नात तथा मनुष्य उसके आज्ञाकारी हो जायँ, सभी ससार वाले उसके दास बने रहे। यदि उसे अपने पूर्वजो से इस्लाम प्राप्त न हुआ होता तो वह अपने आपको ईश्वर कहलवाता। वह इतना बडा दानी था कि पूरा खजाना भिखारी को दे देने के उपरान्त भी उसे कुछ न समझता था। हातिम का आजीवन का दान उसके एक दिन के दान के बराबर था। दान करते समय वह धनी, भिखारी, मित्र तथा अन्य लोगो को बराबर समझता था। ततार ख़ाँ को, जिसे बादशाह गयासुद्दीन तुगलुक

शाह ने सुनार गाँव का वाली नियुक्त कर दिया था और जो उसका मुह बोला भाई था, वहराम खाँ की उपाधि प्रदान की और एक दिन में १०० हाथी, १००० घोडे, एक करोड लाल तन्के, चत्र तथा दूरबाश प्रदान किये और वगाले तथा सुनार गाँव की विलायत स्थायी रूप से देकर बडे सम्मान से उसे उस ओर भेजा। मलिक सजर बदखशानी को ८० लाख तन्के, मलिकुल मुलूक एमादुद्दीन को ७० लाख तन्के तथा अपने गुरु मौलाना अजदुद्दीन को ४० लाख तन्के एक ही दिन में प्रदान कर दिये। मलिकनुन्नुदमा नासिरुद्दीन कामी को प्रत्येक वर्ष लाखो तन्के देता था। मलिक ग़ाज़ी को जो बडा प्रतिष्ठित, बुद्धिमान तथा अच्छा कवि था, प्रत्येक वर्ष १००,००० तन्के प्रदान करता रहता था। काज़ी ग़ज़नी को भी इतना ही प्रदान करता जिसका अनुमान कोई न कर सकता था। निज़ामुद्दीन अहमद बख्शी[१] के अनुसधान के अनुसार तन्के का अभिप्राय चाँदी के तन्के से है जिसमें थोडा सा ताँबा भी होता था। एक तन्के में १६ ताँबे के पोल (पैस) होते थे। वह बादशाह बडा ही अद्भुत प्राणी था। उसमें विरोधाभासी गुण पाये जाते थे। उसकी आकाक्षा यह थी कि सुलेमान के समान राज्य का नबूवत से जोडे रक्खे और शरा तथा राज्य सम्बन्धी आदेश अपनी ओर से निकालता था और मुहम्मद साहब के धर्म के पालन में पाँचो समय की नमाज पढ़ता था।

(१३४) आरम्भ में जब उसका राज्य दृढ़ भी न हुआ था कि तुर्माशीरीन खान बिन (पुत्र) दाऊद खाँ हाकिम उलूस चुग़ताई जिसमें रुस्तम की वीरता तथा किसरा (नौशीरवाँ) का न्याय एकत्र था और जो मुसलमानों का बादशाह था, एक बहुत बडी सेना लेकर हिदुस्तान पर विजय प्राप्त करने के विचार से ७२७ हि० (१३२६-२७ ई०) में इस राज्य में घुस आया। लमगान तथा मुल्तान से देहली के द्वार तक कुछ प्रदेशों को विध्वस करता और कुछ को वचन लेकर अधिकार में करता हुआ अपने शिविर उस नगर (देहली) में लगवा दिये। सुल्तान मुहम्मद तुग़लुक़ शाह ने युद्ध करना असम्भव न देख कर बडी नम्रता से व्यवहार किया और कुछ विश्वासपात्रों को मध्य में डाल कर धन-सम्पत्ति तथा जवाहरात जिससे तुर्माशीरीन सतुष्ट हो सका, देकर अपना सम्मान तथा राज्य पुन खरीद लिया। तुर्माशीरीन दिखान को तो देहली से प्रस्थान कर गया किन्तु गुजरात की ओर जाकर उसने उस विलायत को, जो मार्ग में थी, विध्वस कर दिया और एक ससार की सम्पत्ति पर अधिकार जमा कर और अत्यधिक लोगो को बन्दी बना कर सिन्ध तथा मुल्तान के मार्ग से पूर्णतया सुरक्षित लौट गया। ज़िया बरनी ने अपने समय का पक्ष लेकर अपने इतिहास में इस घटना का उल्लेख नहीं किया।

बादशाह मुहम्मद तुग़लुक़ शाह इसके उपरान्त सेना की सुव्यवस्था एव राज्यो को अपने अधीन करने में तल्लीन हो गया। दूर दूर की विलायतें उदाहरणार्थ धोर समुन्द (द्वार समुद्र), माबर, कम्पिला, वारगल, लखनौती, हुबीब गाँव, सुनार गाँव तथा देहली के निकट के स्थान अपने अधिकार में कर लिये। करनाटक की विलायत (प्रदेश) को समस्त लम्बाई तथा चौडाई में समुद्र तट तक अपने अधिकार में कर लिया। वहाँ के कुछ रायो ने खराज अदा करने का वचन दे दिया और प्रत्येक वर्ष खजाने में खराज भेजा करते थे। किसी भी विद्रोही अथवा उपद्रवी को दीवानी के धन में से आधा दिरहम भी छिपा लेने अथवा विद्रोह करके रख लेने की शक्ति न थी। राज्य के अधीन प्रदेशों के समस्त मुकद्दम, राय तथा जमींदार अधीनता एव सेवा भाव प्रकट करते हुये कर अदा करना आवश्यक समझा करते थे। उसे चारों ओर से इतना धन प्राप्त होता रहता था कि उसके अत्यधिक व्यय के बावजूद खजाने में किसी कारण कमी न हो पाती थी किन्तु मुल्तान के राज्य के मध्य एव अन्त में इतनी दृढ़ता के

१ तबक़ाते अकबरी पृ० १९९।

पीछा करने के कारण घबड़ा गया और गर्शास्प को बन्दी बना कर, वज़ीर ख्वाजये जहाँ के पास भेज दिया और अपने आपको बादशाह के हितैषियो मे सम्मिलित कर लिया। ख्वाजये जहाँ ने गर्शास्प को वन्दी बना कर सुल्तान के दरवार में भेज दिया। सुल्तान ने आदेश दिया कि उसकी खाल खीच कर उसमें घास फूस भर दिया जाय और उसे नगर मे घुमाया जाय।

(१३६) सुल्तान ने इस अवसर पर यह सोचा कि "मेरी आकाश का चुम्बन करन वाली पताका की छाया में बहुत से देश आगये हैं। राजधानी किसी (ऐसे) स्थान पर बनाई जाय जो राज्य के मध्य में हो, जिससे यदि किसी प्रदेश मे कोई दुर्घटना हो तो शीघ्र ही समाचार मिल जाय और तुरन्त सेना भेजी जा सके।" कुछ बुद्धिमान दरबारियो ने जिन्हे हिन्दुस्तान की सब दिशाओ का ज्ञान था, निवेदन किया कि उज्जैन राजधानी बनाई जाय क्योकि वह हिन्दुस्तान के मध्य मे है और बिक्रमाजीत (विक्रमादित्य) खत्तरी (क्षत्री) ने इसी कारण उसे राजधानी बनाया था। कुछ लोगो ने जो बादशाह के हृदय की बात जानते थे कहा कि देवगीर (देवगिरि) हिन्दुस्तान के मध्य मे है। बादशाह ने ईरान और तूरान के जैसे शक्तिशाली बादशाहो के निकट होने पर जो उसके शत्रु थे, तथा अन्य बातो पर ध्यान न देकर आदेश दिया कि देहली का विनाश करके जो मिस्र के समान थी, वहाँ के लोगो, छोटो बडो नोकरो तथा अन्य लोगो, स्त्रियो तथा पुरुषो को देवगीर (देवगिरि) में बसाया जाय। ......शहर देवगीर का नाम दौलताबाद रख कर बडे बडे भवनो की नीव डाली गई। देवगीर (देवगिरि) के किले के चारो ओर खाईं खोदी गई। दौलताबाद के बालाघाट में यलोरा के निकट बडे बडे उद्यान तथा हौज़ बनवाये गये।..... ख्वाजा हसन देहलवी उसी समय दौलताबाद मे मृत्यु को प्राप्त हुआ। जलवायु के अनुसार दौलताबाद मे कोई आपत्ति नही किन्तु उसमें दोष यही है कि वह ईरान तथा तूरान से दूर है।

गर्शास्प के युद्ध तथा देहली वालो को दौलताबाद में बसाने के उपरान्त सुल्तान कन्धाना के किले की विजय के लिये, जो खंबर के निकट है, रवाना हुआ। नाग नायक कोलियो का नेता था। उसन बडी वीरता से युद्ध किया। वह किला पर्वत की चोटी पर बडा ही दृढ बना है। सुल्तान आठ मास तक किले को घेरे रहा और साबात बनवाने तथा मगरिबी लगवाने में व्यस्त रहा। नाग नायक ने परेशान होकर क्षमा याचना कर ली और किला सौंप कर प्रतिष्ठित अमीरों की श्रेणी में आ गया। बादशाह दौलताबाद लौट कर प्रसन्नता-पूर्वक समय व्यतीत करने लगा।

मलिक बहराम ऐबा का मुल्तान में विद्रोह ......(विद्रोह शान्त करने के उपरान्त) बादशाह लौट कर देहली पहुँचा। चूँकि (देहली के) आसपास के लोग जो ज़बरदस्ती दौलताबाद में बसाये गये थे, छिन्न-भिन्न हो गये थे, बादशाह ने दो वर्ष वहाँ रह कर दौलताबाद का समृद्ध बनाना निश्चय कर लिया। अपनी माता मखदूमये जहाँ तथा समस्त अमीरो और सैनिको की स्त्रियों को दौलताबाद की ओर रवाना किया। देहली के किसी व्यक्ति को जो वहाँ की जलवायु के आदी बन गये थे, उस स्थान पर रहने न दिया। दोआब में कर वृद्धि... ... (१३७) प्रजा का विनाश......इसी प्रकार उसने क़न्नौज से प्रस्थान करके महोबे तक एक ससार की हत्या कर दी। बहराम खाँ की मृत्यु के उपरान्त मलिक फखरुद्दीन का बगाल में विद्रोह... ... सैयिद हसन का माबर में विद्रोह .... सुल्तान ने देहली पहुँच कर सैयिद हसन के सम्बन्धियो को बन्दी बनाया और ७४२ हि० (१३४१-४२ ई०) में माबर की ओर प्रस्थान किया। देवगीर (देवगिरि) पहुँच कर आमिलो तथा मुकातिओ के कर को बहुत बढा दिया। कुछ लोग कर की अधिकता के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गये। उस विलायत में भी भारी खराज लगा कर कठोर कर वसूल करने वाले नियुक्त किये। तत्पश्चात् ख्वाजये जहाँ को देहली

भेजा और स्वयं सैयिद हसन का विद्रोह शान्त करने के लिये तिलग के मार्ग से माबर की ओर चल खड़ा हुआ। जब वह वहाँ पहुचा तो उस स्थान पर दस दिन से सक्रामक रोग फैला हुआ था और अधिकतर मनुष्य रुग्ण थे। कुछ प्रतिष्ठित सरदार मर गये। सुल्तान भी रुग्ण हो गया। मलिक नायब तथा एमादुलमुल्क वजीर को वहा छोड कर स्वयं दौलताबाद की ओर लौट गया। जब वह बीर के क़स्बे के निकट पहुचा तो उसके दाँतो में पीडा होने लगी। उसका एक दाँत वही गिर गया और वही दफन करके एक गुम्बद बना दिया गया जो अभी तक वर्तमान है और सुल्तान तुग़लुक़ के दाँत के गुम्बद के नाम से प्रसिद्ध है। बादशाह ने पटन पहुच कर कुछ दिनो तक अपने रोगो का उपचार किया। शिहाब सुल्तान को नुसरत खाँ की उपाधि देकर उसे बिदर की विलायत प्रदान की। वहाँ के आसपास की अक्ताओ को एक लाख तन्के के मुक़ातये (कर का ठेका) पर उसे प्रदान कर दिया। शाह, अफ़ग़ान के विद्रोह की सूचना पाकर उसी रुग्णावस्था में पालकी पर बैठ कर देहली की ओर लौटा और आदेश दिया कि देहली के निवासियो में से जिसे दौलताबाद में निवास करना अच्छा लगे, वह दौलताबाद रहे और जो देहली लौटना चाहे, वह देहली लौट जाय। कुछ लोग बादशाह के साथ देहली चल दिये और कुछ मरहट प्रदेश में रह गये ·· घोर अकाल······एक सेर अनाज १७ दिरहम में भी प्राप्त न होता था। सुल्तान कृषि को उन्नति देने मे व्यस्त रहा। कुछ समय तक कठोर दड देना छोड दिया। प्रजा को ख़ज़ाने से धन प्रदान किया। कुएँ खुदवाने तथा लोगो को कृषि करने के विषय में प्रोत्साहन देता रहा। लोगों ने तक़ावी के रूप में जो धन पाया था, उसमें से कुछ अपने भोजन पर व्यय कर दिया। कुछ से कुएँ खुदवाये तथा कृषि कराई किन्तु वर्षा न होने के कारण कुओ के जल से कोई लाभ न हो सका। बहुत से लोगो को कठोर दड दिये गये।······शाह अफगान का विद्रोह······बादशाह मार्ग से लौट कर देहली पहुचा। देहली में दूसरी बार भी अकाल था। मनुष्य को मनुष्य खाये जाता था। सुल्तान ने कुएँ खोदने के लिये पुन: धन दिया जिससे लोग कृषि कर सकें किन्तु लोग अपनी परेशानी, निर्धनता एव वर्षा की कमी के कारण अपराधी समझे जाते और उन्हे कठोर दड दिये जाते।

इस समय मन्दहरान, चौहान, मियाना तथा बहिस्तियान के जो गरोह सुनाम तथा सामाने में थे, विद्रोही हो गये। घने जगलो में घुस कर उन लोगो ने वही घर बना लिये तथा मालगुज़ारी देना बन्द कर दिया। बादशाह ने उनके विनाश के लिये चढाई करके उनके निवास स्थानो को जो हिन्दुस्तान मे मन्दल कहलाते हैं विध्वस करा दिया। उनके सहायको को छिन्न-भिन्न करके, उनके सरदारो को अपने साथ लाकर शहर (देहली) में बसा दिया।

७४३ हि० (१३४२-४३ ई०) में खुक्खरों के सरदार तिलक चन्द्र ने विद्रोह करके लाहौर के हाकिम मलिक तातार खा की हत्या करदी। सुल्तान ने ख्वाजये जहा को उसका विद्रोह शान्त करने के लिये भेजा ··· · ···।

(१३८) ७४४ हि० (१३४३-४४ ई०) में हाजी सईद हुरमुज़ी बादशाह के राजदूत के साथ आया और हकूमत का मनशूर (अधिकार-पत्र) तथा खिलाफत (खलीफा होने) की खिलअत लाया। बादशाह ने समस्त अमीरों, आलिमो तथा सूफियो सहित लगभग ५-६ कोस तक उसका स्वागत किया। खलीफा के मनशूर को सिर पर रक्खा। हाजी सईद हुरमुज़ी के चरणों के चुम्बन किये। कुछ पग उसके आगे-आगे पैदल चला। शहर (देहली) मे कुब्बे सजाये गये। मनशूर पर सोना न्योछावर किया गया। जुमे तथा ईदो की नमाज़ो की, जो स्थगित कर दी गई थी अनुमति दे दी। खलीफा के नाम का खुत्बा पढ़ा गया। जिन बादशाहो को खलीफा द्वारा अनुमति न प्राप्त हुई थी उनके नाम यहाँ तक कि अपने पिता का नाम खुत्बे से पृथक् करा दिया।

पीछा करने के कारण घबड़ा गया और गर्शास्प को बन्दी बना कर, वज़ीर स्वाजये जहाँ के पास भेज दिया और अपने आपको बादशाह के हितैषियो में सम्मिलित कर लिया। ख्वाजये जहाँ ने गर्शास्प को बन्दी बना कर सुल्तान के दरबार में भेज दिया। सुल्तान ने आदेश दिया कि उसकी खाल खींच कर उसमें घास फूस भर दिया जाय और उसे नगर में घुमाया जाय।

(१३६) सुल्तान ने इस अवसर पर यह सोचा कि "मेरी आकाश का चुम्बन करने वाली पताका की छाया में बहुत से देश आगये हैं। राजधानी किसी (ऐसे) स्थान पर बनाई जाय जो राज्य के मध्य में हो, जिससे यदि किसी प्रदेश मे कोई दुर्घटना हो तो शीघ्र ही समाचार मिल जाय और तुरन्त सेना भेजी जा सके।" कुछ बुद्धिमान दरबारियो ने जिन्हे हिन्दुस्तान की सब दिशाओ का ज्ञान था, निवेदन किया कि उज्जैन राजधानी बनाई जाय क्योकि वह हिन्दुस्तान के मध्य में है और बिक्रमाजीत (विक्रमादित्य) खत्तरी (क्षत्री) ने इसी कारण उसे राजधानी बनाया था। कुछ लोगो ने जो बादशाह के हृदय की बात जानते थे कहा कि देवगीर (देवगिरि) हिन्दुस्तान के मध्य मे है। बादशाह ने ईरान और तूरान के जैसे शक्तिशाली बादशाहो के निकट होने पर जो उसके शत्रु थे, तथा अन्य बातो पर ध्यान न देकर आदेश दिया कि देहली का विनाश करके जो मिस्र के समान थी, वहाँ के लोगो, छोटो बडो नोकरो तथा अन्य लोगो, स्त्रियो तथा पुरुषो को देवगीर (देवगिरि) मे बसाया जाय।......शहर देवगीर का नाम दौलताबाद रख कर बडे बडे भवनो की नींव डाली गई। देवगीर (देवगिरि) के किले के चारो ओर खाई खोदी गई। दौलताबाद के बालाघाट में यलोरा के निकट बडे बडे उद्यान तथा हौज़ बनवाये गये।......ख्वाजा हसन देहलवी उसी समय दौलताबाद में मृत्यु को प्राप्त हुआ। जलवायु के अनुसार दौलताबाद मे कोई आपत्ति नही किन्तु उसमे दोष यही है कि वह ईरान तथा तूरान से दूर है।

गर्शास्प के युद्ध तथा देहली वालो को दौलताबाद में बसाने के उपरान्त सुल्तान कन्धाना के किले की विजय के लिये, जो खँबर के निकट है, रवाना हुआ। नाग नायक कोलियो का नेता था। उसन बडी वीरता से युद्ध किया। वह किला पर्वत की चोटी पर बडा ही दृढ बना है। सुल्तान आठ मास तक किले को घेरे रहा और साबात बनवाने तथा मगरिबी लगवाने में व्यस्त रहा। नाग नायक ने परेशान होकर क्षमा याचना कर ली और किला सौंप कर प्रतिष्ठित अमीरो की श्रेणी में आ गया। बादशाह दौलताबाद लौट कर प्रसन्नता-पूर्वक समय व्यतीत करने लगा।

मलिक बहराम ऐबा का मुल्तान में विद्रोह......(विद्रोह शान्त करने के उपरान्त) बादशाह लौट कर देहली पहुँचा। चूँकि (देहली के) आसपास के लोग जो जबरदस्ती दौलताबाद मे बसाये गये थे, छिन्न-भिन्न हो गये थे, बादशाह ने दो वर्ष वहाँ रह कर दौलताबाद का समृद्ध बनाना निश्चय कर लिया। अपनी माता मखदूमये जहाँ तथा समस्त अमीरो और सैनिकों की स्त्रियों को दौलताबाद की ओर रवाना किया। देहली के किसी व्यक्ति को जो वहाँ की जलवायु के आदी बन गये थे, उस स्थान पर रहने न दिया। दोआब में कर वृद्धि......(१३७) प्रजा का विनाश......इसी प्रकार उसने क़न्नौज से प्रस्थान करके महोबे तक एक ससार की हत्या कर दी। बहराम खाँ की मृत्यु के उपरान्त मलिक फखरुद्दीन का बगाल में विद्रोह ... सैयिद हसन का माबर में विद्रोह .... सुल्तान ने देहली पहुँच कर सैयिद हसन के सम्बन्धियो को बन्दी बनाया और ७४२ हि० (१३४१-४२ ई०) में माबर की ओर प्रस्थान किया। देवगीर (देवगिरि) पहुँच कर आमिलो तथा मुक़ातेओ के कर को बहुत बढा दिया। कुछ लोग कर की अधिकता के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गये। उस विलायत में भी भारी खराज लगा कर कठोर कर वसूल करने वाले नियुक्त किये। तत्पश्चात् ख्वाजये जहाँ को देहली

भेजा और स्वय सैयिद हसन का विद्रोह शान्त करने के लिये तिलग के मार्ग से माबर की ओर चल खडा हुआ। जब वह वहाँ पहुचा तो उस स्थान पर दस दिन से सक्रामक रोग फैला हुआ था और अधिकतर मनुष्य रुग्ण थे। कुछ प्रतिष्ठित सरदार मर गये। सुल्तान भी रुग्ण हो गया। मलिक नायब तथा एमादुलमुल्क वज़ीर को वहा छोड कर स्वय दौलताबाद की ओर लौट गया। जब वह बीर के कस्बे के निकट पहुचा तो उसके दाँतो मे पीडा होने लगी। उसका एक दाँत वही गिर गया और वही दफन करके एक गुम्बद बना दिया गया जो अभी तक वर्त्तमान है और सुल्तान तुग़लुक़ के दाँत के गुम्बद के नाम स प्रसिद्ध है। बादशाह ने पटन पहुच कर कुछ दिनो तक अपने रोगो का उपचार किया। शिहाब सुल्तान को नुसरत खाँ की उपाधि देकर उसे बिदर की विलायत प्रदान की। वहाँ के आसपास की अक्ताओ को एक लाख तन्के के मुकातये (कर का ठेका) पर उसे प्रदान कर दिया। शाह, अफगान के विद्रोह की सूचना पाकर उसी रुग्णावस्था मे पालकी पर बैठ कर देहली की ओर लौटा और आदेश दिया कि देहली के निवासियो में से जिस दौलताबाद मे निवास करना अच्छा लगे, वह दौलताबाद रह और जो देहली लौटना चाहे, वह देहली लौट जाय। कुछ लोग बादशाह के साथ देहली चल दिये और कुछ मरहट प्रदेश में रह गये ·· घोर अकाल······एक सेर अनाज १७ दिरहम में भी प्राप्त न होता था। सुल्तान कृषि को उन्नति देने मे व्यस्त रहा। कुछ समय तक कठोर दड देना छोड़ दिया। प्रजा को खज़ाने से धन प्रदान किया। कुएँ खुदवाने तथा लोगो को कृषि करने के विषय में प्रोत्साहन देता रहा। लोगो ने तकावी के रूप में जो धन पाया था, उसमें से कुछ अपने भोजन पर व्यय कर दिया। कुछ से कुएँ खुदवाये तथा कृषि कराई किन्तु वर्षा न होने के कारण कुओ के जल से कोई लाभ न हो सका। बहुत से लोगो को कठोर दड दिये गये।······शाहू अफगाम का विद्रोह······बादशाह मार्ग से लौट कर देहली पहुचा। देहली में दूसरी बार भी अकाल था। मनुष्य को मनुष्य खाये जाता था। सुल्तान ने कुएँ खोदने के लिये पुन: धन दिया जिससे लोग कृषि कर सकें किन्तु लोग अपनी परेशानी, निर्धनता एव वर्षा की कमी के कारण अपराधी समझे जाते और उन्हे कठोर दड दिये जाते।

इस समय मन्दहरान, चौहान, मियाना तथा बहिस्तियान के जो गरोह सुनाम तथा सामाने में थे, विद्रोही हो गये। घने जगलो में घुस कर उन लोगो ने वही घर बना लिये तथा मालगुज़ारी देना बन्द कर दिया। बादशाह ने उनके विनाश के लिये चढाई करके उनके निवास स्थानों को जो हिन्दुस्तान मे मन्दल कहलाते हैं विध्वस करा दिया। उनके सहायको को छिन्न-भिन्न करके, उनके सरदारो को अपने साथ लाकर शहर (देहली) मे बसा दिया।

७४३ हि० (१३४२-४३ ई०) में खुक्खरों के सरदार तिलक चन्द्र ने विद्रोह करके लाहौर के हाकिम मलिक तातार खा की हत्या करदी। सुल्तान ने ख्वाजये जहा को उसका विद्रोह शान्त करने के लिये भेजा ··· · ···।

(१३८) ७४४ हि० (१३४३-४४ ई०) में हाजी सईद हुरमुज़ी बादशाह के राजदूत के साथ आया और हकूमत का मनशूर (अधिकार-पत्र) तथा खिलाफत (खलीफा होने) की खिलअत लाया। बादशाह ने समस्त अमीरो, आलिमो तथा सूफ़ियो सहित लगभग ५-६ कोस तक उसका स्वागत किया। खलीफा के मनशूर को सिर पर रक्खा। हाजी सईद हुरमुज़ी के चरणो के चुम्बन किये। कुछ पग उसके आगे-आगे पैदल चला। शहर (देहली) मे कुब्बे सजाये गये। मनशूर पर सोना न्योछावर किया गया। जुमे तथा ईदो की नमाजो को, जो स्थगित कर दी गई थी अनुमति दे दी। खलीफा के नाम का खुत्बा पढ़ा गया। जिन बादशाहो को खलीफा द्वारा अनुमति न प्राप्त हुई थी उनके नाम यहाँ तक कि अपने पिता का नाम खुत्बे से पृथक् करा दिया।

उसी समय किशना (कृष्णा) नायक लुद्दर (रुद्र) देव का पुत्र जो वरगल के पास रहता था अकेला कर्नाटक के महान राय बलाल देव के पास पहुचा और उससे कहा कि "मुसलमान तिलग तथा कर्नाटक प्रदेश में प्रविष्ट होकर हम लोगो का समूल उच्छेदन कर देना चाहते हैं। इस विषय मे सोच विचार करना चाहिये।" बलाल देव ने अपने राज्य के सभी उच्च पदाधिकारियों को बुला कर परामर्श किया। बड़े सोच विचार के उपरान्त निश्चय हुआ कि बलाल देव अपना समस्त राज्य पीछे छोड कर स्वय इस्लामी सेना के मार्ग की सीमा पर राजधानी बनाये तथा माबर घोर समुन्दर (द्वार समुद्र) एव कम्पिला को मुसलमानो के राज्य से निकाल ले। किशना नायक (कृष्णा नायक) को भी परामर्श दिया कि वह भी इस समय अवसर होने के कारण वरगल को देहली की अधीनता से निकाल ले। बलाल देव ने अपने राज्य की पर्वतीय सीमा में एक दुर्गम स्थान पर एक नगर अपने पुत्र बेजन राय के नाम पर बनवाया जो बेजन नगर के नाम से प्रसिद्ध हुआ और शनै शनैः प्रयोग होते होते बेजा नगर (विजया नगर) हो गया। किशना (कृष्णा) नायक के साथ अत्यधिक अश्वारोही तथा पदाती करके सर्व प्रथम वरगल पर अधिकार जमा लिया। मलिक एमादुलमुल्क वज़ीर भाग कर दौलताबाद पहुच गया। तत्पश्चात् बलाल देव ने किशना (कृष्णा) नायक को सहायता प्रदान करके दो ओर से माबर तथा घोर समुन्दर (द्वार समुद्र) के रायो को जो प्राचीन काल मे कर्नाटक के हाकिम के अधीन थे, मुसलमानो के अधिकार से निकाल लिया। चारो ओर से विद्रोह उठ खड़ा हुआ। दूर के प्रदेशो में गुजरात तथा देवगीर (देवगिरि) के अतिरिक्त कोई भी स्थान देहली के बादशाह के अधीन न रहा। ७४५ हि० (१३४४-४५ ई०) में निज़ाम माईं ने कड़े में विद्रोह किया। ...... उसी वर्ष नुसरत खाँ ने दकिन (दक्षिण) में विद्रोह किया।......एक मास व्यतीत न हुआ था कि जफर खाँ अलाई का भागिनय अलीशाह ने जो दौलताबाद का अमीर सदा था, गुलबर्गे में शाही कर एकत्र करने के लिये पहुचा। उस स्थान को शाही पदाधिकारियो से रिक्त पाकर अपने भाइयो को जिसमें हसन काँगू भी था एकत्र करके ७४६ हि० (१३४५-४६ ई०) में विद्रोह कर दिया.........उसी समय कुछ नवीसिन्दो पर अपहरण का आरोप लगाया गया था। बादशाह ने उनकी हत्या का आदेश दे दिया था। वे देहली से मँहगाई का बहाना करके अवध तथा जफराबाद ऐनुल मुल्क के शरण में पहुँच गये। वह इस कारण सुल्तान को अपने आप से रुष्ट पाता था।

उन्ही दिनो में उसे सूचना मिली कि मरहट तथा दौलताबाद की विलायत कुतलुग खाँ के कारकुनो के अत्याचार के कारण नष्ट हो गई है। दकिन (दक्षिण) के महसूल दस से एक पहुँच गया है। बादशाह ने त्रुटिपूर्ण बातो पर विश्वास कर लिया था और कुतलुग खाँ को (१४०) जो उत्कृष्ट व्यवहार तथा न्याय में अद्वितीय था, दकिन (दक्षिण) से बुलवाया और आदेश दिया कि कुतलुग खाँ का भाई मौलाना निज़ामुद्दीन, जिसकी उपाधि आलिम मलिक थी और जो, बरौच मे था, दौलताबाद पहुँच कर देहली से आमिलो के पहुँचने तक राज्य व्यवस्था एव शासन प्रबन्ध करता रहे। कुतलुग खाँ उस समय एक हौज़ बनवाने में व्यस्त था जो इस समय होज़े कुतलू के नाम से प्रसिद्ध है। इस स्थानान्तरण पर हौज़ के निर्माण का कार्य उसको सौंप दिया। बादशाही खज़ाना जो उसने एकत्र किया था और मार्ग के भय से देहली न ले जा सकता था धारा गढ किले मे छोड दिया और शीघ्रातिशीघ्र देहली की ओर प्रस्थान कर दिया। धारागढ पर्वत के ऊपर के किले को कहते हैं। उस पर्वत के आँचल मे उसके एक कोने से मिलाकर चूने तथा पत्थर का एक किला बनवाया गया है। दौलताबाद का किला वही है जो पर्वत पर बना है।.........

सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ की कथित स्वजीवनी

ब्रिटिश म्यूज़ियम लन्दन की तबक़ाते नासिरी की एक हस्तलिखित पोथी के अन्त में सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ की कथित स्वजीवनी के दो वरक़ मिलते हैं।[1] इसका संक्षिप्त उल्लेख भी ब्रिटिश म्यूज़ियम की हस्तलिखित पोथियों की सूची में चार्ल्स रियू ने दिया है। इस पर एक लेख प्रोफ़ेसर मुहम्मद हबीब ने 'इण्टरमीजिएट कालेज मैगज़ीन अलीगढ़' १६३० ई० में लिखा था। डाक्टर आग़ा महदी हुसेन ने अपनी पुस्तक 'The rise and fall of Muhammad Bin Tughluq' में इस कथित स्वजीवनी को बड़ा ही महत्वपूर्ण बताया है और इन चार पृष्ठों का रोटोग्राफ (फोटो) भी छापा है तथा अंग्रेज़ी अनुवाद भी अपनी पुस्तक में दिया है।[2] वे इसे बाबर की स्वजीवनी के समान महत्वपूर्ण बताते हैं। डाक्टर इश्तियाक़ हुसेन क़ुरेशी का विचार है कि यह सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ के उस अरबी प्रार्थना-पत्र की फ़ारसी प्रति हो सकती है जो सुल्तान ने मिस्र के ख़लीफ़ा के पास भेजा था।[3] श्री ख़लीक़ अहमद निज़ामी ने अपनी पुस्तक "Studies in Medieval Indian History" में इस कथित स्वजीवनी पर १० पृ० का एक लेख लिखा है जिसमें यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि यह खंड आद्योपान्त असत्यों का भण्डार है।[4] उन्होंने अपने लेख को कथित निषेधार्थक तथा निरपेक्ष प्रमाणों पर आधारित किया है। उनका विचार है कि यदि सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ ने कोई स्वजीवनी लिखी होती तो उसका ज्ञान बरनी को अवश्य हुआ होता। *मुहम्मद बिन तुग़लुक़ की स्वरचित जीवनी का इस प्रकार अज्ञात होना आश्चर्यजनक* है। उनका यह भी विचार है कि इस कथित स्वजीवनी की शैली को सुल्तान मुहम्मद बिन *तुग़लुक़ की शैली बताना, जोकि बहुत बड़ा विद्वान था, उचित नहीं।* इसके अतिरिक्त उन्होंने इस बात को विशेष महत्व दिया है कि सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ किसी प्रकार अपने *पूर्ववर्ती सुल्तानों के विषय में वह बातें नहीं लिख सकता था जो इस खंड में पाई जाती हैं।* उन्होंने यह भी लिखा है कि सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ का दार्शनिकों की निन्दा करना *किसी भी समकालीन अथवा बाद के इतिहास से सिद्ध नहीं होता।*

इस खंड के अध्ययन से पता चलता है कि इसका लेखक अपने लिए बन्दा, बन्दये कमतरीन अथवा सेवक या तुच्छ सेवक शब्दों का प्रयोग करता है; किन्तु जिस प्रकार इसमें पिछले समस्त सुल्तानों के कार्यों की समीक्षा की गई है तथा अपने अभिप्राय का उल्लेख किया गया है उस पर दृष्टिपात करते हुये इसे किसी स्वजीवनी का भाग नहीं कहा जा सकता किन्तु इसे कोई पत्र अथवा इसी प्रकार का लेख अवश्य कहा जा सकता है। पूर्ववर्ती सुल्तानों के

१ ब्रिटिश म्यूज़ियम की फ़ारसी हस्तलिखित पोथियों की सूची (१८७६ ई०) भाग १, पृ० ७३, ७४ (Add—२५७८५) वरक़ ३१६, ३१७।

२ महदी हुसेन पृ० १७४, १७६।

३ "Administration of the Sultanate of Delhi." P. 16.

४ "Studies in Medieval Indian History" Cosmopolitan Publishers, Badarbagh, Aligarh 1956, P. 76--85.

विषय मे जो कुछ भी लिखा गया है[1] उसके सम्बन्ध मे यह कह देना कि सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ उन सुल्तानो के विषय में यह बातें लिख ही नही सकता था उचित नही। सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक केवल अपने पिता को ही सर्व साधारण की सम्मति से सिंहासनारूढ़ किया हुआ बादशाह मानता था। अन्य सुल्तानो ने जिस प्रकार राज्य पर अधिकार जमाया उनकी आलोचना किसी के लिये भी कठिन नही। श्री निज़ामी ने अपने तर्क की पुष्टि में पिछले सुल्तानो के उत्कृष्ट कार्यों का तथा समकालीन इतिहासकारो द्वारा उनकी प्रशसा का भी उल्लेख किया है, किन्तु इन सुल्तानो के दुष्कृत्यों को भी न भूल जाना चाहिये। सुल्तान जलालुद्दीन को यद्यपि बरनी ने सुल्तानुल हलीम (मृदुल सुल्तान) लिखा है किन्तु उसने जिस प्रकार राज्य प्राप्त किया उससे उसके समकालीन सन्तुष्ट न थे और दूसरे वश में राज्य के चले जाने पर उन्हे विशेष आपत्ति दृष्टिगत होती थी अत. श्री निज़ामी के इस तर्क में कोई अधिक महत्त्व नही ज्ञात होता। उनका यह कथन है कि यह खड असत्यो का भण्डार है, न्यायसगत नही। यद्यपि पिछले सुल्तानो के सिक्कों द्वारा यह सिद्ध हो जाता है कि वे अपने आपको ख़लीफा का सहायक समझते थे किन्तु यह भी स्वीकार करना पडेगा कि देहली के किसी सुल्तान ने, विशेष रूप से सुल्तान इल्तुतमिश के उपरान्त, ख़लीफा से अधिकार-पत्र मगवाने अथवा सम्पर्क स्थापित रखने को इस प्रकार महत्त्व नही दिया। यद्यपि सुल्तान बल्बन ने अपने पुत्र से अब्बासी ख़लीफाओ की अनुमति मगवाने का उल्लेख किया है किन्तु यह चर्चा धर्मनिष्ठ सुल्तानो के प्रसग में की गई है, साधारण सासारिक सुल्तानो के विषय में नही।[2] सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक ने अब्बासी ख़लीफा द्वारा अधिकार-पत्र प्राप्त करने के विषय मे इतना अधिक जोर दिया था, कि उसके सभी समकालीन इस बात पर आश्चर्य किया करते थे[3]। ऐसे सुल्तान द्वारा पिछले सुल्तानो की निन्दा जिन्होने इस कार्य को महत्त्व न दिया था, कोई आश्चर्यजनक बात नही। जिस समय सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक़ शाह ने मिस्र के अब्बासी ख़लीफाओ द्वारा अधिकार-पत्र मगवाना निश्चय किया, उसकी बहुत सी योजनायें असफल हो चुकी थी। विद्रोह तथा अकाल व्यापक था। प्रजा का विश्वास समाप्त हो चुका था, अत. जिस परिस्थिति में इस खड में उल्लिखित बातें लिखी गई उस परिस्थिति को देखते हुये जो कुछ उसमें लिखा गया है वह न्याय-विरुद्ध नही कहा जा सकता। सुल्तान ने यह सोचा होगा कि यदि वह अपने वश के अधिकार को, जिसे उसने निर्वाचन पर आधारित बताया है, दृढता-पूर्वक प्रजा के समक्ष रखे और अन्य सुल्तानो की आलोचनायें तथा अपने पिछले कार्यो की निन्दा करते हुये अब्बासी ख़लीफाओं के सहारे पर लोगों से आज्ञाकारिता की आशा करे तो उचित होगा। ख़लीफा का इतना आदर सम्मान यदि बिना किसी राजनैतिक कारण के समझा जाये तो इसे निरा पागलपन ही कहना होगा, क्योंकि सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक शाह इतना धर्मान्ध भी न था, अत इस खड को सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलुक द्वारा लिखा गया अथवा लिखवाया गया समझना उस समय तक गलत नही कहा जा सकता जब तक निरपेक्ष प्रमाणो के आधार पर इसका खडन न किया जा सके।

---

१ देखो बरनी पृ० ४६१-६२ तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १, पृ० ५८। "जब सुल्तान मुहम्मद शहर (देहली) से स्वर्गद्वारी में निवास करने लगा था तो उसके हृदय में यह बात आई कि बादशाहों की सल्तनत तथा उनका शासन बिना ख़लीफ़ा की अनुमति के जोकि अब्बास की संतान से है उचित नहीं। जो बादशाह अब्बासी ख़लीफ़ाओं की अनुमति के बिना स्वयं बादशाही कर चुके हैं अथवा कर रहे हैं, वे अपहरणकर्त्ता हैं। जब वह शहर देहली पहुँचा तो उसने जुमे तथा ईद की नमाज़ें स्थगित करादीं।"

२ बरनी पृ० १७५ ७६; ख़लजी कालीन भारत पृ० २-३

३ बरनी पृ० ४६५ ९६, तुगलुक़ कालीन भारत भाग १, पृ० ६०-६१।

इस खड को वह महत्त्व भी प्रदान नही किया जा सकता जो डाक्टर महदी हुसेन ने इसे दिया है। इस खड में जो कुछ लिखा है और जिस प्रकार लिखा गया है उसे, जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, स्वजीवनी का कोई भाग कहना बडा कठिन है, किन्तु इसे पत्र कहा जा सकता है जिसमें सुल्तान ने अब्बासी खलीफाओ के प्रति अपनी निष्ठा प्रदर्शित की। यह कहना कठिन है कि यही पत्र मिस्र भेजा गया था किन्तु सम्भव है कि इसका भारतवर्ष में प्रचार किया गया हो और जिस प्रकार मुग़लकालीन महत्त्वपूर्ण पत्र पुस्तको के अन्त में लोग नकल कर दिया करते थे, उसी प्रकार इस पत्र को भी नकल कर दिया गया हो।

स्वजीवनी का अनुवाद

"जिस तिथि से उपर्युक्त बल्बन ने सुल्तान गयासुद्दीन की उपाधि धारण की, उस दिन से उसने इतने अत्याचार तथा जुल्म किये कि दिन प्रति दिन धर्म (इस्लाम) निर्बल होता गया और इस्लाम के आदेशो की उपेक्षा होने लगी। परिणाम स्वरूप अधिकाश लोगो ने उपद्रव करना आरम्भ कर दिया। इस दुष्कृत्य में सलग्न होना उन्होने लाभ का साधन समझा। अवैध तगल्लुब[१] को सल्तनत प्राप्त करने का उचित साधन समझा जाने लगा और इसी कारण से राज्य एक मुतगल्लिब (अपहरणकर्त्ता) से दूसरे मुतगल्लिब (अपहरणकर्त्ता) तथा एक विद्रोही से दूसरे विद्रोही के हाथ में पहुँचने लगा और यथोचित इमाम की सर्वमान्यता, जो पैगम्बर द्वारा प्रस्थापित नियमो में से एक है और जो सदाचार के पथ पर उम्मते मुहम्मदी (मुस्लिम समाज) की उन्नति का कारण है, (लोगो के) हृदय से मिट गई। अतएव जो कोई भी उस इमाम (सत पुरुष) की प्रतिष्ठा के प्रति आज्ञाकारिता का शीश नही नवाता तो ऐसे शापित पुरुष का नाम इस्लाम की सूची से निकाल देना चाहिये। यद्यपि सर्व साधारण ऐसे मुतगल्लिबो (अपहरणकर्त्ताओ) को सुल्तान समझते तथा कहते भी थे, फिर भी बल्बन के परिवार के एक सेवक ने, जिसने जलालुद्दीन की उपाधि धारण करली थी, बल्बन के पौत्र की हत्या करदी और तगल्लुब से (अपहरण द्वारा) राज्य पर अधिकार जमा लिया और ५ वर्ष तक इस देश के मुसलमान उसके अत्याचार के अन्धकार स पीडित रहे। 'अली कामो' नामक उसका एक भतीजा था। उसने उपर्युक्त जलालुद्दीन का सिर काट लिया और उसने तगल्लुब (अपहरण द्वारा) से सुल्तान अलाउद्दीन की उपाधि धारण करली। उसने विद्रोहियो की एक सेना एकत्र की और इस देश पर अधिकार जमा लिया। न तो उसे इस्लाम के मूल सिद्धान्तो का ही कोई ज्ञान था और न उसे सल्तनत के कर्त्तव्यो तथा शासन की लेशमात्र कल्पना ही थी। उसके शासन काल मे इस्लाम का कोई चिह्न शेष न रह गया। मारुफ (वैध) को मुन्किर (अवैध) तथा मुन्किर (अवैध) को मारुफ (वैध) बनाया गया। मुसलमानो से उनके व्यक्तित्व तथा सम्पत्ति की सुरक्षा छिन गई थी और लोगो के हृदयो में अत्याचार तथा जुल्म क नियम आरूढ हो गये थे। उसके पश्चात् उसका एक पुत्र सिहासनारूढ हुआ, जिसने अपनी उपाधि सुल्तान कुतुबुद्दीन रखी। उसने भी अपने पिता का स्थान लिया और एक हिन्दू-जन्य गुलाम बच्चे को उन्नति प्रदान की और उसे अपना विश्वासपात्र बनाया। उसकी उपाधि खुसरो खाँ निश्चित की। इस हिन्दू-जन्य दास ने छल तथा विश्वासघात को, जिसकी प्रथा भी पड गई थी, अपनी उन्नति का साधन बनाया और राज्य की कल्पना करने लगा। उसने अपने उपकारी के प्रति विश्वासघात की कल्पना की। सुल्तान कुतुबुद्दीन को उसके निवास स्थान मे ही हत्या की और उसके किसी भी पुत्र को जीवित न छोडा। इस घृणित व्यवहार द्वारा उसने केवल तगल्लुब (अपहरण) से राजसिंहासन पर अधिकार जमा लिया।

यह आतक ४ मास तक रहा। उस हिन्दूजन्य कृतघ्नी के प्रति आज्ञाकारिता से मैं पीछे हट गया। मैने उससे दूर रहना आवश्यक समझा। इस समय सेवक का पिता, जो

१ तगल्लुब अथवा अपहरण या आक्रमण द्वारा भी राज्य प्राप्त करने का एक साधन था। मध्यकालीन राजनीतिज्ञों ने इसके औचित्य पर भी अपने विचार प्रकट किये हैं।

उपर्युक्त मुतग़ल्लिब (अपहरणकर्त्ता) अलाउद्दीन का अमीर था, एक बड़ी अक़्ता का स्वामी था। देहली से घृणा के कारण सेवक (मै) अपने पिता के पास चला गया। उस हिन्दू बच्चे का विरोध तथा प्रतिरोध करना दो कारणों से मेरे हृदय को रुचिकर हुआ: (१) प्रतिकार लेने की मानव प्रवृत्ति जो एक उपकारी (सुल्तान कुतुबुद्दीन) के उपकारो के कारण उत्तेजित हुई, यद्यपि वह वास्तविक अर्थ में उपकारी नही था, (२) अपने जीवन का भय क्योकि प्रत्येक मुतग़ल्लिब (अपहरणकर्त्ता) ने उन अमीरो की, जो पूर्ववर्त्ती शासक के काल मे समृद्ध हुये थे, हत्या करना अपनी आदत बनाली थी। इन दो कारणों से ही उस कृतघ्न दुष्ट के विनाश हेतु अभियान पर रवाना होना निश्चय हुआ। कुछ अनुयाइयों के समूह के साथ, जिन्हे सघटित करने में हमें सफलता मिली, अपने लक्ष्य पर दृढ होकर हमने देहली की ओर प्रस्थान किया। वह हिन्दू जादा, जिसने (उस समय तक) देहली के समस्त अमीरों तथा सेना पर अधिकार जमा लिया था, अपने समस्त शाही सैनिको के साथ हमारा सामना करने के लिये निकला। ईश्वर ने उस क्षण मेरे पिता को शक्ति तथा सहनशीलता प्रदान की और उस तुच्छ हिन्दू पर विजय प्रदान की और जो कोई भी सुल्तान कुतुबुद्दीन तथा उसके भाइयों की हत्या में उसका सहयोगी था, वह हमारी तलवार का शिकार हुआ; और सर्व साधारण को उसके आधिपत्य से मुक्ति प्राप्त हुई।

तत्पश्चात् देहली के बहुत से लोग एकत्र हुये और उन्होने सेवक के पिता को शासक चुना[1] और मेरे पिता ने सभी के सहयोग से चार वर्ष एवं दस मास तक राज्य किया। चूँकि इस देश में बलबन के तग़ल्लुब (अपहरण) के दिनो के कुछ समय पश्चात् एक अपरिचित *व्यक्ति के रूप में आये थे, अतः मुतग़ल्लिबो (अपहरणकर्त्ताओ) के तग़ल्लुब (अपहरण) के* दोष से मुक्त रहे और अवैध तग़ल्लुब (अपहरण) तथा अकृतज्ञता की धूल ने उनके वस्त्र को स्पर्श न किया परन्तु उनके जीवन-गति की परिस्थितियो ने उन्हें उलूमे दीनी (धार्मिक विद्याओ) का ज्ञान प्राप्त करने से वंचित रखा। अपने विषय में अध्ययन तथा परिश्रम के अभाव के कारण उन्होने सेवक को भी वैध इमाम की खोज करने में प्रोत्साहन न दिया। उन्होंने उन विषयो को भी कोई महत्त्व न दिया जो वास्तव मे वैध इमाम की स्वीकृति पर निर्भर थे; तत्पश्चात् अपने पिता के अनुकरण में जीवन व्यतीत करने के कारण इस तुच्छ सेवक द्वारा उन झूठे समूहो को प्रोत्साहन प्राप्त हो गया और चूंकि सेवक को इस गौरवपूर्ण कार्य के विषय में कोई ज्ञान न था, मुतग़ल्लिबो (अपहरणकर्त्ताओ) की प्रथा के अनुसार अब्बासी (खलीफाओ) का सहयोग प्राप्त करने की आवश्यकता पर ध्यान न देकर मैं अपने आपको कलकित करता रहा और उस खुराफात पर कान धरता रहा। इस प्रकार सीधे नरक में अपने लिये एक स्थान तैयार कर लिया। समकालीन 'उलमा', यह विश्वास करके कि आवश्यकता वर्जित बातों को भी अनुज्ञेय बना देती है, सत्य बोलने से पीछे हटते थे[2] और अपने स्वार्थ के कारण उन्होने दुष्टता का हाथ अधर्म की आस्तीन के बाहर निकाला।

झूठे पदो की लालसा में उन्होने सहायता की अतः धार्मिक विद्याओ की ज्योति (मुसलमानो के) उम्मत के मध्य से पूर्णतया लुप्त होगई। क्योकि मनुष्य प्राकृतिक रूप से विज्ञान की खोज में रहते हैं, अतः वे इस खोज के बिना शान्ति अनुभव नही कर सकते। सयोगवश मेरी भेट कुछ दार्शनिकों से हो गई और यह सोचकर कि वे उचित मार्ग पर होंगे मैं उनके ससर्ग में आया; और उनके कुछ शब्द मेरे हृदय में प्रारम्भिक शिक्षण के रूप में विद्यमान रहे। भ्रमों का प्रभाव आरम्भ से ही इस सीमा तक व्याप्त हो गया था कि सृष्टिकर्त्ता की विद्यमानता के

१ इस स्थान पर चुनाव का उल्लेख है, तग़ल्लुब (अपहरण) का नहीं।
२ देखो बरनी पृ० ४६६, तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १, पृ० ३६।

विषय में लोगो में भ्रम प्रसारित होगये और इस परिस्थिति ने मुतग़ल्लिबो (अपहरणकर्त्ताओ), जिनके काल मे उलमा लोग सत्य को व्यक्त करने में असमर्थ थे, की दुष्टता मे वृद्धि की।

मेरी दशा ऐसी हो गई कि मेरी कोई भी इच्छा वास्तव में कार्यान्वित नही हो सकी और राज्य, देश, धर्म तथा समृद्धि के विषय ग्रस्त व्यस्त हो गये। यह सामान्य अव्यवस्था इस सीमा को पहुँच गई कि प्रत्येक मनुष्य (इस्लाम के प्रति नैराश्य में) जनेऊ बांधना (काफ़िर होना) पसन्द करता।

तथापि, चूकि अपने स्वभाव के अनुसार मनुष्य निश्चय ही सभ्य समाज से सम्बन्धित होते हैं, इस (स्थिति) ने मुझे अपने विषय में तथा मुझ जैसे उन लोगो, जो अपने आपको अब भी इस्लाम से सम्बन्धित समझते थे, के विषय में, और ऐसी स्थिति के अन्त के विषय में विचार मग्न कर दिया।

जब मैं इन दुखपूर्ण विचारो से पीडित था, तब आकाश से, जहाँ दैवी कृपा की वायु चलती है, प्रसन्नता की एक मन्द वायु मेरे ऊपर आई, और जिसे मै अनुभव करने लगा और तर्क आधारित वाद विवाद तथा परम्परागत प्रमाणो के बल पर सृष्टिकर्त्ता की विद्यमानता तथा उसके शुद्ध गुण स्पष्ट हो गये। जब हृदय ईश्वर की एकता पर दृढ हुआ और जब उसे पैगम्बर जो लोगो को ईश्वर की ओर अग्रसर करते हैं, की प्रतिष्ठा के विषय में विश्वास होगया तो मैने वैध इमाम जो ईश्वर का खलीफा है और पैगम्बर का नायब है, के इच्छानुकूल अपना व्यवहार बनाने की आवश्यकता को स्वीकार किया। अत्यधिक दूरी होते हुये भी खलीफा के प्रति निष्ठा सुविधा-पूर्वक प्रदर्शित की जा सकती है[1]।

परिशिष्ट 'ब'

तारीखे फ़ीरोज़शाही

(रामपुर की हस्तलिखित पोथी)

ज़ियाउद्दीन बरनी की तारीखे फीरोजशाही का सकलन सर सैयिद अहमद खां ने किया था और वह कलकत्ते से १८६०–६२ ई० में प्रकाशित हुई। फारसी की हस्तलिखित पुस्तको की प्रकाशित सूचियो से तारीखे फीरोज शाही की निम्नाकित हस्तलिखित पोथियो का पता चलता है.

बलोशे—भाग १, ५५७ (मध्य १५ वी शताब्दी ईसवी)
भाग ४, २३२७ (१७ वी शताब्दी ईसवी)

रियु—भाग ३, ९१९ (१५ वी शताब्दी ईसवी)
१०१४ अ (१८५० ई०, थोडा सा अश)
१०२१ अ (थोडा सा अश)
१०२३ अ (थोडा सा अश)
१०४५ ब (थोडा सा अश)

बुहार—६१ (१६ वी शताब्दी ईसवी)

बांकीपुर—भाग ७, ५४६ (गयासुद्दीन तुगलुक से फीरोज तुगलुक, १६ वी शताब्दी ईसवी)

ईथे—२११ (१००७ हि० / १५९९ ई०)

बाडलिएन—१७३ (अपूर्ण, १००९ हि० / १६०० ई०)
१७२ (११९७ हि० / १७८३ ई०)
१७४ (११९६ हि० / १७८२ ई०)

आईवानव (करज़न)—२३ (१८ वी शताब्दी ईसवी)

बराऊन फारसी कैटलाग—८५ (११२८ हि० / १७१६ ई० का मुहर)

लिनडेसियाना—पृ० २३५ नम्बर ८२३ (१२३० हि० / १८१५ ई०)

आसफिया—पहला भाग पृ० २२८ नम्बर २५६।

बरलिन—४४७।

इनके अतिरिक्त रामपुर के रिजा पुस्तकालय में तारीखे फीरोजशाही की एक हस्त लिखित पोथी भी वर्त्तमान है जिसमें सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ तथा फ़ीरोज़ तुग़लुक़ का हाल प्रकाशित पोथी से विभिन्न है। जब तक उपर्युक्त समस्त हस्तलिखित पोथियो का अध्ययन न कर लिया जाय उस समय तक इन समस्त पोथियो तथा प्रकाशित पुस्तक में जो कुछ अन्तर है, उसके विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता।[1]

रामपुर की हस्तलिखित पोथी को मुहम्मद इब्ने जमाल मुहम्मद खतीब सुल्तानपुरी ने १०१७ हि० (१६०८ ई०) में नक़ल किया था। इसमें ३४४ पृष्ठ हैं और पुस्तक की लम्बाई

१ अलीगढ़ के इतिहास विभाग के प्रोफ़ेसर शेख़ अब्दुर्रशीद तारीख़े फ़ीरोज़शाही का नया संकलन प्रकाशित कर रहे हैं। वे सम्भवतया उपर्युक्त केवल दो या तीन हस्तलिखित पोथियों के ही आधार पर अपना संकलन तैयार कर रहे हैं।

(२) जियाउद्दीन बरनी का पहला मूल ग्रन्थ वही है जो प्रकाशित हो चुका है और रामपुर की हस्तलिखित पोथी को किसी ने सक्षिप्त किया है और उसमें से अनावश्यक बातें जिनका इतिहास से अधिक सम्बन्ध न था निकाल दी गई हैं।

दूसरे मत को स्वीकार करने में सबसे बडी कठिनाई यह है कि रामपुर की हस्तलिखित पोथी केवल सक्षिप्त सस्करण नही अपितु उसमें सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक शाह का वृत्तान्त दूसरे ढग से ही लिखा गया है। घटनाओ के क्रमानुसार उल्लेख के अतिरिक्त दो ऐसी घटनायें भी लिखी हैं जो प्रकाशित पोथी में विद्यमान नही अर्थात् बहाउद्दीन गर्शास्प का विद्रोह और तुर्माशीरी का आक्रमण। इसके अतिरिक्त मुहम्मद बिन तुग़लुक की ताम्र मुद्राओं के उल्लेख के प्रसग में 'चाउ' का भी उल्लेख हुआ है। 'चाउ' की चर्चा उन ऐतिहासिक ग्रन्थो में से किसी भी ग्रन्थ मे नही मिलती जो तारीखे फ़िरिश्ता के पूर्व लिखे गये। तारीखे फिरिश्ता लगभग उसी समय में लिखी गई है जबकि रामपुर की हस्तलिखित पोथी नकल की जा रही थी अत' यह कहना बडा कठिन होगा कि किसी ने रामपुर की हस्तलिखित पोथी को सक्षिप्त करते समय तारीखे फिरिश्ता के आधार पर 'चाउ' का उल्लेख बढ़ा दिया होगा। सबसे बढ कर ऐनुलमुल्क के विद्रोह के सम्बन्ध में बरनी ने रामपुर की तारीखे फीरोजशाही की हस्तलिखित पोथी में इस घटना का हाल लिखते समय अपना परिचय इस प्रकार दिया है "मैं तारीखे फीरोजशाही का सकलन कर्त्ता सुल्तान के नदीमो (मुसाहिबा) में थोडा बहुत सम्मान रखता था। मैंने सुल्तान द्वारा सुना था कि वह बार बार कहता था कि ऐनुलमुल्क ने अपनी योग्यता से हमारे लिये धनसम्पत्ति अवध तथा ज़फ़राबाद से पहुँचाई है।"[१] इन परिवर्धित अशो को देखते हुये यह बात स्वीकार करनी कठिन नही कि रामपुर की तारीखे फीरोजशाही की पोथी जियाउद्दीन बरनी द्वारा ही लिखी गई थी और सम्भवतया यही पोथी जियाउद्दीन बरनी का प्रथम मूल सस्करण है और प्रकाशित पुस्तक को बरनी ने इस पुस्तक के लिखने के उपरान्त पुन. राजनैतिक सिद्धान्तो का मिश्रण करके सशोधित तथा परिवर्धित किया।

परिशिष्ट 'स'

सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ तथा सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ के सिक्के[1]

गयासुद्दीन तुग़लुक़ प्रथम

७२०—७२५ हि० (१३२०—१३२५ ई०)

सख्या	टकसाल	तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठदेश)
				स्वर्ण के	
२७४	देहली हज़रत (राजधानी)	७२१	भार १६६ आकार १	दो वर्गों में अस्सुल्तानुल गाज़ी गयासुद्दुनिया वद्दीन अबुल मुज़फ्फर	वृत्त में तुगलुक़ शाह अस्सुल्तान नासिरे अमीरुल मोमिनीन[2] हाशिये में ज़ुरेबा हाज़ेहिस् सिक्कते बेहज़रते देहली फी सनते एहदा व इशरीन व सबामेयत[3]
				मिश्रित	
ब २८२	—	७२०	भार ५६ आकार ६	अस्सुल्तानुल ग़ाज़ी गयासुद्दुनिया वद्दीन	अबुल मुज़फ्फ़र तुग़लुक़ शाह अस्सुल्तान ७२०
२८३ २८४	—	७२०	भार ५६ आकार ·६५	२८२ सख्या के जैसा ही, किन्तु तीसरी पंक्ति के अन्त में ७२०	वृत्त में शाह तुग़लुक़ चारों ओर अबो सुनता ग़यासुदीं[4]

१ "Catalogue of the Coins in the Indian Museum, Calcutta" by H. Nelson Wright. Vol. II (Oxford 1907)

२ 'तुग़लुक़ शाह सुल्तान अमीरुल मोमनीन (खलीफ़ा) का सहायक'।

३ 'यह सिक्का देहली में सन् ७२१ में ढला।'

४ सिक्के में हिन्दी में इसी प्रकार लिखा है।

(२) ज़ियाउद्दीन बरनी का पहला मूल ग्रन्थ वही है जो प्रकाशित हो चुका है और रामपुर की हस्तलिखित पोथी को किसी ने सक्षिप्त किया है और उसमें से अनावश्यक बातें जिनका इतिहास से अधिक सम्बन्ध न था निकाल दी गई हैं।

दूसरे मत को स्वीकार करने में सबसे बडी कठिनाई यह है कि रामपुर की हस्तलिखित पोथी केवल सक्षिप्त सस्करण नही अपितु उसमें सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ शाह का वृत्तान्त दूसरे ढग स ही लिखा गया है। घटनाम्रो के क्रमानुसार उल्लेख के अतिरिक्त दो ऐसी घटनायें भी लिखी हैं जो प्रकाशित पोथी में विद्यमान नही अर्थात् बहाउद्दीन गर्शास्प का विद्रोह और तुर्माशीरी का आक्रमण। इसके अतिरिक्त मुहम्मद बिन तुग़लुक़ की ताम्र मुद्राम्रो के उल्लेख के प्रसग में 'चाउ' का भी उल्लेख हुआ है। 'चाउ' की चर्चा उन ऐतिहासिक ग्रन्थो में से किसी भी ग्रन्थ में नही मिलती जो तारीखे फ़िरिश्ता के पूर्व लिखे गये। तारीखे फ़िरिश्ता लगभग उसी समय में लिखी गई है जबकि रामपुर की हस्तलिखित पोथी नकल की जा रही थी अत यह कहना बडा कठिन होगा कि किसी ने रामपुर की हस्तलिखित पोथी को सक्षिप्त करते समय तारीखे फ़िरिश्ता के आधार पर 'चाउ' का उल्लेख बढा दिया होगा। सबसे बढ कर ऐनुलमुल्क के विद्रोह के सम्बन्ध में बरनी ने रामपुर की तारीखे फ़ीरोज़शाही की हस्तलिखित पोथी में इस घटना का हाल लिखते समय अपना परिचय इस प्रकार दिया है "मैं तारीखे फ़ीरोज़शाही का सकलन कर्त्ता सुल्तान के नदीमो (मुसाहिबो) में थोडा बहुत सम्मान रखता था। मैंने सुल्तान द्वारा सुना था कि वह बार बार कहता था कि ऐनुलमुल्क ने अपनी योग्यता से हमारे लिये धनसम्पत्ति अवध तथा ज़फराबाद से पहुँचाई है।"[1] इन परिवर्धित अशो को देखते हुये यह बात स्वीकार करनी कठिन नही कि रामपुर की तारीखे फ़ीरोज़शाही की पोथी ज़ियाउद्दीन बरनी द्वारा ही लिखी गई थी और सम्भवतया यही पोथी ज़ियाउद्दीन बरनी का प्रथम मूल सस्करण है और प्रकाशित पुस्तक को बरनी ने इस पुस्तक के लिखने के उपरान्त पुन राजनैतिक सिद्धान्तो का मिश्रण करके सशोधित तथा परिवर्धित किया।

परिशिष्ट 'स'

सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ तथा सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ के सिक्के[1]

ग़यासुद्दीन तुग़लुक़ प्रथम

७२०—७२५ हि० (१३२०—१३२५ ई०)

संख्या	टकसाल	तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठदेश)
					स्वर्ण के
२७४	देहली हज़रत (राजधानी)	७२१	भार १६६ आकार १	दो वर्गों में अस्सुल्तानुल ग़ाज़ी गयासुद्दुनिया वद्दीन अबुल मुज़फ़्फ़र	वृत्त में तुगलुक शाह अस्सुल्तान नासिरे अमीरुल मोमिनीन[2] हाशिये में ज़ुरेबा हाज़ेहिस् सिक्कते बेहज़रते देहली फी सनते एह्दा व इशरीन व सबामेयत[3]
					मिश्रित
व २८२	—	७२०	भार ५६ आकार '६	अस्सुल्तानुल गाज़ी ग़यासुद्दुनिया वद्दीन	अबुल मुज़फ़्फ़र तुग़लुक़ शाह अस्सुल्तान ७२०
२९३ २९४	—	७२०	भार ५६ आकार '६५	२८२ संख्या के जैसा ही, किन्तु तीसरी पंक्ति के अन्त में ७२०	वृत्त में शाह तुग़लुक़ चारो ओर श्री सुलता ग़यासुदी[4]

१ "Catalogue of the Coins in the Indian Museum, Calcutta" by H. Nelson Wright. Vol. II (Oxford 1907)

२ 'तुगलुक शाह सुल्तान अमीरुल मोमनीन (खलीफ़ा) का सहायक'।

३ 'यह सिक्का देहली में सन् ७२१ में ढला।'

४ सिक्के में हिन्दी में इसी प्रकार लिखा है।

मुहम्मद तृतीय बिन तुग़लुक़

७२५ हि०—७५२ हि० (१३२५ ई०—१३५१ ई०)

संख्या	टकसाल	तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठदेश)
				स्वर्ण 'अ' अपने पिता की स्मृति में ढलवाया	
३००	दौलताबाद नगर	७२६	भार १७३ आकार १	अस्सुल्तान उस्सईदुश्शहीद अलगाजी गयासुद्दनिया वद्दीन	वृत्त में अबुल मुजफ्फर तुगलुक शाह अस्सुल्तान अनारअल्लाहो बुरहानुहु हाशिया जुरेबा हाजेहिस् सिक्कते फी बल्दते दौलताबाद सनता सित व इशरीन व सबामेयता[1]
				ब अपने नाम में ढलवाया	
३०१	देहली हजरत (राजधानी)	७२५	भार १६९ आकार ·९५	वृत्त में ला इलाहा इल्ला अल्लाह मुहम्मदुन रसूलुल्लाह हाशिया में जुरेबत हाजेहिस्सिक्कते बेहज़रते देहली फी सनता खम्स व इशरीन व सबमेयता[2]	अबू बक्र अल मुजाहिद फी सबीलुल्लाह मुहम्मद बिन तुगलुक शाह (दाहिनी ओर अली बाईं ओर उमर नीचे उस्मान)
				स खलीफ़ा अलमुस्तकफ़ी के नाम में ढलवाया	
३१५	देहली	७४२	भार १६८ आकार ·८	अरबईनो व सबामेयता[3]	सुलेमान खलद— अल्लाहो खिलाफतहु[4]

१ 'यह सिक्का दौलताबाद नगर में ७२६ में ढला।'

२ 'यह सिक्का देहली राजधानी में ७२५ में ढला।'

३ 'यह दीनार देहली में ७४२ में ढला।'

४ 'इमाम मुस्तकफी बिल्लाह अमीरुल मोमिनीन अबुर रबी ईश्वर उसको सर्वदा खलीफा रखे।

संख्या	टकसाल	तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठ देश)
				द **खलीफ़ा अल हाकिम द्वितीय के नाम में ढलवाया**	
				Within Cinquefoil	Within Cinquefoil
३१८	—	—	भार १७० आकार ·७५	फी जमानिल इमामे अमीरुल मोमिनीन अल हाकिम बे अम्र	अल्लाह अबू अल अब्बास अहमद खल्लद मुल्कहू
				ताम्र के	
३६४	—	—	भार ६५ आकार ·६	दोहरे वृत्त में अस्सुल्तान जिलुल्लाह[1]	दोहरे वृत्त में मुहम्मद बिन तुगलुक शाह
				खलीफ़ा अलमुस्तकफ़ी के नाम में ढलवाया	
३७२	—	—	भार ५२ आकार ·५	अल्लाहु अलकाफी[2]	अल खलीफा अल मुस्तकफी
				खलीफ़ा अल हाकिम द्वितीय के नाम में ढलवाया	
३७३	—	७४६	भार १२५ आकार ·७	अल्लाहो अल हाकिम बे अम्र (बाईं ओर खड़े खड़े) ७४६	वृत्त में अबू अल अब्बास अहमद
				FORCED CURRENCY	
३७५	देहली तख्तगाह (राजधानी)	७३०	भार १३७ आकार ·७५	वृत्त में मन अताम अस्सुल्ताने फ़क़द अताम अर रहमान[3] हाशिया में दर तख्तगाहे देहली साल बर हफ़्तद सी	मुहर शुद तन्का राइज दर रोज़गारे बन्दये उम्मीदवार मुहम्मद तुगलुक

१ 'सुल्तान खुदा का साया है।'

२ 'अल्लाह काफ़ी है।'

३ 'जिसने बादशाह की आज्ञाकारिता की उसने खुदा की आज्ञाकारिता की।' इस कथन का अर्थ बड़ा महत्वपूर्ण है क्योंकि ईश्वर का प्रतिनिधि होने के कारण सुल्तान के [illegible] प्रदर्शित करते हुये इस सिक्के को मान्य समझना उचित है। यह सुल्तान की [illegible] सिक्कों पर इसी कारण लिखा गया।

संख्या	टकसाल	तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठदेश)
३७६	देहली तख्तगाह (राजधानी)	७३१	भार १३८	यथावत किंतु हाशिये में साल बर हफ़्तद सी यक	मुहर शुद तन्का राइज दर रोज़गारे बन्दये उम्मीदवार मुहम्मद तुग़लुक़
३७७	,,	७३२		यथावत किन्तु सी दो	,,
३७९ ३८० ३८१	धार (दर्रा)	७३१	भार १४७-१२४ आकार ·७५	यथावत किंतु हाशिये में दर्रे धार साल बर हफ़्तद सी यक	,,
३८२	लखनौती (इक्लीम)	,,	भार १४२ आकार ·७५	यथावत किंतु हाशिये में दर इक्लीम लखनौती साल बर हफ़्तद सी यक	,,
३८३	सत गाँव	७३०	भार १४३ आकार ·८	जैसा संख्या ३७५ में किन्तु हाशिये में दर भरसा सतगाँव	,,
३८४	तुग़लुक़पुर उर्फ़ तिरहुत	७३१	भार १४० आकार ·८	यथावत किंतु हाशिये में इक्लीम तुग़लुक़पुर उर्फ़ तिरहुत	,,
३८५	दौलताबाद तख्तगाह (राजधानी)	,,	भार १४१ आकार ·७५	यथावत किंतु हाशिये में दर तख्तगाह दौलताबाद साल बर हफ़्तद सी यक	यथावत किंतु दूसरी पंक्ति में 'पनाहगानी', 'राइज' के स्थान पर
३८६ ३८७	—	७३०	भार ११३ ५-११० आकार ·७५	मन अताअ अस्सुल्तान मुहम्मद ७३०	फ़क़द अताअ अर रहमान तुग़लुक़
३८८	—	७३०	भार ११३	अतीउ उल्लाहो व अतीउ उर् रसूलो व उलिल अम्रे मिनकुम मुहम्मद[1] ७३०	मा (से) युवल्लम् सुल्तान कुल्लुन नास बाअज़ुम बाअज़ा तुग़लुक़[2]

१ अल्लाह की आज्ञाकारिता करो तथा रसूल की, और जो तुम में से हाकिम हो उसकी आज्ञाकारिता करो।

२ सुल्तान के प्रति निष्ठा रखनी चाहिए। सभी मनुष्य एक दूसरे से सम्बन्धित हैं।

संख्या	टकसाल	तिथि	भार तथा आकार	Obverse (चेहरा)	Reverse (पृष्ठदेश)
४००	—	—	भार ६६ आकार ·६	दोहरे वृत्त में मुहम्मद तुग़लुक चारो ओर भागों में श्री · मीहमद[1]	भागो मे सिक्कये जर जायज दर अहृद बन्दा उम्मीदवार मुहम्मद तुगलुक
४१० ४०२	—	—	भार ५६ आकार ·५	दोहरे वृत्त में मुहम्मद तुगलुक	दोहरे वृत्त में अदल हस्तगानी
४०३ ४०४	—	—	भार ३५–२४ आकार ·४५	वृत्त में मुहम्मद तुगलुक	वृत्त में सिक्का दो गानी

१ इस सिक्के में हिन्दी में ऐसा ही खुदा है।

परिशिष्ट 'द'

सिन्ध के बाज़ कत्बे

[संकलनकर्त्ता—मुहम्मद शफ़ी, प्रोफ़ेसर पंजाब यूनिवर्सिटी]

ओरियन्टल कालिज मैगज़ीन लाहौर, जिल्द ११, अदद २ फरवरी १६३५ ई०

सिहवान

खानकाह मख़दूम लाल शहबाज़ कलन्दर

(१५५) क़लन्दर साहब की खानक़ाह के पीछे के दो महत्त्वपूर्ण कत्बे (शिला लेख)—

उत्तर की ओर का कत्बा (शिला लेख)—

जिस पत्थर पर यह कतबा (शिला लेख) लगा है वह २६१½ इन्च लम्बा और १८ इन्च चौडा है। इसमें कुल छ छन्द लिखे हैं। अन्तिम छन्द के कुछ शब्द टूट गये हैं।

ससार मनुष्यों की हत्या करता है। हे हृदय उसका प्राण से भक्त मत बन,
अत्याचार से ईर्ष्या एव शोषण के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य उत्पन्न नही होता।
तू मुहम्मद शाह की दशा से शिक्षा ग्रहण कर,
कि किस प्रकार विश्वासघाती समय उसे राजसिंहासन से ले गया।
हे स्वामी के हत्यारे (समय)! यदि तू भूमि के भीतर देखे तो शहशाह मिलेगा,
ससार के बादशाह उसके दासा के समान थे।
यद्यपि इससे पूर्व उसके दरबार को तूने सैकडो बार उस प्रकार देखा था,
इस समय बुद्धि की आँख खोल और इस स्थान पर उसे इस बार देख।
(१५६) पौरुष से उसने संसार विजय किया और उदारतापूर्वक उसने दान किया,
ससार में प्रयत्न एव अत्यधिक दान ही उसका आचरण रहा।
मुहर्रम मास की [२१ वी] थी और शनिवार की रात्रि, जब उसमें,
७५२ (हि०)[1] में उसने उस लोक को प्रस्थान किया।

पश्चिमी ओर का कत्बा (शिला लेख)—

यह भी सफेद पत्थर पर लिखा है। पत्थर २८½ इच लम्बा तथा १२½ इच चौडा है।

पृथ्वी के बादशाह फीरोज़ शाह के राज्य काल में,
कि ईश्वर उसके राजसिंहासन का रक्षक रहे।
धर्म की रक्षा करने वाले उस सुल्तान (की कबर) पर ऐसा गुम्बद तैयार हुआ,

१ १३५१ ई०।

जिसकी पायती आकाश चक्कर लगाता रहता है।

७५४ हि०[1] में, उसके दरबार के स्वीकृत सेवक सरमस्त मेमार ने निर्माण कराया।[2]

---

१ १३५३-५४ ई०।

२ (सुल्तान फीरोज़) ने स्वयं सुल्तान मुहम्मद का ताबूत (जनाज़ा) हाथी पर रख कर और उस पर चत्र लगाकर निरन्तर कूच करते हुये राजधानी देहली की ओर प्रस्थान किया (तारीखे मुबारक शाही पृ० ११६)। इससे पता चलता है कि सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ शाह का शव देहली लाया गया। आसारुस्सनादीद में सर सैयिद अहमद ख़ाँ ने तुग़लुक़ शाह के मक़बरे के वृत्तान्त के सम्बन्ध में लिखा है। "इस मक़बरे में एक तो इसी बादशाह की क़ब्र है। दूसरी मख़दूमये जहां उसकी पत्नी की और तीसरी सुल्तान मुहम्मद आदिल तुग़लुक शाह उसके पुत्र की जो ७५२ हि० (१३५१ ई०) में सिन्धु नदी के तट पर मरा था। (आसारुस् सनादीद, नामी प्रेस कानपुर १९०४ ई० पृ० २६)। बाद के समस्त लेखकों तथा आरक्योलोजीकल सर्वे [पुरातत्व पर्यवेक्षण] की रिपोर्टों के अनुसार तुग़लुक़ शाह के मक़बरे में एक क़ब्र सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ की है किन्तु उपर्युक्त शिला लेखों के अनुसार सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ की क़ब्र सिहवान ही में बनाई गई थी। सुल्तान फीरोज़शाह का सिन्धु नदी के तट से सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ के शव का देहली ले जाना जबकि राजनैतिक दशा बड़ी ही शोचनीय थी, ठीक नहीं ज्ञात होता।

संकेत-सूची

एसामी	*फ़ुतूहुस्सलातीन*
फ़िरिश्ता	*तारीख़े फ़िरिश्ता*
बदायूनी	*मुन्तख़बुत्तवारीख़*
बरनी	*तारीख़े फ़ीरोज़शाही*
महदी हुसेन	*The Rise and Fall of Muhammad Bin Tughluq*
रेहला	*The Rehla of Ibn Battuta* by Mahdi Husain.
होदीवाला	*Studies in Indo-Muslim History*

मुख्य सहायक ग्रन्थों की सूची

फ़ारसी

अफ़ीफ़, शम्स सिराज — तारीखे फ़ीरोजशाही (कलकत्ता १८६० ई०)
अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी — अखबारुल अखियार (देहली १३३२ हि०)
अमीर खुर्द, सैयिद मुहम्मद मुबारक अलवी — सियरुल औलिया (देहली १८८५ ई०)
अमीर खुसरो — बस्तुल हयात (अलीगढ)
केरानुस् सादैन (अलीगढ १९१८ ई०)
मिफताहुल फुतूह (अलीगढ १९२७ ई०)
तुगलुक नामा (हैदराबाद १९३३ ई०)
अली बिन अजीजुल्लाह तबातबा — बुरहाने मआसिर (हैदराबाद १९३६ ई०)
एसामी — फुतूहुस्सलातीन (मद्रास १९४८ ई०)
क़ज़वीनी, मीर अलाउद्दौला — नफायसुल मआसिर (हस्तलिखित, अलीगढ विश्व विद्यालय)
निज़ामुद्दीन अहमद — तबकाते अकबरी (कलकत्ता १९२७ ई०)
फ़िरिश्ता, मुहम्मद क़ासिम — तारीखे फिरिश्ता (नवल किशोर प्रेस)
बदायूनी, अब्दुल क़ादिर — मुन्तखबुत्तवारीख (कलकत्ता १८६८ ई०)
बद्रे चाच — कसायदे बद्रे चाच (कानपुर १८७३ ई०)
बरनी, ज़ियाउद्दीन — तारीखे फीरोज शाही (कलकत्ता १८६०-६२ ई०)
तारीखे फीरोज शाही (रामपुर, हस्तलिखित)
फतावाये जहांदारी (इण्डिया आफिस लन्दन, हस्तलिखित)
सहीफ़ नाते मुहम्मदी (रामपुर, हस्तलिखित)
मुहम्मद बिन तुग़लुक़ — कथित स्वजीवनी (हस्तलिखित, ब्रिटिश म्युजियम लन्दन)
मुहम्मद बिहामद खानी — तारीखे मुहम्मदी (हस्तलिखित, ब्रिटिश म्युजियम लन्दन)
मुहम्मद मासूम — तारीखे सिन्ध (पूना १९३८ ई०)
यहया बिन अहमद सहरिन्दी — तारीखे मुबारकशाही (कलकत्ता १९३१ ई०)
हमीद क़लन्दर — खैरुल मजालिस (अलीगढ)
हसन, अमीर, सिजज़ी — फवाइदुल फुआद (देहली १२७२ हि०)
हाजी अब्दुल हमीद मुहर्रिर — दस्तूरुल अलबाब फी इल्मिल हिसाब (हस्तलिखित, रामपुर)

अरबी

इब्ने बतूता — यात्रा का विवरण (पेरिस १९४९ ई०)
कलक़शन्दी — सुबहुल आशा फ़ी सिनाअतिल इनशा (क़ाहिरा १९१५ ई०)

नामानुक्रमणिका (अ)

पारिभाषिक शब्द

[इन शब्दो के विषय में इब्ने बत्तूता की यात्रा के विवरण तथा मसालिकुल अबसार द्वारा ज्ञान प्राप्त होता है।]

नामानुक्रमणिका (ब)

(अ)

(आ)

(इ)

(ख)

(ग)

(घ)

(च)

(छ)

(थ)

(द)

(ध)

(न)

(ध)

(न)

(प)

(फ)

(ब)

(भ)

(म)

(य)

(र)

(स)

(स)

(ह)

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६	२	सत्य	असत्य
३८	१०	धन, खराज	खराज
४४	३१	दिहम	दिरहम
५३	२०	पहुँचाने लगे	पहुँचने लगे
५६	३५	४०००	४००
५७	३४	कालीनट	कालीन
८५	१	कुलहे जर	कुलाहे जर
८६	२७	बरगाह	बारगाह
८६	२२	तातार जाशगूरी, वीर, हिन्दू	तातार जाशगूरी वीर हिन्दू
६०	१	हिन्दू तथा ततार दाहिनी ओर के सरदार थे।	हिन्दू ततार दाहिनी ओर का सरदार था।
१०८,११२,११४	१५,७,१७,२५	आलम	आलिम
११६	३३	जगग	- जगग
१२०	११	दोहनी द्वारा जलाल की	जलाल दोहनी की
१२२	८	हिजब्र	बहा
१२५	३८	वीर	बीर (बीड)
१४२	२१	पाल	पास
२२५	१	नसीरुद्दीन	नासिरुद्दीन
२३१	३४	इनुल	इब्नुल
२३४	६	बुहरानुद्दीन	बुरहानुद्दीन
२४१	३५	मित्र	चित्र
२६४	२३	जालो	वालो
३०७	४	वेश	देश
३१०	२२	तकवीमुल बुल्दाम	तकवीमुल बुल्दान
३२३	७	अजम	अजद
३२३	६	अमीर अहमन	अमीर अहमद
३५६	३	१६११	१६२७
३६२	७	शाह	शाहू
३६४	२१	ममसूर	मनसूर
३६८	४	अलाउद्दीन हुसेन	अलाउद्दीन हसन
६७०	१०	क़न्धार	कन्धार

नोट—छपाई की बहुत ही साधारण अशुद्धियों का उल्लेख नहीं किया गया है।

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६	२	सत्य	असत्य
३८	१०	धन, खराज	खराज
४४	३१	दिहम	दिरहम
५३	२०	पहुँचाने लगे	पहुँचने लगे
५६	३५	४०००	४००
५७	३४	कालीनट	कालीन
८५	१	कुलहे ज़र	कुलाहे ज़र
८६	२७	बरगाह	बारगाह
८९	२२	तातार जाशगूरी, वीर, हिन्दू	तातार जाशगूरी वीर हिन्दू
९०	१	हिन्दू तथा ततार दाहिनी ओर के सरदार थे।	हिन्दू ततार दाहिनी ओर का सरदार था।
१०८,११२,११४	१५,७,१७,२५	आलम	आलिम
११९	३३	जगग	- जगग
१२०	११	दोहनी द्वारा जलाल की	जलाल दोहनी की
१२२	८	हिजत्र	वहा
१२५	३८	वीर	वीर (बीड)
१४२	२१	पाल	पास
२२५	१	नसीरुद्दीन	नासिरुद्दीन
२३१	३४	ब्नुल	इब्नुल
२३४	९	बुहरानुद्दीन	बुरहानुद्दीन
२४१	३५	मित्र	चित्र
२६४	२३	जालों	वालो
३०७	४	वेश	देश
३१०	२२	तक़वीमुल बुल्दाम	तक़वीमुल बुल्दान
३२३	७	अजम	अज़द
३२३	९	अमीर अहमन	अमीर अहमद
३५६	३	१९११	१९२७
३६२	७	शाह	शाहू
३६४	२१	ममशूर	मनशूर
३६८	४	अलाउद्दीन हुसेन	अलाउद्दीन हसन
६७०	१०	क़न्धार	कन्धार

नोट—छपाई की बहुत ही साधारण अशुद्धियों का उल्लेख नहीं किया गया है।

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६	२	सत्य	असत्य
३८	१०	धन, खराज	खराज
४४	३१	दिहम	दिरहम
५३	२०	पहुँचाने लगे	पहुँचने लगे
५६	३५	४०००	४००
५७	३४	कालीनट	कालीन
८५	१	कुलहे ज़र	कुलाहे ज़र
८६	२७	बरगाह	बारगाह
८६	२२	तातार जाशगूरी, वीर, हिन्दू	तातार जाशगूरी वीर हिन्दू
६०	१	हिन्दू तथा तातार दाहिनी ओर के सरदार थे।	हिन्दू तातार दाहिनी ओर का सरदार था।
१०८,११२,११४	१५,६,१७,२५	आलम	आलिम
११६	३३	जगग	जगग
१२०	११	दोहनी द्वारा जलाल की	जलाल दोहनी की
१२२	८	हिज्र	बहा
१२५	३८	वीर	बीर (बीड)
१४२	२१	पाल	पास
२२५	१	नसीरुद्दीन	नासिरुद्दीन
२३१	३४	इनुल	इब्नुल
२३४	६	बुहरानुद्दीन	बुरहानुद्दीन
२४१	३५	मित्र	चित्र
२६४	२३	जालो	वालो
३०७	४	वेश	देश
३१०	२२	तक़वीमुल बुल्दाम	तकवीमुल बुल्दान
३२३	७	अजम	अज़द
३२३	६	अमीर अहमन	अमीर अहमद
३५६	३	१६११	१६२७
३६२	७	शाह	शाहू
३६४	२१	ममशूर	मनशूर
३६८	४	अलाउद्दीन हुसेन	अलाउद्दीन हसन
६७०	१०	कन्धार	वन्धार

नोट—छपाई की बहुत ही साधारण अशुद्धियों का उल्लेख नहीं किया गया है।